श्रमण
क्रियाकलाप पाठावलि

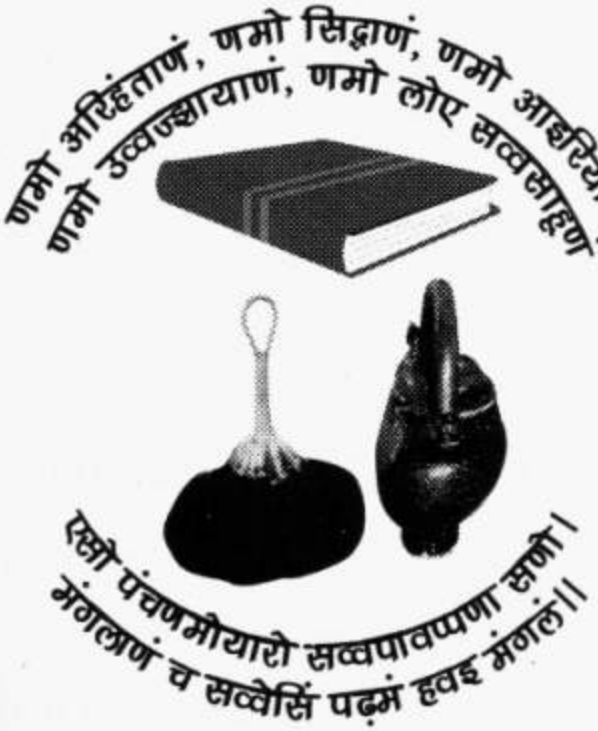

सम्पादक
उपाध्याय मुनिश्री कामकुमारनन्दी जी महाराज

रूको! एक क्षण

संसार में जितने जीव हैं वे सब जीवन में कोई न कोई उद्देश्य निर्धारित करते हैं। तदनुसार गमन भी करते हैं। प्रायः संसार में चार प्रकार के जीव पाये जाते हैं। प्रथम वे हैं जो अर्ध-नारीश्वर पद को प्राप्त कर, परमेश्वर पद की ओर बढ़ते हुए सभी को इसी सन्मार्ग का बोध कराते हैं। दूसरे प्रकार के वे जीव हैं - जो मनुष्य पर्याय के सर्वोत्कृष्ट एवं सर्व-सम्माननीय पद को प्राप्त कर अपूर्व, अनुपम एवं अव्याबाधित सुख का सेवन करते हैं। तीसरे प्रकार के वे जीव हैं जो उक्त दोनों पर्याय को प्राप्त करने के लिये रत्नत्रयात्मक मोक्ष मार्ग पर चलते हैं। चौथे प्रकार के वे जीव हैं जो उक्त तीनों में से किसी भी पर्याय विशेष की प्राप्ति का लक्ष्य न रखकर निरुद्देश्य यत्र-तत्र भ्रमण करते रहते हैं। उक्त प्रथम से तृतीय तक जो उद्देश्य बताया गया है वह उपासनीय एवं उपादेयभूत हैं शेष वर्जनीय एवं हेयभूत हैं।

उपासनीय एवं उपादेयभूत पद की प्राप्ति के लिये श्रमण-समुदाय सतत साधना किया करते है। उनकी साधना में साधक है **श्रमण : क्रिया-कलाप पाठावलि**। **"सम्यक्-यताः पापक्रियाभ्यो निवृत्ताः संयताः"** जो हिंसादि पाप क्रियाओं से हमेशा के लिए दूर रहते हैं उन्हें श्रमण, साधु, संयमी एवं संयत आदि अनेक नामों से पुकारते हैं। इन्हीं श्रमण-श्रमणिका, श्रावक-श्राविका रूप चतुर्विध संघ की संहिता जिसमें लिखी गई उसी का नाम **श्रमण : क्रिया-कलाप पाठावलि** है। इसी विषय को दर्शाने वाले अनेक साधुओं एवं विद्वानों द्वारा सम्पादित श्रमण संहिता शास्त्र हैं। उनमें यह (श्रमण : क्रिया-कलाप) भी एक शास्त्र है। इस विशालकाय शास्त्र में श्रमणोपासक क्रियाओं का विशेष संकलन संग्रह एवं सम्पादन किया है। श्रमणों का लक्ष्य मात्र साधना करना नहीं अपितु साधना द्वारा साध्य को प्राप्त करना है। अतः यह **"श्रमण : क्रिया-कलाप पाठावलि "** एक मार्गदर्शक मात्र है। इसी मार्गदर्शक के उपदेश से साध्य को प्राप्त किया जाता है। श्रमणों को इसी मार्ग पर चलकर पूर्ण रत्नत्रय को प्राप्त करना चाहिए। रत्नत्रय को साधने के उपाय यम, नियम और निश्चलता हैं। जीवन पर्यंत अर्थात हमेशा के लिए जो व्रत पालन किया जाता है वह हुआ यम। निर्धारित समय अर्थात् समय

की सीमा निश्चित कर जो व्रत पालन किया जाता है वह नियम। यम और नियम दोनों में दृढ़ रहना निश्चलता है। श्रमण, जीवन के अन्तिम क्षण तक अट्ठाईस (२८) मूल गुणों का पालन करते हैं। पांच महाव्रत, पांच समिति, पंचेन्द्रियों पर अनुशासन, छह-आवश्यक क्रियाएँ, सात शेष मूलगुण-लोच, आचेलक्य, अस्नान, भूमिशयन, अदन्तधावन, एकभुक्त, खड़े-खड़े आहार। ये संक्षेप में साधुओं के अट्ठाईस मूलगुण होते हैं जिन्हें विस्तार से आगे यथा स्थान लिख चुके है।

साधुओं की दिनचर्या

अनगार धर्मामृत के आठवें अध्याय में छह आवश्यक क्रियाओं का वर्णन करके नवमें अध्याय में नित्य-नैमित्तिक क्रियाओं का अथवा उन आवश्यक क्रियाओं के प्रयोग का वर्णन बहुत ही सरल ढंग से किया गया है। यथा-

अर्धरात्रि के दो घड़ी अनन्तर से अपररात्रिक स्वाध्याय का काल हो जाता है। उस समय पहले **"अपररात्रिक"** स्वाध्याय करके पुनः सूर्योदय के दो घड़ी शेष रह जाने पर स्वाध्याय समाप्त कर **"रात्रिक प्रतिक्रमण"** करके रात्रि योग समाप्त कर देवें। फिर सूर्योदय के समय से दो घड़ी (४८ मिनट) **"देव वन्दना"** अर्थात सामायिक करके **"गुरुवंदना"** करें पुनः **"पौर्वाह्निक"** स्वाध्याय प्रारम्भ करके मध्याह्न के दो घड़ी शेष रहने पर स्वाध्याय समाप्त कर **"गुरु वन्दना"** करके **"आहार हेतु"** जावे। यदि उपवास हो तो उस समय जाप्य या आराधना का चिन्तवन करें। गोचरी से आकर गोचार प्रतिक्रमण करके व प्रत्याख्यान ग्रहण करके पुनः **"अपराह्निक"** स्वाध्याय प्रारम्भ कर सूर्यास्त के दो घड़ी पहले समाप्त कर **"दैवसिक-प्रतिक्रमण"** करें। पुनः गुरु वन्दना करके रात्रि योग ग्रहण करें तथा सूर्यास्त के अनन्तर **"देव वन्दना"** - सामायिक करें। रात्रि के दो घड़ी व्यतीत हो जाने पर **"पूर्वरात्रिक"** स्वाध्याय प्रारम्भ करके अर्ध रात्रि के दो घड़ी पहले ही स्वाध्याय समाप्त करके शयन करें। योगनिद्रा धर्मध्यान सहित निद्रा के द्वारा शरीर की थकान को दूर करके अर्थात् ४ घड़ी (९६ मिनट तक) अर्ध रात्रि में नींद लेकर पुनः जागकर **"अपररात्रिक-वैरात्रिक"** स्वाध्याय करके ४८ मिनट रात्रि शेष रहने पर स्वाध्याय समापन कर **"रात्रिक प्रतिक्रमण"** करके योग भक्ति के द्वारा रात्रि योग का विसर्जन कर देवें। उक्त कथनानुसार अर्ध रात्रि में मात्र ४ घड़ी शयन करना यह उत्कृष्ट मार्ग है। साधुगण पिछली रात्रि में निद्रा से उठकर नौ बार णमोकार मंत्र का जाप्य करें। अनन्तर लघु शंका आदि बाधाओं से निवृत्त होकर हाथ, पैर, मुख आदि धोकर आकर अपने आसन पर बैठकर **"यत्स्वर्गावतरोत्सवे"** आदि सुप्रभात स्तोत्र पढ़ें। पुनः **"वैरात्रिक"** - पिछली रात्रि का स्वाध्याय करें। यह अहोरात्र संबंधी क्रियाएँ हुई।

अहोरात्रि के अट्ठाईस कृतिकर्म

चत्तारि पडिक्कमणे किदियम्मा तिण्णि होंति सज्झाए।
पुव्वण्हे अवरण्हे किदियम्मा चोद्दसा होंति।।६०२।। मूलाचार

"चार प्रतिक्रमण के और तीन स्वाध्याय के ऐसे पूर्वाह्न के सात कृतिकर्म और अपराह्न के सात कृतिकर्म ऐसे चौदह कृतिकर्म होते हैं।" अथवा पश्चिम रात्रि में प्रतिक्रमण के चार, स्वाध्याय के तीन और वंदना के दो, सूर्य उदय होने पर स्वाध्याय के तीन और मध्याह्न वंदना के दो इस प्रकार पूर्वाह्न के ये चौदह कृतिकर्म हुए, उसी प्रकार अपराह्न काल में स्वाध्याय के तीन, प्रतिक्रमण के चार, वंदना के दो, रात्रियोग ग्रहण-विसर्जन में योगभक्ति के दो और पूर्व रात्रि में स्वाध्याय के तीन इस प्रकार अपराह्निक क्रिया में चौदह कृतिकर्म होते हैं। अहोरात्रि के कुल मिलाकर अट्ठाइस कृतिकर्म होते हैं। यहाँ पर गाथा में प्रतिक्रमण और स्वाध्याय का ग्रहण उपलक्षण मात्र है इसलिये सभी क्रियायें इन्हीं में अन्तर्भूत हो जाती है।"

अनगार धर्मामृत में भी कहा है -

स्वाध्याये द्वादशेष्टा षड्वंदनेष्टौ प्रतिक्रमे।
कायोत्सर्गा योगभक्तौ द्वौ चाहारात्रगोचराः।।७५।।

अनगार धर्मामृत अ. ८

"चार बार के स्वाध्याय के १२, त्रिकाल वंदना के ६, दो बार के प्रतिक्रमण के ८ और रात्रियोग ग्रहण-विसर्जन में योगभक्ति के २, ऐसे २८ कायोत्सर्ग साधु के अहोरात्र विषयक होते हैं।" इनका स्पष्टीकरण यह है कि—

त्रिकाल देव वंदना में चैत्यभक्ति और पंचगुरुभक्ति सम्बन्धी दो-दो—३ × २ = ६, रात्रिक-दैवसिक प्रतिक्रमण में, सिद्ध, प्रतिक्रमण, निष्ठित-करणवीर और चतुर्विंशति-तीर्थंकर इन चार भक्ति सम्बन्धी चार-चार—४ × २ = ८, पूर्वाह्न, अपराह्न, पूर्वरात्रिक और अपररात्रिक इन चार कालिक स्वाध्याय में—स्वाध्याय के प्रारम्भ में श्रुतभक्ति, आचार्यभक्ति एवं समाप्ति में श्रुतभक्ति ऐसे तीन-तीन भक्तिसम्बन्धी ४ × ३ = १२, रात्रिकयोग प्रतिष्ठापन में योगिभक्ति सम्बन्धी एक और निष्ठापन में एक ऐसे २, इस तरह सब मिलकर ६ + ८ + १२ + २ = २८ कायोत्सर्ग किये जाते हैं। ये कायोत्सर्ग विधिवत् किये जाने से "कृतिकर्म" कहलाते हैं।

क्षुल्लक, ऐलक की आवश्यक क्रियायें –

उद्दिष्टत्यागी क्षुल्लक, ऐलक और अनुमतित्यागी दसवीं प्रतिमाधारी उत्कृष्ट

श्रावकों के लिये भी इन्हीं अट्ठाइस कायोत्सर्गरूप कृतिकर्म का विधान है। यथा-

वंदना त्रितये काले, प्रतिक्रांते द्वयं तथा।
स्वाध्यायानां चतुष्कं च, योगिभक्तिद्वयं पुनः।।
उत्कृष्टश्रावकेनामुः कर्त्तव्या यत्नतोऽन्वहं।
षडष्टौ द्वादश द्वे च क्रमशोऽमूषु भक्त्यः।।

त्रिकाल वंदना में छह, प्रातःकाल-सायंकाल दोनों समय के प्रतिक्रमण ६ + ८ + १२ + २ = २८ भक्तियां कायोत्सर्गसहित क्रम से उत्कृष्ट श्रावकों को प्रतिदिन प्रयत्नपूर्वक करना चाहिये।

कृतिकर्म का लक्षण –

सामायिकस्तवपूर्वककायोत्सर्गश्चतुर्विंशतिस्तवपर्यंतः कृतिकर्मेत्युच्यते।

"सामायिक स्तवपूर्वक कायोत्सर्ग करके चतुर्विंशतिस्तव पर्यंत जो विधि है उसे कृतिकर्म कहते हैं।"

दोणदं तु जधाजादं वारसावत्तमेव य।
चदुस्सिरं तिसुद्धिं च किदियम्मं पउंजदे।।६०३।। मूलाचार

"यथाजात मुद्राधारी साधु मन-वचन-काय की शुद्धि करके दो प्रणाम, बारह आवर्त और चार शिरोनतिपूर्वक कृतिकर्म का प्रयोग करें।" अर्थात् किसी भी क्रिया के प्रयोग में पहले प्रतिज्ञा करके भूमि स्पर्शरूप पंचांग नमस्कार किया जाता है, जैसे-

"अथ पौर्वाह्निकस्वाध्यायप्रारंभक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं श्रुतभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं" ऐसी प्रतिज्ञा करके पंचांग नमस्कार किया जाता है। पुनः **"णमो अरिहंताणं"** से लेकर **"तावकालं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि"** पाठ बोला जाता है इसे **सामायिक स्तव** कहते हैं। इसमें **"णमो अरिहंताणं"** पाठ प्रारम्भ करते समय तीन आवर्त करके एक शिरोनति की जाती है, पुनः पाठ पूरा करके तीन आवर्त एक शिरोनति की जाती है। फिर कायोत्सर्ग करके पंचांग प्रणाम किया जाता है। पुनः **"थोस्सामि"** इत्यादि **चतुर्विंशति स्तव** के प्रारम्भ में तीन आवर्त एक शिरोनति करके पाठ पूरा होने पर तीन आवर्त और एक शिरोनति होती है। इस प्रकार प्रतिज्ञा के अनन्तर प्रणाम और कायोत्सर्ग के अनन्तर प्रणाम ऐसे दो प्रणाम हुए। सामायिक दण्डक के आदि-अन्त में और **थोस्सामि स्तव** के आदि-अन्त में ऐसे तीन-तीन आवर्त चार बार करने से बारह आवर्त हुए तथा प्रत्येक में एक-एक शिरोनति करने से चार शिरोनति हो गई।

कृति-कर्म के सात भेदों पर विचार :

सामायिक अथवा देववन्दना के समय संयतों और देश-संयतों को कृति-कर्म करना चाहिए। पाप कर्मों को छेदने वाले अनुष्ठान को कृति-कर्म कहते हैं अर्थात् जिन क्रियाओं से पाप कर्मों का क्षय हो वह कृति-कर्म है।

१. योग्य काल, २. योग्य आसन, ३. योग्य स्थान, ४. योग्य मुद्रा, ५. योग्य आवर्त, ६. योग्यशिर और ७. योग्यनति ये सात कृति-कर्म हैं। इसको नग्न-मुद्राधारी संयत, बत्तीस दोष रहित, विनयपूर्वक करें।[१]

योग्यकाल

नित्यवन्दना के तीन काल हैं। पूर्वाह्नकाल, मध्याह्नकाल और अपराह्नकाल। ये तीनों काल छह-छह घड़ी के हैं। रात्रि की पीछे की तीन घड़ी और दिन की पहिली तीन घड़ी एवं छह घड़ी पूर्वाह्न वन्दना में उत्कृष्ट काल है। दिन की अन्त की तीन घड़ी और रात्रि की पहली तीन घड़ी एवं छह घड़ी अपराह्न वन्दना में उत्कृष्ट काल है तथा मध्य दिन की आदि अन्त की तीन-तीन घड़ी एवं छह घड़ी मध्याह्न वन्दना में उत्कृष्ट काल है। इस तरह सन्ध्यावन्दना में छह-छह घड़ी उत्कृष्ट काल है।[२]

योग्य-आसन

वन्दना की निष्पत्ति के लिये वन्दना करने को उद्यत साधु, जिस देश में जिस पीठ पर और जिन पद्मासनादि आसनों से बैठता है उसे योग्य आसन कहते हैं।[३]

वन्दनायोग्य-प्रदेश

विविक्त-जिसमें अशिष्ट जन का संचार न हो, जो प्रासुक-सम्मूर्छन जीवों से रहित हो, संक्लेशकारण-रागद्वेष आदि से और क्लेशकारण-परीषहरूप उपसर्ग से रहित हो, पुण्य-वन, भवन, चैत्यालय, पर्वत की गुफा सिद्धक्षेत्रादि रूप हो, रम्य-चित्त को प्रफुल्लित करने वाला हो, मुमुक्षु पुरुषों के सेवन करने योग्य हो और प्रशस्त ध्यान को बढ़ाने

---

१. योग्यकालासनस्थानमुद्रावर्तशिरोनति।
विनयेन यथाजातः कृतिकर्मामलं भजेत्।।

२. तिस्त्रोऽह्नोऽन्त्या निशश्चाद्या नाड्यो व्यत्यासिताश्च ताः।
मध्याह्नस्य च षट् कालास्त्रयोऽमी नित्यवन्दने।।

३. वन्दनासिद्धये यत्र येन चास्ते तदुद्यतः।
तद्योग्यासनं देशः पीठं पद्मासनाद्यपि।।

वाला हो ऐसे प्रदेश का वन्दना करने वाला साधु वन्दना की सिद्धि के लिए आश्रय ले।[४]

वन्दनायोग्य-पीठ

जो खटमल आदि जन्तुओं से रहित हो, चर-चर शब्द न करता हो, जिसमें छेद न हो, जिसका स्पर्श सुखोत्पादक हो, जिसमें कील कांटा वगैरह न हो, जो हिलता-जुलता न हो, निश्चल हो ऐसे तृणमय दर्भासन चटाई वगैरह, काष्टमय-चौकी, तख्त आदि, शिलामय-पत्थर की शिला जमीन आदि रूप पीठ का वन्दना करने वाला साधु वन्दना सिद्धि के लिए आश्रय लें अर्थात् तृणरूप, काष्ठरूप और शिलारूप पीठ पर बैठकर नित्यवन्दना करें।[५]

वन्दनायोग्य-पद्मासनादि

दोनों जंघाओं (गोड़ों) से दोनों पैरों के संश्लेष को **पद्मासन** कहते हैं अर्थात् दाहिने गोड़े के नीचे बायें पैर को करना और बायें गोड़े के नीचे दायें पैर को करना अथवा बायें पैर के ऊपर दाहिने गोड़ें को करना और दाहिने पैर के ऊपर बायें गोड़े का करना सो **पद्मासन** हैं। जंघाओं को ऊपर नीचे रखने को **पर्यंकासन** कहते हैं अर्थात् बायें गोड़ के ऊपर दाहिने गोड़े को रखना सो **पर्यंकासन** है। दोनों ऊरु (जांघों) के ऊपर दोनों पैरों के रखने को **वीरासन** कहते हैं अर्थात् बायां पैर दाहिनी जांघ के ऊपर रखना और दाहिना पैर बायीं जांघ के ऊपर रखना सो **वीरासन** है।[६]

वन्दनायोग्य-स्थान

वन्दना करने वाला जहाँ खड़ा रहे या बैठे वह वन्दना स्थान है। सो वन्दना में दो प्रकार का माना गया है। एक उद्भीभाव (खड़ा रहना) दूसरा निषद्या (बैठना)। इन दोनों स्थानों में से अपनी शक्ति के अनुसार किसी एक का प्रयोग करना चाहिये।[७]

---

[४] विविक्तः प्रासुकस्त्यक्तः संक्लेशकारणैः।
पुण्यो रम्यः सतां सेव्यः श्रेयो देशः समाधिचित्।।

[५] विजन्त्वशब्दमच्छिद्रं सुखस्पर्शमकीलकम्।
स्थेयस्तार्णाद्यधिष्ठेयं पीठं विनयवर्धनम्।।

[६] पद्मासनं श्रितौ पादौ जंघाभ्यामुत्तराधरे।
ते पर्यंकासनं न्यस्तावूर्वोर्वीरासनं क्रमौ।।

[७] स्थीयते येन तत्स्थानं वन्दनाया द्विधा मतम्।
उद्भीभावो निषद्या च तत्प्रयोज्यं यथाबलम्।।

वन्दनायोग्य-मुद्रा

मुद्रा के चार भेद हैं। जिनमुद्रा, योग मुद्रा, वन्दनामुद्रा और मुक्ताशुक्तिमुद्रा। इन चारों मुद्राओं का लक्षण क्रम से कहते हैं।।

जिन-मुद्रा

दोनों पैरों का चार अंगुल प्रमाण अन्तर (फासला) रखकर और दोनों भुजाओं को नीचे लटका कर कायोत्सर्ग रूप से खड़ा होना सो **जिनमुद्रा** है।[८]

योग-मुद्रा

पद्मासन, पर्यंकासन और वीरासन इन तीनों आसनों की गोद में नाभि के समीप दोनों हाथों की हथेलियों को चित रखने को जिनेन्द्र देव **योगमुद्रा** कहते हैं।[९]

वन्दना मुद्रा

दोनों [९]हाथों को मुकुलित कर और उनकी कुहनियों को उदर पर रखकर खड़े हुए पुरुष के **वन्दना मुद्रा** होती है। **भावार्थ** - दोनों कुहनियों को पेट पर रखकर दोनों हाथों को मुकुलित करना सो **वन्दना मुद्रा** है।[१०]

मुक्ताशुक्तिमुद्रा

दोनों हाथों की अंगुलियों को मिलाकर और दोनों कुहनियों को उदर पर रखकर खड़े हुए के आचार्य **मुक्ताशुक्तिमुद्रा** कहते हैं। **भावार्थ** - दोनों कुहनियों को पेट पर रखना और दोनों हाथों को जोड़ कर अंगुलियों को मिला लेना **मुक्ताशुक्तिमुद्रा** है।[११]

मुद्राओं का प्रयोगनिर्णय

"जयति भगवान" इत्यादि चैत्यवन्दना करते समय वन्दनामुद्रा का प्रयोग करना

---

[८] जिनमुद्रान्तरं कृत्वा पादयोश्चतुरङ्गुलम्
ऊर्ध्वजानोरवस्थानं प्रलम्बितभुजद्वयम्।।

[९] जिनाः पद्मासनादीनामंकमध्ये निवेशनम्।
उत्तानकरयुग्मस्य योगमुद्रां बभाषिरे।।

[१०] मुकुलीकृतमाधाय जठरोपरि कूर्परम्।
स्थितस्य वन्दनामुद्रा करद्वन्द्वं निवेदिता।।

[११] मुक्ताशुक्तिर्मता मुद्रा जठरोपरि कूर्परम्।
ऊर्ध्वजानोः करद्वन्द्वं संलग्नाङ्गुलि सूरिभिः।।

चाहिए। "णमो अरहंताणं इत्यादि सामायिक दण्डक के समय और "थोस्सामि" इत्यादि चतुर्विंशतिस्तवदंडक के समय मुक्ताशुक्ति मुद्रा का प्रयोग करना चाहिए। बैठकर कायोत्सर्ग करते समय योगमुद्रा का प्रयोग करना चाहिए तथा खड़े रह कर कायोत्सर्ग करते समय जिनमुद्रा का प्रयोग करना चाहिए।[१२]

आवर्त का स्वरूप

मन, वचन और काय के पलटने को आवर्त कहते हैं। ये आवर्त बारह होते हैं। जो सामायिक दण्डक के प्रारम्भ और समाप्ति में तथा चतुर्विंशतिस्तवदण्डक के प्रारम्भ और समाप्ति के समय किये जाते हैं। जैसे "णमो अरहंताणं" इत्यादि सामायिक दण्डक के पहले क्रिया विज्ञापन रूप मनोविकल्प होता है उस मनोविकल्प को छोड़ कर सामायिकदंडक के उच्चारण के प्रति मन को लगाना सो मनः परावर्तन है। उसी सामायिकदण्डक के पहले भूमिस्पर्शन रूप नमस्कार किया जाता है उस वक्त वन्दना मुद्रा की जाती है उस वन्दना मुद्रा को त्यागर पुनः खड़ा होकर मुक्ताशुक्तिमुद्रा रूप दोनों हाथों को करके तीन बार घुमाना सो कायपरावर्तन है। "चैत्यभक्तिकायोत्सर्ग करोमि" इत्यादि उच्चारण को छोड़कर "णमो अरहंताणं" इत्यादि पाठ का उच्चारण करना सो वाक्परावर्तन है। इस तरह सामायिक दण्डक के पहले मन, काय और वचन परावर्तन रूप तीन आवर्त होते हैं। इसी तरह सामायिक दण्डक के अन्त में और स्तवदण्डक के आदि तथा अन्त में तीन तीन आवर्त यथायोग्य होते हैं। एवं सब मिलकर एक कायोत्सर्ग में बारह आवर्त होते हैं।[१३]

मुकुलित दोनों हाथों को तीन बार घुमाकर सामायिक-दण्डक पढ़ें। पढ़ कर फिर तीन बार घुमावे। चतुर्विंशतिस्तवदण्डक में भी इसी तरह करे। अर्थात्-मुकुलित दोनों हाथों को तीन बार घुमा कर चतुर्विंशतिस्तव दण्डक पढ़ें। पढ़कर फिर मुकुलित दोनों हाथों को तीन बार घुमावें।[१४]

शिर-लक्षण

तीन-तीन आवर्त के प्रति जो भक्तिपूर्वक शिर झुकाना है वह चार शिर है। मुकुलित

---

१२. स्वमुद्रा वन्दने मुक्ताशुक्तिः सामायिकस्तवे।
योगमुद्रास्यया स्थित्या जिनमुद्रा तनूज्झने।।

१३. कथिता द्वादशावर्ता वपुर्वचनचेतसाम्।
स्तवसामायिकाद्यन्तपरावर्तनलक्षणाः।।

१४. त्रिः सम्पुटीकृतौ हस्तौ भ्रमयित्वा पठेत्पुनः।
साम्यं पठित्वा भ्रमयेत्तौ स्तवेऽप्येतदाचरेत्।।१४।।

हाथ इसका चिन्ह है और ये चार शिर चैत्यभक्त्यादि कायोत्सर्ग के समय किये जाते हैं। भावार्थ-सामायिक दण्डक के आदि में तीन आवर्त कर शिर झुकाना। अन्त में तीन आवर्त कर शिर झुकाना। इसी तरह स्तवदण्डक के आदि में तीन आवर्त कर शिर झुकाना और अन्त में भी तीन आवर्त कर शिर झुकाना एवं एक कायोत्सर्ग के प्रति चार शिरोनमन होते हैं।[१५]

चैत्य भक्ति आदि में दूसरी तरह से भी आवर्त होते हैं सो दिखाते हैं-

चैत्यभक्त्यादि के करते समय हर एक प्रदक्षिणा में एक दिशा में तीन तीन आवर्त और एक एक शिरोनमन करें। भावार्थ-एक प्रदक्षिणा देने में चारों दिशाओं में बारह आवर्त और चार शिरोनमन होते हैं इसी तरह दूसरी तीसरी प्रदक्षिणा में तीन-तीन आवर्त और चार चार शिरोनमन होते हैं एवं ये आवर्त और शिरोनमन पूर्वोक्त प्रमाण से अधिक हो जाते हैं सो दोष के लिए नहीं हैं।[१६]

नति

सामायिकदण्डक और स्तुतिदण्डक के पहले भूमिस्पर्श रूप पंचांगप्रणाम करने से दो नति की जाती हैं। कोई-कोई आचार्य वन्दना के पहले और पीछे बैठकर प्रणाम करने से दो नती मानते हैं। भावार्थ-सामायिक दण्डक के पहले और चतुर्विंशतिस्तवदण्डक के पहले दो बार पंचांगप्रणाम किया जाता है इसलिए दो नती होती है। स्वामि समन्तभद्रादिक का मत है कि वन्दना के प्रारंभ में एक और समाप्ति में एक ऐसे दो प्रणाम बैठकर करना चाहिए इसलिए उनके मत से ये दो नती होती है।[१७]

प्रातः सर्वप्रथम श्रमण अपने जीवन का मंगलाचरण महामंत्र णमोकार से करते हैं, जिस णमोकार महामंत्र को इस शास्त्र के प्रारंभ में लिखा गया है एवं वह क्रिया-कलाप के आधार पर लिखा गया है। इसी प्रकार स्वाध्याय-विधि, रात्रिक दैवसिक, पाक्षिकादि प्रतिक्रमण एवं संस्कृत-प्राकृत दश भक्तियाँ भी क्रिया-कलाप से लिये गये हैं। जो पाठ शुद्ध है एवं आर्ष, आगम और आचार्यों द्वारा प्रणीत है उसे ही इस ग्रन्थ में लिखने

---

[१५] प्रत्यावर्तत्रयं भक्त्या नन्नमत् क्रियते शिरः
यत्पाणिकुड्मलांके तत् क्रियायां स्याच्चतुः शिरः।।१५।।

[१६] प्रतिभ्रामरि वार्चादिस्तुतौ दिश्येकशश्चरेत्।
त्रीनावर्तान् शिरश्चैकं तदाधिक्यं न दुष्यति।।१६।।

[१७] द्वे साम्यस्य स्तुतेश्चादौ शरीरनमनान्नती।
वन्दनाद्यन्तयोः कैश्चिन्निविश्य नमनान्मते।।१७।।

का प्रयास किया गया है। अतः साधुवृन्द, उक्त क्रियाओं को पढ़ते समय यदि कोई त्रुटियाँ दिखाई दें तो सम्पादक को सूचित कर दे, उन्हें अगले संस्करण में सुधारने का प्रयास करेंगे। इस विषय में मेरा कोई हठ नहीं हे। जो आर्ष प्रणीत और आचार्य प्रणीत है वहीं क्रियायें ग्राह्य हैं शेष त्यजनीय है।

कहीं-कहीं कृतिकर्म की दण्डक आदि विधि को विस्तार एवं शास्त्र का कलेवर बढ़ जाने के भय से संक्षिप्त किया गया हैं। कृतिकर्म आदि की पूर्ण विधि मूलाचार प्रदीप, अनगार धर्मामृत, चारित्रसार, क्रियाकलाप, श्रमणचर्या, मुनिचर्या, हुम्बुज श्रमण सिद्धान्त पाठावली एवं विमलभक्ति आदि ग्रन्थों के आधार से लिखा गया हैं। **"को न विमुह्यति शास्त्र-समुद्रे"** के अनुसार त्रुटियाँ रहना सम्भव है अतः साधुगण उन त्रुटियों को सुधार कर ही क्रियाविधि सम्पन्न करेगें ऐसी मेरी भावना हैं। यदि उन त्रुटियों को सम्पादक तक पहुँचा दिया जायें तो अग्रिम संस्करण में आपको स्मरण किया जायेगा।

इति कृति-कर्म

सरस्वती सिद्धि मंत्र :

ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनि नमः।

सर्व शान्तिदायक मंत्र :

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः स्वाहा।

'स्फटिकी सूत्रजा माला मोक्षार्थिनां तु निर्मला -

- णमोकार मंत्रकल्प जाप्यविधिः ६ पृष्ठ ६६

श्रमण : क्रिया-कलाप पाठावलि में क्या विषय कहाँ है?

भाग - १

विषय	क्रम संख्या
नित्यक्रियाएँ	
प्रातः विधिः	१
स्वाध्याय विधिः	२
रात्रिक दैवसिक प्रतिक्रमण	७
रात्रिक-योग-निष्ठापन-विधिः	२४
आपराह्निक सामायिक विधिः	२६
द्वात्रिंशतिका-बृहद-सामायिक विधिः	३०
आचार्य-वन्दना-विधिः	३४
चैत्यालयाष्टक-स्तोत्रम् (दृष्टं जिनेन्द्र-भवनं.....)	३७
दर्शन पाठ (दर्शनं देव देवस्य....)	३६
अभिषेक-वन्दना-क्रिया	४०
शौच-क्रिया (ईया-पथ-शुद्धि.....)	४१
पौर्वाह्निक स्वाध्याय विधिः	४२
आहारचर्या विधिः	४३
उपवास-ग्रहण-त्याग विधिः	४५
मध्याह्न स्वाध्याय विधिः	४७
दैवसिक-प्रतिक्रमण विधिः	४७
रात्रि-योग-प्रतिष्ठापन-विधिः	४८
आपराह्निक आचार्यवन्दना विधिः	४८
आपराह्निक देव वन्दना विधिः	४८
पूर्व रात्रि स्वाध्याय विधिः	४८

स्तोत्र

- श्री भूत, वर्तमान, भविष्यत् विदेहक्षेत्रस्थतीर्थंकर ४६
- श्री सरस्वती स्तोत्रम् (षोडश नामावली) ५०
- श्री सरस्वती स्तोत्रम् (चन्द्रार्ककोटि....) ५१
- मंगलाष्टकम् ५२
- श्री नवदेवता स्तोत्रम्-मंगलाष्टकम् ५४
- सुप्रभात स्तोत्रम् ५६
- महावीराष्टक स्तोत्रम् ५८
- श्री निजानन्द स्तोत्रम् ५६
- वीतराग स्तोत्रम् ६३
- परमानन्द स्तोत्रम् ६४
- परमात्म स्तोत्रम् ६५
- आदिनाथ स्तोत्रम् ६६
- श्रीमानस्तम्भ स्तोत्रम् ७०
- कल्याणमंदिर स्तोत्रम् ८३
- एकीभाव स्तोत्रम् ६१
- विषापहार स्तोत्रम् ६६
- जिनचतुर्विंशतिका स्तोत्रम् १००
- अकलंक स्तोत्रम् १०५
- स्वयम्भू स्तोत्रम् १०८
- अद्याष्टक स्तोत्रम् १३६

संस्कृत दस भक्तियाँ

- कौन-२ सी भक्तिः कहाँ-२ १४०
- श्री अर्हद्-भक्तिः १४६
- चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति १५०
- श्री सिद्धभक्तिः (संस्कृत) १५१
- श्री चैत्यभक्तिः (संस्कृत) १४३
- श्री श्रुतभक्तिः (संस्कृत) १५८

- श्री चारित्रभक्तिः (संस्कृत) १६१
- श्री योगभक्तिः (संस्कृत) १६४
- श्री आचार्यभक्तिः (संस्कृत) १६६
- श्री पञ्चमहागुरुभक्तिः (संस्कृत) १६६
- श्री शांतिभक्तिः (संस्कृत) १७०
- श्री समाधिभक्तिः (संस्कृत) १७३
- श्री निर्वाणभक्तिः (संस्कृत) १७६
- श्री नन्दीश्वरभक्तिः १८०

प्राकृत दस भक्तियाँ

- प्राकृत श्री सिद्धभक्तिः १८८
- प्राकृत श्री श्रुतभक्तिः १६०
- प्राकृत श्री चारित्रभक्तिः १६१
- प्राकृत श्री योगिभक्तिः १६२
- प्राकृत श्री आचार्यभक्तिः १६४
- प्राकृत श्री निर्वाणभक्तिः १६५
- प्राकृत श्री पंचमहागुरुभक्तिः २००
- प्राकृत कल्याणलोचना २०१
- संस्कृत कल्याणलोचना २०६

पाक्षिकादि प्रतिक्रमण

- पाक्षिकादिप्रतिक्रमण २११
- प्रायश्चित-याचना-विधिः २६२
- सर्वदोषप्रायश्चित विधिः २६२
- श्रावक-प्रतिक्रमणम् २६६

नैमित्तिक क्रिया विधियाँ

- सर्वदोषप्रायश्चित विधिः २६२
- नैमित्तिक-क्रिया-विधिः २८२
- चतुर्दशी-क्रिया-विधिः २८८

- अथ पाक्षिकी-क्रिया-विधिः २८६
- सिद्ध-प्रतिमा-दर्शन-विधिः २६०
- पूर्व-जिनचैत्य-वन्दना-क्रिया विधिः २६०
- अपूर्व-चैत्य-वन्दना-क्रिया विधिः २६१
- अनेक-अपूर्व-चैत्य-वन्दना-क्रिया विधिः २६२
- पूर्व-जिनचैत्य-वन्दना-क्रिया २६२
- आष्टान्हिक-पर्व-क्रिया-विधिः २६३
- मंगल-गोचर-मध्याह्न-वन्दना-क्रिया-विधिः २६४
- मंगल-गोचर-भक्तप्रत्याख्यान-क्रिया-विधि २६५
- वर्षायोग धारण-समापन-क्रिया-विधिः २६६
- श्री वीर-निर्वाण-क्रिया-विधिः ३०४
- लोच-करण-क्रिया-विधिः ३०५
- दीक्षा-विधिः ३०७
- क्षुल्लक दीक्षा विधिः ३१३
- उपाध्याय (पददान) विधिः ३१४
- आचार्य पद स्थापन विधिः ३१५

बारहभावना

- बारहभावना ३१६
- चौबीस ठाणा ३२०
- चौबीस दण्डक ३२४

भाग - २

सिद्धान्त-शास्त्र पाठावलि

- तत्त्वार्थ सूत्रम् ३३०
- अध्यात्मध्यानसूत्राणि ३४२
- शास्त्रसार समुच्चय सूत्राणि ३४५
- दशविध धर्मध्यान स्वरूपम् ३५०
- परीक्षामुखसूत्राणि ३५४

- बृहद् द्रव्य संग्रह ३६१
- इष्टोपदेश ३६६
- रत्नकरण्डक श्रावकाचार ३७१
- बारसाणुपेक्खा (द्वादशानुप्रेक्षा) ३८७
- समयपाहुड ३९६
- पंचत्थिकायसंगहो ४३१
- णियमसारो ४४६
- रयणसारो ४६२
- पवयणसारो ४७६
- अट्ठपाहुणं ५०२
- मूलाचारो ५४४
- पुरूषार्थसिद्धयपायः ६६०
- अध्यात्म-अमृत-कलशम् ६७६
- आत्मानुशासनम् ७१४
- आप्तपरीक्षा ७४६
- आप्तमीमांसा ७५७
- युक्त्यनुशासनम् ७६७
- नयविवरणम् ७७३
- गोम्मटसार जीवकाण्डम् ७८३
- गोम्मटसार कर्मकाण्डम् ८४५
- समाधिशतकम् ९२७
- शान्तिसागरशतकम् ९३६
- नीतिसारसमुच्चयः ९४५
- नीति सुधा बिन्दु ९५५
- उवसग्गहरं (श्री भद्रबाहु विरचितम्) ९६८
- मृत्यु-महोत्सव ९६९
- मृत्यु-महोत्सव (प. सदासुख जी कृत) ९७३
- समाधि (मुनिचारित्रसेन कृत) ९७५
- महाकवि रइधू कृत दशधर्म व्याख्या ९७८
- निजात्मशुद्धिभावना ९८४
- स्वाध्याय का सार ९९०

सिरि नेमिचंद्राइरियकदं

तं गोम्मटेसर-थुई

(इंद्रवज्रा छंद)

विसिट्ठ-कंदोट्ट-दलाणुयारं,
सुलोयणं चंद-समाण-तुण्डं।
घोणा विणिज्जिय-सुचंपय-पुप्फ सोहं,
तं गोम्मटेसर-जिणं पणमामि णिच्चं।।१।।

अछाय-सच्छाय-जलकांत-गंडं,
आबाहु-दोलंत-सुकण्ण-पासं।
गंइंद-सुंडुज्वल-बाहुदंड।
तं गोम्मटेसर-जिणं पणमामि णिच्चं।।२।।

सुंकठ-सोहा-जिय-दिव्व-सोक्खं,
हिमालयोद्धाम-विसाल-अंसं।
सुपेक्खणिज्जायल-सुट्ठु-मज्झं,
तं गोम्मटेसर-जिणं पणमामि णिच्चं।।३।।

विंझायलग्गे-पविभासमाणं,
सिहामणिं-सव्व-सुचेदियाणं।
तिलोय-संतोसय-पुण्णचंदं,
तं गोम्मटेसर-जिणं पणमामि णिच्चं।।४।।

लया-समक्कंत-महा-सरीरं,
भव्वावली-लद्ध-सुकप्प-रुक्खं।
देविंद-विंदच्चिय पाय-पोम्मं,
तं गोम्मटेसर-जिणं पणमामि णिच्चं।।५।।

अथ प्रातः विधिः

प्रातरेव समुत्थाय, तल्पा-दक्षिणपार्श्वतः।
निषण्णस्तत्र पूर्वास्यः एकाग्रश्चिन्तयेदिति।।१।।

अनादौ घोर संसारे, भ्रान्त्वा भ्रान्त्वा कुयोनिषु।
कथञ्चिज्जिनधर्मोऽयं, सुमंगलमयाधृतः।।२।।

अद्यापि भुवनाराध्यो, सम्यग्धर्मो न लक्ष्यते।
हन्त चारित्रमोहेन, लब्धो निर्वाह्यतेऽधुना।।३।।

चिन्तयित्वेति निर्दोषं, स्मृत्वा स्तुत्वा जिनेश्वरम्।
वन्दित्वा च परामृश्य, कृतं पूर्वेद्युरात्मना।।४।।

णमोकार महामंत्रः

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंचणमोयारो, सव्व-प्पाव-पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलं।।

मंत्रं संसारसारं, त्रिजगदनुपमं सर्वपापारि-मंत्रम्।
संसारोच्छेदमंत्रं, विषमविषहरं कर्मनिर्मूल-मंत्रम्।।१।।

मंत्रं सिद्धि-प्रदानं, शिवसुखजननं केवलज्ञान-मंत्रम्।
मंत्रं श्री जैन मंत्रं, जपजप जपितं जनमनिर्वाण-मंत्रम्।।२।।

चत्तारि मंगलं-अरहंत मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। *चत्तारि लोगुत्तमा*-अरहंत लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। *चत्तारि सरणं पव्वज्जामि*-अरहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

अथ स्वाध्याय विधिः

विज्ञापन

अथ अपर-रात्रि स्वाध्याय प्रतिष्ठापन-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री श्रुतभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

इस प्रकार प्रतिज्ञा करके भूमि स्पर्श करते हुए नमस्कार करें, तदनन्तर तीन आवर्त और एक शिरोनति करके ***मुक्ताशुक्ति मुद्रा*** में निम्नलिखित सामायिक दण्डक का उच्चारण करें -

सामायिक दण्डक

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

चत्तारि मंगलं-अरहंत मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरहंत लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

अड्ढाइज्ज-दीव-दो-समुद्देसु, पण्णारस-कम्मभूमिसु, जाव-अरहंताणं, भयवंताणं, आदियराणं, तित्थयराणं, जिणाणं, जिणोत्तमाणं, केवलियाणं, सिद्धाणं, बुद्धाणं, परिणिव्वुदाणं, अंतय-डाणं, पारगयाणं, धम्माइरियाणं, धम्मदेसगाणं, धम्म-णायगाणं, धम्म-वर-चाउरंग-चक्कवट्टीणं, देवाहिदेवाणं, णाणाणं, दंसणाणं, चरित्ताणं सदा करेमि किरियम्मं। करेमि भन्ते! सामायियं सव्व-सावज्ज-जोगं पच्चक्खामि जावज्जीवं (यावत्-कालं, जावनियमं) तिविहेण-मणसा वचसा काएण, ण करेमि, ण कारेमि, ण अण्णं करंतं पि समणुमणामि। तस्स भन्ते! अइचारं पडिक्कमामि, णिंदामि, गरहामि अप्पाणं, जाव अरहंताणं, भयवंताणं पज्जुवासं करेमि तावकालं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

(सामायिक दण्डक पढ़ने के पश्चात् तीन आवर्त एक शिरोनति करके २७ उच्छ्वास पूर्वक कायोत्सर्ग करें। बाद में भूमि स्पर्श करके नमस्कार करते हुए तीन आवर्त और एक शिरोनति करें, पश्चात् ***मुक्ताशुक्ति मुद्रा*** में निम्नलिखित **चतुर्विंशति स्तव** पढ़ें)

चतुर्विंशति स्तवः

थोस्सामि हं जिणवरे तित्थयरे केवली अणंत जिणे।
णर-पवर-लोय-महिए विहुय-रय मले महप्पण्णे।।१।।

लोयस्सुज्जोययरे धम्मं तित्थंकरे जिणे वंदे।
अरहंते कित्तिस्से चौबीसं चेव केवलिणो।।२।।

उसह-महियं च वंदे संभव-मभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वन्दे।।३।।

सुविहिं च पुप्फयंतं सीयल सेयं च वासुपुज्जं च।
विम्लं-मणंतं भयवं धम्मं संतिं च वंदामि।।४।।

कुंथुं च जिणवरिंदं अरं च मल्लिं च सुव्वयं च णमिं।
वंदाम्यारिट्ठणेमिं तहं पासं वड्ढमाणं च।।५।।

एवं मए अभित्थुआ विहुय-रय-मला पहीण जर-मरणा।
चउवीसं पि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु।।६।।

कित्तिय वंदिय महिया एदे लोगोत्तमा जिणा जिद्धा।
आरोग्ग-णाण-लाहं दिंतु समाहिं च मे बोहिं।।७।।

चंदेहिं णिम्मल-यरा; आइच्चेहिं अहिय-पया-संता।
सायर-मिव गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।८।।

(उक्त **चतुर्विंशति स्तव** पढ़ने के बाद तीन आवर्त और एक शिरोनति करके *वन्दना मुद्रा में निम्नलिखित* **लघु श्रुत भक्तिः** का उच्चारण करें।)

लघु-श्रुत-भक्तिः

अर्हद्-वक्त्र-प्रसूतं, गणधर-रचितं द्वादशाङ्गं विशालं,
चित्र बह्वर्थ-युक्तं, मुनिगण-वृषभै-र्धारितं बुद्धिमद्भिः।
मोक्षाग्र-द्वार-भूतं, व्रत-चरण-फलं, ज्ञेय-भाव-प्रदीपं,
भक्त्या नित्यं प्रवंदे, श्रुतमह-मखिलं सर्व-लोकैक-सारम्।।

जिनेन्द्र-वक्त्र-प्रति-निर्गतं वचो, यतीन्द्र-भूति-प्रमुखै-र्गणाधिपैः।
श्रुतं धृतं तैश्च पुनः प्रकाशितं, द्वि-षट्-प्रकारं प्रणामाम्यऽहं श्रुतम्।।२।।

कोटी-शतं द्वादश चैव कोट्यो लक्षाण्य-शीतिस् त्र्यधिकानि चैव।।
पंचाश-दष्टौ च सहस्र-संख्या मेतच्छ्रुतं पंच पदं नमामि।।३।।

अरहंत-भासि-यत्थं गणहर-देवेहिं गंथियं सम्मम्।
पणमामि भत्ति जुत्तो सुद-णाण-महोवहिं सिरसा।।४।।

अञ्चलिका

इच्छामि भन्ते! सुदभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्स आलोचेउं अंगो वंगपइण्णए पाहुडय परियम्म-सुत्त-पढमाणि ओग पुव्व-गय-चूलिया चेव सुत्तत्थय-थुई-धम्म-कहाइयं सया णिच्च-कालं अंचेमि पूजेमि वन्दामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई-गमणं समाहि-मरणं जिणगुण सम्पत्ति होउमज्झं।

विज्ञापन

अथ अपर रात्रि स्वाध्याय प्रतिष्ठापन क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव पूजा-वंदना-स्तव-समेतं श्री लघु आचार्य भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(विज्ञापन पढ़कर नमस्कार करें, पश्चात् तीन आवर्त और एक शिरोनति करके **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं.-२) पढ़ें। तदनन्तर तीन आवर्त एक शिरोनति के साथ २७ उच्छ्वासपूर्वक कायोत्सर्ग करे, पुनः नमस्कार करके तीन आवर्त और एक शिरोनति करें, तदनंतर **चतुर्विंशति स्तव** (पृष्ठ सं.-३) पढ़ें। पश्चात् तीन आवर्त और शिरोनति करके निम्नलिखित **लघु आचार्य भक्तिः** पढ़ें।)

लघु आचार्य भक्तिः

प्राज्ञः प्राप्त-समस्त-शास्त्र-हृदयः, प्रव्यक्त-लोक-स्थितिः,
प्रास्ताशः प्रतिभापरः प्रशमवान्, प्रागेव दृष्टोत्तरः।
प्रायः प्रश्नसहः प्रभुः पर-मनोहारी परा-निन्दया,
ब्रुयाद् धर्मकथां गणी गुणनिधिः, प्रस्पष्टमिष्टाक्षरः।।१।।

श्रुत-मविकलं, शुद्धा वृत्तिः, पर-प्रति-बोधने,
परिणतिरुरू-द्योगो मार्ग-प्रवर्तन-सद्विधौ ।
बुध-नुति-रनुत्सेको लोकज्ञता, मृदुता-स्पृहा,
यति-पति-गुणा, यस्मिन्नन्ये, च सोऽस्तु गुरुः सताम् ।।२।।

श्रुत-जलधि-पार-गेभ्यः स्व-पर-मत विभावना पटु-मतिभ्यः
सु-चरित-तपो-निधिभ्यो नमो गुरुभ्यो गुण-गुरुभ्यः ।।३।।

छत्तीस-गुण-समग्गे पञ्च-विहाचार-करण-संदरिसे,
सिस्सा-णुग्गह-कुसले धम्मा-इरिये सदा वन्दे ।।४।।

गुरु भत्ति-संजमेण य तरन्ति संसार-सायरं घोरम्
छिण्णंति अट्ठ-कम्मं जम्मण-मरणं ण पावन्ति ।।५।।

ये नित्यं व्रत-मंत्र-होम-निरता ध्यानाग्नि-होत्रा-कुलाः ।
षट्-कर्माभि-रतास्तपो-धन-धनाः साधु-क्रिया-साधवः ।
शील-प्रावरणागुण-प्रहरणा-श्चन्द्रार्क-तेजोऽधिका
मोक्ष-द्वार-कपाट-पाटन-भटाः प्रीणंतु मां साधवः ।।६।।

गुरवः पान्तु वो नित्यं ज्ञान-दर्शन-नायकाः ।
चारित्रार्णव-गम्भीरा मोक्ष-मार्गोपदेशकाः ।।७।।

गुरुभक्त्या वयं सार्धद्वीपद्वितयवर्तिनः ।
वंदामहे त्रिसंख्योन-नवकोटि-मुनीश्वरान् ।।८।।

अञ्चलिका

इच्छामि भन्ते! आइरिय-भत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सलोचेउं सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्म चारित्त-जुत्ताणं पंच-विहाचाराण आइरियाणं, आयारादिसुद-णाणोदेसयाणं उवज्झायाणं, ति-रयण-गुण-पालण-रयाणं सव्वसाहूणं, सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वन्दामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाहो सुगई-गमणं समाहि-मरणं जिण-गुण-संपत्ति होउ मज्झं ।

(स्वाध्याय के प्रारंभ में गणधरवलय मंत्रों (पृष्ठ सं. २३२) तथा सरस्वती स्तोत्र (पृष्ठ सं. ५०–५१) को स्मरण करते हुए सिद्धान्त शास्त्रों के अतिरिक्त किसी भी शास्त्र का स्वाध्याय करे।)

।। इति स्वाध्याय प्रतिष्ठापन (प्रारम्भ) विधिः समाप्तम्।।

(इस प्रकार उपर्युक्त विधि सम्पन्न कर स्वाध्याय प्रारम्भ करे और जब सूर्योदय होने में दो घड़ी अवशेष बचे तब निम्नलिखित क्रियापूर्वक स्वाध्याय समाप्त कर देवे)

विज्ञापन

अथ अपर रात्रि स्वाध्याय निष्ठापन (समाप्ति) क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री श्रुतभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(नमस्कार के साथ इस विज्ञापन पढ़कर फिर तीन आवर्त और एक शिरोनति करके **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं.-२) पढ़े। पुनः तीन आवर्त और एक शिरोनति कर २७ उच्छ्वास पूर्वक कायोत्सर्ग कर भूमि स्पर्श करते हुए नमस्कार करें, इसके बाद **चतुर्विंशति स्तव** (पृष्ठ सं.-३) पढ़ कर अन्त में फिर तीन आवर्त और एक शिरोनति करे। तदनंतर **लघुश्रुतभक्ति** एवं **शारदा स्तुति** के साथ **जिनवाणी** को नमन करते हुए योग्य स्थान पर विराजमान करें।)

।। इति स्वाध्याय निष्ठापन विधिः समाप्तम् ।।

स्वाध्याय समाप्त करने के बाद साधु गण रात्रि में प्रमाद वश लगे हुए दोषों का परिमार्जन करने के लिए अग्रिम पृष्ठ पर छपा हुआ रात्रिक प्रतिक्रमण करें। देखें पृष्ठ ७।

रात्रिक प्रतिक्रमण करने का विधान

सूर्योदय से दो घड़ी (४८ मिनिट) पहले रात्रिक प्रतिक्रमण का समय कहा गया है। यह प्रतिक्रमण प्रातःकालीन सामायिक के पूर्व माना गया है। जैसे कहा भी है-

"पश्चिमरात्रौ प्रतिक्रमणे क्रियाकर्माणि चत्वारि"

-मूलाचार गाथा ६०२ की टीका

रात्रिक (दैवसिक) प्रतिक्रमण

प्रतिज्ञा सूत्र

जीवे प्रमाद-जनिताः प्रचुराः प्रदोषा
यस्मात् प्रतिक्रमणतः प्रलयं प्रयान्ति।
तस्मात्-तदर्थ-ममलं मुनि-बोधनार्थं,
वक्ष्ये विचित्र-भव-कर्म-विशोधनार्थम्।।१।।

उद्देश्य सूत्र

पापिष्ठेन दुरात्मना जड़धिया माया विना-लोभिना,
रागद्वेष-मलीमसेन मनसा दुष्कर्म यन्-निर्मितम्।
त्रैलोक्याधिपते जिनेन्द्र! भवतः श्री-पाद-मूलेऽधुना
निन्दा-पूर्वमहं जहामि सततं वर्वर्तिषुः सत्पथे।।२।।

संकल्प सूत्र

खम्मामि सव्व-जीवाणं सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती में सव्व-भूदेसु वैरं मज्झं ण केण वि।।३।।

राग परित्याग सूत्र

राग-बंध-पदोसं च हरिसं दीण-भावयं।
उस्सुगत्तं भयं सोगं रदि-मरदिं च वोस्सरे।।४।।

पश्चातात्ताप सूत्र

हा! दुट्ठु-कयं हा! दुट्ठु-चिंतियं भासियं च हा! दुट्ठं
अंतो-अंतो डज्झमि पच्छत्तावेण वेदंतो।।५।।

दव्वे खेत्ते काले भावे च कदावराह-सोहणयं।
णिंदण-गरहण-जुत्तो मण-वच-कायेण पडिक्कमणं।।६।।

ए-इन्दिया, बे-इन्दिया, ते-इन्दिया, चतुरिंदिया, पंचिंदिया, पुढवि-काइया, आउ-काइया, तेउ-काइया, वाउ-काइया, वणप्फदि-काइया, तस-काइया, एदेसिं उद्दावणं, परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमणिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

वद-समि-दिंदिय रोधो, लोचो आवासय-मचेल-मण्हाणं।
खिदि-सयण-मदंतवणं, ठिदि-भोयण-मेयभत्तं च।।१।।

एदे खलु मूल-गुणा, समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता।
एत्थ पमाद-कदादो, अइचारादो णियत्तो हं।।२।।

छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं

पंचमहाव्रत-पंचसमिति-पंचेन्द्रिय-रोध-लोच-षडावश्यक-क्रियादयो अष्टाविंशति-मूलगुणाः, उत्तम-क्षमा-मार्दवार्जव-शौच-सत्य-संयम-तपस्-त्यागाकिंचन्य-ब्रह्मचर्याणि, दश-लाक्षणिको धर्मः, अष्टादश-शील-सहस्राणि, चतुरशीति-लक्षगुणाः, त्रयोदश-विधं चारित्रं, द्वादश-विधं तपश्चेति सकलं सम्पूर्णं अर्हत्-सिद्धा-चार्योपध्याय- सर्व-साधु-साक्षिकं, सम्यक्त्व-पूर्वकं, दृढ़-व्रतं सुव्रतं समारूढं ते मे भवतु।

अथ सर्वातिचार-विशुद्ध्यर्थं (रात्रिक) दैवसिक प्रतिक्रमण- क्रियायां, कृत-दोष निराकरणार्थं पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल कर्म क्षयार्थं भाव पूजा-वंदना-स्तव-समेतं आलोचना सिद्धभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहाँ नमस्कार कर तीन आवर्त और एक शिरोनति करके निम्नलिखित **सामायिक दण्डक** पढ़ें।)

सामायिक दण्डक

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

चत्तारि मंगलं-अरहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

अड्ढाइज्ज-दीव-दो-समुद्देसु, पण्णारस-कम्मभूमिसु, जाव-अरहंताणं, भयवंताणं, आदियराणं, तित्थयराणं, जिणाणं, जिणोत्तमाणं, केवलियाणं, सिद्धाणं, बुद्धाणं, परिणिव्वुदाणं, अंतय-डाणं, पारयडाणं, धम्माइरियाणं, धम्मदेसगाणं, धम्म-णायगाणं, धम्म-वर-चाउरंग-चक्कवट्टीणं, देवाहिदेवाणं, णाणाणं, दंसणाणं, चरित्ताणं सदा करेमि किरियम्मं करेमि भन्ते! सामायियं सव्व-सावज्ज-जोगं पच्चक्खामि जावज्जीवं तिविहेण-मणसा वचसा काएण, ण करेमि, ण कारेमि, ण अण्णं करंतं पि समणुमणामि। तस्स भन्ते! अइचारं पडिक्कमामि, णिंदामि, गरहामि अप्पाणं, जाव अरहंताणं, भयवंताणं पज्जुवासं करेमि तावकालं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

(यहां तीन आवर्त एक शिरोनति करके सत्ताईस उच्छ्वास पूर्वक कायोत्सर्ग करें। पश्चात् भूमि स्पर्श कर नमस्कार करें पुनः तीन आवर्त और एक शिरोनति करें, पश्चात् निम्नलिखित **चतुर्विंशति स्तव** पढ़ें)

चतुर्विंशति स्तव

थोस्सामि हं जिणवरे तित्थयरे केवली अणंत जिणे।
णर-पवर-लोय-महिए विहुय-रय मले महप्पण्णे।।१।।
लोयस्सुज्जोययरे धम्मं तित्थंकरे जिणे वंदे।
अरहंते कित्तिस्से चौबीसं चेव केवलिणो।।२।।
उसह-मजियं च वंदे संभव-मभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वन्दे।।३।।
सुविहिं च पुप्फयंतं सीयल सेयं च वासुपुज्जं च।
विमल-मणंतं भयवं धम्मं संतिं च वंदामि।।४।।
कुंथुं च जिण वरिंदं अरं च मल्लिं च सुव्वयं च णमिं।
वंदाम्यारिट्ठणेमिं तह पासं वड्ढमाणं च।।५।।
एवं मए अभित्थुआ विहुय-रय-मला पहीण जर-मरणा।
चउवीसं पि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु।।६।।

कित्तिय वंदिय महिया एदे लोगोत्तमा जिणा जिद्धा।
आरोग्ग-णाण-लाहं दिंतु समाहिं च मे बोहिं।।७।।
चंदेहिं णिम्मल-यरा; आइच्चेहिं अहिय-पया-संता।
सायर-मिव गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।८।।

मुख्य मंगल

श्रीमते वर्धमानाय नमो नमित-विद्-विषे।
यज्ज्ञानान्तर्गतं भूत्वा त्रैलोक्यं गोष्पदायते।।१।।

सिद्ध-भक्ति

तव-सिद्धे णय-सिद्धे संजम सिद्धे चरित्त-सिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि।।२।।

इच्छामि भन्ते! सिद्धभक्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण-सम्मचारित्त-जुत्ताणं, अट्ठविह-कम्म-विप्प- मुक्काणं, अट्ठगुण संपण्णाणं उड्ढलोय-मत्थयम्मि पयट्ठियाणं, तव-सिद्धाणं, णय-सिद्धाणं, संजम-सिद्धाणं, चरित्त-सिद्धाणं, अतीताणागद-वट्टमाण-कालत्तय-सिद्धाणं, सव्व-सिद्धाणं सया णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वन्दामि णमंसामि दुक्ख-क्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइ-गमणं समाहि-मरणं जिन-गुण-सम्पत्ति होउ मज्झं।

आलोचना

इच्छामि भन्ते! चरित्तायारो तेरस-विहो, परिविहा-विदो, पंच-महव्वद दाणि पंच-समिदीओ तिगुत्तीओ चेदि। तत्थ पढमे महव्वदे, पाणा-दिवादादो वेरमणं से पुढवि-काइया-जीवा-असंखेज्जासंखेज्जा, आउ-काइया-जीवा-असंखेज्जासंखेज्जा, तेउ-काइया-जीवा-असंखेज्जा-संखेज्जा, वाउ-काइया-जीवा- असंखेज्जासंखेज्जा, वणप्फदि-काइया-जीवा-अणंताणंता, हरिआ, वीआ, अंकुरा, छिण्णा भिण्णा एदेसिं उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं उवघादो कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समुण-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

वे-इन्दिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, कुक्खि-किमि-संख- खुल्लय, वराडय, अक्ख-रिट्ठय-गण्डवाल-संबुक्क-सिप्पि, पुलवि- काइया एदेसिं उद्दवणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

ते इन्दिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, कुन्थूद्देहिय-विंच्छिय-गोभिंद-गोजुव-मक्कुण-पिपीलियाइया एदेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

चउरिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, दंस-मसय-मक्खि-पयंग-कीड-भमर-महुयर, गोमच्छियाइया, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

पंचिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, अंडाइया, पोदाइया, जराइया, रसाइया, संसेदिमा, सम्मुच्छिमा, उब्भेदिमा, उववादिमा, अवि-चउरासीदिजोणि-पमुह-सद-सहस्सेसु, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

प्रतिक्रमण पीठिका-दण्डक

गद्य

इच्छामि भन्ते! (राइयम्मि) देवसियम्मि आलोचेउं, पंच-महव्वदाणि तत्थ पढमं महव्वदं पाणा-दिवादादो वेरमणं, विदियं महव्वदं मुसावादादो वेरमणं, तिदियं महव्वदं अदिण्णा दाणादो वेरमणं, चउत्थं महव्वदं मेहुणादो वेरमणं, पंचमं महव्वदं परिग्हादो वेरमणं, छट्ठं अणुव्वदं राई-भोयणादो वेरमणं। इरिया-समिदीए, भासा-समिदीए, एसणा-समिदीए, आदाण-निक्खेवण-समिदीए, उच्चार-पस्स-वण-खेल-सिंहाण-वियडि-पइट्ठावणिया समिदीए। मणगुत्तीए, वचि-गुत्तीए, काय-गुत्तीए। णाणेसु, दंसणेसु, चरित्तेसु, बावीसाय-परीसहेसु, पणवीसाय-भावणासु,

पणवीसाय-किरियासु, अट्ठारस-सील-सहस्सेसु, चउरासीदि-गुण-सय-सहस्सेसु, बारसण्हं संजमाणं, बारसण्हं तवाणं, बारसण्हं अंगाणं, चोदसण्हं पुव्वाणं, दंसण्हं मुंडाणं, दंसण्हं समण-धम्माणं, दसण्हं धम्मज्झाणाणं, णवण्हं बंभचेर-गुत्तीणं, णवण्हं णोकसायाणं, सोलसण्हं-कसायाणं, अट्ठण्हं कम्माणं, अट्ठण्हं पवयण-माउयाणं, अट्ठण्हं सुद्धीणं, सत्तण्हं भयाणं, सत्तविह संसाराणं, छण्हं जीव-णिकायाणं, छण्हं आवासयाणं, पंचण्हं इन्दियाणं, पंचण्हं महव्वयाणं, पंचण्हं समिदीणं, पंचण्हं चरित्ताणं, चउण्हं सण्णाणं, चउण्हं पच्चयाणं, चउण्हं उवसग्गाणं, मूलगुणाणं, उत्तरगुणाणं, दिट्ठियाए, पुट्ठियाए, पदोसियाए, परदावणियाए, से कोहेण वा, माणेण वा, माएण वा, लोहेण वा, रागेण वा, दोसेण वा, मोहेण वा, हस्सेण वा, भएण वा, पदोसेण वा, पमादेण वा, पिम्मेण वा, पिवासेण वा, लज्जेण वा, गारवेण वा, एदेसिं अच्चासणदाय, तिण्हं दण्डाणं, तिण्हं लेस्साणं, तिण्हं गारवाणं, तिण्हं अप्पसत्थ-संकिलेस-परिणामाणं, दोण्हं अट्ट-रुद्द-संकिलेस-परिणामाणं, मिच्छा-णाण, मिच्छा-दंसण, मिच्छा-चरित्ताणं, मिच्छत्त-पाउग्गं, असंयम-पाउग्गं, कसाय-पाउग्गं, जोग-पाउग्गं, अपाउग्ग-सेवणदाए, पाउग्-गरहणदाए, इत्थ मे जो कोई (राइओ) दैवसिओ अदिक्कमो, वदिक्कमो, आइचारो, अणाचारो, आभोगो, अणाभोगो। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि मए पडिक्कंतं तस्स मे सम्मत्त-मरणं, समाहिमरणं पंडिय-मरणं, वीरिय-मरणं, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहि-लाहो, सुगइ-गमणं, समाहि-मरणं, जिन-गुण-सम्पत्ति होउ मज्झं।

वद-समि-दिंदिय रोधो, लोचा आवासय-मचेल-मण्हाणं।
खिदि-सयण-मदंतवणं, ठिदि-भोयण-मेय-भत्तं च।।१।।

एदे खलु मूलगुणा, समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता।
एत्थ पमाद-कदादो, अइचारादो णियत्तोहं।।२।।

छेदोवट्ठावणं होउ मज्झं

अथ सर्वातिचार-विशुद्ध्यर्थं (रात्रिक) दैवसिक प्रतिक्रमण-क्रियायां कृत-दोष-निराकरणार्थं पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्मक्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री प्रतिक्रमण-भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

यहाँ भूमि स्पर्श करते हुए नमस्कार करे, पश्चात् तीन आवर्त और एक शिरोनति करके **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ. सं.-२) पढ़ कर कायोत्सर्ग करें पुनः **चतुर्विंशति स्तव** (पृष्ठ. सं.-३) पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।... ३

णमो जिणाणं! णमो जिणाणं! णमो जिणाणं! णमो णिस्सिहीए! णमो णिस्सिहीए! णमो णिस्सिहीए! णमोत्थु दे! णमोत्थु दे! णमोत्थु दे! अरहंत! सिद्ध! बुद्ध! णीरय! णिम्मल! सम-मण! सुभमण! सुसमत्थ! समजोग! सम-भाव! सल्लघट्टाणं सल्लघत्ताणं! णिब्भय! णीराय! णिद्दोस! णिम्मोह! णिम्मम! णिस्संग, णिस्सल्ल! माण-माय-मोस-मूरण! तवप्पहाणं! गुण-रयण-सील-सायर! अणंत! अप्पमेय! महदि-महावीर-वड्ढमाण! बुद्धि-रिसिणो! चेदि! णमोत्थु ए! णमोत्थु ए! णमोत्थु ए।

मम मंगलं-अरहंता य, सिद्धा य, बुद्धा य, जिणा य, केवलिणो, ओहिणाणिणे, मणपज्जवणाणिणो, चउदस-पुव्वं-गामिणो, सुद-समिदि-समिद्धा य, तवो य, बारह-विहो तवस्सी, गुणा य, गुणवंतो य, महरिसी, तित्थं, तित्थंकरा य, पवयणं, पवयणी य, णाणं, णाणी य, दंसणं, दंसणी य, संजमो, संजदा य, विणओ, विणदा य, बंभचेरवासो, बंभचारी य, गुत्तीओ चेव, गुत्ति-मंतो य, मुत्तीओ चेव, मुत्तिमंतो य, समिदीओ चेव, समिदि-मंतो य, सुसमय-परसमय-विदुं, खंतिक्खवगा य, खंतिवंतो य, खीण-मोहा य, खीणवंतो य, बोहिय-बुद्धा य, बुद्धिमंतो य, चेइय-रुक्खा-य, चेइयाणि।

उड्ढ-मह-तिरिय-लोए, सिद्धायदणाणी-णमंस्सामि, सिद्ध-णिसीहियाओ, अट्ठावय-पव्वये, सम्मेदे, उज्जंते, चंपाए, पावाए, मज्झिमाए,

हत्थिवालियसहाय, जाओ अण्णाओ काओ वि-णिसीहियाओ, जीव-लोयम्मि, इसिपब्भार-तल-गयाणं, सिद्धाणं, बुद्धाणं, कम्म-चक्क-मुक्काणं, णीरयाणं, णिम्मलाणं, गुरु-आइरिय- उवज्झायाणं, पव्व-त्तित्थेर-कुलयराणं, चउवण्णो य, समण-संघो य, भरहेरावएसु, दससु पंचसु महाविदेहेसु, जे लोए संति-साहवो-संजदा, तवसी एदे, मम मंगलं, पवित्तं, एदेहं मंगलं करेमि, भावदो विसुद्धो सिरसा अहि-चंदिऊण सिद्धे काऊण अंजलिं मत्थयम्मि, तिविहं तियरण सुद्धो।

।। इति निषिद्धिका दण्डकाः ।।

अथ रात्रिक-दैवसिक दोषालोचना

पडिक्कमामि भन्ते! देवसियस्स (राइयस्स) अइचारस्स, अणाचारस्स, मण-दुच्चरियस्स, वचि-दुच्चरियस्स, काय दुच्चरियस्स, णाणाइचारस्स, दंसणाइचारस्स, तवाइचाारस्स, वीरियाइचारस्स, चारि-त्ताइचारस्स, पंचण्हं-महव्वयाणं, पंचण्हं-समिदीणं, तिण्हं-गुत्तीणं, छण्हं-आवासयाणं, छण्हं-जीवणि-कायाणं, विराहणाए, पील-कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

पडिक्कमामि भन्ते! अइगमणे, णिग्गमणे, ठाणे, गमणे, चंकमणे, उवत्तणे, आउट्ठणे, पसारणे, आमासे, परिमासे, कुइदे, कक्कराइदे, चलिदे, णिसण्णे, सयणे, उव्वट्टणे, परियट्टणे, एइन्दियाणं, बेइन्दियाणं, तेइन्दियाणं, चउरिंदियाणं, पंचिंदियाणं, जीवाणं, संघट्टणाए, संघादणाए, उद्दावणाए, परिदावणाए, विराहणाए, एत्थ मे जो कोई (राइयो) देवसिओ अदिक्कमो, वदिक्कमो, अइचारो, अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

पडिक्कमामि भन्ते! इरियावहियाए, विराहणाए, उड्ढमुहं चरंतेण वा, अहोमुहं चरंतेण वा, तिरियमुहं चरंतेण वा, दिसिमुहं चरंतेण वा, विदिसिमुहं चरंतेण वा, पाणचंकमणदाए, वीयचंकमणदासए, हरिय चंकमणदाय, उत्तिंग-पणय-दय-मट्टिय-मक्कडय-त्तन्तु-संत्ताण-चंकमणदाय,

पुढवि-काइय-संघट्टणाए, आउ-काइय-संघट्टणाए, तेऊ-काइय-संघट्टणाए, तस-काइय-संघट्टणाए उद्दावणाए, परिदावणाए, विराहणाए, इत्थ मे जो कोई इरियावहियाए, अइचारो, अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

पडिक्कमामि भन्ते! उच्चार-पस्सवण-खेल-सिंहाण-वियडि-पइट्ठावणियाए, पइट्ठावंतेण जे कोई पाणा वा, भूदा वा, जीवा वा, सत्ता वा, संघट्टिादा वा, संघादिदा वा, उद्दाविदा वा, परिदाविदा वा, इत्थ मे जो कोई (राइओ) देवसिओ अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

पडिक्कमामि भन्ते! अणेस-णाय, पाण-भोयणाए, पणय-भोएणाए, बीय भोयणाए, हरिय-भोयणाए, आहा-कम्मेण वा, पच्छा-कम्मेण वा, पुराकम्मेण वा, उद्दिट्ठयडेण वा, णिद्दिट्ठयडेण वा, दयसंसिट्ठयडेण वा, रस-संसिट्ठयडेण वा, परिसादणियाए, पइट्ठावणियाए, उद्देसियाए, णिद्देसियाए, कीदयडे, मिस्से, जादे, ठविदे, रइदे, अणसिट्ठे, बलिपाहुडदे, पाहुडदे, घट्टिदे, मुच्छिदे, अइमत्त-भोयणाए इत्थ मे जो कोई गोयरिस्स अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

पडिक्कमामि भन्ते! सुमणिंदियाए, विराहणाए, इत्थि-विप्परियासियाए, दिट्ठिविप्परियासियाए, मणि-विप्परियासियाए, वचि-विप्परियासियाए, काय-विप्परियासियाए, भोयण-विप्परियासियाए, उच्चावयाए, सुमण-दंसण- विप्परियासियाए, पुव्वरए, पुव्वखेलिए, णाणा-चिंतासु, विसोतियासु इत्थ मे जो कोई (राइओ) देवसिंयो अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

पडिक्कमामि भन्ते! इत्थी-कहाए, अत्थ-कहाए, भत्त-कहाए, राय कहाए, चोर-कहाए, वेर-कहाए, पर-पासंड-कहाए, देस-कहाए, भास-कहाए, अ-कहाए, वि-कहाए, निट्ठुल्ल-कहाए, पर-पेसुण्ण-कहाए, कन्द-प्पियाए, कुक्कुचिच्याए, डंबरियाए, मोक्खरियाए, अप्प-पसंसणदाए, पर-परिवादणाए, पर-दुगन्छणदाए, पर-पीडा-कराए, सावज्जाणुमोयणियाए, इत्थ मे जो कोई (राइओ) देवसियो अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

पडिक्कमामि भन्ते! अट्टज्झाणे, रुद्दज्झाणे, इह-लोह-सण्णाए, पर-लोए-सण्णाए, आहार-सण्णाए, भय-सण्णाए, मेहुण-सण्णाए, परिग्गह-सण्णाए, कोह-सल्लाए, माण-सल्लाए, माया-सल्लाए, लोह-सल्लाए, पेम्म-सल्लाए, पिवास-सल्लाए, णियाण-सल्लाए, मिच्छा-दंसण-सल्लाए, कोह-कसाए, माण-कसाए, माया-कसाए, लोह-कसाए, किण्ह-लेस्स-परिणामे, णील-लेस्स-परिणामे, काउ-लेस्स-परिणामे, आरम्भ-परिणामे, परिग्गह-परिणामे, पडिसया-हिलास-परिणामे, मिच्छादंसण-परिणामे, असंजम-परिणामे, पाव-जोग-परिणामे, काय-सुहाहिलास-परिणामे, सद्देसु, रूवेसु, गन्धेसु, रसेसु, फासेसु, काइयाहिकरणियाए, पदोसियाए, परदावणियाए, पाणाइवाइयासु, इत्थ मे जो कोई (राइओ) देवसियो अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

पडिक्कमामि भन्ते! एक्के भावे अणाचारे, वेसु राय-दोसेसु, तीसु दंडेसु, तीसु गुत्तीसु, तीसु गारवेसु, चउसु कसाएसु, चउसु सण्णासु, पंचसु महव्वएसु, पंचसु समिदीसु, छसुजीव-णिकाएसु, छसु आवासएसु, सत्तसु भएसु, अट्ठसु मएसु, णवसु बंभचेर-गुत्तीसु, दसविहेसु समण-धम्मेसु, एयारस-विहेसु उवासयपडिमासु, बारह-विहेसु, भिक्खु-पडिमासु, तेरस-विहेसु किरिया-ट्ठाणेसु, चउदस-विहेसु, भूद-गामेसु, पणरस-विहेसु, पमाय-ठाणेसु, सोलह-विहेसु पवयणेसु, सत्तारस-विहेसु असंहमेसु, अट्ठा-रस-विहेसु असंपराएसु, उणवीसाय णाहज्झाणेसु, वीसाए असमाहि-ट्ठाणेसु, एक्कवीसाए, सबलेसु, बावीसाए परीसहेसु, तेवीसाय सुद्दयड-ज्झाणेसु, चउवीसाए अरहंतेसु, पणवीसाए भावणासु, पणवीसाए किरियाट्ठाणेसु, छब्बीसाए पुढवीसु, सत्तवी-साए अणगार-गुणेसु, अट्ठावीसाए आयार-कप्पेसु, एउणतीसाए पास-सुत्त-पसंगेसु, तीसाए मोहणी-ठाणेसु, एकत्तीसाए कम्म-विवाएसु, बत्तीसाए जिणो-वएसेसु, तेतीसाए

अच्चासणदाए, संखेवेण जीवाण-अच्चासणदाए, अजीवाण अच्चासणदाए, णाणस्स अच्चासणादाए, दंसणस्स अच्चासणदाए, चरित्तस्स अच्चासणदाए, तवस्स अच्चासणदाए, वीरियस्स अच्चासणदाए, तं सव्वं पुव्वं दुच्चरियं गरहामि, आगामेसीएसु पच्चुप्पण्णं इक्कंतं पडिक्कमामि, अणागयं पच्चक्खामि, अगरहियं गरहामि, अणिंदियं णिंदामि, अणालोचियं आलोचेमि, आराहण- मब्भुट्ठेमि, विराहणं पडिक्कमामि, इत्थ मे जो कोई (राइओ) देवसियो अइचारो अणाचारी तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

।। मैं निर्ग्रन्थ पद को स्वेच्छा से ग्रहण करता हूँ।।

इच्छामि भन्ते! इमं णिग्गंथं पवयणं अणुत्तरं केवलियं, पडिपुण्णं, णेगाइयं, सामाइयं, संसुद्धं, सल्लघट्टाणं, सल्लघत्ताणं सिद्धिमग्गं, सेढिमग्गं, खंतिमग्गं, मुत्तिमग्गं, पमुत्तिमग्गं, मोक्खमग्गं, पमोक्खमग्गं, णिज्जाणमग्गं, णिव्वाणमग्गं, सव्व-दुक्खपरिहाणि-मग्गं, सुचरिय परिणव्वाण-मग्गं, अवित्तहं अविसंति-पवयण, उत्तमं तं सद्दहामि, तं पत्तियामि, तं रोचेमि, तं फासेमि, इदोत्तरं अण्णं णत्थि, ण भूदं, ण भविस्सदि, णाणेण वा, दंसणेण वा, चरित्तेण वा, सुत्तेण वा, इदो जीवा सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परि-णिव्वाण-यंति, सव्व-दुक्खाणं मंतं-करेंति, पडिवियाणंति, समणोमि, संजदोमि, उवरदोमि, उवसंतोमि, उवहि-णियडि-माण-माय-मोस-मूरण-मिच्छाणाण-मिच्छा-दंसण-मिच्छाचरित्तं च पडिविरदोमि, सम्मणाण-सम्मदंसण- सम्मचरित्तं च रोचमि, जं जिणवरेहिं पण्णत्तं, इत्थ मे जो कोई (राइओ) देवसियो अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

।। सार्वकालिक दोषों में आलोचना।।

पडिक्कमामि भन्ते! सव्वस्स, सव्वकालियाए, इरियासमिदीए, भासा-समिदीए, एसणा-समिदीए, आदाण-निक्खेवण-समिदीए, उच्चार-पस्सवण-खेल-सिंहाणय-वियडि-पइ-ट्ठावणि-समिदीए, मण-गुत्तीए,

वचि-गुत्तीए, काय-गुत्तीए, पाणा दिवादादो-वेरमणाए, मुसावादादो-वेरमणाए, अदिण्ण-दाणादो-वेरमणाए, मेहुणादो-वेरमणाए, परिग्गहादो-वेरमणाए, राइ-भोयणादो-वेरमणाए, सव्व-विराहणाए, सव्व-धम्म-अइक्कमणदाए, सव्व-मिच्छा-चरियाए, इत्थ मे जो कोई (राइओ) देवसियो अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

।। वीर-भक्ति कायोत्सर्ग की आलोचना ।।

इच्छामि भन्ते! वीर-भक्ति काउस्सग्गो जो मे देवसियो (राइओ) अइचारो, अणाचारो, आभोगो, अणाभोगो, काइओ, वाइओ, माणसिओ, दुच्चिंतिओ, दुब्भासिओ, दुप्परिणामिओ, दुस्समणीओ, णाणे, दंसणे, चरित्ते, सुत्ते, सामाइए, पंचण्हं महव्वयाणं, पंचण्हं समिदीणं, तिण्हं गुत्तीणं, छण्हं जीव-णिकायाणं, छण्हं आवासयाणं, विराहणाए, अट्ठ-विहस्स कम्मस्स-णिग्घादणाए, अण्णहा उस्सासिएण वा, णिस्सासिएण वा, उम्मिसिएण वा, णिम्मिसिएण वा, खासिएण वा, छिंकिएण वा, जंभाइएणा वा, सुहुमेहिं-अंग-चला- चलेहिं, दिट्ठि-चलाचलेहिं, एदेहिं सव्वेहिं आयरेहिं, अ-समाहिं- पत्तेहिं, जाव अरहंताणं, भयवंताणं, पज्जुवासं करेमि, ताव कायं पाव कम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

वद-समि-दिंदिय रोधो, लोचा आवासय-मचेल-मण्हाणं।
खिदि-सयण-मदंतवणं, ठिदि-भोयण-मेय-भत्तं च।।१।।

एदे खलु मूलगुणा, समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता।
एत्थ पमाद-कदादो, अइचारादो णियत्तो हं।।२।।

छेदोवट्टावणं होउ मज्झं

अथ सर्वातिचार-विशुद्ध्यर्थं (राइओ) देवसियो प्रतिक्रमण- क्रियायां कृत-दोष-निराकरणार्थं पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्मक्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री निष्ठितकरण-वीर-भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(ऐसी प्रतिज्ञा करके भूमि स्पर्श करते हुए नमस्कार करे, पश्चात् तीन आवर्त और एक शिरोनति करके **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं.-२) पढ़कर कायोत्सर्ग करें, पश्चात् **चतुर्विंशति स्तव** (पृष्ठ सं.-३ पढ़े)

वीर-भक्ति

(शार्दूल विक्रीडित छन्द)

यः सर्वाणि चराचराणि विधि-वद्, द्रव्याणि तेषां गुणान्,
पर्यायानपि भूत-भावि-भवितः सर्वान् सदा सर्वदा।
जानीते युगपत्-प्रतिक्षण-मतः सर्वज्ञ इत्युच्यते,
सर्वज्ञाय जिनेश्वराय महते वीराय तस्मै नमः।।१।।

वीरः सर्व-सुरासुरेन्द्र-महितो वीरं बुधाः संश्रिता,
वीरेणाभिहतः स्व-कर्म-निचयो वीराय भक्त्या नमः।
वीरा तीर्थ-मिदं प्रवृत्त-मतुलं वीरस्य वीरं तपो,
वीरे श्री-द्युति-कांति-कीर्ति-धृतयो, हे वीर! भद्रंत्वयि।।२।।

ये वीर-पादौ प्रणमन्ति नित्यं, ध्यान-स्थिताःसंयम-योग-युक्ताः।
ते वीत-शोका हि भवन्ति लोके, संसार-दुर्गं विषमं तरन्ति।।३।।

व्रत-समुदय-मूलः संयम-स्कंध-बंधो,
यम-नियम-पयोभि-र्वर्धितः शील-शाखः।
समिति-कलिक-भारो गुप्ति-गुप्त-प्रवालो,
गुण-कुसुम-सुगंधिः सत्-तपश्चित्र-पत्रः।।४।।

शिव-सुख-फलदायी यो दया-छाय-योद्धः,
शुभ-जन-पथिकानां खेद-नोदे समर्थः।
दुरित-रविज-तापं प्रापयन्नन्तभावम्,
स भव-विभव-हान्यै नोऽस्तु चारित्र-वृक्षः।।५।।

चारित्रं सर्व-जिनैश्चरितं प्रोक्तं च सर्व-शिष्येभ्यः।
प्रणमामि पंच-भेदं पंचम-चारित्र-लाभाय।।६।।

धर्मः सर्व-सुखाकरो हित-करो, धर्मं बुधाश्चिन्वते,
धर्मेणैव समाप्यते शिव-सुखं धर्माय तस्मै नमः।
धर्मान्-नास्त्य-परः सुहृद्-भव-भृतां धर्मस्य मूलं दया,
धर्मे चित्त-महं दधे प्रतिदिनं हे धर्म! मां पालय।।७।।

धम्मो मंगल-मुक्किट्ठं अहिंसा संयमो तवो।
देवा वि तस्स पणमंति जस्स धम्मे सया मणो।।८।।

अंचलिका

इच्छामि भन्ते! पडिक्कमणादिचार-मालोचेउं, सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचारित्त-तव-वीरियाचारेसु, जम-णियम-संजम-सील-मूलुत्तर-गुणेसु, सव्व-मइचारं सावज्ज-जोगं पडिविरदोमि, असंखेज्ज-लोग-अज्झवसाय, ठाणाणि, अप्पसत्थ-जोग-सण्णा-णिंदिय-कसाय-गारव-किरियासु, मण-वयण-काय-करण-दुप्पणिहाणाणि, परि-चिंति-याणि, किण्ह-णील-काउ-लेस्साओ, विकहा-पालिकुंचिएण, उम्मग-हस्स-रदि-अरदि-सोय-भय-दुगंछ-वेयण-विज्झंभ-जम्भइ-आणि, अट्ट-रुद्द-संकिलेस-परिणामाणि-परिणामदाणि, अणिहुद-कर-चरण-मण-वयण-काय-करणेण- अक्खित्त-बहुल-परायणेण, अपडि- पुण्णेण वासरक्खरावय-परिसंघाय-पडिवत्तिएवा, अच्छा-कारिदं मिच्छा-मेलिदं, आ-मेलिदं, वा-मेलिदं, अण्णहा-दिण्णं, अण्णहा- पडिच्छिदं, आवास-एसु-परिहीणदाए, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

वद-समि-दिंदिय रोधो, लोचा आवासय-मचेल-मण्हाणं।
खिदि-सयण-मदंतवणं, ठिदि-भोयण-मेयभत्तं च।।१।।

एदे खलु मूल-गुणा, समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता।
एत्थ पमाद-कदादो, अइचारादो णियत्तोऽहं।।२।।

छेदोवट्टावणं होउ मज्झं

अथ सर्वातिचार-विशुद्ध्यर्थं (राइओ) देवसियो प्रतिक्रमण- क्रियायां कृत-दोष-निराकरणार्थं पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्मक्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं चतुर्विंशति-तीर्थंकर- भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

यहाँ भूमि स्पर्श करते हुए नमस्कार करें, पश्चात् तीन आवर्त और एक शिरोनति करके **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं.-२) पढ़ कर कायोत्सर्ग करें पश्चात् निम्नलिखित चतुर्विंशतितीर्थंकर भक्ति पढ़ें।

चतुर्विंशति तीर्थंकर भक्तिः

चउवीसं तित्तथयरे उसहाइ-वीर-पच्छिमे वन्दे।
सव्वे सगण-गण-हरे सिद्धे सिरसा णमंसामि।।१।।

ये लोकेऽष्ट-सहस्र लक्षण-धरा, ज्ञेयार्णवान्तर्गता,
ये सम्यग्-भव-जाल-हेतु-मथनाश्चन्द्रार्क-तेजोऽधिकाः।
ये साध्विन्द्र-सुराप्सरो-गण-शतै-र्गीत-प्रणूतार्चितास्,
तान् देवान् वृषभादि-वीर-चरमान् भक्त्या नमस्याम्यहम्।।२।।

नाभेयं देवपूज्यं, जिनवर-मजितं सर्व-लोक-प्रदीपम्।
सर्वज्ञं संभवाख्यं, मुनि-गण-वृषभं नन्दनं देवदेवम्।।
कर्मारिघ्नं सुबुद्धिं, वर-कमल-निभं पद्म-पुष्पाभि-गंधम्।
क्षान्तं दान्तं सुपार्श्वं, सकल-शशि-निभं चंद्रनामान-मीडे।।३।।

विख्यातं पुष्पदंतं, भव-भय-मथनं शीतलं लोक-नाथम्
श्रेयांसं शील-कोशं, प्रवर-नर-गुरुं वासुपूज्यं सुपूज्यम्।।
मुक्तं दान्तेंद्रियाश्वं, विमल-मृषि-पतिं सिंहसेन्यं मुनींद्रम्
धर्मं सद् धर्म-केतुं, शम-दम-निलयं स्तौमि शांतिं शरण्यम्।।४।।

कुन्थुं सिद्धालयस्थं, श्रमण-पतिमरं त्यक्त-भोगेषु चक्रम्।
मल्लिं विख्यात-गोत्रं, खचर-गण-नुतं सुव्रतं सौख्य-राशिम्
देवेन्द्रार्च्यं नमीशं, हरि-कुल-तिलकं नेमिचन्द्रं भवान्तम्
पार्श्वं नागेंद्र-वंद्यं, शरण-मह-मितो वर्धमानं च भक्त्या।।५।।

इच्छामि भंते! चउवीस-तित्थयर-भत्ति-काउ-स्सग्गो कओ, तस्सालोचेउं पंच-महा-कल्याण-संपण्णाणं, अट्ठ-महा-पाडिहेर-सयाणं, चउतीसाति-सयविसेस-संजुत्ताणं, बत्तीस-देविंद-मणि-मउड-मत्थय-महिदाणं, बलदेव-वासुदेव-चक्कहर-रिसि-मुणि-जइ-अणगारोवगूढाणं, थुइ-सह-सहस्स-णिलयाणं, उस-हाइ-वीर-पच्छिम-मंगल-महा-पुरिसाणं, सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ गमणं, समाहि-मरणं, जिण-गुण-संपत्ति होउ मज्झं।

वद-समि-दिंदिय रोधो, लोचावासय-मचेल-मण्हाणं।
खिदि-सयण-मदंतवणं, ठिदि-भोयण-मेयभत्तं च।।१।।

एदे खलु मूल-गुणा, समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता।
एत्थ पमाद-कदादो, अइचारादो णियत्तोऽहं।।२।।

छेदोवट्टावणं होउ मज्झं

अथ सर्वातिचार-विशुद्ध्यर्थं (राइओ) दैवसिक प्रतिक्रमण-क्रियायां कृत-दोष-निराकरणार्थ पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्मक्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति, प्रतिक्रमणभक्ति, निष्ठित-करण-वीर-भक्ति, चतुर्विंशति तीर्थंकर भक्तीः कृत्वा तद्धीनाधिक-दोष-विशुद्ध्यर्थं, आत्म-पवित्री-करणार्थं समाधिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

इस प्रकार प्रतिज्ञा करके **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ. सं.-२) पढ़ कर कायोत्सर्ग करें पश्चात् **चतुर्विंशति स्तव** (पृष्ठ. सं.-३) पढ़े।

लघु समाधि भक्तिः

अथेष्ठ प्रार्थना प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः।
शास्त्राभ्यासो जिनपति-नुतिः संगतिः सर्वदार्यैः।
सद्वृत्तानां गुण-गण-कथा दोष-वादे च मौनम्।
सर्वस्यापि प्रिय-हित-वचो भावनाचात्म-तत्त्वे।
सम्पद्यन्तां मम भव-भवे यावदेतेऽपवर्गः।।१।।

तव पादौ मम हृदये, मम हृदयं तव पद-द्वये लीनम्।
तिष्ठतु जिनेन्द्र! तावत्-यावन्-निर्वाण-सम्प्राप्तिः।।२।।

अक्खर-पयत्थ-हीणं, मत्ता-हीणं च जं मए भणियम्।
तं खमहु णाण-देव! य मज्झवि दुक्खक्खयं कुणउ।।३।।

आलोचना

इच्छामि भन्ते! समाहि-भत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सलोचेउं, रयणत्तय-सरूव-परमप्प-झाण-लक्खण-समाहि-भत्तीए सया णिच्च-कालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ गमणं, समाहि-मरणं, जिण-गुण-संपत्ति होउ मज्झं।

॥ इति दैवसिक (रात्रिक) प्रतिक्रमण-समाप्तम् ॥

रात्रि-योग-निष्ठापन-विधिः

अब रात्रिक प्रतिक्रमण क्रिया की समाप्ति के बाद, कल सायंकाल प्रतिक्रमण के बाद जो रात्रि-योग प्रतिष्ठापन ("आज रात्रि को मैं इसी वसतिका में रहूँगा" ऐसा नियम विशेष) किया था, उसका निष्ठापन (रात्रि को जो इसी वसतिका में रहने का जो नियम किया था उसको समाप्त) करने के लिए निम्नलिखित प्रयोग विधि करनी चाहिए।

विज्ञापन

अथ रात्रियोग-निष्ठापन-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वंदना-स्तव-समेतं योगि-भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(विज्ञापन पढ़ करके नमस्कार करें, पश्चात् तीन आवर्त और एक शिरोनति करके **सामायिक दंडक** (पृष्ठ. सं.-२) एवं **चतुर्विंशति स्तव** (पृष्ठ. सं.-३)पश्चात् निम्नलिखित योगभक्ति पढ़े।)

लघु योगि-भक्ति

जातिजरोरुरोग मरणातुर, शोक सहस्रदीपिताः।
दुःसहनरकपतन सन्त्रस्तधियः प्रतिबुद्धचेतसः।।
जीवितमंबु बिंदुचपलं, तडिदभ्रसमा विभूतयः।
सकलमिदंविचिन्त्यमुनयः, प्रशमायवनान्तमाश्रिताः।।१।।

(भद्रिका छन्द)

वन में जाकर साधु क्या करता है?

व्रतसमिति गुप्ति संयुताः, शमसुखमाधाय मनसि वीतमोहाः।
ध्यानाध्ययनवशंगताः, विशुद्धये कर्मणां तपश्चरन्ति।।२।।

(दुबई छन्द)

ग्रीष्म ऋतु में मुनिराज क्या करते हैं?

दिनकर किरणनिकरसंतप्त, शिलानिचयेषु निष्पृहाः।
मलपटला-वलिप्त तनवः, शिथिली कृतकर्म बंधनाः।।
व्यपगतमदनदर्प रतिदोष, कषाय विरक्त मत्सराः।
गिरिशिखरेषुचंडकिरणाभि, मुखस्थितयो दिगम्बराः।।३।।

भद्रिका छन्द

मुनिराज भयंकर आतप की वेदना कैसे सहते हैं?

सज्ज्ञानामृतपायिभिः, क्षान्तिपयः सिञ्च्यमानपुण्यकायैः।
धृतसंतोषच्छत्रकैः, तापस्तीव्रोऽपि सह्यते मनीन्द्रैः।।४।।

वर्षा ऋतु में मुनिराज क्या करते हैं?

शिखिगल कज्जलालिमलिनै, र्विबुधाधिपचाप चित्रितैः।
भीमरवैर्विसृष्टचण्डा शनि, शीतल वायु वृष्टिभिः।।
गगनतलं विलोक्य जलदैः, स्थगितं सहसा तपोधनाः।
पुनरपि तरुतलेषु विषमासु, निशासु विशंकमासते।।५।।

जलधाराशरताडिता, न चलन्ति चरित्रतः सदा नृसिंहा।
संसार दुःख भीरवः, परीषहा राति-घातिनः प्रवीरा।।६।।

दुबई छन्द

शीतकाल में वे मुनिराज क्या करते हैं?

अविरतबहल तुहिनकण, वारिभिरंघ्रिपपत्र पातनै।
रनवरत-प्रमुक्त-सात्कार-रवैः, पुरुषै-रथानिलैःशोषित-गात्र-यष्टयः

इह श्रमणा धृतिकंबलावृताः शिशिरनिशां।
तुषार विषमां गमयन्ति, चतुःपथे स्थिताः।।७।।

स्तुति फल की याचना

इति योगत्रयधारिणः, सकल-तपशालिनःप्रवृद्ध-पुण्यकायाः।
परमानन्द-सुखैषिणः, समाधिमग्र्यं दिशंतुनो भदन्ताः।।८।।

अञ्चलिका

इच्छामि भन्ते! योगि भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, अड्ढाइज्ज-दीव-दो-समुद्देसु, पण्णा-रस-कम्म-भूमिसु, आदावण-रुक्खमूल-अब्भोवास-ठाण-मोण-विरासणेक्कपास कुक्कुडासण-चउ-छ-पक्ख-खवणादि-जोग-जुत्ताणं, सव्व साहूणं, सया णिच्चकालं, अंचेमि, पूजेमि, वंदामि,

णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगइ-गमणं, समाहि-मरणं, जिण-गुण-संपत्ति होउ मज्झं।

उक्त प्रतिक्रमण एवं रात्रियोग निष्ठापन कर चुकने के बाद सूर्योदय होने के चौबीस मिनिट पूर्व से सूर्योदय होने के २४ मि. पश्चात् (सामायिक का यह ४८ मि. का जघन्य काल है) तक निम्नलिखित विधि के अनुसार प्रातः कालीन सामायिक करनी चाहिए।

आपराह्निक सामायिक विधिः

सामायिक के पूर्व की जाने वाली चतुर्दिग्वंदना

पूर्व दिशा में एक कायोत्सर्ग कर नमस्कार करके निम्न दिग्वंदना पढ़े।

प्राग्-दिग्-विदिगन्तरे, केवलि-जिन-सिद्ध-साधु-गण-देवाः
ये सर्वर्द्धि-समृद्धा, योगि-गणाँस्तानऽहं वन्दे।।१।।

दक्षिण दिशा में एक कायोत्सर्ग कर नमस्कार करके निम्न दिग्वंदना पढ़े।

दक्षिण-दिग्-विदिगन्तरे, केवलि-जिन-सिद्ध-साधु-गण-देवाः
ये सर्वर्द्धि-समृद्धा, योगि-गणाँस्तानऽहं वन्दे।।२।।

पश्चिम दिशा में एक कायोत्सर्ग कर नमस्कार करके निम्न दिग्वंदना पढ़े।

पश्चिम-दिग्-विदिगन्तरे, केवलि-जिन-सिद्ध-साधु-गण-देवाः
ये सर्वर्द्धि-समृद्धा, योगि-गणाँस्तानऽहं वन्दे।।३।।

उत्तर दिशा में एक कायोत्सर्ग कर नमस्कार करके निम्न दिग्वंदना पढ़े।

उत्तर-दिग्-विदिगन्तरे, केवलि-जिन-सिद्ध-साधु-गण-देवाः
ये सर्वर्द्धि-समृद्धा, योगि-गणाँस्तानऽहं वन्दे।।४।।

गुर्वावलि

तीर्थंकर केवलि, सामान्य केवलि, समुद्घात केवली, उपसर्ग केवलि, मूक केवली, अन्तःकृत केवलिभ्यो नमो नमः। तीर्थंकरोपदिष्ट-श्रुताय नमो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र-धारकाचार्योपाध्याय-सर्व-साधुभ्यो नमो नमः।

श्री मूल-संघे, कुन्दकुन्दाम्नाये, बलात्कार-गणे, सेन-गच्छे, नन्दी-संघस्य परम्परायां, श्री शान्तिसागरा-चार्या-जातास्तत् श्री-महावीरकीर्ति-आचार्या-जातास्तत् शिष्याः श्री कुन्थुसागराचार्या-जातास्तत् शिष्याः..... अहं (अपना नाम बोलना) जम्बूवृक्षो-पलक्षित जम्बूद्वीपे, भरतक्षेत्रे, आर्य-खण्ड, भारतदेशे.....प्रान्ते .....नगरे १००८ श्री..... जिन-चैत्यालय-मध्ये-अद्य, वीर निर्वाण सं. ..... वि.स. ..... मासोत्तममासे ..... मासे.....पक्षे..... शुभ तिथौ..... वासर पौर्वाह्णिक (माध्याह्निक) (आपराह्निक) काले, घटिका-द्वय (४८ मि.) पर्यन्तं सर्व-सावद्य-योग-विरतोऽस्मि।

ईर्या-पथ-शुद्धि

पडिक्कमामि भन्ते! इरिया वहियाए, विराह-णाए, अणागुत्ते, अइ-गमणे, णिग्गमणे, ठाणे गमणे, चंकमणे, पाणुग्गमणे, बीजुग्गमणे, हरिदुग्गमणे, उच्चार-पस्सवण-खेल-सिंहाण-वियडि-पइट्ठावणियाए, जे जीवा एइन्दिया वा, बेइन्दिया वा, तेइन्दिया वा, चउरिंदिया वा, पंचिदिया वा, णोल्लिदा वा, पेल्लिदा वा, संघट्टिदा वा, संघादिदा वा, उद्दाविदा वा, परिदाविदा वा, किरिंच्छिदा वा, लेस्सिदा वा, छिंदिदा वा, भिंदिदा वा, ठाणदो वा, ठाण-चंकमणदो वा, तस्स उत्तर-गुणं, तस्स पायच्छित्त-करणं, तस्स विसोहि-करणं, जाव अरहंताणं, भयवंताणं, णमोक्कारं, पज्जुवासं करेमि, तावकालं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि। (एक कायोत्सर्ग करें।)

ईर्या-पथ आलोचना

ईर्या-पथे प्रचलताद्य मया प्रमादा-
देकिन्द्रिय-प्रमुख-जीव-निकाय बाधा।
निर्वर्तिता यदि भवेदयुगान्तरेक्षा,
मिथ्या तदस्तु दुरितं गुरु-भक्तितो मे।।१।।

इच्छामि भन्ते! आलोचेउं इरियावहियस्य, पुव्वुत्तर-दक्खिण-पच्छिम-चउदिस-विदिसासु, विहर-माणेण जुगन्तर-दिट्ठिणा, भव्वेण दट्ठव्वा। पमाद-दोषेण, डव-डव-चरियाए, पाण-भूत-जीव-सत्ताणं उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

अथ कृत्य प्रतिज्ञा

नमोऽस्तु भगवन्! देव-वन्दनां करिष्यामि।

(इति सामायिक स्वीकार)

मुख्य मंगल

सिद्धं सम्पूर्ण-भव्यार्थं सिद्धेः कारण-मुत्तमम्।
प्रशस्त-दर्शन-ज्ञान-चारित्र-प्रतिपादनम्।।१।।

सुरेन्द्र-मुकुटाश्लिष्ट-पाद-पद्मांशु-केशरम्।
प्रणमामि महावीरं लोक-त्रितय मंगलम्।।२।।

सामायिक स्वीकार

खम्मामि सव्व-जीवाणं, सव्वे जीवा खमन्तु मे।
मित्ती मे सव्व-भूदेसु वैरं मज्झं ण केणवि।।१।।

राय-बंध-पदोसं च हरिसं दीण-भाववयं।
उस्सुगत्तं भयं सोगं, रदि-मरदिं च वोस्सरे।।२।।

हा! दुट्ठ-कयं हा! दुट्ठ-चिंतियं भासियं च हा! दुट्ठं।
अंतो-अंतो डज्झमि पच्छत्तावेण वेयंतो।।३।।

दव्वे खेत्ते काले भावे य कदा-वराह-सोहणयं।
णिंदण-गरहण-जुत्तो, मण-वच-काएण पडिक्कमणं।।४।।

समता सर्व-भूतेषु संयमः शुभ-भावना।
आर्त्त-रौद्र-परित्याग-स्तद्धि सामायिकं मतं।।५।।

अथ कृत्य-विज्ञापना

भगवन्! नमोस्तु प्रसीदन्तु, प्रभु-पादा-वंदिष्येऽहं। एषोऽहं सर्व-सावद्य-योगाद्-विरतोऽस्मि।

अथ पौर्वाह्णिक (माध्याह्निक) (आपराह्निक) देववन्दना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वंदना-स्तव-समेतं श्री चैत्यभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहाँ सर्वप्रथम भूमि-स्पर्शनात्मक पंचांग नमस्कार करें, पश्चात् तीन आवर्त और एक शिरोनति कर **सामायिक दंडक** (पृष्ठ. सं.-२) पढ़ें। फिर तीन आवर्त और एक शिरोनति के साथ कायोत्सर्ग करते हुए पंचांग नमस्कार करें। पश्चात् तीन आवर्त और एक शिरोनति करके **चतुर्विंशति-स्तव** (पृष्ठ. सं.-३) पुनः तीन आवर्त और एक शिरोनति करते हुए पिच्छिका युक्त दोनों हाथों को मुकुलित कर एवं उनकी कुहनियों को उदर पर रख कर **"जयति भगवान् हेमाम्भोज-प्रचार-विजृम्भिता....."** (**चैत्यभक्ति**) (पृष्ठ. सं. १५३) पढ़ें।

अथ कृत्य-विज्ञापना

अथ पौर्वाह्णिक देववन्दना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वंदना-स्तव-समेतं श्रीपञ्चमहागुरुभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहाँ भूमि स्पर्श करते हुए पंचांग नमस्कार करें। पश्चात् तीन आवर्त और एक शिरोनति करते हुए **सामायिक दण्डक** (पृ. सं.-२) पढ़े। पुनः तीन आवर्त और एक शिरोनति के साथ कायोत्सर्ग और पंचांग नमस्कार करें। तदनंतर तीन आवर्त एक शिरोनति कर **चतुर्विंशति स्तव** (पृ. सं.-२) पढ़ें। बाद में तीन आवर्त और एक शिरोनति करते हुए वंदना मुद्रा में निम्नलिखित **पंचमहागुरुभक्ति** पढ़ें।

अथ पञ्चमहागुरुभक्तिः

मणुयणाइंदसुरधरियछत्तत्तया। पंचकल्लाणसोक्खावलि पत्तया।।
दंसणं णाणज्झाणं अणंतं बलं। ते जिणा दिंतु अम्हं वरं मंगलं।।१।।

जेहिं झाणग्गिबाणेहिं अइदड्ढं। जम्मजरमरणणयरत्तयं दड्ढयं।।
जेहिं पत्तं सिवं सासयं ठाणयं। ते महं दिंतु सिद्धा वरं णाणयं।।२।।

पंचहाचारपंचग्गिसंसाहया। वारसंगाइसुअजलहिं अवगाहया।।
मोक्खलच्छीमहंती महंते सया। सूरिणो दिंतु मोक्खं गया संगया।।३।।

घोरसंसारभीमाडवीकाणणे। तिक्खवियरालणहपावपंचाणणे।
णट्ठमग्गाण जीवाण पहदेसिया। वंदिमो ते उवज्झाय अम्हे सया।।४।।

उग्गतवचरणकरणेहिंखीणंगया।धम्मवरझाणसुक्केक्कझाणंगया।।
णिब्भरंतवसिरीएसमालिंगया।साहवोतेमहंमोक्खपथमग्गया।।५।।

एण थोत्तेण जो पंचगुरुवंदए। गुरुयसंसारघणवेल्लि सो छिंदये।
लहइसोसिद्धिसोक्खाइंबहुमाणणं।कुणइकम्मिंधणप्पुञ्जपज्जालणं।।६।।

अरुहा सिद्धाइरिया उवज्झाया साहु पंचपरमेट्ठि।
एदे पंच णमोयारो भवे भवे मम सुहं दिंतु।।७।।

इच्छामि भंते! पंचमहागुरुभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं अट्ठमहा-पाडिहेरसंजुत्ताणं अरहंताणं, अट्ठगुणसंपण्णांणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं सिद्धाणं, अट्ठपवयणमाउसंजुत्ताणं आयरियाणं, आयारादिसुदणाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं तिरयण- गुणपालणरयाणं सव्वसाहूणं, सया णिच्चकालं, अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

लघु या बृहद् सामायिक पाठ पढ़कर अंत में सामाधि भक्ति पढ़ें।

द्वात्रिंशतिका-बृहद-सामायिक पाठ

सत्त्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम्।
माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ, सदाममात्मा विदधातु देव।।१।।

शरीरतः कर्त्तुमनन्तशक्तिं, विभिन्नमात्मानमपास्तदोषम्।
जिनेन्द्र! कोषादिव खड्गयष्टिं, तव प्रसादेन ममास्तु शक्तिः।।२।।

दुःखे सुखे वैरिणि बन्धुवर्गे, योगे वियोगे भवने वने वा।
निराकृतशेष ममत्वबुद्धेः समं मनोमेऽस्तु सदापि नाथ।।३।।

मुनीश! लीनाविव कीलिताविव, स्थिरौ निषाताविव विम्बिताविव।
पादौ त्वदीयौ मम तिष्ठतां सदा, तमोधुनानौ हृदि दीपकाविव।।४।।

एकेन्द्रियाद्या यदि देव! देहिनः, प्रमादतः संचरता इतस्ततः।
क्षता विभिन्ना मिलिता निपीडिताः, तदस्तु मिथ्या दुरनुष्ठितं तदा।।५।।

विमुक्तिमार्ग प्रतिकूल वर्तिना, मया कषायाक्षवशेन दुर्धिया।
चारित्रशुद्धेर्यदकारि लोपनं, तदस्तु मिथ्या मम दुष्कृतं प्रभो!।।६।।

विनिन्दनालोचन-गर्हणैरहं, मनोवचः कायकषाय निर्मितम्।
निहन्मि पापं भवदुःखकारणं, भिषग्विषं मंत्रगुणै रिवाखिलम्।।७।।

अतिक्रमं यद्विमतेर्व्यतिक्रमं, जिनातिचारं सुचरित्र कर्मणः।
व्यधामनाचार मपि प्रमादतः, प्रतिक्रमं तस्य करोमि शुद्धये।।८।।

क्षतिं मनःशुद्धि विधेरतिक्रमं, व्यतिक्रमं शील व्रतेविलंघनम्।
प्रभोऽतिचारं विषयेषु वर्तनं, वदन्त्यनाचार-मिहाति-सक्तताम्।।९।।

यदर्थमात्रा पदवाक्यहीनं, मयाप्रमादाद्यदि किंचनोक्तम्।
तन्मे क्षमित्वा विदधातु देवी, सरस्वती केवलबोधलब्धिम्।।१०।।

बोधिः समाधिः परिणामशुद्धिः, स्वात्मोपलब्धिः शिवसौख्यसिद्धिः।
चिन्तामणिं चिन्तितवस्तुदाने, त्वां वन्द्यमानस्य ममास्तु देवि।।११।।

यः स्मर्यते सर्व मुनीन्द्रवृन्दैः, यः स्तूयते सर्व नरामरेन्द्रैः।
यो गीयते वेदपुराणशास्त्रैः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम्।।१२।।

यो दर्शनज्ञान सुखस्वभावः, समस्तसंसार विकारवाह्यः।
समाधिगम्यः परमात्मसंज्ञः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम्।।१३।।

निषूदते यो भवदुःख जालं, निरीक्षते यो जगदन्तरालं।
योऽन्तर्गतो योगिनिरीक्षणीयः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम्।।१४।।

विमुक्ति मार्ग प्रतिपादको यो, यो जन्ममृत्यु व्यसनाद्यतीतः।
त्रिलोक लोकी विकलोऽकलंकः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम्।।१५।।

क्रोडीकृता शेषीशरीरवर्गाः, रागादयो यस्य न सन्ति दोषाः।
निरिन्द्रियो ज्ञानमयोऽनपायः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम्।।१६।।

यो व्यापको विश्वजनीन वृत्तेः, सिद्धो विबुद्धो धुतकर्मबंधः।
ध्यातो धुनीते सकलं विकारं, स देवदेवो हृदये ममास्ताम्।।१७।।

न स्पृश्यते कर्मकलंकदोषैः, यो ध्वान्तसंघैरिव तिग्मरश्मिः।
निरंजनं नित्यमनेक मेकं,तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये।।१८।।

विभासते यत्र मरीचिमाली, न विद्यमाने भुवनावभासि।
स्वात्मस्थितं बोधमयप्रकाशं, तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये।।१९।।

विलोक्यमाने सति यत्र विश्वं, विलोक्यते स्पष्टमिदं विविक्तम्।
शुद्धं शिवं शान्तमनाद्यनन्तं, तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये।।२०।।

येन क्षता मन्मथमानमूर्च्छा, विषादनिद्रा भयशोकचिन्ता।
क्षयोऽनलेनेव तरुप्रपंच, स्तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये।।२१।।

न संस्तरोऽश्मा न तृणं न मेदिनी, विधानतो नो फलको विनिर्मितः।
यतो निरस्ताक्षकषाय विद्विषः, सुधीभिरात्मैव सुनिर्मलो मतः।।२२।।

न संस्तरो भद्र! समाधिसाधनं, न लोकपूजा न च संघमेलनम्।
यतस्ततोऽध्यात्मरतो भवानिशं, विमुच्य सर्वामपि बाह्यवासनाम्।।२३।।

न सन्ति बाह्या मम केचनार्थाः, भवामि तेषां न कदाचनाहम्।
इत्थं विनिश्चित्य विमुच्य बाह्यं, स्वस्थः सदा त्वं भव भद्र! मुक्त्यै।।२४।।

आत्मानमात्मन्यवलोकमानः, त्वं दर्शनज्ञानमयो विशुद्धः।
एकाग्रचित्तः खलु यत्र तत्र, स्थितोपि साधुर्लभते समाधिम्।।२५।।

एकः सदा शाश्वतिको ममात्मा, विनिर्मलः साधिगम स्वभावः।
बहिर्भवाः सन्त्यपरे समस्ता, न शाश्वताः कर्मभवाः स्वकीयाः।।२६।।

यस्यास्ति नैक्यं वपुषापि सार्द्धं, तस्यास्ति किं पुत्रकलत्रमित्रैः।
पृथक्कृते चर्मणि रोमकूपाः, कुतोहि तिष्ठन्ति शरीरमध्ये।।२७।।

संयोगतो दुःखमनेकभेदं, यतोऽश्नुते जन्मवने शरीरी।
ततस्निधासौ परिवर्जनीयो, यियासुना निर्वृतिमात्मनीनाम्।।२८।।

सर्वं निराकृत्य विकल्पजालं, संसारकान्तारनिपात हेतुम्।
विविक्त मात्मानमवेक्ष्यमाणो, निलीयसे त्वं परमात्मतत्त्वे।।२६।।

स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा, फलं तदीयं लभते शुभाशुभम्।
परेणदत्तं यदि लभ्यते स्फुटं, स्वयं कृतं कर्म निरर्थकं तदा।।३०।।

निजार्जितं कर्म विहाय देहिनो, न कोऽपि कस्यापि ददाति किंचन।
विचारयन्नेवमन्य मानसः, परो ददातीति विमुंच शेमुषीम्।।३१।।

यैः परमात्माऽमितगतिवन्द्यः, सर्व विविक्तो भृशमनवद्यः।
शश्वदधीतो मनसि लभन्ते, मुक्तिनिकेतं विभववरं ते।।३२।।

इति द्वात्रिंशतावृत्तैः, परमात्मानमीक्षते।
योऽनन्यगत चेतस्को, यात्यसौ पदमव्ययन्।।३३।।

इत्यमितगतिसूरि विरचिता द्वात्रिंशतिकाः

अथ पौर्वाह्निक (माध्याह्निक) (आपराह्निक) देववन्दना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वंदना-स्तव-समेतं श्री चैत्यभक्ति पञ्चगुरुभक्ति द्वात्रिंशतिका कृत्वा तद्हीनाधिक-दोष-विशुद्ध्यर्थं आत्मपवित्रीकरणार्थं समाधिभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

समाधि भक्तिः

लघु समाधि भक्ति

अथेष्ठ प्रार्थना प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः।
शास्त्राभ्यासो जिनपति-नुतिः संगतिः सर्वदार्यैः।
सद्वृत्तानां गुण-गण-कथा दोष-वादे च मौनम्।
सर्वस्यापि प्रिय-हित-वचो भावनाचात्म-तत्त्वे।
सम्पद्यन्तां मम भव-भवे यावदेतेऽपवर्गः।।१।।

तव पादौ मम हृदये, मम हृदयं तव पद-द्वये लीनम्।
तिष्ठतु जिनेन्द्र! तावत्-यावन्-निर्वाण-सम्प्राप्तिः।।२।।

अक्खर-पयत्थ-हीणं, मत्ता-हीणं च जं मए भणियम्।
तं खमहु णाण-देव! य मज्झवि दुक्खक्खयं कुणउ।।३।।

जं सक्कइ तं कीरइ सेसस्स सया करेइ सद्दहणं।
सद्दहमाणो जीवो पावइ अजरामरं ठाणं।।४।।

तव-यरणं वय-धरणं संजम-सरणं च जीव-दया-करणं।
अन्ते समाहि-मरणं चउगइ-दुःखं णिवा गेइ।।५।।

आलोचना

इच्छामि भन्ते! समाहि-भत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सलोचेउं, रयणत्तय-सरूव-परमप्प-झाण-लक्खण-समाहि-भत्तीए सया णिच्च कालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ गमणं, समाहि-मरणम्, जिण-गुण-संपत्ति होउ मज्झं।

॥ इति देववन्दना (सामायिक) विधिः समाप्तम् ॥

आचार्य-वन्दना-विधिः

प्रातःकालिन देववन्दना (सामायिक) विधि के समापन के बाद मुनिवृन्द एवं सभी साधर्मी आचार्य महाराज के पास पहुँचे। गुरु से, सादर गवासन में बैठे विनति करें कि हे आचार्य प्रवर! हम आपकी वन्दना करना चाहते हैं। जब गुरु अनुमति दें तब नीचे लिखी **लघु सिद्ध भक्ति** और **लघु-आचार्य भक्ति** द्वारा वन्दना करना चाहिए। यदि आचार्य सिद्धान्त वेत्ता हों तो उनकी वन्दना **लघु सिद्ध भक्ति , लघु श्रुत भक्ति** और **लघु-आचार्य भक्ति** के द्वारा करना चाहिए। आचार्य के सिवाय यदि अन्य साधु सिद्धान्तवेत्ता हों तो उनकी वन्दना भी गवासन में बैठकर **लघु सिद्ध भक्ति** और **लघु श्रुत भक्ति** बोलकर तथा अन्य दूसरे जेष्ठ (बड़े) साधुओं की वन्दना, मात्र **लघु सिद्ध भक्ति** बोलकर करनी चाहिए।

विज्ञापन

अथ पौर्वाह्निक (आपराह्निक) आचार्य वन्दना-क्रियायां

पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल-कर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं लघु सिद्ध भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

सम्मत्त-णाण दंसण-वीरिय-सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरु-लघु-मव्वावाहं अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं।।१।।

तवसिद्धे, णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि।।२।।

इच्छामि भन्ते! सिद्ध भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण-सम्मचरित्त-जुत्ताणं, अट्ठविह-कम्म-विप्पमुक्काणं, अट्ठगुण संपण्णाणं, उड्ढलोय-मत्थयम्मि पयटिठयाणं, तव सिद्धाणं, णय सिद्धाणं संजम सिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं, अतीताणागद-वट्ट-माण-कालत्तय-सिद्धाणं सव्व-सिद्धाणं सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ सुगइ-गमणं समाहि-मरणं जिण-गुण-संपत्ति होउ मज्झं!

अथ पौर्वाह्निक (आपराह्निक) आचार्य वन्दना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल-कर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं लघु श्रुत भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

कोटी-शतं द्वादश चैव कोट्यो, लक्षाण्यशीति-त्र्यधिकानि चैव।
पंचाश-दष्टौ च सहस्र-संख्य-मेतच्छ्रुतं पंचपदं नमामि।।१।।

अरहंत-भासियत्थं गणहर-देवेहिं गंथियं सम्मं।
पणमामि भत्तिजुत्तों सुद-णाण-महोवहिं सिरसा।।२।।

इच्छामि भंते! सुद्भत्ति काउसग्गो कओ, तस्सालोचेउं अंगोवंग-पइण्णय- पाहुडय-परियम्म-सुत्त-पढमाणिओग-पुव्वगय-चूलिया चेव सुत्तत्थय-थुइ- धम्म-कहाइयं सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुग-इ-गमणं,

समाहि-मरणं- जिण-गुण-संपत्ति होउ मज्झं।

अथ पौर्वाह्निक (आपराह्निक) आचार्य वन्दना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल-कर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं लघु आचार्य भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

श्रुत-जलधि-पारगेभ्यः स्व-पर-मत-विभावना-पटु-मतिभ्यः
सुचरित-त्तपो-निधिभ्यो नमो गुरुभ्यो गुण-गुरुभ्यः।।१।।

छत्तीस-गुण-समग्गे पंच-विहाचार-करण संदरिसे।
सिस्साणुग्गह-कुसले धम्माइरिए सदा वन्दे।।२।।

गुरु-भत्ति संजमेण य तरंति संसार-सायरं घोरं।
छिण्णंति अट्ठ-कम्मं जम्मण-मरणं ण पावेंति।।३।।

ये नित्यं व्रत-मंत्र-होम-निरता ध्यानाग्नि-होत्रा कुलाः।
षट्-कर्माभि-रतास्तपो-धन-धनाः साधु क्रियाः साधवः।।
शील-प्रावरणा गुण-प्रहरणा-श्चन्द्रार्क-तेजोधिका।
मोक्ष-द्वार-कपाट-पाटन-भटाः प्रीणंतु मां साधवः।।४।।
गुरवः पान्तु नो नित्यं ज्ञान-दर्शन-नायकाः।
चारित्रार्णव-गंभीरा मोक्ष-मार्गोपदेशकाः।।५।।

इच्छामि भन्ते! आइरिय-भत्ति-काउस्सग्गो कओ, तस्सालाचेउं सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचारित्त जुत्ताणं पंच विहाचाराणं आइरियाणं आयारादि-सुद-णाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं: ति-रयण-गुण-पालण-रयाण सव्वसाहूणं: सया णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

"त्रिसन्ध्यं वन्दने युंज्याच्चैत्य-पंच-गुरुस्तुति" तथा **"जिणदेव-वन्दणाए चेदिय-भत्ती य पंचगुरुभत्ती"** इन आगम सूत्रों से तथा मूलाचार आदि अन्य ग्रंथों से ऐसा प्रतीत होता है कि आचार्यों ने त्रिकाल सामायिक और भगवान् जिनेन्द्र के दर्शन इन दोनों को देव-वन्दना शब्द से अर्थात् दोनों को एक ही कहा है।

अनगार धर्मामृत अध्याय ७ के **"श्रुतदृष्ट्यात्मनि स्तुत्यं.....निःसही गिरा"** ।।१७।। **"चैत्यालोकोद्य.....मुद्रया पठन्"** ।।१८।। **"कृत्वेर्यापथसंशुद्धि..... पर्यङ्कस्थोग्रमङ्गलम्"** ।।१९।। आदि श्लोकों में भगवान् जिनेन्द्र के दर्शन करने के बाद **"नमोस्तु भगवान! देववन्दनां करिष्यामि"** कहकर सामायिक करने की प्रतिज्ञा कराई है, और इसी के बाद सामायिक विधि का प्रतिपादन किया है। किन्तु वर्तमान में साधुजन प्रातःकालीन सामायिक के बाद और संध्याकालीन सामायिक के पूर्व देवदर्शन करते हैं, इसी क्रिया को लक्ष्य में रखकर यहाँ प्रातःकालीन देववन्दना (सामायिक) के अनन्तर जिनेन्द्र दर्शन विधि का क्रम रखा जा रहा है।

देवदर्शन प्रयोग विधिः

मन, वचन एवं काय की सरलतापूर्वक अथवा द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावों की शुद्धिपूर्वक साधुजन देव-दर्शन के लिए जिनमंदिर जावें, मंदिर जी पहुँचने से पूर्व जैसे जिनमंदिर को शिखर दिखाई देवे तुरन्त **दृष्टं जिनेन्द्र भवनं.... स्तोत्र** पढना शुरू करें। पश्चात् मंदिर जी के पास प्रासुक एवं योग्य स्थान पर अपने कमण्डलु के जल से हाथ पैर धोवें अनन्तर **जय जय जय, निःसही निःसही निःसही** शब्दों का उच्चारण करते हुए मंदिरजी में प्रवेश करें। वहाँ पहुँचकर सम्यग्दर्शन के निमित्तभूत वीतराग मुद्रावाली भगवान की प्रतिमा को तीन बार नमस्कार करते हुए दर्शन करें। पश्चात् पिच्छिका युक्त दोनों हाथों को मुकुलित कर और कुहनियों को उदर पर रख कर गर्भगृह अथवा वेदी की तीन प्रदक्षिणाएँ देते हुए **"निःसंगोऽहं जिनानां**[1] अर्हद् भक्ति अथवा कोई दर्शन" स्तोत्र पाठों में से कोई एक दर्शन पाठ बोलें। विशेष इतना है कि प्रदक्षिणा देते समय प्रत्येक प्रदक्षिणा एवं प्रत्येक दिशा में तीन-तीन आवर्त और एक-एक शिरोनति करते जाना चाहिए।

चैत्यालयाष्टक-स्तोत्रम्

दृष्टं जिनेन्द्र-भवनं भव-ताप-हारि,
भव्यात्मनां विभव-सम्भव-भूरि-हेतुः।
दुग्धाब्धि-फेन-धवलोज्ज्वल-कूट-कोटी,
नद्ध-ध्वज-प्रकर-राजि-विराजमानम्।।१।।

दृष्टं जिनेन्द्र-भवनं भुवनैक-लक्ष्मी-,
धामर्द्धि-वर्धित-महामुनि-सेव्यमानम्।।
विद्याधरामर-वधू-जन-मुक्त-दिव्य-,
पुष्पांजलि-प्रकर-शोभित-भूमि-भागम।।२।।

दृष्टं जिनेन्द्र भवनं भवनादि-वास-,
विख्यात-नाक-गणिका-गण-गीयमानम्।
नाना-मणि-प्रचय-भासुर-रश्मि-जाल-,
व्यालीढ-निर्मल-विशाल-गवाक्ष-जालम्।।३।।

दृष्टं जिनेन्द्र-भवनं सुर-सिद्ध-यक्ष-,
गन्धर्व-किन्नर-करार्पित-वेणु-वीणा।
संगीत-मिश्रित-नमस्कृत-धीर-नादै-,
रापूरिताम्बरतलोरु-दिगन्तरालाम्।।४।।

दृष्टं जिनेन्द्र-भवनं विलसद्-विलोल-,
माला-कुलालि-ललितालक-विभ्रमाणाम्।
माधुर्य-वाद्य-लय-नृत्य-विलासिनीनां,
लीला-चलद्-वलय-नूपुर-नाद-रम्यम्।।५।।

दृष्टं जिनेन्द्र-भवनं मणि-रत्न-हेम-,
सारोज्ज्वलैः कलश-चामर-दर्पणाद्यैः।
सन्मंगलैः सतत-मष्ट-शत-प्रभेदै-,
र्विभ्राजितं विमल-मौक्तिक-दाम-शोभम्।।६।।

दृष्टं जिनेन्द्र-भवनं वर-देवदारु-,
कर्पूर-चन्दन-तरुष्क-सुगन्धि-धूपैः।
मेघायमान-गगने पवनाभिघात-,
चंचच्-चलद-विमल-केतन-तुंग-शालम्।।७।।

दृष्टं जिनेन्द्र-भवनं धवलातपत्र-,
च्छाया-निमग्न-तनु-यक्षकुमार-वृन्दैः।
दोधूयमान-सित-चामर-पंकित-भासं,
भामण्डल-द्युति-युत प्रतिमाभिरामम्।।८।।

दृष्टं जिनेन्द्र-भवनं विविध-प्रकार-,
पुष्पोपहार-रमणीय-सुरत्न-भूमि।
नित्यं वसन्त-तिलक-श्रिय-मादधानं,
सन-मंगलं सकल-चन्द्र-मुनीन्द्र-वन्द्यम्।।९।।

दृष्टं मयाद्य मणि-कांचन-चित्र-तुंग-,
सिंहासनादि-जिनबिम्ब-विभूति-युक्तम्।
चैत्यालयं यदतुलं परिकीर्तितं मे,
सनू-मंगलं सकल-चन्द्र-मुनींद्र-वन्द्यम्।।१०।।

॥ इति चैत्यालयाष्टक-स्तोत्र-समाप्तम् ॥

अथ देव दर्शन पाठ

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पाप-नाशनम्।
दर्शनं स्वर्ग-सोपानं, दर्शनं मोक्ष-साधनम्।।१।।

दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वन्दनेन च।
न तिष्ठति चिरं पापं, छिद्र-हस्ते यथोदकम्।।२।।

वीतराग-मुखं दृष्ट्वा, पद्म-राग-सम-प्रभम्।
नैकजन्मकृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति।।३।।

दर्शनं जिन-सूर्यस्य, संसार-ध्वान्त-नाशनम्।
बोधनं चित्त-पद्मस्य, समस्तार्थ प्रकाशनम्।।४।।

दर्शनं जिन चन्द्रस्य, सद्-धर्मामृत-वर्षणतम्।
जन्म-दाह-विनाशाय, वर्धनं सुख-वारिधेः।।५।।

जीवादि तत्त्व प्रतिपादकाय, सम्यक्त्व-मुख्याष्ट-गुणार्णवाय।
प्रशान्त-रूपाय-दिगम्बराय,देवाधि-देवाय नमो जिनाय।।६।।

चिदानन्दैक-रूपाय, जिनाय परमात्मने।
परमात्म-प्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः।।७।।

अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारुण्य-भावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर।।८।।

नहि त्राता नहि त्राता, नहि त्राता जगत्-त्रये।
वीतरागात् परो देवो, न भूतो न भविष्यति।।९।।

जिनेभक्ति-र्जिनेभक्ति-, र्जिनेभक्ति-र्दिने-दिने।
सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु, सदा मेऽस्तु भवे भवे।।१०।।

जिन-धर्म-विनिर्मुक्तो, मा भूवं-चक्रवर्त्यपि।
स्याञ्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि, जिन-धर्मानुवासितः।।११।।

जन्म-जन्म-कृतं पापं जन्म-कोटिभि-रर्जितम्।
जन्म-मृत्यु-जरा-रोगो हन्यते, जिन-दर्शनात्।।१२।।

अद्याभवत्-सफलता, नयन-द्वयस्य,
देव! त्वदीय-चरणाम्बुज-वीक्षणेन।।
अद्य त्रिलोक-तिलक-प्रतिभासते मे
संसार-वारिधि-रयं चुलुक-प्रमाणः।।१३।।

अभिषेक-वन्दना-क्रिया

इस प्रकार दर्शन क्रिया समाप्ति के बाद **"सिद्धभक्त्यादिशान्त्यन्ता पूजाभिषेकमंगले"** अथवा **"अहिसेयवंदणासिद्धचेदियपंचगुरुसन्तिभत्तीहि"** अथवा **"सा नन्दीश्वरपदकृत-चैत्यात्वभिषेकवन्दनास्ति"** तथा इत्यादि आगम-वचनानुसार निम्नलिखित भक्तियों द्वारा भगवान जिनेन्द्र की अभिषेक क्रिया देखना चाहिए। यथा-

विज्ञापन

अथ अभिषेक वन्दना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल-कर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्ध भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

कायोत्सर्ग के पश्चात् क्रम से **सिद्ध भक्ति** (पृष्ठ.सं. १५१), **चैत्य भक्ति** (पृष्ठ.सं. १५३), **पंच महागुरु भक्ति** (पृष्ठ.सं. १६६), **शान्ति भक्ति** (पृष्ठ.सं. १७०) **व समाधि भक्ति** (पृष्ठ.सं. १७३) पढ़ें।)

॥ इति अभिषेक क्रिया विधिः समाप्तम् ॥

शौच-क्रिया

अभिषेक क्रिया के बाद, ईर्या समितिपूर्वक शौच क्रिया को जाना चाहिए **प्रश्न**- मल-मूत्रादि विसर्जन करने का स्थान कैसे हो? उसका उत्तर इस प्रकार है - जो प्रदेश वनाग्नि से जले हुए हों, जो कई बार विदारण किये जा चुके हों, जो श्मशान की अग्नि से जले हों, जो पथिकाग्नि से जले हों, जो प्रदेश ठोस हों, छिद्र या दराचों से रहित हों, जो द्वीन्द्रियादि जीवों से रहित हों, कूड़ा कचरादि अपवित्रता से रहित हों, निर्जन अर्थात् स्त्री पुरुषों आदि के आवागमन से रहित हों, आर्द्र न हों, पशुओं एवं मनुष्यों आदि के बैठने एवं रहने के (स्थान) न हों, हरे तृण, फल पुष्प आदि से रहित हों, प्रकाशयुक्त हों, स्वामी के द्वारा निषिद्ध न हों तथा जहां स्त्री, बालक एवं नपुंसकों आदि का आवागमन न हो वहां मल-मूत्र आदि का विसर्जन करना चाहिए। मल-मूत्र का विसर्जन करने से पूर्व प्रासुक जगह को सर्वप्रथम नेत्रों से भली प्रकार देखना चाहिए, पश्चात् पीछी से परिमार्जन कर पुनः देखकर बैठना चाहिए। बैठने के पूर्व **निःसही निःसही निःसही** तीन बार और शौच क्रिया से उठने के बाद **असही असही असही** तीन बार बोलना चाहिए।

शौच के बाद अपने अपवित्र अंगों को एवं हाथों को राख या ईंट के चूर्ण से एवं शौचोपकरण-कमण्डलु के प्रासुक जल से पवित्र करना चाहिए। इस प्रकार शुद्धि कर लेने के बाद (**"प्रस्रावे च तथोच्चारे उच्छ्वासा पंचविंशति"** तथा **"मूत्रोच्चाराध्वभक्तार्हत्, साधुशय्याभिवन्दने। पंचाग्रा विंशतिः.....।।"** इन आगमोक्त वचनों के अनुसार) पच्चीस उच्छ्वासों में कायोत्सर्ग करना चाहिए, किन्तु वर्तमान में साधुवर्ग लघु शंका (मूत्र) क्रिया के बाद तो मात्र कायोत्सर्ग करते हैं और शौच क्रिया के बाद निम्नलिखित ईयापथ भक्ति पढ़कर कायोत्सर्ग करते हैं। यथा-

ईर्या-पथ-शुद्धि

पडिक्कमामि भन्ते! इरिया वहियाए, विराहणाए, अणगुत्ते, अइ गमणे, णिग्गमणे, ठाणे, गमणे, चंकमणे, पाणुग्गमणे, बीजुग्गमणे, हरिदु ग्गमणे, उच्चार-पस्सवण-खेल-सिंहाण-वियडि-पइट्ठावणियाए, जे जीवा एइन्दिया वा, बेइन्दिया वा, तेइन्दिया वा, चउरिंदिया वा, पंचिंदिया वा, णोल्लिदा वा, पेल्लिदा वा, संघट्टिदा वा, संघादिदा वा, उद्दाविदा वा, परिदाविदा वा, किरिंच्छिदा वा, लेस्सिदा वा, छिंदिदा वा, भिंदिदा वा, ठाणदो वा, ठाण-चंकमणदो वा, तस्स उत्तर-गुणं, तस्स पायच्छित्त-करणं, तस्स विसोहि-करणं, जाव अरहंताणं, भयवंताणं, णमोक्कारं, पज्जुवासं

करेमि, तावकालं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

(उक्त ईर्या-पथ-शुद्धि पढ़ने के पश्चात् २५ उच्छ्वासों में कायोत्सर्ग करना चाहिए)

इस प्रकार शौचक्रिया से निर्वृत्त हो और भलीप्रकार कमण्डलु को साफकर उसे सुखा देना चाहिए, पश्चात् निम्नलिखित विधि के अनुसार **पौर्वाह्निक स्वाध्याय** की विधि करन चाहिए।

पौर्वाह्निक स्वाध्याय विधिः

(पृ. सं.-२) पर जो स्वाध्याय विधि लिखी गई है, उसी विधि के अनुसार यहाँ भी स्वाध्याय का प्रतिष्ठापन (प्रारम्भ) और निष्ठापन (समाप्ति) करना चाहिए। विशेष इतना है कि विज्ञापन में **"अपर रात्रि"** स्वाध्याय के स्थान पर **"पौर्वाह्निक स्वाध्याय"** बोलना चाहिए।

आहार-चर्या

चारित्र के अन्य ग्रन्थों में तथा कुन्दकुन्दाचार्य विरचित मूलाचार के पृष्ठ १७४ पर आचार्य लिखते हैं कि साधु मध्याह्नकाल में जब दो घटिका अवशेष रहें तब स्वाध्याय की समाप्ति कर अपनी वसतिका से दूर जाकर शौचविधि करें। तदनन्तर वहाँ से लौटकर हाथ-पैरों की शुद्धि कर पीछी कमण्डलु लेकर जिन मंदिर जाकर मध्याह्न देववन्दना (सामायिक) करें तदनन्तर आहार के लिए निकलें। अर्थात् आगम में दोपहर की सामायिक के बाद भी आहार करने का विधान प्राप्त होता है, किन्तु **"उदयत्थमणे काले णालीतियवज्जियम्हि मज्झम्हि....** (३७ अ. १ मूला.) अर्थात् सूर्योदय की तीन घटिका और सूर्यास्त की तीन घटिका छोड़कर (मध्याह्न सामायिक का काल छोड़कर) मध्य के काल में साधुओं का आहार ग्रहण करना एक भक्त है" इस नियम के अनुसार वर्तमान में साधुगण प्रातः ९ बजे से ११½ बजे के अन्तर्गत ही प्रायः आहार चर्या करते हैं इसी बात को ध्यान में रखकर प्रातःकालीन स्वाध्याय समाप्ति के बाद और मध्याह्न देववन्दना (सामायिक) के पूर्व आहारचर्या की विधि लिखी जा रही है।

क्रमण दिगम्बर साधु बलवृद्धि, आयुवृद्धि, मांसवृद्धि, कांतिवृद्धि तथा यहाँ स्वादिष्ट आहार मिलता है, इस इच्छा से अर्थात् गृद्धता वृद्धि के लिए आहार ग्रहण नहीं करते अपितु **क्षुधावेदना का परिहार, स्व-पर वैयावृत्त्य, षट् आवश्यकों की प्रतिपालना, प्राणि एवं इन्द्रिय संयम का रक्षण, उत्तम क्षमादि दशधर्मों** की प्रतिपालना और स्वाध्याय, संयम तथा ध्यान की सिद्धि के लिए आहार ग्रहण करते हैं। वह भी यदि नवकोटियों से शुद्ध हो १६ उद्गम, १६ उत्पादन, १० एषणादोषों एवं संयोजना, अप्रमाण (आगम में भोजन का जो प्रमाण बतलाया है अर्थात् पेट के दो भाग भोजन

से, एक भाग जल, दूध, छाछ आदि पेय पदार्थों से भरना तथा एक भाग खाली रखना, इस प्रमाण का उल्लंघन करना), अंगार (लम्पटतापूर्ण भोजन) और सधूम (मन में भोज्य पदार्थों की निंदा करते हुए आहार करना) दोषों से रहित हो, तो ग्रहण करते हैं, अन्यथा नहीं।

आहार-विधिः

आहार ग्रहण करने के उपर्युक्त छह कारणों में से किन्हीं एक-दो कारणों के उपस्थित हो जाने पर मुनिजन आहार को उठते हैं। साधुओं को सर्वप्रथम अपने कमण्डलु के प्रासुक और शुद्धजल से हाथ (कुहनी पर्यंत), पैर (घुटनों पर्यंत) आदि धोकर शुद्धि करना चाहिए पश्चात् श्री मंदिर जी में जिनेन्द्र भगवान के दर्शनकर विज्ञापन सहित **लघु आचार्य भक्ति** (पृष्ठ. सं. ३६) बोलकर गुरु वन्दना करना चाहिए। पश्चात् पूर्व दिन ग्रहण किये हुए उपवास अथवा प्रत्याख्यान का निष्ठापन (समापन) करने के लिए **लघु सिद्धभक्ति** (पृष्ठ. सं. ४३) एवं **लघु योगिभक्ति** (पृष्ठ. सं. ४४) बोलना चाहिए।

विज्ञापन

अथ चतुर्विधाहार (उपवास) निष्ठापन आचार्य वन्दना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल-कर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्ध भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम् (कायोत्सर्ग करें)।

लघु सिद्ध भक्तिः

सम्मत्त-णाण दंसण-वीरिय-सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरु-लघु-मव्वावाहं अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं।।१।।

तवसिद्धे, णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि।।२।।

इच्छामि भन्ते! सिद्ध भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण-सम्मचरित्त-जुत्ताण, अट्ठविह-कम्म-विप्पमुक्काणं, अट्ठगुण संपण्णाणं, उड्ढलोय-मत्थयम्मि पयटिठयाणं, तव सिद्धाणं, णय सिद्धाणं संजम सिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं, अतीताणागद-वट्ट-माण-कालत्तय-सिद्धाणं सव्व-सिद्धाणं सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमसामि

दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ सुगइ-गमणं समाहि-मरणं जिण-गुण-संपत्ति होउ मज्झं!

विज्ञापन

अथ चतुर्विधाहार (उपवास) निष्ठापन क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल- कर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री योगिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम् (कायोत्सर्ग करना)

लघु योगि भक्तिः

प्रावृट्-काले सविद्युत-प्रपतित-सलिले वृक्ष-मूलाधिवासाः।
हेमन्ते रात्रि-मध्ये प्रति-विगत-भयाः काष्ठवत्-त्यक्त-देहाः।।१।।

ग्रीष्मे सूर्यांशु-तप्ता गिरि-शिखर-गताः स्थान-कूटान्तरस्थाः।
ते मे धर्मं प्रदद्यु-र्मुनि-गण-वृषभा-मोक्ष-निःश्रेणि-भूताः।।२।।

गिम्हे गिरि-सिहरत्था, वरिसायाले रुक्ख-मूल-रयणीसु।
सिसिरे बाहिर-सयणा ते साहू वंदिमो णिच्चं।।३।।

गिरि-कन्दर-दुर्गेषु ये वसन्ति दिगम्बराः।
पाणि-पात्र-पुटाहारास् ते यान्ति परमां गतिम्।।४।।

अंचलिका

इच्छामि भन्ते! योगि भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण-सम्मचारित्त-जुत्ताणं, अट्ठविह-कम्म-विप्पमुक्काणं, अट्ठ-गुण-संपण्णाणं, उड्ढलोय-मत्थयम्मि पयट्ठियाणं, तव-सिद्धाणं, णय-सिद्धाणं, संजम-सिद्धाणं, चरित्त-सिद्धाणं, सव्व-सिद्धाणं, सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्ख-क्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगई-गमणं, समाहि-मरणं, जिण-गुण-संपत्ति होउ मज्झं।

भगवान जिनेन्द्र का समक्ष उपर्युक्त दोनों भक्तियाँ बोलकर तथा मुद्रा (दाहिने हाथ में पीछी-कमण्डलु और बायाँ हाथ कंधे पर) धारण कर आहार के लिए निकलें तथा

व्रत-परिसंख्यान मिल जाने पर योग्य श्रावक के गृह पडगाहनविधि पूर्ण होने पर गृह में प्रवेश करें और नवधा भक्ति पूर्ण हो जाने के बाद एवं आहार ग्रहण के पूर्व हस्त प्रक्षालन करें, पश्चात्-अथ **चतुर्विधाहार निष्ठापन**.... इत्यादि विज्ञापनकर कायोत्सर्ग करें, तदनन्तर ४३ पृष्ठ पर लिखी हुई **लघु सिद्धभक्ति** पढ़कर बिना किसी के सहारे, नाभि से ऊपर दोनों हाथों को रखते हुए खड़ा होवें, पश्चात् आहार ग्रहण करें। आहार हो चुकने के बाद बैठकर मुख एवं हस्त पैर आदि की शुद्धि करें। पश्चात् श्रावक के हाथ से पिच्छिका ग्रहणकर आहार त्याग हेतु निम्नलिखित **लघु सिद्धभक्ति** बोलें। यथा-

अथ चतुर्विधाहार-प्रतिष्ठापन-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकलकर्मक्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

यहाँ पर कायोत्सर्ग करें, पश्चात् (पृष्ठ सं. ४३) पर लिखी हुई **लघु सिद्धभक्ति** पढ़कर चारों प्रकार के आहार-जल का त्यागकर कमण्डलु लेकर वापिस आवें। मंदिर जी में आकर भगवान अथवा गुरु के समक्ष **"अथ चतुर्विधाहारप्रतिष्ठापन क्रियायां**... इत्यादि विज्ञापन बोलकर कायोत्सर्ग करें, पश्चात् **लघु सिद्धभक्ति** (पृष्ठ सं. ४३) बोलें। पश्चात् पुनः विज्ञापन पूर्वक कायोत्सर्ग कर पूर्व के सदृश **लघु योगिभक्ति** (पृष्ठ सं. ४४) बोलकर दूसरे दिन ६½ या १० बजे पर्यन्त के लिए चारों प्रकार के आहार-जल का त्याग करें। विशेष इतना है कि यह विधि आचार्य परमेष्ठी के समीप न रहने पर ही करना चाहिए। यदि आचार्य श्री पास में हों तो आहार से आकर सर्वप्रथम-**अथ आचार्य वन्दना क्रियायां**..... इत्यादि विज्ञापन एवं कायोत्सर्ग कर (पृष्ठ सं. ३६) लिखी हुई **"श्रुतजलधि पारगेभ्य**....' **लघु आचार्य भक्ति** बोलकर उनकी वन्दना करना चाहिए पश्चात् **लघु सिद्धभक्ति** और **लघु योगिभक्ति** बोलकर आहार-जल का त्याग अर्थात् प्रत्याख्यानादि का प्रतिष्ठापन करना चाहिए।

अनगार धर्मामृत अध्याय ६ श्लोक नं. ३६ **"प्रतिक्रम्याथ गोचार दोषं**..... अर्थात् प्रयाख्यानादि ग्रहण (आहार-जल का त्याग) करने के बाद गोचार अर्थात् भोजन सम्बन्धी लगे हुए दोषों (अतीचारों) का प्रतिक्रमण करना चाहिए।" इस गोचार प्रतिक्रमण का अर्थ समझ में नहीं आया कि किस विधि से और क्या बोलकर गोचार प्रतिक्रमण करना चाहिए? हाँ! गुरुकुल में मुनिराजों को आहार के उपरान्त **ईर्यापथशुद्धि** (पृष्ठ सं. ४१) बोलते अवश्य सुना है, सम्भव है, **ईर्यापथ शुद्धि** बोलने का नाम ही **गोचार-प्रतिक्रमण** हो। विद्वज्जन विचार करें और यदि योग्य हो तो पृष्ठ सं. ४१ पर लिखी हुई **ईर्यापथशुद्धि** बोलकर कायोत्सर्ग करें।

उपवास-ग्रहण-त्याग विधिः

आहार के बाद यदि उपवास ग्रहण करने की इच्छा हो और आचार्य श्री समक्ष

न हों तो-**अथ उपवास प्रतिष्ठापन क्रियायां**.....। इत्यादि विज्ञापन बोलकर एवं कायोत्सर्ग करके **लघुसिद्धिभक्ति** (पृष्ठ सं. ४३) बोलकर उपवास ग्रहण करें और इसी विधि से ग्रहण किये हुए उपवस का निष्ठापन (समापन) करें, किन्तु यदि आचार्य श्री समीप हों तो निम्नलिखित विधि से उपवास का ग्रहण और त्याग करें। **यथा-**

विज्ञापन

अथ उपवास-प्रतिष्ठापन-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल-कर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री योगिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

सम्मत्तणाण-दंसण-वीरिय-सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलघु-मव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं।।१।।

तव-सिद्धे णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमंसामि।।२।।

इच्छामि भन्ते! सिद्ध भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण-सम्मचारित्त-जुत्ताणं, अट्ठविह-कम्म-विप्पमुक्काणं, अट्ठ-गुण-संपण्णाणं, उड्ढलोय-मत्थयम्मि पयट्ठियाणं, तव-सिद्धाणं, णय-सिद्धाणं, संजम-सिद्धाणं, चरित्त-सिद्धाणं, सव्व-सिद्धाणं, सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्ख-क्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगई-गमणं, समाहि-मरणं, जिण-गुण-संपत्ति होउ मज्झं।

अथ चतुर्विधाहार निष्ठापन क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल-कर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री योगिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

प्रावृट-काले सविद्युत-प्रपतित-सलिले वृक्ष-मूलाधिवासाः।
हेमन्ते रात्रि-मध्ये प्रति-विगत-भयाः काष्ठवत्-त्यक्त-देहाः।।१।।

ग्रीष्मे सूर्यांशु-तप्ता गिरि-शिखर-गताः स्थान-कूटान्तरास्थाः।
ते मे धर्मं प्रदद्यु-र्मुनि-गण-वृषभा-मोक्ष-निःश्रेणि-भूताः।।२।।

गिम्हे गिरि-सिहरत्था, वरिसायाले रुक्ख-मूल-रयणीसु।
सिसिरे बाहिर-सयणा, ते साहू वंदिमो णिच्चं।।३।।

गिरि-कन्दर-दुर्गेषु ये वसन्ति दिगम्बराः।
पाणि-पात्र-पुटाहारास्ते यान्ति परमां गतिम्।।४।।

इच्छामि भन्ते! योगिभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण-सम्मचारित्त-जुत्ताणं, अट्ठविह-कम्म-विप्पमुक्काणं, अट्ठ-गुण-संपण्णाणं, उड्ढलोय-मत्थयम्मि पयट्ठियाणं, तव-सिद्धाणं, णय-सिद्धाणं, संजम-सिद्धाणं, चरित्त-सिद्धाणं, सव्व-सिद्धाणं, सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्ख-क्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगई-गमणं, समाहि-मरणं, जिण-गुण-संपत्ति होउ मज्झं।

आचार्य परमेष्ठी के समीप उपवास समाप्त करते समय भी ये ही दोनों भक्तियाँ बोलना चाहिए। विशेष इतना है कि-"**अथ उपवास प्रतिष्ठापन**" के स्थान पर "**अथ उपवास निष्ठापन.....**" बोला जावेगा।

॥ इति आहार एवं उपवास-ग्रहण-त्याग विधिः समाप्तम् ॥

विज्ञापन

आहार क्रिया के बाद मध्याह्न के एक घड़ी पूर्व से (१२ बजने में २४ मिनिट अवशेष रहें तब से) मध्याह्न के एक घड़ी पश्चात् (१२ बजकर २४ मिनिट) तक अर्थात् दो घड़ी 48 मिनिट (यह सामायिक का जघन्य काल है) तक पृष्ठ सं. २६ से ३४ तक लिखी हुई सामायिक विधि के अनुसार ही सामायिक करें। अन्तर केवल इतना है कि विज्ञापन बोलते समय **पौर्वाह्निक** देववन्दना के स्थान पर **माध्याह्निक** देववन्दना बोलें।

मध्याह्न-स्वाध्याय विधिः

माध्याह्निक सामायिक के बाद मध्याह्न से दो घड़ी अधिक समय व्यतीत हो जाने के बाद पृष्ठ सं. २ पर लिखी हुई विधि के अनुसार स्वाध्याय प्रारम्भ करना चाहिए और जब सूर्यास्त में दो घड़ी (४८ मिनिट) काल अवशेष रहे तब पृष्ठ सं. २ पर लिखी विधि के अनुसार स्वाध्याय समाप्त कर देना चाहिए।

दैवसिक-प्रतिक्रमण-विधिः

अपराह्निक स्वाध्याय निष्ठापन (समाप्त) कर देने के बाद दिन भर में लगे हुए

दोषों (अतिचारों) का संशोधन करने के लिए पृष्ठ सं. ७ से २३ तक लिखी विधि के अनुसार प्रतिक्रमण करें। विशेष इतना है कि **"रात्रिक प्रतिक्रमण"** के स्थान पर **"दैवसिक प्रतिक्रमण"** पद बोलना चाहिए।

रात्रि-योग-प्रतिष्ठापन-विधिः

दैवसिकप्रतिक्रमण क्रिया की समाप्ति के बाद पृष्ठ सं. २४ से २६ पर्यन्त लिखी विधि के अनुसार **रात्रि-योग प्रतिष्ठापन** (रात्रि भर इसी वसतिका में रहूँगा) करना चाहिए। विशेष इतना है कि पूर्व में रात्रि-योग निष्ठापन पद का प्रयोग है किन्तु यहाँ रात्रियोग प्रतिष्ठापन पद बोलना चाहिए।

आपराह्निक आचार्यवन्दना विधिः

रात्रियोग प्रतिष्ठापन कर चुकने के बाद पृष्ठ सं. ३४ से ३६ पर्यंत लिखी हुई सम्पूर्ण विधि के अनुसार आचार्य परमेष्ठी की वन्दना करना चाहिए, किन्तु पौर्वाह्निक के स्थान पर आपराह्निक पद बोलना चाहिए।

आपराह्निक देव वन्दना विधिः

आचार्यवन्दना कर चुकने के उपरान्त पृष्ठ सं. २६ से ३४ पर्यंत लिखी हुई देववन्दना विधि को ही पूर्ण रूपेण यहाँ करना चाहिए, अन्तर केवल इतना है कि **पौर्वाह्निक** के स्थान पर **आपराह्निक** पद बोलना चाहिए।

पूर्व-रात्रि-स्वाध्यायविधिः

देव-वंन्दना विधि कर चुकने के पश्चात् प्रदोष-संध्या समय के अनन्तर दो घड़ी काल व्यतीत हो जाने पर पृष्ठ सं. २ से ६ पर्यंत लिखी हुई विधि के अनुसार स्वाध्याय प्रारम्भ कर देना चाहिए और जब अर्ध-रात्रि में दो घड़ी अवशेष रहें तब पृ. १४ पर लिखी विधि के अनुसार स्वाध्याय समाप्त कर देना चाहिए। अन्तर केवल इतना है कि **"आपराह्निक"** के स्थान पर **"पौर्वाह्निक"** पद का प्रयोग करना चाहिए।

अर्धरात्रि के दो घड़ी पूर्व से लेकर अर्धरात्रि के दो घड़ी पश्चात् तक अर्थात् १ घंटा ३६ मिनिट का काल अस्वाध्याय का काल है। इस काल में भी ध्यान, तत्त्व चिन्तन, पंच परावर्तनों का चिन्तन एवं संसार के भयावह दुःख चिन्तन आदि के द्वारा निद्रा पर विजय प्राप्त करना चाहिए, किन्तु यदि निद्रा पर विजय प्राप्त न कर सकें तो अल्प निद्रा द्वारा श्रम दूर कर लेना चाहिए।

इस प्रकार मुनि, आर्यिकाओं को अहोरात्रि (२४ घंटों) में समयानुसार उपर्युक्त **२८ कृतिकर्म** करने चाहिये।

श्री भूत, भविष्यत्, वर्तमान विदेहक्षेत्रस्थतीर्थंकराः

क्रम संख्या	भूतकालीन तीर्थंकराः	वर्तमानकालीन तीर्थंकराः	भविष्यत्कालीन तीर्थंकराः
१	श्री निर्वाण	श्री ऋषभनाथ	श्री महापद्म
२	श्री सागर	श्री अजितनाथ	श्री सुरदेव
३	श्री महासाधु	श्री संभवनाथ	श्री सुपार्श्व
४	श्री विमलप्रभ	श्री अभिनन्दन	श्री स्वयंप्रभ
५	श्री धर	श्री सुमतिनाथ	श्री सर्वात्मभूत
६	श्री सुदत्त	श्री पद्मप्रभ	श्री देवपुत्र
७	श्री अमलप्रभ	श्री सुपार्श्वनाथ	श्री कुलपुत्र
८	श्री उद्धर	श्री चन्द्रप्रभ	श्री उदंक
९	श्री अंगिर	श्री पुष्पदंत	श्री प्रोष्ठिल
१०	श्री सन्मति	श्री शीतलनाथ	श्री जयकीर्ति
११	श्री सिंधु	श्री श्रेयांसनाथ	श्री मुनिसुव्रत
१२	श्री कुसुमांजलि	श्री वासुपूज्य	श्री अर (अप्तम)
१३	श्री शिवगण	श्री विमलनाथ	श्री निष्पाप
१४	श्री उत्साह	श्री अनन्तनाथ	श्री निष्कषाय
१५	श्री ज्ञानेश्वर	श्री धर्मनाथ	श्री विपुल
१६	श्री परमेश्वर	श्री शान्तिनाथ	श्री निर्मल
१७	श्री विमलेश्वर	श्री कुन्थुनाथ	श्री चित्रगुप्त
१८	श्री यशोधर	श्री अरनाथ	श्री समाधिगुप्त
१९	श्री कृष्णमति	श्री मल्लिनाथ	श्री स्वयंभू
२०	श्री ज्ञानमति	श्री मुनिसुव्रतनाथ	श्री अनिवर्तक
२१	श्री शुद्धमति	श्री नमिनाथ	श्री जय
२२	श्री भद्र	श्री नेमिनाथ	श्री विमल
२३	श्री अतिक्रांत	श्री पार्श्वनाथ	श्री देवपाल
२४	श्री शांताश्चेति	श्री वर्द्धमानश्चेति	श्री अनन्तवीर्यश्चेति

विदेहक्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकराः

१. सीमंधर २. युगमंधर ३. बाहु ४. सुबाहु ५. सुजात ६. स्वयंप्रभु ७.वृषभानन ८. अनन्तवीर्य ६. सूरप्रभ १०. विशालकीर्ति ११. चन्द्रानन १२. भद्रबाहु १३. भुजंगम १४. ईश्वर १५. नेमप्रभ (नेमि) १६. वीरसेन १७. महाभद्र १८. देवयश १६. अजितवीर्याश्चेति विदेहक्षेत्रस्थविंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः।

श्री सरस्वती-स्तोत्रम्

सरस्वत्याः प्रसादेन, काव्यं कुर्वन्ति मानवाः।
तस्मान्निश्चल भावेन, पूजनीया सरस्वती।।१।।

श्री सर्वज्ञ मुखोत्पन्ना, भारती बहुभाषिणी।
अज्ञान तिमिरं हन्ति, विद्या बहुविकासिनी।।२।।

सरस्वतीमया दृष्टा, दिव्या कमललोचना।
हंसस्कन्ध समारूढा, वीणा पुस्तक धारिणी।।३।।

प्रथमं भारती नाम, द्वितीयं च सरस्वती।
तृतीयं शारदा देवी, चतुर्थं हंसगामिनी।।४।।

पंचमं विदुषांमाता, षष्ठं वागीश्वरि तथा।
कुमारी सप्तमं प्रोक्तं, अष्टमं ब्रह्मचारिणी।।५।।

नवमं च जगन्माता, दशमं ब्राह्मिणी तथा।
एकादशं तु ब्रह्माणी, द्वादशं वरदाभवेत्।।६।।

वाणी त्रयोदशं नाम, भाषाचैव चतुर्दशं।
पंचदशं च श्रुतदेवी, षोडशं गौर्निगद्यते।।७।।

एतानि श्रुतनामानि, प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
तस्य संतुष्यति माता, शारदा वरदा भवेत्।।८।।

सरस्वती नमस्तुभ्यं, वरदे काम रूपिणी।
विद्यारंभं करिष्यामि, सिद्धिर्भवतु मे सदा।।६।।

श्री सरस्वती स्तोत्रम्

चन्द्रार्ककोटिघटितोज्ज्वलदिव्यमूर्ते,
श्रीचन्द्रिका कलित निर्मल शुभ्रवस्त्रे।
कामार्थदायि कलहंस समाधि रूढे,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।१।।

देवा सुरेन्द्र नतमौलिमणि प्ररोचि,
श्री मंजरी निविड रंजित पादपद्मे।
नीलालके प्रमदहस्ति समानयाने,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।२।।

केयूरहार मणिकुण्डल मुद्रिकाद्यैः,
सर्वांगभूषण नरेन्द्र मुनीन्द्र वंद्ये।
नानासुरत्न वर निर्मल मौलियुक्ते,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।३।।

मंजीरकोत्कनककंकणकिंकणीनां,
कांच्याश्च झंकृत रवेण विराजमाने।
सद्धर्म वारिनिधि संतति वर्द्धमाने,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।४।।

कंकेलिपल्लव विनिंदित पाणि युग्मे,
पद्मासने दिवस पद्मसमान वक्त्रे।
जैनेन्द्र वक्त्र भवदिव्य समस्त भाषे,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।५।।

अर्द्धेन्दु मण्डितजटा ललित स्वरूपे,
शास्त्र प्रकाशिनि समस्त कलाधिनाथे।
चिन्मुद्रिका जपसरामय पुस्तकांके,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।६।।

डिंडीरपिंड हिमशंखसिताभ्रहारे,
पूर्णेन्दु बिम्बरुचि शोभित दिव्यगात्रे।
चांचल्यमान मृगशाववललाट नेत्रे,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।७।।

पूज्ये पवित्रकरणोन्नत कामरूपे,
नित्यं फणीन्द्र गरुडाधिप किन्नरेन्द्रैः।
विद्याधरेन्द्र सुरयक्ष समस्त वृन्दैः,
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।८।।

मंगलाष्टकम्

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र-महिता-सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।।
श्री सिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः।
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मंगलम्।।१।।

श्रीमन्नम्र-सुरासुरेन्द्र-मुकुट-प्रद्योत-रत्नप्रभा।
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाऽम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः।
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मंगलम्।।२।।

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं।
मुक्ति-श्री-नगराऽधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं।
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मंगलम्।।३।।

नाभेयादि-जिनाधिपा-स्त्रिभुवन-ख्याताश्चतु-र्विंशतिः।
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशति-
स्त्रैकाल्ये प्रथिता-स्त्रिषष्टि-पुरुषाः कुर्वन्तु ते मंगलम्।।४।।

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता।
श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा।
द्वात्रिंशत् त्रिदशाऽधिपा-स्तिथिसुरा दिक्कन्यका-श्चाष्टधा।
दिक्पाला दश चेत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु ते मंगलम्।।५।।

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पंच ये।
ये चाष्टांग-महानिमित्त-कुशला येऽष्टौ वियच्चारिणः।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः।
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते मंगलम्।।६।।

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे।
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो।
निर्वाणाऽवनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मंगलम्।।७।।

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनाऽमरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा।
जम्बू-शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे।
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मंगलम्।।८।।

यो गर्भाऽवतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषेकोत्सवो।
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः।
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु ते मंगलम्।।९।।

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं।
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तेश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता।
लक्ष्मीराश्रयते व्यापायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि।।१०।।

श्रीसुधासागराचार्यविरचित

श्री नवदेवता स्तोत्रम् - मंगलाष्टकम्

अर्हंत

श्रीमन्तो जिनपा-जगत्त्रय-नुता, दोषै-र्विमुक्तात्मकाः।
लोकालोक-विलोकनैक चतुराश्शुद्धाः परं निर्मलाः।।
दिव्यानन्त-चतुष्टयादिक-युताः, सत्य-स्वरूपात्मकाः।
प्राप्तायै-र्भुवि-प्रातिहार्य-विभवाः, कुर्वंतु ते मंगलम्।।१।।

सिद्धाः

श्रीमन्तो नृ सुरा सुरेन्द्र महिता, लोकाग्रसंवासिनः।
नित्याः सर्वसुखाकरा भयहरा, विश्वेषु कामप्रदाः।।
कर्मातीत-विशुद्ध भावसहिता, ज्योतिःस्वरूपात्मकाः।
श्रीसिद्धा-जननार्ति मृत्युरहिताः, कुर्वन्तु ते मंगलम्।।२।।

आचार्याः

पंचाचार परायणाः सुविमला-श्चारित्र संद्योतकाः।
अर्हद्रूप-धराश्च निस्पृहपराः, कामादि-दोषोज्झिताः।।
बाह्याभ्यन्तर संगमोहरहिताः शुद्धात्मसंराधकाः।
आचार्या नर-देव-पूजितपदाः, कुर्वंतु ते मंगलम्।।३।।

उपाध्यायाः

वेदांगं निखिलागमं शुभतरं, पूर्णं पुराणं सदा।
सूक्ष्मा-सूक्ष्म-समस्त-तत्त्व-कथकं, श्री द्वादशांग शुभम्।।
स्वात्मज्ञान-विवृद्धये गतमलाः, येऽध्याय-पन्तीश्वराः।
निर्द्वन्द्वावरपाठकाः सुविमलाः, कुर्वंतु ते मंगलम्।।४।।

साधवः

त्यक्त्वाशां भव भोग पुत्रतनुजां, मोहं परं दुस्त्यजं।
निःसंगाकरुणालयाश्च विरता दैगम्बरा धीधनाः।।
शुद्धाचार-रता-निजात्म-रसिका, ब्रह्म-स्वरूपात्मका।
देवेन्द्रैरपि पूजिताः सुमुनयः, कुर्वंतु ते मंगलम्।।५।।

जिनधर्मः

जीवानाम-भयप्रदः सुसदयः, संसारदुःखापहः।
सौख्यं-योनित्तरां ददाति सकलं, दिव्यं मनोवाञ्छितम्।।
तीर्थेशै-रपि-धारितो-द्यनुपमः, स्वर्मोक्ष-संसाधकः।
धर्मः सोऽत्र जिनोदितो-हितकरः, कुर्यात्सदा मंगलम्।।६।।

जिनागम

स्याद्वा-दां-कधरं त्रिलोक-महितं, देवैः सदा संस्तुतं।
सन्देहादि विरोध भाव रहितं, सर्वार्थ सन्देशकम्।।
याथातत्य-मजेय-माप्त-कथितं, कोटि-प्रभा-भासितं।
श्रीमज्जैन-सुशासनं हितकरं, कुर्यात्सदा मंगलम्।।७।।

जिनप्रतिमा

सौम्याः सर्वविकार भावरहिताः, शान्ति स्वरूपात्मकाः।
शुद्धध्यानमयाः प्रशान्तवदनाः, श्रीप्रातिहार्यान्विताः।।
स्वात्मानन्द विकाशकाश्च सुभगाश्चैतन्य भावावहाः।
पंचानां-परमेष्ठिनां हि कृतयाः, कुर्वंतु ते मंगलम्।।८।।

जिनालयाः

घण्टा-तोरण-दाम-धूपघटकै, राजन्ति सन्मंगलैः।
स्तोत्रै-श्चित्त-हरै-र्महोत्सव शतै, र्वादित्र संगीत कैः।।
पूजारम्भ महाभिषेक यजनैः पुण्योत्करैः सत्क्रियैः।
श्रीचैत्या-यतनानि-तानि कृतिनां, कुर्वंतु सन्मंगलम्।।९।।

निखिल नव देवता

इत्थमंगल-दायका जिनवराः, सिद्धाश्च सूर्यादयाः।
पूज्यास्ता नव देवता अघहरा-स्तीर्थोत्तमा-स्तारकाः।।
चारित्रोज्वलतां-विशुद्ध शमतां, बोधिं समाधिं तथा।
श्री जैनेन्द्र 'सुधर्म' मात्मसुखदं, कुर्वंतु सन्मंगलम्।।१०।।

इति वीतराग-तपोमूर्ति स्व. आचार्य 'श्री सुधर्मासागर जी विरचितं नव देवता स्तोत्रम्।

सुप्रभात स्तोत्रम्

यत्स्वर्गावतरोत्सवे यदभव-ज्जन्माभिषेकोत्सवे।
यद्दीक्षा ग्रहणोत्सवे यदखिल, ज्ञानप्रकाशोत्सवे।।
यन्निर्वाण-गमोत्सवे जिनपतेः, पूजाद्भुतं तद्भवैः।
संगीत स्तुति मंगलैः प्रसरतां, मे सुप्रभातोत्सवः।।१।।

श्रीमन्नतामर किरीट मणिप्रभाभि,
रालीढपाद युग, दुर्द्धर कर्मदूर।
श्रीनाभिनन्दन! जिनाजित! शम्भवाख्य!
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।२।।

छत्रत्रय प्रचल चामर वीज्यमान,
देवाभिनन्दनमुने! सुमते! जिनेन्द्र।
पद्मप्रभ रुणमणि द्युतिभासुरांग।
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।३।।

अर्हन् सुपार्श्व कदलीदलवर्ण गात्र,
प्रालेयतारगिरि मौक्तिक वर्णगौर।
चन्द्रप्रभ स्फटिक पाण्डुर पुष्पदंत!
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।४।।

सन्तप्त कांचनरुचे जिनशीतलाख्य,
श्रेयान्विनष्ट दुरिताष्ट कलंक पंक।
बंधूकबंधुररुचे जिनवासुपूज्य,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।५।।

उद्दण्डदर्प करिपो विमलामलांग,
स्थेमन्ननन्तजिदनन्त सुखाम्बुराशे।
दुष्कर्मकल्मषविवर्जितधर्मनाथ,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।६।।

देवामरी-कुसुम-सन्निभ-शान्तिनाथ,
कुन्थो! दयागुण विभूषण भूषितांग।
देवाधिदेव भगवन्नरतीर्थनाथ,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।७।।

यन्मोह ।मल्लमदभञ्जनमल्लिनाथ,
क्षेमकरावितथशासन सुव्रताख्य।
सत्सम्पदा प्रशमितो नमि नामधेय,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।८।।

तापिच्छ गुच्छरुचिरोज्ज्वल नेमिनाथ,
घोरोपसर्ग-विजयिन् जिनपार्श्वनाथ।
स्याद्वाद् सूक्ति मणिदर्पण वर्द्धमान,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।९।।

प्रालेयनील हरितारुण पीतभासं,
यन्मूर्तिमव्यय सुखावसथं मुनीन्द्राः।
ध्यायन्ति सप्ततिशतं जिनवल्लभानां,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।१०।।

सुप्रभातं सुनक्षत्रं, मांगल्यं परिकीर्तिततम्।
चतुर्विंशति तीर्थाणां, सुप्रभातं दिने दिने।।11।।

सुप्रभातं सुनक्षत्रं, श्रेयः प्रत्यभि नन्दितम्।
देवता ऋषयः सिद्धाः, सुप्रभातं दिने दिने।।१२।।

सुप्रभातं तवैकस्य, वृषभस्य महात्मनः!
येन प्रवर्तितं तीर्थं, भव्यसत्त्व सुखावहम्।।१३।।

सुप्रभातं जिनेंद्राणां, ज्ञानोन्मीलित चक्षुषाम्।
अज्ञान तिमिरांधानां, नित्यमस्तमितो रविः।।१४।।

सुप्रभातं जिनेन्द्रस्य, वीरः कमललोचनः।
येन कर्माटवी दग्धा, शुक्लध्यानोग्र वह्निना।।१५।।

सुप्रभातं सुनक्षत्रं, सुकल्याणं सुमंगलम्।
त्रैलोक्यहितकर्त्तृणां, जिनानामेव शासनम्।।१६।।

।। इति सुप्रभात स्तोत्रम्।।

महावीराष्टक स्तोत्रम्

(शिखरिणी छन्द)

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः।
समं भान्ति ध्रौव्य-व्ययज-निल-संतोऽन्तरहिताः।।
जगत्साक्षी मार्गप्रकटनपरो भानुरिव यो।
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।१।।

अताम्रं यच्चक्षुः कमलयुगलं स्पन्दरहितं।
जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तरमपि।।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला।
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।२।।

नमन्नाकेन्द्राली मुकुटमणि भाजालजटिलं।
लसत्पादाम्भोज द्वयमिह यदीयं तनुभृतां।।
भवज्वाला शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि।
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।३।।

यदर्चाभावेन प्रमुदितमना दुर्दर इह।
क्षणादासीत्स्वर्गी गुणगणसमृद्धः सुखनिधिः।।
लभंतेसद्भक्ताः शिवसुखसमाजं किमुतदा।
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।४।।

कनत्स्वर्णाभासोऽप्य-पगत-तनु-ज्ञान-निवहो।
विचित्रात्माप्येको नृपतिवर-सिद्धार्थ-तनयः।।
अजन्मापि श्रीमान् विगतभव-रागोद्भुत गतिर्।
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।५।।

यदीया वाग्गंगा विविधनय-कल्लोल-विमला।
बृहज्ज्ञानांभोभि-र्जगति जनतां या स्नपयति।।
इदानीम-प्येषा बुधजनमरालैः परिचिता।
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।६।।

अनि-र्वारोद्रेकस्त्रिभुवन-जयी काम सुभटः।
कुमारावस्थाया-मपि निजबलाद्-येन-विजितः।
स्फुरन्नित्यानन्द प्रशमपद राज्याय स जिनः।
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।७।।

महामोहातंक-प्रशमनपरा-कस्मिकभिषङ्।
निरापेक्षो बन्धुर्विदित महिमा मंगलकरः।।
शरण्यः साधूनां भव-भय-भृता-मुत्तमगुणो।
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।८।।

महावीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या भागेन्दुना कृतं।
यः पठेच्छ्रणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम्।।९।।

।। इति महावीराष्टक स्तोत्रम्।।

अथ उपा. मुनिश्री कामकुमारनन्दी विरचितं

श्रीनिजानन्द स्तोत्रम्

न यस्यास्ति रागो, न यस्यास्ति द्वेषो,
न यस्यास्ति मित्रं, न यस्यास्ति शत्रुः।
न यस्यास्ति कर्ता, न यस्यास्ति भोक्ता,
निजानन्दरूपं, तमीडे जिनेन्द्रम्।।१।।

न यस्यास्ति माया, न यस्यास्ति लोभो,
न यस्यास्ति मानो, न यस्यास्ति कोपः।
न यस्यास्ति शोको, न यस्यास्ति मोहो,
निजानन्दरूपं, तमीडे जिनेन्द्रम्।।२।।

न यस्यास्ति हासो, न यस्यास्ति भीति-,
र्न यस्यास्ति मृत्यु, र्न यस्यास्ति जन्मः।
न यस्यास्ति चिन्ता, न यस्यास्ति कामो,
निजानन्दरूपं, तमीडे जिनेन्द्रम्।।३।।

न यस्यास्ति खेदो, न यस्यास्ति भेदो,
न यस्यास्ति लेश्या, न यस्यास्ति योगः।
न यस्यास्ति सूत्रं, न यस्यास्ति गात्रं,
निजानन्दरूपं, तमीडे जिनेन्द्रम्।।४।।

न यस्यास्ति शिष्यो, न यस्यास्ति पुत्रो,
न यस्यास्ति भिक्षा, न यस्यास्ति दीक्षा।
न यस्यास्ति शिक्षा, न यस्यास्ति शाला,
निजानन्दरूपं, तमीडे जिनेन्द्रम्।।५।।

न यस्यास्ति भेदो, न यस्यास्ति वेदो,
न यस्यास्ति लिंग, न यस्यास्ति सङ्गः।
न यस्यास्ति पुण्यं, न यस्यास्ति पापं,
निजानन्दरूपं, तमीडे जिनेन्द्रम्।।६।।

न यस्यास्ति मात्रा, न यस्यास्ति पात्रा,
न यस्यास्ति मौलि, र्न यस्यास्ति माला।
न यस्यास्ति साध्यं, न यस्यास्ति बाध्यम्,
निजानन्दरूपं, तमीडे जिनेन्द्रम्।।७।।

न यस्यास्ति तातो, न यस्यास्ति माता,
न यस्यास्ति वीक्षा, न यस्यास्ति तीक्षा।
न यस्यास्ति पन्थाः, न यस्यास्ति मन्था,
निजानन्दरूपं, तमीडे जिनेन्द्रम्।।८।।

न यस्यास्त्युपायो, न यस्यास्त्यपायः,
न यस्यास्त्युपेक्षा, न यस्यास्त्यपेक्षा।
न यस्यास्ति कीर्ति, र्न यस्यास्त्यकीर्तिः,
निजानन्दरूपं, तमीडे जिनेन्द्रम्।।६।।

न यस्यास्ति खेटो, न यस्यास्ति धामन्,
न यस्यास्ति रन्था, न यस्यास्ति संस्था।
न यस्यास्ति तुष्टि, र्न यस्यास्ति पुष्टि-,
र्निजानन्दरूपं, तमीडे जिनेन्द्रम्।।१०।।

न यस्यास्ति ऋद्धि, र्न यस्यास्ति सिद्धि,
न यस्यास्ति मोषो, न यस्यास्ति रोषः।
न यस्यास्ति रोधो, न यस्यास्ति शोधो,
निजानन्दरूपं, तमीडे जिनेन्द्रम्।।११।।

न यस्यास्ति तापो, न यस्यास्ति शापो,
न यस्यास्ति रोगो, न यस्यास्ति भोगः।
न यस्यास्ति तृष्णा, न यस्यास्ति कृष्णा,
निजानन्दरूपं, तमीडे जिनेन्द्रम्।।१२।।

न यस्यास्ति मध्यं, न यस्यास्ति चान्तं,
न यस्यास्ति चाद्यं, न यस्यास्ति सीमा।
न यस्यास्ति भाषा, न यस्यास्ति वाणी,
निजानन्दरूपं, तमीडे जिनेन्द्रम्।।१३।।

न यस्यास्ति गन्धो, न यस्यास्ति रूपं,
न यस्यास्ति शब्दो, न यस्यास्ति सूक्तिः।
न यस्यास्ति जिह्वा, न यस्यास्ति वक्त्रं,
निजानन्दरूपं, तमीडे जिनेन्द्रम्।।१४।।

न यस्यास्ति निद्रा, न यस्यास्ति तन्द्रा,
न यस्यास्ति धीति, र्न यस्यास्ति भीतिः।
न यस्यास्ति रीति, र्न यस्यास्ति प्रीति-,
र्निजानन्दरूपं, तमीडे जिनेन्द्रम्।।१५।।

न यस्यास्ति वेषो, न यस्यास्ति स्त्यवंश,
न यस्यास्ति जाति र्न, यस्यास्ति गोत्रम्।
न यस्यास्ति पेयं, न यस्यास्ति खाद्यं,
निजानन्दरूपं, तमीडे जिनेन्द्रम्।।१६।।

न यस्यास्ति वेशो, न यस्यास्ति भूषा,
न यस्यास्ति रङ्को, न यस्यास्ति सङ्गः।
न यस्यास्ति चिन्हं, न यस्यास्ति मूर्ति,
निजानन्दरूपं, तमीडे जिनेन्द्रम्।।१७।।

न यस्यास्ति तंत्रं, न यस्यास्ति मन्त्रो,
न यस्यास्ति धर्मो, न यस्यास्ति कर्म।
न यस्यास्ति रक्ति, र्न यस्यास्ति युक्ति-,
र्निजानन्दरूपं, तमीडे जिनेन्द्रम्।।१८।।

न यस्यास्ति घोषो न यस्यास्ति नादो,
न यस्यास्ति संज्ञा न यस्यास्ति संज्ञी।
न यस्यास्ति नीति र्न यस्यास्ति भङ्गि-,
र्निजानन्दरूपं तमीडे जिनेन्द्रम्।।१९।।

न यस्यास्ति रासो न यस्यास्ति हासो,
न यस्यास्ति राशि र्न यस्यास्ति काशी।
न यस्यास्ति भार्या न यस्यास्ति चार्या,
निजानन्दरूपं तमीडे जिनेन्द्रम्।।२०।।

न यस्यास्ति पुष्टि र्न यस्यास्ति तुष्टि-,
र्न यस्यास्ति मूलं न यस्यास्ति कूलम् ।
न यस्यास्ति तापो न यस्यास्ति शापो,
निजानन्दरूपं तमीडे जिनेन्द्रम् ।।२१।।

निजानन्द मिदं स्तोत्रं, कृतं कामकुमारेण ।
यः पठेच्छृणुयान्नित्यं सः प्राप्नोति शिवं सौख्यम् ।

।। इति श्री निजानन्द स्तोत्रम् ।।

वीतराग स्तोत्रम्

शिवं शुद्ध बुद्धं परं विश्वनाथं । न देवो न बंधुर्न कर्मा न कर्त्ता ।
न अंगं न संगं न स्वेच्छा न कायं ।चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम् ।।१।।

न बंधो न मोक्षो न रागादिदोषः । न योगं न भोगं न व्याधिर्न शोकं ।
न कोपं न मानं न माया न लोभं । चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम् ।।२।।

न हस्तौ न पादौ न घ्राणं न जिह्वा । न चक्षुर्न कर्णं न वक्त्रं न निद्रा ।
न स्वामी न भृत्यः न देवो न मर्त्यः । चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम् ।।३।।

न जन्म न मृत्युं न मोहं न चिंता । न क्षुद्रो न भीतो न कार्श्यं न तंद्रा ।
न स्वेदं न खेदं न वर्णं न मुद्रा । चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम् ।।४।।

त्रिदण्डे त्रिखण्डे हरे विश्वनाथं । हृषीकेश विध्वस्त कर्मादिजालं ।
न पुण्यं न पापं न चाक्षादि गात्रं । चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम् ।।५।।

न बालो न वृद्धो न तुच्छो न मूढो । न स्वेदं न भेदं न मूर्तिर्न स्नेहः ।
न कृष्णं न शुक्लं न मोहं न तन्द्रा । चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम् ।।६।।

न आद्यं न मध्यं न अंतं न मन्या । न द्रव्यं न क्षेत्रं न कालो न भावः ।
न शिष्यो गुरूर्नापि हीनं न दीनं । चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम् ।।७।।

इदं ज्ञानरूपं स्वयं तत्त्व वेदी। न पूर्णं न शून्यं न चैत्यस्वरूपो।
न चान्यो न भिन्नं न परमार्थमेकम्। चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम्।।८।।

आत्माराम गुणाकरं गुणनिधिं चैतन्य रत्नाकरं।
सर्वे भूतगता गते सुख दुःखे ज्ञाते त्वया सर्वगे।।

त्रैलोक्याधिपते स्वयं स्वमनसा ध्यायंति योगीश्वराः।
वंदे तं हरिवंश हर्ष हृदयं श्रीमान् हृदाभ्युद्यताम्।।९।।

।। इति श्री वीतराग स्तोत्रम्।।

परमानन्द स्तोत्रम्

परमानन्दसंयुक्तं, निर्विकारं निरामयम्।
ध्यानहीना न पश्यन्ति, निजदेहे व्यवस्थितम्।।१।।

अनंतसुखसम्पन्नं, ज्ञानामृतपयोधरम्।
अनंतवीर्यसम्पन्नं, दर्शनं परमात्मनः।।२।।

निर्विकार निराबाधं, सर्वसंगविवर्जितम्।
परमानन्दसम्पन्नं, दर्शनं परमात्मनः।।३।।

उत्तमा स्वात्मचिंतास्यान्मोहचिंता च मध्यमा।
अधमा कामचिंता स्यात्, परचिंताऽधमाधमा।।४।।

निर्विकल्पसमुत्पन्नं ज्ञानमेव सुधारसम्।
विवेकमंजुलिं कृत्वा तत्पिबंति तपस्विनः।।५।।

सदानन्दमयं जीवं यो जानाति, स पण्डितः।
स सेवते निजात्मानं, परमानन्दकारणम्।।६।।

नलिन्यां च यथा नीरं, भिन्नं तिष्ठति सर्वदा।
अयमात्मा स्वभावेन, देहे तिष्ठति निर्मलः।।७।।

द्रव्यकर्ममलैर्मुक्तं भावकर्मविवर्जितम्।
नोकर्मरहितं विद्धि निश्चयेन चिदात्मनः।।८।।

आनन्दं ब्रह्मणोरूपं, निजदेहे व्यवस्थितम्।
ध्यानहीना न पश्यन्ति, जात्यन्धा इव भास्करम्।।९।।

तद्ध्यानं क्रियते भव्यैर्मनोयेन विलीयते।
तत्क्षणं दृश्यते शुद्धं चिच्चमत्कालक्षणम्।।१०।।

ये ध्यानशीला मनुयः प्रधानास्तेदुःखहीना नियमाद्भवन्ति।
सम्प्राप्य शीघ्रं परमात्मतत्वम्, व्रजन्ति मोक्षं क्षणमेकमेव।।११।।

आनन्दरूपं परमात्मतत्वम्, समस्तसंकल्पविकल्पमुक्तम्।
स्वभावलीना निवसन्ति नित्यम्, जानाति योगी स्वयमेव तत्त्वम्।।१२।।

।। इति परमानन्द स्तोत्रम्।।

परमात्म स्तोत्रम्

चिदानन्दमयं शुद्धं निराकारं निरामयं।
अनन्तसुखसम्पन्नं सर्वसंगाविवर्जितम्।।१३।।

लोकामात्रप्रमाणोऽयं निश्चये न हि संशयः।
व्यवहारे तनूमात्रः कथितः परमेश्वरैः।।१४।।

यत्क्षणं दृश्यते शुद्धं, तत्क्षण गतविभ्रमः।
स्वस्थचित्तः स्थिरीभूत्वा, निर्विकल्प समाधितः।।१५।।

स एव परमं ब्रह्म, स एव जिनपुंगवः।
स एव परमं तत्त्वं, स एव परमो गुरुः।।१६।।

स एव परमं ज्योतिः, स एव परमं तपः।
स एव परमं ध्यानं, स एव परमात्मकः।।१७।।

स एव सर्व कल्याणं, स एव सुखभाजनं।
स एव शुद्धचिद्रूपं, स एव परम शिवः।।१८।।

स एव परमानंदः, स एव सुखदायकः।
स एव परमज्ञानं, स एव गुणसागरः।।१९।।

परमाह्लाद-संपन्नं, रागद्वेष-विवर्जितम्।
सोहं तं देहमयेषु, यो जानाति स पंडितः।।२०।।

आकाररहितं शुद्ध स्व स्वरूपे व्यवस्थितम्।
सिद्धमष्टगुणोपेतं, निर्विकारं निरंजनं।।२१।।

तत्सदृशं निजात्मानं, यो जानाति स पंडितः।
सहजानन्दचैतन्यप्रकाशाय महीयसे।।२२।।

पाषाणेषु यथा हेम, दुग्धमध्ये यथा घृतम्।
तिलमध्ये यथा तैलं देहमध्ये यथा शिवः।।२३।।

काष्ठमध्ये यथा वह्निः, शक्ति रूपेण तिष्ठति।
अयमात्मा शरीरेषु यो जानाति स पण्डितः।।२४।।

।। इति परमात्म स्तोत्रम्।।

अथ उपा. मुनिश्री कामकुमारनन्दि विरचितं

श्री आदिनाथ स्तोत्रम्

मुनिवरकृतपूजं पावनानां वरिष्ठं,
कलितकरुणभावं शान्तकामप्रसारम्।
अमरवरजनानां मौलिमालाललामं,
सकलगुणनिधानं त्वां नमाम्यादिनाथम्।।१।।

वितर मयि सुबुद्धिं कामलेश्यादिशून्यां,
तव चरणकृपाणां पात्रमाराद् भवेयम्।
तव वचनसुधानां वृष्टयः सन्तु पुण्या,
जगति लसतु भद्रा भावना मंगलाढ्या।।२।।

भवति यदि वचोभिस्ते सतुतिर्हे कृपालो!
भवतु मम परीता पुण्यपुञ्जैस्तु जिह्वा।
करयुगलमिदं मेऽर्चापरं स्यात्पुनश्चेद्,
भवतु मम न भीतिः कापि संसार-सिन्धौ।।३।।

सदयहृदयेमेतत्ते चकास्ते महात्मन्,
नयनयुगलमास्ते पुण्यकारुण्यपूर्णम्।
वपुरधिकमनोज्ञं प्रेक्षणीयं सहर्षं,
मम हृदि कुरु वासं हे दयालो! सदैव।।४।।

तनुरगणितशोभाभास्वरा सौम्यमुद्रा,
करयुगलसरोजं प्रोज्ज्वलंपद्मबद्धम्।
मुकुलितनयनश्रीर्नासिकाग्रं गताऽसौ,
दिशतु दिशतु भद्रैर्भावितं मोक्षमार्गम्।।५।।

निखिलकलुषपूर्णं चित्तमेतन्मदीयं,
न हि गुणगणगानैः भावितं वः कदाचित्।
इति यदपि दयालो! ज्ञायते सर्वमेतत्,
तदपि कुरु कृपालो! मां कृपापात्रमत्र।।६।।

भवतु तव कृपायाश्चेत् सुवृष्टिर्मदीये,
मनसि परममोदस्याङ्कुराः प्रस्फुरेयुः।
तव वदनसरोजे भाति या भारती सा,
लसतु लसतु नित्यं भव्यभावा जगत्याम्।।७।।

तव ललितगुणानाङ्कापि नास्त्येव सीमा,
कथमहमिह कुर्यां त्वत्स्तुतिं मन्दबोधः।
प्रसरति मधुभावे पुष्पलासे पिकाली,
यदि वदति वसन्तस्तत्र हेतुः प्रकृष्टः।।८।।

तव मधुरमुदारं रूपराशिं स्वदृग्भिः,
शतगुणितशतैर्नो पातुमुच्चैः शशाक।
सुरगणपतिरिन्द्रः श्रूयते किन्तु नाथ,
तव ललितगुणानां गानमीहे विधातुम्।।९।।

नहि रसपरिपाके दक्षतां तामवैमि,
न च वचसि मनोज्ञं भङ्गिमानं दधामि।
कविकुलपरिपाटी सेविता नो कदाचित्,
तव गुणगरिमाणं गातुकामस्तथापि।।१०।।

सकलनदनदीनामास्पदं सागरोऽसौ,
निरवधिमसिपात्रं भूमिरेषा च पत्रम्।
निखलविपिनराजी लेखनी स्याद्गुणाँस्ते,
लिखितुं सुरगुरुश्चेन्नैव पारं प्रयाति।।११।।

अगणितशशिलनेखाः कान्तिहीना भवन्ति,
तव चरणनखानां चन्द्रकानां पुरस्तात्।
मुखकमलविभानामग्रतो यान्ति दैन्यं
तरूणतपनतेजांस्याशु हे धामपुञ्ज।।१२।।

समवसरणरूपं मंदिरं त्रिःपरीत्य,
ह्यनवरतसुखानां राशयो भक्तिभावात्।
ददति यदि नितान्तं तुष्टिमारम्भरूपाम्,
अनुभवति तदैतन्मासं मुक्तिसौख्यम्।।१३।।

त्रिभुवनसुखसारे त्वय्युपेतेऽत्रचित्ते,
विहतसकलतापा या कृपामेघमाला।
परिलसति पुनः सा मन्दमन्दं समन्तान्,
नव नव सुखबिन्दून् कल्पते वर्षणाय।।१४।।

शतमखनयनानामुत्सवः सौख्यसिन्धु-
र्निखिलगणधराणामर्चनाचारुमूर्तिः।
विमलकरूणाभावैः पावयन् जीवलोकं,
जयतु जयतु नित्यं विश्वबन्धुर्जिनेन्द्रः।।१५।।

दमयति मदनानां सेन्यसङ्घं स्मृतोयो,
वितरति सुखमूलां श्लाघ्यरूपां दयां च।
दलति कलुषपुञ्जं त्रायते सज्जनान् द्राक्,
जयतु जयतु नित्यं विश्वबन्धुर्जिनेन्द्रः।।१६।।

नहि मद-मद-रेखा ने कषायादि दोषा,
न च मरणरुजानां स्पर्शनं यस्य चित्ते।
विशदविमलबोधः साम्यदृष्टिः सदाऽसौ,
जयतु जयतु नित्यं विश्वबन्धुर्जिनेन्द्रः।।१७।।

कलयति कललक्ष्मीमानने चन्द्ररम्ये,
करूणमधुरभावान्मानसे सञ्चिनोति।
वचसि मधुरिमाणां सारसारं दधानो,
जयतु जयतु नित्यं विश्वबन्धुर्जिनेन्द्रः।।१८।।

वपुरगणितकामं ते यथाजातरूपं,
नयनपथमुपात्तं सौख्यराशिं ददातु।
चरणकमलशोभा भाविताऽन्तर्जनानां,
विधूतसकलतापा राजतां मानसे मे।।१९।।

जयति पदनखाग्रज्योतिषामुच्छलच्छी,
जयति करसरोजप्रोज्ज्वला शान्तिमुद्रा।
तदनु जयति शोभा याऽऽननस्थाऽनवद्या,
जयति सकलतापध्वंसनार्हो जिनेन्द्रः।।२०।।

जयति नयनशोभाऽधिष्ठिता नासिकाग्रे,
जयति दशनवासोभास्वरा विद्रुमश्रीः।
जयति चिबुकसंस्था रोचमानोर्ध्वरेखा,
जयति परमरम्यः कम्बुकण्ठो जिनेन्द्रः।।२१।।

जितमरणजरासङ्गं सदाप्तं जिनेन्द्रं,
जितनिखिलकुबोधं पूज्यापूजावरेण्यम्।
जितमदनसुरूपं देवदेवेन्द्रवन्द्यं,
सकलसुखनिधानं तं नमाम्यादिनाथम्।।२२।।

नयनपथमनोज्ञं सुप्रभुं भावगम्यं,
निहितकरूणभावं सन्मुनीन्द्रं सुबोधम्।
अगणितगुणवृन्दं कुन्द चन्द्राब्जशुभ्रं,
सकलसुखनिधानं तं नमाम्यादिनाथम्।।२३।।

अभिनववरतीर्था ये चतुर्विंशतिभ्रा,
जिनवरधृतदेहाश्चापि देवत्वपूर्णाः।
अविदितविधिभक्तीनज्ञजीवान् सुबद्धान्,
शिथिलयत मुनीन्द्राः! बन्धनात् प्रीतिनम्रान्।।२४।।

आदिनाथमिदं स्तोत्रं, कृतं कामकुमारेण।
यः पठेच्छुणुयान्नित्यं, सः प्राप्जोति सदा शिवम्।।

इति उपाध्याय मुनिश्री कामकुमारनन्दी विरचित आदिनाथस्तोत्रम्

अथ उपा. मुनिश्री कामकुमारनन्दि विरचितं

श्रीमानस्तम्भ-स्तोत्रम्

रे!रे भव्याश्चलत चलत प्राञ्जलैरञ्जलीभि-
र्दर्शं दर्शं सुखमनुपमं प्राप्स्यथातो नितान्तम्।
चैत्यद्वारि प्रथितपदविं प्रौच्चकैर्भासमानम्,
मानस्तम्भं नमत मनसा मान विध्वंसनार्हम्।।१।।

रम्या घण्टा रण-रण-रणत्काम्यशब्दा यदूर्ध्वे,
भागे नित्यं श्रवणसुभगाः श्रूयमाणाः लसन्ति।
पार्श्वे पार्श्वे मणिगणशुभा भ्राजते यत्र लक्ष्मी-
र्यस्मिन्नुच्चैर्विलसतिसदा हेमशृङ्गच्छटाऽच्छा।।२।।

कृत्वा श्रद्धां हृदि सुविपुलां यो मुदा भक्तिभावान्,
मानस्तम्भं नमति शिरसा याति सम्यक्त्वमारात्।
एवं चास्य स्फुरति हृदये भावना या तयैव,
जीवो नित्यं सुखमुपनतो याति विद्याधरत्वम्।।३।।

तत्र न्यस्ताः मधुरमधुरा वीक्ष्य मूर्तीश्चतस्रो,
लब्धा नैत्रेः कथमपि परा निर्वृतिर्याति भव्या।
शब्दाख्येयं न भवति सखे! तत्सुखानां पदं यन्-
मूकं कां कां कथयतु सुधामाधुरीं मोदकानाम्।।४।।

सन्तापानां विरमति कथा दर्शनादेव तस्य,
सञ्जायन्ते मनसि सकलाः शान्तयः कान्तयश्च।
ध्वंसन्ते तां सकलकलनाः कामनाः कल्मषाक्ताः
क्व स्यात् क्रोधः क्व चासौभीतिराहो रतिर्वा।।५।।

मानस्तम्भा मणिसमुदिता भान्ति दिव्यप्रकाशा,
दिक्षु पुण्याश्चतसृषु सदा मानविध्वंसशीलाः।
येषु न्यस्ता विविधरचनाः शोभमानाः समन्तात्,
प्रक्षाल्यन्ते समवसरणप्रोद्गतैः कान्तिपुञ्जैः।।६।।

मेरूत्तुङ्ग समवसरणं प्रेक्ष्य नष्टाभिमाना,
मानस्तम्भान् विगलितमदा मोदमाना जना ये।
श्रद्धापूताः पुलकितमनोविग्रहा भक्तिनम्राः,
नित्यं देवापचितिचतुराः सर्वदा ते प्रसन्नाः।।७।।

दोधूयन्ते तरलतरला यत्पताकाः शुभाः खे,
यत्पर्यन्ते विशदरूचयो मूर्तयो भ्राजमानाः।
यत्पार्श्वे सन्त्यमितसुखदाश्चित्रविच्छित्तयस्ते,
मानस्तम्भा मणिमयभुवः कस्य नो वन्दनीयाः।।८।।

सन्त्युच्छ्रायैः शिखरकलशैर्मन्दिराण्युज्ज्वलानि,
घण्टानादः प्रचलति शुभः पापहर्ता जनानाम्।
दोधूयन्ते ध्वजपटकुलान्याकुलान्यभ्रवृन्दे,
मध्येचैत्यं स्तुतिमधुपदैः स्तूयते यत्र देवः।।९।।

स्वच्छच्छायै रणितमधुरैर्हैर्ममाणिक्यरम्यै-
र्दीप्ते दीप्ते र्विवधरचनाभूषणैर्मण्डितास्ते।
अष्टद्रव्यै रूपचितसपर्याप्रदीपोज्ज्वलानि,
नीत्वा पात्राण्यमलहृदया मंदिरं यान्नित भक्ताः।।१०।।

कश्चित्पूजाप्रवचनपरः कोऽपि सक्तः कथासु,
धूपैर्दीपै र्विविधकुसमैः कश्चिदर्चानुरक्तः।
शुद्धैर्द्रव्यैः स्नपयति जनः कोऽपि कल्याणमूर्ति-
मन्यःपञ्चामृतविरचनासङ्कुलःस्तौति देवम्।।११।।

अस्त्येकत्र श्रमणवचसां माधुरी भक्तिभव्या,
पूजाव्यग्राः क्वचिदुपगताः श्रावकाः श्राविकाश्च।
आकर्ण्यन्ते क्वचिदनुपमा आर्यिकास्तोत्रधारा,
देवस्थाने समवसरणं भाति साक्षादिवात्र।।१२।।

धन्यास्ते ये समवसरणं यान्ति पूतैर्मनोभि-
र्धन्यंतेषां नयनयुगलं वीक्ष्य तत्रत्यलक्ष्मीः।
श्रावं श्रावं मधुरमधुरं घण्टिकानां निनादं,
प्राज्यैः पुण्यैः श्रवणयुगलं पूर्यते भाग्यभाजाम्।।१३।।

प्रत्यग्राणा भवति कुसुमानां सुधासिक्तवृष्टिः,
खाद् देवाग्रे परमसुभगा मोदसन्दोहदात्री।
दिव्यैरेषा कलयति भुवो गन्धपूतैः परागै,
राश्चर्याणां परिणतिमहो द्वादशीं योजनानाम्।।१४।।

आसीद् दिव्यं धनपतिकृतं गन्धकुट्या मनोज्ञं,
भव्यैश्चित्रैर्मणिभिरमलैः कल्पितं कान्तकान्ति।
अत्युछायोदयगिरिनिभं पीठकं राजमानम्,
भास्वद्दीप्ति र्विलसति विभापुञ्जकैर्यत्र देवः।।१५।।

मन्दं मन्दं वहति पवने चञ्चला यत्पलाशा,
दिव्यैः पुष्पैः समधिकशुभा मोदमाना पृथिव्याम्।
यत्सम्पर्काद् विगलितशुचः पादपास्ते ह्यशोकाः,
के ते चान्ये नहि सुखकलां ये स्पृशन्त्वस्य योगात्?।।१६।।

आविभुर्तावति सकलादात्मदेशात् पवित्रा,
गाम्भीर्यं या कलयति सदा माधुरी-चातुरीणाम्।
मोक्षाध्वानं प्रथयति हितासादनैकप्रवृत्ति,
रन्त्या सीमा जयति भवतः वा मुधाऽसौ त्रिलोके।।१७।।

आकाशे यो ध्वनति मधुरं धीरगम्भीरघोषं,
कोणाघाते जनयति सुखं भव्यजीवेष्वजस्रम्।
यस्मोद्दामो ढम-ढम-ढम ध्वान-शब्दः समेषां,
चेतोजातं सुखयति महादुन्दुभिस्ताड्यतेऽसौ।।१८।।

ये सेवन्ते चरणयुगलं श्रीजिनेन्द्रस्य भक्त्या,
सर्वे तापा-अथ च विपदो दर्शनादेव नष्टाः।
नो संसारो भवति च पुनर्याति शान्तिं प्रकामं,
भास्वद्भानावृदयतिरवौ सूचिभेद्यं तमः क्व।।१९।।

रे चेतश्चेन्निखधिसुखं प्राप्तुकामं भवेस्त्वं,
तद्गच्छत्वं सकलभुवन ज्येष्ठमीड्यं जिनेन्द्रम्।
यत्सम्पर्काद् विगलति समः कर्मबन्धो जनानां,
काले काले भवति च पुनर्मोक्षमार्गः प्रशस्त।।२०।।

क्षुद्रान् कामान् त्यज भज पुनः श्रीजिनेन्द्राङ्घ्रिपद्मं,
पापाचारान् कलयसि कथं किं न भीतोऽसि मृत्योः।
धर्मे वृत्तिं कुरू गुरुमुखाच्छास्त्रसारं पिब त्वं,
जाले बद्धो मृग इव कथंचेष्टसे व्याकुलः सन् ।।२१।।

आत्मानं यो निबिडकलनः कर्मदोषप्रकर्ष,
शुद्धं बुद्धं शिवसुखकरं बद्धभावो निविष्टः।
श्रुत्वा युष्मत्-सुमधुरपदं नाम जैनेन्द्रा! केकां,
शैथिल्यं द्राक् भजति भुजगो भीतभीतो यथैव।।२२।।

पापं हन्ति प्रसभमभितः श्रीजिनेन्द्रस्य नाम,
पुण्यं मार्गं कलयति सुखप्रीतिपूर्णं समन्तात्।
ऋद्धिं यच्छत्यनुदिनमथो चक्रवर्तित्वमुच्चैः,
मिथ्या मार्गं गलयति सदा देवपादानुकान्ति।।२३।।

देवाः स्वर्गात् समवसरणं प्राप्य सौभाग्यकामा,
अत्युत्साहैर्मधुरमधुरं चामरांश्चालयन्तः।
नष्टातङ्का विगलिततमोग्रन्थयः के न वास्यु-
र्येऽस्मादृक्षा जगतिमनुजा त्वत्प्रसादाज्जिनेन्द्र।।२४।।

प्रोद्यच्छायं विविधमणिभी रोचमानं सुभव्यं,
छत्राणां तत् त्रिकमुपगतं यत्सपर्याधुरीणम्।
एको देवस्त्वमिह रमसे प्रोच्यकैर्यत्त्रिलोक्यां,
तस्माच्छत्रत्रयमिदमहो त्वत्सकाशं चकास्ते।।२५।।

मार्तण्डानां हरति सकलां भां प्रभामण्डलं ते,
इन्दोर्दैन्यं कलयति विभा! विद्युदाभां वराकी।
अग्रे यस्य प्रहतविभवा निष्प्रभाः कल्पवृक्षा,
विद्योतन्ते विमलविमलाः कान्तयस्तास्त्रिलोक्याम्।।२६।।

मानस्तम्भमिदं स्तोत्रं, कृतं कामकुमारेण।
यः पठेच्छृणुयातनित्यं सः प्राप्नोत्यचिरं सुखम्।।२७।।

आचार्य मुनिश्री मानतुंग विरचितं

भक्तामर-स्तोत्रम्

(वसन्ततिलका छन्द)

भक्तामर प्रणतमौलि-मणि-प्रभाणा,
मुद्योतकं दलित पाप तमोवितानम्।
सम्यक्प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा,
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम्।।१।।

यः संस्तुतः सकल वाङ्मय तत्वबोधा,
दुद्भूत बुद्धि पटुभिः सुरलोक नाथैः।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितय चित्त-हरै-रुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम।।२।।

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित पाद पीठ,
स्तोतुं समुद्यत-मतिर्विगत-त्रपोऽहम्।।
बालं विहाय जल संस्थित-मिन्दु-बिम्ब,
मन्यः क इच्छति जनः सहसाग्रहीतुम्।।३।।

वक्तुंगुणान्-गुण समुद्र शशांक-कान्तान्,
कस्तेक्षमः सुरगुरु प्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त काल पवनोद्धत-नक्र-चक्रं,
कोवा तरीतु-मलमम्बुनिधिं भुजाभ्यां।।४।।

सोऽहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश,
कर्तुंस्तवं विगत-शक्ति-रपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्म-वीर्य-मविचार्य मृगी मृगेन्द्रम्,
नाभ्येतिकिं निजशिशोः परिपालनार्थम्।।५।।

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास धाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किलमधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र चारु कलिकानिकरैकहेतु।।६।।

त्वत्संस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धं,
पापं क्षणात् क्षयमुपैति शरीरभाजाम्।
आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु,
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम्।।७।।

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु,
मुक्ताफल-द्युतिमुपैति ननूद-बिन्दुः।।८।।

आस्तां तव स्तवन-मस्त-समस्त-दोषम्,
त्वत्-संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्र-किरणः कुरुतेप्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकास-भाञ्जि।।९।।

नात्यद्भुतं भुवन-भूषण! भूत-नाथ,
भूतै-र्गुणै-र्भुवि भवन्त-मभिष्टुवन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्म-समं करोति।।१०।।

दृष्ट्वा भवन्त-मनिमेष विलोकनीयम्,
नान्यत्र तोष मुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकर-द्युति-दुग्ध सिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधे-रसितुं क इच्छेत्।।११।।

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणुभिस्त्वम्,
निर्मापित-स्त्रिभुवनैक-ललामभूत।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्याम्,
यत्ते समान-मपरं नहि रूप-मस्ति।।१२।।

वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग-नेत्र-हारि,
निःशेष-निर्जित जगत्-त्रितयोपमानम्।
बिम्बं कलंक-मलिनं क्व निशाकरस्य,
यद् वासरे भवति पाण्डु-पलाश-कल्पम्।।१३।।

सम्पूर्ण-मण्डल-शशांक कला-कलाप,
शुभ्रा गुणा-स्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति।
ये संश्रिता-स्त्रिजगदीश्वर! नाथ मेकम्,
कस्तान् निवारयति संचरतो यथेष्टम्।।१४।।

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि-
र्नीतं मनागपि मनो न विकार-मार्गम्।
कल्पान्त-काल-मरुता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित्।।१५।।

निर्धूम-वर्ति-रपवर्जित-तैल-पूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रय-मिदं प्रकटी-करोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानाम्,
दीपोऽपरस्त्व-मसिनाथ! जगत् प्रकाशः।।१६।।

नास्तं कदाचि-दुपयासि न राहु-गम्यः,
स्पष्टी-करोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भोधरोदर-निरुद्ध-महा-प्रभावः,
सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र! लोके।।१७।।

नित्योदयं दलित-मोह-महान्धकारम्,
गम्यं न राहु-वदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज-मनल्प-कान्ति,
विद्योतयज्जग-दपूर्व-शशांक-बिम्बम्।।१८।।

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा?
युष्मन् मुखेन्दु-दलितेषु तमः सु नाथ।
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनि जीव-लोके,
कार्यं कियज्जलधरै-र्जलभार-नम्रैः।।१९।।

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशम्,
नैवं तथा हरि-हरादिषु नायकेषु।
तेजो महा-मणिषु याति यथा महत्त्वम्,
नैवं तु काच-शकले किरणाकुलेऽपि।।२०।।

मन्ये वरं हरि-हरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोष-मेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन् मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि।।२१।।

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र रश्मिम्,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुर-दंशु-जालम्।।२२।।

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य-वर्ण-ममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युम्,
नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः।।२३।।

त्वा-मव्ययं विभु-मचिन्त्य मसंख्य-माद्यम्,
ब्रह्माण-मीश्वर-मनन्त-मनंग-केतुम्,
योगीश्वरं विदित-योग-मनेक-मेकम्,
ज्ञान-स्वरूप ममलं प्रवदन्ति सन्तः।।२४।।

बुद्धस्त्व-मेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधात्,
त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रय-शंकरत्वात्।
धातासि धीर! शिव-मार्ग-विधे-र्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि।।२५।।

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्ति-हराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल भूषणाय।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय।।२६।।

को विस्मयोऽत्र यदि नामगुणै-रशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाश-तया मुनीश।
दोषै-रुपात्त-विविधाश्रय-जात गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचि-दपीक्षितोऽसि।।२७।।

उच्चै-रशोक-तरु-संश्रित-मुन्मयूख-
माभाति रूप-ममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत् किरण-मस्त-तमो-वितानम्,
बिम्बं रवे-रिव पयोधर-पार्श्ववर्ति।।२८।।

सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद्-विलसदंशु-लता-वितानम्,
तुंगोदयद्रि-शिरसीव सहस्ररश्मेः।।२९।।

कुन्दावदात-चलचामर चारु शोभम्,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम्।
उद्यच्छशांक-शुचि-निर्झर-वारिधार-
मुच्चै-स्तटं-सुरगिरे-रिव शातकौम्भम्।।३०।।

छत्र-त्रयं तव विभाति शशांककान्त-
मुच्चै स्थितं स्थगित-भानुकर-प्रतापम्।
मुक्ताफल-प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभम्,
प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्।।३१।।

गम्भीर-तार-रव-पूरित-दिग्विभाग-
स्त्रैलोक्य-लोक-शुभ-संगम-भूति-दक्षः।
सद्-धर्मराज-जय-घोषण-घोषकः सन्,
खे दुन्दुभि-र्ध्वनति ते यशसः प्रवादी।।३२।।

मन्दार-सुन्दर-नमेरु-सुपारिजात-
सन्तानकादि-कुसुमोत्कर-वृष्टि-रुद्धा।
गन्धोद-बिन्दु-शुभ-मन्द-मरुत् प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां तति-र्वा।।३३।।

शुम्भत् प्रभा-वलय-भूरि विभा विभोस्ते,
लोक-त्रये द्युतिमतां द्युति-माक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्-दिवाकर-निरन्तर-भूरि-संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशा-मपि सोम-सौम्याम्।।३४।।

स्वर्गापवर्ग-गम-मार्ग-विमार्गणेष्टः,
सद्धर्म-तत्व-कथनैक-पटु-स्त्रिलोक्या
दिव्यध्वनि-र्भवति ते विशदार्थ-सर्व-
भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणैः प्रयोज्यः।।३५।।

उन्निद्र-हेमनव-पंकज-पुञ्जकान्ति-
पर्युल्लसन् नख-मयूख शिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः,
पद्मानि तत्रविबुधाः परिकल्पयन्ति।।३६।।

इत्थं यथा तव विभूति-रभूज्जिनेन्द्र,
धर्मोपदेशन-विधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि।।३७।।

श्च्योतन् मदाविल-विलोल-कपोल मूल-
मत्त-भ्रमद्-भ्रमर-नाद-विवृद्ध-कोपम्।
ऐरावताभ-मिभ-मुद्धत-मापतन्तम्,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भव दाश्रितानाम्।।३८।।

भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्वल-शोणिताक्त,
मुक्ताफल-प्रकर-भूषित-भूमिभागः।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रमयुगाचल-संश्रितं ते।।३९।।

कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्पम्,
दावानलं ज्वलित-मुज्ज्वल-मुत्स्फुलिंगम्।
विश्वं जिघत्सु-मिव सम्मुख मापतन्तम्,
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम्।।४०।।

रक्तेक्षणं समद कोकिल कण्ठ-नीलम्,
क्रोधोद्धतं फणिन-मुत्फण-मापतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्त-शंक-
स्त्वन्नाम-नागदमनी-हृदि यस्य पुंसः।।४१।।

वल्गत्तुरंग-गज-गर्जित-भीमनाद-
माजौ बलं बलवता-मपि भूपतीनाम्।
उद्यद् दिवाकर-मयूख-शिखापविद्धम्,
त्वत् कीर्तनात्तम इवाशु भिदा-मुपैति।।४२।।

कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित वारिवाह-
वेगावतार-तरणातुर-योध-भीमे।
युद्धे जयं विजित-दुर्जय-जेय-पक्षा-
स्त्वत् पाद-पंकज-वनाश्रयिणो लभन्ते।।४३।।

अम्भोनिधौ क्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र-
पाठीन-पीठ-भय-दोल्वण-वाडवाग्नौ।
रंगत्तरंग-शिखर-स्थित-यान-पात्रा-
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति।।४४।।

उद्भूत-भीषण-जलोदर-भार-भुग्नाः,
शोच्यां दशा-मुपगताच्युत-जीविताशाः।
त्वत् पाद-पंकज-रजोऽमृत-दिग्ध-देहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्य-रूपाः।।४५।।

आपादकण्ठ-मुरु-श्रृंखल-वेष्टितांगा,
गाढं बृहन्-निगड-कोटि-निघृष्ट-जंघा,
त्वन्नाम-मंत्र-मनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगत-बंध-भया भवन्ति।।४६।।

मत्त-द्विपेन्द्र-मृगराज-दवानलाहि-
संग्राम-वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाश-मुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते।।४७।।

स्तोत्र स्रजं तव जिनेन्द्र! गुणै-र्निबद्धाम्,
भक्त्या मया विविध-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठगता-मजस्रम्,
तंमानतुंग-मवशा समुपैति लक्ष्मीः।।४८।।

॥ इति श्री मानतुंगाचार्य विरचितं भक्तमार (आदिनाथ) स्तोत्रम् ॥

श्रीमदाचार्यकुमुदचन्द्रदेवप्रणीतम्

कल्याणमंदिरस्तोत्रम्

(वसन्ततिलका छन्द)

कल्याण-मंदिरमुदारमवद्य-भेदि,
भीताभय-प्रदमनिन्दितमङ्घ्रि-पद्मम्।
संसार-सागर-निमज्जदशेष-जन्तु-
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य।।१।।

यस्य स्वयं सुरगुरु-र्गरिमाम्बुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृत-मति-र्न विभु-र्विधातुम्।
तीर्थेश्वरस्य कमठ-स्मय-धूमकेतो-
स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये।।२।।

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-
मस्मादृशः कथमधीश! भवन्त्यधीशाः।
धृष्टोऽपि कौशिक-शिशु-र्यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः।।३।।

मोह-क्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो,
नूनं गुणान्गणयितुं न तव क्षमेत।
कल्पान्त-वान्त-पयसः प्रकटोऽपि यस्मा-
न्मीयेत केन जलधे-र्ननु रत्नराशिः।।४।।

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसंख्य-गुणाकरस्य।
बालोऽपि किं न निज-बाहु-युगं वितत्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः।।५।।

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश!,
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः।
जाता तदेवमसमीक्षित-कारितेयं,
जल्पन्ति वा निज-गिरा ननु पक्षिणोऽपि।।६।।

आस्तामचिन्त्य-महिमा जिन संस्तवस्ते,
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति।
तीव्राऽऽतपोपहत पान्थ-जनान्निदाघे-
प्रीणाति पद्म-सरसः स-रसोऽनिलोऽपि।।७।।

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो शिथिलीभवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्म-बन्धाः।
सद्यो भुजंगम-मया इव मध्य-भाग-
मभ्यागते वन-शिखण्डिनि चन्दनस्य।।८।।

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र!,
रौद्रै-रुपद्रव-शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि।
गो-स्वामिनि स्फुरित-तेजसि दृष्टमात्रे,
चौरैरिवाऽऽशु पशवः प्रपलायमानैः।।९।।

त्वं तारको जिन कथं भविनां त एव,
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून-
मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः।।१०।।

यस्मिन्हर्-प्रभृतयोऽपि हत-प्रभावाः,
सोऽपि त्वया रति-पतिः क्षपितः क्षणेन।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्धर-वाडवेन।।११।।

स्वामिन्ननल्प-गरिमाणमपि प्रपन्ना-
स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः।।१२।।

क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा वद कथं किल कर्म-चौराः।
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके,
नील-द्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी।।१३।।

त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप-
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुज-कोष-देशे।
पूतस्य निर्मल-रुचे र्यदि वा किमन्य-
दक्षस्य संभव-पदं ननु कर्णिकायाः।।१४।।

ध्यानाज्जिनेश भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय मरमात्म-दशां व्रजन्ति।
तीव्रानलादुपल-भावमपास्य लोके,
चामीकरत्वमचिरादिव धातु-भेदाः।।१५।।

अन्तः सदैव जिन यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम्।
एतत्स्वरूपमथ मध्य-विवर्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः।।१६।।

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेद-बुद्ध्या,
ध्यातो जिनेन्द्र! भवतीह भवत्प्रभावः।
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं,
किं नाम नो विष-विकारमपाकरोति।।१७।।

त्वामेव वीत-तमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो हरि-हरादि-धिया प्रपन्नाः।
किंकाच-कामलिभिरीश सितोऽपि शंखो,
नो गृह्यते विविध-वर्ण-विपर्ययेण।।१८।।

धर्मोपदेश-समये सविधानुभावा-
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,
किं वा विबोधमुपयाति न जीव-लोकः।।१९।।

चित्रं विभो कथमवाङ् मुख-वृन्तमेव,
विष्वक्पतत्यविरला सुर-पुष्प-वृष्टिः।
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश!,
गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि।।२०।।

स्थाने गभीर-हृदयोदधि-सम्भवायाः,
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति।
पीत्वा यतः परम-सम्मद-संग-भाजो,
भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम्।।२१।।

स्वामिन्सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचयः सुर-चामरौघाः।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनि-पुंगवाय,
ते नूनमूर्ध्व-गतयः खलु शुद्ध-भावाः।।२२।।

श्यामं गभीर-गिरमुज्ज्वल-हेम-रत्न-
सिंहासनस्थमिह भव्य-शिखण्डिनस्त्वाम्।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै-
श्चामीकराद्रि-शिरसीव नवाम्बुवाहम्।।२३।।

उद्गच्छता तव शिति-द्युति-मण्डलेन,
लुप्त-च्छद-च्छविरशोक-तरुर्बभूव।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग,
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि।।२४।।

भो भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन-
मागत्य निर्वृति-पुरीं प्रति सार्थवाहम्।
एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते।।२५।।

उद्द्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ,
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः।
मुक्ता-कलाप-कलितोरु-सितातपत्र-
व्याजात्त्रिधा धृत-तनुर्ध्रुवमभ्युपेतः।।२६।।

स्वेन प्रपूरित-जगत्त्रय-पिण्डितेन,
कान्ति-प्रताप-यशसामिव संचयेन।
माणिक्य-हेम-रजत-प्रविनिर्मितेन,
सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि।।२७।।

दिव्य-स्रजो जिन नमत्त्रिदशाधिपाना-
मुत्सृज्य रत्न-रचितानपि मौलि-बन्धान्।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,
त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव।।२८।।

त्वं नाथ जन्म-जलधेर्विपराङ्मुखोऽपि,
यत्तारयस्यसुमतो निज-पृष्ठ-लग्नान्।
युक्तं हि पार्थिव-निपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो यदसि कर्म-विपाक-शून्यः।।२६।।

विश्वेश्वरोऽपि जन-पालक दुर्गतस्त्वं,
किं वाऽक्षर-प्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश!
अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व-विकास-हेतुः।।३०।।

प्राग्भार-संभृत-नभांसि रजांसि रोषा-
दुत्थपितानि कमठेन शठेन यानि।
छायापि तैस्तव न नाथ हता हताशो,
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा।।३१।।

यद्गर्जदूर्जित-घनौघमदभ्र-भीम-
भ्रश्यत्तडिन् मुसल-मांसल-घोरधारम्।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर-वारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन दुस्तर-वारि कृत्यम्।।३२।।

ध्वस्तोर्ध्व-केश-विकृताकृति-मर्त्य-मुण्ड-
प्रालम्बभृद्-भयदवक्त्र-विनिर्यदग्निः।
प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः,
सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भव-दुःख-हेतुः।।३३।।

धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य-
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्य-कृत्याः।
भक्त्योललसत्पुलक-पक्षमल-देह-देशाः,
पाद-द्वयं तव विभो भुवि जन्मभाजः।।३४।।

अस्मिन्नपार-भव-वारि-निधौ मुनीश!,
मन्ये न मे श्रवण-गोचरतां गतोऽसि।
अकर्णिते तु तव गोत्र-पवित्र-मन्त्रे,
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति।।३५।।

जन्मान्तरेऽपि तव पाद-युगं न देव,
मन्ये मया महितमीहित-दान-दक्षम्।
तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवानां,
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम्।।३६।।

नूनं न मोह-तिमिरावृतलोचनेन,
पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलोकितोऽसि।
मर्मा विभो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः,
प्रोद्यत्प्रबन्ध-गतयः कथमन्यथैते।।३७।।

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।
जातोऽस्मि तेन जन-बान्धव दुःखपात्रं,
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भाव-शून्या।।३८।।

त्वं नाथ दुःखि-जन-वत्सल हे शरण्य!,
कारुण्य-पुण्य-वसते वशिनां वरेण्य।
भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय,
दुःखांकरोद्दलन-तत्परतां विधेहि।।३९।।

निःसख्य-सार-शरणं शरणं शरण्य-
मासाद्य सादित-रिपु प्रथितावदानम्।
त्वत्पाद-पंकजमपि प्रणिधान-वन्ध्यो,
वन्ध्योऽस्मि चेद्भुवन पावन हा हतोऽस्मि।।४०।।

देवेन्द्र-वन्द्य विदिताखिल-वस्तुसार!,
संसार-त्तारक विभो भुवनाधिनाथ।
त्रायस्व देव करुणा-ह्रद मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयद-व्यसनाम्बु-राशेः।।४१।।

यद्यस्ति नाथ भवदङ्घ्रि-सरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि सन्तत-सञ्चितायाः।
तन्मे त्वदेक-शरणस्य शरण्य भूयाः,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि।।४२।।

इत्थं समाहित-धियो विधिवज्जिनेन्द्र!,
सान्द्रोल्लसत्पुलक-कञ्चुकितांगभागाः।
त्वद्बिम्ब-निर्मल-मुखाम्बुज-बद्ध-लक्ष्या,
ये संस्तवं तव विभो रचयन्ति भव्याः।।४३।।

आर्या छन्द

जन नयन-'कुमुदचन्द्र'-प्रभास्वराः स्वर्ग-संपदो भुक्त्वा।
ते विगलित-मल-निचया अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते।।४४।।

॥ इति श्रीमदाचार्यकुमुदचन्द्रदेव कल्याणमंदिर स्तोत्रम् ॥

श्रीमदाचार्यवादिराजदेवप्रणीतम्

एकीभावस्तोत्रम्

(मन्दाक्रान्ता छन्द)

एकीभावं गत इव मया यः स्वयं कर्म-बन्धो,
घोरं दुःखं भव-भव गतो दुर्निवारः करोति।
तस्याप्यस्य त्वयि जिन-वरे भक्तिरुन्मुक्तये चेज्,
जेतुंशक्यो भवति न तया कोऽवरस्तापहेतुः।।१।।

ज्योतिरूपं दुरित-निवह-ध्वान्त-विध्वंस-हेतुं,
त्वामेवाहुर्जिनवर चिरं तत्त्व-विद्याभियुक्ताः।
चेतोवासे भवसि च मम स्फार-मुद्भासमान-
स्तस्मिन्नंहः कथमिव तमो वस्तुतो वस्तुमीष्टे।।२।।

आनन्दाश्रु-स्नपित-वदनं गद्गदं चाभिजल्पन्,
यश्चायेत त्वयि दृढ-मनाः स्तोत्र-मन्त्रैर्भवन्तम्।
तस्याभ्यस्तादपि च सुचिरं देह-वल्मीक-मध्यान्,
निष्कास्यन्ते विविध-विषम-व्याधयः काद्रवेयाः।।३।।

प्रागेवेह त्रिदिव-भवनादेष्यता-भव्य-पुण्यात्,
पृथ्वी-चक्रं कनकमयतां देव निन्ये त्वयेदम्।
ध्यान-द्वारं मम रुचिकरं स्वान्त-गेहं प्रविष्ट-
स्तत्किं चित्रं जिन वपुरिदं यत्सुवर्णीकरोषि।।४।।

लोकस्यैकस्त्वमसि भगवन्निर्निमित्तेन बन्धु-
स्त्वय्येवासौ सकल-विषया शक्तिरप्रत्यनीका।
भक्ति-स्फीतां चिरमधिवसन्मामिकां चित्र-शय्यां,
मय्युत्पन्नं कथमिव ततः क्लेश-यूथं सहेथाः।।५।।

जन्माटव्यां कथमपि मया देव दीर्घं भ्रमित्वा,
प्राप्तैवेयं तव नय-कथा स्फार-पीयूष-वापी।
तस्या मध्ये हिमकर-हिम-व्यूह-शीते नितांतं,
निर्मग्नं मां न जहति कथं दुःख दावोपतापाः।।६।।

पाद-न्यासादपि च पुनतो यात्रया ते त्रिलोकीं,
हेमाभासो भवति सुरभिः श्रीनिवासश्च पद्मः।
सर्वांगेण स्पृशति भगवंस्त्वय्यशेषं मनो मे,
श्रेयः किं तत्स्वयमहरहर्यन्न मामभ्युपैति।।७।।

पश्यन्तं त्वद्वचनममृतं भक्ति-पात्र्या पिबन्तं,
कर्मारण्यात्पुरुषमसमानन्द-धाम-प्रविष्टम्।
त्वां दुर्वार-स्मर-मद-हरं त्वत्प्रसादैक-भूमिं,
क्रूराकाराः कथमिव रुजा कण्टका निर्लुठन्ति।।८।।

पाषाणत्मा तदितरसमः केवलं रत्न-मूर्ति-
र्मानस्तम्भो भवति च परस्तादृशो रत्न-वर्गः।
दृष्टि-प्राप्तो हरति स कथं मान-रोगं नराणां,
प्रत्यासत्तिर्यदि न भवतस्तस्य तच्छक्ति-हेतुः।।९।।

ह्रद्यः प्राप्तो मरुदपि भवन्मूर्ति-शैलोपवाही,
सद्यः पुंसां निरवधि-रुजा-धूलिबंधं धुनोत्ति।
ध्यानाहूतो हृदय-कमलं यस्य तु त्वं प्रविष्ट-
स्तस्याशक्यः क इह भुवने देव लोकोपकारः।।१०।।

जानासि त्वं मम भवे-भवे यच्च यादृक्च दुःखं,
जातं यस्य स्मरणमपि मे शस्त्रवन्निष्पिनष्टि।
त्वं सर्वेशः सकृप इति च त्वामुपेतोऽस्मि भक्त्या,
यत्कर्तव्यं तदिह विषये देव एव प्रमाणम्।।११।।

प्रापद्दैवं तव नुति-पदैर्जीवकेनोपदिष्टैः,
पापाचारी मरण-समये सारमेयोऽपि सौख्यम् ।
कः सन्देहो यदुपलभते वासव-श्री प्रभुत्वं,
जल्पज्जाप्यैर्मणिभिरमलैस्त्वन्नमस्कार-चक्रम् । ।१२ । ।

शुद्धे ज्ञाने शुचिनि चरिते सत्यपि त्वय्यनीचा,
भक्तिर्नो चेदनवधि-सुखावञ्चिका कुञ्चिकेयम् ।
शक्योद्घाटं भवति हि कथं मुक्ति-कामस्य पुंसो,
मुक्ति-द्वारं परिदृढ़-महामोह-मुद्रा-कवाटम् । ।१३ । ।

प्रच्छन्नः खल्वयमघमयैरन्धकारैः समन्तात्,
पन्था मुक्तेः स्थपुटित-पदः क्लेश-गर्तैरगाधैः ।
तत्कस्तेन व्रजति सुखतो देव तत्त्वावभासी,
यद्यग्रेऽग्रे न भवति भवद्भारती रत्न-दीपः । ।१४ । ।

आत्म-ज्योतिर्निधिरनवधिर्द्रष्टुरानन्द-हेतुः,
कर्म-क्षोणी-पटल-पिहितो योऽनवाप्यः परेषाम् ।
हस्ते कुर्वन्त्यनतिचिरतस्तं भवद्भक्तिभाजः,
स्तोत्रैर्बद्ध-प्रकृति-परुषोद्दाम-धात्री-खनित्रैः । ।१५ । ।

प्रत्युत्पन्ना नय-हिमगिरेरायता चामृताब्धेः,
या देव त्वत्पद-कमलयोः संगता भक्ति-गंगा ।
चेतस्तस्यां मम रुचि-वशादाप्लुतं क्षालितांहः,
कल्माषं यद्भवति किमियं देव सन्देह-भूमिः । ।१६ । ।

प्रादुर्भूत-स्थिर-पद-सुख त्वामनुध्यायतो मे,
त्वय्येवाहं स इति मतिरुत्पद्यते निर्विकल्पा ।
मिथ्यैवेयं तदपि तनुते तृप्तिमभ्रेषरूपां,
दोषात्मानोऽप्यभिमत-फलास्त्वत्प्रसादाद् भवन्ति । ।१७ । ।

मिथ्यावादं मलमपनुदन्सप्तभंगी-तरंगै-
र्वागम्भोधिर्भुवनमखिलं देव पर्येति यस्ते।
तस्यावृत्तिं सपदि विबुधाश्चेतसैवाचलेन,
व्यातन्वनतः सुचिरममृतासेवया तृप्नुवन्ति।।१८।।

आहार्येभ्यः स्पृहयति परं यः स्वभावादहृद्यः,
शस्त्र-ग्राही भवति सततं वैरिणा यश्च शक्यः।
सर्वांगेषु त्वमसि सुभगस्त्वं न शक्यः परेषां,
तत्किं भूषा-वसन-कुसुमैः किं च शस्त्रैरुदस्त्रैः।।१६।।

इन्द्रः सेवां तव सुकुरुतां किं तया श्लाघनं ते,
तस्यैवेयं भव-लय-करी श्लाघ्यतामातनोति।
त्वं निस्तारी जनन-जलधेः सिद्धि-कान्ता-पतिस्त्वं,
त्वं लोकानां प्रभुरिति तव श्लाघ्यते स्तोत्रमित्थम्।।२०।।

वृत्तिर्वाचामपर-सदृशी न त्वमन्येन तुल्यः,
स्तुत्युद्गाराः कथमिव ततस्त्वय्यमी नः क्रमन्ते।
मैवं भूवंस्तदपि भगवन्भक्ति पीयूष-पुष्टा-
स्ते भव्यानामभिमत-फलाः पारिजाता भवन्ति।।२१।।

कोपावेशो न तव न तव क्वापि देव प्रसादो,
व्याप्तं चेतस्तव हि परमोपेक्षयैवानपेक्षम्।
आज्ञावश्यं तदपि भुवनं सन्निधि वैर-हारी,
क्वैवंभूतं भुवन-तिलकं प्राभवं त्वत्परेषु।।२२।।

देव! स्तोतुं त्रिदिव गणिका-मण्डली-गीत-कीर्तिं,
तोतूर्ति त्वां सकल-विषय-ज्ञान-मूर्तिं जनो यः।
तस्य क्षेमं न पदमटतो जातु जाहूर्ति पन्था-
स्तत्त्वग्रन्थ-स्मरण-विषये नैष मोमूर्ति मर्त्यः।।२३।।

चित्ते कुर्वन्निरवधि-सुख-ज्ञान-दृग्वीर्य-रूपं,
देव! त्वां यः समय-नियमादाऽऽदरेण स्तवीति।
श्रेयोमार्ग स खलु सुकृती तावता पूरयित्वा,
कल्याणानां भवति विषयः पञ्चधा पञ्चितानाम्।।२४।।

(शार्दूल विक्रीडित छन्द)

भक्ति-प्रस्व-महेन्द्र-पूजित-पद त्वत्कीर्तने न क्षमाः,
सूक्ष्म-ज्ञान-दृशोऽपि संयमभृतः के हन्त मन्दा वयम्।
अस्माभिः स्तवन-च्छलेन तु परस्त्वय्यादरस्तन्यते,
स्वात्माधीन-सुखैषिणां स खलु नः कल्याण-कल्पद्रुमः।।२५।।

(स्वागता छन्द)

वादिराजमनु शाब्दिकलोको-वादिराजमनु तार्किक-सिंहः
वादिराजमनु काव्यकृतस्ते-वादिराजमनु भव्य-सहायः।।२६।।

॥ इति श्रीमदाचार्यवादिराजदेव एकीभाव स्तोत्रम् ॥

श्रीमद् धनञ्जयकविना प्रणीतम्

विषापहारस्तोत्रम्

उपजाति छन्द

स्वात्म-स्थितः सर्व-गतः समस्त, व्यापार-वेदी विनिवृत्त संगः।
प्रवृद्ध-कालोऽप्यजरो वरेण्यः, पायादपायात्पुरुषः पुराणः।।१।।

परैरचिन्त्यं युग-भारमेकः, स्तोतुं वहन्योगिभिरप्यशक्यः।
स्तुत्योऽद्य मेऽसौ वृषभो न भानोः, किमप्रवेशे विशति प्रदीपः।।२।।

तत्याज शक्रः शकनाभिमानं, नाहं त्यजामि स्तवनानुबन्धम्।
स्वल्पेन बोधेन ततोऽधिकार्थं, वातायनेनेव निरूपयामि।।३।।

त्वं विश्वदृश्वा सकलैरदृश्यो, विद्वानशेषं निखिलैरवेद्यः।
वक्तुंकियान्कीदृश मित्यशक्यः, स्तुतिस्ततोऽशक्तिकथा तवास्तु।।४।।

व्यापीडितं बालमिवात्म-दोषै, रुल्लाघतां लोकमवापिपस्त्वम्।
हिताहिता-वेषणमान्द्यभाजः, सर्वस्य जन्तोरसि बाल-वैद्यः।।५।।

दाता न हर्ता दिवसं विवस्वा, नद्यश्व इत्यच्युत दर्शिताशः।
सव्याजमेवं गमयत्यशक्तः, क्षणेन दत्संऽभिमतं नताय।।६।।

उपैति भक्त्या सुमुखः सुखानि, त्वयि स्वभावाद् विमुखश्च दुःखम्।
सदावदात-द्युतिरेकरूप, स्तयोस्त्वमादर्श इवावभासि।।७।।

अगाधताब्धेः स यतः पयोधि, र्मेरोश्च तुंगा प्रकृतिः स यत्र।
द्यावापृथिव्योः पृथुता तथैव, व्याप त्वदीया भुवनान्तराणि।।८।।

तवानवस्था परमार्थ-तत्त्वं, त्वया न गीतः पुनरागमश्च।
दृष्टं विहाय त्वमदृष्टमैषी, र्विरुद्ध वृत्तोऽपि समञ्जसम्त्वम्।।९।।

स्मरः सुदग्धो भवतैव तस्मिन्, नुद्धूलितात्मा यदि नाम शम्भुः।
अशेत वृन्दोपहतोऽपि विष्णुः, किं गृह्यते येन भवानजागः।।१०।।

स नीरजाः स्यादपरोऽघवान्वा, तद्दोषकीर्त्यैव न ते गुणित्वम्।
स्वतोऽम्बुराशेर्महिमा न देव! स्तोकापवादेन जलाशयस्य।।११।।

कर्मस्थितिं जन्तुरनेक-भूमिं, नयत्यमुंसा च परस्परस्य।
त्वं नेतृ-भावं हि तयोर्भवाब्धौ, जिनेन्द्र नौ-नाविकयोरिवाख्यः।।१२।।

सुखाय दुःखानि गुणाय दोषान्, धर्माय पापानि समाचरन्ति।
तैलाय बालाः सिकता-समूहं, निपीडयन्ति स्फुटमत्वदीयाः।।१३।।

विषापहारं मणिमौषधानि, मंत्रं समुद्दिश्य रसायनं च।
भ्राम्यन्त्यहो न त्वमिति स्मरन्ति, पर्याय-नामानि तवैव तानि।।१४।।

चित्ते न किञ्चित्कृतवानसि त्वं, देवः कृतश्चेतसि येन सर्वम्।
हस्ते कृतं तेन जगद्विचित्रं, सुखेन जीवत्यपि चित्तबाह्यः।।१५।।

त्रिकाल-तत्त्वं त्वमवैस्त्रिलोकी, स्वामीति संख्या-नियतेरमीषाम्।
बोधाधिपत्यं प्रति नाभविष्यं, स्तेऽन्येऽपि चेद्व्याप्स्यदमूनपीदम्।।१६।।

नाकस्य पत्युः परिकर्म रम्यं, नागम्यरूपस्य तवोपकारि।
तस्यैव हेतुः स्वसुखस्य भानो, रुद्बिभ्रतच्छत्रमिवादरेण।।१७।।

क्वोपेक्षकस्त्वं क्व सुखोपदेशः, स चेत्किमिच्छा-प्रतिकूल-वादः।
क्वासौ क्व वा सर्वजगत्प्रियत्वं, तन्नो यथातथ्यमवेविजं ते।।१८।।

तुंगात्फलं यत्तदकिञ्चनाच्च, प्राप्यं समृद्धान्न धनेश्वरादेः।
निरम्भसोऽप्युच्चतमादिवाद्रे, र्नैकापि निर्याति धुनी पयोधेः।।१९।।

त्रैलोक्य-सेवा नियमाय दण्डं, दधे यदिन्द्रो विनयेन तस्य।
तत्प्रातिहार्य भवतः कुतस्त्यं, तत्कर्म योगाद्यदि वा तवास्तु।।२०।।

श्रिया परं पश्यति साधु निःस्वः, श्रीमान्न कश्चित् कृपणं त्वदन्यः।
यथा प्रकाश-स्थितमन्धकार, स्थायीक्षतेऽसौ न तथा तमःस्थम्।।२१।।

स्ववृद्धिनिःश्वास-निमेषभाजि, प्रत्यक्षमात्मानुभवेऽपि मूढः।
किं चाखिल-ज्ञेय-विवर्ति-बोध, स्वरूपमध्यक्षमवैति लोकः।।२२।।

तस्यात्मजस्तस्य पितेति देव!, त्वां येऽवगायन्ति कुलं प्रकाश्य।
तेऽद्यापि नन्वाश्मनमित्यवश्यं, पाणौ कृतं हेम पुनस्त्यजन्ति।।२३।।

दत्तस्त्रिलोक्यां पटहोऽभिभूताः, सुराऽसुरास्तस्य महान् स लाभः।
मोहस्स मोहस्त्वयि को विरोद्धुं, मूलस्य नाशो बलवद्विरोधः।।२४।।

मार्गस्त्वयैको ददृशे विमुक्ते, श्चतुर्गतीनां गहनं परेण।
सर्वं मया दृष्टमिति स्मयेन त्वं, मा कदाचिद्-भुजमालुलोक।।२५।।

स्वर्भानुरर्कस्य हविर्भुजोऽम्भः, कल्पान्तवातोऽम्बुनिधेर्विघातः।
संसार-भोगस्य वियोम-भावो, विपक्ष-पूर्वाभ्युदयास्त्वदन्ये।।२६।।

अजानतस्त्वां नमतः फलं यत्, तज्जानतोऽन्यं न तु देवतेति।
हरिन्मणिं काचधिया दधान, स्तं तस्य बुद्ध्या वहतो न रिक्तः।।२७।।

प्रशस्त-वाचश्चतुराः कषायै, र्दग्धस्य देव-व्यवहारमाहुः।
गतस्य दीपस्य हि नन्दितत्वं, दृष्टं कपालस्य च मंगलत्वम्।।२८।।

नानार्थमेकार्थमदस्त्वदुक्तं, हितं वचस्ते निशमय्य वक्तुः।
निर्दोषतां के न विभावयन्ति, ज्वरेण मुक्तः सुगमः स्वरेण।।२९।।

न क्वापि वाञ्छा वृते च वाक् ते, काले क्वचित् कोऽपि तथा नियोगः।
न पूरयाम्यम्बुधिमित्युदंशुः, स्वयं हि शीतद्युतिरभ्युदेति।।३०।।

गुणा गभीराः परमाः प्रसन्ना, बहु-प्रकारा बहवस्तवेति।
दृष्टोऽयमन्तः स्तवने न तेषां, गुणो गुणानां किमतः परोऽस्ति।।३१।।

स्तुत्या परं नाभिमतं हि भक्त्या, स्मृत्या प्रणत्या च ततो भजामि।
स्मरामि देवं प्रणमामि नित्यं, केनाप्युपायेन फलं हि साध्यम्।।३२।।

ततस्त्रिलोकी-नगराधिदेवं, नित्यं परं ज्योतिरनन्त-शक्तिम्।
अपुण्य-पापं पर-पुण्य-हेतुं, नमाम्यहं वन्द्यमवन्दितारम्।।३३।।

अशब्दमस्पर्शमरूप-गंधं, त्वां नीरसं तद्विषयावबोधम्।
सर्वस्य मातार-ममेयमन्यै, र्जिनेन्द्रमस्मार्यमनुस्मरामि।।३४।।

अगाधमन्यैर्मनसाप्यलंघ्यं, निष्किञ्चनं प्रार्थितमर्थवद्भिः।
विश्वस्य पारं तमदृष्टपारं, पतिं जनानां शरणं व्रजामि।।३५।।

त्रैलोक्य-दीक्षा-गुरवे नमस्ते, यो वर्धमानोऽपि निजोन्नतोऽभूत।
प्राग्गण्डशैलः पुनरद्रि-कल्पः, पश्चान्न मेरुः कुल-पर्वतोऽभूत्।।३६।।

स्वयंप्रकाशस्य दिवा निशा वा, न बाध्यता यस्य न बाधकत्वम्।
न लाघवं गौरवमेकरूपं, वन्दे विभुं कालकलामतीतम्।।३७।।

इति स्तुतिं देव विधाय दैन्याद्, वरं न याचे त्वमुपेक्षकोऽसि।
छाया तरुं संश्रयतः स्वतः स्यात्, कश्छायया याचितयात्मलाभः।।३८।।

अथास्ति दित्सा यदि वोपरोध, स्त्वय्येव सक्तां दिश भक्ति-बुद्धिम्।
करिष्यते देव तथा कृपां मे, को वात्मपोष्ये सुमुखो न सूरिः।।३९।।

वितरति विहिता यथाकथंचि-ज्जिन विनताय मनीषितानि भक्तिः।
त्वयि तुनि-विषया पुनर्विशेषाद्, दिशति सुखानि यशो 'धनं जयं' च।।४०।।

॥ इति श्रीमद् धनञ्जयकविना विषापहार स्तोत्रम्॥

श्रीमद्भूपालकविना विरचिता

जिनचतुर्विंशतिका

(शार्दूलविक्रीडित छन्दः)

श्रीलीलायतनं मही-कुल-गृहं कीर्ति-प्रमोदास्पदं,
वाग्देवी-रति-केतनं जय-रमा-क्रीडा-निधानं महत्।
स स्यात् सर्व-महोत्सवैक-भवनं यः प्रार्थितार्थ-प्रदं,
प्रातः पश्यति कल्प-पादप-दल-च्छायं जिनाङ्घ्रि-द्वयम्।।१।।

(वसन्ततिलका छन्दः)

शान्तं वपुः श्रवण-हारि वचश्चरित्रं,
सर्वोपकारि तव देव ततः श्रुतज्ञाः।
संसार-मारव-महास्थल-रुन्द-सान्द्र-
च्छाया-महीरुह! भवन्तमुपाश्रयन्ते।।२।।

(शार्दूलविक्रीडित छन्दः)

स्वामिन्नद्य विनिर्गतोऽस्मि जननी-गर्भान्ध-कूपोदरा-
दद्योद्घाटित दृष्टि रस्मि फलवज्जन्मास्मि चाद्य स्फुटम्।
त्वामद्राक्षमहं यदक्षय-पदानन्दाय लोकत्रयी-
नेत्रेन्दीवर काननेन्दुममृत-स्यन्दि-प्रभा-चन्द्रिकम्।।३।।

निःशेष-त्रिदशेन्द्र-शेखर-शिखा-रत्न-प्रदीपावली-
सान्द्रीभूत-मृगेन्द्र-विष्टर-त्तटी-माणिक्य-दीपावलिः।
क्वेयं श्रीः क्व च निःस्पृहत्वमिदमित्युहातिगस्त्वादृशः,
सर्व-ज्ञान-दृशश्चरित्र-महिमा लोकेश! लोकोत्तरः।।४।।

राज्यं शासनकारि-नाकपति यत् त्यक्तं तृणावज्ञया,
हेला-निर्दलित-त्रिलोक-महिमा यन्मोह-मल्लो जितः।
लोकालोकमपि स्वबोध-मुकुरस्यान्तःकृतं यत् त्वया,
सैषाश्चर्य परम्परा जिनवर क्वान्यत्र संभाव्यते।।५।।

दानं ज्ञान-धनाय दत्तमसकृत् पात्राय सद्वृत्तये,
चीर्णान्युग्र-तपांसि तेन सुचिरं पूजाश्च बह्व्यः कृताः।
शीलानां निचयः सहामलगुणैः सर्वः समासादितो,
दृष्टस्त्वं जिन येन दृष्टि-सुभगः श्रद्धा परेण क्षणम्।।६।।

प्रज्ञा-पारमितः स एव भगवान् पारं स एव श्रुत-
स्कन्धाब्धेर्गुण-रत्न-भूषण इति श्लाघ्यः स एव ध्रुवम्।
नीयन्ते जिन येन कर्ण-हृदयालंकारतां त्वद्गुणाः,
संसाराहि-विषापहार-मणयस्त्रैलोक्य-चूडामणे।।७।।

(मालिनी छन्दः)

जयति दिविज-वृन्दान्दोलितैरिन्दुरोचि-
र्निचय-रुचिभिरुच्चैश्चामरै र्वीज्यमानः।
जिनपतिरनुरज्यन्मुक्ति-साम्राज्य-लक्ष्मी-
युवति-नव कटाक्ष-क्षेप-लीलां दधानैः।।८।।

(स्रग्धरा छन्दः)

देवः श्वेतातपत्र-त्रय-चमरिरुहाऽशोक-भाश्चक्र-भाषा-
पुष्पौघासार-सिंहासन-सुरपटहैरष्टभिः प्रातिहार्यैः।
साश्चर्यैर्भ्राजमानः सुर-मनुज-सभाम्भोजिनी-भानुमाली,
पायान्नः पादपीठीकृत-सकल-जगत्पाल-मौलि र्जिनेन्द्रः।।९।।

नृत्यत्स्वर्दन्ति-दन्ताम्बुरुह-वन-नटन्नाक-नारी-निकायः,
सद्यस्त्रैलोक्य-यात्रोत्सव-कर-निनदातोद्यमाद्यन्निलिम्पः।
हस्ताम्भोजात-लीला विनिहित सुमनोदाम-रम्यामर स्त्री-
काम्यः कल्याण-पूजाविधिषु विजयते देव देवागमस्ते।।१०।।

(शार्दूलविक्रीडित छन्दः)

चक्षुष्मानहमेव देव भुवने नेत्रामृत-स्यन्दिनं,
त्वद्वक्त्रेन्दुमतिप्रसाद-सुभगैस्तेजोभिरुद्भासितम् ।
येनालोकयता मयानति-चिराच्चक्षुः कृतार्थीकृतं,
द्रष्टव्यावधि-वीक्षण-व्यतिकर-व्याजृम्भमाणोत्सवम् ।।११।।

(वसन्ततिलका छन्दः)

कन्तोः सकान्तमपि मल्लमवैति कश्चिन्-
मुग्धो मुकुन्द-मरविन्दज-मिन्दमौलिम! ।
मोघीकृत-त्रिदश-योषिदपांगपात-
स्तस्य त्वमेव विजयी जिनराज मल्लः ।।१२।।

(मालिनी छन्दः)

किसलयितमनल्पं त्वद्विलोकाभिलाषात्,
कुसुमितमतिसान्द्रं त्वत्समीप-प्रयाणात् ।
मम फलितममन्दं त्वन्मुखेन्दोरिदानीं,
नयन-पथमवाप्तादेव! पुण्यद्रुमेण ।।१३।।

त्रिभुवन-वन-पुष्पात्पुष्प-कोदण्ड-दर्प-
प्रसर-दव-नवाम्भो-मुक्ति-सूक्ति-प्रसूतिः ।
स जयति जिनराज-व्रात-जीमूत-संघः,
शतमख-शिखि-नृत्यारम्भ-निर्बन्ध-बन्धुः ।।१४।।

(स्रग्धरा छन्दः)

भूपाल-स्वर्ग-पाल-प्रमुख-नर-सुर-श्रेणि-नेत्रालिमाला-
लीला-चैत्यस्य चैत्यालयमखिलजगत्कौमुदीन्दो र्जिनस्य ।
उत्तंसीभूत-सेवाञ्जलि-पुट-नलिनी-कुड्मलस्त्रिः परीत्य,
श्रीपाद-च्छाययापस्थितभवदवथुः संश्रितोऽस्मीव मुक्तिम् ।।१५।।

बसन्ततिलका छन्दः

देव त्वदङ्घ्रि-नख-मण्डल-दर्पणेऽस्मि-
न्नर्घ्ये निसर्ग-रुचिरे चिर-दृष्ट-वक्त्रः।
श्रीकीर्ति-कान्ति-धृति-संगम-कारणानि,
भव्यो न कानि लभते शुभ-मंगलानि।।१६।।

जयति सुर-नरेन्द्र-श्रीसुधा-निर्झरिण्याः,
कुलधरणि-धरोऽयं जैन-चैत्याभिरामः।
प्रविपुल-फल-धर्मानोकहाग्र-प्रवाल-
प्रसर-शिखर-शुम्भत्केतनः श्रीनिकेतः।।१७।।

विनमदमरकान्ता-कुन्तलाक्रान्त-कान्ति-
स्फुरित-नख-मयूख-द्योतिताशाऽन्तरालः।
दिविज-मनुज राज-व्रात-पूज्य-क्रमाब्जो,
जयति विजित-कर्मारति-जालो-जिनेन्द्रः।।१८।।

(वसन्ततिलका छन्दः)

सुप्तोत्थितेन सुमुखेन सुमंगलाय,
दृष्टव्यमस्ति यदि मंगलमेव वस्तु।
अन्येन किं तदिह नाथ तवैव वक्त्रं ,
त्रैलोक्य-मंगल-निकेतनमीक्षणीयम्।।१९।।

(शार्दूलविक्रीडित छन्दः)

त्वं धर्मोदय-तापसाश्रम-शुकत्वं काव्य-बन्ध-क्रम-
क्रीडानन्दन-कोकिलस्त्वमुचितः श्रीमल्लिका-षट्पदः।
त्वं पुन्नाग-कथारविन्द-सरसी-हंसस्त्वमुत्तंसकैः,
कैर्भूपाल न धार्यसे गुण-मणि-स्रङ् मालिभि र्मौलिभिः।।२०।।

(मालिनी छन्दः)

शिव-सुखमजर-श्री-संगमं चाभिलष्य,
स्वमभिनियमयन्ति क्लेश-पाशेन केचित्।
वयमिह तु वचस्ते भूपते र्भावयन्त-
स्तदुभयमपि शश्वल्लीलया निर्विशामः।।२१।।

(शार्दूलविक्रीडित छन्दः)

देवेन्द्रास्तव मज्जनानि विदधुर्देवांगना मंगला-
न्यापेठुः शरदिन्दु-निर्मल-यशो गन्धर्व-देवा जगुः।
शेषाश्चापि यथानियोगमखिलाः सेवां सुराश्चक्रिरे,
तत्किं देव वयं विदध्म इति नश्चित्तं तु दोलायते।।२२।।

देव त्वज्जननाभिषेक-समये रोमाञ्च-सत्कञ्चुकै-
र्देवेन्द्रैर्यदनर्ति नर्तनविधौ लब्ध-प्रभावैः स्फुटम्।
कश्चान्यत्सुर-सुन्दरी कुच-तट-प्रान्तावनद्धोत्तम-
प्रेङ्खद्वल्लकि-नाद-झंकृतमहो तत्केन संवर्ण्यते।।२३।।

देव त्वत्प्रतिबिम्बमम्बुज-दलस्मेरेक्षणं पश्यतां,
यत्रास्माकमहो महोत्सव-रसो दृष्टेरियान्वर्तते।
साक्षात्तत्र भवन्तमीक्षितवतां कल्याण-काले तदा,
देवानामनिमेष-लोचनतया वृत्तः स किं वर्ण्यते।।२४।।

दृष्टं धाम रसायनस्य महता दृष्टं निधीनां पदं,
दृष्टं सिद्ध-रसस्य सद्म सदनं दृष्टं च चिन्तामणेः।
किं दृष्टैरथवानुषंगिक-फलैरेभिर्मयाद्य ध्रुवं,
दृष्टं मुक्ति-विवाह-मंगल-गृहं दृष्टे जिन-श्री-गृहे।।२५।।

दृष्टस्त्वं जिनराज-चन्द्र विकसद् भूपेन्द्र-नेत्रोत्पले,
स्नातं त्वन्नुति-चन्द्रिकाम्भसि भवद् विद्वच्चकोरोत्सवे।
नीतश्चाद्य निदाघजः क्लमभरः शान्तिं मया गम्यते,
देव त्वद्गत-चेतसैव भवतो भूयात् पुन र्दर्शनम्।।२६।।

॥ इति श्रीमद्भूपालकविविरचिता जिनचतुर्विंशतिका ॥

अकलंकस्तोत्रम्

(शार्दूलविक्रीडित छन्दः)

त्रैलोक्यं सकलं त्रिकालविषयं सालोकमालोकितं
साक्षाद् येन यथा स्वयं करतले रेखात्रयं सांगुलि।
रागद्वेषभयामयान्तक-जरा-लोलत्व-लोभादयो
नालं यत्पद-लंघनाय स महादेवो मया वंद्यते।।१।।

दग्धं येन पुरत्रयं शरभुवा तीव्रार्चिषा वह्निना
यो वा नृत्यति मत्तवत्पितृवने यस्यात्मजो वा गुहः।
सोऽयं किं मम शंकरो भय-तृषा-रोषार्ति-मोह-क्षयं
कृत्वा यः स तु सर्ववित्तनुभृतां क्षेमंकरः शंकरः।।२।।

यत्नाद्येन विदारितं कररुहै-र्दैत्येन्द्र-वक्षःस्थलं
सारथ्येन धनञ्जयस्य समरे योऽमारयत् कौरवान्।
नासौ विष्णुरनेककालविषयं यज्ज्ञानमव्याहतं
विश्वं व्याप्य विजृम्भते सतु महाविष्णुः सदेष्टो मम।।३।।

उर्वश्यामुदपादि रागबहुलं चेतो यदीयं पुनः
पात्री-दण्ड-कमण्डलु-प्रभृतयो यस्याकृतार्थ-स्थितिम्।
आविर्भावयितुं भवन्ति स कथं ब्रह्मा भवेन्मादृशां
क्षुत्तृष्णा-श्रमरागरोगरहितो ब्रह्मा कृतार्थोऽस्तु नः।।४।।

यो जग्ध्वा पिशितं समत्स्यकवलं जीवं च शून्यं वदन्
कर्त्ता कर्मफलं न भुङ्क्त इति यो वक्ता स बुद्धः कथम्।
यज्ज्ञानं क्षणवर्ति वस्तु सकलं ज्ञातुं न शक्तं सदा
यो जानन्युगपज्जगत्त्रयमिदं साक्षात् स बुद्धो मम।।५।।

(स्रग्धरा छन्दः)

ईशः किं छिन्नलिंगो यदि विगतभयः शूलपाणिः कथं स्यात्
नाथः किं भैक्ष्यचारी यतिरिति स कथं सांगनः सात्मजश्च।
आद्राजः किन्त्वजन्मा सकलविदिति किं वेत्ति नात्मान्तरायं
संक्षेपात्सम्यगुक्तं पशुपतिमपशुः कोऽत्र धीमानुपास्ते।।६।।

ब्रह्मा चर्माक्षसूत्री सुरयुवतिरसावेशविभ्रान्तचेताः
शम्भुः खटवांगधारी गिरिपति-स्तनयापांग-लीलानुविद्धः।
विष्णुश्चक्राधिपः सन्दुहितरमगमद् गोपनाथस्य मोहा-
दर्हन्विध्वस्तरागो जितसकलभयः कोऽयमेष्वाप्तनाथः।।७।।

एको नृत्यति विप्रसार्य ककुभां चक्रे सहस्रं भुजा-
नेकः शेषभुजंगभोगशयने व्यादाय निद्रायते।
दृष्टुं चारुतिलोत्तमामुखमगादेकश्चतुर्वक्त्रता-
मे ते मुक्तिपथं वदन्ति विदुषामित्येतदत्यद्भुतम्।।८।।

यो विश्वं वेद वेद्यं जननजलनिधेर्भंगिनः पारदृश्वा
पौर्वापर्याविरुद्धं वचनमनुपमं निष्कलंकं यदीयम्।
तं वन्दे साधुवंद्यं सकलगुणनिधिं ध्वस्तदोषद्विषन्तं
बुद्धं वा वर्द्धमानं-शतदलनिलयं केशवं वा शिवं वा।।९।।

माया नास्ति जटा-कपाल-मुकुटं चन्द्रो न मूर्धावली
खट्वांगं न च वासुकिर्न च धनुः शूलं न चोग्रं मुखम्।
कामो यस्य न कामिनी न च वृषो-गीतं न नृत्यं पुनः
सोऽस्मान् पातु निरंजनो जिनपतिः सर्वत्र सूक्ष्मः शिवः।।१०।।

नो ब्रह्मांकितभूतलं न च हरेः शम्भोर्न मुद्रांकितं
नो चन्द्रार्ककरांकितं सुरपतेर्वज्रांकितं नैव च।
षड्वक्त्रांकितबौद्धदेवहुतभुग्यक्षोरगैर्नांकितं
नग्नं पश्यत वादिनो जगदिदं जैनेन्द्रमुद्रांकितम्।।११।।

मौञ्जी दण्ड-कमण्डलु-प्रभृतयो नो लाञ्छनं ब्रह्मणो,
रुद्रस्यापि जटा-कपाल-मुकुट-कौपीन-खट्वांगनाः।
विष्णोश्चक्र-गदादि-शंख-मतुलं बुद्धस्य रक्ताम्बरं,
नग्नं पश्यत वादिनो जगदिदं जैनेन्द्र-मुद्राकितम्।।१२।।

नाहंकारवशीकृतेन मनसा न द्वेषिणा केवलं,
नैरात्म्यं प्रतिपद्य नश्यति जने कारुण्यबुद्ध्या मया।।
राज्ञः श्रीहिमशीतलस्य सदसि प्रायो विदग्धात्मनो,
बौद्धौघान्सकलान् विजित्य स घटः पादेन विस्फालितः।।१३।।

खटवांगं नैव हस्ते न च हृदि रचिता लम्बते मुण्डमाला,
भस्मांगं नैव शूलं न च गिरिदुहिता नैव हस्ते कपालं।
चन्द्रार्द्धं नैव मूर्धन्यपि वृषगमनं नैव कण्ठे फणीन्द्रः,
तं वन्दे त्यक्तदोषं भवभयमथनं चेश्वरं देवदेवं।।१४।।

किं वाद्यो भगवानमेयमहिमा देवोऽकलंकः कलौ,
काले यो जनतासु धर्मनिहितो देवोऽकलंको जिनः।
यस्य स्फारविवेकमुद्रलहरीजाले प्रमेयाकुला,
निर्मग्ना तनुतेतरा भगवती ताराशिरः कम्पनम्।।१५।।

सा तारा खलुदेवताभगवती मन्याऽपि मन्यामहे,
षण्मासावधि-जाड्यसांख्य-भगवद्-भट्टाकलंक-प्रभोः।
वाक्कल्लोल-परंपरा-भिरमते नूनं मनोमज्जन-,
व्यापारं सहतेस्म विस्मितमतिः संताडितेतस्ततः।।१६।।

।। इत्यकलङ्कस्तोत्रम्।।

श्रीमत्समन्तभद्राचार्य - विरचितम्

स्वयम्भू-स्तोत्रम् (चतुर्विंशति-जिनस्तोत्रम्)

श्री वृषभजिनस्तवनम् - १

(वंशस्थ-छन्दः)

स्वयम्भुवा भूत-हितेन-भू-तले, समञ्जस-ज्ञान-विभूति-चक्षुषा।
विराजितं येन विधुन्वता तमः, क्षपाकरेणेव गुणोत्करैः करैः।।१।।

प्रजापतिर्यः प्रथमं जिजीविषू, शशास कृष्यादिषु कर्मसु प्रजाः।
प्रबुद्ध-तत्त्वः पुनरद्भुतोदयो, ममत्वतो निर्विविदे विदांवरः।।२।।

विहाय यः सागर-वारि-वाससं, वधूमिवेमां वसुधा वधूं सतीम्।
मुमुक्षुरिक्ष्वाकु-कुलादिरात्मवान्, प्रभुः प्रवव्राज सहिष्णुरच्युतः।।३।।

स्व-दोष-मूलं स्व-समाधि-तेजसा, निनाय यो निर्दय-भस्मसाल्क्रियाम्।
जगाद तत्त्वं जगतेऽर्थिनेऽञ्जसा, बभूव च ब्रह्मपदामृतेश्वरः।।४।।

स विश्व चक्षुर्वृषभोर्चितः सतां, समग्र-विद्याऽऽत्म-वपु र्निरञ्जनः।
पुनातु चेतो मम नाभिनन्दनो, जिनो जितक्षुल्लक-वादि-शासनः।।५।।

श्री भगवदजितजिनस्तवनम् - २

(उपजाति छन्द)

यस्य प्रभावात् त्रिदिव-च्युतस्य, क्रीडास्वपि क्षीव-मुखाऽरविन्दः।
अजेय-शक्तिर्भुवि बन्धु-वर्ग, श्चकार नामाऽजित इत्यबन्ध्यम्।।६।।

अद्यापि यस्याऽजित शासनस्य, सतां प्रणेतुः प्रतिमंगलार्थम्।
प्रगृह्यते नाम परं पवित्रं, स्व-सिद्धि-कामेन जनेन लोके।।७।।

यः प्रादुरासीत् प्रभु-शक्ति-भूम्ना, भव्याऽऽशयाऽऽलीन-कलंक-शान्त्यै।
महामुनिर्मुक्त-घनोपदेहो, यथाऽरविन्दाभ्युदयाय भास्वान्।।८।।

येन प्रणीतं पृथु-धर्म-तीर्थ, ज्येष्ठं जनाः प्राप्य जयन्ति दुःखम्।
गांगं ह्रदं चन्दन-पंक-शीतं, गजप्रवेका इव घर्म-तप्ताः।।९।।

स ब्रह्म-निष्ठः सम-मित्र-शत्रु, र्विद्या-विनिर्वान्त-कषाय-दोषः।
लब्धात्म-लक्ष्मीरजितोऽजितात्मा, जिन-श्रियं मे भगवान् विधत्ताम्।।१०।।

श्री शम्भवजिनस्तवनम् - ३

(इन्द्रवज्रा-छन्दः)

त्वं शम्भवः संभव-तर्ष-रोगैः, संतप्यमानस्य जनस्य लोके।
आसीरिहाऽऽकस्मिक एव वैद्यो, वैद्यो यथा नाथ! रुजां प्रशान्त्यै।।११।।

अनित्यमत्राणमहं-क्रियाभिः, प्रसक्त-मिथ्याऽध्यवसाय-दोषम्।
इदं जगज्जन्म-जराऽन्तकाऽऽर्तं, निरञ्जनां शान्तिमजीगमस्त्वम्।।१२।।

शतह्रदोन्मेष-चलं हि सौख्यं, तृष्णा मयाऽप्याऽऽयन-मात्र-हेतुः।
तृष्णाऽभिवृद्धिश्च तपत्यजस्रं, तापस्तदाऽऽयासयतीत्यवादीः।।१३।।

बन्धश्च मोक्षश्च तयोश्च हेतू, बद्धश्च मुक्तश्च फलं च मुक्तेः।
स्याद्वादिनो नाथ! तवैव युक्तं, नैकान्त-दृष्टेस्त्वमतोऽसि शास्ता।।१४।।

शक्रोऽप्यशक्तस्तव पुण्यकीर्तेः, स्तुत्यां प्रवृत्तः किमु मादृशोऽज्ञः।
तथापि भक्त्या स्तुत-पाद-पद्मो, ममार्य! देयाः शिव-तातिमुच्चैः।।१५।।

श्री अभिनन्दनजिनस्तवनम् - ४

(वंशस्थ-छन्दः)

गुणाभिनन्दादभिनन्दनो भवान्, दयावधूं क्षान्ति-सखीमशिश्रियत्।
समाधि-तन्त्रस्तदुपोपपत्तये, द्वयेन नैर्ग्रन्थ्य-गुणेनऽऽचाऽऽयुजत्।।१६।।

अचेतने तत्कृत-बन्धजेऽपि च, ममेदमित्याऽभिनिवेशक-ग्रहात्।
प्रभंगुरे स्थावर-निश्चयेन च, क्षतं जगत्तत्त्वमजिग्रहद् भवान्।।१७।।

क्षुधादि-दुःख-प्रतिकारतः स्थिति, र्न चेन्द्रियार्थ-प्रभवाऽल्प-सौख्यतः।
ततो गुणो नास्ति च देह-देहिनो-, रितीदमित्थं भगवान् व्यजिज्ञपत्।।१८।।

जनोऽतिलालोऽप्यनुबंध दोषतो, भयादकार्येष्विह न प्रवर्तते।
इहाऽप्यमुत्राऽप्यनुबन्ध-दोष-वित्, कथं सुखे संसजतीति चाऽब्रवीत्।।१९।।

स चाऽनुबन्धोऽस्य जनस्य तापकृत्, तृषोऽभिवृद्धिः सुखतो न च स्थितिः।
इति प्रभो लोकहितं यतो मतं, ततो भवानेव गतिः सतां मतः।।२०।।

श्री सुमतिजिनस्तवनम् - ५

(उपजाति - छन्दः)

अन्वर्थ-संज्ञः सुमतिर्मुनि-स्त्वं, स्वयं मतं येन सुयक्ति-नीतम्।
यतश्च शेषेषु मतेषु नास्ति, सर्व-क्रिया-कारक-तत्त्व-सिद्धिः।।२१।।

अनेकमेकं च तदेव तत्त्वं, भेदान्वय-ज्ञानमिदं हि सत्यम्।
मृषोपचारोऽन्यतरस्य लोपे, तच्छेष-लोपोऽपि ततोऽनुपाख्यम्।।२२।।

सतः कथञ्चित् तदसत्त्व-शक्तिः, खे नास्ति पुष्पं तरुषु प्रसिद्धम्।
सर्वं-स्वभाव-च्युतमप्रमाणं, स्व-वाग्विरुद्धं तव दृष्टितोऽन्यत्।।२३।।

न सर्वथा नित्यमुदेत्यपैति, न च क्रिया-कारकमत्र युक्तम्।
नैवाऽसतो जन्म सतो न नाशो, दीपस्तमः पुद्गल-भावतोऽस्ति।।२४।।

विधि र्निषेधश्च कथञ्चिदिष्टौ, विवक्षया मुख्य-गुण-व्यवस्था।
इति प्रणीतिः सुमतेस्तवेयं, मति-प्रवेकः स्तुवतोऽस्तु नाथ।।२५।।

श्री पद्मप्रभजिनस्तवनम् - ६

(उपजाति-छन्दः)

पद्मप्रभः पद्म-पलाश-लेश्यः, पद्माऽऽलयाऽऽलिंगित-चारु-मूर्तिः।
बभौ भवान् भव्य-पयोरुहाणां, पद्माऽऽकराणामिव पद्म-बन्धुः।।२६।।

बभार पद्मां च सरस्वतीं च, भवान् पुरस्तात् प्रतिमुक्ति-लक्ष्म्याः।।
सरस्वतीमेव समग्र-शोभां, सर्वज्ञ-लक्ष्मीं ज्वलितां विमुक्तः।।२७।।

शरीर-रश्मि-प्रसरः प्रभोस्ते, बालाऽर्क-रश्मि-च्छविरालिलेप।
नराऽमराऽऽकीर्ण-सभां-प्रभाव, च्छैलस्य पद्माऽऽभ-मणेः स्व-सानुम्।।२८।।

नभस्तलं पल्लवयन्निव त्वं, सहस्र-पत्राऽम्बुज-गर्भचारैः।
पादाऽम्बुजैः पातित-मार-दर्पो, भूमौ प्रजानां विजहर्थ भूत्यै।।२९।।

गुणाऽम्बुधेर्विप्रुषमप्यजस्रं, नाऽऽखण्डलः स्तोतुमलं तवर्षेः।
प्रागेव मादृक् किमुताऽतिभक्ति,मां बालमालाऽऽपयतीदमित्थम्।।३०।।

श्री सुपार्श्वजिनस्तवनम् - ७

(उपजाति-छन्दः)

स्वास्थ्यं यदाऽऽत्यन्तिकमेष पुंसां, स्वार्थो न भोगः परिभंगुराऽऽत्मा।
तृषोऽनुषंगान्न च ताप-शान्ति-,रितीदमाख्याद् भगवान् सुपार्श्वः।।३१।।

अजंगमं जंगम-नेय-यंत्रं, यथा तथा जीव-धृतं शरीरम्।
बीभत्सु पूति क्षयि तापकं च, स्नेहो वृथाऽत्रेति हितं त्वमाख्यः।।३२।।

अलंघ्य-शक्तिर्भवितव्यतेयं, हेतु-द्वयाऽऽविष्कृत-कार्यलिंगा।
अनीश्वरो जन्तुरहं-क्रियाऽऽर्तः, संहत्य कार्येष्विति साध्ववादीः।।३३।।

बिभेति मृत्योर्न ततोऽस्ति मोक्षो, नित्यं शिवं वाञ्छति नाऽस्य लाभः
तथापि बालो भय-काम-वश्यो, वृथा स्वयं तप्यत इत्यवादीः।।३४।।

सर्वस्य तत्त्वस्य भवान् प्रमाता, मातेव बालस्य हिताऽनुशास्ता।
गुणाऽवलोकस्य जनस्य नेता, मयापि भक्त्या परिणूयसेऽद्य।।३५।।

श्री चन्द्रप्रभजिनस्तवनम् - ८

(उपजाति-छन्दः)

चन्द्रप्रभं चन्द्र-मरीचि-गौरं, चन्द्रं द्वितीयं जगतीव कान्तम्।
वन्देऽभिवन्द्यं महतामृषीन्द्रं, जिनं जित-स्वान्त-कषायबन्धम्।।३६।।

यस्यांग-लक्ष्मी-परिवेष-भिन्नंमू, तमस्तमोऽरेरिव रश्मि-भिन्नम्।
ननाश बाह्यं बहुमानसं च, ध्यान-प्रदीपाऽतिशयेन भिन्नम्।।३७।।

स्व-पक्ष-सौस्थित्य-मदाऽवलिप्ता, वाक्-सिंहनादैर्विमदा बभूवुः।
प्रवादिनो यस्य मदाऽऽर्द्र-गण्डा, गजा यथा केशरिणो निनादैः।।३८।।

यः सर्वलोके परमेष्ठितायाः, पदं बभूवाऽद्भुत-कर्म-तेजाः।
अनन्त-धामाऽक्षर-विश्वचक्षुः, समन्त-दुःख-क्षय-शासनश्च।।३९।।

स चन्द्रमा भव्य-कुमुद्वतीनां, विपन्न-दोषाऽभ्र-कलंक-लेपः।
व्याकोश-वाङ्-न्याय-मयूख-मालः, पूयात् पवित्रो भगवान् मनो मे।।४०।।

श्री सुविधिजिनस्तवनम् - ६

(उपजाति-छन्दः)

एकान्तदृष्टि-प्रतिषेधि तत्त्वं, प्रमाण-सिद्धं तदतत्स्वभावम्।
त्वया प्रणीतं सुविधे! स्वधाम्ना, नैतत् समालीढ-पदं त्वदन्यैः।।४१।।

तदेव च स्यान्न तदेव च स्यात्, तथा प्रतीतेस्तव तत् कथञ्चित्।
नाऽत्यन्तमन्यत्व-मनन्यता च, विधेर्निषेधस्य च शून्य-दोषात्।।४२।।

नित्यं तदेवेदमिति प्रतीते-,र्न-नित्यमन्यत् प्रतिपत्ति-सिद्धेः।
न तद् विरुद्धं बहिरन्तरंग-, निमित्त-नैमित्तिक-योगतस्ते।।४३।।

अनेकमेकं च पदस्य वाच्यं, वृक्षा इति प्रत्ययवत् प्रकृत्या।
आकाङ्क्षिणः स्यादिति वै निपातो, गुणाऽनपेक्षे नियमेऽपवादः।।४४।।

गुण-प्रधानाऽर्थमिदं हि वाक्यं, जिनस्य ते तद् द्विषतामपथ्यम्।
ततोऽभिवन्द्यं जगदीश्वराणां, ममापि साधोस्तव पाद-पद्मम्।।४५।।

श्री शीतलजिनस्तवनम् - १०

(वशस्थ-छन्दः)

न शीतलाश्चन्दन-चन्द्र-रश्मयो, न गांगमम्भो न च हार-यष्टयः।
यथा मुनेस्तेऽनघ-वाक्य-रश्मयः, शमाऽम्बु-गर्भाः शिशिरा विपश्चितां।।४६।।

सुखाऽभिलाषा नल-दाह-मूर्च्छितं, मनो निजं ज्ञानमयाऽमृताम्बुभिः।
व्यदिध्यपस्त्वं विष-दाह-मोहितं-, यथा भिषग् मंत्र-गुणैः स्व-विग्रहम्।।४७।।

स्व-जीविते कामसुखे च तृष्णया, दिवा श्रमाऽऽर्ता निशि शेरते प्रजाः।
त्वमार्य! नक्तं दिवमप्रमत्तवा-, नजागरेवाऽऽत्म-विशुद्ध-वर्त्मनि।।४८।।

अपत्य-वित्तोत्तर-लोक-तृष्णया, तपस्विनः केचन कर्म कुर्वते।
भवान् पुनर्जन्म-जरा-जिहासया, त्रयीं प्रवृत्तिं सम-धीरवारुणत्।।४९।।

त्वमुत्तम-ज्योतिरजः क्व निर्वृतः, क्व ते परे बुद्धि-लवोद्धव-क्षताः।
ततः स्व-निःश्रेयस-भावना-परैर्, बुधप्रवेकैर्जिन! शीतलेऽऽद्यसे।।५०।।

श्री श्रेयोजिनस्तवनम् - ११

(उपजाति-छन्दः)

श्रेयान् जिनः श्रेयसि वर्त्मनीमाः, श्रेयः प्रजाः शासदजेय-वाक्यः।
भवांश्चकासे भुवनत्रयेऽस्मिन्, नेको यथा वीत-घनो विवस्वान्।।५१।।

विधिर्विषक्तप्रतिषेधरूपः, प्रमाणमत्रान्यतरत् प्रधानम्।
गुणोऽपरो मुख्य-नियाम-हेतु, र्नयः स दृष्टान्तसमर्थनस्ते।।५२।।

विवक्षितो मुख्य इतीष्यतेऽन्यो, गुणोऽविवक्षो न निरात्मकस्ते।
तथाऽरि-मित्राऽनुभयादि-शक्ति, र्द्वयाऽवधिः कार्यकरं हि वस्तु।।५३।।

दृष्टान्तसिद्धावुभयोर्विवादे, साध्यं प्रषिध्येन्न तु तादृगस्ति।
यत् सर्वथैकान्त-नियामि दृष्टं, त्वदीय दृष्टिर्विभवत्यशेषे।।५४।।

एकान्तदृष्टि-प्रतिषेधसिद्धि, र्न्यायेषुभिर्मोहरिपुं निरस्य।
असस्मि कैवल्य-विभूति-सम्राट्, ततस्त्वमर्हन्नसि मे स्तवार्हः।।५५।।

श्री वासुपूज्यस्तवनम् - १२

(उपजाति-छन्दः)

शिवासु पूज्योऽभ्युदयक्रियासु, त्वं वासुपूज्यस्त्रिदशेन्द्र-पूज्यः।
मयाऽपि पूज्योऽल्पधिया मुनीन्द्र!, दीपार्चिषा किं तपनो न पूज्यः।।५६।।

न पूजयाऽर्थस्त्वयि वीतरागे, न निन्दया नाथ! विवान्त-वैरे।
तथापि ते पुण्य-गुण-स्मृति र्नः, पुनातु चित्तं दुरिताञ्जनेभ्यः।।५७।।

पूज्यं जिनं त्वाऽर्चयतो जनस्य, सावद्य-लेशो बहु-पुण्य-राशौ।
दोषाय नालं कणिका विषस्य न, दूषिका शीत-शिवाऽम्बु-राशौ।।५८।।

यद् वस्तु बाह्यं गुण-दोष-सूते, र्निमित्तमभ्यन्तर-मूल-हेतोः।
अध्यात्मवृत्तस्य तदंगभूत-, मभ्यन्तरं केवलमप्यलं ते।।५९।।

बाह्येतरोपाधि-समग्रतेयं, कार्येषु ते द्रव्यगतः स्वभावः।
नैवाऽन्यथा मोक्षविधिश्च पुंसां, तेनाऽभिवन्द्यस्त्वमृषिर्बुधानाम्।।६०।।

श्री विमलजिनस्तवनम् - १३

(वंशस्थ-छन्दः)

य एव नित्य-क्षणिकाऽऽदयो नया, मिथोऽनपेक्षाः स्व-पर-प्रणाशिनः।
त एव तत्त्वं विमलस्य ते मुनेः, परस्परेक्षाः स्व-परोपकारिणः।।६१।।

यथैकशः कारकमर्थ-सिद्धये, समीक्ष्य शेषं स्व-सहाय-कारकम्।
तथैव सामान्य-विशेष-मातृका, नयास्तवेष्टा गुण-मुख्य-कल्पतः।।६२।।

परस्परेक्षाऽन्वयभेदलिंगतः, प्रसिद्ध-सामान्यविशेषयोस्तव।
समग्रताऽस्ति स्व-पराऽवभासकं, यथा प्रमाणं भुवि बुद्धिलक्षणम्।।६३।।

विशेष्य वाच्यस्य विशेषणं वचो, यतो विशेष्यं विनियम्यते च यत्।
तयोश्च सामान्यमतिप्रसज्यते, विवक्षितात् स्यादिति तेऽन्य-वर्जनम्।।६४।।

नयास्तव स्यात्पद-सत्य-लाञ्छिता, रसोपविद्धा इव लोह-धातवः।
भवन्त्यभिप्रेत गुणा यतस्ततो, भवन्तमार्याः प्रणता हितैषिण।।६५।।

श्री भगवदनन्तजिनस्तवनम् - १४

(वंशस्थ-छन्दः)

अनन्त-दोषाऽऽशय-विग्रहो ग्रहो, विषंगवान् मोहमयश्चिरं हृदि।
यतो जितस्तत्त्व रुचौ प्रसीदता, त्वया ततोऽभूर्भगवाननन्तजित्।।६६।।

कषाय-नाम्नां द्विषतां प्रमाथिना, मशेषयन्नाम भवानशेषवित्।
विशोषणं मन्मथ-दुर्मदाऽऽमयं, समाधि भैषज्य-गुणैर्व्यलीनयत्।।६७।।

परिश्रमाऽम्बुर्भय-वीचि-मालिनी, त्वया स्व-तृष्णा-सरिदाऽऽर्य! शोषिता।
असंग-घर्माऽर्क-गभस्ति-तेजसा, परं ततो निर्वृति-धाम तावकम्।।६८।।

सुहृत् त्वयि श्रीसुभगत्वमश्नुते, द्विषस्त्वयि प्रत्ययवत् प्रलीयते।
भवानुदासीनतमस्तयोरपि, प्रभो परं चित्रमिदं तवेहितम्।।६९।।

त्वमीदृशस्तादृश इत्ययं मम, प्रलाप-लेशोऽल्पमतेर्महामुने!
अशेष-माहात्म्यमनीरयन्नपि, शिवाय संस्पर्श इवाऽमृताम्बुधेः।।७०।।

श्री धर्मजिनस्तवनम् - १५

(रथोद्धता-छन्दः)

धर्म-तीर्थमनघं प्रवर्तयन्, धर्म इत्यनुमतः सतां भवान्।
कर्म-कक्षमदहत् तपोऽग्निभिः, शर्म शाश्वतमवाप शंकरः। ।७१।।

देव-मानव-निकाय-सत्तमै, रेजिषे परिवृतो वृतो बुधैः।
तारका-परिवृतोऽतिपुष्कलो, व्योमनीव शश-लाञ्छनोऽमलः। ।७२।।

प्रातिहार्य-विभवैः परिष्कृतो, देहतोऽपि विरतो भवानभूत्।
मोक्षमार्गमशिषन् नराऽमरान्, नापि शासन-फलैषणाऽऽतुरः। ।७३।।

काय-वाक्य-मनसां प्रवृत्तयो, नाऽभवंस्तव मुनेश्चिकीर्षया।
नाऽसमीक्ष्य भवतः प्रवृत्तयो धीर!, तावकमचिन्त्यमीहितम्। ।७४।।

मानुषीं प्रकृतिमभ्यतीतवान्, देवतास्वपि च देवता यतः।
तेन नाथ! परमाऽसि देवता, श्रेयसे जिनवृष! प्रसीद नः। ।७५।।

श्री शान्तिजिनस्तवनम् - १६

(उपजाति-छन्दः)

विधाय रक्षां परतः प्रजानां, राजा चिरं योऽप्रतिम-प्रतापः।
व्यधात् पुरस्तात् स्वत एव शान्ति, र्मुनिर्दयामूर्तिरिवाऽघ-शान्तिम्। ।७६।।

चक्रेण यः शत्रु-भयंकरेण, जित्वा नृपः सर्व-नरेन्द्र-चक्रम।
समाधि-चक्रेण पुनर्जिगाय, महोदयो दुर्जय-मोह-चक्रम। ।७७।।

राज-श्रिया राजसु राज-सिंहो, रराज यो राज-सुभोग-तंत्रः।
आर्हन्त्य-लक्ष्म्या पुनरात्म-तन्त्रो, देवाऽसुरोदार-सभे रराज। ।७८।।

यस्मिन्नभूद्राजनि राज-चक्रं, मुनौ दया-दीधिति धर्म-चक्रम्।
पूज्ये मुहुः प्राञ्जलि देव-चक्रं, ध्यानोन्मुखे ध्वंसि कृतान्त-चक्रम्। ।७९।।

स्व-दोष-शान्त्या विहितात्म-शान्तिः, शान्तेर्विधाता शरणं गतानाम्।
भूयाद् भव-क्लेश-भयोपशान्त्यै, शान्तिर्जिनो मे भगवान् शरण्यः। ।८०।।

श्री कुन्थुजिनस्तवनम् - १७

(वसन्ततिलका-छन्दः)

कुन्थु-प्रभृत्यखिल-सत्व-दयैक-तानः,
कुन्थुर्जिनो ज्वर-जरा-मरणोपशान्त्यै।
त्वं धर्मचक्रमिह वर्तयसिस्म भूत्यै,
भूत्वा पुरा क्षिति-पतीश्वर-चक्रपाणि।।८१।।

तृष्णार्चिषः परिदहन्ति न शान्तिरासा-
मिष्टेन्द्रियार्थ-विभवैः परिवृद्धिरेव।
स्थित्यैव काय-परिताप-हरं निमित्त-,
मित्यात्मवान् विषय-सौख्य-पराङ्मुखोऽभूत्।।८२।।

बाह्यं तपः परम-दुश्चरमाचरंस्त्व-
माध्यात्मिकस्य तपसः परिबृंहणार्थम्।
ध्यानं निरस्य कलुष-द्वयमुत्तरस्मिन्,
ध्यान-द्वये ववृतिषेऽतिशयोपपन्ने।।८३।।

हुत्वा स्व-कर्म-कटुक-प्रकृतीश्चतस्रो,
रत्नत्रयाऽतिशय-तेजसि जात-वीर्यः।
बभ्राजिषे सकल-वेद-विधेर्विनेता,
व्यभ्रे यथा वियति दीप्त-रुचिर्विवस्वान्।।८४।।

यस्मान् मुनीन्द्र! तव लोकपितामहाद्या,
विद्या-विभूति-कणिकामपि नाऽऽप्नुवन्ति।
तस्माद् भवन्तमजमप्रतिमेयमार्याः,
स्तुत्यं स्तुवन्ति सुधियः स्व-हितैक-तानाः।।८५।।

श्री अरहनाथ-जिनस्तवनम् - १८

(पथ्यावक्त्रं-छन्दः)

गुण-स्तोकं सदुल्लङ्घ्य-, तद्बहुत्व-कथा स्तुतिः।
आनन्त्यात् ते गुणा वक्तु, मशक्यास्त्वयि सा कथम्।।८६।।

तथापि ते मुनीन्द्रस्य, यतो नामापि कीर्तितम्।
पुनाति पुण्य-कीर्तेर्न, स्ततो ब्रूयाम किञ्चन।।८७।।

लक्ष्मी-विभव-सर्वस्वं, मुमुक्षोश्चक्र-लाञ्छनम्।
साम्राज्यं सार्वभौमं ते, जरत्तृणमिवाऽभवत्।।८८।।

तव रूपस्य सौन्दर्यं, दृष्ट्वा तृप्तिमनापिवान्।
द्व्यक्षः शक्रः सहस्राक्षो, बभूव बहुविस्मयः।।८९।।

मोहरूपो रिपुः पापः, कषाय-भट-साधनः।
दृष्टि-संपदुपेक्षाऽस्त्रै, स्त्वया धीर! पराजितः।।९०।।

कन्दर्पस्योद्धरो दर्प, स्त्रैलोक्य-विजयाऽर्जितः।
हेपयामास तं धीरे, त्वयि प्रतिहतोदयः।।९१।।

आयत्यां च तदात्वे च, दुःख-योनिर्दुरुत्तरा।
तृष्णां-नदी त्वयोत्तीर्णा, विद्या-नावा विविक्तया।।९२।।

अन्तकः क्रन्दको नृणां, जन्म-ज्वर-सखा सदा।
त्वामन्तकान्तकं प्राप्य, व्यावृत्तः काम-कारतः।।९३।।

भूषा-वेषाऽऽयुध-त्यागि, विद्या-दम-दया-परम्।
रूपमेव तवाचष्टे, धीर! दोष-विनिग्रहम्।।९४।।

समन्ततोऽङ्ग-भासां ते, परिवेषेण भूयसा।
तमो बाह्यमपाकीर्ण, मध्यात्मध्यान-तेजसा।।९५।।

सर्वज्ञ-ज्योतिषोद्भूत, स्तावको महिमोदयः।
कं न कुर्यात् प्रणम्रं ते, स्त्वं नाथ! ाचेतनम्।।६६।।

तव वागमृतं श्रीमत्, सर्वभाषा-स्वभावकम्।
प्रीणयत्यमृतं यद्वत्, प्राणितो व्यापि संसदि।।६७।।

अनेकान्तात्म-दृष्टिस्ते, सती शून्यो विपर्ययः।
ततः सर्वं मृषोक्तं स्यात्, तदयुक्तं स्व-घाततः।।६८।।

ये पर-स्खलितोन्निद्राः, स्व-दोषेभ-निमीलिनः।
तपस्विनस्ते किं कुर्यु, रपात्रं त्वन्मतश्रियः।।६९।।

ते तं स्व-घातिनं दोषं, शमीकर्तुमनीश्वराः।
त्वद्द्विषः स्वहनो बालास्तत्त्वाऽवचक्तव्यतांश्रिताः।।१००।।

सदेक-नित्य-वक्तव्या, स्तद्विपक्षाश्च ये नयाः।
सर्वथेति प्रदुष्यन्ति, पुष्यन्ति स्यादितीह ते।।१०१।।

सर्वथा-नियम-त्यागी, यथादृष्टमपेक्षकः।
स्याच्छब्दस्तावके न्याये, नाऽन्येषामात्म-विद्विषाम्।।१०२।।

अनेकान्तोऽप्यनेकान्तः, प्रमाण-नय-साधनः।
अनेकान्तः प्रमाणात् ते, तदेकान्तोऽर्पितान्नयात्।।१०३।।

अपरवक्त्रं छन्द

इति निरुपम-युक्ति-शासनः, प्रिय-हित-योगगुणाऽनुशासनः।
अरजिन! दम-तीर्थ-नायक, स्त्वमिव सतां प्रतिबोधनायकः।।१०४।।

मतिगुण-विभवाऽनुरुपत, स्त्वयि वरदाऽऽगम-दृष्टिरूपतः।
गुणकृशमपि किञ्चनोदितं, मम भवताद् दुरिताऽसनोदितम्।।१०५।।

श्री मल्लिजिनस्तवनम् - १६

(सान्द्रपदंछन्दः) अथवा (श्रीछन्दः) अथवा (वनवासिकाछन्दः)

यस्य महर्षेः सकल-पदार्थ, प्रत्यवबोधः समजनि साक्षात्।
साऽमर-मर्त्यं जगदपि सर्वं, प्राञ्जलि भूत्वा प्रणिपततिस्म।।१०६।।

यस्य च मूर्तिः कनकमयीव, स्वस्फुरदाऽऽभा-कृत-परिवेषा।
वागपि तत्त्वं कथयितु-कामा, स्यात्पद-पूर्वा रमयति साधून्।।१०७।।

यस्य पुरस्ताद् विगलित-माना, न प्रतितीर्थ्या भुवि विवदन्ते।
भूरपि रम्या प्रतिपदमासी-, ज्जात-विकोशाऽम्बुज-मृदु-हासा।।१०८।।

यस्य समन्ताज्जिन-शिशिराशोः, शिष्यक-साधु-ग्रह-विभवोऽभूत्।
तीर्थमपि स्वं जनन-समुद्र, त्रासित-सत्वोत्तरण-पथोऽग्रम्।।१०६।।

यस्य च शुक्लं परम-तपोऽग्नि-, र्ध्यानमनन्तं दुरितमधाक्षीत्।
तं जिनसिंहं कृत-करणीयं, मल्लिमशल्यं शरणमितोऽस्मि।।११०।।

श्री मुनिसुव्रतजिनस्तवनम् - २०

(वैतालीयं-छन्दः)

अधिगत-मुनि-सुव्रत-स्थिति, र्मुनि-वृषभो मुनिसुव्रतोऽनघः।
मुनि-परिषदि निर्बभौ भवा-, नुडु-परिषत्परिवीत-सोमवत्।।१११।।

परिणत-शिखि-कण्ठ-रागया, कृत-मद-निग्रह-विग्रहाऽऽभया।
तव जिन तपसः प्रसूतया, ग्रह-परिवेष-रुचेव शोभितम्।।११२।।

शशि-रुचि-शुचि-शुक्ल-लोहितं, सुरभितरं विरजो निजं वपुः।
तव शिवमऽतिविस्मयं यते!, यदपि च वाङ्मनसीयमीहितम्।।११३।।

स्थिति-जनन-निरोध-लक्षणं, चरमचरं च जगत् प्रतिक्षणम्।
इति जिन! सकलज्ञ-लाञ्छनं, वचनमिदं वदतावरस्य ते।।११४।।

दुरित-मल-कलंकमष्टकं, निरुपम-योगबलेन निर्दहन्।
अभवदऽभव-सौख्यवान् भवान्, भवतु ममाऽपि भवोपशान्तये।।११५।।

श्री नमिजिनस्तवनम् - २१

(शिखरिणी-छन्दः)

स्तुतिः स्तोतुः साधोः कुशल-परिणामाय स तदा,
भवेन्मा वा स्तुत्यः फलमपि ततस्तस्य च सतः।
किमेवं स्वाधीनाज्जगति सुलभे श्रायस-पथे,
स्तुयान्नत्वा विद्वान् सततमपि पूज्यं नमिजिनम्।।११६।।

त्वया धीमन् ब्रह्म-प्रणिधिमनसा जन्म-निगलं,
समूलं निर्भिन्नं त्वमसि विदुषां मोक्षपदवी।
त्वयि ज्ञानज्योति-र्विभव-किरणैर्भाति भगव-
न्नभूवन् खद्योता इव शुचिरवावन्यमतयः।।११७।।

विधेयं वार्यं चानुभयमुभयं मिश्रमपि तद्,
विशेषैः प्रत्येकं नियमविषयैश्चाऽपरिमितैः।।
सदाऽन्योऽन्यापेक्षैः सकल-भुवन-ज्येष्ठगुरुणा,
त्वया गीतं तत्त्वं बहुनयविवक्षेतर-वशात्।।११८।।

अहिंसा भूतानां जगति विदितं ब्रह्म परमं,
न सा तत्राऽऽरम्भोऽस्त्यणुरवि च यत्राऽऽश्रमविधौ।
ततस्तत्सिद्ध्यर्थं परम-करुणो ग्रन्थमुभयं,
भवानेवाऽत्याक्षीन्न च विकृत-वेषापधि-रतः।।११९।।

वपुर्भूषा-वेष-व्यवधिरहितं शान्तकरणं,
यतस्ते संचेष्टे स्मर-शर-विषाऽऽतंक-विजयम्।
विना भीमैः शस्त्रैरदय-हृदयाऽऽमर्ष-विलयं,
ततस्त्वं निर्मोहः शरणमसि नः शान्तिनिलयः।।१२०।।

श्री भगवदरिष्टनेमिजिनस्तवनम् - २२

(विषमजातावुग्दता-छन्दः)

भगवानृषिः परम-योग-दहन-हुत-कल्मषेन्धनः ।
ज्ञान-विपुल-किरणैः सकलं प्रतिबुद्ध्य बुद्ध-कमलायतेक्षण । ।१२१ । ।

हरिवंश-केतुरनवद्य-विनय-दम-तीर्थ-नायकः ।
शील-जलधिरभवो विभव-स्त्वमारिष्ट-नेमि-जिन-कुञ्जरोऽजरः । ।१२२ । ।

त्रिदशेन्द्र-मौलि-मणि-रत्न-किरण-विसरोपचुम्बितम् ।
पाद-युगलममलं भवतो विकसत्कुशेशय-दलाऽरुणोदरम् । ।१२३ । ।

नख-चन्द्र-रश्मि-कवचाऽति-रुचिर-शिखराङ्गुलिस्थलम् ।
स्वार्थ-नियत-मनसः सुधियः प्रणमन्ति मंत्र-मुखरा महर्षयः । ।१२४ । ।

द्युतिमद्रथांग-रवि-बिम्ब-किरण-जटिलांशु-मंडलः ।
नील-जलद-जलराशि-वपुः सह बन्धुभिर्गरुडकेतुरीश्वरः । ।१२५ । ।

हलभृच्च ते स्वजनभक्ति-मुदित-हृदयौ जनेश्वरौ ।
धर्म-विनय-रसिकौ सुतरां चरणाऽरविन्द-युगलं प्रणेमतुः । ।१२६ । ।

ककुदं भुवः खचरयोषि-दुषित-शिखरैरलङ्कृतः ।
मेघ-पटल-परिवीत-तट-स्तव लक्षणानि लिखितानि वज्रिणा । ।१२७ । ।

वहतीति तीर्थमृषिभिश्च सतत मभिगम्यतेऽद्य च ।
प्रीति-विततत-हृदयैः पारितो भृशमूर्जयन्त इति विश्रुतोऽचलः । ।१२८ । ।

बहिरन्तरप्युभयथा च करणमविघाति नार्थकृत् ।
नाथ! युगपदखिलं च सदा त्वमिदं तलाऽमलकवद् विवेदिथ । ।१२९ । ।

अत एव ते बुधनुतस्य चरित-गुणमद्भुतोदयं ।
न्याय-विहितमवधार्य जिने त्वयि सुप्रसन्न-मनसः स्थिता वयम् । ।१३० । ।

श्री पार्श्वजिनस्तवनम् - २३

(वंशस्थ-छन्दः)

तमाल-नीलैः सधनुस्तडिद्गुणैः, प्रकीर्ण-भीमाऽशनि-वायु-वृष्टिभिः।
बलाहकैर्वैरि-वशैरुपद्रुतो, महामना यो न चचाल योगतः।।१३१।।

बृहत्फणा-मण्डल-मण्डपेन यः, स्फुरत्तडित्पिग-रुचोपसर्गिणम्।
जुगूह नागो धरणो धरा-धरं, विराग-संध्या तडिदम्बुदो यथा।।१३२।।

स्व-योग-निस्त्रिंश-निशात-धारया, निशात्य यो दुर्जय-मोह-विद्विषम्।
अवापदाऽर्हन्त्यमचिन्त्यमद्भुतं त्रिलोक, पूजाऽतिशयाऽऽस्पदं पदम्।।१३३।।

यश्मीश्वरं वीक्ष्य विधूत-कल्मषं, तपोधनास्तेऽपि तथा बुभूषवः।
वनौकसः स्व-श्रम-वन्ध्य-बुद्धयः, शमोपदेशं शरणं प्रपेदिरे।।१३४।।

स सत्यविद्यातपसां प्रणायकः, समग्रधीरुग्रकुलाम्बरांशुमान्।
मया सदा पार्श्वजिनः प्रणम्यते, विलीन- मिथ्या-पथ-दृष्टि-विभ्रमः।।१३५।।

श्री वीरजिनस्तवनम् - २४

(स्कन्धक छन्दः) अथवा (आर्यागीति छन्दः)

कीर्त्याभुवि भासि तया वीर! त्वं गुणसमुच्छ्रया भासितया।
भासोडु-सभाऽऽसितया सोम इव व्योम्नि कुन्द-शोभा-सितया।।१३६।।

तव जिन! शासन-विभवो जयति कलावपि गुणाऽनुशासन-विभवः।
दोष-कशाऽसन-विभवः स्तुवन्ति चैनं प्रभाऽऽकृशाऽऽसन-विभवः।।१३७।।

अनवद्यः स्याद्वादस्तव दुष्टेष्टाऽविरोधतः स्याद्वादः।
इतरो न स्याद्वादो, स द्वितय-विरोधान् मुनीश्वराऽस्याद्वादः।।१३८।।

त्वमसि सुराऽसुर-महितो ग्रन्थिक-सत्त्वाऽऽशय-प्रणामाऽऽमहितः।
लोकत्रय-परम-हितो-ऽनावरणज्योतिरुज्ज्वलद्धाम-हितः।।१३९।।

सभ्यानामभिरुचितं दधासि गुण-भूषणं श्रिया चारु-चितम्।
मग्नं स्वस्यां तं रुचिरं जयसि च मृगलाञ्छनं स्व-कान्त्या रुचितम्।।१४०।।

त्वं जिन! गत-मद-माय-स्तव भावानां मुमुक्षु कामद-मायः।
श्रेयान् श्री-मद-माय-स्त्वया समादेशि सप्रयाम-दमाऽऽयः।।१४१।।

गिरिभित्त्यऽवदानवतः श्रीमत इव दन्तिनः स्रवद्दानवतः।
तव शमवादानऽवतो गतमूर्जितमपगतप्रमा-दान-वतः।।१४२।।

बहु-गुण-सम्पदऽसकलं परमतमपि मधुर-वचन-विन्यास-कलम्।
नयभक्त्यवतंसक-लं तव देव! मतं समन्तभद्रं सकलम्।।१४३।।

।। इति श्रीसमन्तभद्राचार्यविरचितं स्वयम्भूस्तोत्रम् ।।

रागी को विराग गान अच्छा नहीं लगता।
योगी को सुरापन अच्छा नहीं लगता।।
अनुभव जिन्हें शुद्धात्मा का घर में ही हो गया,
उन्हें त्याग व चारित्र अच्छा नहीं लगता।।

स्वयंभुवे नमस्तुभ्यम्, उत्पाद्यात्मानमात्मनि।
स्वात्मनैव तथोद्भूत, वृत्तयेऽचिन्त्यवृत्तये।।१।।

नमस्ते जगतां पत्ये, लक्ष्मीभर्त्रे नमोऽस्तु ते।
विदांवर नमस्तुभ्यं, नमस्ते वदतांवर।।२।।

कर्मशत्रुहणं देव, मानमन्ति मनीषिणः।
त्वामानमन्सुरेण्मौलि, भा-मालाऽभ्यर्चितक्रमम्।।३।।

ध्यान-द्रुघण-निर्भिन्न, घन-घाति महातरुः।
अनन्त-भव-सन्तान, जयादासीदनन्तजित्।।४।।

त्रैलोक्य-निर्जयावाप्त, दुर्दर्पमतिदुर्जयम्।
मृत्युराजं विजित्यासी, जिन! मृत्युंजयो भवान्।।५।।

विधूताशेष-संसार, बन्धनो भव्यबान्धवः।
त्रिपुराऽरिस्त्वमेवासि, जन्म-मृत्यु-जराऽन्तकृत्।।६।।

त्रिकाल-विषयाऽशेष, तत्त्वभेदात् त्रिधोत्थितम्।
केवलाख्यं दधच्चक्षु, स्त्रिनेत्रोऽसि त्वमीशितः।।७।।

त्वामन्धकाऽन्तकं प्राहु, र्मोहान्धाऽसुर-मर्दनात्।
अर्द्धं ते नारयो यस्माद्, अर्धनारीश्वरोऽस्यतः।।८।।

शिवः शिवपदाध्यासाद्, दुरिताऽरि-हरो हरः।
शंकरः कृतशं लोके, शंभवस्त्वं भवन्सुखे।।९।।

वृषभोऽसि जगज्ज्येष्ठः, पुरुः पुरुगुणोदयैः।
नाभेयो नाभि-सम्भूते, रिक्ष्वाकु-कुल-नन्दनः।।१०।।

त्वमेकः पुरुषस्कन्ध, स्त्वं द्वे लोकस्य लोचने।
त्वं त्रिधा बुद्ध-सन्मार्ग, स्त्रिज्ञस्त्रिज्ञान-धारकः।।११।।

चतुःशरण-मांगल्य-, मूर्त्तिस्त्वं चतुरस्रधीः।
पंच-ब्रह्ममयो देव, पावनस्त्वं पुनीहि माम्।।१२।।

स्वर्गाऽवतारिणे तुभ्यं, सद्योजातात्मने नमः।
जन्माभिषेकवामाय, वामदेव नमोऽस्तु ते।।१३।।

सन्निष्क्रान्तावघोराय, पदं परममीयुषे।
केवलज्ञान-संसिद्धा, वीशानाय नमोऽस्तु ते।।१४।।

पुरस्तत्पुरुषत्वेन, विमुक्तपदभाजिने।
नमस्तत्पुरुषाऽवस्था, भाविनीं तेऽद्य बिभ्रते।।१५।।

ज्ञानावरण-निर्हासा, न्नमस्तेऽनन्तचक्षुषे।
दर्शनावरणोच्छेदा, न्नमस्ते विश्वदृश्वने।।१६।।

नमो दर्शनमोहघ्ने, क्षायिकाऽमलदृष्टये।
नमस्चारित्रमोहघ्ने, विरागाय महौजसे।।१७।।

नमस्तेऽनन्तवीर्याय, नमोऽनन्तसुखात्मने।
नमस्तेऽनन्तलोकाय, लोकालोक-विलोकिने।।१८।।

नमस्तेऽनन्तदानाय, नमस्तेऽनन्तलब्धये।
नमस्तेऽनन्तभोगाय, नमोऽनन्तोपभोगिने।।१९।।

नमः परमयोगाय, नमस्तुभ्यमयोनये।
नमः परमपूताय, नमस्ते परमर्षये।।२०।।

नमः परमविद्याय, नमः पर-मतच्छिदे।
नमः परम-तत्त्वाय, नमस्ते परमात्मने।।२१।।

नमः परम-रूपाय, नमः परम-तेजसे।
नमः परम-मार्गाय, नमस्ते परमेष्ठिने।।२२।।

परमर्धिजुषे धाम्ने, परमज्योतिषे नमः।
नमः पारेतमः प्राप्त, धाम्ने परतराऽऽत्मने।।२३।।

नमः क्षीणकलंकाय, क्षीणबन्ध! नमोऽस्तु ते।
नमस्ते क्षीणमोहाय, क्षीणदोषाय ते नमः।।२४।।

नमः सुगतये तुभ्यं, शोभनां गतिमीयुषे।
नमस्तेऽतीन्द्रिय-ज्ञान-, सुखायाऽनिन्द्रियात्मने।।२५।।

काय-बन्धन-निर्मोक्षा, दकायाय नमोऽस्तु ते।
नमस्तुभ्यमयोगाय, योगिनामधियोगिने।।२६।।

अवेदाय नमस्तुभ्यम्, अकषायाय ते नमः।
नमः परम-योगीन्द्र, वन्दिताङ्घ्रिद्वयाय ते।।२७।।

नमः परम-विज्ञान!, नमः परम-संयम!
नमः परमदृग्दृष्ट, परमार्थाय ते नमः।।२८।।

नमस्तुभ्यमलेश्याय, शुक्ललेश्यांशक-स्पृशे।
नमो भव्येतराऽवस्था, व्यतीताय विमोक्षिणे।।२९।।

संज्ञ्यसंज्ञिद्वयावस्था, व्यतिरिक्ताऽमलात्मने।
नमस्ते वीतसंज्ञाय, नमः क्षायिकदृष्टये।।३०।।

अनाहाराय तृप्ताय, नमः परमभाजुषे।
व्यतीताऽशेषदोषाय, भवाब्धेः पारमीयुषे।।३१।।

अजराय नमस्तुभ्यं, नमस्ते स्तीदजन्मने।
अमृत्यवे नमस्तुभ्यम्, अचलायाऽक्षरात्मने।।३२।।

अलमास्तां गुणस्तोत्र, मनन्तास्तावकागुणाः।
त्वां नामस्मृतिमात्रेण, पर्युपासिसिषामहे।।३३।।

एवं स्तुत्वा जिनं देवं, भक्त्या परमया सुधीः।
पठेदष्टोत्तरं नाम्नां, सहस्रं पापशान्तये।।३४।।

॥ इति प्रस्तावना ॥

प्रसिद्धाऽष्टसहस्रेद्ध, लक्षणं त्वां गिरांपतिम्।
नाम्नामष्टमहस्रेण, तोष्टुमोऽभीष्टसिद्धये।।१।।

श्रीमान् स्वयम्भूर्वृषभः, शम्भवः शम्भुरात्मभूः।
स्वयंप्रभः प्रभुर्भोक्ता, विश्वभूरपुनर्भवः।।२।।

विश्वात्मा विश्वलोकेशो, विश्वतश्चक्षुरक्षरः।
विश्वविद् विश्वविद्येशो, विश्वयोनिरनश्वरः।।३।।

विश्वदृश्वा विभुर्धाता, विश्वेशो वश्विलोचनः।
विश्वव्यापी विधिर्वेधाः, शाश्वतो विश्वतोमुखः।।४।।

विश्वकर्मा जगज्ज्येष्ठो, विश्वमूर्तिर्जिनेश्वरः।
विश्वदृग् विश्वभूतेशो, विश्वज्योतिरनीश्वरः।।५।।

जिनो जिष्णुरमेयात्मा, विश्वरीशो जगत्पतिः।
अनन्तजिदचिन्त्यात्मा, भव्यबन्धुरऽबन्धनः।।६।।

युगादिपुरुषो ब्रह्मा, पंचब्रह्ममयः शिवः।
परः परतरः सूक्ष्मः, परमेष्ठी सनातनः।।७।।

स्वयंज्योतिरजोऽजन्मा, ब्रह्मयोनिरऽयोनिजः।
मोहारिविजयी जेता, धर्मचक्री दयाध्वजः।।८।।

प्रशान्तारिरनन्तात्मा, योगी योगीश्वराऽर्चितः।
ब्रह्मविद् ब्रह्मतत्त्वज्ञो, ब्रह्मोद्याविद्यतीश्वरः।।९।।

शुद्धो बुद्धः प्रबुद्धात्मा, सिद्धार्थः सिद्धशासनः।
सिद्धः सिद्धान्तविद् ध्येयः, सिद्धसाध्यो जगद्धितः।।१०।।

सहिष्णुरच्युतोऽनन्तः, प्रभविष्णुर्भवोद्भवः।
प्रभूष्णुरजरोऽजर्यो, भ्राजिष्णुर्धीश्वरोऽव्ययः।।११।।

विभावसुरसम्भूष्णुः, स्वयम्भूष्णुः पुरातनः।
परमात्मा परंज्योति, स्त्रिजगत्परमेश्वरः।।१२।।

॥ इति श्रीमदादिशतम् ॥ १ ॥

दिव्याभाषापतिर्दिव्यः, पूतवाक्पूतशासनः।
पूतात्मा परमज्योति, र्धर्माध्यक्षो दमीश्वरः।।१।।

श्रीपतिर्भगवान, र्हन्नरजा विरजाः शुचिः।
तीर्थकृत् केवलीशानः, पूजार्हः स्नातकोऽमलः।।२।।

अनन्तदीप्तिर्ज्ञानात्मा, स्वयंबुद्धः प्रजापतिः।
मुक्तः शक्तो निराबाधो, निष्कलो भुवनेश्वरः।।३।।

निरञ्जनो जगज्ज्योति, र्निरुक्तोक्तिर्निरामयः।
अचलस्थितिरक्षोभ्यः, कूटस्थः स्थाणुरक्षयः।।४।।

अग्रणीर्ग्रामणीर्नेता, प्रणेता न्यायशास्त्रकृत्।
शास्ता धर्मपतिर्धर्म्यो, धर्मात्मा धर्मतीर्थकृत्।।५।।

वृषध्वजो वृषाधीशो, वृषकेतुर्वृषायुधः।
वृषो वृषपतिर्भर्ता, वृषभांको वृषोद्भवः।।६।।

हिरण्यनाभिर्भूतात्मा, भूतभृद् भूतभावनः।
प्रभवो विभवो भास्वान्, भवो भावो भवान्तकः।।७।।

हिरण्यगर्भः श्रीगर्भः, प्रभूतविभवोद्भवः।
स्वयंप्रभुः प्रभुतात्मा, भूतनाथो जगत्प्रभुः।।८।।

सर्वादिः सर्वदृक् सार्वः, सर्वज्ञः सर्वदर्शनः।
सर्वात्मा सर्वलोकेशः, सर्ववित् सर्वलोकजित्।।९।।

सुगतिः सुश्रुतः सुश्रुत्, सुवाक् सूरिर्बहुश्रुतः।
विश्रुतो विश्वतःपादो, विश्वशीर्षः शुचिश्रवाः।।१०।।

सहस्रशीर्षः क्षेत्रज्ञः, सहस्राक्षः सहस्रपात्।
भूतभव्यभवद्भर्ता, विश्वविद्यामहेश्वरः।।११।।

॥ इति दिव्यादिशतम् ॥ २ ॥

स्थविष्ठः स्थविरो ज्येष्ठः, पृष्ठः प्रेष्ठो वरिष्ठधीः।
स्थेष्ठो गरिष्ठो बंहिष्ठः, श्रेष्ठोऽणिष्ठो गरिष्ठगीः।।१।।

विश्वभृद् विश्वसृड् विश्वेड्, विश्वभुग् विश्वनायकः।
विश्वाशीर्विश्वरूपात्मा, विश्वजिद्विजितान्तकः।।२।।

विभवो विभयो वीरो, विशोको विजरो जरन्।
विरागो विरतोऽसंगो, विविक्तो वीतमत्सरः।।३।।

विनेयजनताबन्धु, र्विलीनाशेषकल्मषः।
वियोगो योगविद् विद्वान्, विधाता सुविधिः सुधीः।।४।।

क्षान्तिभाक्पृथ्वीमूर्तिः, शान्तिभाक् सलिलात्मकः।
वायुमूर्तिरसंगात्मा, वह्निमूर्तिरधर्मधृक्।।५।।

सुयज्वा यजमानात्मा, सुत्वा सूत्रामपूजितः।
ऋत्विग्यज्ञपतिर्यज्ञो, यज्ञांगममृतं हविः।।६।।

व्योममूर्तिरमूर्तात्मा, निर्लेपो निर्मलोऽचलः।
सोममूर्तिः सुसौम्यात्मा, सूर्यमूर्तिर्महाप्रभः।।७।।

मन्त्रविन्मन्त्रकृन्मंत्री, मंत्रमूर्तिरनन्तगः।
स्वतन्त्रस्तन्त्रकृत्स्वान्तः, कृतान्तान्तः कृतान्तकृत्।।८।।

कृती कृतार्थः सत्कृत्यः, कृतकृत्यः कृतक्रतुः।
नित्यो मृत्युञ्जयो, मृत्युरमृतात्माऽमृतोद्भवः।।९।।

ब्रह्मनिष्ठः परंब्रह्म, ब्रह्मात्मा ब्रह्मसम्भवः।
महाब्रह्मपतिर्ब्रह्मेड्, महाब्रह्मपदेश्वरः।।१०।।

सुप्रसन्नः प्रसन्नात्मा, ज्ञानधर्मदमप्रभुः।
प्रशमात्मा प्रशान्तात्मा, पुराणपुरुषोत्तमः।।११।।

॥ इति स्थविष्ठादिशतम् ॥ ३ ॥

महाऽशोकध्वजोऽशोकः, कः स्रष्टा पद्मविष्टरः।
पद्मेशः पद्मसम्भूतिः, पद्मनाभिरनुत्तरः।।१।।

पद्मयोनिर्जगद्योनि, रित्यःस्तुत्यः स्तुतीश्वरः।
स्तवनार्हो हृषीकेशो, जितजेयः कृतक्रियः।।२।।

गणाधिपो गणज्येष्ठो, गण्यः पुण्यो गणाग्रणीः।
गुणाकरो गुणाम्भोधि, र्गुणज्ञो गुणनायकः।।३।।

गुणादरी गुणोच्छेदी, निर्गुणः पुण्यगीर्गुणः।
शरण्यः पुण्यवाक्पूतो, वरेण्यः पुण्यनायकः।।४।।

अगण्यः पुण्यधीर्गुण्यः, पुण्यकृत्पुण्यशासनः।
धर्मारामो गुणग्रामः, पुण्यापुण्य-निरोधकः।।५।।

पापापेतो विपापात्मा, विपात्मा वीतकल्मषः।
निर्द्वन्द्वो निर्मदः शान्तो, निर्मोहो निरुपद्रवः।।६।।

निर्निमेषो निराहारो, निष्क्रियो निरुपप्लवः।
निष्कलंको निरस्तैना, निर्धूतागा निरास्रवः।।७।।

विशालो विपुलज्योति, रतुलोऽचिन्त्यवैभवः।
सुसंवृतः सुगुप्तात्मा, सुभृत् सुनयतत्त्ववित्।।८।।

एकविद्यो महाविद्यो, मुनिः परिवृढः पतिः।
धीशो विद्यानिधिः साक्षी, विनेता विहतान्तकः।।९।।

पिता पितामहः पाता, पवित्रः पावनो गतिः।
त्राता भिषग्वरो वर्यो, वरदः परमः पुमान्।।१०।।

कविः पुराणपुरुषो, वर्षीयान्वृषभः पुरुः।
प्रतिष्ठाप्रसवो हेतु, र्भुवनैकपितामहः।।११।।

॥ इति महाशोकध्वजादिशतम् ॥

श्रीवृक्षलक्षणः श्लक्ष्णो, लक्षण्यः शुभलक्षणः।
निरक्षः पुण्डरीकाक्षः, पुष्कलः पुष्करेक्षणः।।१।।

सिद्धिदः सिद्धसंकल्पः, सिद्धात्मा सिद्धसाधनः।
बुद्धबोध्यो महाबोधि, र्वर्धमानो महर्द्धिकः।।२।।

वेदांगो वेदविद् वेद्यो, जातरूपो विदांवरः।
वेदवेद्यः स्वसंवेद्यो, विवेदो वदतांवरः।।३।।

अनादिनिधनोऽव्यक्तो, व्यक्तवाग्व्यक्तशासनः।
युगादिकृद् युगाधारो, युगादिर्जगदादिजः।।४।।

अतीन्द्रोऽतीन्द्रियो धीन्द्रो, महेन्द्रोऽतीन्द्रियार्थदृक्।
अनिन्द्रियोऽहमिन्द्रार्च्यो, महेन्द्रमहितो महान्।।५।।

उद्भवः कारणं कर्ता, पारगो भवतारकः।
अगाह्यो गहनं गुह्यं, परार्घ्यः परमेश्वरः।।६।।

अनन्तर्द्धिरमेयर्द्धि, रचिन्त्यर्द्धिः समग्रधीः।
प्राग्र्यः प्राग्रहरोऽभ्यग्रः, प्रत्यग्रोऽग्र्योऽग्रिमोऽग्रजः।।७।।

महातपा महातेजा, महोदर्को महोदयः।
महायशा महाधामा, महासत्वो महाधृतिः।।८।।

महाधैर्यो महावीर्यो, महासंपन्महाबलः।
महाशक्तिर्महाज्योति, र्महाभूतिर्महाद्युतिः।।९।।

महामतिर्महानीति, र्महाक्षान्तिर्महोदयः।
महाप्राज्ञो महाभागो, महानन्दो महाकविः।।१०।।

महामहा महाकीर्ति, र्महाकान्तिर्महावपुः।
महादानो महाज्ञानी, महायोगो महागुणः।।११।।

महामहपतिः प्राप्त, महाकल्याणपञ्चकः।
महाप्रभुर्महाप्राति, हार्याधीशो महेश्वरः।।१२।।

॥ इति श्रीवृक्षादिशतम् ॥

महामुनिर्महामौनी, महाध्यानो महादमः।
महाक्षमो महाशीलो, महायज्ञो महामखः।।१।।

महाव्रतपतिर्महय्यो, महाकान्तिधरोऽधिपः।
महामैत्री महामेयो, महापोयो महोमयः।।२।।

महाकारुणिको मन्ता, महामन्त्रो महायतिः।
महानादो महाघोषो, महेज्यो महसांपतिः।।३।।

महाध्वरधरो धुर्य्यो, महौदर्यो महिष्ठवाक्।
महात्मा महसांधाम, महर्षिर्महितोदयः।।४।।

महाक्लेशांकुशः शूरो, महाभूतपतिर्गुरुः।
महापराक्रमोऽनन्तो, महाक्रोधरिपुर्वशी।।५।।

महाभवाब्धिसंतारी, र्महामोहाऽद्रिसूदनः।
महागुणाकरः क्षान्तो, महायोगीश्वरः शमी।।६।।

महाध्यानपतिर्ध्याता, महाधर्मा महाव्रतः।
महाकर्मारिहाऽऽत्मज्ञो, महादेवो महेशिता।।७।।

सर्वक्लेशापहः साधुः, सर्वदोषहरो हरः।
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा, शमांत्मा प्रशमाकरः।।८।।

सर्वयोगीश्वरोऽचिन्त्यः, श्रुतात्मा विष्टरश्रवाः।
दान्तात्मा दमतीर्थेशो, योगात्मा ज्ञानसर्वगः।।९।।

प्रधानमात्मा प्रकृतिः, परमः परमोदयः।
प्रक्षीणबन्धः कामारिः, क्षेमकृत्क्षेमशासनः।।१०।।

प्रणवः प्रणयः प्राणः, प्राणदः प्रणतेश्वरः।
प्रमाणं प्रणिधिर्दक्षो, दक्षिणोऽध्वर्युरध्वरः।।११।।

आनन्दो नन्दनो नन्दो, वन्द्योऽनिन्द्योऽभिनन्दनः।
कामहा कामदः काम्यः, कामधेनुररिञ्जयः।।१२।।

॥ इति महामुन्यादिशतम् ॥

असंस्कृतसुसंस्कारः, प्राकृतो वैकृतान्तकृत्।
अन्तकृत्कान्तगुः कान्त, श्चिन्तामणिरभीष्टदः।।१।।

अजितो जितकामारि, रमितोऽमितशासनः।
जितक्रोधो जितामित्रो, जितक्लेशो जितान्तकः।।२।।

जिनेन्द्रः परमानन्दो, मुनीन्द्रो दुन्दुभिस्वनः।
महेन्द्रवन्द्यो योगीन्द्रो, यतीन्द्रो नाभिनन्दनः।।३।।

नाभेयो नाभिजोऽजातः, सुव्रतो मनुरुत्तमः।
अभेद्योऽनत्ययोऽनाश्वान, धिकोऽधिगुरुः सुधीः।।४।।

सुमेधा विक्रमी स्वामी, दुराधर्षो निरुत्सुकः।
विशिष्टः शिष्टभुक् शिष्टः, प्रत्ययः कामनोऽनघः।।५।।

क्षेमी क्षेमंकरोऽक्षय्यः, क्षेमधर्मपतिः क्षमी।
अग्राह्यो ज्ञाननिग्राह्यो, ध्यानगम्यो निरुत्तरः।।६।।

सुकृती धातुरिज्यार्हः, सुनयश्चतुराननः।
श्रीनिवासश्चतुर्वक्त्र, श्चतुरास्यश्चतुर्मुखः।।७।।

सत्यात्मा सत्यविज्ञानः, सत्यवाक्सत्यशासनः।
सत्याशीः सत्यसन्धानः, सत्यः सत्यपरायणः।।८।।

स्थेयान्स्थवीयान्नेदीया, न्दवीयान् दूरदर्शनः।
अणोरणीयाननणु, र्गरुरादद्यो गरीयसाम्।।९।।

सदायोगः सदाभोगः, सदातृप्तः सदाशिवः।
सदागतिः सदासौख्यः, सदाविद्यः सदोदयः।।१०।।

सुघोषः सुमुखः सौम्यः, सुखदः सुहितः सुहृत्।
सुगुप्तो गुप्तिभृद् गोप्ता, लोकाध्यक्षो दमीश्वरः।।११।।

॥ इति असंस्कृतादिशतम् ॥

बृहन्बृहस्पतिर्वाग्मी, वाचस्पतिरुदारधीः।
मनीषी धिषणो धीमा, ज्छेमुषीशो गिरांपतिः।।१।।

नैकरूपो नयोत्तुंगो, नैकात्मा नैकधर्मकृत्।
अविज्ञेयोऽप्रतर्क्यात्मा, कृतज्ञः कृतलक्षणः।।२।।

ज्ञानगर्भो दयागर्भो, रत्नगर्भः प्रभास्वरः।
पद्मगर्भो जगद्गर्भो, हेमगर्भः सुदर्शनः।।३।।

लक्ष्मीवांस्त्रिदशाध्यक्षो, दृढीयानिन ईशिता।
मनोहरो मनोज्ञांगो, धीरो गम्भीरशासनः।।४।।

धर्मयूपो दयायागो, धर्मनेमिर्मुनीश्वरः।
धर्मचक्रायुधो देवः, कर्महा धर्मघोषणः।।५।।

अमोघवागमोघाज्ञो, निर्मलोऽमोघशासनः।
सुरूपः सुभगस्त्यागी, समयज्ञः समाहितः।।६।।

सुस्थितः स्वास्थ्यभाक्स्वस्थो, नीरजस्को निरुद्धवः।
अलेपो निष्कलंकात्मा, वीतरागो गतस्पृहः।।७।।

वश्येन्द्रियो विमुक्तात्मा, निःसपत्नो जितेन्द्रियः।
प्रशान्तोऽनन्तधामर्षि, र्मंगलं मलहानघः।।८।।

अनीदृगुपमाभूतो, दिष्टिर्दैवमगोचरः।
अमूर्तो मूर्तिमानेको, नैको नानैकतत्त्वदृक्।।९।।

अध्यात्मगम्योऽगम्यात्मा, योगविद्योगिवन्दितः।
सर्वत्रगः सदाभावी, त्रिकालविषयार्थदृक्।।१०।।

शंकरः शंवदो दान्तो, दमी क्षान्तिपरायणः।
अधिपः परमानन्दः, परात्मज्ञः परात्परः।।११।।

त्रिजगद्वल्लभोऽभ्यर्च्य, स्त्रिजगन्मंगलोदयः।
त्रिजगत्पतिपूज्याङ्घ्रि, स्त्रिलोकाग्रशिखामणिः।।१२।।

॥ इति बृहदादिशतम् ॥

त्रिकालदर्शी लोकेशो, लोकधाता दृढव्रतः।
सर्वलोकातिगः पूज्याः, सर्वलोकैकसारथिः।।१।।

पुराणः पुरुषः पूर्वः, कृतपूर्वांगविस्तरः।
आदिदेवः पुराणाद्यः, पुरुदेवोऽधिदेवता।।२।।

युगमुख्यो युगज्येष्ठो, युगादिस्थितिदेशकः।
कल्याणवर्ण कल्याणः, कल्यः कल्याणलक्षणः।।३।।

कल्याणप्रकृतिर्दीप्त, कल्याणात्मा विकल्मषः।
विकलंकः कलातीतः, कलिलघ्नः कलाधरः।।४।।

देवदेवो जगन्नाथो, जगद्बन्धुर्जगद्विभुः।
जगद्धितैषी लोकज्ञः, सर्वगो जगदग्रजः।।५।।

चराचरगुरुर्गोप्यो, गूढात्मा गूढगोचरः।
सद्योजातः प्रकाशात्मा, ज्वलज्ज्वलनसप्रभः।।६।।

आदित्यवर्णो भर्माभः, सुप्रभः कनकप्रभः।
सुवर्णवर्णो रुक्माभः, सूर्यकोटिसमप्रभः।।७।।

तपनीयनिभस्तुंगो, बालार्काभोऽनलप्रभः।
सन्ध्याभ्रबभ्रुर्हेमाभ, स्तप्तचामीकरच्छविः।।८।।

निष्टप्तकनकच्छायः, कनत्काञ्चनसन्निभः।
हिरण्यवर्णः स्वर्णाभः, शातकुम्भनिभप्रभः।।९।।

द्युम्नाभो जातरूपाभ, स्तप्तजाम्बूनदद्युतिः।
सुधोतकलधौतश्रीः, प्रदीप्तो हाटकद्युतिः।।१०।।

शिष्टेष्टः पुष्टिदः पुष्टः, स्पष्टः स्पष्टाक्षरः क्षमः।
शत्रुघ्नोऽप्रतिघोऽमोघः, प्रशास्ता शासिता स्वभू।।११।।

शान्तिनिष्ठो मुनिज्येष्ठः, शिवतातिः शिवप्रदः।
शान्तिदः शान्तिकृच्छान्तिः, कान्तिमान्कामितप्रदः।।१२।।

श्रेयोनिधिरधिष्ठान, मप्रतिष्ठः प्रतिष्ठितः।
सुस्थिरः स्थावरः स्थाणुः, प्रथीयान्प्रथितः पृथुः।।१३।।

॥ इति त्रिकालदर्श्यादिशतम् ॥

दिग्वासा वातरशनो, निर्ग्रन्थेशो निरम्बरः।
निष्किञ्चनो निराशंसो, ज्ञानचक्षुरमोमुहः।।१।।

तेजोराशिरनन्तौजा, ज्ञानाब्धिः शीलसागरः।
तेजोमयोऽमितज्योति, र्ज्योतिर्मूर्तिस्तमोपहः।।२।।

जगच्चूडामणिर्दीप्तः, शंवान्विघ्नविनायकः।
कलिघ्नः कर्मशत्रुघ्नो, लोकोकप्रकाशकः।।३।।

अनिद्रालुरतन्द्रालु, र्जागरुकः प्रभामयः।
लक्ष्मीपतिर्जगज्ज्योति, र्धर्मराजः प्रजाहितः।।४।।

मुमुक्षुर्बन्धमोक्षज्ञो, जिताक्षो जितमन्मथः।
प्रशान्तरसशैलूषो, भव्यपेटकनायकः।।५।।

मूलकर्ताऽखिलज्योति, र्मलघ्नो मूलकारणः।
आप्तो वागीश्वरः श्रेयाञ्च, छायमोक्तिर्निरुक्तवाक्।।६।।

प्रवक्ता वचसामीशो, मारजिद्विश्वभाववित्।
सुतनुस्तनुनिर्मुक्तः, सुगतो हतदुर्नयः।।७।।

श्रीशः श्रीश्रितपादाब्जो, वीतभीरभयंकरः।
उत्सन्नदोषो निर्विघ्नो, निश्चलो लोकवत्सलः।।८।।

लोकोत्तरो लोकपति, र्लोकचक्षुरपारधीः।
धीरधीर्बुद्धसन्मार्गः, शुद्धः सूनृतपूतवाक्।।९।।

प्रज्ञापारमितः प्राज्ञो, यतिर्नियमितेन्द्रियः।
भदन्तो भद्रकृद्भद्रः, कल्पवृक्षो वरप्रदः।।१०।।

समुन्मूलितकर्मारिः, कर्मकाष्ठाऽऽशुशुक्षणिः।
कर्मण्यः कर्मठः, प्रांशुर्हेयादेयविचक्षणः।।११।।

अनन्तशक्तिरच्छेद्य, स्त्रिपुरारिस्त्रिलोचनः।
त्रिनेत्रस्त्र्यम्बकस्त्र्यक्षः, केवलज्ञानवीक्षणः।।१२।।

समन्तभद्रः शान्तारि, र्धर्माचार्यो दयानिधिः।
सूक्ष्मदर्शी जितानंग, कृपालुर्धर्मदेयशकः।।१३।।

॥ इति दिग्वासाद्यष्टोत्तरशतम् ॥

धाम्नांपते तवामूनि, नामान्यागमकोविदैः।
समुच्चितान्यनुध्याय, न्पुमान्पूतस्मृतिर्भवेत्।।१।।

गोचरोऽपि गिरामासां, त्वमवाग्गोचरो मतः।
स्तोता तथाप्यसन्दिग्धं, त्वत्तोऽभीष्टफलं भजेत्।।२।।

त्वमतोऽसि जगद्बन्धु, स्त्वमतोऽसि जगद्भिषक्।
त्वमतोऽसि जगद्धाता, त्वमतोऽसि जगद्धितः।।३।।

त्वमेकं जगतां ज्योति, स्त्वं द्विरूपोपयोगभाक्।
त्वं त्रिरूपैकमुक्त्यंगः, स्वोत्थानन्तचतुष्टयः।।४।।

त्वं पञ्चब्रह्मतत्त्वात्मा, पञ्चकल्याणनायकः।
षड्भेदभावतत्त्वज्ञस्त्वं, सप्तनयसङ्ग्रहः।।५।।

दिव्याष्टगुणमूर्तिस्त्वं, नवकेवललब्धिकः।
दशावतारनिर्धार्यो मां, पाहि परमेश्वर्!।।६।।

युष्मन्नामावलीदृब्ध, विलसत्स्तोत्रमालया।
भवन्तं वरिवस्यामः, प्रसीदानुगृहाण नः।।७।।

इदं स्तोत्रमनुस्मृत्य, पूतो भवति भाक्तिकः।
यः संपाठं पठत्येनं, स स्यात्कल्याणभाजनम्।।८।।

ततः सदेदं पुण्यार्थी, पुमान्पठति पुण्यधीः।
पौरुहूतीं श्रियं प्राप्तुं, परमामभिलाषुकः।।९।।

स्तुत्वेति मघवा देवं, चराचरजगद्गुरुम्।
ततस्तीर्थविहारस्य, व्यधात्प्रस्तावनामिमाम्।।१०।।

स्तुतिः पुण्यगुणोत्कीर्तिः, स्तोता भव्यः प्रसन्नधीः।
निष्ठितार्थो भवांस्तुत्यः, फलं नैश्रेयसं सुखम्।।११।।

यः स्तुत्यो जगतां त्रयस्य न पुनः, स्तोता स्वयं कस्यचित् ।
ध्येयो योगिजनस्य यश्च नितरां, ध्याता स्वयं कस्यचित् ।।

यो नेन्तॄन् नयते नमस्कृतिमलं, नन्तव्यपक्षेक्षणः ।
स श्रीमान् जगतां त्रयस्य च गुरुर्देवः, पुरुः पावनः ।।१२।।

तं देवं त्रिदशधिपार्चितपदं, घातिक्षयानन्तरम् ।
प्रोत्थानन्तचतुष्टयं जिनमिमं, भव्याब्जिनीनामिनम् ।।
मानस्तम्भविलोकनानत्तजगन्मान्यं, त्रिलोकीपतिम् ।
प्राप्ताचिन्त्यबहिर्विभूतिमनघं, भक्त्या प्रवन्दामहे ।।१३।।

॥ इति श्रीभगवज्जिनसहस्रनामस्तोत्रं ॥

(गुणनन्दिकृत)

अद्याष्टकस्तोत्रम्

अद्य मे सफलं जन्म नेत्रे च सफले मम।
त्वामद्राक्षं यतो देव हेतुमक्षयसंपदः।।१।।

अद्य संसार-गंभीर-पारावारः सुदुस्तरः।
सुतरोऽयं क्षणेनैव जिनेन्द्र! तव दर्शनात्।।२।।

अद्य मे क्षालितं गात्रं नेत्रे च विमले कृते।
स्नातोऽहं धर्म-तीर्थेषु जिनेन्द्र! तव दर्शनात्।।३।।

अद्य मे सफलं जन्म प्रशस्तं सर्वमंगलम्।
संसाराऽर्णव-तीर्णोऽहं जिनेन्द्र! तव दर्शनात्।।४।।

अद्य कर्माष्टक-ज्वालं विधूतं सकषायकम्।
दुर्गतेर्विनिवृत्तेऽहं जिनेन्द्र! तव दर्शनात्।।५।।

अद्य सौम्या ग्रहाः सर्वे शुभाश्चैकादश-स्थिताः।
नष्टानि विघ्न-जालानि जिनेन्द्र! तव दर्शनात्।।६।।

अद्य नष्टो महाबंधः कर्मणां दुःखदायकः।
सुख-संगं समापन्नो जिनेन्द्र! तव दर्शनात्।।७।।

अद्य कर्मोष्टकं नष्टं दुःखोत्पादन-कारकम्।
सुखाम्भोधि-निमग्नोऽहं जिनेन्द्र! तव दर्शनात्।।८।।

अद्य मिथ्यान्धकारस्य हन्ता ज्ञान-दिवाकरः।
उदितो मच्छरीरेऽस्मिन् जिनेन्द्र! तव दर्शनात्।।९।।

अद्याहं सुकृतीभूतो निर्धूताशेषकल्मषः।
भुवन-त्रय-पूज्योऽहं जिनेन्द्र! तव दर्शनात्।।१०।।

अद्याष्टकं पठेद्यस्तु गुणाऽऽनन्दित-मानसः।
तस्य सर्वार्थसंसिद्धिर्जिनेन्द्र! तव दर्शनात्।।११।।

॥ इति श्रीगुणनन्दीकृत स्तोत्रम् ॥

कौन-कौन सी भक्ति कहाँ कहाँ करनी चाहिये इसका स्पष्ट विवरण

क्र.सं.	कार्य	भक्तियाँ
१.	जिन प्रतिमा वंदना में	चैत्यभक्ति, पंचगुरुभक्ति
२.	आचार्य वंदना (गवासन से) में	लघु सिद्ध-आचार्य भक्ति
३.	सिद्धांतवेत्ता आचार्य की वंदना में	सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति, आचार्य भक्ति
४.	साधारण मुनियों की वंदना में	सिद्धभक्ति
५.	सिद्धांतवेत्ता मुनियों की वंदना में	सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति
६.	स्वाध्याय का प्रारम्भ करते समय	लघु श्रुत भक्ति, लघु आचार्य भक्ति
७.	स्वाध्याय की समाप्ति में	लघु श्रुत भक्ति
८.	आचार्य की अनुपस्थिति में पहले दिन उपवास वा प्रत्याख्यान ग्रहण किया हो तो दूसरे दिन आहार के समय आहार की समाप्ति पर अगले दिन के उपवास वा प्रत्याख्यान का ग्रहण करने में	सिद्ध भक्ति पढ़कर उसका त्याग वा आहार के लिए गमन सिद्धभक्ति
९.	आचार्य की उपस्थिति में आहार के लिये जाने के पहले	लघुयोगिभक्ति, लघुसिद्धभक्ति
९.	आहार के अनंतर प्रत्याख्यान वा उपवास की प्रतिज्ञा के लिये	लघुयोगिभक्ति, लघुसिद्धभक्ति

क्र.सं.	कार्य	भक्तियाँ
१०.	आचार्य वंदना	लघुआचार्य भक्ति
११.	चतुर्दशी के दिन त्रिकाल वंदना के लिये	चैत्यभक्ति, श्रुतभक्ति, पंचगुरुभक्ति अथवा सिद्ध भक्ति, चैत्यभक्ति, श्रुतभक्ति, पंचगुरु भक्ति, शांतिभक्ति
१२.	नंदीश्वर पर्व में	सिद्धभक्ति, नंदीश्वरभक्ति, पंचगुरुभक्ति, शांतिभक्ति
१३.	सिद्धप्रतिमा के सामने	सिद्धभक्ति
१४.	तीर्थंकर जन्मकल्याण के दिन	चैत्यभक्ति, श्रुतभक्ति, पंचगुरुभक्ति अथवा सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति, श्रुतभक्ति, पंचगुरुभक्ति, शांतिभक्ति
१५.	अष्टमी चतुर्दशी की क्रिया में अपूर्व चैत्यवंदना वा त्रिकाल नित्यवंदना के समय	चैत्यभक्ति, पंचगुरुभक्ति, शांतिभक्ति।
१६.	अभिषेक वंदना में	सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति, पंचगुरु भक्ति, शांतिभक्ति
१७.	स्थिरबिंबप्रतिष्ठा में	सिद्धभक्ति, शांतिभक्ति
१८.	चलबिंबप्रतिष्ठा में	सिद्धभक्ति, शांतिभक्ति
१९.	चल बिंबप्रतिष्ठा के चतुर्थ अभिषेक में	सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति, पंचमहागुरुभक्ति, शांतिभक्ति
२०.	तीर्थंकरों के गर्भकल्याणक में	सिद्धभक्ति, चारित्रभक्ति, शांतिभक्ति

क्र.सं.	कार्य	भक्तियाँ
२२.	दीक्षाकल्याणक में	सिद्धभक्ति, चारित्रभक्ति, योगिभक्ति, शांतिभक्ति
२३.	ज्ञानकल्याणक में	सिद्ध, श्रुत, चारित्रयोगि निर्वाण और शांति भक्ति
२४.	निर्वाणकल्याणक में	सिद्ध, श्रुत, चारित्र, योगि, निर्वाण और शांति भक्ति।
२५.	वीरनिर्वाण-सूर्योदय के समय	सिद्धभक्ति, निर्वाण, पंचगुरु, शांतिभक्ति, बृहत्सिद्धभक्ति, बृहत्श्रुतभक्ति, श्रुतस्कंध की स्थापना, बृहत् वाचना, बृहत् श्रुत भक्ति, आचार्य भक्तिपूर्वक स्वाध्याय, श्रुतभक्ति द्वारा स्वाध्याय की पूर्णता अंत में शांति भक्ति कर क्रिया की पूर्णता
२६.	श्रुतपंचमी के दिन गृहस्थों को	सिद्ध-श्रुत-शांतिभक्ति।
२७.	सिद्धांत वाचना में	सिद्धश्रुतभक्ति द्वारा प्रारंभ श्रुतभक्ति आचार्य भक्ति कर वाचना अंत में श्रुत और शांति भक्ति
२८.	गृहस्थों को सन्यास के प्रारंभ में	सिद्ध, श्रुत, शान्तिभक्ति
२९.	गृहस्थों को सन्यास के अन्त में	सिद्ध, श्रुत, शांतिभक्ति
३०.	वर्षायोग धारण करते समय	सिद्ध, योगि, चैत्यभक्ति

क्र.सं.	कार्य	भक्तियाँ
३१.	वर्षायोग धारण की प्रदक्षिणा में	यावंति जिनचैत्यानि, स्वयंभू-स्तोत्र की स्तुति चैत्यभक्ति
३२.	वर्षायोग स्वीकार करते समय	पंचगुरुभक्ति, शांतिभक्ति
३३.	वर्षायोग की समाप्ति में	वर्षायोग धारण करने की पूर्व विधि
३४.	आचार्य पद ग्रहण करते समय	सिद्ध, आचार्य, शांतिभक्ति
३५.	प्रतिमा योग धारण करने वाले मुनि की वंदना करते समय	सिद्ध, योगि, शांतिभक्ति
३६.	व्रतिमसश्सेग धारण करने वाले मुनि की वंदना करते समय	सिद्ध, योगि, शांतिभक्ति
३७.	दीक्षा ग्रहण करते समय	बृहत्सिद्धभक्ति, योगिभक्ति
३८.	दीक्षा के अन्त में	सिद्धभक्ति
३९.	केशलोंच करते समय	लघुसिद्धभक्ति, लघुयोगिभक्ति
४०.	लोंच के अन्त में	सिद्धभक्ति
४१.	प्रतिक्रमण में	सिद्ध, प्रतिक्रमण, वीरभक्ति, चतुर्विंशति- तीर्थंकरभक्ति
४२.	रात्रियोग धारण करते समय	योगिभक्ति
४३.	रात्रियोग का त्याग करते समय	योगिभक्ति
४४.	देववंदना में दोष लगने पर	योगिभक्ति

क्र.सं.	कार्य	भक्तियाँ
४५.	सामान्य ऋषि के स्वर्गवास होने पर उनके शरीर और निषद्या की क्रिया में	सिद्ध, योगि, शांतिभक्ति
४६.	सिद्धांतवेत्ता साधु के समाधि में	सिद्ध, श्रुत, योगि, शांतिभक्ति
४७.	उत्तर गुणधारी सिद्धांतवेत्ता साधु के समाधि में	सिद्ध, चारित्र, योगि, शांतिभक्ति
४८.	आचार्य के समाधि होने पर	सिद्ध, श्रुत, आचार्य, योगि, शांति भक्ति
४९.	सिद्धान्तवेत्ता आचार्य के समाधि होने पर	सिद्ध, योगि, आचार्य, शांति भक्ति
५०.	उत्तर गुणधारी आचार्य के समाधि होने पर	सिद्ध, श्रुत, योगि, आचार्य, शांति भक्ति
५१.	आचार्य के समाधि पर	सिद्ध, श्रुत, योगि, आचार्य, शान्ति भक्ति
५२.	पाक्षिक प्रतिक्रमण में	सिद्ध, चारित्र, प्रतिक्रमण, वीर भक्ति, चतुर्विंशति भक्ति, चारित्रालोचना, गुरुभक्ति, बृहदालोचना, गुरुभक्ति, लघु आचार्य भक्ति।
५३.	चातुर्मासिक प्रतिक्रमण में	सिद्ध, चारित्र, प्रतिक्रमण, वीरभक्ति, चतुर्विंशति भक्ति, चारित्रालोचना, गुरुभक्ति, बृहदालोचना, गुरुभक्ति, लघु आचार्य भक्ति।

क्र.सं.	कार्य	भक्तियाँ
५४.	वार्षिक प्रतिक्रमण में	सिद्ध, चारित्र, प्रतिक्रमण, वीरभक्ति, चतुर्विंशति भक्ति, चारित्रालोचना, गुरुभक्ति, बृहदालोचना, गुरुभक्ति, लघु आचार्य भक्ति।

गर फलों को चाहते हो, तो पेड़ को नमन कीजिए।
गर फूलों को चाहते हो, तो काँटों को नमन कीजिए।।
हैवान बन गये हो वासना के चक्कर में मेरे साथी,
गर इन्सान बनना चाहते हो, तो अच्छाइयों को नमन कीजिए।।

अथ श्री अर्हद्-भक्तिः

अथा-र्हत्पूजारम्भ-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा वंदनास्तवसमेतं श्री अर्हद्भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(स्रग्धरा छन्द)

निःसंगोऽहं जिनानां सदन-मनुपमं त्रिःपरीत्येत्य भक्त्या।
स्थित्वा गत्वा निषद्यो-च्चरण-परिणतोऽन्तः शनै-र्हस्त-युग्मम्।
भाले संस्थाप्य बुद्ध्या मम दुरित-हरं कीर्तये शक्र-वन्द्यम्।
निन्दा-दूरं सदाप्तं क्षय-रहित-ममुं ज्ञान-भानुं जिनेन्द्रम्।।१।।

(वसन्ततिलका छन्द)

श्रीमत् पवित्रमकलंक-मनन्त-कल्पम्,
स्यायंभुवं सकल-मंगलमादि-तीर्थम्।
नित्योत्सवं मणिमयं निलयं जिनानाम्,
त्रैलोक्य-भूषणमहं शरणं प्रपद्ये।।२।।

(अनुष्टुप् छन्द)

श्रीमत्-परम-गम्भीर, स्याद्वादामोघ-लाञ्छनम्।
जीयात्-त्रैलोक्यनाथस्य, शासनं जिन-शासनम्।।३।।

श्री-मुखालोकनादेव, श्री-मुखालोकनं भवेत्।
आलोकन-विहीनस्य, तत् सुखावाप्तयः कुतः।।४।।

(बसन्ततिलका छन्द)

अद्याभवत्-सफलता नयन-द्वयस्य,
देव! त्वदीय-चरणाम्बुज-वीक्षणेन।
अद्य-त्रिलोक-तिलक! प्रतिभासते मे,
संसार-वारिधि-रयं चुलुक-प्रमाणः।।५।।

(अनुष्टुप् छन्द)

अद्य मे क्षालितं गात्रं नेत्रे च विमलीकृते।
स्नातोऽहं धर्म-तीर्थेषु जिनेन्द्र तव दर्शनात्।।६।।

(उपेन्द्रवज्रा छंद)

नमो नमः सत्त्व-हितंकराय वीराय भव्याम्बुज-भास्कराय।
अनन्त-लोकाय सुरार्चिताय देवाधि-देवाय नमो जिनाय।।७।।

नमो जिनाय त्रिदशार्चिताय विनष्ट-दोषाय गुणार्णवाय।
विमुक्ति-मार्ग-प्रतिबोधनाय, देवाधि-देवाय नमो जिनाय।।८।।

(वसन्ततिलका छन्द)

देवाधिदेव! परमेश्वर! वीतराग!
सर्वज्ञ! तीर्थकर! सिद्ध! महानुभाव!
त्रैलोक्यनाथ! जिन-पुंगव! वर्धमान!
स्वामिन् गतोऽस्मि शरणं चरण-द्वयं ते।।९।।

(आर्या छन्द)

जित-मद-हर्ष-द्वेषा, जित-मोह-परीषहाः जित-कषायाः।
जित-जन्म-मरण-रोगा, जित-मात्सर्या जयन्तु जिनाः।।१०।।

जयतु जिन वर्धमान-स्त्रिभुवन-हित-धर्म-चक्र-नीरज-बंधुः।
त्रिदशपति-मुकुट-भासुर, चूड़ामणि-रश्मि-रञ्जितारुण-चरणः।।११।।

(हरिणी छन्द)

जय जय जय त्रैलोक्य-काण्ड-शोभि-शिखामणे,
नुद नुद नुद स्वान्त-ध्वान्तं जगत्-कमलार्क नः।
नय नय नय स्वामिन्! शान्तिं नितान्त-मनन्तिमाम्,
नहि नहि नहि त्राता, लोकैक-मित्र-भवत्-परः।।१२।।

(बसन्ततिलका छन्द)

चित्ते मुखे शिरसि पाणि-पयोज-युग्मे,
भक्तिं स्तुतिं विनतिमञ्जलिमञ्जसैव।
चेक्रीयते चरिकरीति चरीकरीति,
यश्चर्करीति तव देव! स एव धन्यः।।१३।।

(मन्दाक्रान्ता छन्द)

जन्मोन्मार्ज्यं भजतु भवतः पाद-पद्मं न लभ्यम्,
तच्चेत्-स्वैरं चरतु न च दुर्देवतां सेवतां सः।
अश्नात्यन्नं यदिह सुलभं दुर्लभं चेन्मुधास्ते,
क्षुद्-व्यावृत्यै कवलयति कः कालकूटं बुभुक्षुः।।१४।।

(शार्दूल-विक्रीडित छन्द)

रूपं ते निरुपाधि-सुन्दर-मिदं, पश्यन् सहस्रेक्षणः।
प्रेक्षा-कौतुक-कारिकोऽत्र भगवन् नोपैत्यवस्थान्तरम्।।
वाणीं गद्गद्यन् वपुः पुलकयन्, नेत्र-द्वयं श्रावयन्,
मूर्द्धानं नमयन् करौ मुकुलयंश्चेतोऽपि निर्वापयन्।।१५।।

त्रस्तारातिरिति त्रिकालविदिति त्राता त्रिलोक्या इति,
श्रेयः सूति-रिति श्रियां निधिरिति, श्रेष्ठः सुराणामिति।
प्राप्तोऽहं शरणं शरण्य-मगतिस्त्वां तत्-त्यजोपेक्षणम्।
रक्ष क्षेमपदं प्रसीद जिन! किं, विज्ञपितैर्गोपितैः।।१६।।

(उपजाति छन्द)

त्रिलोक-राजेन्द्र-किरीट-कोटि, प्रभाभि-रालीढ-पदार-विन्दम्।
निर्मूल-मुन्मूलित-कर्म-वृक्षं, जिनेन्द्र-चन्द्रं प्रणमामि भक्त्या।।१७।।

(आर्या छन्द)

करचरणतनु विघाता, दटतो निहितः प्रमादतः प्राणी।
ईर्या-पथ मिति भीत्या मुञ्चे तद्दोष-हान्य-र्थम्।।१८।।

ईर्यापथे प्रचलताऽद्य मया प्रमादा,
देकेन्द्रिय प्रमुख जीव निकायबाधा।
निर्वर्तिता यदि भवेदयुगान्तरेक्षा,
मिथ्या तदस्तु दुरितं गुरुभक्तितो मे।।१९।।

गद्य

पडिक्कमामि भन्ते! इरिया-वहियाए, विराह-णाए, अणगुत्ते, अइग्गमणे, णिग्गमणे, ठाणे, गमणे, चंकमणं, पाणुग्गमणे, बीजुग्गमणे, हरिदुग्गमणे,

उच्चा-रपस्सवण-खेल-सिंहाण-वियडियपइट्ठावणियाए, जे जीवा एइंदिया वा, बेइंदिया वा, तेइंदिया वा, चउरिंदिया वा, पंचिंदिया वा, णोल्लिदा वा, पेल्लिदा वा, संघट्टिदा वा, संघादिदा वा, उद्दाविदा वा, परिदाविदा वा, किरिच्छिदा वा, लेस्सिदा वा, छिंदिदा वा, भिंदिदा वा, ठाणदो वा, ठाण-चंकमणदो वा, तस्स उत्तरगुणं, तस्स पायच्छित्त-करणं, तस्स विसोहि-करणं, जाव अरहंताणं, भयवंताणं, णमोक्कारं, पज्जुवासं करेमि, ताव कालं, पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

ॐ णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।

ॐ नमो परमात्मने नमोऽनेकान्ताय शान्तये-

गद्य

इच्छामिभन्ते! आलोचेउं इरियावहियस्स पुव्वुतर-दक्खिण-पच्छिम चउदिसु विदिसासु विहरमाणेण, जुगंतर दिट्ठिणा, भव्वेण, दट्ठव्वा। पमाददोसेण डवडवचरियाए पाण-भूद जीव-सत्ताणं एदेसिं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

(शार्दूलविक्रीडित छन्द)

पापिष्ठेन दुरात्मना जड़धिया, मायाविना लोभिना,
रागद्वेषमलीमसेन मनसा, दुष्कर्म यन्निर्मितम्।।
त्रैलोक्याधिपते! जिनेन्द्र! भवतः श्रीपाद मुलेऽधुना,
निन्दापूर्वमहं जहामि सततं, निर्वर्तये कर्मणाम्।।१।।

जिनेन्द्रमुन्मूलित कर्मबंधं, प्रणम्य सन्मार्गकृत स्वरूपम्।
अनन्तबोधादि भवंगुणौघं, क्रियाकलापं प्रकटं प्रवक्ष्ये।।२।।

गद्य

अथा-र्हत्पूजारम्भ-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा वंदनास्तवसमेतं श्रीमत्सिद्धभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

चत्तारि मंगलं, अरहंत मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंत लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

अड्ढाइज्जदीव दो समुद्देसु पण्णारस-कम्म-भूमिसु, जाव अरहंताणं, भयवंताणं, आदियराणं, तित्थ-यराणं जिणाणं, जिणोत्तमाणं, केवलियाणं, सिद्धाणं बुद्धाणं, परिणिव्वुदाणं, अंतयडाणं, पारयडाणं, धम्मा-इरियाणं धम्मदेसयाणं, धम्मणायगाणं, धम्मवरचाउ-रंग-चक्कवट्टीणं, देवाहि-देवाणं, णाणाणं, दंसणाणं चारित्ताणं सदा करेमि, किरियम्मं। करेमि भन्ते! सामाइयं सव्वसावज्जजोगं पच्चक्खामि जावज्जीवं तिविहेण मणसा-वचसा-काएण, ण करेमि ण कारेमि ण अण्णं करंतं पि वा समणुमणामि तस्स भन्ते अइचारं पडिक्कमामि, णिंदामि, गरहामि अप्पाणं जाव अरहंताणं भयवंताणं, पज्जुवासं करेमि तावकालं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति

थोस्सामि हं जिणवरे, तित्थयरे केवली अणंतजिणे।
णरपवरलोयमहिए विहुयरयमले महप्पण्णे।।१।।

लोयस्सुज्जोययरे, धम्मं तित्थंकरे जिणे वंदे।
अरहंते कित्तिस्से, चउवीसं चेव केवलिणो।।२।।

उसहमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे।।३।।

सुविहिं च पुप्फयंतं, सीयल सेयं च वासुपूज्जं च।
विमलमणंतं भयवं, धम्मं संति च वंदामि।।४।।

कुन्थुं च जिणवरिंदं, अरंच मल्लिं च सुव्वयं च णमिं।
वंदाम्यरिट्ठ-णेमिं, तह पासं वड्ढमाणं च।।५।।

एवंमए अभित्थुआ, विहुय-रय-मला पहीण-जर-मरणा।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।।६।।

कित्तियवंदिय महिया, एदे लोगोत्तमा जिणा सिद्धा।
आरोग्गणाणलाहं, दिंतु समाहिं च मे बोहिं।।७।।

चंदेहिं णिम्मलयरा, आइच्चेहिं अहिय-पयासंता।
सायर-मिव गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।८।।

अथ श्री सिद्धभक्तिः

अथा-र्हत्पूजारम्भ-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा वंदनास्तवसमेतं श्रीसिद्धभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

सिद्धा-नुद्धूत-कर्म-प्रकृति-समुदयान् साधितात्म-स्वभावान्,
वन्दे सिद्धि-प्रसिद्ध्यै तदनुपम-गुण-प्रग्रहाकृष्टि-तुष्टः।
सिद्धिः स्वात्मोपलब्धिः प्रगुण-गुण-गणोच्छादि-दोषापहाराद्,
योग्योपादान-युक्त्या दृषद् इह यथा हेम-भावोपलब्धिः।।१।।

नाभावः सिद्धि-रिष्टा न निज-गुण-हतिस्तत् तपोभिर्न युक्तेः,
अस्त्यात्मानादि-बद्धः स्व-कृतज-फल-भुक्-तत्-क्षयान् मोक्षभागी।
ज्ञाता दृष्टा स्वदेह-प्रमिति-रुपसमाहार-विस्तार-धर्मा,
ध्रौव्योत्पत्ति-व्ययात्मा स्व-गुण-युत-इतो नान्यथा साध्या-सिद्धिः।।२।।

स त्वन्तर्बाह्य-हेतु-प्रभव-विमल-सद्दर्शन-ज्ञान-चर्या-
संपद्धेति-प्रघात-क्षत-दुरित-तया व्यञ्जिताचिन्त्य-सारैः।
कैवल्यज्ञान-दृष्टि-प्रवर-सुख-महावीर्य सम्यक्त्व-लब्धि-
र्ज्योति-र्वातायनादि-स्थिर-परम-गुणै-रद्भुतै-र्भासमानः।।३।।

जानन् पश्यन् समस्तं सम-मनुपरतं संप्रतृप्यन् वितन्वन्,
धुन्वन् ध्वान्तं नितान्तं निचित-मनुपमं प्रीणयन्नीशभावम्।
कुर्वन् सर्व-प्रजाना-मपर-मभिभवन् ज्योति-रात्मानमात्मा,
आत्मन्येवात्मनासौ क्षण-मुपजनयन्-सत्-स्वयंभूः प्रवृत्तः।।4।।

छिन्दन् शेषानशेषान्-निगल-बल-कलीं-स्तैरनन्त-स्वभावैः,
सूक्ष्मत्वाग्र्यावगाहागुरु-लघुक-गुणैः क्षायिकैः शोभमानः।
अन्यै-श्चान्य-व्यपोह-प्रवण-विषय-संप्राप्ति-लब्धि-प्रभावै-
रूर्ध्वं-व्रज्या स्वभावात् समय-मुपगतो धाम्नि संतिष्ठतेऽग्र्ये।।५।।

अन्याकाराप्ति-हेतु-र्न च भवति परो येन तेनाल्प-हीनः,
प्रागात्मोपात्त-देह-प्रति-कृति-रुचिराकार एव ह्यमूर्तः।
क्षुत्-तृष्णा-श्वास-कास-ज्वर-मरण-जरानिष्ट-योग-प्रमोह-
व्यापत्त्याद्युग्र-दुःख-प्रभव-भव-हतेः कोऽस्य सौख्यस्य माता।।६।।

आत्मोपादान-सिद्धं स्वय-मतिशय-वद्-वीत-बाधं विशालम्,
वृद्धि-ह्रास-व्यपेतं विषय-विरहितं निःप्रतिद्वन्द्व-भावम्।
अन्य-द्रव्यानपेक्षं निरुपममममितं शाश्वतं सर्व-कालम्
उत्कृष्टानन्त-सारं परम-सुखमतस्तस्य सिद्धस्य जातम्।।७।।

नार्थः क्षुत्तृड्-विनाशाद् विविध-रस-युतै-रन्न-पानै-रशुच्या,
नास्पृष्टे-र्गन्ध-माल्यै-र्नहि मृदु-शयनै-र्ग्लानि-निद्राद्यभावात्।
आंतकार्ते-रभावे तदुपशमन-सद्भेषजानर्थतावद्
दीपा-नर्थक्य-वद् वा व्यपगत-तिमिरे दृश्यमाने समस्ते।।८।।

तादृक्-सम्पत्-समेता विविध-नय-तपः संयम-ज्ञान-दृष्टि-
चर्या-सिद्धाः समन्तात् प्रवितत्-यशसो विश्व-देवाधि-देवाः।
भूता भव्या भवन्तः सकल-जगति ये स्तूयमाना विशिष्टै,
स्तान्-सर्वान्-नौम्यनन्तान्-निजिग-मिषु-ररं तत्स्वरूपं-त्रिसन्ध्यम्।।९।।

कृत्वा कायोत्सर्गं, चतुरष्ट दोष विरहितं सु परिशुद्धं।
अतिभक्ति संप्रयुक्तो, योवन्दते सो लघु लभते परम सुखम्।।

इच्छामि भन्ते! सिद्धभत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण-सम्मदंसण सम्मचरित्तजुत्ताणं, अट्ठ-विह-कम्म-विप्प-मुक्काणं, अट्ठ-गुण-सम्पण्णाणं, उड्ढलोय-मत्थयम्मि पइट्ठियाणं, तव-सिद्धाणं णय-सिद्धाणं,

संजम-सिद्धाणं, चरित्त-सिद्धाणं अतीताणागद-वट्टमाण-कालत्तय-सिद्धाणं, सव्व-सिद्धाणं, सया णिच्चकालं, अंचेमि, पूजेमि, वन्दामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ-गमणं, समाहि-मरणं, जिण-गुण-सम्पत्ति होदु मज्झं।

अथ श्री चैत्य भक्तिः

अथा-र्हत्पूजारम्भ-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा वंदनास्तव-समेतं श्री-चैत्यभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(बसन्ततिलका छन्द)

श्रीगौतमादिपदमद् भुतपुण्यबन्ध-
मुद्योतिताखिल ममौघमघप्रणाशम्।
वक्ष्ये जिनेश्वरमहं प्रणिपत्य तथ्यं,
निर्वाणकारणमशेषजगद्धितार्थम्।।

जयति भगवान् हेमाम्भोज-प्रचार-विजृम्भिता-
वमर-मुकुटच्छायोद्गीर्ण-प्रभा-परिचुम्बितौ।
कलुष-हृदया मनोद्भ्राताः परस्पर-वैरिणः,
विगत-कलुषाः पादौ यस्य प्रपद्य विशश्वसुः।।१।।

तदनु जयति श्रेयान्-धर्मः प्रवद्ध-महोदयः,
कुगति-विपथ-क्लेशा-द्योसौ विपाशयति प्रजाः।
परिणत-नयस्यांगी-भावाद्विविक्त-विकल्पितम्,
भवतु भवतस्त्रातृ त्रेधा जिनेन्द्र-वचोऽमृतम्।।२।।

तदनुजयताज्जैनी वित्तिः प्रभंग-तरंगिणी,
प्रभव-विगम ध्रौव्य-द्रव्य-स्वभाव-विभाविनी।
निरुपम-सुखस्येदं द्वारं विघट्य निरर्गलम्,
विगत-रजसं मोक्षं देयान् निरत्यय-मव्ययम्।।३।।

अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायेभ्यस्तथा च साधुभ्यः।
सर्व-जगद्वन्द्येभ्यो नमोऽस्तु सर्वत्र सर्वेभ्यः।।४।।

मोहादि-सर्व-दोषारि-घातकेभ्यः सदा हत-रजोभ्यः,
विरहित-रहस्-कृतेभ्यः पूजार्हेभ्यो नमोऽर्हद्भ्यः।।५।।

क्षांत्यार्जवादि-गुण-गण-सुसाधनं सकल-लोक-हित-हेतुम्।
शुभ-धामिनि धातारं वन्दे धर्मं जिनेन्द्रोक्तम्।।६।।

मिथ्याज्ञान-तमोवृत-लोकैक-ज्योति-रमित-गमयोगि।
सांगोपांग-मजेयं जैनं वचनं सदा वन्दे।।७।।

भवन-विमान-ज्योति-र्व्यन्तर-नरलोक विश्व-चैत्यानि।
त्रिजग-दभिवन्दितानां त्रेधा वन्दे जिनेन्द्राणाम्।।८।।

भुवनत्रयेऽपि भुवनत्र्याधिपाभ्यर्च्य-तीर्थ-कर्तृणाम्।
वन्दे भवाग्नि-शान्त्यै विभवाना-मालयालीस्ताः।।९।।

इति पंच-महापुरुषाः प्रणुता जिनधर्म-वचन-चैत्यानि।
चैत्यालयाश्च विमलां दिशन्तु बोधिं बुध-जनेष्टाम्।।१०।।

अकृतानि कृतानि-चाप्रमेय-द्युतिमन्ति द्युतिमत्सु मन्दिरेषु।
मनुजामर-पूजितानि वन्दे प्रतिबिम्बानि जगत्त्रये जिनानाम्।।११।।

द्युति-मंडल-भासुरांग-यष्टीः प्रतिमा अप्रतिमा जिनोत्तमानाम्।
भुवनेषु विभूतये प्रवृत्ता वपुषा प्राञ्जलिरस्मि वन्दमानः।।१२।।

विगतायुध-विक्रिया-विभूषाः प्रकृतिस्थाः कृतिनां जिनेश्वराणाम्।
प्रतिमाः प्रतिमा-गृहेषु कान्त्याऽ-प्रतिमाः कल्मष-शान्तयेऽभिवन्दे।।१३।।

कथयन्ति कषाय-मुक्ति-लक्ष्मीं परया शान्ततया भवान्तकानाम्।
प्रणमाम्यभिरूप-मूर्तिमन्ति प्रतिरूपाणि विशुद्धये जिनानाम्।।१४।।

यदिदं मम सिद्धभक्ति-नीतं सुकृतं दुष्कृत-वर्त्म-रोधि तेन।
पटुना जिनधर्म एव भक्ति-र्भवताज्जन्मनि जन्मनि स्थिरा मे।।१५।।

अर्हतां सर्वभावनां दर्शन-ज्ञान-सम्पदाम्।
कीर्तयिष्यामि चैत्यानि यथाबुद्धि विशुद्धये।।१६।।

श्रीमद्-भवन-वासस्था स्वयं भासुर-मूर्तयः।
वन्दिता नो विधेयासुः प्रतिमाः परमां गतिम्।।१७।।

यावन्ति सन्ति लोकेऽस्मिन्नकृतानि कृतानि च।
तानि सर्वाणि चैत्यानि वन्दे भूयांसि भूतये।।१८।।

ये व्यन्तर-विमानेषु स्थेयांसः प्रतिमागृहाः।
ते च संख्या-मतिक्रान्ताः सन्तु नो दोष-विच्छिदे।।१९।।

ज्योतिषा-मथ लोकस्य भूतयेऽद्भुत-सम्पदः।
गृहाः स्वयम्भुवः सन्ति विमानेषु नमामि तान्।।२०।।

वन्दे सुर-किरीटाग्र-मणिच्छायाभिषेचनम्।
याः क्रमेणैव सेवन्ते तदर्च्याः सिद्धि-लब्धये।।२१।।

इति स्तुति पथातीत-श्रीभृता-मर्हतां मम।
चैत्यानामस्तु संकीर्तिः सर्वास्रव-निरोधिनी।।२२।।

अर्हन्-महा-नदस्य-त्रिभुवन-भव्यजन-तीर्थ-यात्रिक-दुरित-
प्रक्षालनैक-कारणमति-लौकिक-कुहक-तीर्थ-मुत्तम-तीर्थम्।।२३।।

लोकालोक-सुतत्त्व-प्रत्यव-बोधन-समर्थ-दिव्यज्ञान-
प्रत्यह-वहत्प्रवाहं व्रत-शीलामल-विशाल-कूल-द्वितयम्।।२४।।

शुक्लध्यान-स्तिमित स्थित-राज-द्राजहंस-राजित मसकृत्।
स्वाध्याय-मन्द्रघोषं नाना-गुण-समिति-गुप्ति-सिकता-सुभगम्।।२५।।

क्षान्त्यावर्त-सहस्रं सर्व-दया-विकच-कुसुम-विलसल्लतिकम्।
दुःसह-परीषहाख्य-द्रुततर-रंग-त्तरंग-भंगुर-निकरम्।।२६।।

व्यपगत-कषाय-फेनं राग-द्वेषादि-दोष-शैवल-रहितम्।
अत्यस्त-मोह-कर्दम-मतिदूर-निरस्त-मरण-मकर-प्रकरम्।।२७।।

ऋषि-वृषभ-स्तुति-मन्द्रोद्रेकित-निर्घोष-विविध-विहग-ध्वानम् ।
विविध-त्तपोनिधि-पुलिनं सास्रव-संवरण-निर्जरा-निःस्रवणम् । ।२८ । ।

गणधर-चक्र-धरेन्द्र-प्रभृति-महा-भव्य-पुण्डरीकैः पुरुषैः ।
बहुभिः स्नातं भक्त्या कलि-कलुष-मलापकर्षणार्थ-ममेयम् । ।२९ । ।

अवतीर्णवतः स्नातुं ममापि दुस्तर-समस्त-दुरितं दूरम् ।
व्यपहरतु परम-पावन-मनन्य जय्य-स्वभाव-भाव-गम्भीरम् । ।३० । ।

अताम्र-नयनोत्पलं सकल-कोप-वह्ने-र्जयात्,
कटाक्ष-शर-मोक्ष-हीन—मविकारतोद्रेकतः ।
विषाद-मद-हानितः प्रहसितायमानं सदा,
मुखं कथयतीव ते हृदय-शुद्धि-मात्यन्तिकीम् । ।३१ । ।

निराभरण-भासुरं विगत-राग-वेगोदयात्,
निरम्बर-मनोहरं प्रकृति-रूप-निर्दोषतः ।
निरायुध-सुनिर्भयं विगत-हिंस्य-हिंसा-क्रमात्,
निरामिष-सुतृप्ति-मद्-विविध-वेदनानां क्षयात् । ।३२ । ।

मितस्थिति-नखांगजं गत-रजोमल-स्पर्शनम्
नवाम्बुरुह-चन्दन-प्रतिम-दिव्य-गन्धोदयम् ।
रवीन्दु-कुलिशादि-दिव्य-बहु लक्षणालंकृतम् ।
दिवाकर-सहस्र-भासुर-मपीक्षणानां प्रियम् । ।३३ । ।

हितार्थ-परिपन्थिभिः प्रबल-राग-मोहादिभिः
कलंकितमना जनो यदभिवीक्ष्यशो शुद्ध्यते ।
सदाभिमुख-मेव यज्जगति पश्यतां सर्वतः,
शरद्-विमल-चन्द्र-मण्डल-मिवोत्थितं दृश्यते । ।३४ । ।

तदेत-दमरेश्वर-प्रचल-मौलि-माला-मणि,
स्फुरत्-किरण-चुम्बनीय-चरणारविन्द-द्वयम् ।
पुनातु भगवज्जिनेन्द्र तव रूप-मन्धीकृतम्,
जगत्-सकल-मन्यतीर्थ-गुरु-रूप-दोषोदयैः । ।35 । ।

मानस्तम्भाः सरांसि प्रविमलजल, सत्खातिका पुष्पवाटी।
प्राकारो नाट्यशाला द्वितयमुपवनं, वेदिकांत र्ध्वजाद्याः।।
शालः कल्पद्रुमाणां सुपरिवृत्तवनं, स्तूपहर्म्यावली च।
प्राकारः स्फाटिकोन्त-र्नृ-सुर-मुनिसभा, पीठिकाग्रे स्वयंभूः।।१।।

वर्षेषु वर्षान्तर पर्वतेषु, नन्दीश्वरे यानि च मंदरेषु।
यावन्ति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि, वन्दे जिनपुंगवानाम्।।२।।

अवनितलगतानां कृत्रिमाऽकृत्रिमाणाम्।
वनभवनगतानां दिव्य वैमानिकानाम्।
इह मनुज-कृतानां देव राजार्चितानाम्,
जिनवर-निलयानां भावतोऽहं स्मरामि।।३।।

जम्बू-धातकि-पुष्करार्ध-वसुधा-क्षेत्र-त्रये ये भवा।
श्चंद्राम्भोज शिखण्डि कण्ठ-कनक-प्रावृंघनाभाजिनाः।।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-लक्षणधरा दग्धाष्ट-कर्मेन्धनाः।
भूतानागत-वर्तमान-समये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः।।४।।

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जम्बुवृक्षे।
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकर-रुचके कुण्डले मानुषांके।।
इष्वाकारेऽञ्जनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यंतरे स्वर्गलोके।
ज्योतिर्लोकेऽभिवंदे भुवनमहितले, यानि चैत्यालयानि।।५।।

देवा सुरेन्द्र नरनागसमर्चितेभ्यः,
पापप्रणाशकर भव्य मनोहरेभ्यः।
घंटाध्वजादि परिवार विभूषितेभ्यो,
नित्यं नमो जगति सर्व जिनालयेभ्यः।।६।।

कायोत्सर्ग

इच्छामि भंते! चेइय-भत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं। अहलोय-तिरियलोय-उड्ढलोयम्मि, किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि

सव्वाणि तीसु वि लोएसु भवणवासिय-वाणविंतर-जोइसिय-कप्पवासियत्ति चउविहा देवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण, णिच्चकालं अंचंति, पुज्जंति, वंदंति, णमंसंति अहमवि इह संतो तत्थ संताइं सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहि-मरणं, जिण-गुण-सम्पत्ति होउ-मज्झं।

अथ श्री श्रुतभक्तिः

अथा-र्हत्पूजारम्भ-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा वंदनास्तवसमेतं श्री श्रुतभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

स्तोष्ये संज्ञानानि परोक्ष-प्रत्यक्ष-भेद-भिन्नानि।
लोकालोक-विलोकन-लोलित-सल्लोकलोचनानि सदा।।१।।

मतिज्ञान की स्तुति

अभिमुख-नियमित-बोधन-माभिनिबोधिक-मनिन्द्रियेन्द्रियजम्।
बह्वाद्यवग्रहादिक-कृत-षट्त्रिंशत्-त्रिशत-भेदम्।।२।।

विविधर्द्धि-बुद्धि-कोष्ठ-स्फुट-बीज-पदानुसारि-बुद्ध्यधिकम्।
संभिन्न-श्रोतृ-तया सार्धं श्रुतभाजनं वन्दे।।३।।

श्रुतज्ञान की स्तुति

श्रुतमपि-जिनवर-विहितं गणधर-रचितं द्व्यनेक-भेदस्थम्
अंगांगबाह्य-भावित-मनन्त-विषयं नमस्यामि।।४।।

भावश्रुतज्ञान

पर्यायाक्षर-पद-संघात-प्रतिपत्तिकानुयोग-विधीन।
प्राभृतक-प्राभृतकं प्राभृतकं वस्तु-पूर्वं च।।५।।

तेषां समासतोऽपि च विंशति-भेदान् समश्नुवानं तत्।
वन्दे द्वादशधोक्तं गम्भीर-वर-शास्त्र-पद्धत्या।।६।।

श्रुतज्ञान के बारह भेद

आचारं सूत्रकृतं स्थानं समवाय-नामधेयं च।
व्याख्या-प्रज्ञप्तिं च ज्ञातृकथोपासकाध्ययने।।७।।

वन्देऽन्तकृद्दश-मनुत्तरोपपादिकदशं दशावस्थम्।
प्रश्नव्याकरणं हि विपाकसूत्रं च विनमामि।।८।।

दृष्टिवाद (बारहवें) अंग की स्तुति

परिकर्म च सूत्रं च स्तौमि प्रथमानुयोग-पूर्वगते।
सार्द्धं चूलिकयापि च पंचविधं दृष्टिवादं च।।९।।

पूर्वगतं तु चतुर्दशधोदित-मुत्पादपूर्व-माद्यमहम्।
आग्रायणीय-मीडे पुरु-वीर्यानुप्रवादं च।।१०।।

संततमहमभिवन्दे तथास्ति-नास्ति प्रवादपूर्वं च।
ज्ञानप्रवाद-सत्यप्रवाद-मात्मप्रवादं च।।११।।

कर्मप्रवाद-मीडेऽथ प्रत्याख्यान-नामधेयं च।
दशमं विद्याधारं पृथुविद्यानुप्रवादं च।।१२।।

कल्याण-नामधेयं प्राणावायं क्रियाविशालं च।
अथ लोकबिंदुसारं वन्दे लोकाग्रसारपदम्।।१३।।

दश च चतुर्दश चाष्टावष्टादश च द्वयो-र्द्विषट्कं च।
षोडशं च विंशतिं च त्रिंशतमपि पञ्चदश च तथा।।१४।।

वस्तूनि दश दशान्येष्वनुपूर्वं भाषितानि पूर्वाणाम्।
प्रतिवस्तु प्राभृतकानि विंशतिं विंशतिं नौमि।।१५।।

आग्रायणीय पूर्व के १४ अधिकारों के नाम

पूर्वान्तं ह्यपरान्तंध्रुव-मध्रुव-च्यवनलब्धि-नामानि।
अध्रुव-सम्प्रणिधिं चाप्यर्थं भौमावयाद्यं च।।१६।।

सर्वार्थ-कल्पनीयं ज्ञानमतीतं त्वनागतं कालम्।
सिद्धि-मुपाध्यं च तथा चतुर्दश-वस्तूनि द्वितीयस्य।।१७।।

कर्म प्रकृति के २४ अनुयोगो के नाम

पञ्चमवस्तु-चतुर्थं-प्राभृतकस्यानुयोग-नामानि।
कृतिवेदने तथैव स्पर्शन-कर्मप्रकृतिमेव।।१८।।

बन्धन-निबन्धन-प्रक्रमानुपक्रम-मथाभ्युदय-मोक्षौ।
सङ्क्रमलेश्ये च तथा लेश्यायाः कर्म-परिणामौ।।१६।।

सात-मसातं दीर्घं ह्रस्वं भवधारणीय-संज्ञं च।
पुरुपुद्गलात्मनाम च निधत्त-मनिधत्त-मभिनौमि।।२०।।

सनिकाचित-मनिकाचित-मथ-कर्मस्थितिकपश्चिमस्कंधौ।
अल्पबहुत्वं च यजे तद्द्वाराणां चतुर्विंशम्।।२१।।

द्वादशांग श्रुतज्ञान की पद संख्या

कोटीनां द्वादशशत-मष्टापञ्चाशतं सहस्राणाम्।
लक्षत्र्यशीति-मेव च पंच च वन्दे श्रुतपदानि।।२२।।

एक एक पद के अक्षरों की संख्या

षोडशशतं चतुस्त्रिंशत् कोटीनां त्र्यशीति-लक्षाणि।
शतसंख्याष्टा सप्तति-मष्टाशीतिं च पद-वर्णान्।।२३।।

अंगबाह्य के भेदों की स्तुति

सामायिकं चतुर्विंशति-स्तवं वन्दना प्रतिक्रमणम्।
वैनयिकं कृतिकर्म च पृथु-दशवैकालिकं च तथा।।२४।।

वर-मुत्तराध्ययन मपि कल्पव्यवहार-मेव-मभिवन्दे।
कल्पाकल्पं स्तौमि महाकल्पं पुण्डरीकं च।।२५।।

परिपाट्या प्रणिपतितोऽस्म्यहं महापुण्डरीकनामैव।
निपुणान्यशीतिकं च प्रकीर्णकान्यंग-बाह्यानि।।२६।।

अवधिज्ञान की स्तुति

पुद्गल-मर्यादोक्तं प्रत्यक्षं सप्रभेद-मवधिं च।
देशावधि-परमावधि-सर्वावधि-भेद-मभिवन्दे।।२७।।

मनःपर्ययज्ञान की स्तुति

परमनसि स्थितमर्थं मनसा परिविद्य मन्त्रि-महित-गुणम्।
ऋजु-विपुलमति-विकल्पं स्तौमि मनः पर्ययज्ञानम्।।२८।।

केवलज्ञान की स्तुति

क्षायिक-मनन्त-मेकं त्रिकाल-सर्वार्थ-युगपदवभासम्।
सकल-सुख-धाम सततं वन्देऽहं केवलज्ञानम्।।२९।।

स्तुति के फल की प्रार्थना

एवमभिष्टुवतो मे ज्ञानानि समस्त-लोक-चक्षूंषि।
लघुभवताज्ज्ञानार्द्धि-र्ज्ञानफलं सौख्य-मच्यवनम्।।३०।।

इच्छामि भन्ते! सुदभत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सलोचेउं, अंगोवंग-पइण्णए पाहुडय-परियम्म-सुत्त-पढमाणिओग-पुव्वगय-चुलिया चेव सुत्तत्थय-थुइ-धम्मकहाइयं, सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई-गमणं, समाहि-मरणं, जिण-गुण-संपत्ति, होदु मज्झं।

अथ श्री चारित्र भक्तिः

अथा-र्हत्पूजारम्भ-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा वंदनास्तवसमेतं श्री चारित्रभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

येनेन्द्रान् भुवन-त्रयस्य विलसत्-केयूर-हारांगदान्।
भास्वन्-मौलि-मणिप्रभा-प्रविसरोत्-तुंगात्तमांगान्नतान्।।
स्वेषां पाद-पयोरुहेषु मुनय-श्चक्रुः प्रकामं सदा।
वन्दे पञ्चतयं तमद्य निगदन्-नाचार-मभ्यर्चितम्।।१।।

ज्ञानाचार का स्वरूप

अर्थ-व्यञ्जन-तद्द्वया-विकलता-कालोपधा-प्रश्रयाः।
स्वचार्याद्यनपह्नवो बहु-मति-श्चेत्यष्टधा व्याहृतम्।।

श्री-मज्ज्ञाति-कुलेन्दुना भगवता तीर्थस्य कर्त्राऽञ्जसा।
ज्ञानाचार-महं त्रिधा प्रणिपताभ्युद्धूतये कर्मणाम्।।२।।

दर्शनाचार का स्वरूप

शंका-दृष्टि-विमोह-काङ्क्षणविधि-व्यावृत्ति-सन्नद्धताम्।
वात्सल्यं विचिकित्सना-दुपरतिं धर्मोपबृहं-क्रियाम्।।
शक्त्या शासन-दीपनं हित-पथाद् भ्रष्टस्य संस्थापनम्।
वन्दे दर्शन-गोचरं सुचरित मूर्ध्ना नमन्नादरात्।।३।।

तप आचार(बाह्य तप) का स्वरूप

एकान्ते शयनोपवेशन-कृतिः संतापनं तानवम्।
संख्या-वृत्ति-निबन्धना-मनशनं विष्वाण-मर्द्धोदरम्।।
त्यागं चेन्द्रिय-दन्तिनो मदयतः स्वादो रसस्यानिशम्।
षोढ़ा बाह्य-महं स्तुवे शिव गति-प्राप्त्यभ्युपायं तपः।।४।।

अंतरंग तपों का वर्णन

स्वाध्यायः शुभकर्मणश्च्युतवतः संप्रत्यवस्थापनम्।
ध्यानं व्यापृतिरामयाविनि गुरौ, वृद्धे च बाले यतौ।।
कायोत्सर्जन सत्-क्रिया विनय-इत्येवं तपः षड्विधं।
वंदेऽभ्यन्तरमन्तरंग बलवद्विद्वेषि विध्वंसनम्।।५।।

वीर्याचार का वर्णन

सम्यग्ज्ञान विलोचनस्य दधतः, श्रद्धानमर्हन्मते।
वीर्यस्याविनिगूहनेन तपसि, स्वस्य प्रयत्नाद्यतेः।।
या वृत्तिस्तरणीव नौरविवरा, लध्वी भवोदन्वतो।
वीर्याचारमहं तमूर्जितगुणं, वन्दे सतामर्चितम्।।६।।

चारित्राचार का वर्णन

तिस्रः सत्तमगुप्तयस्तनुमानो, भाषानिमित्तोदयाः।
पञ्चेर्यादि-समाश्रयाः समितयः पञ्चव्रतानीत्यपि।।
चारित्रोपहितं त्रयोदशतयं, पूर्वं न दृष्टं परै-
राचारं परिमेष्ठिनो जिनपते, वीरं नमामो वयम्।।७।।

पञ्चाचार पालने वालों की वन्दना

आचारं सह-पञ्चभेदमुदितं:, तीर्थंपरंमंगलम्।
निर्ग्रन्थानपि सच्चरित्रमहतो, वंदे समग्रान्यतीन्।।
आत्माधीन सुखोदया मनुपमां, लक्ष्मीमविध्वंसिनीम्।
इच्छन्केवलदर्शनावगमन, प्राज्य प्रकाशोज्वलाम्।।८।।

चारित्र पालन में दोषों की आलोचना

अज्ञानाद्यदवीवृतं नियमिनोऽवर्तिष्यहं चान्यथा।
तस्मिन्नर्जितमस्यति प्रतिनवं, चैनो निराकुर्वति।।
वृत्ते सप्ततयीं निधिं सुतपसामृद्धिं नयत्यद्भुतं।
तन्मिथ्या गुरुदुष्कृतंभवतु मे, स्वंनिंदितो निंदितम्।।९।।

चारित्र धारण करने का उपदेश

संसार-व्यसनाहतिप्रचलिता, नित्योदय प्रार्थिनाः।
प्रतयासन्न विमुक्तयः सुमतयः, शान्तैनसः प्राणिनः।।
मोक्षस्यैव कृतं विशालमतुलं, सोपानमुच्चैस्तराम्।
आरोहन्तु-चरित्र-मुत्तम-मिदं, जैनेन्द्र-मोजस्विनः।।१०।।

इच्छामि भंते! चारित्त भत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाणजोयस्स सम्मत्ताहि-ट्ठियस्स, सव्वपहाणस्स, णिव्वाणमग्गस्स, कम्मणिज्जरफलस्स, खमाहारस्स, पञ्चसमिदिजुत्तस्स, णाणज्झाण साहणस्स, समया इव पवेसयस्स, सम्मचारित्तस्स, सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहि-मरणं, जिण- गुण-सम्पत्ति होउ-मज्झं।

अथ श्री योग भक्तिः

अथा-र्हत्पूजारम्भ-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा वंदनास्तवसमेतं श्री योगभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(दुबई छन्द)

कैसे साधु वन का आश्रय लेते हैं?

जातिजरोरुरोग-मरणातुर, शोक-सहस्रदीपिताः।
दुःसहनरकपतन-सन्त्रस्तधियः प्रतिबुद्धचेतसः।।
जीवितमंबु-विंदुचपलं, तडिदभ्रसमा विभूतयः।
सकलमिदं-विचिन्त्यमुनयः, प्रशमाय-वनान्तमाश्रिताः।।१।।

(भद्रिका छन्द)

वन में जाकर साधु क्या करता है?

व्रतसमिति गुप्ति संयुताः, शमसुखमाधाय मनसि वीतमोहाः।
ध्यानाध्ययनवशंगताः, विशुद्धये कर्मणां तपश्चरन्ति।।२।।

(दुबई छन्द)

ग्रीष्म ऋतु में मुनिराज क्या करते हैं?

दिनकर किरणनिकरसंतप्त, शिलानिचयेषु निष्पृहाः।
मलपटला-वलिप्त-त्तनवः, शिथिली-कृतकर्म-बंधनाः।।
व्यपगतमदनदर्प-रतिदोष, कषाय-विरक्त-मत्सराः।
गिरिशिखरेषु-चंडकिरणाभि, मुखस्थितयो दिगम्बराः।।३।।

भद्रिका छन्द

मुनिराज भयंकर आतप की वेदना कैसे सहते हैं?

सज्ज्ञानामृतपायिभिः, क्षान्तिपयः सिञ्च्यमानपुण्यकायैः।
धृतसंतोषच्छत्रकैः, तापस्तीव्रोऽपि सह्यते मनीन्द्रैः।।४।।

वर्षा ऋतु में मुनिराज क्या करते हैं?

शिखिगल कज्जलालिमलिनै, र्विबुधाधिपचाप चित्रितैः।
भीमरवैर्विसृष्टचण्डा-शनि, शीतल-वायु-वृष्टिभिः।।
गगनतलं विलोक्य जलदैः, स्थगितं सहसा तपोधनाः।
पुनरपि तरुतलेषु विषमासु, निशासु विशंकमासते।।५।।

जलधाराशरताडिता, न चलन्ति चरित्रतः सदा नृसिंहा।
संसार दुःख भीरवः, परीषहा राति-घातिनः प्रवीरा।।६।।

दुबई छन्द

शीतकाल में वे मुनिराज क्या करते हैं?

अविरतबहल-तुहिनकण, वारिभिरंघ्रिपपत्र-पातनै।
रनवरतमुक्तसात्काररवैः, पुरुषैरथानिलैःशोषितगात्रयष्टयः
इह श्रमणा धृतिकंबलावृताः शिशिरनिशां।
तुषार विषमां गमयन्ति, चतुःपथे स्थिताः।।७।।

स्तुति फल की याचना

इति योगत्रयधारिणः, सकलतपशालिनःप्रवृद्धपुण्यकायाः।
परमानन्दसुखैषिणः, समाधिमग्र्यं दिशंतुनो भदन्ताः।।८।।

क्षेपकश्लोकानिः

योगीश्वरान् जिनान्सर्वान्योगनिर्धूत कल्मषान्।
योगैस्त्रिभिरहं वंदे, योगस्कंध प्रतिष्ठितान्।।१।।

प्रावृट्कालेसविद्युत्प्रपतितसलिले वृक्षमूलाधिवासाः।
हेमंते रात्रिमध्ये, प्रतिविगतभयाकाष्टवत्त्यक्तदेहाः।।२।।

ग्रीष्मे सूर्यांसुतप्ता, गिरिशिखरगताः स्थानकूटान्तरस्थाः।
ते मे धर्म प्रदद्युर्मुनिगणवृषभा मोक्षनिःश्रेणिभूताः।।३।।

गिम्हे गिरिसिहरत्था, वरिसायालेरुक्खमूलरयणीसु।
सिसिरे वाहिरसयणा, ते साहू वंदिमो णिच्चं।।४।।

गिरिकंदरदुर्गेषु, ये वसंति दिगंबराः।
पाणिपात्र पुटाहारास्ते यांति परमां गतिम्।।५।।

कायोत्सर्गः

इच्छामि भंते! योगि-भत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं अड्ढाइज्जदीवदोसमुद्देसु, पण्णारस-कम्म-भूमिसु, आदावणरुक्खमूल-अब्भोवासठाणमोण-विरास-णेक्कपास कुक्कुडासन चउछपक्खखवणादि

जोगजुत्ताणं, सव्वसाहूणं सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहि-मरणं, जिण- गुण-सम्पत्ति होउ-मज्झं।

अथ आचार्य भक्तिः

अथा-र्हत्पूजारम्भ-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा वंदनास्तवसमेतं श्री चारित्रभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(स्कन्धच्छन्दः)

सिद्ध-गुण-स्तुति निरता, नुद्भूतरुषाग्नि-जालबहुलविशेषान्।
गुप्तिभिरभिसंपूर्णान् मुक्तियुतः सत्यवचनलक्षितभावान्।।१।।

मुनिमाहात्म्य विशेषान्, जिनशासन-सत्प्रदीप-भासुर-मूर्तीन्।
सिद्धिं प्रपित्सुमनसो, बद्धरजो-विपुलमूल-घातन-कुशलान्।।२।।

गुणमणिविरचितवपुषः, षड्द्रव्य-विनिश्चितस्य-धातृन्सततम्।
रहितप्रमादचर्यान्, दर्शनशुद्धान् गणस्य संतुष्टि करान्।।३।।

मोहच्छिदुग्रतपसः, प्रशस्त-परिशुद्ध-हृदय-शोभन व्यवहारान्।
प्रासुकनिलया ननघानाशा विध्वंसिचेतसो हतकुपथान्।।४।।

धारितविलसन्मुण्डान्वर्जितबहु दण्डपिण्डमण्डल निकरान्।
सकलपरीषहजयिनः, क्रियाभिरनिशंप्रमादतः परिरहितान्।।५।।

अचलान्व्यपेतनिद्रान्, स्थानयुतान्कष्टदुष्टलेश्या हीनान्।
विधिनानाश्रितवासा, नलिप्तदेहान्विनिर्जितेन्द्रियकरिणः।।६।।

अतुलानुत्कुटिकासान्विविक्त-चित्तानखंडितस्वाध्यायान्।
दक्षिणभावसमग्रान्, व्यपगतमदरागलोभशठमात्सर्यान्।।७।।

भिन्नार्तरौद्रपक्षान्संभावित, धर्मशुक्लनिर्मल हृदयान्।
नित्यंपिनद्धकुगतीन्, पुण्यान्गण्योदयान्विलीनगारवचर्यान्।।८।।

(स्कन्धच्छन्दः)

तरुमूलयोगयुक्ता, नवकाशा-तापयोगराग-सनाथान्।
बहुजन-हितकर-चर्या -नभयाननघान्महानुभाव-विधानान्।।9।।

ईदृशगुणसंपन्नान्, न्युष्मान्भक्त्या-विशालया-स्थिरयोगान्।
विधिनानारत-मग्र्यान्, मुकुलीकृतहस्तकमल-शोभित-शिरसा।।10।।

अभिनौमि-सकलकलुष, प्रभवोदय-जन्म-जरामरण-बंधन-मुक्तान्।
शिवमचल-मनघमक्षय, मव्याहत-मुक्ति-सौख्यमस्त्विति-सततम्।।11।।

क्षेपकश्लोकानिः

श्रुतजलधिपारगेभ्यः, स्वपरमतविभावनापटुमतिभ्यः।
सुचरित तपोनिधिभ्यो, नमो गुरुभ्यो गुणगुरुभ्यः।।

छत्तीसगुणसमग्गे, पंचविहाचारकरण संदरिसे।
सिस्साणुग्गहकुसले, धम्माइरिये सदा वंदे।।

गुरुभत्ति संजमेण य, तरंति संसारसायरं घोरं।
छिण्णंति अट्ठकम्मं, जम्मणमरणं ण पावेंति।।

ये नित्यं व्रतमंत्रहोमनिरता, ध्यानाग्नि होत्राकुलाः।
षट्कर्माभिरतास्तपोधन धनाः, साधुक्रियाः साधवः।।

शीलप्रावरणा गुणप्रहरणाश्चंद्रार्क तेजोऽधिकाः।
मोक्षद्वार कपाट पाटनभटाः प्रीणंतुमां साधवः।।

गुरवः पान्तु नो नित्यं ज्ञान-दर्शन नायकाः।
चारित्रार्णव गंभीरा, मोक्ष-मार्गो-पदेशकाः।।

प्राज्ञः प्राप्तसमस्त शास्त्र हृदय, प्रव्यक्तलोकस्थितिः।
प्रस्ताशः प्रतिभापर प्रशमवान् प्रागेव दृष्टतोत्तरः।।

प्रायः प्रश्नसहः प्रभुः परमनो, हारी परानिन्दया।
ब्रूयाद्धर्मकथां गणी गुणनिधिः, प्रस्पष्ट मिष्टाक्षरः।।

श्रुतमविकलं शुद्धा वृत्तिः परप्रतिबोधने।
परिणतिरुरुद्योगो मार्ग प्रवर्तन सद्विधौ।।

बुधनुतिरनुत्सेको, लोकज्ञता मृदुताऽस्पृहा।
यतिपतिगुणा यस्मिन्नन्ये च सोऽस्तु गुरुः सताम्।।

विशुद्धवंशः परमाभिरूपो, जितेन्द्रियो धर्मकथाप्रसक्तः।
सुखर्द्धिलाभेष्वविसक्तचित्तो, बुधैः सदाचार्य इति प्रशस्तः।।

विजितमदनकेतुं निर्मलं निर्विकारं,
रहितसकलसंगं संयमासक्त चित्तम्।
सुनयनिपुणभावं ज्ञाततत्त्वप्रपञ्चं,
जननमरणभीतं सद्गुरुं नौमि नित्यम्।।

सम्यग्दर्शन मूलं, ज्ञानस्कंधं चरित्रशाखाढ्यम्।
मुनिगणविहगाकीर्ण, माचार्य महाद्रुमम् वन्दे।।

कायोत्सर्गः

इच्छामि भंते! आइरियभत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण, सम्मदंसण सम्मचारित्तजुत्ताणं पञ्चविहाचारणं आइरियाणं, आयारादि सुदणाणोव-देसयाणं, उवज्झायाणं, तिरयणगुणपालणरयाणं, सव्व-साहूणं, सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहि-मरणं, जिण- गुण-सम्पत्ति होउ-मज्झं।

अथ श्री पञ्च महागुरू भक्तिः

अथा-र्हत्पूजारम्भ-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा वंदनास्तवसमेतं श्री पञ्चगुरुभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

श्रीमदमरेन्द्र-मुकुट-प्रघटित-मणि-किरण-वारि-धाराभिः।
प्रक्षालित-पद-युगलान् प्रणमामि जिनेश्वरान् भक्त्या।।१।।

अष्टगुणैः समुपेतान् प्रणष्ट-दुष्टाष्ट-कर्मरिपु-समितीन्।
सिद्धान् सतत-मनन्तान्-नमस्करो मीष्ट तुष्टि संसिद्ध्यै।।२।।

साचार-श्रुत-जलधीन्-प्रतीर्य शुद्धोरुचरण-निरतानाम्।
आचार्याणां पदयुग-कमलानि दधे शिरसि मेऽहम्।।३।।

मिथ्या-वादि-मदोग्र-ध्वान्त-प्रध्वन्सि-वचन-संदर्भान्।
उपदेशकान् प्रपद्ये मम दुरितारि-प्रणाशाय।।४।।

सम्यग्दर्शन-दीप-प्रकाशका-मेय-बोध-सम्भूताः।
भूरि-चरित्र-पताकास्ते साधु-गणास्तु मां पान्तु।।५।।

जिन-सिद्ध-सूरि-देशक-साधु-वरानमल गुण गणोपेतान्।
पञ्चनमस्कार-पदै-स्त्रि-सन्ध्य-मभिनौमि मोक्ष-लाभाय।।६।।

एषः पञ्चनमस्कारः, सर्वपापप्रणाशसनः।
मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं मंगलं भवेत्।।७।।

अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायाः सर्वसाधवः।
कुर्वन्तु मंगलाः सर्वे, निर्वाण परमश्रियम्।।८।।

सर्वान्-जिनेन्द्र-चंद्रान्, सिद्धानाचार्य पाठकान्-साधून्।
रत्नत्रयं च वंदे, रत्नत्रयसिद्धये भक्त्या।।९।।

पांतु श्रीपादपद्मानि, पंचानां परमेष्ठिनाम्।
लालितानि सुराधीश, चूडामणि मरीचिभिः।।१०।।

मुक्ति का कारण जिन स्तुति

त्रैलोक्येश्वर भंग लब्ध विजयादत्यन्त रौद्रात्मकान्।
नाना जन्म शतान्तरेषु पुरतो जीवस्य संसारिणः।।
को वा प्रस्खलतीह केन विधिना कालोग्र दावानलान्।
न स्याच्चेत्तव पाद पद्म युगल स्तुत्यापगा वारणम्।।४।।

स्तुति से असाध्य रोगों का नाश

लोकालोक निरन्तर प्रवितत् ज्ञानैक मूर्त्ते विभो!
नाना रत्न पिनद्ध दण्ड रुचिर श्वेतातपत्रत्रय।।
त्वत्पाद द्वय पूत गीत रवतः शीघ्रं द्रवन्त्यामया।
दर्पाध्मातमृगेन्द्रभीम निनदाद् वन्या यथा कुञ्जराः।।५।।

स्तुति से अनन्त सुख

दिव्य स्त्री नयनाभिराम विपुल श्री मेरु चूडामणे,
भास्वद् बाल दिवाकर-द्युति हर प्राणीष्ट भामण्डल
अव्याबाध मचिन्त्यसार मतुलं त्यक्तोपमं शाश्वतम्,
सौख्यं त्वच्चरणारविन्द युगल स्तुत्यैव सम्प्राप्यते।।६।।

भगवान के चरण-कमल प्रसाद से पापों का नाश

यावन्नोदयते प्रभा परिकरः श्रीभासकरो भासयंस्,
तावद् धारयतीह पंकज वनं निद्रातिभार श्रमम्।
यावत्त्वच्चरणद्वयस्य भगवन्! न स्यात् प्रसादोदय,
स्तावज्जीव निकाय एष वहति प्रायेण पापं महत्।।७।।

स्तुति फल याचना

शान्तिं शान्ति जिनेन्द्र शान्त मनसस्-त्वत्पाद पद्माश्रयात्।
संप्राप्ताः पृथिवी तलेषु बहवः शान्त्यर्थिनः प्राणिनः।।
कारुण्यान् मम भाक्तिकस्य च विभो! दृष्टिं प्रसन्नां कुरु।
त्वत्पादद्वय दैवतस्य गदतः शान्त्यष्टकं भक्तितः।।८।।

शान्ति जिनं शशि निर्मल वक्त्रं शीलगुण व्रत संयम पात्रम्।
अष्टशतार्चित लक्षण गात्रं नौमि जिनोत्तम मम्बुज नेत्रम्।।६।।

पञ्चम-मीप्सित-चक्रधराणां पूजित मिन्द्र-नरेन्द्र-गणैश्च।
शान्तिकरं गण-शान्ति-मभीप्सुः षोडश-तीर्थकरं-प्रणमामि।।१०।।

दिव्यतरुः सुर-पुष्प-सुवृष्टि-र्दुन्दुभिरासन-योजन घोषौ।
आतप-वारण-चामर-युग्मे यस्य विभाति च मण्डलतेजः।।११।।

तं जगदर्चित-शान्ति-जिनेन्द्रं शांतिकरं शिरसा प्रणमामि।
सर्व गणाय तु यच्छतु शान्ति मह्यमरं पठते परमां च।।१२।।

येऽभ्यर्चिता मुकुट-कुण्डल-हार-रत्नैः, शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुत-पादपद्माः।
ते मे जिना-प्रवर-वंश-जगत्प्रदीपाः, तीर्थंकराः सतत शान्तिकरा भवन्तु।।१३।।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र-सामान्य-तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान्-जिनेन्द्र।।१४।।

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः।
काले काले च सम्यग् वितरतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम्।।
दुर्भिक्षं चौरमारिः क्षणमपि जगतां मास्मभूज्जीव-लोके।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्व-सौख्य-प्रदायि।।१५।।

तद् द्रव्य मव्ययमुदेतु शुभ स देशः, संतन्यतां प्रतपतां सततं सकालः।
भावः स नन्दतु सदा यदनुग्रहेण, रत्नत्रयं प्रतपतीह मुमुक्षुवर्गे।।१६।।

प्रध्वस्त घाति कर्माणः, केवलज्ञान भास्कराः।
कुर्वन्तु जगतां शान्तिं, वृषभाद्या जिनेश्वराः।।१७।।

क्षेपक श्लोकानिः

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शान्तिः निरन्तर तपोभव भावितानां।।
शान्तिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शान्तिः स्वभाव महिमानमुपागतानाम्।।१।।

जीवन्तु संयम सुधारस पान तृप्ता,
नंदंतु शुद्ध सहसोदय सुप्रसन्नाः।
सिद्ध्यंतु सिद्धि सुख संगकृताभियोगाः
तीव्रं तपन्तु जगतां त्रितयेऽर्हदाज्ञा।।२।।

शान्तिः शंतनुतां समस्त जगतः, संगच्छतां धार्मिकैः।
श्रेयः श्री परिवर्धतां नयधरा, धुर्यो धरित्री पतिः।।
सद्विद्याधरसमुद्गिरन्तु कवयो, नामाप्य धस्यास्तु मां।
प्रार्थ्यं वा कियदेक एव शिवकृ, द्धर्मो जयत्वर्हताम्।।३।।

इच्छामि भंते! संतिभत्ति-काउस्सग्गो कओ, तस्सालोचेउं, पञ्च-महा-कल्लाण-संपण्णाणं, अट्ट-महापाडिहेर-सहियाणं, चउतीसातिसय-विसेस-संजुत्ताणं, बत्तीस-देवेंद-मणिमय मउड मत्थय महियाणं बलदेव वासुदेव चक्कहर रिसि-मुणि-जदि-अणगारोव गूढ़ाणं, थुइ-सय-सहस्स-णिलयाणं, उसहाइ-वीर-पच्छिम-मंगल-महापुरिसाणं सया णिच्चकालं, अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगइ-गमणं, सामाहि-मरणं जिण-गुण सम्पत्ति होदु मज्झं।

अथ श्री समाधि भक्तिः

अथा-र्हत्पूजारम्भ-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा वंदनास्तवसमेतं श्री समाधिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

स्वत्माभिमुख-संवित्ति, लक्षणं श्रुत-चक्षुषा।
पश्यन्पश्यामि देव त्वां केवलज्ञान-चक्षुषा।।१।।

शास्त्राभ्यासो जिनपति नुतिः, संगति सर्वदार्यैः।
सद्वृत्तानां गुणगण-कथा, दोषवादे च मौनम्।।
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे।
संपद्यन्तां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः।।२।।

जैनमार्गरुचिरन्यमार्ग निर्वेगता, जिनगुणस्तुतौ मतिः।
निष्कलंक विमलोक्ति भावनाः, संभवन्तु मम जन्म-जन्मनि।।३।।

गुरुमूले यति-निचिते-चैत्यसिद्धान्त वार्धिसद्घोषे।
मम भवतु जन्म जन्मनि, सन्यसन समन्वितं मरणम्।।४।।

जन्मजन्मकृतं पापं, जन्मकोटि समार्जितम्।
जन्ममृत्युजरामूलं, हन्यते जिनवंदनात्।।५।।

आबाल्याज्जिनदेवदेव! भवतः, श्री पादयोः सेवया।
सेवासक्तविनेयकल्पलतया, कालोऽद्ययावद्गतः।।
त्वां तस्याः फलमर्थये तदधुना, प्राणप्रयाणक्षणे।
त्वन्नामप्रतिबद्धवर्णपठने, कण्ठोऽस्त्वकुण्ठो मम।।६।।

तवपादौ मम हृदये, मम हृदयं तव पदद्वये लीनम्।
तिष्ठतु जिनेन्द्र! तावद्यावन्निर्वाण संप्राप्तिः।।७।।

एकापि समर्थेयं, जिनभक्ति-दुर्गतिं निवारयितुम्।
पुण्यानि च पूरयितुं, दातुं मुक्तिश्रियं कृतिनः।।८।।

पञ्चअरिंजयणामे, पञ्च य मदि-सायरे जिणेवन्दे।
पञ्च जसोयरणामे, पञ्चय सीमंदरे वन्दे।।९।।

रयणत्तयं च वंदे, चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।
पञ्चगुरूणां वंदे, चारणचरणं सदावंदे।।१०।।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सदीजं, सर्वतः प्रणिदध्महे।।११।।

कर्माष्टकविनिर्मुक्तं, मोक्षलक्ष्मीनिकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम्।।१२।।

आकृष्टिं सुरसंपदां विदधते, मुक्तिश्रियो वश्यताम्।
उच्चाटं विपदां चतुर्गतिभुवां, विद्वेषमात्मैनसाम्।।
स्तम्भं दुर्गमनं प्रति प्रयततो, मोहस्य सम्मोहनम्।
पायात्पञ्च नमस्क्रियाक्षरमयी, साराधना देवता।।१३।।

अनन्तानन्त संसार, संततिच्छेद कारणम्।
जिनराजपदाम्भोज, स्मरणं शरणं मम।।१४।।

अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारुण्यभावेन, रक्ष-रक्ष जिनेश्वर!।।१५।।

नहित्राता नहित्राता, नहित्राता जगत्त्रये।
वीतरागात्परो देवो, न भूतो न भविष्यति।।१६।।

जिनेभक्ति र्जिनेभक्ति, र्जिनेभक्ति र्दिने दिने।
सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु भवे भवे।।१७।।

याचेऽहं याचेऽहं, जिन! तव चरणारविंदयोर्भक्तिम्।
याचेऽहं याचेऽहं, पुनरपि तामेव तामेव।।१८।।

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।१९।।

अक्खर-पयत्थ-हीणं, मत्ता-हीणं च जं मए भणियम्।
तं खमहु णाण-देव! य, मज्झवि दुक्खक्खयं कुणउ।।२०।।

कायोत्सर्गः

इच्छामि भंते! समाहिभत्ति काउस्सग्गो कओ, तस्सालोचेउं, रयणत्तयसरू-वपरमप्पज्झाणलक्खणं समाहि-भत्तीये सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ-गमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ, मज्झं।

अथ श्री निर्वाण भक्तिः

अथा-र्हत्पूजारम्भ-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा वंदनास्तवसमेतं श्री निवार्णभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

आर्या छन्द

विबुधपति-खगपति-नरपति-धनदोरग-भूतयक्ष पतिमहितम्।
अतुलसुखविमलनिरुपमशिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम्।।१।।

कल्याणैःसंस्तोष्ये पञ्चभिरनघं त्रिलोक परमगुरुम्।
भव्यजनतुष्टिजननैर्दुरवापैः सन्मतिं भक्त्या।।२।।

आषाढसुसितषष्ठ्यां हस्तोत्तरमध्यमाश्रितेशशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वापुष्पोत्तराधीशः।।३।।

सिद्धार्थनृपतितनयो भारतवास्ये विदेहकुण्डपुरे।
देव्यां प्रियकारिण्यां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः।।४।।

चैत्रसितपक्षफालगुनि शशांकयोगे दिने त्रयोदश्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने।।५।।

हस्ताश्रिते शशांके चैत्र ज्योत्स्ने चतुर्दशीदिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटैर्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।६।।

भुक्त्वा कुमारकाले त्रिंशद्वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीतभोगान्-सहसाभिनिबोधितोऽन्येद्युः।।७।।

नानाविधरूपचितां विचित्रकूटोच्छ्रितां मणिविभूषाम्।
चन्द्रप्रभाख्य-शिविकामारुह्य पुराद्विनिः क्रान्तः।।८।।

मार्गशिरकृष्णदशमी हस्तोत्तर मध्यमाश्रिते सोमे।
षष्ठेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।९।।

ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैर्द्वादशवर्षाण्यमर पूज्यः।।१०।।

ऋजुकूलायास्तीरे शाल्मद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेनास्थितस्य खलु जृंभिकाग्रामे।।११।।

वैशाखसितदशम्यां हस्तोत्तरमध्यमाश्रिते चन्द्रे।
क्षपकश्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्।।१२।।

अथ भगवान् संप्रापद्-दिव्यं वैभारपर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद् गौतमप्रभृति।।१३।।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभि कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डलदिव्यान्यन्यानि चावापत्।।१४।।

दशविधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरत्त्रिंशद्वर्षाण्यथ जिनेन्द्रः।।१५।।

पद्वनदीर्घिकाकुल विविध द्रुमखण्ड मण्डिते रम्ये।
पावानगरोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः।।१६।।

कार्तिककृष्ण स्यान्ते स्वातावृक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्।।१७।।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्र ज्ञात्वा विबुधाह्यथासु चागम्य।
देवतरुरक्तचन्दन कालागरु सुरभिगो शीर्षैः।।१८।।

अग्नीन्द्राज्जिनदेहं मुकुटानलसुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने।।१९।।

इत्येवं भगवति वर्धमान चन्द्रे, यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि।
सोऽनन्तं परमसुख नृदेवलोके, भुक्त्वान्त शिवपदमक्षयं प्रयाति।।२०।।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाणभूमिरिह भारतवर्षजानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमि भक्त्या।।२१।।

कैलाश शैलशिखरे परिनिर्वृतोऽसौ। शैलेशिभावमुपपद्य वृषो महात्मा।
चम्पापुरे च वसुपूज्यसुतः सुधीमान्। सिद्धिं परामुपगतो गतरागबंधः।।२२।।

यत्प्रार्थ्यते शिवमयं विबुधेश्वराद्यैः । पाखण्डिभिश्च परमार्थगवेष शीलैः ।
नष्टाष्ट कर्म समये तदरिष्टनेमिः । संप्राप्तवान् क्षितिधरे वृहदूर्जयन्ते । ।२३ । ।

पावापुरस्य बहिरुन्नत भूमिदेशे । पद्मोत्पलाकुलवतां सरसां हि मध्ये ।
श्री वर्द्धमान जिनदेव इति प्रतीतो । निर्वाणमाप भगवान्प्रविधूतपाप्मा । ।२४ । ।

शेषास्तु ते जिनवरा जितमोहमल्ला । ज्ञा-नार्क भूरि किरणैरवभास्य लोकान् ।
स्थानं परं निरवधारित सौख्य निष्ठं । सम्मेद पर्वततले समवापुरीशाः । ।२५ । ।

आद्यश्चतुर्दशदिनैर्विनिवृत्त योगः । षष्ठेन निष्ठितकृतिर्जिन वर्द्धमानः ।
शेषाविधूत घनकर्म निबद्धपाशाः । मासेन ते यतिवरास्त्वभवन्वियोगा । ।२६ । ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा । न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः ।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः । संप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं ताः । ।२७ । ।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः । पण्डोः सुताः परमनिर्वृतिमभ्युपेताः ।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा । नद्यास्तटे जिनरिपुश्च सुवर्णभद्रः । ।२८ । ।

द्रोणीमति प्रबलकुण्डल मेंढ्रके च । वैभारपर्वततले वरसिद्धकूटे ।
ऋष्यद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च । विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च । ।२९ । ।

सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे । दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ ।
येसाधवोहतमलाःसुगतिंप्रयाताः ।स्थानानितानिजगतिप्रथितान्यभूवन । ।३० । ।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके । पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत् । ।
तद्वच्च पुण्यपुरुषै रुषितानि नित्यं । स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि । ।३१ । ।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां । प्रोक्ता मयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः ।
तेमे जिना जितभया मुनयश्च शांताः । दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्यसौख्याम् । ।३२ । ।

क्षेपक श्लोकानि

कैलाशाद्रौ मुनीन्द्रः पुरुरपदुरितो मुक्तिमाप प्रणूतः ।
चंपायां वासुपूज्यस्त्रिदशपतिनुतो नेमिरप्यूर्जयंते । ।१ । ।

पावायां वर्धमानस्त्रिभुवनगुरवो विंशतिस्तीर्थनाथाः।
सम्मेदाग्रे प्रजग्मुर्ददतु विनमतां निवृतिं नो जिनेन्द्राः।।2।।

गोर्गजोश्चः कपिः कोकः सरोजः स्वस्तिकः शशी।
मकरः श्रीयुतो वृक्षो गंडो महिष सूकरौ।।3।।

सेधा वज्रमृगच्छागाः पाठीनः कलशस्तथा।
कच्छपश्चोत्पलं शंखो नागराजश्च केसरी।।4।।

शान्ति कुन्थवर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः।।5।।

अञ्चलिका

इच्छामि भन्ते! परिणिव्वाणभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, इमम्मि, अवसप्पिणीए चउत्थ समयस्स पच्छिमे भाए, आउट्ठमासहीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि, पावाए णयरीए कत्तिय मासस्स किण्ह चउदसिए रत्तीए सादीए, णक्खत्ते, पच्चूसे, भयवदो महदि महावीरो वड्ढमाणे सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु, भवणवासिय-वाणविंतर जोयिसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहा देवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण, णिच्चकालं अच्चंति, पूजंति, वंदंति, णमंसंति परिणि-व्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं सया णिच्चकालं, अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइ-गमणं, समाहि-मरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

अथ श्री नन्दीश्वर भक्तिः

अथा-र्हत्पूजारम्भ-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा वंदनास्तवसमेतं श्री नन्दीश्वरभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

त्रिदशपतिमुकुट तट गतमणि, गणकर निकर सलिलधाराधौत।
क्रमकमलयुगलजिनपति रुचिर, प्रतिबिम्बविलय विरहितनिलयान्।।1।।

निलयानहमिह महसां सहसा, प्रणिपतन पूर्वमवनौम्यवनौ।
त्रय्यां त्रय्या शुद्ध्या निसर्ग, शुद्धान्विशुद्धये घनरजसाम्।।2।।

भवनवासियों के विमानों के अकृत्रिम चैत्यालयों का वर्णन

भावनसुर-भवनेषु द्वासप्तति-शत-सहस्र-संख्याभ्यधिकाः।
कोट्यः सप्त प्रोक्ता भवनानां भूरि-तेजसां भुवनानाम्।।3।।

व्यन्तर देवों के अकृत्रिम चैत्यालयों का वर्णन

त्रिभुवन-भूत-विभूनां संख्यातीतान्यसंख्य-गुण-युक्तानि।
त्रिभुवन-जन-नयन-मनः प्रियाणि भवनानि भौम-विबुध-नुतानि।।4।।

ज्योतिष्क तथा वैमानिक देवों के अकृत्रिम चैत्यालयों का वर्णन

यावन्ति सन्ति कान्त-ज्योति-र्लोकाधिदेवताभिनुतानि।
कल्पेऽनेक-विकल्पे कल्पातीतेऽहमिन्द्र-कल्पानल्पे।।5।।

विंशतिरथ त्रिसहिता सहस्र-गुणिता च सप्तनवतिः प्रोक्ता।
चतुरधिकाशीतिरतः पञ्चक-शून्येन विनिहतान्यनघानि।।6।।

मनुष्य क्षेत्र के अकृत्रिम चैत्यालयों की संख्या

अष्टापंचाशदतश्-चतुःशतानीह मानुषे च क्षेत्रे।
लोकालोक-विभाग-प्रलोकनाऽऽलोक-संयुजां जय-भाजाम्।।7।।

तीनों लोकों के अकृत्रिम चैत्यालयों का संख्या

नव-नव-चतुःशतानि च सप्त च नवतिः सहस्र-गुणिताः षट् च।
पञ्चाशत्पंच-वियत् प्रहताः पुनरत्र कोटयोऽष्टौ प्रोक्ताः।।8।।

एतावन्त्येव सता-मकृत्रि-माण्यथ जिनेशिनां भवनानि।
भुवन-त्रितये त्रिभुवन-सुर-समिति-समर्च्यमान-सत्प्रतिमानि।।9।।

मध्यलोक के 458 चैत्यालय

वक्षार-रुचक-कुण्डल-रौप्य-नगोत्तर-कुलेषुकारनगेषु।
कुरुषु च जिनभवनानि त्रिशतान्यधिकानि तानि षड्विंशत्या।।10।।

नन्दीश्वर द्वीप के चैत्यालय

नन्दीश्वर-सद्द्वीपे नन्दीश्वर-जलधि-परिवृते धृत-शोभे।
चन्द्र-कर-निकर-सन्निभ-रुन्द्र-यशो-वितत-दिङ्-मही-मण्डलके।।11।।

तत्रत्याञ्जन-दधिमुख-रतिकर-पुरु-नग-वराख्य-पर्वत-मुख्याः।
प्रतिदिश-मेषा-मुपरि त्रयो-दशेन्द्रार्चितानि जिनभवनानि।।12।।

आषाढ़-कार्तिककाख्ये फाल्गुनमासे च शुक्लपक्षेऽष्टम्याः।
आरभ्याष्ट-दिनेषु च सौधर्म-प्रमुख-विबुधपतयो भक्त्या।।13।।

तेषु महामह-मुचितं प्रचुराक्षत-गंध-पुष्प-धूपै-र्दिव्यैः।
सर्वज्ञ-प्रतिमाना-मप्रतिमानां प्रकुर्वते सर्व-हितम्।।14।।

भेदेन वर्णना का सौधर्मः स्नपन-कर्तृता मापन्नः।
परिचारक-भावमिताः शेषेन्द्रा-रुन्द्र-चन्द्र-निर्मल-यशसः।।15।।

मंगल-पात्राणि पुनस्तद्-देव्यो बिभ्रतिस्म शुभ्र-गुणाढ्याः।
अप्सरसो नर्तक्यः शेष-सुरास्तत्र लोकानाव्यग्रधियः।।16।।

वाचस्पति-वाचामपि गोचरतां संव्यतीत्य यत्-क्रममाणम्।
विबुधपति-विहित-विभवं मानुष-मात्रस्य कस्य शक्तिः स्तोतुम्।।17।।

निष्ठापित-जिनपूजाश्-चूर्ण-स्नपनेन दृष्टविकृतविशेषाः।
सुरपतयो नन्दीश्वर-जिनभवनानि प्रदक्षिणीकृत्य पुनः।।18।।

पञ्चसु मंदरगिरिषु, श्रीभद्रशालनन्दन-सौमनसम्।
पाण्डुकवनमिति तेषु, प्रत्येकं जिनगृहाणि चत्वार्येव।।19।।

तान्यथ परीत्य तानि च, नमसित्वा कृतसुपूजनास्तत्रापि।
स्वास्पदमीयुः सर्वे, स्वस्पदमूल्यं स्वचेष्टया संगृह्य।।20।।

नन्दीश्वर द्वीप के चैत्यालयों की विभूति

सहतोरणसद्वेदी-परीतवनयाग-वृक्ष-मानस्तम्भः।
ध्वजपंक्तिदशकगोपुर, चतुष्टयत्रितय-शाल-मण्डप-वर्यैः।।21।।

अभिषेकप्रेक्षणिका, क्रीडनसंगीतनाटकालोकगृहैः।
शिल्पिविकल्पित-कल्पन-संकल्पातीत-कल्पनैः समुपेतैः।।22।।

वापी सत्पुष्करिणी, सुदीर्घिकाद्यम्बुसंसृतैः समुपेतैः।
विकसितजलरुहकुसुमै-र्नभस्यमानैः शशिग्रहर्क्षैः शरदि।।23।।

भृंगाराब्दक-कलशा, द्युपकरणैरष्टशतक-परिसंख्यानैः।
प्रत्येकं चित्रगुणैः, कृतझणझणनिनद-वितल-घंटाजालैः।।24।।

प्रविभाजंते नित्यं, हिरण्मयानीश्चरेशिनां भवनानि।
गंधकुटीगतमृगपति, विष्टर-रुचिराणि-विविध-विभव-युतानि।।25।।

नन्दीश्वर के चैत्यालयों में स्थित प्रतिमाओं का वर्णन

येषु-जिनानां प्रतिमाः, पञ्चशत-शरासनोच्छ्रिताः सत्प्रतिमाः।
मणिकनक-रजतविकृता, दिनकरकोटि-प्रभाधिक-प्रभदेहाः।।26।।

तानि सदा वंदेऽहं, भानुप्रतिमानि यानि कानि च तानि।
यशसां महसां प्रतिदिश-मतिशय-शोभा-विभाञ्जि पापविभाञ्जि।।27।।

तीर्थंकरों की स्तुति

सप्तत्यधिक-शतप्रिय, धर्मक्षेत्रगत-त्तीर्थकर-वर-वृषभान्।
भूतभविष्यत्संप्रति-काल-भवान् भवविहानये विनतोऽस्मि।।28।।

भगवान वृषभदेव की स्तुति

अस्यामवसर्पिण्यां, वृषभजिनः प्रथमतीर्थकर्ता भर्ता।
अष्टापदगिरिमस्तक, गतस्थितो मुक्तिमाप पापान्मुक्तः।।29।।

भगवान वासुपूज्य की स्तुति

श्रीवासुपूज्यभगवान, शिवासु पूजासु पूजितस्त्रिदशानाम्।
चम्पायां दुरित-हरः, परमपदं प्रापदापदा-मन्तगतः।।30।।

नेमिनाथ स्वामी की स्तुति

मुदितमतिबलमुरारि-प्रपूजितो जित कषायरिपुरथ जातः।
वृहदूर्जयन्त-शिखरे शिखामणिस्त्रिभुवनस्य-नेमिर्भगवान्।।31।।

श्री महावीर स्वामी की स्तुति

पावापुरवरसरसां, मध्यगतः सिद्धिवृद्धितपसां महसाम्।
वीरो नीरदनादो भूरि-गुणश्चारु शोभमास्पद-मगमत्।।32।।

अवशेष बीस तीर्थंकरों की स्तुति

सम्मदकरिवन-परिवृत-सम्मेदगिरीन्द्रमस्तके विस्तीर्णे।
शेषा ये तीर्थकराः, कीर्तिभृतः प्रार्थितार्थसिद्धिमवापन्।।33।।

अन्य सिद्ध स्थानों से मंगल प्रार्थना

शेषाणां केवलिना-मशेषमतवेदिगणभृतां साधूनां।
गिरितलविवरदरीसरि-दुरुवनतरु-विटपिजलधि-दहनशिखासु।।34।।

मोक्षगतिहेतु-भूत-स्थानानि सुरेन्द्ररुन्द्र-भक्तिनुतानि।
मंगलभूतान्येता-न्यंगीकृतधर्मकर्मणामस्माकम्।।35।।

जिनपतयस्तत्-प्रतिमा-स्तदालयास्तन्निषद्यका-स्थानानि।
ते ताश्च ते च तानि च भवन्तु भव-घात-हेतवो भव्यानाम्।।36।।

तीनों समय नन्दीश्वर भक्ति करने का फल

संध्यासु तिसृषु नित्यं पठेद्यदि स्तोत्र-मेतदुत्तम-यशासाम्।
सर्वज्ञानां सार्वं लघु लभते श्रुतधरेडितं पद-ममितम्।।37।।

अरहंतों के शरीर सम्बन्धी दश अतिशय

नित्यं निःस्वेदत्वं निर्मलता क्षीर-गौर-रुधिरत्वं च।
स्वाद्याकृति-संहनने सौरूप्यं सौरभं च सौलक्ष्यम्।।38।।

अप्रमित-वीर्यता च प्रिय-हित-वादित्व-मन्यदमित-गुणस्य।
प्रथिता दश-संख्याता स्वतिशय-धर्मा स्वयं-भुवो देहस्य।।39।।

केवलज्ञान के दश अतिशय

गव्यूति-शत-चतुष्टय-सुभिक्षता-गगन-गमन-मप्राणिवधः।
भुक्त्युपसर्गाभाव-श्चतुरास्यत्वं च सर्व-विद्येश्वरता।।40।।

अच्छायत्व-मपक्ष्म-स्पन्दश्च सम-प्रसिद्ध-नख-केशत्वम्।
स्वतिशय-गुणा भगवतो घाति-क्षयजा भवन्ति तेऽपि दशैव।।41।।

देवकृत चौदह अतिशय

सार्वार्ध-मागधीया भाषा मैत्री च सर्व-जनता-विषया।
सर्वर्तु-फल-स्तबक-प्रवाल-कुसुमोपशोभित-तरु-परिणामाः।।42।।

आदर्शतल-प्रतिमा रत्नमयी जायते मही च मनोज्ञा।
विहरण-मन्वेत्यनिलः परमानन्दश्च भवति सर्व-जनस्य।।43।।

मरुतोऽपि सुरभि-गन्ध-व्यामिश्रा योजनान्तरं भूभागम्।
व्युपशमित-धूलि-कण्टक-तृण-कीटक-शर्करोपलं प्रकुर्वन्ति।।44।।

तदनु स्तनितकुमारा विद्युन्माला-विलास-हास-विभूषाः।
प्रकिरन्ति सुरभि-गन्धि गन्धोदक-वृष्टि माज्ञया त्रिदशपतेः।।45।।

वर-पद्मराग-केसर-मतुल-सुख-स्पर्श-हेम-मय-दल-निचयम्।
पादन्यासे पद्मं सप्त पुरः पृष्ठतश्च सप्त भवन्ति।।46।।

फलभार-नम्र-शालि-व्रीह्यादि-समस्त-सस्य-धृत-रोमाञ्चा।
परिहृषितेव च भूमि-स्त्रिभुवननाथस्य वैभवं पश्यन्ती।।47।।

शरदुदय-विमल-सलिलं सर इव गगनं विराजते विगतमलम्।
जहति च दिशस्तिमिरिकां विगतरजः प्रभृति जिह्मताभाव सद्यः।।48।।

एतेतेति त्वरितं ज्योति-र्व्यन्तर-दिवौकसा-ममृतभुजः।
कुलिशभृदाज्ञापनया कुर्वन्त्यन्ये समन्ततो व्याह्वानम्।।49।।

स्फुर-दरसहस्र-रुचिरं विमल-महारत्न-किरण-निकर-परीतम् ।
प्रहसित-किरण-सहस्र-द्युति-मण्डल-मग्रगामि-धर्म-सुचक्रम् । ।50 । ।

इत्यष्ट-मंगलं च स्वादर्श-प्रभृति-भक्ति-राग-परीतैः ।
उपकल्प्यन्ते त्रिदशै-रेतेऽपि-निरुपमातिशेषाः । ।51 । ।

आठ प्रातिहार्यों का वर्णन

अशोक वृक्ष

वैडूर्य-रुचिर-विटप-प्रवाल-मृदु-पल्लवोपशोभित-शाखः ।
श्रीमानशोक-वृक्षो वर-मरकत-पत्र-गहन-बहलच्छायः । ।52 । ।

मन्दार-कुन्द-कुवलय-नीलोत्पल-कमल-मालती-बकुलाद्यैः ।
समद-भ्रमर-परीतै-र्व्याप्ति-श्रा पतति कुसुम-वृष्टि-र्नभसः । ।53 । ।

चामर

कटक-कटि-सूत्र-कुण्डल-केयूर-प्रभृति-भूषितांगौ स्वंगौ ।
यक्षौ कमल-दलाक्षौ परि-निक्षिपतः सलील-चामर-युगलम् । ।54 । ।

भामण्डल

आकस्मिक-मिव युगपद्-दिवसकर-सहस्र-मपगत-व्यवधानम् ।
भामण्डल-मविभावित-रात्रिञ्दिव-भेद-मतितरामाभाति । ।55 । ।

दुन्दुभिवाद्य

प्रबल-पवनाभिघात-प्रक्षुभित-समुद्र-घोष-मन्द्र-ध्वानम् ।
दन्ध्वन्यते सुवीणा-वंशादि-सुवाद्य-दुन्दुभिस्तालसमम् । ।56 । ।

तीन छत्र

त्रिभुवन-पतिता-लाञ्छन-मिन्दुत्रय-तुल्य-मतुल-मुक्ता-जालम् ।
छत्रत्रयं च सुबृहद्-वैडूर्य-विक्लृप्त-दण्ड-मधिक-मनोज्ञम् । ।57 । ।

दिव्यध्वनि

ध्वनिरपि योजनमेकं प्रजायते श्रोतृ-हृदयहारि-गम्भीरः ।
ससलिल-जलधर-पटल-ध्वनितमिव प्रविततान्त-राशावलयम् । ।58 । ।

सिंहासन

स्फुरिताशु-रत्न-दीधिति-परिविच्छुरिताऽमरेन्द्र-चापच्छायम् ।
ध्रियते मृगेन्द्रवर्यैः-स्फटिक-शिला-घटित-सिंह-विष्टर-मतुलम् । ।59 । ।

यस्येह चतुस्त्रिंशत्-प्रवर-गुणा प्रातिहार्य-लक्ष्यम्यश्चाष्टौ ।
तस्मै नमो भगवते त्रिभुवन-परमेश्वराहते गुण-महते । ।60 । ।

क्षेपक-श्लोकाः

गत्वा क्षितेर्वियति पंचसहस्रदण्डान् । सोपान-विंशतिसहस्र-विराजमाना । ।
रेजे सभा धनद यक्षकृता यदीया । तस्मै नमस्त्रिभुवनप्रभवे जिनाय । ।1 । ।

सालोऽथ वेदिरथ वेदिरथोऽपि सालः । वेदिश्च साल इह वेदिरथोऽपि सालः ।
वेदिश्च भाति सदसि क्रमतो यदीये । तस्मै नमस्त्रिभुवनप्रभवे जिनाय । ।2 । ।

प्रासाद-चैत्य-निलयाः परिखात-वल्ली । प्रोद्यानकेतुसुरवृक्षगृहाङ्गणाश्च ।
पीठत्रय सदसि यस्य सदा विभाति । तस्मै नम-स्त्रिभुवन-प्रभवे जिनाय । ।3 । ।

माला-मृगेन्द्र-कमलाम्बर वैनतेय । मातंगगोपतिरथांगमयूरहंसाः ।
यस्य ध्वजा विजयिनो भुवने विभान्ति । तस्मै नम-स्त्रिभुवनप्रभवे जिनाय । ।4 । ।

निर्ग्रंथ-कल्प-वनिता-व्रतिका भ-भौम । नागस्त्रियो भवन-भौम-भ-कल्पदेवाः ।
कोष्ठस्थिता नृ-पशवोऽपिनमन्ति यस्य । तस्मै नमस्त्रिभुवनप्रभवे जिनाय । ।5 । ।

भाषा-प्रभा-वलयविष्टर-पुष्पवृष्टिः । पिण्ड्डु मस्त्रिदशदुन्दुभि-चामराणि ।
छत्रत्रयेण सहितानि लसन्ति यस्य । तस्मै नमस्त्रिभुवनप्रभवे जिनाय । ।6 । ।

भृंगार-त्ताल-कलश-ध्वजसुप्रतीक । श्वेतातपत्र-वरदर्पण-चामराणि ।
प्रत्येक-मष्टशतकानिविभान्तियस्य ।तस्मैनमस्त्रिभुवनप्रभवेजिनाय । ।7 । ।

स्तंभ-प्रतोलि-निधि-मार्ग-त्तडाग-वापी ।क्रीडाद्रि-धूप-घट-त्तोरण-नाट्य-शालाः ।
स्तूपाश्चचैत्य-त्तरवोविलसन्तियस्य ।तस्मैनमस्त्रिभुवनप्रभवेजिनाय । ।8 । ।

सेनापति स्थपति-हर्म्यपति-द्विपाश्च स्त्री ।चक्र-चर्म-मणि-काकिणिका-पुरोधाः ।
छत्रासि-दंडपतयः प्रणमन्ति यस्य । तस्मै नमस्त्रिभुवनप्रभवे जिनाय । ।9 । ।

पद्मःकालो महाकालः सर्वरत्नश्च पांडुकः। नैसर्पो माणवः शंखः पिंगलो निधयो नव।
एतेषां पतयः प्रणमन्ति यस्य। तस्मै नमस्त्रिभुवनप्रभवे जिनाय।।10।।

खविय-घण-घाइ-कम्मा चउतीसातिसयविसेसपंचकल्लाणा।
अट्टवरपाडिहेरा अरिहंता मंगला मज्झं।।11।।

इच्छामि भन्ते! णंदीसरभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं। णंदीसरदीवम्मि, चउदिस विदिसासु अंजण-दधिमुह-रदिकर-पुरुणगवरेसु जाणि जिणचेइ-याणि ताणि सव्वाणि तिसुवि लोएसु भवणवासिय-वाणर्वितर-जोइसिय-कप्पवासिय-त्ति चउविहा देवा सपरिवारा दिव्वेहि ण्हाणेहि, दिव्वेहि गंधेहि, दिव्वेहि अक्खेहि, दिव्वहि पुप्फेहि, दिव्वेहि चुण्णेहि, दिव्वेहि दीवेहि, दिव्वेहि धुव्वहि दिव्वेहि वासेहि, आसाढ़-कात्तियफागुण-मासाणं अठ्ठमिमाइं काऊण जाव पुण्णिमंति णिच्चकालं अच्चंति, पुज्जंति, वंदंति, णमंसंति। णंदीसरमहाकल्लाणपुज्जं करंति अहमवि इह संतो तत्थसंताइयं, सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो सुगइ-गमण, समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

अथ प्राकृत श्री सिद्धभक्तिः

अट्ठविहकम्ममुक्के अट्ठगुणढ्ढे अणोवमे सिद्ध।
अट्ठमपुढविणिविट्ठे णिट्ठियकज्जे य वंदिमो णिच्चं।।१।।

तित्थयरेदरसिद्धे जलथलआयासणिव्वुदे सिद्धे।
अंतयडेदरसिद्धे उक्कस्सजहण्णमज्झिमोगाहे।।२।।

उढ्ढमहतिरियलोए छव्विहकाले य णिव्वुदे सिद्धे।
उवसग्गणिरुवसग्गे दीवोदहिणिव्वुदे य वंदामि।।३।।

पच्छायडेय सिद्धे दुगतिगचदुणाण पंचचदुरजमे।
परिवडिदा परिवडिदे संजमसम्मत्तणाणमादीहिं।।४।।

साहरणासाहरणे समुग्घादेदरे य णिव्वादे।
ठिदपलियंकणिसण्णे विगयमले परमणाणगे वंदे।।५।।

पुंवेदं वेदंता जे पुरिसा खवगसेढिमारुढा।
सेसोदयेण वि तहा झाणुवजुत्ता य ते दु सिज्झंति।।६।।

पत्तेयसयंबुद्धा बोहियबुद्धा य होंति ते सिद्धा।
पत्तेयं पत्तेयं समये समयं च पणिवदामि सदा।।७।।

पण णव दु अट्ठवीसा चउ तियणवदीय दोण्णि पंचेव।
बावण्णहीणवियसय पयडिविणासेण होंति ते सिद्धा।।८।।

अइसयमव्वावाहं सोक्खमणंतं अणोवमं परमम्।
इंदियविसयातीदं अप्पत्तं अच्चवं च ते पत्ता।।९।।

लोयग्गमत्थयत्था चरमसरीरेण ते हु किंचूणा।
गयसित्थमूसगब्भे जारिसआयार तारिसायारा।।१०।।

जरमरणजम्मरहिया ते सिद्धा मम सुभत्तिजुत्तस्स।
दिंतु वरणाणलाहं बुहयणपरिपत्थणं परमसुद्धं।।११।।

किच्चा काउस्सग्गं चउरट्ठयदोसविरहियं सुपरिसुद्धम्।
अइभत्तिसंपउत्तो जो वंदइ सो लहु लहइ परमसुहम्।।१२।।

संसारचक्रगमनागतिविप्रमुक्ता-न्नित्यं जरामरणजन्मविकारहीनान्।।
देवेन्दानवगणैरभिपूज्यमानान् सिद्धांस्त्रिलोकमहिताञ्शरणं प्रपद्ये।।१३।।

असरीरा जीवघणा उवजुत्ता दंसणे य णाणे य।
सायारमणायारा लक्खणमेयं तु सिद्धाणम्।।१४।।

मुलुत्तरपयडीणं बंधोदयसत्तकम्मउम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा अट्ठगुणातीदसंसारा।।१५।।

अट्ठविहकम्मवियला सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठगुणा किदकिच्चा लोयग्गणिवासिणो सिद्धा।।१६।।

सिद्धाणट्ठट्ठमला विसुद्धबुद्धी य लद्धसब्भावा।
तिहुयणसिरसेहरया पसीयंतु भंडारया सव्वे।।१७।।

गमणागमणविमुक्के विहडियकम्मट्ठपयडिसंघाए।
सासयसुहसंपत्ते ते सिद्धा वंदिमो णिच्चम्।।१८।।

जयमंगलभूदाणं विमलाणं णाणदंसणमयाणम्।
तइलोयसेहराणं णमो सया सव्वसिद्धाणम्।।१९।।

सम्मत्तणाणदंसणवीरियसुहुमं तहेव अवगहणम्।
अगुरुलहुमव्वाबाहं अट्ठगुणा होंति सिद्धाणम्।।२०।।

तवसिद्धे णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसाणमंसामि।।२१।।

इच्छामि भन्ते! सिद्धभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण-सम्मचारित्त-जुत्ताण, अट्ठविह-कम्म-विप्प- मुक्काणं, अट्ठगुण संपण्णाणं उड्ढलोय-मत्थयम्मि पयट्ठियाणं, तव-सिद्धाणं, णय-सिद्धाणं, संजम-सिद्धाणं, चरित्त-सिद्धाणं, अतीताणागद-वट्टमाण-कालत्तय-सिद्धाणं,

सव्व-सिद्धाणं, सया णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वन्दामि णमंसामि दुक्ख-क्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइ-गमणं समाहि-मरणं जिन-गुण-सम्पत्ति होउ मज्झं।

अथ प्राकृत श्री श्रुतभक्तिः

सिद्धवरसासणाणं सिद्धाणं कम्मचक्कमुक्काणं।
काउण णमोक्कारं भत्तीए णमामि अंगाइं।।१।।

आयारं सुद्दयडं ठाणं समवाय विहायपण्णत्ती।
णाणाधम्मकहाओ उवासयाणं च अज्झयणं।।२।।

वंदे अंतयडदसं अणुत्तरदसं च पण्हवायरणं।
एयारसमं च तहा विवायसुत्तं णमंसामि।।३।।

परियम्म सुत्त पढमाणुओय पुव्वगय चूलिया चेव।
पवरवरदिट्ठिवादं तं पंचविहं पणिवदामि।।४।।

उप्पाय पुव्वमग्गायणीय वीरियत्थिणत्थि य पवादम्।
णाणासच्चपवादं आदा कम्मप्पवादं च।।५।।

पच्चक्खाणं विज्जाणुवाय कल्लाणणाम वरपुव्वं।
पाणावायं किरियाविसालमथ लोयबिंदुसारसुदं।।६।।

दसचउदस अट्ठट्ठारस बारस तहय दोसु पुव्वेसु।
सोलस वीसं तीसं दसमम्मिय पण्णरसवत्थू।।७।।

एदेसिं पुव्वाणं जावदियो वत्थुसंगहो भणियो।
सेसाणं पुव्वाणं दसदसवत्थू पणिवदामि।।८।।

एक्केक्कम्मि य वत्थू वीसं वीसं पाहुडा भणिया।
विसमसमा वि य वत्थू सव्वे पुण पाहुडेहि समा।।९।।

पूव्वाणं वस्थुसयं पंचाणउदी हवंति वत्थूओ।
पाहुड तिण्णिसहस्सा णव य सया चऊदसाणं पि।।१०।।

एवमए सुदपवरा भत्तीराएण संथुआ तच्चा।
सिग्घं मे सुदलाहं जिणवरवसहा पयच्छंतु।।११।।

इच्छामि भंते! सुदभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, अंगोवंग पइण्णय पाहुडयपरियम्मसुत्तपढमाणिओगपुव्वगयचूलिया चेव सुत्तत्थय थुइधम्मकहाइयं सुदं सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

अथ प्राकृत श्री चारित्रभक्तिः

तिलोए सव्वजीवाणं हिदं धम्मोवदेसिणं।
वडढ्माणं महावीरं वंदित्ता सव्ववेदिणं।।१।।

घादिकम्मविघादत्थं घादिकम्मविणासिणा।
भासियं भव्वजीवाणं चारित्त पंचभेददो।।२।।

सामाइयं तु चारित्तं छेदोवट्ठावणं तहा।
तं परिहारविसुद्धिं च संजमं सुहुमं पुणो।।३।।

जहाखादं तु चारित्तं तहाखादं तु तं पुणो।
किच्चाहं पंचहाचारं मंगलं मलसोहणं।।४।।

अहिंसादीणि उत्ताणि महव्वयाणि पंच य।
समिदीओ तदो पंच पंच इंदियणिग्गहो।।५।।

छब्भेया वा सभूसिज्जा अण्हाणत्तमचेलदा।
लोयत्तं ठिदिभुत्तिं च अंदतवधवणमेव य।।६।।

एयभत्तेण संजुत्ता रिसिमूलगुणा तहा।
दसधम्मा तिगुत्तीओ सीलाणि सयलाणि य।।७।।

सव्वे वि य परीसहा उत्तुत्तरगुणा तहा।
अण्णे वि भासिया संता तेसिं हाणिं मए कया।।८।।

जइ राएणदोसेण मोहेणणणादरेण वा।
वंदित्ता सव्वसिद्धाणं संजदासा मुमुक्खुणा।।६।।

संजदेण मए सम्मं सव्वसंजमभाविणा।
सव्वसंजमसिद्धीओ लब्भदे मुत्तिजं सुहं।।१०।।

इच्छामि भंते! चारित्तभतिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाणज्जोयस्स, सम्मत्ताहिट्ठियस्स, सव्वपहाणस्स, णिव्वाणमग्गस्स, कम्मणिज्जर फलस्स, खमाहारस्स, पंचमहव्वयसंपुण्णस्स, तिगुत्तिगुत्तस्स, पंचसमिदिजुत्तस्स, णाणज्झाणसाहणस्स, समयाइपवेसयस्स, सम्मचरित्तस्स, णिच्चकालं, अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

अथ प्राकृत श्री योगिभक्तिः

थोस्सामि गुणधराणं अणयाराणं गुणेहिं तच्चेहिं।
अंजलिमउलियहत्थो अभिवंदंतो सविभवेण।।१।।

सम्मं चेव य भावे मिच्छाभावे तहेव बोधव्वा।
चइऊण मिच्छभावे सम्मम्मि उवट्ठिदे वंदे।।२।।

दोदोसविप्पुक्के तिदंडविरदे तिसल्लपरिसुद्धे।
तिण्णियगारवरहिए तियरणसुद्धे णमंसामि।।३।।

चउविहकसायमहणे चउगइसंसारगमणभयभीए।
पंचासवपडिविरदे पंचिदियणिज्जिदे वंदे।।४।।

छज्जीवदयावण्णे छडायदणविवज्जिदे समिदभावे।
सत्तभयविप्पमुक्के सत्ताण भंयकरे वंदे।।५।।

णट्ठट्ठमयट्ठाणे पणट्ठकम्मट्ठणट्ठसंसारे।
परमट्ठणिट्ठियट्ठे अट्ठगुणड्ढीसरे वंदे।।६।।

णवबंभचेरगुत्ते णवणससब्भावजाणगे वंदे।
दहविहधम्मठ्ठाई दससंजमसंजदे वंदे।।७।।

एयारसंगसुदसायरपारगे वारसंगसुदणिउणे।
बारसविहतवणिरदे तेरसकिरियादरे वंदे।।८।।

भूदेसु दयावण्णे चउदस चउदससु गंथपरिसुद्धे।
चउदसपुव्वपगब्भे चउदसमलविज्जिदे वंदे।।९।।

वंदे चउत्थभत्तादिजावछम्मासखवणपडिवण्णे।
वंदे आदावंते सूरस्स य अहिमुहट्ठिदे सूरे।।१०।।

बहुविहपडिमट्ठाई णिसिज्जवीरासणेक्कवासी य।
अणिट्ठीवकंडुवदीवे चत्तदेहे य वन्दामि।।११।।

ठाणी मोणवदीए अब्भोवासी य रुक्खमूली य।
धुवकेसमंसुलोमे णिप्पडियम्मे य वन्दामि।।१२।।

जल्लमल्ललित्तगत्ते वन्दे कम्ममलकलुसपरिसुद्धे।
दीहणहमंसुलोमे तवसिरिभरिए णमंसामि।।१३।।

णाणोदयाहिसित्ते सीलगुणविहूसिये तवसुगंधे।
ववगयरायसुदड्ढे सिवगइपहणायगे वन्दे।।१४।।

उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे य घोरतवे।
वंदामि तवमहंते तवसंजमइड्ढिसंजुत्ते।।१५।।

आमोसहिए खेलोसहिए जल्लोसहिए तवसिद्धे।
विप्पोसही ए सव्वोसही ए वंदामि तिविहेण।।१६।।

अमयमहुखीरसप्पिसवीएअक्खीणमहाणसे वन्दे।
मणबलिवचबलिकायबलिणो य वंदामि तिविहेण।।१७।।

वरकुट्ठबीयबुद्धी पदाणुसारीय भिण्णसोदारे।
उग्गहईहसमत्थे सुत्तत्थविसारदे वंदे।।१८।।

आभिणिबोहियसुदओहिणाणिमणणाणिसव्वणाणी य।
वंदे जगप्पदीवे पच्चक्खपरोक्खणाणी य।।१६।।

आयासतंतुजलसेढिचारणे जंघचारणे वन्दे।
विउवणइड्ढिपहाणे विज्जाहरपण्णसवणे य।।२०।।

गइचउरंगुलगमणे तहेव फलफुल्लचारणे वंदे।
अणुवमतवमहंते देवासुरवंदिदे वन्दे।।२१।।

जियभय जियउवसग्गे जियइंदियपरिसहे जियकसाए।
जियरायदोसमोहे जियसुहदुक्खे णमंसामि।।२२।।

एवं मएभित्थुया अणयारा रायदोसपरिसुद्धा।
संघस्स वरसमाहिं मज्झ वि दुक्खक्खयं दिंतु।।२३।।

इच्छामि भंते! योगिभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं अड्ढाइज्जदीवदोसमुद्देसु पण्णारसकम्मभूमीसु आदावण रुक्खमूलअब्भोवासठाणमोणवीरासणेक्क- पासकुक्कुडासण च उत्थपक्खखवणादियोगजुत्ताणं सव्वसाहूणं सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

अथ प्राकृत श्री आचार्यभक्तिः

देसकुलजाइसुद्धा विसुद्धमणवयणकायसंजुत्ता।
तुह्मं पायपयोरुहमिह मंगलमत्थु मे णिच्चं।।१।।

सगपरसमयविदण्हू आगमहेदूहिं चावि जाणित्ता।
सुसमत्था जिणवयणे विणये सत्ताणुरूवेण।।२।।

बालगुरुबुड्ढसेहे गिलाणथेरे य खमणसंजुत्ता।
वट्टावयगा अण्णे दुस्सीले चावि जाणित्ता।।३।।

वयसमिदिगुत्तिजुत्ता मुतिपहेठावया पुणो अण्णे।
अज्झावयगुणणिलये साहुगुणेणावि संजुत्ता।।४।।

उत्तमखमाए पुढवी पसण्णभावेण अच्छजलसरिसा।
कम्मिंधणदहणादो अगणी वाऊ असंगादो।।५।।

गयणमिव णिरुवलेवा अक्खोहा सायरुव्व मुणिवसहा।
एरिसगुणणिलयाणं पायं पणमामि सुद्धमणो।।६।।

संसारकाणणे पुण बंभममाणेहिं भव्वजीवेहिं।।
णिव्वाणस्स हु मग्गो लद्धो तुह्मं पसाएण।।७।।

अविसुद्धलेस्सरहिया विसुद्धलेस्साहिं परिणदा सुद्धा।
रुद्दट्ठे पुण चत्ता धम्मे सुक्के य संजुत्ता।।८।।

उग्गहईहावायधारणगुणसंपदेहिं संजुत्ता।
सुत्तत्थभावणाए भावियमाणेहिं वंदामि।।६।।

तुह्मं गुणगणसंथुदि अजाणमाणेण जो मया वुत्तो।
देउ मम बोहिलाहं गुरुभत्तिजुदत्थओ णिच्चं।।१०।।

इच्छामि भंते! आयरियभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सलोचेउं सम्मणाणसम्मदंसण- सम्मचरित्तजुत्ताणं पंचविहाचाराणं आयरियाणं आयारादिसुदणाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं तिरयणगुणपालणरयाणं सव्वसाहूणं सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

अथ प्राकृत श्री निर्वाणकाण्ड

अट्ठावयम्मि उसहो चंपाए वासुपुज्जजिणणाहो।
उज्जंते णेमिजिणो पावाए णिव्वुदो महावीरो।।१।।

वीसं तु जिणवरिंदा अमरासुरवंदिदा धुदकिलेसा।
सम्मेदे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं।।२।।

सत्तेव य बलभद्दा जदुवणरिंदाण अट्ठकोडीओ।
गजपंथे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं।।३।।

वरदत्तो य वरंगो सायरदत्तो य तारवरणयरे।
आहुट्ठयकोडीओ णिव्वाणगया णमो तेसिं।।४।।

णेमिसामि पज्जुण्णो संबुकुमारो तहेव अणिरुद्धो।
बाहत्तरकोडीओ उज्जन्ते सत्तसया सिद्धा।।५।।

रामसुआ विण्णि जणा लाडणरिंदाण पंचकोडीओ।
पावाए गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं।।६।।

पंडुसुआ तिण्णि जणा दविडणरिंदाण अट्ठकोडीओ।
सित्तुंजयगिरिसिहरे णिव्वाण्णगया णमो तेसिं।।७।।

रामहणूसुग्गीवो गवयगवक्खो य णीलमहणीला।
णवणवदी कोडीओ तुंगीगिरिणिव्वुदे वंदे।।८।।

अंगाणंगकुमारा विक्खापंचद्धकोडिरिसि सहिया।
सुवण्णगिरिमत्थयत्थे णिव्वाणगया णमो तेसिं।।९।।

दहमुहरायस्स सुआ कोडी पंचद्धमुणिवरे सहिया।
रेवाउहयतऽग्गे तीरे णिव्वाणगया णमो तेसिं।।१०।।

रेवाणइए तीरे पच्छिमभायम्मि सिद्धवरकूटे।
दो चक्की दहकप्पे आहुट्ठयकोडि णिव्वुदे वंदे।।११।।

वडवाणीवरणयरे दक्खिणभायम्मि चूलगिरिसिहरे।
इंदजियकुंभकण्णो णिव्वाणगया णमो तेसिं।।१२।।

पावागिरिवरसिहरे सुवण्णभद्दाइ मुणिवरा चउरो।
चलणाणईतडग्गे णिव्वाणगया णमो तेसिं।।१३।।

फलहोडीवरगामे पच्छिमभायम्मि दोणगिरिसिहरे।
गुरुदत्ताइमुणिंदा णिव्वाणगया णमो तेसिं।।१४।।

णायकुमार मुणिंदो वालि महावालि चेव अज्झेया।
अट्ठवयगिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं।।१५।।

अच्चलपुरवरणयरे ईसाणभाए मेंढगिरिसिहरे।
आहुयकोडीओ णिव्वाणगया णमो तेसिं।।१६।।

वंसत्थलम्मि नयरे पच्छिमभायम्मि कुंथुगिरिसिहरे।
कुलदेसभूसणमुणी णिव्वाणगया णमो तेसिं।।१७।।

जसहररायस्स सुआ पंचसयाइ कलिंगदेसम्मि।
कोडिसिलाएकोडिमुणी णिव्वाणगया णमो तेसिं।।१८।।

पासस्स समवसरणे गुरुदत्त वरदत्त पंचरिसिपमुहा।
रिस्सिदे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं।।१९।।

जे जिणु जित्थु तत्था, जे दु गया णिव्वुदिं परमं।
ते वन्दामिय णिच्चं, तियरणसुद्धो णमंसामि।।२०।।

सेसाणं तु रिसीणं, णिव्वाणं जम्मि जम्मि ठाणम्मि।
तेहं वन्दे सव्वे, दुक्खक्खयकारणट्ठाए।।२१।।

पासं तह अहिणंदण णायद्दहि मंगलाउरे वन्दे।
अस्सारम्भे पट्ठणि मुणिसुव्वओ तहेव वन्दामि।।२२।।

बाहुबलि तह वंदमि पोदणपुरहत्थिणापुरे वंदे।
संती कुंथुव अरिहो वाराणसीए सुपास पासं च।।२३।।

महुराए अहिछित्तै वीरं पासं तहेव वन्दामि।
जंबुमुणिंदो वन्दे णिव्वुइपत्तोवि जंबुवणगहणे।।२४।।

पंचकल्लाणठाणइ जाणिवि संजादमच्चलोयम्मि।
मणवयणकायसुद्धो सव्वे सिरसा णमंसामि।।२५।।

अग्गलदेवं वन्दमि वरणयरे णिवणकुंडली वन्दे।
पासं सिरिपुरि वन्दमि लोहागिरिसंखदीवम्मि।।२६।।

गोम्मटदेवं वन्दमि पंचसयं धणुहउच्चं तं।
देवा कुंणति वुट्ठी केसरकुसुमाण तस्स उवरिम्मि।।२७।।

णिव्वाणठाण जाणिवि अइसयठाणाणि अइसये सहिया।
संजाद मिच्चलोए सव्वे सिरसा णमंसामि।।२८।।

जो जण पढइ तियालं णिव्वुइकंडपि भावसुद्धीए।
भुंजदि णरसुरसुक्खं पच्छा सो लहइ णिव्वाणं।।२९।।

क्षेपक श्लोक

श्रीमच्चंद्रगुहावराक्षरशिलां वस्त्रावतारं सदा।
अर्चे चारणपादुकां चणगुहे सवामरैरर्चिताम्।।
भास्वल्लक्षपंक्तिनिर्वृत्तिपथं बिंदुं च धर्मं शिलाम्।
सम्यग्ज्ञानशिलां च नेमिनिलयं वन्दे सशृंगत्रयम्।।१।।

समवसरणमानं योजनं द्वादशादि।
र्जिनपतियदुयावद्योजनार्द्धार्द्धहानिः।।
कथयति जिनपार्श्वे योजनैकं सपादम्।
निगदितजिनवीरे योजनैकं प्रमाणम्।।२।।

नाभेयस्य शतानि पंच धनुषां मानं परं कीर्तितम्।
सद्विस्तीर्थकराष्टकस्य निपुणैः पंचाशदूनं हि तत्।।
पंचानां च दशोनकं भुवि भवेत्पंचोनकं चाष्टके।
हस्ताः स्युर्नव सप्त चान्त्यजिनयोर्येषां नु तान्नौम्यहम्।।३।।

श्रीचंद्रप्रभनाथपुष्पदशनौ कुंदावदातच्छवी।
रक्ताम्भोजपलाशवर्णवपुषौ पद्मप्रभद्वादशौ।
कृष्णौ सुव्रतयादवौ च हरितौ पार्श्वः सुपार्श्वश्च वै।
शेषाः सन्तु सुवर्णवर्णवपुषो मे षोडशाघच्छिदे।।४।।

वासुपूज्यस्तथा मल्लिर्नेमिः पार्श्वोथ सन्मतिः।
कुमाराः पंचनिष्क्रान्ता पृथिवीपतयः परे।।५।।

वृषभश्च वासुपूजश्च नमिः पर्यंकयोगतः।
कायोत्सर्गस्थितानां तु सिद्धिः शेषजिनेशिनाम्।।६।।

गौर्गजोश्वः कपिः कोकः सरोजः स्वस्तिकः शशी।
मकरः श्रीयुतो वृक्षो गंडो महिषसूकरौ।।
सेधा वज्रमृगच्छागाः पाठीनः कलशस्तथा।
कच्छपश्चोत्पलं शंखो नागराजश्च केसरी।।७।।

शांतिकुंथ्वरकौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः।।८।।

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, इमम्मि अवसप्पिणीए चउत्थसमयस्स पच्छिमे भाए, आहुट्ठमासहीणे वासचउक्कम्मि सेस-कालम्मि। पावाए णयरीए कत्तियमासस्स किण्ह चउद्दसिए रत्तीए सादीए नक्खत्ते पच्चूसे भयवदो महदि महावीरो वड्ढमाणो सिद्धिं गदो, तिसु विलोएसु भवणवासिय वाण-विंतरजोयिसियकप्पवासियत्ति चउव्विहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण वासेण, दिव्वेण ण्हाणेण, सया णिच्चकालं, अंच्चंति, पूजंति, वंदंति, णमंसंति, परिणिव्वाण महाकल्लाणपुज्जं करोंति, अहमवि इह संतोतत्थ संताइयं, सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहि-मरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

अथ श्री प्राकृत पंचमहागुरूभक्तिः

मणुयणाइंदसुरधरियछत्तत्तया। पंचकल्लाणसोक्खावली पत्तया।।
दंसणं णाणज्झाणं अणंतं बलं। ते जिणा दिंतु अम्हं वरं मंगलं।।१।।

जेहिं झाणग्गिवाणेहिं अइयद्दयं। जम्मजरमरणणयरत्तयं दड्ढयं।।
जेहिं पत्तं सिवं सासयं ठाणयं। ते महं दिंतु सिद्धा वरं णाणयं।।२।।

पंचहाचारपंचग्गिसंसाहया। वारसंगाइसुअजलहिं अवगाहया।।
मोक्खलच्छीमहंती महंते सया। सूरिणो दिंतु मोक्खं गया संमया।।३।।

घोरसंसारभीमाडवीकाणणे। तिक्खवियरालणहपावपंचाणणे।
णट्ठमग्गाण जीवाण पहदेसिया। वंदिमो ते उवज्झाय अम्हे सया।।४।।

उग्गतवचरणकरणेहिंझीणंगया।धम्मवरझाणसुक्केक्कझाणंगया।।
णिब्भरंतवसिरीएसमालिंगया।साहवनोतेमहंमोक्खपथमग्गया।।५।।

एण थोत्तेण जो पंचगुरुवंदए। गुरुयसंसारघणवेल्लि सो छिंदये।
लहइसोसिद्धिसोक्खाइबहुमाणणं।कुणइकम्मिंधणप्पुञ्जपज्जालणं।।६।।

अरुहा सिद्धाइरिया उवज्झाया साहु पंचपरमेट्ठि।
एयाण णमुक्कारा भवे भवे मम सुहं दिंतु।।७।।

इच्छामि भंते! पंचमहागुरुभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं अट्ठमहा-पाडिहेरसंजुत्ताणं अरहंताणं, अट्ठगुणसंपण्णांणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं सिद्धाणं, अट्ठपवयणमाउसंजुत्ताणं आयरियाणं, आयारादिसुदणाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं तिरयण- गुणपालणरयाणं सव्वसाहूणं, सया णिच्चकालं, अंचेमि, पूजूमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

अथ प्राकृत-कल्याणालोचना

परमप्पइ वड्ढमदिं, परमेट्ठीणं करोमि णवकारं।
सगपर सिद्धिणिमित्तं, कल्लाणालोयणा वोच्छे।।१।।

रे जीवा-णंत-भवे, संसारे संसरंत बहुवारं।
पत्तो ण बोहिलाहो, मिच्छत्तविजं-भपयडीहिं।।२।।

संसारभमणगमणं, कुणंत आराहिदो ण जिणधम्मो।
तेणविणा वरं दुक्खं, पत्तोसि अणंतवाराइं।।३।।

संसारे णिवसंता, अणंतमरणाइ पाओसि तुमं।
केवलिणा विण तेसिं, संखापज्जत्ति णो हवदि।।४।।

तिण्णिसया छत्तीसा, छावट्ठिसहस्सवार मरणाइं।
अंतोमुहुत्तमज्झे, पत्तोसि णिगोयमज्झम्मि।।५।।

वियलिंदिये असीदी, सट्ठी चालीसमेव जाणेहिं।
पंचेंदिय चउवीस, खुद्दभवंतोमुहुत्तस्स।।६।।

अण्णोण्णं खज्जंता, जीवा पावंति दारुणं दुक्खं।
णहु तेसिं पज्जत्ती, कहपावइ धम्ममदिसुण्णो।।७।।

मायापिया कुडुण्बो, सुजणजण कोवि णायदि सत्थे।
एगागी भमदि सदा, णहि वीओ अत्थि संसारे।।८।।

आउक्खएवि पत्ते, ण समत्थो कोवि आउदाणेय।
देवेंदो ण णरेंदो, मणिमोसह मंतजालाई।।९।।

संपडि जिणवरधम्मो, लद्धोसि तुमं विसुद्धजोएण।
खामसु जीवा सव्वे, पत्तेसमये पयत्तेण।।१०।।

तिण्णिसया तेसट्ठि, मिच्छत्ता दंसणस्स पडिवक्खा।
अण्णाणे सद्दहिया, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।११।।

महुमज्जमंसजूआप, भिदीवसणाइ सत्तभेयाइं।
णियमो ण कथं च तेसिं, मिच्छामे दुक्कडं हुज्ज।।१२।।

अणुवयमहव्वया, जे जमणियमासीलसाहुगुरुदिण्णा।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।१३।।

णिच्चिदरधादुसत्तय, तरुदसवियलिंदिएसु छच्चेव।
सुरिणरयतिरियचउरो, चउदस मणुए सदसहस्सा।।१४।।

एदे सव्वे जीवा, चउरासीलक्खजोणिवसि पत्ता।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।१५।।

पुढवीजलग्गिवाओ, तेओवि वणप्फदी य वियलतया।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।१६।।

मल सत्तरा जिणुत्ता, वयविसये जा विराहणा विविहा।
सामइया खमइया खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।१७।।

फलफुल्लछल्लिवल्लि, अणगल ण्हाणं च धोवणादिहिं।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।१८।।

णो शीलं णेव खमा, विणओ तवो ण संजमोवासा।
ण कदा ण भाविकदा, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।१९।।

कंदफलमूलबीया, सचित्तरणीयभोयणाहारा।
अण्णाणे जे वि कदा, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।२०।।

णो पूया जिणचरणे, ण पत्तदाणं न चेइयागमणं।
ण कदा ण भाविद मये, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।२१।।

बंभारंभपरिग्गह, सावज्जा बहु पमाददोसेण।
जीवा विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।२२।।

सत्तातिसदखेत्तभवा, तीदाणागदसुवट्टमाणजिणा।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।२३।।

अरूहासिद्धाइरिया, उवझाया साहु पंचपरमेट्ठी।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।२४।।

जिणवयणधम्मचेदिय, जिणपडिमा किट्टियाअकिट्टिमया।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।२५।।

दंसणणाणचरित्ते, दोसा अूठट्ठपञ्चभेयाइं।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।२६।।

मदिसुदओहीमणपज्जयं, तहा केवलं च पंचमयं।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।२७।।

आयारादी अंगा, पुव्वपइण्णा जिणेहिं पण्णत्ता।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।२८।।

पंच महव्वदजुत्ता, अट्ठादससहस्ससीलकदसोहा।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।२९।।

लोए पियरसमाणा, रिद्धिपवण्णा महागणवइया।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।३०।।

णिग्गंथ अज्जियाओ, सड्ढा सड्ढी य चउविहो संघो।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।३१।।

देवा सुरा मणुस्सा, णेरइयातिरियजोणिगदजीवा।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।३२।।

कोहो माणो माया, लोहो एदेय रायदोसाइं।
अण्णाणे जे वि कदा, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।३३।।

परवत्थं परमहिला, पमादजोगेण अज्जियं पावं।
अण्णावि अकरणीया, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।३४।।

इक्को सहावसिद्धो, सोहं अप्पा वियप्पपरिमुक्को।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एग परमप्पा।।३५।।

अरस अरूव अगंधो, अव्वावाहो अणंतणाणमओ।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एग परमप्पा।।३६।।

णेयपमाणं णाणं, समए एगेण हुंति ससहावे।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एग परमप्पा।।३७।।

एयाणेयवियप्प, प्पसाहणे सयसहावसुद्धगई।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एक्क परमप्पा।।३८।।

देहपमाणो णिच्चो, लोयपमाणो वि धम्मदो होदि।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एक्क परमप्पा।।३९।।

केवलदंसणणाणं, समये इक्केण दुण्णिउवओगा।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एक्क परमप्पा।।४०।।

सगरूव सहजसिद्धो, विहावगुणमुक्ककम्मवावारो।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एक्क परमप्पा।।४१।।

सुण्णो णेय असुण्णो, णोकम्मो कम्मवज्जिओ णाणं।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एक्क परमप्पा।।४२।।

णाणाउजोण भिण्णो, वियप्पभिण्णो सहावसुक्खमओ।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एक्क परमप्पा।।४३।।

अच्छिण्णोवच्छिण्णो, पमेय रूवत्त गुरूलहू चेव।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एक्क परमप्पा।।४४।।

सुहअसुहभावविगओ, सुद्धसहावेण तम्मयं पत्तो।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एक्क परमप्पा।।४५।।

णो इत्थी ण णउंसो, णो पुंसो णेव पुण्णपावमओ।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एक्क परमप्पा।।४६।।

ते को ण होदि सुजणो, तं कस्स ण बंधवो ण सुयणो वा।
अप्पा हवेह अप्पा, एगागी जाणगो सुद्धो।।४७।।

जिणदेवो होउ सया, मई सु जिणसासणे सया होऊ।
सण्णासेण य मरणं, भवे भवे मज्झ संपदओ।।४८।।

जिणो देवो जिणो देवो, जिणो देवो जिणो जिणो।
दयाधम्मो दयाधम्मो, दयाधम्मो दया सदा।।४६।।

महा साहू महासाहू, महासाहू दिगंबरा।
एवं तच्च सया हुज्ज, जावण्णो मुत्तिसंगमो।।५०।।

एवमेव गओकालो, अणंतो दुक्खसंगमे।
जिणोवदिट्ठसण्णासे, ण यत्तारोहणा कया।।५१।।

संपइ एव संपत्ता, राहणा जिणदेसिया।
किं किं ण जायदे, मज्झ सिद्धिसंदोहसंपई।।५२।।

अहो धम्ममहो धम्मं, अहो मे लद्धि णिम्मला।
संजादा संपया सारा, जेण सुक्खमणूवमं।।५३।।

एवं आराहंतो, आलोयणवंदणापडिक्कमणं।
पावइ फलं च तेसिं, णिदिदट्ठं अजियवम्मेण।।५४।।

॥ इति प्राकृत कल्याणालोचना ॥

तर्कों के द्वारा सिद्धान्त नहीं बदलेगा,
बालू को पेलने से तेल नहीं निकलेगा।
भले स्वाध्याय में जिन्दगी गुजर जाये,
क्रियाहीन ज्ञान से सार नहीं निकलेगा।।

अथ संस्कृत-कल्याणालोचना

परमात्मानं वर्द्धित-मतिं, परमेष्ठिनं करोमि नमस्कारम्।
स्वपकसिद्धिनिमित्तं, कल्याणलोचनां वक्ष्ये।।१।।

रे जीव अनंतभवे, संसारे संसारता बहुवारम्।
प्राप्तो न बोधिलाभः मिथ्यात्वविजृंभिप्रकृतिभिः।।२।।

संसारभ्रमणगमनं, कुर्वन् आराधितो न जिनधर्मः।
तेन विना वरं दुःखं, प्राप्तोऽसि अनंतवारम्।।३।।

संसारे निवसन्, अनन्तरमरणानि प्राप्तोऽसि त्वम्।
केवलिना विना तेषां, संख्या पर्याप्तिर्न भवति।।४।।

त्रीणि शतानि षट्त्रिंशानि, षट्षष्ठिसहस्रवारमरणानि।
अन्तर्मुहूर्तमध्ये, प्राप्तोऽसि निगोदमध्ये।।५।।

विकलेन्द्रिये अशीतिं, षष्ठि चत्वारिंशदेव जानीहि।
पंचेन्द्रिय चतुर्विंशति, क्षुद्रभवान् अन्तर्मुहूर्ते।।६।।

अन्योन्यं क्रुध्यन्तो, जीवा प्राप्नुवन्ति दारुणं दुःखम्।
न खलु तेषां पर्याप्तिः, कथं प्राप्नोति धर्ममतिशून्यः।।७।।

माता पिता कुटुंबः, स्वजनजनः कोऽपि नायाति सह।
एकाकी भ्रमति सदा, न हि द्वितीयोऽस्ति संसारे।।८।।

आयुःक्षयेपि प्राप्ते, न समर्थः कोपि आयुर्दाने च।
देवेन्द्रो न नरेंद्रो, मण्यौषधमंत्रजालानि।।९।।

सम्प्रति जिनवरधर्मं, लब्धोऽसि त्वं विशुद्धयोगेन।
क्षमस्व जीवान् सर्वान्, प्रत्येकसमये प्रयत्नेन।।१०।।

त्रीणि शतानि त्रिषष्ठि, मिथ्यात्वानि दर्शनस्य प्रतिपक्षाणि।
अज्ञानेन श्रद्धितानि, मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।११।।

मधुमांसमद्यद्यूत, प्रभृतीनि व्यसनानि सप्तभेदानि।
नियमो न कृतस्तेषां, मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।१२।।

अणुव्रतमहाव्रतानि, यानि यमनियमशीलानि साधुगुरुदत्तानि।
यानि यानि विराधितानि, खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।१३।।

नित्येतर-धातु सप्त, तरुदश विकलेन्द्रियेषु षट् चैव।
सुरनारकतिर्यक्षु, चत्वारश्चतुर्दश मनुष्ये शतसहस्राणि।।१४।।

एते सर्वे जीवा, श्चतुरशीतिलक्ष्योनिवशे प्राप्ताः।
ये ये विराधिताः खलु, मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।१५।।

पृथ्वी जलाग्निवायु, तेजोवनस्पतयश्च विकलत्रयाः।
ये ये विराधिताः खलु, मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।१६।।

मलसप्ततिर्जिनोक्ता, व्रतविषये वा विराधना विविधा।
सामायिकक्षमादिका खलु, मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।१७।।

फलपुष्पत्वग्वल्ली, अगालितस्नानं च प्रक्षालनादिभिः।
ये ये विराधिताः खलु, मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।१८।।

न शीलं नैव क्षमा, विनयस्तपो न संयमोपवासाः।
न कृता न भाविनो, मया मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।१९।।

कन्द फलमूलबीजानि, सचित्तरजनीभोजनाहाराः।
अज्ञानेन येऽपि, कृता मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।२०।।

नो पूजा जिन चरने, न पात्रदानं न चेर्यागमनम्।
न कृता न भाविता मया, मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।२१।।

बह्वारम्भपरिग्रह, सावद्यानि बहूनि प्रमाददोषेण।
जीवा विराधिताः खलु, मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।२२।।

सप्ततिशतक्षेत्र भवाः, अतीतानागतवर्तमानजिनाः।
ये ये विराधिताः खलु, मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।२३।।

अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायाः, साधवः पंच परमेष्ठिनः।
ये ये विराधिताः खलु, मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।२४।।

जिनवचनं धर्मः चैत्यं, जिनप्रतिमाः कृत्रिमा अकृत्रिमाः।
ये ये विराधिताः खलु, मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।२५।।

दर्शनज्ञानचारित्रे, दोषा अष्टाष्टपंचभेदाः।
ये ये विराधिताः खलु, मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।२६।।

मतिः श्रुतमवधिः, मनःपर्ययः तथा केवलं च पंचकम्।
ये ये विराधिताः खलु, मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।२७।।

आचारादीन्यंगानि, पूर्वप्रकीर्णकानि जिनैः प्रणीतानि।
ये ये विराधिताः खलु, मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।२८।।

पंचमहाव्रतयुक्ता, अष्टादशसहस्रशीलकृतशोभाः।
ये ये विराधिताः खलु, मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।२९।।

लोके पितृसमाना, ऋद्धिप्रसन्ना महागणपतयः।
ये ये विराधिताः खलु, मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।३०।।

निर्ग्रंथा आर्यिका, श्रावकाः श्राविकाश्च चतुर्विधः संघः।
ये ये विराधिताः खलु, मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।३१।।

देवा असुरा मनुष्या, नारकाः तिर्यग्योनिगतजीवाः।
ये ये विराधिताः खलु, मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।३२।।

क्रोधो मानो माया, लोभ एते रागद्वेषाः।
अज्ञानेन येऽपि कृता, मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।३३।।

परवस्त्रं परमहिला, प्रमादयोगेनार्जितं पापम्।
अन्येऽपि अकरणीया, मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु।।३४।।

एकः स्वभावसिद्धः, स आत्मा विकल्पपरिमुक्तः।
अन्यो न मम शरणं, शरणं स एकः परमात्मा।।३५।।

अरसोऽरूपोऽगंध अव्याबाधः अनन्तज्ञानमयः।
अन्यो न मम शरणं, शरणं स एकः परमात्मा।।३६।।

ज्ञेयप्रमाणं ज्ञानं, समयेन एकेन भवति स्वस्वभावे।
अन्यो न मम शरणं, शरणं स एकः परमात्मा।।३७।।

एकानेकविकल्प, प्रसाधने स्वकस्वभावशुद्धगतिः।
अन्यो न मम शरणं, शरणं स एकः परमात्मा।।३८।।

देहप्रमाणो नित्यो, लोकप्रमाणोऽपि धर्मतो भवति।
अन्यो न मम शरणं, शरणं स एकः परमात्मा।।३९।।

केवलदर्शनज्ञाने, समयेनैकेन द्वावुपयोगौ।
अन्यो न मम शरणं, शरणं स एकः परमात्मा।।४०।।

स्वकरूपसहजसिद्धो, विभावगुणमुक्तकर्मव्यापारः।
अन्यो न मम शरणं, शरणं स एकः परमात्मा।।४१।।

शून्यो नैवाशून्यो, नोकर्मकर्मवर्जितो ज्ञानम्।
अन्यो न मम शरणं, शरणं स एकः परमात्मा।।४२।।

ज्ञानतो यो न भिन्नो, विकल्पभिन्नः स्वभावसुखमयः।
अन्यो न मम शरणं, शरणं स एकः परमात्मा।।४३।।

अच्छिन्नोऽवच्छिन्नः, प्रमेयरूपत्वमगुरुलघुत्वं चैव।
अन्यो न मम शरणं, शरणं स एकः परमात्मा।।४४।।

शुभाशुभभावविगतः, शुद्धस्वभावेन तन्मयं प्राप्तः।
अन्यो न मम शरणं, शरणं स एकः परमात्मा।।४५।।

न स्त्री न नपुंसको, न पुमान् नैव पुण्यपापमयः।
अन्यो न मम शरणं, शरणं स एकः परमात्मा।।४६।।

तव को न भवति स्वजनः, त्वं कस्य न बंधुः स्वजनो वा।
आत्मा भवेत् आत्मा, एकाकी ज्ञायकः शुद्धः।।४७।।

जिनदेवो भवतु सदा, मतिः सुजिनशासने सदा भवतु।
सन्यासेन च मरणं, भवे भवे मम सम्पत्।।४८।।

जिनो देवो जिनो देवो, जिनो देवो जिनो जिनः।
दयाधर्मो दयाधर्मो, दयाधर्मो दया सदा।।४९।।

महासाधवो महासाधवो, महासाधवो दिगंबराः।
एवं तत्त्वं सदा भवतु, यावन्नो मुक्तिसंगमः।।५०।।

एवमेव गतः, कालोऽनन्तो हि दुःखसंगमे।
जिनोपदिष्टसंन्यासे, न यत्नारोहणा कृता।।५१।।

सम्प्रति एवं, सम्प्राप्ताऽऽराधना जिनदेशिता।
का का न जायते, मम सिद्धिसन्दोहसम्पत्तिः।।५२।।

अहो धर्मः, अहो धर्मः, अहो मे लब्धिर्निर्मला।
संजाता सम्पत् सारा, येन सुख मनुपमम्।।५३।।

एवमाराधयन् आलोचना, वंदना-प्रतिक्रमणानि।
प्राप्नोति फलं च, तेषां निर्दिष्टम-जितब्रह्मणा।।५४।।

॥ इति संस्कृत कल्याणालोचना ॥

अथ पाक्षिकादिप्रतिक्रमणम्

(पाक्षिक, चातुर्मासिक एवं वार्षिक आदि प्रतिक्रमणों में निम्नलिखित **लघु-सिद्धभक्ति, लघु-श्रुत-भक्ति, लघु-आचार्य-भक्ति** पूर्वक आचार्य श्री की वन्दना करें।)

आचार्य-वन्दना

नमोऽस्तु आचार्य-वन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना स्तव-समेत प्रतिष्ठापन-श्री सिद्ध-भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(नौ बार णमोकार मंत्र जाप करें।)

सम्मत्त-णाण दंसण-वीरिय-सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरु-लघु-मव्वावाहं अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं।।१।।

तवसिद्धे, णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि।।२।।

इच्छामि भन्ते! सिद्ध भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण-सम्मचरित्त-जुत्ताण, अट्ठविह-कम्म-विप्प-मुक्काणं, अट्ठगुण संपण्णाणं, उड्ढलोय-मत्थयम्मि पयट्ठियाणं, तव सिद्धाणं, णय सिद्धाणं संयम सिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं, अतीताणागद-वट्ट-माण-कालत्तय-सिद्धाणं सव्व-सिद्धाणं, णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ सुगइ-गमणं समाहि-मरणं जिण-गुण-संपत्ति होउ मज्झं।

नमोऽस्तु आचार्य-वन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना स्तव-समेत प्रतिष्ठापन-श्री श्रुत-भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(नौ बार णमोकार मंत्र जाप करें।)

कोटी-शतं द्वादश चैव कोट्यो, लक्षाण्यशीति-त्र्यधिकानि चैव।
पंचाश-दष्टौ च सहस्र-संख्य-मेतच्छुतं पंचपदं नमामि।।१।।

अरहंत-भासियत्थं गणहर-देवेहिं गंथियं सम्मं।
पणमामि भत्तिजुत्तो सुद-णाण-महोवहिं सिरसा।।२।।

इच्छामि भंते! सुदभत्ति काउस्सग्गो कओ, तस्सालोचेउं अंगोवंग-पइण्णए-पाहुडय-परियम्म-सुत्त-पढमाणिओग-पुव्वगय-चूलिया चेव सुत्तत्थय-थुइ-धम्म-कहाइयं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुग-इ-गमणं, समाहि-मरणं-जिण-गुण-संपत्ति होउ मज्झं।

नमोऽस्तु आचार्य वन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना स्तव-समेत प्रतिष्ठापना श्री आचार्यभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(नौ बार णमोकार मंत्र जाप करें।)

श्रुत-जलधि-पारगेभ्यः स्व-पर-मत-विभावना-पटु-मतिभ्यः
सुचरित-त्तपो-निधिभ्यो नमो गुरुभ्यो गुण-गुरुभ्यः।।१।।

छत्तीस-गुण-समग्गे पंच-विहाचार-करण संदरिसे।
सिस्साणुग्गह-कुसले धम्माइरिए सदा वन्दे।।२।।

गुरु-भत्ति संजमेण य तरंति संसार-सायरं घोरं।
छिण्णंति अट्ठ-कम्मं जम्मण-मरणं ण पावेंति।।३।।

ये नित्यं व्रत-मंत्र-होम-निरता ध्यानाग्नि-होत्रा कुलाः।
षट्-कर्माभि-रतास्तपो-धन-धनाः साधु क्रियाः साधवः।।
शील-प्रावरणा गुण-प्रहरणा-श्चन्द्रार्क-तेजोधिका।
मोक्ष-द्वार-कपाट-पाटन-भटाः प्रीणंतु मां साधवः।।४।।

गुरुवः पान्तु नो नित्यं ज्ञान-दर्शन-नायकाः।
चारित्रार्णव-गंभीरा मोक्ष-मार्गोपदेशकाः।।५।।

इच्छामि भन्ते! आइरिय-भत्ति-काउस्सग्गो कओ, तस्सालाचेउं सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचारित्त जुत्ताणं पंच विहाचाराणं आइरियाणं

आयारादि-सुद-णाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं ति-रयण-गुण-पालण-रयाण सव्वसाहूणं: सया णिच्चकालं अंचेमि पूजूमि वंदामि णमंसामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

(यहाँ शिष्यों और साधर्मियों से युक्त आचार्य (गुरु) अपने इष्ट देव को नमस्कार करें पश्चात् **"नमः श्री वर्धमान"** इत्यादि पाठ और **बृहद्सिद्ध** एवं **चारित्र भक्ति** अञ्चालिका सहित बोलें।)

नमः श्रीवर्धमानाय, निर्धूत-कलिलात्मने।
सालोकानां त्रिलोकानां, यद्-विद्या दर्पणायते।।१।।

समता सर्व-भूतेषु, संयमः शुभ-भावना।
आर्त्त-रौद्र-परित्याग, स्तद्धि सामायिकं मतं।।२।।

अथ सर्वातिचार-विशुद्ध्यर्थं (पाक्षिक) (चातुर्मासिक) (वार्षिक) प्रतिक्रमण-क्रियायां कृत-दोष-निराकरणार्थं पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल-कर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

सामायिक दण्डक

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

चत्तारि मंगलं-अरहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरहंत लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

अड्ढाइज्ज-दीव-दो-समुद्देसु, पण्णारस-कम्मभूमिसु, जाव-अरहंताणं, भयवंताणं, आदियराणं, तित्थयराणं, जिणाणं, जिणोत्तमाणं, केवलियाणं, सिद्धाणं, बुद्धाणं, परिणिव्वुदाणं, अंतय-डाणं, पार-गयाणं, धम्माइरियाणं,

धम्मदेसगाणं, धम्म-णायगाणं, धम्म-वर-चाउरंग-चक्कवट्टीणं, देवाहिदेवाणं, णाणाणं, दंसणाणं, चरित्ताणं सदा करेमि किरियम्मं। करेमि भन्ते! सामायियं सव्व-सावज्ज-जोगं पच्चक्खामि जावज्जीवं (यावत्-कालं, जावन्नियमं) तिविहेण-मणसा वचसा काएण, ण करेमि, ण कारेमि, ण अण्णं करंतं पि समणुमणामि। तस्स भन्ते! अइचारं पडिक्कमामि, णिंदामि, गरहामि अप्पाणं, जाव अरहंताणं, भयवंताणं पज्जुवासं करेमि तावकालं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

(यहां तीन आवर्त एक शिरोनति करके २७ उच्छ्वास पूर्वक कायोत्सर्ग करें। अनन्तर नमस्कार करके पुनः तीन आवर्त और एक शिरोनति करके **चतुर्विंशति स्तव** पढ़ें।)

चतुर्विंशति स्तव

थोस्सामि हं जिणवरे तित्थयरे केवली अणंत जिणे।
णर-पवर-लोय-महिए विहुय-रय मले महप्पण्णे।।१।।

लोयस्सुज्जोययरे धम्मं तित्थंकरे जिणे वंदे।
अरहंते कित्तिस्से चउवीसं चेव केवलिणो।।२।।

उसह-मजियं च वंदे संभव-मभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वन्दे।।३।।

सुविहिं च पुप्फयंतं सीयल सेयं च वासुपुज्जं च।
विमलं-मणंतं भयवं धम्मं संतिं च वंदामि।।४।।

कुंथुं च जिण वरिंदं अरं च मल्लिं च सुव्वयं च णमिं।
वंदामिय रिट्ठणेमिं तह पासं वड्ढमाणं च।।५।।

एवं मए अभित्थुआ विहुय-रय-मला पहीण जर-मरणा।
चउवीसं पि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु।।६।।

कित्तिय वंदिय महिया एदे लोगोत्तमा जिणा सिद्धा।
आरोग्ग-णाण-लाहं दिंतु समाहिं च मे बोहिं।।७।।

चंदेहिं णिम्मल-यरा आइच्चेहिं अहिय-पया-संता।
सायर-मिव गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।८।।

(इसके पश्चात् तीन आवर्त और एक शिरोनति करके निम्नलिखित **बृहद् सिद्ध भक्तिः** पढ़ें।)

श्री बृहद् सिद्धभक्तिः

सिद्धा-नुद्धूत-कर्म-प्रकृति-समुदयान् साधितात्म-स्वभावान्,
वन्दे सिद्धि-प्रसिद्धयै तदनुपम-गुण-प्रग्रहाकृष्टि-तुष्टः।
सिद्धिः स्वात्मोपलब्धिः प्रगुण-गुण-गणोच्छादि-दोषापहाराद्,
योग्योपादान-युक्त्या दृषद् इह यथा हेम-भावोपलब्धिः।।१।।

नाभावः सिद्धि-रिष्टा न निज-गुण-हतिस्तत् तपोभिर्न युक्तेः,
अस्त्यात्मानादि-बद्धः स्व-कृतज-फल-भुक्-तत्-क्षयान् मोक्षभागी।
ज्ञाता दृष्टा स्वदेह-प्रमिति-रुपसमाहार-विस्तार-धर्मा,
ध्रौव्योत्पत्ति-व्ययात्मा स्व-गुण-युत-इतो नान्यथा साध्य-सिद्धि।।२।।

स त्वन्तर्बाह्य-हेतु-प्रभव-विमल-सद्दर्शन-ज्ञान-चर्या-
संपद्धेति-प्रघात-क्षत-दुरित-तया व्यञ्जिताचिन्त्य-सारैः।
कैवल्यज्ञान-दृष्टि-प्रवर-सुख-महावीर्य सम्यक्त्व-लब्धि-
र्ज्योति-र्वातायनादि-स्थिर-परम-गुणै-रद्भुतै-र्भासमानः।।३।।

जानन् पश्यन् समस्तं सम-मनुपरतं सम्प्रतृप्यन् वितन्वन्,
धुन्वन्-ध्वान्तं नितान्तं निचित-मनुपमं प्रीणयन्नीशभावम्।
कुर्वन्-सर्व-प्रजाना-मपर-मभिभवन् ज्योति-रात्मानमात्मा,
आत्मन्येवात्मनासौ क्षण-मुपजनयन्-सत्-स्वयंभूः प्रवृत्तः।।४।।

छिन्दन् शेषानशेषान्-निगल-बल-कलीं-स्तैरनन्त-स्वभावैः,
सूक्ष्मत्वाग्र्यवगाहागुरु-लघुक-गुणैः क्षायिकैः शोभमानः।
अन्यै-श्चान्य-व्यपोह-प्रवण-विषय-संप्राप्ति-लब्धि-प्रभावै-
रूर्ध्व-व्रज्या स्वभावात्-समय-मुपगतो धाम्नि संतिष्ठतेऽग्र्ये।।५।।

अन्याकाराप्ति-हेतु-र्न च भवति परो येन तेनाल्प-हीनः,
प्रागात्मापात्त-देह-प्रति-कृति-रुचिराकार एव ह्यमूर्तः।
क्षुत्-तृष्णा-श्वास-कास-ज्वर-मरण-जरानिष्ट-योग-प्रमोह-
व्यापत्त्याद्युग्र-दुःख-प्रभव-भव-हतेः कोऽस्य सौख्यस्य माता।।६।।

आत्मोपादान-सिद्धं स्वय-मतिशय-वद्-वीत-बाधं विशालम्,
वृद्धि-ह्रास-व्यपेतं विषय-विरहितं निःप्रतिद्वन्द्व-भावम्।
अन्य-द्रव्यानपेक्षं निरुपममममितं शाश्वतं सर्व-कालम्
उत्कृष्टानन्त-सारं परम-सुखमतस्तस्य सिद्धस्य जातम्।।७।।

नार्थः क्षुत्तृड्-विनाशाद् विविध-रस-युतै-रन्न-पानै-रशुच्या,
नास्पृष्टे-र्गन्ध-माल्यै-र्न हि मृदु-शयनै-र्ग्लानि-निद्राद्यभावात्।
आंतकार्ते-रभावे तदुपशमन-सद्भेषजानर्थतावद्
दीपा-नर्थक्य-वद् वा व्यपगत-तिमिरे दृश्यमाने समस्ते।।८।।

तादृक्-सम्पत्-समेता विविध-नय-तपः संयम-ज्ञान-दृष्टि-
चर्या-सिद्धाः समन्तात्-प्रवितत्-यशसो विश्व-देवाधि-देवाः।
भूता भव्या भवन्तः सकल-जगति ये स्तूयमाना विशिष्टै,
स्तान्सर्वान् नौम्यनन्तान् निजिग-मिषु-रं तत्स्वरूपं त्रिसन्ध्यम्।।९।।

कृत्वा कायोत्सर्गं, चतुरष्ट दोष विरहितं सु परिशुद्धं-
अतिभक्ति संप्रयुक्तो, योवन्दते सो लघु लभते परम सुखम्।।

इच्छामि भन्ते! सिद्धभत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण-सम्मदंसण सम्मचरित्तजुत्ताणं, अट्ठ-विह-कम्म-विप्प-मुक्काणं, अट्ठ-गुण-सम्पण्णाणं, उड्ढलोय-मत्थयम्मि पइट्ठियाणं, तव-सिद्धाणं णय-सिद्धाणं, संजम-सिद्धाणं, चरित्त-सिद्धाणं अतीताणागद-वट्टमाण-कालत्तय-सिद्धाणं, सव्व-सिद्धाणं, सया णिच्चकालं, अंचेमि, पूजेमि, वन्दामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ-गमणं, समाहि-मरणं, जिण-गुण-सम्पत्ति होदु मज्झं।

अथ सर्वातिचार-विशुद्ध्यर्थं आलोचना बृहद् चारित्र-भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहाँ आवर्त आदि की पूर्ण विधिसहित **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं. २१३) एवं **"चतुर्विंशति स्तव"** (पृष्ठ सं. २१४) इत्यादि बोलकर निम्नलिखित **बृहद् चारित्रभक्ति** आलोचना सहित पढ़ें।)

श्री चारित्र भक्तिः

येनेन्द्रान्-भवन-त्रयस्य विलसत्-केयूर-हारांगदान्,
भास्वन्-मौलि-मणिप्रभा-प्रविसरोत्-तुंगोत्तमांगान्नतान्
स्वेषां पाद-पयोरुहेषु मुनय-श्चक्रुः प्रकामं सदा,
वन्दे पञ्चतयं तमद्य निगदन्-नाचार-मभ्यर्चितम्।।१।।

ज्ञानाचार का स्वरूप

अर्थ-व्यञ्जन-तद्द्वया-विकलता-कालोपधा-प्रश्रयाः,
स्वचार्याद्यनपह्नवो बहु-मति-श्चेत्यष्टधा व्याहृतम्।
श्री-मज्ज्ञाति-कुलेन्दुना भगवता तीर्थस्य कर्त्राऽञ्जसा,
ज्ञानाचार-महं त्रिधा प्रणिपताम्युद्धूतये कर्मणाम्।।२।।

दर्शनाचार का स्वरूप

शंका-दृष्टि-विमोह-काङ्क्षणविधि-व्यावृत्ति-सत्रद्धताम्,
वात्सल्यं विचिकित्सना-दुपरतिं धर्मोपबृंह-क्रियाम्।
शक्त्या शासन-दीपनं हित-पथाद् भ्रष्टस्य संस्थापनम्,
वन्दे दर्शन-गोचरं सुचरित मूर्ध्ना नमन्नादरात्।।३।।

तप आचार(बाह्य तप) का स्परूप

एकान्ते शयनोपवेशन-कृतिः संतापनं तानवम्,
संख्या-वृत्ति-निबन्धना-मनशनं विष्वाण-मर्द्धोदरम्।
त्यागं चेन्द्रिय-दन्तिनो मदयतः स्वादो रसस्यानिशम्,
षोढ़ा बाह्य-महं स्तुवे शिव गति-प्राप्त्यभ्युपायं तपः।।४।।

अंतरंग तपों का वर्णन

स्वाध्यायः शुभकर्मणश्च्युतवतः संप्रत्यवस्थापनम्।
ध्यानं व्यापृतिरामयाविनि गुरौ, वृद्धे च बाले यतौ।।
कायोत्सर्जन सत्क्रिया विनय-इत्येवं तपः षड्विधं।
वंदेऽभ्यन्तरमन्तरंग बलवद्विद्वेषि विध्वंसनम्।।५।।

वीर्याचार का वर्णन

सम्यग्ज्ञान विलोचनस्य दधतः, श्रद्धानमर्हन्मते।
वीर्यस्याविनिगूहनेन तपसि, स्वस्य प्रयत्नाद्यतेः।।
या वृत्तिस्तरणीव नौरविवरा, लघ्वी भवोदन्वतो।
वीर्याचारमहं तमूर्जितगुणं, वन्दे सतामर्चितम्।।६।।

चारित्राचार का वर्णन

तिस्रः सत्तमगुप्तयस्तनुमनो, भाषानिमित्तोदयाः।
पञ्चेर्यादि-समाश्रयाः समितयः पञ्चव्रतानीत्यपि।।
चारित्रोपहितं त्रयोदशतयं, पूर्वं न दृष्टं परै-
राचारं परिमेष्ठिनो जिनपते, वीरं नमामो वयम्।।७।।

पञ्चाचार पालने वालों की वन्दना

आचारं सह-पञ्चभेदमुदितं, तीर्थंपरंमंगलम्।
निर्ग्रन्थानपि सच्चरित्रमहतो, वंदे समग्रान्यतीन्।।
आत्माधीन सुखोदया मनुपमां, लक्ष्मीमविध्वंसिनीम्।
इच्छन्केवलदर्शनावगमन, प्राज्य प्रकाशोज्वलाम्।।८।।

चारित्र पालन में दोषों की आलोचना

अज्ञानाद्यदवीवृतं नियमिनोऽवर्तिष्यहं चान्यथा।
तस्मिन्नर्जितमस्यति प्रतिनवं, चैनो निराकुर्वति।।
वृत्ते सप्ततयीं निधिं सुतपसामृद्धिं नयत्यद्भुतं।
तन्मिथ्या गुरुदुष्कृतंभवतु मे, स्वंनिंदितो निंदितम्।।९।।

संसार-व्यसनाहतिप्रचलिता, नित्योदय प्रार्थिनाः।
प्रत्यासन्न विमुक्तयः सुमतयः, शान्तैनसः प्राणिनः।।
मोक्षस्यैव कृतं विशालमतुलं, सोपानमुच्चैस्तराम्।
आरोहन्तु-चरित्र-मुत्तम-मिदं, जैनेन्द्र-मोजस्विनः।।१०।।

इच्छामि भंते! चारित्त भत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाणजोयस्स सम्मत्ताहि-ट्ठियस्स, सव्वपहाणस्स, णिव्वाणमग्गस्स, कम्मणिज्जरफलस्स, खमा-हारस्स पंच-महव्वय-संपण्णस्स तिगुतिगुत्तस्स पञ्चसमिदिजुत्तस्स, णाणज्झाण साहणस्स, समया इव पवेसयस्स, सम्मचारित्तिस्स सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहि-मरणं, जिण-गुण-सम्पत्ति होउ-मज्झं।

बृहद्-आलोचना

नोट : यह बृहद्आलोचना आठ दिन में, पाक्षिक प्रतिक्रमण में, **चातुर्मासिक** प्रतिक्रमण में और वार्षिक प्रतिक्रमण में होती है, अतः जब प्रतिक्रमण करना हो तब की अर्थात् उस समय की दिन गणना बोलें।

इच्छामि भन्ते! अट्ठमियम्मि आलोचेउं, अट्ठण्हं दिवसाणं, अट्ठण्हं राइणं, अब्भंतरदो, पंचविहो आयारो णाणायारो, दंसणायारो, तवायारो वीरियायारो, चरित्तायारो चेदि।।१।।

इच्छामि भंते! पक्खियम्मि आलोचेउं पण्ण-रसण्हं दिवसाणं, पण्णरसण्हं राइणं, अब्भंतरदो, पंचविहो आयारो, णाणायारो, दंसणायारो, तवायारो, वीरियायारो चरित्तायारो चेदि।।२।।

इच्छामि भंते! चउमासियम्मि आलोचेउं, चउण्हं मासाणं, अट्ठण्हं पक्खाणं, वीसुत्तर-सय-दिवसाणं, वीसुत्तर-सय-राइणं, अब्भंतरदो, पंचविहो

आयारो, णाणायारो, दंसणायारो, तवायारो, वीरियायारो चरित्तायारो चेदि।।३।।

इच्छामि भंते! संवच्छरियम्मि आलोचेउं, बारसण्हं मासाणं, चउवीसण्हं पक्खाणं, तिण्हं-छावट्ठि-सय-दिवसाण, तिण्हं-छावट्ठि-सय-राइणं अब्भंतरदो, पंचविहो आयारो, णाणायारो, दंसणायारो, तवायारो, वीरियायारो चरित्तायारो चेदि।।४।।

तत्थ णाणायारो अट्ठविहो काले, विणए, उवहाणे, बहुमाणे, तहेव अणिण्हवणे, विंजण-अत्थ-त्तदुभये चेदि। णाणायारो अट्ठविहो परिहाविदो, से अक्खर-हीणं वा, सर-हीणं वा, विंजण-हीणं वा, पद हीणं वा, अत्थ-हीणं वा, गंथ-हीणं वा, थएसु वा, थुइसु वा, अत्थक्खाणेसु वा, अणियोगेसु वा, अणियोग-द्दारेसु वा, अकाले-सज्झाओ कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो, काले वा, परिहाविदो, अच्छा-कारिदं वा, मिच्छा-मेलिदं वा, आ-मेलिदं, वा-मेलिदं, अण्णहा-दिण्हं, अण्णहा-पडिच्छिदं, आवासएसु- परिहीण-दाए तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।१।।

दंसणायारो अट्ठविहो

णिस्संकिय णिकंक्खिय णिव्विदिगिंच्छा अमूढदिट्ठी य।
उवगूहण ठिदिकरण वच्छल्ल-पहावणा चेदि।।१।।

दंसणायारो अट्ठविहो परिहाविदो, संकाए, कंखाए, विदिगिंछासए, अण्ण-दिट्ठी-पसंसणाए, पर-पाखंड-पसंसणाए, अणायदण-सेवणाए, अवच्छल्लदाए, अपहावणाए, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।२।।

तवायारो बारसविहो अब्भंतरो-छव्विहो, बाहिरो-छव्विहो चेदि। तत्थ बाहिरो अणसणं, आमो-दरियं, वित्ति-परिसंखा, रस-परिच्चाओ, सरीर-परिच्चाओ, विवित्त-सयणासणं चेदि। तत्थ अब्भंतरो पायच्छित्तं, विणओ, वेज्जावच्चं, सज्झाओ, झाणं, विउस्सग्गो चेदि। अब्भंतरं-बाहिरं-

बारसविहं-त्तवोकम्मं, ण कदं, णिसण्णेण पडिक्कंतं तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।३।।

वीरियायारो पंचविहो परिहाविदो वर-वीरिय-परिक्कमेण, जहुत्त-माणेण, बलेण, वीरिएण, परिक्कमेण णिगूहियं, तवो-कम्मं, ण कदं, णिसण्णेण पडिक्कंतं तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।४।।

इच्छामि भन्ते! चरित्तायारो तेरसविहो परिहाविदो पंच-महव्व-दाणि, पंच-समिदीओ, तिगुत्तीओ चेदि। तत्थ पढमे महव्वदे पाणादिवादादो वेरमणं से पुढवि-काइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, आऊ-काइया जीवा असंखेज्जा-संखेज्जा, तेऊ- काइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वाऊ-काइया जीवा असंखेज्जा संखेज्जा, वणप्फदि-काइया जीवा अणंताणंता हरिया, बीआ, अंकुरा, छिण्ण, भिण्णा, एदेसिं उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं उवघादो कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

बे-इन्दियाजीवा असंखेज्जासंखेज्जा कुक्खि, किमि, संख, खुल्लय-वराडय-अक्ख-रिट्ठय-गण्डवाल, संबुक्क, सिप्पि, पुलविकाइया एदेसिं उद्दावण, परिदावणं, विराहणं उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

ते-इन्दिया-जीवा असंखेज्जासंखेज्जा कुन्थूद्देहिय-विंछिय-गोभिंद-गोजूव-मक्कुण-पिपीलियाइया, एदेसिं उद्दावण, परिदावणं, विराहणं, उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

चउरिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा दंस-मसय-मक्खि-पयंग-कीड-भमर-महुयर-गोमच्छियाइया, एदेसिं उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं, उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

पंचिंदियाजीवा असंखेज्जासंखेज्जा अंडाइया, पोदाइया, जराइया, रसाइया, संसेदिमा, सम्मुच्छिमा, उब्भेदिमा, उववादिमा, अवि-चउरासीदि-

जोणि-पमुह-सद-सहस्सेसु एदेसिं, उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं, उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

अहावरे दुच्चे महव्वदे मुसावादादो वेरमणं से कोहेण वा, माणेण वा, माएण वा, लोहेण वा, राएण वा, दोसेण वा, मोहेण वा, हस्सेण वा, भएण वा, पदोसेण वा, पमादेण वा, पेम्मेण वा, पिवासेण वा, लज्जेण वा, गारवेण वा, अणादरेण वा, केणा-विकारणेण जादेण वा, सव्वो मुसावादो भासिओ, भासाविओ, भासिज्जंतो वि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।२।।

अहावरे तच्चे महव्वदे अदिण्णा-दाणादो वेरमणं से गामे वा, णयरे वा, खेडे वा, कव्वडे वा, मडंवे वा, मंडले वा, पट्टणे वा, दोणमुहे वा, घोसे वा, आसमे वा, सहाए वा, संवाहे वा, सण्णिवेसे वा, तिण्हं वा, कट्ठं वा, वियडिं वा, मणिं वा, एवमाइयं अदिण्णं गिण्हियं, गेण्हावियं, गेण्हिज्जंतं वि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।३।।

अहावरे चउत्थे महव्वदे मेहुणादो वेरमणं से देविएसु वा, माणुसिएसु वा तेरिच्छिएसु वा, अचेयणिएसु वा, मणुण्णामणुण्णेसु रूवेसु, मणुण्णा मणुण्णेसु सद्देसु, मणुण्णामणुण्णेसु गंधेसु, मणुण्णामणुण्णेसु रसेसु, मणुण्णामणुण्णेसु फासेसु, चक्खिंदिय-परिणामे, सोदिंदिय-परिणामे, घाणिंदिय-परिणामे, जिब्भिदिय परिणामे, फासिंदिय-परिणामे, णो-इंदिय-परिणामे, अगुत्तेण अगुत्तिंदिएण, णवविहं बंभचरियं, ण रक्खियं, ण रक्खा-वियं, ण रक्खिज्जंतो वि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।४।।

अहावरे पंचमे महव्वदे परिग्गहादो वेरमणं सो वि परिग्गहो दुविहो अब्भंतरो बाहिरो चेदि तत्थ अब्भंतरो परिग्गहो णाणावरणीयं, दंसणावरणीयं, वेयणीयं, मोहणीयं, आउग्गं, णामं, गोदं, अंतरायं चेदि अट्ठविहो, तत्थ बाहिरो परिग्गहो उवयरण-भंड-फलह-पीढ-कमण्डलु-संथार-सेज्ज-उवसेज्ज, भत्त-पाणादि-भेएण अणेयविहो, एदेण परिग्गहेण अट्ठविहं कम्मरयं बद्धं, बद्धावियं, बद्धज्जन्तं पि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।५।।

अहावरे छट्ठे अणुव्वदे राइ-भोयणादो वेरमणं से असणं, पाणं, खाइयं, रसाइयं चेदि, चउव्विहो आहारो, से तित्तो वा, कडुओ वा, कसाइलो वा, अमिलो वा, महुरो वा, लवणो वा, अलवणो वा, दुच्चिंतिओ, दुब्भासिओ, दुप्परिणामिओ, दुस्समिणिओ, रत्तीए भुत्तो, भुंजवियो, भुंज्जिजंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।६।।

पंचसमिदीओ, ईरियासमिदी, भासासमिदी, एषणासमिदी, आदावण-णिक्खेवण-समिदी, उच्चार-पस्सवण-खेल-सिंहाणय-वियडि-पइट्ठावणा-समिदी चेदि।

तत्थ-ईरियासमिदी पुव्वुत्तर-दक्खिण-पच्छिम चउदिसि, विदिसासु, विहरमाणेण, जुगंतर-दिट्ठिणा, भव्वेण दट्ठव्वा। डव-डव-चरियाए, पमाद-दोसेण, पाण-भूद-जीव-सत्ताणं, उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।७।।

तत्थ भासासमिदी कक्कसा, कडुआ, परुसा, णिट्ठुरा, परकोहिणी, मज्झंकिसा, अइ-माणिणी, अणयंकरा, छेयंकरा, भूयाण-वहंकरा चेदि। दसविहा भासा, भासिया, भासाविया, भासिज्जंतो पि समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।८।।

तत्थ एसणासमिदी अहाकम्मेण वा, पच्छा-कम्मेण वा, पुरा-कम्मेण वा, उद्दिट्ठयडेण वा, णिद्दिट्ठियडेण वा, कीडयडेण वा, साइया, रसाइया, सइंगाला, सधूमिया, अइ-गिद्धीए, अग्गीव, छण्हं जीव-णिकायाणं, विराहणं, काऊणं, अपरिसुद्धं, भिक्खं अण्णं, पाणं, आहारादिय, आहारारियं, आहारवियं, आहारिज्जंतं पि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।९।।

तत्थ आदाण-णिक्खेवण-समिदी चक्कलं वा, फलहं वा, पोत्थयं वा, पीढं वा, कमण्डलु वा, वियडिं वा, मणिं वा, एवमाइयं, उवयरणं, अप्पडिलेहिऊण-गेण्हंतेण वा, ठवंतेण वा, पाण-भूद-जीव-सत्ताणं, उवघादो,

कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।१०।।

तत्थ उच्चार-पस्सवण-खेल-सिंहाणय-वियडि-पइट्ठावणिया समिदी रत्तीए वा, वियाले वा, अचक्खु-विसए, अवत्थंडिले, अब्भोवयासे, सणिद्धे, सवीए, सहरिए, एवमाइयासु, अप्पासु-गट्ठाणेसु, पइट्ठावंतेण, पाण-भूद- जीव-सत्ताणं, उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।११।।

तिण्णि-गुत्तीओ मण-गुत्तीओ, वचि-गुत्तीओ, काय-गुत्तीओ चेदि। तत्थ मण-गुत्ती अट्टे झाणे, रुद्दे झाणे, इह-लोय-सण्णाए, पर-लोए-सण्णाए, आहार-सण्णाए, भय-सण्णाए, मेहुण-सण्णाए, परिग्गह-सण्णाए, एवमाइयासु जा मण-गुत्ती, ण रक्खिया, ण रक्खाविया, ण रक्खिज्जंतं ने समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।१२।।

तत्थ वचि-गुत्ती इत्थि-कहाए, अत्थ-कहाए, भत्त-कहाए, राय-कहाए, चोर-कहाए, वेर-कहाए, पर-पासंड-कहाए, एवमाइयासु जा वचि-गुत्ती, ण रक्खिया, ण रक्खाविया, ण रखिज्जंतं वि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।१३।।

तत्थ काययुत्ती चित्त-कम्मेसु वा, पोत्त-कम्मेसु वा, कट्ठ-कम्मेसु वा, लेप्प-कम्मेसु वा, लय-कम्मेसु वा, एवमाइयासु जा काय-गुत्ती, ण रक्खिया, ण रक्खाविया, ण रक्खिज्जंतं वि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।१४।।

णवसु, बंभचेरगुत्तीसु, चउसु सण्णासु, चउसु पच्चएसु, दोसु अट्ट-रुद्द-संकिलेस-परिणामेसु, तीसु अप्प-सत्थ-संकिलेस-परिणामेसु, मिच्छाणाण-मिच्छादंसण-मिच्छाचरित्तेसु, चउसु उवसग्गेसु, चउसु सण्णासु, चउसु पच्चएसु, पंचसु चरित्तेसु, छसु जीव-णिकाएसु, छसु आवासएसु, सत्तसु भयेसु, अट्ठसु सुद्धीसु, णवसु बंभचेर-गुत्तीसु, दससु समण-धम्मेसु,

दससु धम्म-ज्झाणेसु, दससु मुण्डेसु, बारसेसु संजमेसु, बावीसाए परीसहेसु, पणवीसाए भावणासु, पणवीसाए किरियासु, अट्ठारस-सील-सहस्सेसु, उचरासीदि-गुण-सय-सहस्सेसु, मूलगुणेसु, उत्तरगुणेसु (अट्ठमियम्मि), (पक्खियम्मि), (चउमासियम्मि), (संवच्छरियम्मि), अदिक्कमो, वदिक्कमो, अइचारो, अणाचारो, आभोगो, अणाभोगो जो तं पडिक्कमामि। मए पडिक्कंतं तस्स मे सम्मत्तमरणं, समाहि मरणं, पंडिय-मरणं, वीरिय-मरणं, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ-गमणं, समाहि-मरणं, जिणगुण-सम्पत्ति होदु मज्झं।

(यहाँ से नीचे लिखी सम्पूर्ण क्रिया मात्र आचार्यश्री को करना चाहिए।)

नमोऽस्तु सर्वातिचार-विशुद्ध्यर्थं सिद्ध-भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

लघु सिद्धभक्ति

सम्मत्त-णाण-दंसण-वीरिय-सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरु-लघु-मव्वावाहं अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं।।१।।

तवसिद्धे, णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे यं।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि।।२।।

अञ्चलिका

इच्छामि भन्ते! सिद्धभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्त-जुत्ताणं, अट्ठविहकम्मविप्पमुक्काणं, अट्ठगुण-संपण्णाणं, उड्ढलोय-मत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं, णयसिद्धाणं, संजमसिद्धाणं, चरित्तसिद्धाणं अतीता-णागद-वट्टमाण-कालत्तय सिद्धाणं, सव्वसिद्धाणं सया णिच्चकालं, अंचेमि, पूजेमि, वन्दामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ-गमणं, समाहि-मरणं, जिण-गुण-सम्पत्ति होदु मज्झं।

नमोऽस्तु सर्वातिचार-विशुद्ध्यर्थ-मालोचना-योगि-भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।१।।

(कायोत्सर्ग करना और **चतुर्विंशंति स्तव** पाठ पढ़कर निम्नलिखित **लघुयोग भक्ति** पढ़ें।)

लघु योगिभक्ति

प्रावृट्-काले सविद्युत-प्र-पतित-सलिले वृक्ष-मूलाधिवासाः,
हेमन्ते रात्रि-मध्ये-प्रति-विगत-भयाः काष्ठ-वत्-त्यक्त-देहाः।
ग्रीष्मे सूर्यांशु-तप्ता-गिरि-शिखर-गताः स्थान-कूटांतर-स्थास्-,
ते मे धर्मं प्रदद्युर्मुनि-गण-वृषाभा मोक्ष-निःश्रेणि-भूताः।।१।।

गिम्हे गिरि-सिहरत्था वरिसा-याले रुक्ख-मूल-रयणीसु
सिसरे वाहिर-सयणा ते साहू वंदिमो णिच्चं।।२।।

गिरि-कन्दर-दुर्गेषु ये वसन्ति दिगम्बराः।
पाणि-पात्र-पुटाहारा-स्ते यांति परमां गतिम्।।३।।

अञ्चलिका

इच्छामि भन्ते! योगिभत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, अड्ढाइज्ज-दीव-दो-समुद्देसु, पण्णा-रस-कम्म-भूमिसु, आदावण-रुक्ख-मूल-अब्भोवास-ठाण-मोण-वीरासणेक्कपास-कुक्कुडासण-चउ-छ-पक्ख-खव-णादि-जोग-जुत्ताणं सव्वसाहूणं सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो, सुगइ-गमणं समाहि-मरणं, जिणगुणसंपत्तिं होदु मज्झं।

आलोचना

इच्छामि भंते! चारित्तायारो, तेरसविहो, परिहाविदो, पंच-महव्वदाणि, पंच-समिदीओ, ति-गुत्तीओ चेदि। तत्थ पढमे महव्वदे पाणादिवादादो वेरमणं से पुढवि-काइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, आऊ-काइया जीवा असंखेज्जा-संखेज्जा, तेऊ-काइया-जीवा असंखेज्जा-संखेज्जा, वाऊ-काइया-जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वणप्फदि-काइया जीवा अणंताणंता हरिया, बीआ, अंकुरा, छिण्णा, भिण्णा, एदेसिं उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं

उवघादो कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।१।।

बे-इन्दियाजीवा असंखेज्जासंखेज्जा कुक्खि, किमि, संख, खुल्लय-वराडय-अक्ख-रिट्ठय-गण्डवाल, संब्बुक, सिप्पि, पुलविकाइया एदेसिं उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।२।।

ते-इन्दिया-जीवा असखेज्जासंखेज्जा कुन्थूद्देहिय-विंच्छिय-गोभिंद-गोजुव-मक्कुण-पिपीलियाइया, एदेसिं उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं, उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।३।।

चउरिंदिया-जीवा असंखेज्जासंखेज्जा दंस-मसय-मक्खि-पयंग-कीड-भमर-महुयर-गोमच्छियाइया, एदेसिं उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं, उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।४।।

पंचिंदियाजीवा असंखेज्जासंखेज्जा अंडाइया, पोदाइया, जराइया, रसाइया, संसेदिमा, सम्मुच्छिमा, उब्भेदिमा, उववादिमा, अवि-चउरासीदि-जोणि-पमुह-सद-सहस्सेसु, एदेसिं, उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं, उवघादो कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।५।।

वद-समि-दिंदिय-रोधोलोचावासय-मचेल-मण्हाणं।
खिदि-सयण-मदंतवणं ठिदि-भोयण-मेय-भत्तं च।।१।।

एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता।
एत्थ पमाद कदादो अइचारादो णियत्तो हं।।२।।

छेदोवट्ठावणं होदु मज्झ।।१।।

इस प्रकार आचार्यश्री उपर्युक्त पाठ को बोलकर अरहंतदेव के समक्ष अपने दोषों की आलोचना करें। पश्चात् जैसे दोष लगे हों उनके अनुसार स्वयं प्रायश्चित्त लेकर निम्नलिखित पाठ तीन बार बोलें।

पंचमहाव्रत-पंचसमिति-पंचेन्द्रियरोध-लोच-षडावश्यक-क्रियादयोऽष्टाविंशति-मूलगुणाः, उत्तमक्षमा-मादवार्जव-शौच-सत्य-संयम-तप-त्यागाकिञ्चन्य-ब्रह्मचर्याणि दशलाक्षणिको धर्मः, अष्टादश-शील-सहस्राणि, चतुरशीति-लक्ष-गुणा, त्रयोदशविधं चारित्रं, द्वादशविधं तपश्चेति। सकलं-सम्पूर्णं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व-साधु-साक्षिकं सम्यक्त्व-पूर्वकं दृढ़-व्रतं, सुव्रतं, समारूढं ते मे भवतु।। ...३

उपर्युक्त पाठ पूरा करके प्रायश्चित्त के योग्य शिष्यों को प्रायश्चित्त देवें। पश्चात् देव के लिए निम्नलिखित गुरुभक्ति बोलें।

निष्ठापनाचार्य भक्तिः

नमोऽस्तु निष्ठापनाचार्यभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।।
श्रुत-जलधि-पारगेभ्यः स्व-पर-मत-विभावना-पटु-मतिभ्यः
सुचरित-तपो-निधिभ्यो नमो गुरुभ्यो गुण-गुरुभ्यः।।१।।

छत्तीस-गुण-समग्गे पंच-विहाचार-करण संदरिसे।
सिस्साणुग्गह-कुसले धम्माइरिए सदा वन्दे।।२।।

गुरु-भत्ति संजमेण य तरंति संसार-सायरं घोरं।
छिण्णंतिं अट्ठ-कम्मं जम्मण-मरणं ण पावेंति।।३।।

ये नित्यं व्रत-मंत्र-होम-निरता ध्यानाग्नि-होत्रा कुलाः।
षट्-कर्माभि-रतास्तपो-धन-धनाः साधु क्रिया-साधवः।।
शील-प्रावरणा गुण-प्रहरणा-श्चश्चन्द्रार्क-तेजोधिका।
मोक्ष-द्वार-कपाट-पाटन-भटाः प्रीणंतु मां साधवः।।४।।

गुरुवः पान्तु नो नित्यं ज्ञान-दर्शन-नायकाः।
चारित्रार्णव-गंभीरा मोक्ष-मार्गोपदेशकाः।।५।।

हे स्वामिन्! अस्मिन पक्षे (चतुर्मासे या संवत्सरे) अष्टाविंशति

मूलगुणेषु (एकादश-प्रतिमासु या सप्तमप्रतिमासु) दिवसे वा रात्रौ वा आहारे विहारे निहारे च, जागरणे स्वप्ने च, मनसा, वचसा, कायेन, कृतकारितानुमोदनैः क्रोधेन मानेन मायाया लोभेन रागेण द्वेषेण मोटेन भयेन लज्जया प्रमादेन ज्ञाताज्ञात भावेन च मया अतिक्रमव्यतिक्रम-अतिचार-अनाचारादयो ये केचित् दोषाः संजाताः तेषां शुद्ध्यर्थं भवद्भिः मे प्रायश्चितं प्रदीयताम्।

(यहाँ आचार्य सहित शिष्य मुनि और साधर्मी मुनि मिलकर आचार्यश्री के आगे निम्नलिखित पाठ बोलें।)

इच्छामि भंते! (पक्खियम्मि), (चउमासियम्मि) (संवच्छरियम्मि) आलोचेउं, पंचमहव्वदाणि तत्थ पढमं महव्वदं पाणादिवादादो वेरमणं, विदियं महव्वदं मुसावादादो वेरमणं, तिदियं महव्वदं अदिण्णा-दाणादो वेरमणं, चउत्थं महव्वदं मेहुणादो वेरमणं, पंचमं महव्वदं परिग्गहादो वेरमणं, छट्ठं अणुव्वदं राइ-भोयणादो वेरमणं, तिस्सु गुत्तीसु, णाणेसु, दंसणेसु, चरित्तेसु, बावीसाए परीसहेसु, पण-वीसाए भावणासु, पण-वींसाए किरियासु, अट्ठारस-सील-सहस्सेसु, चउरासीदि-गुण-सय-सहस्सेसु, बारसण्हं संजमाणं, बारसण्हं तवाणं, बारसण्हं अंगाणं, तेरसण्हं चरित्ताणं, चउदसण्हं पुव्वाणं, एयारसण्हं पडिमाणं दसविह मुण्डाणं, दसविह-समण-धम्माणं, दसविह-धम्म-ज्झाणाणं, णवण्हं बंभचेर-गुत्तीणं, णवण्हं णो-कसायाणं, सोलसण्हं कसायाणं, अट्ठण्हं कम्माणं, अट्ठण्हं सुद्धीणं, अट्ठण्हं पउयण-माउयाणं, सत्तण्हं भयाणं, सत्तविह-संसाराणं, छण्हं जीव-णिकायाणं, छण्हं आवासयाणं, पंचण्हं इन्दियाणं, पंचण्ह महव्वयाणं, पंचण्हं समिदीणं, पंचण्हं चरित्ताणं, चउण्हं सण्णाणं, चउण्हं पच्चयाणं, चउण्हं उवसग्गाणं, मूलगुणाणं, उत्तरगुणाणं, अट्ठण्हं सुद्धीणं, दिट्ठियाए, पुट्ठियाए, पदोसियाए, परिदावणियाए, से कोहेण वा, माणेण वा, माएण वा, लोहेण वा, रागेण वा, दोसेण वा, मोहेण वा, हस्सेण वा, भएण वा, पदोसेण वा, पमादेण वा, पिम्मेण वा, पिवासेण वा, लज्जेण वा, गारवेण

वा, एदेसिं अच्चासणदाए, तिण्हं दंडाणं, तिण्हं लेस्साणं, तिण्हं गारवाणं, तिण्हं अप्पसत्थ-संकिलेस-परिणामाणं, दोण्हं अट्टरुद्द, संकिलेस-परि-णामाणं, मिच्छाणाण-मिच्छादंसण-मिच्छाचरित्ताणं, मिच्छत्त-पाउग्गं, असंजम-पाउग्गं, कसाय-पाउग्गं, जोग-पाउग्गं, अप्पाउग्ग-सेवणदाए, पाउग्ग-गरहणदाए इत्थ मे जो कोई (पक्खियम्मि) (चउमासियम्मि) (संवच्छरियम्मि) अदिक्कमो, वदिक्कमो, अइचारो, अणाचारो, आभोगो, अणाभोगो, तस्स भंते! पडिक्कमामि पडिक्कंमं तस्स मे सम्मत्त-मरणं, पंडिय-मरणं, वीरिय-मरणं, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो, सुगइ-गमणं, समाहि-मरणं, जिण-गुण-संपत्ति, होउ मज्झ।

वद-समि-दिंदिय-रोधोलोचावासय-मचेल-मण्हाणं।
खिदि-सयण-मदंतवणं ठिदि-भोयण-मेय-भत्तं च।।१।।

एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता।
एत्थ पमाद कदादो अइचारादो णियत्तो हं।।२।।
छेदोवट्टावणं होदु मज्झ।।2।।

पंचमहाव्रत-पंचसमिति-पंचेन्द्रियरोध-लोच-षडावश्यक-क्रियादयोऽष्टाविंशति-मूलगुणाः, उत्तमक्षमा-मार्दवार्जव-शौच-सत्य-संयम-तप-स्त्यागाकिञ्चन्य-ब्रह्मचर्याणि दशलाक्षणिको धर्मः, अष्टादश-शील-सहस्राणि, चतुरशीति-लक्ष-गुणा, त्रयोदशविधं चारित्रं, द्वादशविधं तपश्चेति। सकलं-सम्पूर्णं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व-साधु-साक्षिकं सम्यक्त्व-पूर्वकं दृढ़-व्रतं, सुव्रतं, समारूढं ते मे भवतु।। ...३

प्रतिक्रमणभक्तिः

अथ सर्वातिचार-विशुद्ध्यर्थं (पाक्षिक) (चातुर्मासिक) (वार्षिक) प्रतिक्रमण-क्रियायां कृत-दोष-निराकरणार्थं पूवाचार्यानुक्रमेण, सकल-कर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री प्रतिक्रमणभक्ति कायोत्सर्गं

करोम्यहम् ।

(इस प्रकार विज्ञापन पढ़कर आचार्यश्री सभी शिष्य एवं साधर्मी मुनिगण के साथ **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं.-२१३) पढ़े। पश्चात् **चतुर्विंशति स्तव** (पृष्ठ सं-२१४) पढ़कर कायोत्सर्ग करें।

अब मात्र आचार्यश्री निम्नलिखित गणधर वलय का पाठ करें।

गणधर-वलय स्तोत्र

जिनान् जितारति-गणान् गरिष्ठान्, देशावधीन् सर्व-परावधींश्च।
सत्-कोष्ठ-बीजादि-पदानुसारीन्, स्तुवे गणेशानपि तद्-गुणाप्त्यै।।१।।

संभिन्न-श्रोतान्वित-सन्-मुनीन्द्रान्, प्रत्येक-सम्बोधित-बुद्ध-धर्मान्।
स्वयं-प्रबुद्धांश्च विमुक्ति-मार्गान्, स्तुवे गणेशानपि तद्-गुणाप्त्यै।।२।।

द्विधा मनःपर्यय-चित्-प्रयुक्तान्, द्विपंच-सप्तद्वय-पूर्व-सक्तान्।
अष्टांग-नैमित्तिक शास्त्र-दक्षान्, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै।।३।।

विकुर्वणाख्यर्द्धि-महा-प्रभावान्, विद्याधरांश्चारण-ऋद्धि-प्राप्तान्।
प्रज्ञाश्रितान् नित्य-ख-गामिनश्च, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै।।४।।

आशी र्विषान् दृष्टि-विषान् मुनीन्द्रा-, नुग्राति-दीप्तोत्तम-तप्त तप्तान्।
महातिघोर-प्रतपःप्रसक्तान् स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै।।५।।

वन्द्यान् सुरै-र्घोर-गुणांश्च लोके, पूज्यान् बुधै-र्घोर-पराक्रमांश्च।
घोरादि-संसद्-गुण-ब्रह्म युक्तान्, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै।।६।।

आमर्द्धि-खेलर्द्धि-प्रजल्ल-विटप्र-सर्वर्द्धि-प्राप्तांश्च व्यथादि हंत्रृन्।
मनो-वचः काय-बलोपयुक्तान्, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै।।७।।

सत् क्षीर-सर्पि-र्मधुरामृतर्द्धीन, यतीन् वराक्षीण महानसांश्च।
प्रवर्धमानांस्त्रिजगत्-प्रपूज्यान्, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै।।८।।

सिद्धालयान् श्रीमहतोऽतिवीरान्, श्रीवर्धमानर्द्धि विबुद्धि-दक्षान्।
सर्वान् मुनीन् मुक्तिवरा-नृषीन्द्रान्, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै।।९।।

नृ सुर-खचर-सेव्या विश्व-श्रेष्ठर्द्धि-भूषा,
विविध-गुण-समुद्रा मार-मातंग-सिंहाः।
भवजल-निधिपोता वन्दिता मे दिशन्तु,
मुनिगणसकलान् श्रीसिद्धिदाः सदृषीन्द्रान्।।१०।।

अनुष्टुप छन्द

नित्यं यो गुणभृन्मन्त्र, विशुद्धसन् जपत्यमुम्।
आस्रवस्तस्य पुयानां, निर्जरा पापकर्मणाम्।।
नश्यादुपद्रवकश्चिद्, व्याधिभूत विषादिभिः।
सदसत् वीक्षणे स्वप्ने, समाधिश्च भवेन्मृतो।।११।।

प्रतिक्रमण-दण्डक

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं।।

गणधरवलयमंत्रः

णमो जिणाणं [१], णमो ओहि-जिणाणं [२], णमो परमोहि-जिणाणं [३], णमो सव्वोहि-जिणाणं [४], णमो अणंतोहि-जिणाणं [५], णमो कोट्ठ- बुद्धीणं [६], णमो बीज-बुद्धीणं [७], णमो पादाणु-सारीणं [८], णमो संभिण्ण-सोदारणं [९], णमो सयं-बुद्धाणं [१०], णमो पत्तेय-बुद्धाणं [११], णमो बोहिय-बुद्धाणं [१२], णमो उजु-मदीणं [१३], णमो विउल-मदीणं [१४], णमो दस पुव्वीणं [१५], णमो चउदस-पुव्वीणं [१६], णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं [१७], णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं [१८], णमो विज्जाहराणं [१९], णमो चारणाणं [२०], णमो पण्ण-समणाणं [२१], णमो आगास-गामीणं [२२], णमो आसी-विसाणं [२३], णमो दिट्ठिविसाणं [२४], णमो उग्ग-त्तवाणं [२५], णमो दित्त-त्तवाणं [२६], णमो तत्त-त्तवाणं [२७], णमो महा-त्तवाणं [२८], णमो घोर-त्तवाणं [२९], णमो घोर-गुणाणं [३०], णमो घोर-परक्कमाणं [३१], णमो घोर-गुण-बंभयारीणं [३२], णमो आमोसहि-पत्ताणं [३३], णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं [३४], णमो जल्लोसहि-पत्ताणं [३५], णमो विप्पोसहि-पत्ताणं [३६], णमो सव्वोसहि-पत्ताणं [३७], णमो मण-बलीणं [३८], णमो वचि-बलीणं [३९], णमो काय-बलीणं [४०], णमो

खीर-सवीणं [४१], णमो सप्पि-सवीणं [४२], णमो महुर-सवीणं [४३], णमो अमिय-सवीणं [४४], णमो अक्खीण महाणसाणं [४५], णमो वड्ढमाणाणं [४६], णमो सिद्धायदणाणं [४७], णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढ-माण-बुद्ध-रिसीणो [४८] चेदि।

जस्संतियं धम्म-पहं णियच्छे, तस्संतियं वेणइयं पउं जे।
काएण वाचा मणसा वि णिच्चं सक्कारए तं सिर-पंचमेण।।१।।

सुदं मे आउस्संतो! इह खलु समणेण, भयवदो, महदि-महावीरेण, महा-कस्सवेण, सव्वण्हुणा, सव्व-लोग-दरिसिणा, सदेवासुर-माणुसस्स लोयस्स, आगदि-गदि-चवणोववादं, बंधं, मोक्खं, इड्ढिं, ठिदिं, जुदिं, अणुभागं, तक्कं, कलं, मणो-माणसियं, भूतं, कयं, पडिसेवियं, अदिकम्मं, अरुह-कम्मं सव्वलोए, सव्वजीवे, सव्वभावे, सव्वं समं जाणंता पस्संता विहर-माणेण, समणाणं, पंचमहव्वदाणि, राइ भोयण-वेरमण- छट्ठाणि, स-भावणाणि, समाउग पदाणि, स-उत्तर-पदाणि, सम्मं धम्मं उवदेसिदाणि। तं जहा-

पढमे महव्वदे पाणादिवादादो वेरमणं, विदिए महव्वदे मुसावादादो वेरमणं, तिदिए, महव्वदे अदिण्ण-दाणादो वेरमणं, चउत्थे महव्वदे मेहुणादो वेरमणं, पंचमे महव्वदे परिग्गहादो वेरमणं, छट्ठे अणुव्वदे राइ-भोयणादो वेरमणं चेदि।

तत्थ पढमे महव्वदे सव्वं भंते! पाणादिवादं पच्चक्खामि जावज्जीवं, तिविहेण-मणसा, वचिया, काएण, से एइन्दिया वा, बे इन्दिया वा, ते इन्दिया वा, चउरिंदिया वा, पंचिंदिया वा, पुढवि-काइए वा, आऊ-काइए वा, तेऊ-काइए वा, वाऊ-काइए वा, वणप्फदि-काइए वा, तस-काइए वा, अंडाइए वा, पोदइए वा, जराइए वा, रसाइए वा, संसेदिमे वा, सम्मुच्छिमे वा, उब्भेदिमे वा, उववादिमे वा, तसे वा, थावरे वा, बादरे वा, सुहुमे वा, पाणे वा, भूदे वा, जीवे वा, सत्ते वा, पज्जत्ते वा, अपज्जत्ते वा,

अविचउरासीदि-जोणि-पमुह-सद-सहस्सेसु, णेव सयं पाणादिवादिज्ज, णो अण्णेहिं पाणे अदिवादावेज्ज, अण्णेहिं पाणे, अदि-वादिज्जंतो वि ण समणुमणिज्ज तस्स भंते! अइचारं पडिक्कमामि, णिंदामि, गरहामि, अप्पाणं, वोस्सरामि पुव्विचणं भंते! जं पि मए रागस्स वा, दोसस्स वा, मोहस्स वा, वसंगदेण सयं पाणे अदिवादिदे, अण्णेहिं पाणे, अदिवादाविदे, अण्णेहिं पाणे अदिवादिज्जंते वि समणुमण्णिदे तं पि।

ʊ... इमस्स णिग्गंथस्स, पावयणस्स, अणुत्तरस्स, केवलियस्स, केवलि-पण्णत्तस्स-धम्मस्स-अहिंसा-लक्ख-णस्स, सच्चाहिट्ठियस्स, विणय-मूलस्स, खमा-बलस्स, अ्ठारस-सील-सहस्स-परिमंडियस्स, चउरासीदि-गुण-सय-सहस्स, विहूसियस्स, णव-बंभचेर-गुत्तस्स, णियदि-लक्खणस्स, परिचाग-फलस्स, उवसम-पहाणस्स, खंति-मग्ग-देसयस्स, मुत्ति-मग्ग-पयासयस्स, सिद्धि-मग्ग-पज्जव-साहणस्स, से कोहेण वा, माणेण वा, मायाए वा, लोहेण वा, अण्णाणेण वा, अदंसणेण वा, अवीरिएण वा, असंयमेण वा, असमणेण वा, अणहि-गमणेण वा, अभिमंसिदाए वा, अबोहिदाए वा, रागेण वा, दोसेण वा, मोहेण वा, हस्सेण वा, भएण वा, पदोसेण वा, पमादेण वा, पेम्मेण वा, पिवासेण वा, लज्जेण वा, गारवेण वा, अणादरेण वा, केण वि कारणेण जादेण वा, आलसदाए, बालिसदाए, कम्म-भारिगदाए, कम्म-गुरु-गदाए कम्म-दुच्चरिदाए, कम्म-पुरुक्कडदाए, ति-गारव-गुरु-गदाए, अबहु-सुददाए, अविदिद-परमट्ठदाए, तं सव्वं पुव्वं, दुच्चरियं गरिहामि, आगमेसिं च अपच्च-क्खियं-पच्चक्खामि, अणालोचियं-आलोचेमि, अणिंदियं-णिंदामि, अगरहियं-गरिहामि, अपडिक्कंतं-पडिक्कमामि,

विराहण वोस्सरामि—आराहणं अब्भुट्ठेमि,
अण्णाणं बोस्सरामि,—सण्णाणं अब्भुट्ठेमि,
कुदंसणं वोस्सरामि,—सम्मदंसणं अब्भुट्ठेमि,
कुचरियं वोस्सरामि,—सुचरियं अब्भुट्ठेमि,
कुतवं वोस्सरामि,—सुतवं अब्भुट्ठेमि,

अकरणिज्जं वोस्सरामि,—करणिज्जं अब्भुट्ठेमि,
अकिरियं वोस्सरामि,—किरियं अब्भुट्ठेमि,
पाणादिवादं वोस्सरामि,—अभयदाणं अब्भुट्ठेमि,
मोसं वोस्सरामि,—सच्चं अब्भुट्ठेमि,
अदत्तादाणं वोस्सरामि,—दिण्णं-कप्प-णिज्जं अब्भुट्ठेमि,
अबंभं वोस्सरामि,—बंभचरियं अब्भुट्ठेमि,
परिग्गहं वोस्सरामि,—अपरिग्गहं अब्भुट्ठेमि,
राइ-भोयण वोस्सरामि,—दिवाभोयणमेगभत्तंपच्चुप्पणंफासुगंअब्भुट्ठेमि,
अट्ट-रुद्द-ज्झाणं वोस्सरामि,—धम्म- सुक्क-ज्झाणं अब्भुट्ठेमि,
किण्ह-णील-काउ-लेस्सं वोस्सरामि, तेउ-पम्म-सुक्क-लेस्सं अब्भुट्ठेमि,
आरंभं वोस्सरामि,—अणारंभं अब्भुट्ठेमि,
असंजमं वोस्सरामि,—संजमं अब्भुट्ठेमि,
सग्गंथं वोस्सरामि,—णिग्गंथं अब्भुट्ठेमि,
सचेलं वोस्सरामि,—अचेलं अब्भुट्ठेमि,
अलोचं वोस्सरामि,—लोचं अब्भुट्ठेमि,
ण्हाणं वोस्सरामि,—अण्हाणं अब्भुट्ठेमि,
अखिदि-सयणं वोस्सरामि,—खिदि-सयणं अब्भुट्ठेमि,
दंतवणं वोस्सरामि,—अदंतवणं अब्भुट्ठेमि,
अट्ठिदि-भोयणं वोस्सरामि, ठिदि-भोयण-मेग-भत्तं अब्भुट्ठेमि,
अपाणि पत्तं वोस्सरामि, पाणि पत्तं अब्भुट्ठेमि,
कोहं वोस्सरामि,—खंतिं अब्भुट्ठेमि,
माणं वोस्सरामि,—मद्दवं अब्भुट्ठेमि,
मायं वोस्सरामि,—अज्जवं अब्भुट्ठेमि,
लोहं वोस्सरामि,—संतोसं अब्भुट्ठेमि,

अतवं वोस्सरामि,–दुवादस-विह-त्तवो-कम्मं अब्भुट्ठेमि।
मिच्छत्तं परिवज्जामि,–सम्मत्तं उवसंपज्जामि,
असीलं परिवज्जामि,–सुसीलं उवसंपज्जामि,
ससल्लं परिवज्जामि,–णिसल्लं उवसंपज्जामि,
अविणयं परिवज्जामि,–विणयं उवसंपज्जामि,
अणाचारं परिवज्जामि,–आचारं उवसपज्जामि,
उम्मग्गं परिवज्जामि,–जिणमग्गं उवसंपज्जामि,
अखतिं परिवज्जामि,–खंतिं उवसंपज्जामि,
अगुत्तिं परिवज्जामि,–गुत्तिं उवसंपज्जामि,
अमुत्तिं परिवज्जामि,–सुमुत्तिं उवसंपज्जामि,
असमाहिं परिवज्जामि,–सुसमाहिं उवसंपज्जामि,
ममत्तिं परिवज्जामि,–णिममत्तिं उवसंपज्जामि,

अभावियं भावेमि, भावियं ण भावेमि, इमं णिग्गंथं पव्वयणं, अणुत्तरं केवलियं-पडिपुण्णं, णेगाइयं, सामाइयं संसुद्धं, सल्लघट्टाणं-सल्लघत्ताणं, सिद्धि-मग्गं, सेढि मग्गं, खंति- मग्गं, मुत्ति-मग्गं, पमुत्ति-मग्गं, मोक्ख-मग्गं, पमोक्ख-मग्गं, णिज्जाण- मग्गं, णिव्वाण-मग्गं, सव्व-दुक्ख-परिहाणि-मग्गं, सु-चरिय-परिणिव्वाण- मग्गं, जत्थ-ठिया-जीवा, सिज्झंति, बुज्झंति, मुंचंति, परिणिव्वाणयंति, सव्व-दुक्खाणमतं करेंति। तं सद्दहामि, तं पत्तियामि, तं रोचेमि, तं फासेमि, इदो उत्तरं, अण्णं णत्थि, ण भूदं, ण भवं ण भविस्सदि (कयाचिवा कुदोचिवा) णाणेण वा, दंसणेण वा, चरित्तेण वा, सुत्तेण वा, सीलेण वा, गुणेण वा, तवेण वा, णियमेण वा, वदेण वा, विहारेण वा, आलएण वा, अज्जवेण वा, लाहवेण वा, अणणेण वा, वीरिएण वा, समणोमि, संजदोमि, उवरदोमि, उवसंतोमि, उवधि-णियडि-माण-माया-मोस- मूरण, मिच्छाणाण- मिच्छादंसण

मिच्छाचरित्तं च पडिविरदोमि। सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्तं च रोचेमि। जं जिणवरेहिं पण्णत्तो, जो मए देवसिय, राइय पक्खिय (चाउम्मासिय) (संवच्छरिय) इरियावहि- केस-लोचाइचारस्स, संथारादिचारस्स, पंथादिचारस्स, सव्वादिचारस्स, उत्तमट्ठस्स सम्मचरित्तं च रोचेमि।

पढमे महव्वदे पाणादिवादादो वेरमणं, उवट्ठा-वण-मंडले, महत्थे, महागुणे, महाणुभावे, महाजसे, महा-पुरिसाणु-चिण्णे, अरहंत-सक्खियं, सिद्ध-सक्खियं, साहु-सक्खियं, अप्प-सक्खियं, पर-सक्खियं, देवता-सक्खियं, उत्तमट्ठम्हि। "इदं मे महव्वदं, सुव्वदं, दढव्वदं होदु, णित्थारयं, पारयं, तारयं, आराहियं चावि ते मे भवतु।।"

प्रथमं महाव्रतं सर्वेषां व्रतधारिणां सम्यक्त्व-पूर्वकं, दृढव्रतं, सुव्रतं, समारूढं ते मे भवतु।।...३।।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।...३

अहावरे विदिए महव्वदे सव्वं भंते! मुसावादं पच्चक्खामि, जावज्जीवेण तिविहेण मणसा-वचसा-काएण, से कोहेण वा, माणेण वा, माएण वा, लोहेण वा, रागेण वा, दोसेण वा, मोहेण वा, हस्सेण वा, भएण वा, पदोसेण वा, पमादेण वा, पिम्मेण वा, पिवासेण वा, लज्जेण वा, गारवेण वा, अणादरेण वा, केण वि कारणेण जादेण वा, णेव सयं मोसं भासेज्ज, णो अण्णेहिं मोसं भासाविज्ज, णो अण्णेहिं मोसं भासिज्जंतं पिण समणुमणिज्ज। तस्स भंते! अइचारं पडिक्कमामि, णिंदामि, गर-हामि, अप्पाणं वोस्सरामि।

पुव्विचणं भंते! जं पि मए रागस्स वा, दोसस्स वा, मोहस्स वा, वसंगदेण सयं मोसं भासियं, अण्णेहिं मोसं भासावियं, अण्णेहिं मोसं भासिज्जंतं पि समणुमण्णिदो तं वि।

इमस्स णिग्गंथस्स से ... उत्तमट्ठस्स सम्मचरित्तं च रोचेमि तक पृष्ठ संख्या २३४ से २३७ में से देखकर पढ़ें।

विदिए महव्वदे मुसावादादो वेरमणं, उवट्ठा-वण-मंडले, महत्थे, महागुणे, महाणुभावे, महाजसे, महा-पुरिसाणु-चिण्णे, अरहंत-सक्खियं, सिद्ध-सक्खियं, साहु-सक्खियं, अप्प-सक्खियं, पर-सक्खियं, देवता-सक्खियं, उत्तमट्ठम्मि। "दइं मे महव्वदं, सुव्वदं, दढव्वदं होदु, णित्थारयं, पारयं, तारयं, आराहियं चावि ते मे भवतु।।"

द्वितीय महाव्रतं सर्वेषां व्रतधारिणां सम्यक्त्व-पूर्वकं, दृढव्रतं, सुव्रतं, समारूढं ते मे भवतु।।...३।।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।...३

अहावरे तिदिए महव्वदे सव्वं भंते! अदिण्णादाणं- पच्चक्खामि जावज्जीवं, तिविहेण मणसा-वचसा-काएण, से देसे वा, गामे वा, णयरे वा, खेडे वा, कव्वडे वा, मंडवे वा, मंडले वा, पट्टणे वा, दोणमुहे वा, घोसे वा, आसणे वा, सहाए वा, संवाहे वा, सण्णिवेसे वा, तिणं वा, कट्ठं वा, वियडिं वा, मणिं वा, खेत्ते वा, खले वा, जले वा, थले वा, पहे वा, उप्पहे वा, रण्णे वा, अरण्णे वा, णट्ठं वा, पमुट्ठं वा, पडिदं वा, अपडिद वा, सुणिहिदं वा, दुण्णिहिदं वा, अप्पं वा, बहुं वा, अणुयं वा, थूलं वा, सचित्तं वा, अचित्तं वा, मज्झत्थं वा, बहित्थं वा, अवि दंतंतर-सोहण-पिमित्तं, वि णेव सयं अदत्तं गेण्हिज्ज, णो अण्णेहिं अदत्तं गेण्हाविज्ज णो अण्णेहिं अदत्तं गेण्हाविज्ज अण्णेहिं अदत्तं गेण्हिज्जंतं पि ण समणुमणिज्ज, तस्स भंते! अइचारं, पडिक्कमामि, णिंदामि, गरहामि, अप्पाणं वोस्सरामि।

पुव्विंचणं भंते! जं पि मए रागस्स वा, दोसस्स वा, मोहस्स वा, वसंगदेण सयं अदत्तं गेणिहदं अण्णेहिं अदत्तं गेण्हाविदं अण्णेहिं अदत्तं गोण्णज्जतं पि समणुमाण्णदो तं पि-

इमस्स णिग्गंथस्स से ... उत्तमट्ठस्स सम्मचरित्तं च रोचेमि तक पृष्ठ संख्या २३४ से २३७ में से देखकर पढ़ें।

तिदिए महव्वदे अदिण्णा-दाणादो वेरमणं, उवट्ठा-वण-मंडले, महत्थे, महागुणे, महाणुभावे, महाजसे, महा-पुरिसाणु-चिण्णे, अरहंत-सक्खियं, सिद्ध-सक्खियं, साहु-सक्खियं, अप्प-सक्खियं, पर-सक्खियं, देवता-सक्खियं, उत्तमट्ठम्मि। "इदं मे महव्वदं, सुव्वदं, दिढव्वदं होदु, णित्थारयं, पारयं, तारयं, आराहियं चावि ते मे भवतु।।"

तृतीयं महाव्रतं सर्वेषां व्रतधारिणां सम्यक्त्व-पूर्वकं, दृढव्रतं, सुव्रतं, समारूढं ते मे भवतु।।...३।।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।...३

अहावरे चउत्थे महव्वदे सव्वं भंते! अबंभं पच्चक्खामि जावज्जीवं तिविहेण मणसा-वचसा-काएण, से देविएसु वा, माणुसिएसु वा, तिरिच्छिएसु वा, अचेयणिएसु वा, कट्ठ-कम्मेसु वा, चित्त-कम्मेसु वा, पोत्त-कम्मेसु वा, लेप्प-कम्मेसु वा, लय-कम्मेसु वा, सिल्ला-कम्मेसु वा, गिह-कम्मेसु वा, भित्ति-कम्मेसु वा, भेद-कम्मेसु वा, भण्ड-कम्मेसु वा, धादु-कम्मेसु वा, दंत-कम्मेसु वा, हत्थ-संघट्टणादाए, पाद-संघट्टण-दाए, पुग्गल-संघट्टणदाए, मणुणामणुणेसु सद्देसु, मणुणामणुणेसु रूवेसु, मणुणामणुणेसु गंधसु, मणुणामणुणेसु रसेसु, मणुणामणुणेसु फासेसु, सोदिंदिय-परिणामे, चक्खिंदिय-परिणामे, घाणिंदिय-परिणामे, जिब्भिदिय-परिणामे, फासिंदिय-परिणामे, णो-इन्दिय-परिणामे, अगुत्तेण, अगुत्तिंदिएण, णेव सयं अबंभं सेविज्ज, णो अण्णेहिं अबंभं सोवाविज्जि, णो अण्णेहिं अबंभं सेविज्जंतं वि समणुमणिज्ज, तस्स भंते! अइचारं पडिक्कमामि, णिंदामि, गरहामि, अप्पाणं वोस्सरामि।

पुव्विचणं भंते! जं पि मए रागस्स वा, दोसस्स वा, मोहस्स वा, वसंगदेण सयं मोसं भासियं, अण्णेहिं मोसं भासावियं, अण्णेहिं मोसं भासिज्जंतं पि समणुमण्णिदं तं पि।

इमस्स णिग्गंथस्स से ... उत्तमट्ठस्स सम्मचरित्तं च रोचेमि तक पृष्ठ संख्या २३४ से २३७ में से देखकर पढ़ें।

चउत्थे महव्वदे अबंभादो वेरमणं, उवट्ठा-वण-मंडले, महत्थे, महागुणे, महाणुभावे, महाजसे, महा-पुरिसाणु-चिण्णे, अरहंत-सक्खियं, सिद्ध-सक्खियं, साहु-सक्खियं, अप्प-सक्खियं, पर-सक्खियं, देवता-सक्खियं, उत्तमट्ठम्मि। "इदं मे महव्वदं, सुव्वदं, दिढव्वदं होदु, णित्थारयं, पारयं, तारयं, आराहियं चावि ते मे भवतु।।"

चतुर्थं महाव्रतं सर्वेषां व्रतधारिणां सम्यक्त्व-पूर्वकं, दृढव्रतं, सुव्रतं, समारूढं ते मे भवतु।।...३।।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।...३

अहावरे पंचमे महव्वदे सव्वं भंते! दुविहं-परिग्गहं पच्चक्खामि। तिविहेण मणसा-वचसा-काएण। सो परिग्गहो दुविहो अब्भंतरो, बाहिरो चेदि। तत्थ अब्भंतरं परिग्गहं-

मिच्छत्त-वेय-राया तहेव हस्सादिया य छद्दोसा।
चत्तारि तह कसाया चउदस अब्भंतरं गंथा।।१।।

तत्थ बाहिरं परिग्गहं से हिरण्णवं वा, सुवण्णं वा, धणं वा, खेत्तं वा, खलं वा, वत्थुं वा, पवत्थुं वा, कोसं वा, कुठारं वा, पुरं वा, अंत-उरं वा, बलं वा, वाहणं वा, सयडं वा, जाणं वा, जपाणं वा, जुगं वा, गद्दियं वा, रहं वा, सदणं वा, सिवियं वा, दासी-दास-गो-महिस-गवेडयं, मणि-मोत्तिय-संख-सिप्पि-पवालयं, मणिभाजणं वा, सुवण्ण-भाजणं वा, रजत-भाजणं वा, कंस-भाजणं वा, लोह-भाजणं वा, तंब-भाजणं वा, अंडजं वा, वोंडज वा, रोमजं वा, वक्कलजं वा, चम्मजं वा, अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, सचित्तं वा, अचित्तं वा, अमुत्थं वा, बहित्थं वा, अवि वालग्ग-कोडि मित्तं पि णेव सयं असमण-पाउग्गं-परिग्गहं-गिण्हिज्ज, णो अण्णेहिं असमण-पाउग्गं परिग्गहं-गेण्हाविज्ज, णो अण्णेहिं असमण-पाउग्गं परिग्गहं गिण्हज्जंतं पि समणुमणिज्ज, तस्स भंते! अइचारं पडिक्कमामि, णिंदामि, गरहामि, अप्पाणं वोस्सरामि।

पुव्विचणं भंते! जं पि मए रागस्स वा, दोसस्स वा, मोहस्स वा, वसंगदेण सयं असमणपाउग्गं परिग्गहं गिण्हिज्जं, अण्णेहिं असमणपाउग्गं परिग्गहं गेण्हावियं, अण्णेहिं असमणपाउग्गं परिग्गहं गेणिहज्जंतं पि समणुमण्णिदं तं पि।

इमस्स णिग्गंथस्स से ... उत्तमट्ठस्स सम्मचरित्तं च रोचेमि तक पृष्ठ संख्या २३४ से २३७ में से देखकर पढ़ें।

पंचमे महव्वदे परिग्गहादो वेरमणं, उवट्ठा-वण-मंडले, महत्थे, महागुणे, महाणुभावे, महाजसे, महा-पुरिसाणु-चिण्णे, अरहंत-सक्खियं, सिद्ध-सक्खियं, साहु-सक्खियं, अप्प-सक्खियं, पर-सक्खियं, देवता-सक्खियं, उत्तमट्ठम्मि। "इदं मे महव्वदं, सुव्वदं, दिढव्वदं होदु, णित्थारयं, पारयं, तारयं, आराहियं चावि ते मे भवतु।।"

पंचमे महाव्रतं सर्वेषां व्रतधारिणां सम्यक्त्व-पूर्वकं, दृढव्रतं, सुव्रतं, समारूढं ते मे भवतु।।...३।।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।...३।।

अहावरे छट्ठे अणुव्वदे सव्वं भंत्ते! राइ-भोयणं पच्चक्खामि जावज्जीवं तिविहेण मणसा-वेचसा-काएण, से असणं वा, पाणं वा, खादियं वा, सादियं वा, कडुयं वा, कसायं वा, आमिलं वा, महुरं वा, लवणं वा, अलवणं वा, सचित्तं वा, अचित्तं वा, तं-सव्वं-चउव्विहं-आहारं, णेव सयं रत्तिं भुंज्जिज, णो अण्णेहिं रत्तिं भुंजाविज्ज, णो अण्णेहिं रत्तिं भुंजि-ज्जंतं पि समणुमणिज्ज, तस्स भंते! आइचारं पडिक्कमामि, णिंदामि, गरहामि, अप्पाणं वोस्सरामि।

पुव्विचणं भंते! जं पि मए रागस्स वा, दोसस्स वा, मोहस्स वा, वसंगदेण चउव्विहो आहारो सयं रत्तिं भुत्तो अण्णेहिं रत्तिं भुंजाणिदो अण्णेहिं रत्तिं भुंजिज्जंतो वि समणुमण्णिदो तं पि।

इमस्स णिग्गंथस्स से ... उत्तमट्ठस्स सम्मचरित्तं च रोचेमि तक पृष्ठ संख्या २३४ से २३७ में से देखकर पढ़ें।

छट्ठे अणुव्वदे राइ-भोयणादो वेरमणं, उवट्ठा-वण-मंडले, महत्थे, महागुणे, महाणुभावे, महाजसे, महा-पुरिसाणु-चिण्णे, अरहंत-सक्खियं, सिद्ध-सक्खियं, साहु-सक्खियं, अप्प-सक्खियं, पर-सक्खियं, देवता-सक्खियं, उत्तमट्ठम्मि। "इदं मे अणुव्वदं, सुव्वदं, दिढव्वदं होदु, णित्थारयं, पारयं, तारयं, आराहियं चावि ते मे भवतु।।"

छट्ठे महाव्रतं सर्वेषां व्रतधारिणां सम्यक्त्व-पूर्वकं, दृढव्रतं, सुव्रतं, समारूढं ते मे भवतु।।...३।।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।...३।।

चूलिका

चूलियंतु पवक्खामि भावणा पंचविंसदी।
पंच पंच अणुण्णादा एक्केक्कम्हि महव्वदे।।१।।

अहिंसा महाव्रत की भावनाएँ

मणगुत्तो वचिगुत्तो इरिया-काय-संयदो।
एसणा-समिदि संजुत्तो पढमं वदमस्सिदो।।२।।

सत्य महाव्रत की भावनाएँ

अकोहणो अलोहो य भय-हस्स-विवज्जिदो।
अणुवीचि-भास-कुसलो विदियं वदमस्सिदो।।३।।

अचौर्यमहाव्रत की भावनाएँ

अदेहणं भावणं चावि उग्गहं य परिग्गहे।
संतुट्ठो भत्तपाणेसु तिदियं वदमस्सिदो।।४।।

ब्रह्मचर्यमहाव्रत की भावनाएँ

इत्थिकहा इत्थि-संसग्ग-हास-खेड-पलोयणे।
णियमम्मि ट्ठिदो णियत्तो य चउत्थं वदमस्सिदो।।५।।

अपरिग्रह महाव्रत की भावनाएँ

सचित्ताचित्त-दव्वेसु बज्झं-ब्भंतरेसु य।
परिग्गहादो विरदो पंचमं वदमस्सिदो।।६।।

उत्तम व्रत की स्वामी

धिदिमंतो खमाजुत्तो-झाण-जोग-परिट्ठिदो।
परीसहाण-उरं देंत्तो उत्तमं वदमस्सिदो।।७।।

ध्यान की सरिता

जो सारो सव्वसारेसु सो सारो एस गोयम!
सारं झाणंति णामेण सव्वं बुद्धेहिं देसिदं।।८।।

इच्चेदाणि पंचमहव्वदाणि, राइ-भोयणादो वेर-मणं छट्ठाणि, सभावणाणि, समाउग्ग-पदाणि, स उत्तर-पदाणि, सम्मं, धम्मं, अणुपाल-इत्ता, समणा, भयवंता, णिग्गंथा होऊण, सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परिणियंति, सव्वदुक्खाणमंतं करेंति, परिविज्जाणंति। तं जहा-

पाणादिवादं चहि मोसगं च, अदत्त-मेहुण्ण-परिग्गहं च।
वदाणि सम्मं अणुपाल-इत्ता, णिव्वाण-मग्गं विरदा उवेंति।।१।।

निःशल्यता का उपदेश

जाणि काणि वि सल्लाणि गरहिदाणि जिण-सासणे।
ताणि सव्वाणि वोसरित्ता णिसल्लो विहरदे सया मुणी।।२।।

माया त्याग उपदेश

उप्पण्णाणुप्पण्णा माया अणुपुव्वं सो णिहंतव्वा।
आलोयण पडिकमणं णिंदण-गरहणदाए।।३।।

द्रव्य भाव प्रतिक्रमण

अब्भुट्ठिद-करण-दाए अब्भुट्ठिद-दुक्कड-णिराकरणदाए
भवं भाव-पडिक्कमणं सेसा पुण दव्वदो भणिदा।।४।।

प्रतिक्रमण विधि सब तीर्थंकरों द्वारा कथित है

एसो पडिक्कमण-विही पण्णत्तो जिणवरेहिं सव्वेहिं।
संजम-तव-ट्ठिदाणं णिग्गंथाणं महरिसीणं।।५।।

क्षमा एवं फल याचना

अक्खर-पयत्थ-हीणं मत्ता-हीणं च जं भवे एत्थ।
तं खमउ णाण-देवय! देउ समाहिं च बोहिं च।।६।।

पंच परमेष्ठियों को नमस्कार

काऊण णमोक्कारं अरहंताणं तहेव सिद्धाणं।
आइरिय-उवज्झायाणं लोयम्मि य सव्वसाहूणं।।७।।

इच्छामि भंते! पडिक्कमणमिदं, सुत्तस्स, मूल-पदाणं, उत्तर-पदाण-मच्चासणदाए तं जहा-

पदादि की अवहेलना सम्बंधी प्रतिक्रमण

णमोक्कारपदे, अरहंतपदे, सिद्धपदे, आइरिय-पदे, उवज्झाय-पदे, साहु-पदे, मंगल-पदे, लोगोत्तम-पदे, सरण-पदे, सामाइय-पदे, चउवीस-तित्थरयर-पदे, वंदण-पदे, पडिक्कमण-पदे, पच्चक्खाण-पदे, काउस्सग्ग-पदे, असीहिय-पदे, निसीहिय-पदे, अंगंगेसु, पुव्वंगेसु, पइण्णएसु, पाहुडेसु, पाहुड-पाहुडेसु, कदकम्मेसु वा, भूद कम्मेसु वा, णाणस्स-अइक्कमणदाए, दंसणस्स-अइक्कमणदाए, चरित्तस्स-अइक्कमणदाए, तवस्स-अइक्कमणदाए, वीरियस्स-अइक्कमणदाए, से अक्खर-हीणं वा, सर-हीणं वा, विंजण हीणं वा, पद-हीणं वा, अत्य-हीणं वा, गंथ-हीणं वा, थएसु वा, थुईसु वा, अट्टक्खाणेसु वा, अणि-योगेसु वा, अणि-योगद्दारेसु वा, जे भावा पण्णत्ता, अरहंतेहिं, भयवं-तेहिं, तित्थयरेहिं, आदियरेहिं, तिलोक-णाहेहिं, तिलोक-बुद्धेहिं, तिलोक-दरसीहिं, ते सद्दहामि, ते पत्तियामि, ते रोचेमि, ते फासेमि, ते सद्दहंतस्स, ते पत्तयंतस्स, ते रोचयंतस्स, ते फासयंतस्स, जो मए देवसिओ, राईओ (पक्खिओ) (चउमासिओ) (संवच्छरिओ) अदिक्कमो, वदिक्कमो, अइचारो, अणाचारो, आभोगो, अणाभोगो, अकालो, सज्झाओ, कओ काले वा, परिहाविदो, अच्छाकारिदं, मिच्छामेलिदं, आमेलिदं, वा मेलिदं, अण्णहा-दिण्णं, अण्णहा-पडिच्छदं, आवासएसु, पडिहीणदाए तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

अह पडिवदाए, विदियाए, तदियाए, चउत्थीए, पंचमीए, छट्ठीए, सत्तमीए, अट्ठमीए, णवमीए, दसमीए, एयारसीए, बारसीए, तेरसीए, चउद्दसीए, पुण्ण-मासीए, पण्णरस-दिवसाणं, पण्णरस-राइणं, (चउण्हं-मासाणं, अट्ठणं-पक्खाणं, वीसुत्तरसय-दिवसाणं, वीसुत्तरसय-राइणं) बारसण्हं-मासाणं, चउवीसण्हं-पक्खाणं, तिण्हि-छावट्ठि-सय-दिवसाणं, तिण्हं-छावट्ठि-सय-राइणं पंचवरिसादो परदो, अब्भंतरदो वा, दोण्हं-अट्ट-रुद्द-संकिलेस-परिणामाणं, तिण्हं-अप्पसत्थ-संकिलेस-परिणामाणं, तिण्हं-दंडाणं, तिण्हं-लेस्साणं, तिण्हं-गुत्तीणं, तिण्हं-गार-वाणं, तिण्हं-सल्लाणं, चउण्हं-सण्णाणं, चउण्हं-कसायाणं, चउण्हं-उवसग्गाणं, पंचण्हं-महव्वयाणं, पंचण्हं-इन्दियाणं, पंचण्हं-समिदीणं, पंचण्हं-चरित्ताणं, छण्हं-आवासयाणं, सत्तण्हं-भयाणं, सत्त-विहसंसाराणं, अट्ठण्हं-मयाणं, अट्ठण्हं-सुद्धीणं, अट्ठण्हं-कम्माण, अट्ठण्हं-पवयण-माउयाणं, णवण्हं-बंभचेर-गुत्तीणं, णवण्ह-णो-कसायाणं, दस-विह-मुंडाणं, दसविह-समण-धम्माणं, दसविह-धम्मज्झाणाणं, बारसण्हं संजमाणं, बारसण्हं तवाणं, बारसण्हं अंगाणं, तेरसण्हं किरियाणं, चउदसण्हं पुव्वाण्हं, पण्णरसण्हं पमायाणं, सोलसण्हं कसायाणं बावी-साए परीसहेसु, पणवीसाए किरियासु, पणवीसाए भावणासु अट्ठारस-सील-सहस्सेसु, चउरासीदि-गुण-सय-सहस्सेसु, मूलगुणेसु, उत्तरगुणेसु, अदिक्कमो, वदिक्कमो, अइचारो, अणाचारो, आभोगो, अणाभोगो, तस्स भंते! अइचारं पडिक्कमामि, पडिक्कंतं, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदं, तस्स भंते! अइचार पडिक्कमामि, णिंदामि, गरहामि, अप्पाणं वोस्सरामि, जाव अरहंताणं, भयवताणं, णमोक्कारं करेमि, पज्जुवासं करेमि, ताव कायं, पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।...३

श्रावक के 12 व्रतों के अन्तर्गत पाँच अणुव्रतों का वर्णन

पढमं ताव सुदं मे आउस्संतो! इह खलु समणेण, भयवदा, महदि, महावीरेण, महाकस्सवेण, सव्वण्ह-णाणेण, सव्व-लोय-दरसिणा, सावयाणं, सावियाणं, खुड्डयाणं खुड्डीयाणं, कारणेण, पंचाणुव्वदाणि, तिण्णि गुणव्वदाणि, चत्तारि सिक्खा-वदाणि, बारस-विहं गिहत्थ-धम्मं सम्मं उवदेसि-याणि। तत्थ इमाणि पंचाणुव्वदाणि पढमे अणुव्वदे थूलयडे पाणादिवादादो वेरमणं, विदिये अणुव्वदे थूलयडे मुसावादादो वेरमणं, तिदिए अणुव्वदे, थूलयडे अदत्तादाणादो वेरमणं, चउत्थे अणुव्वदे, थूलसडे सदार-संतोस-परदारा-गमण-वेरमणं, कस्स य पुणु सव्वदो विरदी, पंचमे अणुव्वदे, थूलयडे इच्छा-कद-परिमाणं चेदि, इच्चेदाणि पंच अणुव्वदाणि।

तीन गुणव्रतों का वर्णन

तत्थ इमाणि तिण्णि गुणव्वदाणि तत्थ पढमे गुणव्वदे दिसि-विदिसि पच्चक्खाणं, विदिए, गुणव्वदे, विविध-अणत्थ-दंडादो वेरमणं, तिदिए गुणव्वदे भोगोपभोग-परिसंखाणं चेदि, इच्चेदाणि तिण्णि गुणव्वदाणि।

चार शिक्षाव्रतों का वर्णन

तत्थ इमाणि चत्तारि सिक्खावदाणि तत्थ पढमे सामाइयं, विदिये पोसहोवासयं, तिदिये अतिथि-संविभागो, चउत्थे सिक्खावदे पच्छिम-सल्लेहणा-मरणं चेदि। इच्चेदाणि चत्तारि सिक्खावदाणि।

से अभिमद-जीवाजीव-उवलद्ध-पुण्ण-पाव-आसव-बंध-संवर-णिज्जर-मोक्ख-महि-कुसले, धम्माणु-रायरत्तो, पेम्माणुराय-रत्तो, अट्ठि-मज्जाणुराय-रत्तो, मुच्छिदट्ठे, गिहि-दट्ठे, विहि-दट्ठे, पालि-दट्ठे, सेवि-दट्ठे, इणमेव णिग्गंथ-पवयणे, अणुत्तरे, से-अट्ठे, सेवणुट्ठे।

सम्यक्त्व के आठ अंगों के नाम

णिस्संकिय णिक्कंखिय णिव्विदिगिंच्छी अमूढदिट्ठी य।
उवगूहण टिठदिकरणं वच्छल्ल-पहावणा य ते अट्ठ।।१।।

सव्वेदाणि पंचाणुव्वदाणि; तिण्णि गुणव्वदाणि, चत्तारि सिक्खावदाणि बारसविहं-गिहत्थ-धम्ममणु-पाल-इत्ता।

देशव्रत के ग्यारह स्थानों के नाम

दंसण-वय-सामाइय-पोसह-सचित्त-राइ-भत्तेय।
बंभारंभ परिग्गह अणुमणमुदिट्ठ देसविरदोय।।१।।

श्रावक धर्म

महु-मसं-मज्ज जुआ वेसादि-विवज्जणा सीलो।
पंचाणुव्वय-जुत्तो सत्तेहिं सिक्खावयेहिं संपुण्णो।।२।।

श्रावक व्रत निर्दोष पालने का फल

जो एदाइं वदाइं धरेइ, सावया साावियाओ वा, खुड्डय-खुड्डियाओ वा, अट्ठदह-पञ्च, भवणवासिय-वाणविंतर-जोइसिय, सोहम्मीसाण-देवीओ वदिक्क-मित्त उवरिम-अण्णदर-महड्ढियासु देवेसु उववज्जंति।

तंजहा सोहम्मीसाण-सणक्कुमार-माहिंद-बंभ-बंभुत्तर-लांतव-काापिट्ठ सुक्क-महासुक्क सतार-सहस्सार आणत-पाणत-आरण-अच्चुत-कप्पेसु उववज्जंति।

अडयंबर-सत्थधरा कडयंगद-बद्धनउडकय-सोहा।
भासुरवर-बोहिधरा देवा य महड्ढिया होंति।।१।।

समाधिमरण का फल

उक्कस्सेण दो-तिण्ण भव-गहणाणि, जहण्णे सत्तट्ठ-भव-गहणाणि, तदो सुमाणुसत्तादो-सुदेवत्तं, सुदेवत्तादो-सुमाणुसत्तं, तदो साइहत्था, पच्छा-णिग्गंथा होऊण, सिज्झंति, बुज्झंति, मुंचंति, परिणिव्वाण-यंति, सव्वदुक्खाणमंतं करेंति। जाव अरहंताणं, भयवंताणं, णमोक्कारं करेमि, पज्जुवासं करेमि, तावकायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

वद-समि-दिंदिय रोधो, लोचावासय-मचेल-मणहाणं।
खिदि-सयण-मदंतवणं, ठिदि-भोयण-मेय-भत्तं च।।१।।

एदे खलु मूलगुणा, समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता।
एत्थ पमाद-कदादो, अइचारादो णियत्तोहं।।२।।

छेदोवट्टावणं होउ मज्झं

अथ सर्वातिचार विशुद्धर्थं (पाक्षिक) (चातुर्मासिक) (वार्षिक) प्रतिक्रमण-क्रियायां, कृत-दोष-निराकरणार्थं पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री निष्ठित-करण-चन्द्रवीरभक्ति

कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

यहाँ आचार्यश्री के साथ-साथ सभी मुनिराज **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं. २१३) पढ़कर कायोत्सर्ग करें। पश्चात् **चतुर्विंशति स्तव** (पृष्ठ सं. २१४) पढ़कर वीरभक्ति आदि बोलना चाहिए।

श्री चंद्रप्रभ और वीरभक्तिः

पाक्षिक प्रतिक्रमण में ३०० श्वासोच्छ्वास अर्थात् १०० बार पंचनमस्कार मंत्र का जाप, **चातुर्मासिक** प्रतिक्रमण में ४०० श्वासोच्छ्वास अर्थात् १३४ बार पंचनमस्कार मंत्र का जाप और **वार्षिक** प्रतिक्रमण मं ५०० श्वासोच्छ्वास अर्थात् १६७ बार पंचनमस्कार मंत्र का जाप करना चाहिए। पश्चात् **चतुर्विंशति स्तव** (पृष्ठ सं. २१४) पढ़ें।

श्रीचन्द्रप्रभजिनस्तवनम्

उपजाति-छन्दः

चन्द्रप्रभं चन्द्र-मरीचि-गौरं, चन्द्रं द्वितीयं जगतीव कान्तम्।
वन्देऽभिवन्द्यं महतामृषीन्द्रं, जिनं जित-स्वान्त-कषायबन्धम्।।१।।

यस्यांग-लक्ष्मी-परिवेष-भिन्नं, तमस्तमोऽरेरिव रश्मि-भिन्नम्।
ननाश बाह्यं बहुमानसं च, ध्यान-प्रदीपाऽतिशयेन भिन्नम्।।२।।

स्व-पक्ष-सौस्थित्य-मदाऽवलिप्ता, वाक्-सिंहनादैर्विमदा बभूवुः।
प्रवादिनो यस्य मदाऽऽर्द्र-गण्डा, गजा यथा केशरिणो निनादैः।।३।।

यः सर्वलोके परमेष्ठितायाः, पदं बभूवाऽद्भुत-कर्म-तेजाः।
अनन्त-धामाऽक्षर-विश्वचक्षुः, समन्त-दुःख-क्षय-शासनश्च।।४।।

स चन्द्रमा भव्य-कुमुद्वतीनां, विपन्न-दोषाऽभ्र-कलंक-लेपः।
व्याकोश-वाङ्-न्याय-मयूख-मालः, पूयात् पवित्रो भगवान् मनो मे।।५।।

वीर-भक्तिः

(शार्दूल विक्रीडित छन्द)

यः सर्वाणि चराचराणि विधि-वद्, द्रव्याणि तेषां गुणान्,
पर्यायानपि भूत-भावि-भवितः सर्वान् सदा सर्वदा।
जानीते युगपत्-प्रतिक्षण-मतः सर्वज्ञ इत्युच्यते,
सर्वज्ञाय जिनेश्वराय महते वीराय तस्मै नमः।।१।।

वीरः सर्व-सुरासुरेन्द्र-महितो वीरं बुधाः संश्रिता,
वीरेणाभिहतः स्व-कर्म-निचयो वीराय भक्त्या नमः।
वीरात् तीर्थ-मिदं प्रवृत्त-मतुलं वीरस्य घोरं तपो,
वीरे श्री-द्युति-कांति-कीर्ति-धृतयो, हे वीर! भद्रं त्वयि।।२।।

ये वीर-पादौ प्रणमन्ति नित्यं, ध्यान-स्थिताःसंयम-योग-युक्ताः।
ते वीत-शोका हि भवन्ति लोके, संसार-दुर्गं विषमं तरन्ति।।३।।

व्रत-समुदय-मूलः संयम-स्कंध-बंधो,
यम-नियम-पयोभि-र्वर्धितः शील-शाखः।
समिति-कलिक-भारो गुप्ति-गुप्त-प्रवालो,
गुण-कुसुम-सुगंधिः सत्-तपश्चित्र-पत्रः।।४।।

शिव-सुख-फलदायी यो दया-छाय-योद्धः,
शुभ-जन-पथिकानां खेद-नोदे समर्थः।
दुरित-रविज-तापं प्रापयन्नन्तभावम्,
स भव-विभव-हान्यै नोऽस्तु चारित्र-वृक्षः।।५।।

चारित्रं सर्व-जिनैश्चरितं प्रोक्तं च सर्व-शिष्येभ्यः।
प्रणमामि पंच-भेदं पंचम-चारित्र-लाभाय।।६।।

धर्मः सर्व-सुखाकरो हित-करो, धर्मं बुधाश्चिन्वते,
धर्मेणैव समाप्यते शिव-सुखं धर्माय तस्मै नमः।
धर्मान्-नास्त्य-परः सुहृद्-भव-भृतां धर्मस्य मूलं दया,
धर्मे चित्त-महं दधे प्रतिदिनं हे धर्म! मां पालय।।७।।

धम्मो मंगल-मुक्किट्ठं अहिंसा संयमो तवो।
देवा वि तं णमंसंति जस्स धम्मे सया मणो।।८।।

अंचलिका

इच्छामि भन्ते! पडिक्कमणादिचार-मालोचेउं, सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचारित्त-तव-वीरियाचारेसु, यम-णियम-संजम-सील-मूलुत्तर-गुणेसु, सव्व-मइचारं सावज्ज-जोगं पडिविरदोमि, असंखेज्ज-लोग-अज्झवसाय, ठाणाणि, अप्पसत्थ-जोग-सण्णा-णिंदिय-कसाय-

गारव-किरियासु, मण-वयण-काय-करण-दुप्पणिहाणाणि, परि-चिंतियाणि, किण्ह-णील-काउ-लेस्साओ, विकहा-पालिकुंचिएण, उम्मग्ग-हस्स-रदि-अरदि-सोय-भय-दुगंछ-वेयण-विज्झंभ-जम्भइ-आणि, अट्ट-रुद्द-संकिलेस-परिणामाणि-परिणामदाणि, अणिहुद-कर-चरण-मण-वयण-काय-करणेण- अक्खित्त-बहुल-परायणेण, अपडि-पुण्णेण वा सरक्खरावय-परिसंघाय-पडिवत्तिएण, अच्छा-कारिदं मिच्छा-मेलिदं, आ-मेलिदं, वा-मेलिदं, अण्णहा-दिण्णं, अण्णहा- पडिच्छिदं, आवास-एसु-परिहीणदाए, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

वद-समि-दिंदिय रोधो, लोचावासय-मचेल-मण्हाणं।
खिदि-सयण-मदंतवणं, ठिदि-भोयण-मेयभत्तं च।।१।।

एदे खलु मूल-गुणा, समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता।
एत्थ पमाद-कदादो, अइचारादो णियत्तोऽहं।।२।।

छेदोवट्टावणं होउ मज्झं

अथ सर्वातिचार-विशुद्ध्यर्थं पाक्षिक (चातुर्मासिक) (वार्षिक) प्रतिक्रमण- क्रियायां कृत-दोष-निराकणार्थं, पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकलकर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं, शान्ति-चतुर्विंशति-तीर्थंकर-भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहाँ **णमो अरहंताणं** इत्यादि **सामायिक दण्डक** बोलें, २७ उच्छ्वासों में कायोत्सर्ग करें, पश्चात् **थोस्सामि हं जिणवरे**..... इत्यादि बोलकर निम्नलिखित भक्तियाँ पढ़े)

श्रीशान्तिजिनस्तवनम् – १६

उपजाति-छन्दः

विधाय रक्षां परतः प्रजानां, राजा चिरं योऽप्रतिम-प्रतापः।
व्यधात् पुरस्तात् स्वत एव शान्ति, र्मुनिर्दयामूर्तिरिवाऽघ-शान्तिम्।।७६।।

चक्रेण यः शत्रु-भयंकरेण, जित्वा नृपः सर्व-नरेन्द्र-चक्रम।
समाधि-चक्रेण पुनर्जिगाय, महोदयो दुर्जय-मोह-चक्रम।।७७।।

राज-श्रिया राजसु राज-सिंहो, रराज यो राज-सुभोग-तंत्रः।
आर्हन्त्य-लक्ष्म्या पुनरात्म-तन्त्रो, देवाऽसुरोदार-सभे रराज।।७८।।

यस्मिन्नभूद्राजनि राज-चक्रं, मुनौ दया-दीधिति धर्म-चक्रम्।
पूज्ये मुहुः प्राञ्जलि देव-चक्रं, ध्यानोन्मुखे ध्वंसि कृतान्त-चक्रम्।।७९।।

स्व-दोष-शान्त्या विहितात्म-शान्तिः, शान्तेर्विधाता शरणं गतानाम्।
भूयाद् भव-क्लेश-भयोपशान्त्यै, शान्तिर्जिनो मे भगवान् शरण्यः।।८०।।

चतुर्विंशति तीर्थंकर भक्तिः

चउवीसं तित्तथयरे उसहाइ-वीर-पच्छिमे वन्दे।
सव्वे सगण-गण-हरे सिद्धे सिरसा णमंसामि।।१।।

ये लोकेऽष्ट-सहस्र लक्षण-धरा, ज्ञेयार्णवान्तर्गता,
ये सम्यग्-भव-जाल-हेतु-मथनाश्चन्द्रार्क-तेजोऽधिकाः।
ये साध्विन्द्र-सुराप्सरो-गण-शतै-र्गीत-प्रणूतार्चितास्,
तान् देवान् वृषभादि-वीर-चरमान् भक्त्या नमस्याम्यहम्।।२।।

नाभेयं देवपूज्यं, जिनवर-मजितं सर्व-लोक-प्रदीपम्।
सर्वज्ञं संभवाख्यं, मुनि-गण-वृषभं नन्दनं देवेदेवम्।।
कर्मारिघ्नं सुबुद्धिं, वर-कमल-निभं पद्म-पुष्पाभि-गंधम्।
क्षान्तं दान्तं सुपार्श्वं, सकल-शशि-निभं चंद्रनामान-मीडे।।३।।

विख्यातं पुष्पदंतं, भव-भय-मथनं शीतलं लोक-नाथम्
श्रेयांसं शील-कोशं, प्रवर-नर-गुरुं वासुपूज्यं सुपूज्यम्।।
मुक्तं दान्तेंद्रियाश्वं, विमल-मृषि-पतिं सिंहसेन्यं मुनींद्रम्
धर्मं सद् धर्म-केतुं, शम-दम-निलयं स्तौमि शांतिं शरण्यम्।।४।।

कुन्थुं सिद्धालयस्थं, श्रमण-पतिमरं त्यक्त-भोगेषु चक्रम्।
मल्लिं विख्यात-गोत्रं, खचर-गण-नुतं सुव्रतं सौख्य-राशिम्
देवेन्द्रार्च्यं नमीशं, हरि-कुल-तिलकं नेमिचन्द्रं भवान्तम्
पार्श्वं नागेंद्र-वंद्यं, शरण-मह-मितो वर्धमानं च भक्त्या।।५।।

इच्छामि भंते! चउवीस-तित्थयर-भत्ति-काउ-स्सग्गो कओ, तस्सालोचेउं पंच-महा-कल्याण-संपण्णाणं, अट्ठ-महा-पाडिहेर-सयाणं, चउतीसाति-सयविसेस-संजुत्ताणं, बत्तीस-देविंद-मणि-मउड-मत्थय-महिदाणं, बलदेव-वासुदेव-चक्कहर-रिसि-मुणि-जइ-अणगारोवगूढाणं, थुइ-सह-सहस्स-णिलयाणं, उस-हाइ-वीर-पच्छिम-मंगल-महा-पुरिसाणं, सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ गमणं, समाहि-मरणं, जिण-गुण-संपत्ति होदु मज्झं।

वद-समि-दिंदिय रोधो, लोचावासय-मचेल-मण्हाणं।
खिदि-सयण-मदंतवणं, ठिदि-भोयण-मेयभत्तं च।।१।।

एदे खलु मूल-गुणा, समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता।
एत्थ पमाद-कदादो, अइचारादो णियत्तोऽहं।।२।।

छेदोवट्टावणं होउ मज्झं

चारित्रालोचना-सहिता बृहदाचार्य-भक्तिः

अथ सर्वातिचा-विशुद्ध्यर्थं चारित्रा-लोचना-चार्य-भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहाँ पूर्ववत् **"णमो अरहंताणं"** इत्यादि दण्डक (पृष्ठ सं. २१३) बोलकर कायोत्सर्ग करें, पश्चात् **"थोस्सामि हं जिणवरे"** (पृष्ठ सं. २१४) इत्यादि स्तव बोलकर निम्नलिखित **आचार्य भक्ति** एवं **लघु-चारित्रलोचना** पढ़ें।)

बृहद्-आचार्य-भक्तिः

(स्कन्धच्छन्दः)

सिद्ध-गुण-स्तुति निरता, नुद्धतरुषाग्नि-जालबहुलविशेषान्।
गुप्तिभि-रभिसंपूर्णान्, मुक्ति-युतः सत्य-वचन-लक्षित-भावान्।।१।।

मुनि-माहात्म्य विशेषान्, जिन-शासन-सत्प्रदीप-भासुर-मूर्तीन्।
सिद्धिं प्रपित्सुमनसो, बद्धरजो-विपुल-मूल-घातन-कुशलान्।।२।।

गुण-मणि-विरचित-वपुषः, षड्द्रव्य-विनिश्चितस्य-धातृन्सततम्।
रहित-प्रमाद-चर्यान्, दर्शनशुद्धान् गणस्य संतुष्टि करान्।।३।।

मोहच्छिदुग्र-तपसः, प्रशस्त-परिशुद्ध-हृदय-शोभन व्यवहारान्।
प्रासुकनिलया-ननघानाशा विध्वंसिचेतसो हतकुपथान्।।४।।

धारितविलसन्मुण्डान्वर्जितबहु दण्डपिण्डमण्डल निकरान्।
सकलपरीषहजयिनः, क्रियाभि-रनिशं-प्रमादतः परिरहितान्।।५।।

अचलानव्यपेत-निद्रान्, स्थान-युतान्-कष्टदुष्ट-लेश्या हीनान्।
विधिनाना-श्रितवासा, नलिप्त-देहान्-विनिर्जितेन्द्रिय-करिणः।।६।।

अतुलान्-उत्कुटिकासान्-विविक्त चित्तान्-खंडित-स्वाध्यायान्।
दक्षिण-भाव-समग्रान्, व्यपगत-मदराग-लोभ-षठमात्सर्यान्।।७।।

भिन्नार्त-रौद्रपक्षान्-संभावित, धर्मशुक्ल-निर्मल हृदयान्।
नित्यं-पिनद्ध-कुगतीन्, पुण्यान्-गण्योदयान्-विलीनगारव-चर्यान्।।८।।

(स्कन्धच्छन्दः)

तरुमूल-योगयुक्ता, नवकाशा तापयोगराग सनाथान्।
बहुजन हितकर चर्या नभया-ननघान्-महानुभाव विधानान्।।९।।

ईदृशगुणसंपन्नान्, युष्मान्भक्त्या विशालया स्थिरयोगान्।
विधि-नानारत मग्र्यान्, मुकुली-कृतहस्त-कमल शोभित शिरसा।।१०।।

अभिनौमि सकलकलुष, प्रभवोदय जन्म जरामरण बंधन मुक्तान्।
शिवमचल मनघ-मक्षय, मव्याहत मुक्ति सौख्यमस्त्विति सततम्।।११।।

लघु-चारित्रलोचना

इच्छामि भन्ते! चरित्तायारो तेरस-विहो, परिविहा-विदो, पंच-महव्वदे, पाणा-दिवादादो वेरमणं से पुढवि-काइया-जीवा-असंखेज्जासंखेज्जा, आउ-काइया-जीवा-असंखेज्जासंखेज्जा, तेउ-काइया-जीवा-असंखेज्जा-संखेज्जा, वाउ-काइया-जीवा-असंखेज्जासंखेज्जा, वणप्फदि-काइया-जीवा-

अणंताणंता, हरिया, वीआ, अंकुरा, छिण्णा भिण्णा एदेसिं उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं उवघादो कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समुण-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

बे-इन्दिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, कुक्खि-किमि-संख- खुल्लय, वराडय, अक्ख-रिट्ठय-गण्डवाल-संबुक्क-सिप्पि, पुलवि- काइया एदेसिं उद्दवणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

ते इन्दिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, कुन्थूद्देहिय-विंच्छिय-गोभिंद-गोजुव-मक्कुण-पिपीलियाइया एदेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

चउरिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, दंस-मसय-मक्खि-पयंग-कीड-भमर-महुयर, गोमच्छियाइया, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

पंचिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, अंडाइया, पोदाइया, जराइया, रसाइया, संसेदिमा, सम्मुच्छिमा, उब्भेदिमा, उववादिमा, अवि-चउरासीदिजोणि-पमुह-सद-सहस्सेसु, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

इच्छामि भन्ते! आइरियभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्स आलोचेउं, सम्म-णाण, सम्म-दंसण-सम्म-चरित्त-जुत्ताणं, पंच-विहाचारणं, आइरियाणं, आयारादि-सुद-णाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं, ति-रयण-गुण-पालन- रयाणं, सव्व-साहूणं सया णिच्च-कालं अंचेमि पूजेमि वन्दामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई-गमणं समाहि-मरणं जिणगुण सम्पत्ति होउमज्झं।

वद-समि-दिंदिय रोधो, लोचावासय-मचेल-मण्हाणं।
खिदि-सयण-मदंतवणं, ठिदि-भोयण-मेयभत्तं च।।१।।

एदे खलु मूल-गुणा, समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता।
एत्थ पमाद-कदादो, अइचारादो णियत्तोऽहं।।२।।

छेदोवट्टावणं होउ मज्झं

बृहदालोचना-सहिता मध्यमाचार्य-भक्तिः

अथ सर्वातिचा-विशुद्ध्यर्थं बृहदा-लोचना-चार्य-भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम् -

(यहाँ **"णमो अरहंताण"** इत्यादि **सामायिक दण्डक** बोलकर कायोत्सर्ग करें। पश्चात् **"थोस्सामि हं जिणवरे"** इत्यादि **चतुर्विंशति स्तव** बोलकर निम्नलिखित **"देस-कुल-जाइ-सुद्धा"** इत्यादि **मध्यम-आचार्य-स्तुति** और **बृहदालोचना** बोलें।)

देसकुलजाइसुद्धा विसुद्धमणवयणकायसंजुत्ता।
तुह्मं पायपयोरुहमिह मंगलमत्थु मे णिच्च।।१।।

सगपरसमयविदण्हू आगमहेदूहिं चावि जाणित्ता।
सुसमत्था जिणवयणे विणये सत्ताणुरूवेण।।२।।

बालगुरुबुड्ढसेहे गिलाणथेरे य खमणसंजुत्ता।
वट्टावयगा अण्णे दुस्सीले चावि जाणित्ता।।३।।

वयसमिदिगुत्तिजुत्ता मुत्तिपहे ठावया पुणो अण्णे।
अज्झावयगुणणिलये साहुगुणेणावि संजुत्ता।।४।।

उत्तमखमाए पुढवी पसण्णभावेण अच्छजलसरिसा।
कम्मिंधणदहणादो अगणी वाऊ असंगादो।।५।।

गयणमिव णिरुवलेवा अक्खोहा सायरुव्व मुणिवसहा।
एरिसगुणणिलयाणं पायं पणमामि सुद्धमणो।।६।।

संसारकाणणे पुण बंभममाणेहिं भव्वजीवेहिं।।
णिव्वाणस्स हु मग्गो लद्धो तुह्मं पसाएण।।७।।

अविसुद्धलेस्सरहिया विसुद्धलेस्साहिं परिणदा सुद्धा।
रुद्दट्ठे पुण चत्ता धम्मे सुक्के य संजुत्ता।।८।।

उग्गह-ईहावाया-धारण-गुण-संपदेहिं संजुत्ता।
सुत्तत्थभावणाए भावियमाणेहिं वंदामि।।६।।

तुह्मं गुणगणसंथुदि अजाणमाणेण जो मया वुत्तो।
देउ मम बोहिलाहं गुरुभत्तिजुदत्थओ णिच्चं।।१०।।

बृहदालोचना-सहिता मध्यमाचार्य-भक्तिः

इच्छामि भंते! पक्खियम्मि आलोचेउं पण्णरसण्हं दिवसाणं, पण्णरसण्हं राइणं, अब्भंतरदो, पंचविहो आयारो णाणायारो, दंसणायारो, तवायारो, वीरियायारो चरित्तायारो चेदि।

इच्छामि भंते! 'चउमासियम्मि आलोचेउं चउण्हं मासाणं, अट्ठण्हं पक्खाणं, बीसुत्तर-सय-दिव-साणं, बीसुत्तर-सय-राइणं, अब्भंतरदो, पंचविहो आयारो, णाणायारो, दंसणायारो, तवायारो, वीरियायारो, चरित्तायारो चेदि।

इच्छामि भंते! संवच्छरियं आलोयेउ, बारसण्हं मासाणां चउवीसण्हं पक्खाणं तिण्णिछावट्ठिसयदिवसाणं तिण्णिछावट्ठिसयाईणं अब्भिंतरदो पंचविहो आयारो णाणायारो दंसणायारो तवायारो वीरियायारो चरित्तायारो चेदि।

तत्थ णाणायारो अट्ठविहो काले, विणए, उवहाणे, बहुमाणे, तहेव अणिण्हवणे, विंजण-अत्थ-तदुभये चेदि। तत्थ णाणायारो अट्ठविहो परिहाविदो, से अक्खर-हीणं वा, सर-हीणं वा, विंजण-हीणं वा, पद-हीणं वा, अत्थ- हीणं वा, गंथहीणं वा, थएसु वा थुइसु वा, अत्थक्खाणेसु वा, अणियोगेसु वा, अणियोगद्दारसे वा, अकाले-सज्झाओ कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो काले वा, परिहाविदो, अच्छा-कारिदं वा, मिच्छा मेलिदं वा, आ मेलिदं, वा-मेलिदं, अण्णहा-दिण्हं, अण्णहा-पडिच्छिदं आवासएसु-परिहीणदाए तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

णिस्संकिय णिंकंक्खिय णिव्विदिगिंच्छा अमूढदिटठीय।
उवगूहण ठिदि-करणं वच्छल्ल-पहावणा चेदि।।१।।

अट्ठविहो परिहाविदो संकाए, कंखाए, विदिगिंछाए, अण्ण-दिट्ठी-पसंसणाए, परपाखंड-पसंसणाए, अणायदण-सेवणाए, अवच्छल्लदाए, अपहावणाए तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।२।।

तवायारो बारसविहो अब्भंतरो-छव्विहो, बाहिरो-छव्विहो चेदि। तत्थ बाहिरो अणसणं, आमो-दरियं, वित्ति-परिसंखा, रस-परिच्चाओ, सरीर-परिच्चाओ, विवित्त-सयणासणं चेदि। तत्थ अब्भंतरो पायच्छित्तं, विणओ, वेज्जावच्चं, सज्झाओ, झाणं, विउस्सग्गो चेदि। अब्भंतरं-बाहिरं-बारसविहं-त्तवोकम्मं, ण कदं, णिसण्णेण पडिक्कंतं तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।३।।

वीरियायारो पंचविहो परिहाविदो वर-वीरिय-परिक्कमेण, जहुत्त-माणेण, बलेण, वीरिएण, परिक्कमेण णिगूहियं, तवो-कम्मं, ण कदं, णिसण्णेण पडिक्कंतं तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।४।।

चरित्ताचारो तेरसविहो परिहाविदो पंच-महव्व-दाणि, पंच-समिदीओ, तिगुत्तीओ चेदि। तत्थ पढमे महव्वदे पाणादिवादादो वेरमणं से पुढवि-काइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, आऊ-काइया जीवा असंखेज्जा-संखेज्जा, तेऊ- काइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वाऊ-काइया जीवा असंखेज्जा संखेज्जा, वणप्फदि-काइया जीवा अणंताणंता हरिया, बीआ, अंकुरा, छिण्णा, भिण्णा, एदेसिं उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं उवघादो कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

बे-इन्दियाजीवा असंखेज्जासंखेज्जा कुक्खि, किमि, संख, खुल्लय-वराडय-अक्ख-रिट्ठय-गण्डवाल, संबुक्क, सिप्पि, पुलविकाइया एदेसिं उद्दावण, परिदावणं, विराहणं उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

ते-इन्दिया-जीवा असंखेज्जासंखेज्जा कुन्थूदेहिय-विंछिय-गोभिंद-गोजूव-मक्कुण-पिपीलियाइया, एदेसिं उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं, उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

चउरिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा दंस-मसय-मक्खि-पयंग-कीड-भमर-महुयर-गोमच्छियाइया, एदेसिं उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं, उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

पंचिंदियाजीवा असंखेज्जासंखेज्जा अंडाइया, पोदाइया, जराइया, रसाइया, संसेदिमा, सम्मुच्छिमा, उब्भेदिमा, उववादिमा, अवि-चउरासीदि-जोणि-पमुह-सद-सहस्सेसु एदेसिं, उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं, उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

वद-समि-दिंदिय रोधो, लोचावासय-मचेल-मण्हाणं।
खिदि-सयण-मदंतवणं, ठिदि-भोयण-मेयभत्तं च।।१।।

एदे खलु मूल-गुणा, समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता।
एत्थ पमाद-कदादो, अइचारादो णियत्तोऽहं।।२।।

छेदोवट्ठावणं होउ मज्झं

क्षुल्लकालोचना-सहिता क्षुल्लकाचार्य-भक्तिः

अथ सर्वातिचार-विशुद्ध्यर्थं क्षुल्लकालोचना-चार्य-भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम् -

(यहाँ पूर्ववत **"णमो अरहंताण"** इत्यादि **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं. २१३) बोलकर कायोत्सर्ग करें। पश्चात् **"थोस्सामि हं जिणवरे"** (पृष्ठ सं. २१४) इत्यादि **चतुर्विंशति स्तव** बोलकर निम्नलिखित **लघु आचार्य भक्ति** बोलें।)

लघु आचार्य-भक्तिः

प्राज्ञः प्राप्त-समस्त-शास्त्र-हृदयः प्रव्यक्त-लोक-स्थितिः,
प्रास्ताशः प्रतिभा-परः प्रशमवान् प्रागेव दृष्टोत्तर।
प्रायः प्रश्न-सहः प्रभुः पर-मनोहारी परानिन्दया,
ब्रूयाद् धर्म-कथां गणी-गुण-निधिः प्रस्पष्ट-मिष्टाक्षरः।।१।।

श्रुत-मविकलं, शुद्धा वृत्तिः, पर-प्रति-बोधने,
परिणति-रुरूद्योगो मार्ग-प्रवर्तन-सद्-विधौ।
बुध-नुति-रनुत्सेको लोकज्ञता मृदुता-स्पृहा,
यति-पति-गुणा यस्मिन् नन्ये च सोऽस्तु गुरुः सताम्।।२।।

श्रुत-जलधि-पारगेभ्यः स्व-पर-मत-विभावना-पटु-मतिभ्यः।
सुचरित-तपो-निधिभ्यो नमो गुरुभ्यो गुण-गुरुभ्यः।।३।।

छत्तीस-गुण-समग्गे पंच-विहाचार-करण-संदरिसे।
सिस्साणुग्गह-कुसले धम्माइरिए सदा वन्दे।।४।।

गुरु-भत्ति-संजमेण य तरन्ति संसार-सायरं घोरम्।
छिण्णंति अट्ठ-कम्मं जम्मण-मरणं ण पावेंति।।५।।

ये नित्यं व्रत-मंत्र-होम-निरता ध्यानाग्नि-होत्रा-कुलाः।
षट्-कर्माभिरता-स्तपोधन-धनाः साधु-क्रियाः साधवः।।
शील-प्रावरणा गुण-प्रहरणा-श्चन्द्रार्क-तेजोऽधिका।
मोक्ष-द्वार-कपाट-पाटन-भटाः प्रीणन्तु मां साधवः।।६।।

गुरवः पान्तु नो नित्यं ज्ञान-दर्शन-नायकाः।
चारित्रार्णव-गम्भीरा-मोक्ष-मार्गोपदेशकाः।।७।।

अञ्चलिका

इच्छामि भंते! आइरिय-भत्ति-काउस्सग्गो कओ, तस्सालोचेउं, सम्म-णाण, सम्म-दंसण-सम्म-चरित्त-जुत्ताणं, पंच-विहाचाराणं, आयरियाणं, आया-रादि-सुद-णाणोवदेसयाणं, उवज्झायाणं, ति-रयण-गुण-पालण-रयाणं, सव्व-साहूणं सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइ-गमणं, समाहि-मरणं, जिण-गुण-संपत्ति होदु मज्झं।

वद-समि-दिंदिय रोधो, लोचावासय-मचेल-मण्हाणं।
खिदि-सयण-मदंतवणं, ठिदि-भोयण-मेयभत्तं च।।१।।

एदे खलु मूल-गुणा, समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता।
एत्थ पमाद-कदादो, अइचारादो णियत्तोऽहं।।२।।
छेदोवट्टावणं होउ मज्झं

शान्ति-चतुर्विंशति-स्तुतिः

अथ सर्वातिचार-विशुद्ध्यर्थं पाक्षिक (चातुर्मासिक) (वार्षिक) प्रतिक्रमण-क्रियायां कृत-दोष-निराकरणार्थं, पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकलकर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं, सिद्ध-चारित्र-प्रतिक्रमण-निष्ठित करण-वीर-शान्ति-चतुर्विंशति-तीर्थंकर-चारित्रा-लोचनाचार्य-बृहदालोचनाचार्य, क्षुल्लकालोचनाचार्य भक्तीः कृत्वा तद्धीनाधिकत्वादि-दोष-विशुद्ध्यर्थं आत्मपवित्री-करणार्थं, समाधि-भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहाँ पर आचार्यश्री सहित सर्व साधुगण पूर्ववत **सामायिक दण्डक** आदि बोलकर कायोत्सर्ग करें, पश्चात् **चतुर्विंशति स्तव** बोलकर नीचे लिखी समाधि भक्ति पढ़ें।)

समाधि भक्तिः

अथेष्ठ प्रार्थना प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः।
शास्त्राभ्यासो जिनपति-नुतिः संगतिः सर्वदार्यैः।
सद्वृत्तानां गुण-गण-कथा दोष-वादे च मौनम्।
सर्वस्यापि प्रिय-हित-वचो भावनाचात्म-तत्त्वे।
सम्पद्यन्तां मम भव-भवे यावदेतेऽपवर्गः।।१।।

तव पादौ मम हृदये, मम हृदयं तव पद-द्वये लीनम्।
तिष्ठतु जिनेन्द्र! तावत्-यावन्-निर्वाण-सम्प्राप्तिः।।२।।

अक्खर-पयत्थ-हीणं, मत्ता-हीणं च जं मए भणियम्।
तं खमहु णाण-देव! य मज्झवि दुक्खक्खयं कुणउ।।३।।

आलोचना

इच्छामि भन्ते! समाहि-भत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सलोचेउं, रयणत्तय-सरूव-परमप्प-झाण-लक्खण-समाहि-भत्तीएसया णिच्च कालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ गमणं, समाहि-मरणं, जिण-गुण-संपत्ति होउ मज्झं।

अथार्हद्भक्ति पूजारंभ (प्रतिक्रमण) गुरु क्रियायां कृतदोषनिराकणार्थं पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजा वंदनास्तवसमेतं श्रीमत् वीरनिर्वाण संवत् २६५३, ... नाम संवत्सरे, ... आयने, ... ऋतु,..... मासे, ...पक्षे, ...तिथौ, ...वासरे, ... ग्रामे मूल श्री ..... तीर्थंकर शुभ वस्तिकास्थाने, ... काले नित्यनियमित्तक आहार, विहार, आलोचना, समता, स्तवन, वंदना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान, ध्यान, दुःस्वप्न, दुर्भावना, पंच महा व्रत, सप्तशील, मूलोत्तर गुणेषु, मन वचन काय कृत कारितानुमोदन दैवसिक (रात्रिक) पाक्षिक चातुर्मासिक सांवत्सरिक अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार अनाचार आभोग अनाभोग इत्यादयो सर्व दोष श्री (गुरु) पाद मूले मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ।३ ।

मूल श्री ..... तीर्थंकर नमो नमः, ऋषुभादि वर्तमान चतुविंशति तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः, सर्व सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमो नमः, श्रीमंधरादि विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः, सर्व अकृत्रिम कृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमो नमः, अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमो नमः, सरस्वती शब्द ब्रह्मणे नमो नमः, सर्व गणधर परमेष्ठिभ्यो नमो नमः, सर्व श्रुतकेवलिभ्यो नमो नमः, सर्व पूर्वाचार्येभ्यो नमो नमः, त्रिन्यून नवकोटि मुनीश्वरेभ्यो नमो नमः ।।

श्रीऋषभसेनान्वय मूलसंघ सेनगण पुष्करगच्छालंकृत पंचमकाल धर्मप्रभावक श्री श्रुतकेवलि भद्रबाहु आचार्य, अर्हद्बलि आचार्य, धरसेनाचार्य, पुष्पदंताचार्य, भूतबलि आचार्य, कुंदकुंदाचार्य, उमास्वामी आचार्य, समंतभद्राचार्य, पूज्यपादाचार्य, मानतुंगाचार्य, अकलंकाचार्य जिनसेनाचार्य शांतिसागराचार्य श्री महावीरकीर्ति-प्रभृति समस्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमो नमः, मम दीक्षा गुरु श्री ..... नमोऽस्तु ।

खम्मामि सव्व जीवाणं सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मेत्ति मे सव्व भूदेसू वेरं मज्झं ण केणवि ।। कायोत्सर्ग करें ।

प्रायश्चित-याचना-विधिः

हे स्वामिन्! अस्मिन् पक्षे (चातुर्मासे) (संवत्सरे) अष्टाविंशति-मूलगुणेषु (मुनि-व्रत-क्रियायां) मनसा वचसा कर्मणा कृत-कारितानुमोदनैः आहारे विहारे निहारे च रागेण द्वेषेण मोहेन भयेन लज्जया प्रमादेन वा जागरणे स्वप्ने च ज्ञाताज्ञात-भावेन अतिक्रम-व्यतिक्रमातिचारानाचार इत्यादयो दोषा लग्नाः तान् क्षमित्वा प्रायश्चित्त-दानेन शुद्धं करोतु माम्।

सर्वदोषप्रायश्चित्त विधिः

ये ये पञ्चमहाव्रतेषु समितिस्थानेषु गुप्तित्रये।
ये षड्जीवनिकायकेषु बहुधा पञ्चास्तिकायेषु च।।
दोषा ये च पदार्थकेषु नवसु प्रोद्यत्प्रमादस्य मे।
तान्हन्तुं प्रयजे जिनेश! विधिना त्वत्पादपद्मद्वयम्।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा त्रयस्त्रिंशदऽत्या-
सादना-त्यागायाऽनुष्ठित प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हं अहिंसा-महाव्रतस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्य-महाव्रतस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचौर्य-महाव्रतस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित- प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मचर्य-महाव्रतस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित- प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हं अपरिग्रह-महाव्रतस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित- प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हं ईर्या-समिते-रऽत्या-सादना
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हं भाषा-समिते-रऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हं एषणा-समिते-रऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हं आदान-निक्षेपण-समिते-रऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।१०।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्सर्ग-समिते-रऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।११।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनो-गुप्ते-रऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।१२।।

ॐ ह्रीं अर्हं वचो-गुप्ते-रऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।१३।।

ॐ ह्रीं अर्हं काय-गुप्ते-रऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।१४।।

ॐ ह्रीं अर्हं जीवा-स्तिकायस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधोद्यो-तनाय नमः।।१५।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुदगला-स्तिकायस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।१६।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मास्ति-कायस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।१७।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधर्मास्ति-कायस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।१८।।

ॐ ह्रीं अर्हं आकाशास्ति-कायस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।१९।।

ॐ ह्रीं अर्हं पृथिवि-कायिकऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।२०।।

ॐ ह्रीं अर्हं अप्-कायिकस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।२१।।

ॐ ह्रीं अर्हं तेज-कायिकस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।२२।।

ॐ ह्रीं अर्हं वायु-कायिकस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।२३।।

ॐ ह्रीं अर्हं वनस्पति-कायिकस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।२४।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रस-कायिकस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।२५।।

ॐ ह्रीं अर्हं जीव-पदार्थस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।२६।।

ॐ ह्रीं अर्हं अजीव-पदार्थस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।२७।।

ॐ ह्रीं अर्हं आस्रव-पदार्थस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।२८।।

ॐ ह्रीं अर्हं बन्ध-पदार्थस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।२९।।

ॐ ह्रीं अर्हं संवर-पदार्थस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।३०।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्जरा-पदार्थस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः।।३१।।

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्ष-पदार्थस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः ।।३१।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्य-पदार्थस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः ।।३३।।

ॐ ह्रीं अर्हं पाप-पदार्थस्याऽत्या-सादना-
त्यागायाऽनुष्ठित-प्रोषधो-द्योतनाय नमः ।।३४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्दर्शनाय नमः ।।३५।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्ज्ञानाय नमः ।।३६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्चारित्राय नमः ।।३७।।

इति सर्व दोषप्रायश्चित्त विधिः

अथ श्रावक-प्रतिक्रमणम्

प्रतिज्ञा सूत्र

जीवे प्रमाद-जनिताः प्रचुराः प्रदोषा
यस्मात् प्रतिक्रमणतः प्रलयं प्रयान्ति।
तस्मात्-तदर्थ-ममलं गृहि-बोधनार्थं,
वक्ष्ये विचित्र-भव-कर्म-विशोधनार्थम्।।१।।

उद्देश्य सूत्र

पापिष्ठेन दुरात्मना जड़धिया माया विना-लोभिना,
रागद्वेष-मलीमसेन मनसा दुष्कर्म यन्-निर्मितम्।
त्रैलोक्याधिपते जिनेन्द्र! भवतः श्री-पाद-मूलेऽधुना
निन्दा-पूर्वमहं जहामि सततं वर्वर्तिषुः सत्पथे।।२।।

संकल्प सूत्र

खम्मामि सव्व-जीवाणं सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्व-भूदेसु वैरं मज्झं ण केण वि।।३।।

राग परित्याग सूत्र

राग-बंध-पदोसं च हरिसं दीण-भावयं।
उस्सुगत्तं भयं सोगं रदि-मरदिं च वोस्सरे।।४।।

पश्चात्ताप सूत्र

हा! दुट्ठु-कयं हा! दुट्ठु-चिंतियं भासियं च हा! दुट्ठं!
अंतो-अंतो डज्झमि पच्छत्तावेण वेदंतो।।५।।

दव्वे खेत्ते काले भावे च कदावराह-सोहणयं।
णिंदण-गरहण-जुत्तो मण-वच-कायेण पडिक्कमणं।।६।।

ए-इन्दिया, बे-इन्दिया, ते-इन्दिया, चतुरिंदिया, पंचिंदिया, पुढवि-काइया, आउ-काइया, तेउ-काइया, वाउ-काइया, वणप्फदि-काइया, तस-काइया, एदेसिं उद्दावणं, परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

अथ देवसिय (राइय) पडिक्कमणाए सव्वाइचार-विसोहि-णिमित्तं पुव्वाइरिय-कमेण आलोयण-सिद्ध-भत्ति-काउस्सग्गं करोमि।

सामायिक दण्डक

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

चत्तारि मंगलं-अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

अड्ढाइज्ज-दीव-दो-समुद्देसु, पण्णारस-कम्मभूमिसु, जाव-अरहंताणं, भयवंताणं, आदियराणं, तित्थयराणं, जिणाणं, जिणोत्तमाणं, केवलियाणं, सिद्धाणं, बुद्धाणं, परिणिव्वुदाणं, अंतय-डाणं, पारगयाणं, धम्माइरियाणं, धम्मदेसगाणं, धम्म-णायगाणं, धम्म-वर-चाउरंग-चक्कवट्टीणं, देवाहिदेवाणं, णाणाणं, दंसणाणं, चरित्ताणं सदा करेमि किरियम्मं। करेमि भन्ते! सामायियं सव्व-सावज्ज-जोगं पच्चक्खामि जावज्जीवं (यावत्-कालं, जावनियमं) तिविहेण-मणसा वचसा काएण, णं करेमि, ण कारेमि, ण अण्णं करंतं पि समणुमणामि। तस्स भन्ते! अइचारं पडिक्कमामि, णिंदामि, गरहामि अप्पाणं, जाव अरहंताणं, भयवंताणं पज्जुवासं करेमि तावकालं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

(यहाँ तीन आवर्त एक शिरोनति करके २७ उच्छ्वास पूर्वक कायोत्सर्ग करें। पश्चात् भूमि नमस्कार करके पुनः तीन आवर्त और एक शिरोनति करें, पश्चात् निम्नलिखित **चतुर्विंशति स्तव** पढ़ें)

चतुर्विंशति स्तव

थोस्सामि हं जिणवरे तित्थयरे केवली अणंत जिणे।
णर-पवर-लोय-महिए विहुय-रय मले महप्पण्णे।।१।।

लोयस्सुज्जोययरे धम्मं तित्थंकरे जिणे वंदे।
अरहंते कित्तिस्से चौबीसं चेव केवलिणो।।२।।

उसह-मजियं च वंदे संभव-मभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वन्दे।।३।।

सुविहिं च पुप्फयंतं सीयल सेयं च वासुपुज्जं च।
विमलं-मणंतं भयवं धम्मं संतिं च वंदामि।।४।।

कुंथुं च जिण वरिंदं अरं च मल्लिं च सुव्वयं च णमिं।
वंदाम्यारिट्ठणेमिं तहं पासं वड्ढमाणं च।।५।।

एवं मए अभित्थुआ विहुय-रय-मला पहीण जर-मरणा।
चउवीसं पि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु।।६।।

कित्तिय वंदिय महिया एदे लोगोत्तमा जिणा जिद्धा।
आरोग्ग-णाण-लाहं दिंतु समाहिं च मे बोहिं।।७।।

चंदेहिं णिम्मल-यरा; आइच्चेहिं अहिय-पया-संता।
सायर-मिव गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।८।।

मुख्य मंगल

श्रीमते वर्धमानाय नमो नमित-विद्-विषे।
यज्ज्ञानान्तर्गतं भूत्वा त्रैलोक्यं गोष्पदायते।।१।।

लघु सिद्ध-भक्तिः

तव-सिद्धे णय-सिद्धे संजम सिद्धे चरित्त-सिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि।।२।।

इच्छामि भन्ते! सिद्धभक्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण-सम्मचारित्त-जुत्ताणं, अट्ठविह-कम्म-विप्प- मुक्काणं, अट्ठगुण संपण्णाणं उड्ढलोय-मत्थयम्मि पयट्ठियाणं, तव-सिद्धाणं, णय-सिद्धाणं, संजम-सिद्धाणं, चरित्त-सिद्धाणं, अतीताणागद-वट्टमाण-कालत्तय-सिद्धाणं, सव्व-सिद्धाणं सया णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वन्दामि णमंसामि दुक्ख-क्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइ-गमणं समाहि-मरणं जिन-गुण-सम्पत्ति होउ मज्झं।

इच्छामि भंते! देवसियं (राइयं) आलोचेउं तत्थ-

दर्शन प्रतिमा

पंचुम्बर सहियाइं, सत्तवि वसणाइं जो विवज्जेइ।
सम्मत्तविशुद्ध मई, सो दंसण सावओ भणिओ।।१।।

व्रत प्रतिमा

पंच य अणुव्वयाइं, गुणव्वयाइं हवंति तह तिण्णि।
सिक्खावयाइं चत्तारि, जाण विदियम्मि ठाणम्मि।।२।।

सामायिक प्रतिमा

जिणवयण धम्मचेइय, परमेट्ठि जिणयालयाण णिच्चंपि जं।
वंदणं तिआलं, कीरइ सामाइयं तं खु।।३।।

प्रोषधोपवास प्रतिमा

उत्तम मज्झ जहण्णं, तिविहं पोसहविहाणं मुद्दिट्ठं।
सगसत्तीएमासम्मि, चउसु पव्वेसु कायव्वं।।४।।

सचित्तत्याग प्रतिमा

जं वज्जिजदि हरिदं, तय पत्त पवाल कंदफल वीयं।
अप्पासुगं च सलिलं, सचित्तणिव्वत्तिमं ठाणं।।५।।

दिवामैथुनत्याग या रात्रिभोजनत्याग प्रतिमा

मण वयण काय कद, कारिदाणुमोदेहिंमेहुणंणवधा।
दिवसम्मि जो विवज्जदि, गुणम्मि जो सावओछट्ठो।।६।।

ब्रह्मचर्य प्रतिमा

पुव्वुत्तणव विहाणं पि, मेहुणं सव्वदा विवज्जन्तो।
इत्थिकहादि णिवित्ती, सत्तमगुण बंभचारी सो।।७।।

आरम्भत्याग प्रतिमा

जं किं पि गिहारंभं, बहुथोवं वा सया विवज्जेदि।
आरंभणिवितमदी, सो अट्ठम सावओ भणिओ।।८।।

परिग्रहत्याग प्रतिमा

मोत्तूण वत्थमित्तं, परिग्गहं जो विवज्जदेसेसं।
तत्थवि मुच्छणं करेदि, वियाण सो सावओ णवमो।।९।।

अनुमतित्याग प्रतिमा

पुट्ठो वाऽपुट्ठो वा, णियगेहिं परेहिं सग्गिह कज्जे।
अणुमणणं जो ण कुणदि, वियाण सो सावओ दसमो।।१०।।

उद्दिष्टत्याग प्रतिमा

णवकोडीसु विशुद्धं, भिक्खायरणेव भुंजदे भुंजं।
जायणरहियं जोग्गं, एयारस सावओ सो दु।।११।।

एयारसम्मि ठाणे, उक्किट्ठो सावओ हवई दुविहो।
वत्थेय धरो पढमो, कोवीण परिग्गहो विदिओ।।१२।।

तव वय णियमावासय, लोचं कारेदि पिच्छगिण्हेदि।
अणुवेहा धम्मझाणं, करपत्ते एय-ठाणम्मि।।१३।।

एत्थ मे जो कोई देवसिओ (राइओ) अइचारो अणाचारो तस्स भंते! पडिक्कमामि पडिक्कमंतस्स मे सम्मत्तमरणं, समाहिमरणं, पंडियमरणं, वीरियमरणं, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

दंसण वय समाइय, पोसह सचित्त रायभत्तेय।
बंभारंभ परिग्गह, अणुमणमुद्दिट्ठदेस विरदोय।।१।।

एयासु जधा कहिद पडिमासु पमादाइ कयाइचार सोहणं छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं। अरहंत सिद्ध आइरिय उवज्झाय सव्वसाहुसक्खियं, सम्मत्तपुव्वगं, सुव्वदं दिढव्वदं समारोहियं मे भवदु, मे भवदु, मे भवदु।

अथ देवसिय (राइयं) पडिक्कमणाए सव्वाइचार विसोहिणिमित्तं, पुव्वाइरियकमेण पडिक्कमण भत्ति कायोत्सर्गं करोमि।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।३।।

णमोजिणाणं णमोजिणाणं णमोजिणाणं णमो णिस्सिहीए णमो णिस्सिहीए णमो णिस्सिहीए णमोत्थुदे णमोत्थुदे णमोत्थुदे अरहंत! सिद्ध! बुद्ध! णीरय! णिम्मल! सममण! सुभमण! सुसमत्थ! समजोग! समभाव! सल्लघट्टाण! सल्लघत्ताण! णिब्भय! णिराय! णिद्दोस! णिम्मोह! णिम्मम! णिस्संग! णिसल्ल! माणमाय-मोसमूरण, तवप्पहावण, गुणरयण, सीलसायर, अणंत, अप्पमेय, महदि महावीर वड्ढमाण, बुद्धिरिसिणो चेदि णमोत्थु दे णमोत्थु दे णमोत्थु दे।

मम मंगलं अरहंता य, सिद्धा य, बुद्धा य, जिणा य, केवलिणो, ओहिणाणिणो, मणपज्जयणाणिणो, चउदसपुव्वगामिणो, सुदसमिदि-समिद्धाय, तवोय, वारह विहो तवसी, गुणाय, गुणवंतोय, महरिसी तित्थं तित्थंकराय, पवयणं पवयणी य, णणं णाणी य, दंसणं दंएणी य, संजमो संजदा य, विणओ विणदा ए, बंभचेरवासो, बंभचारी य, गुत्तीओ, चेव गुत्तिमंतो य, मुत्तिओचेव मुत्तिमंतो य, समिदीओ, चेव समिदि मंतो य, सुसमय परसमय विदु, खंति खंति-वंतो य, खवगा य, खीणमोहा य खीणवंतो य, बोहिय बुद्धाय, बुद्धिमंतो य, चेइयरुक्खाय चेईयाणि।

उड्ढ-मह-तिरियलोए, सिद्धायदणाणि णमंस्सामि, सिद्धाणिसीहियाओ, अ्ठावय पव्वये, सम्मेदे, उज्जंते, चंपाए, पावाए, मज्झिमाए, हत्थिवा-लियसहाय, जाओ अण्णाओ काओवि णिसीहियाओ जीवलोयम्मि इसिपब्भारतलगयाणं सिद्धाणं बुद्धाणं कम्मचक्क-मुक्काणं णीरयाणं णिम्मलाणं गुरु आइरिय उवज्झायाणं पव्वतित्थेर कुलयराणं चउवण्णोय समण-संघोय, दससु भरहेरावएसु पंचसु महाविदेहेसु जो लोए संति साहवो संजदा तवसी एदे मम मंगलं पवित्तं एदेहं मंगलं करेमि भावदो विसुद्धोसिरसा अहिवंदिऊण सिद्धे-काऊण अंजलिं मत्थयम्मि तिविहं तियरण सुद्धो।

पडिक्कमामि भंते! दंसण पडिमाए, संकाए, कंखाए, विदिगिंच्छाए, परपासंडपसंसणाए, पसंथुए, जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो,

अणाचारो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।१।।

पडिक्कमामि भंते! वद पडिमाए पढमे थेलयडे हिंसाविरदिवदेः- वहेण वा, बंधेण वा, छेएण वा, अइभारारोहणेण वा, अण्णपाणणिरोहणेण वा, जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो, अणाचारो, मणसा, वचसा, काएण कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।२-१।।

पडिक्कमामि भंते! वदपडिमाए विदिये थूलयडे असच्चविरदिवदेः- मिच्छोपदेसेण वा, रहो अब्भखाणेण वा, कूडलेह करणेण वा, णायापहारेण वा सायारमंतभेएण वा, जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो, अणाचारो, मणसा, वचसा काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।२-२।।

पडिक्कमामि भंते! वद पडिमाए तिदिये थूलयडे थेणविरदिवदे थेणपओगेण वा थेणहरियादाणेण वा, विरुद्धरज्जा-इक्मणेण वा, हीणाहियमाणुम्माणेव वा, पडिरूवय ववहारेण वा, जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो, अणाचारो मणसा, वचसा, कायेण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।२-३।।

पडिक्कमामि भंते! वद पडिमाए चउत्थे थूलयडे अबंभविरदिवेः- परविवाहकरणेण वा, इत्तरियागमणेण वा, परिग्गहिदा परिग्गहिदा-गमणेण वा, अणंगकीडणेण वा, कामतिव्वाभिणि-वेसेण वा, जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो अणाचारो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।२-४।।

पडिक्कमामि भंते! वद पडिमाए पंचमे थूलयडे परिग्गह परिमाणवदे खेत्तवत्थूणं परिमाणाइक्कमणेण वा, धणधण्णाणं परिमाणाइक्कमणेण वा, हरिण्णसुवण्णाणं परिमाणाइक्कमणेण वा, दासीदासाणं परिमाणा-

इक्कमणेण वा, कुप्पभांडपरिमाणाइक्कमणेण वा, जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो अणाचारो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।२-५।।

पडिक्कमामि भंते! वद पडिमाए पढमे गुणव्वदेः- उड्ढवइक्कमणेण वा, अहोवइक्कमणेण वा, तिरियवइक्कमणेण वा, खेत्तवद्धिएण वा, अंतरा-धाणेण वा, जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो अणाचारो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।२-६-१।।

पडिक्कमामि भंते! वद पडिमाएविदिए गुणव्वदेः- आणयणेणवा, विणिजोगेण वा, सद्दाणुवाएण वा, रुवाणुवाएण वा, पुग्गलखेवेण वा, जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो अणाचारो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।२-७-२।।

पडिक्कमामि भंते! वद पडिमाएतिदिए गुणव्वदेः- कंदप्पेण वा, कुकुवेएण वा, मोक्खरिएण वा, असमक्खयाहिकरणेण वा, भोगो-पभोगणत्थकेण वा, जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो अणाचारो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।२-८-३।।

पडिक्कमामि भंते! वद पडिमाए पढमे सिक्खावदेः- फासिंदिय भोगपरिमाणाइक्कमणेण वा, रसणिंदियभोगपरि-माणाइक्कमणेण वा, घाणिंदिय भोगपरिमाणाइक्कमणेण वा, चक्खिंदियभोगपरिमाणाइक्कमणेण वा, सवणिंदिय भोगपरिमाणाइक्कमणेण वा, जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो अणाचारो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।२-६-१।।

पडिक्कमामि भंते! वद पडिमाए विदिय सिक्खावदेः- फासिंदिय भोगपरिमाणाइक्कमणेण वा, रसणिंदियपरिभोगपरि-माणाइक्कमणेण वा,

घाणिंदिय परिभोगपरिमाणाइक्कमणेण वा, चक्खिंदियपरिभोग-परिमाणाइक्कमणेण वा, सवणिंदिय परिभोगपरिमाणाइक्कमणेण वा, जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो अणाचारो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।२-१०-२।।

पडिक्कमामि भंते! वद पडिमाए तिदिए सिक्खावदेः- सचित्तणिक्खेवेण वा, सचित्तपिहाणेण वा, परउवएसेण वा, कालाइक्कमणेण वा, मच्छरिएण वा, जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो अणाचारो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।२-११-३।।

पडिक्कमामि भंते! वद पडिमाए चउत्थे सिक्खावदेः- जीविदासंसणे वा, मरणासंसणेण वा, मित्ताणुराएण वा, सुहाणुबधेण वा, णिदाणेण वा, जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो अणाचारो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।२-१२-४।।

पडिक्कमामि भंते! सामाइय पडिमाएः- मणदुप्पणिधाणेण वा, वादुप्पणिधाणेण वा, कायदुप्पणिधाणेण वा, अणादरेण वा सदि अणुव्वट्ठावणेण वा, जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो अणाचारो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।३।

पडिक्कमामि भंते! पोसह पडिमाएः- अप्पडिवेक्खियाप-मज्जियोसग्गेण वा, अप्पडिवेक्खियापमज्जियादाणेण वा, अप्पडिवेक्खिया-पमज्जियासंथारोवक्कमणेण वा, आवस्सयाणदरेण वा, सदिअणुवट्ठावणेण वा, जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो अणाचारो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।४।

पडिक्कमामि भंते! सचित्तविरदिपडिमाएः- पुढविकाइआ जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, आउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, तेउकाइया जीवा असंखेज्जासखेज्जा,वाउकाइया जीवा असंखेज्जा-संखेज्जा, वणप्फदिकाइया जीवा अणंताणंता, हरिया, बीया, अंकुरा, छिण्णभिण्ण, एदेसि उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं, उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।५।।

पडिक्कमामि भंते! राइभत्तपडिमाएः- णवविहबंभचरियस्य दिवा जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।६।।

पडिक्कमामि भंते! बंभपडिमाएः- इत्थिकहायत्तणेण वा, इत्थिमणोहरांगनिरिक्खिणेण वा, पुव्वरयाणुस्सरणेण वा, कामकोवणर-सासेवणेण वा, शरीरमंडणेण वा, जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।७।।

पडिक्कमामि भंते! आरंभविरदिपडिमाएः- कसायवसंगएण वा, जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।८।।

पडिक्कमामि भंते! परिग्गहविरदिपडिमाएः- वत्थमेत्त परिग्गहादो अवरम्मि परिग्गहे मुच्छापरिणामे, जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।९।।

पडिक्कमामि भंते! अणुमणविरदिपडिमाए जं कि पि अणुमणणं पुट्ठ पुट्ठेण कदं वा, कारिदं वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।१०।।

पडिक्कमामि भंते! उद्दिट्ठविरदिपडिमाए उद्दिट्ठदोसबहुलं अहोरदियं आहारयं वा आहारावियं वा आहारिज्जंतं वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।११।।

निर्ग्रन्थ पद की वांछा

इच्छामि भंते! इमं णिग्गंथं पवयणं अणुत्तरं केवलियं, पडिपुण्णं, णेगाइयं, समाइयं, संसुद्धं, सल्लघट्टाणं, सल्लघत्ताणं, सिद्धिमग्गं, सेढिमग्गं, खंतिमग्गं, मुत्तिमग्गं, पमुत्तिमग्गं, मोक्खमग्गं, पमोक्खमग्गं, णिज्जाणमग्गं, णिव्वाणमग्गं, सव्व-दुःखपरिहाणिमग्गं, सुचरियपरि-णिव्वाणमग्गं, अवितहं, अविसंति-पवयणं, उत्तमं तं सद्दहामि, तं पत्तियामि, त रोचेमि, तं फासेमि, इदोत्तरं अण्णं णत्थि, ण भूदं, ण भविस्सदि, णाणेण वा, दंसणेण वा, चरित्तेण वा, सुत्तेण वा, इदो जीवा सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परि-णिव्वाण-यंति, सव्व-दुक्खाण-मंतकरेंति, पडि-वियाणंति, समणोमि, संजदोमि, उवरदोमि, उवसंतोमि, उवधि-णियडि-माण-माया-मोसमूरण-मिच्छाणाण-मिच्छादंसण-मिच्छाचरित्तं च पडिविरदोमि, सम्मणाण-सम्मंदंसण-सम्मचरित्तं च रोचेमि, जं जिणवरेहिं पण्णत्तो, इत्थ मे जो कोई देवसिओ (राइओ) अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा में दुक्कडं।

इच्छामि भंते! वीर-भक्ति काउस्सग्गंकरेमि जो मए देवसिओ (राइओ) अइचारो, अणाचारो, आभोगो, अणाभोगो, काइओ, वाइओ, माणसिओ, दुच्चरिओ, दुच्चारिओ, दुब्भासिओ, दुप्परिणामिओ, णाणे, दंसणे, चरित्ते-सुत्ते, सामाइए, एयारसण्हं-पडिमाणं विराहणाए, अट्ठ-विहस्स कम्मस्स- णिग्घादणाए, अण्णहा उस्सासिदेण वा, णिस्सासिदेण वा, उम्मिस्सिदेण वा, णिम्मिस्सिदेण वा, खासिदेण वा, छिंकिदेण वा, जंभाइदेण वा, सुसुमेहिं-अंग-चलाचलेहिं, दिट्ठि-चलाचलेहिं, एदेहिं सव्वेहिं, अ-समाहिं- पत्तेहिं, आयरेहिं, जाव अरहंताणं, भयवंताणं, पज्जुवासं करेमि, ताव कायं पाव कम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

दंसण वय सामाइय, पोसह सचित्त राइभत्तेय।
बंभारंभ परिग्गह, अणुमणमुद्दिट्ठदेस विरदेदे।।१।।

एयासु जधा कहिद पडिमासु पमादाइ कयाइचार सोहणट्ठं छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं। अरहंत सिद्ध आइरिय उवज्झाय सव्वसाहुसक्खियं, सम्मत्त-पुव्वगं, सुव्वदं दिढव्वदं समारोहियं मे भवदु, मे भवदु, मे भवदु।

अथ देवसियो (राइय) पडिक्कमणाए सव्वाइचार विसोहिणिमित्तं, पुव्वाइरियकमेण निष्ठितकरण वीरभक्ति कायोत्सर्गं करेमि।

(**इति विज्ञाप्य-णमो अरहंताणं** इत्यादि **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं. २६७) बोलकर कायोत्सर्ग करें। पश्चात् **थोस्सामित्यादि चतुर्विंशति स्वत** (पृष्ठ सं. २६७) पढ़ें।)

यः सर्वाणि चराचराणि विधि-वद्, द्रव्याणि तेषां गुणान्,
पर्यायानपि भूत-भावि-भवितः सर्वान् सदा सर्वदा।
जानीते युगपत्-प्रतिक्षण-मतः सर्वज्ञ इत्युच्यते,
सर्वज्ञाय जिनेश्वराय महते वीराय तस्मै नमः।।१।।

वीरः सर्व-सुरासुरेन्द्र-महितो वीरं बुधाः संश्रिता,
वीरेणाभिहतः स्व-कर्म-निचयो वीराय भक्त्या नमः।
वीरात् तीर्थ-मिदं प्रवृत्त-मतुलं वीरस्य घोरं तपो,
वीरे श्री-द्युति-कांति-कीर्ति-धृतयो, हे वीर! भद्रं त्वयि।।२।।

ये वीर-पादौ प्रणमन्ति नित्यं ध्यान-स्थिताःसंयम-योग-युक्ताः।
ते वीत-शोका हि भवन्ति लोके संसार-दुर्गं विषमं तरन्ति।।३।।

व्रत-समुदय-मूलः संयम-स्कंध-बंधो,
यम-नियम-पयोभि-र्वर्धितः शील-शाखः।
समिति-कलिक-भारो गुप्ति-गुप्त-प्रवालो,
गुण-कुसुम-सुगंधिः सत्-तपश्चित्र-पत्रः।।४।।

शिव-सुख-फलदायी यो दया-छाय-योद्धः,
शुभ-जन-पथिकानां खेद-नोदे समर्थः।
दुरित-रविज-तापं प्रापयन्नन्तभावम्,
स भव-विभव-हान्यै नोऽस्तु चारित्र-वृक्षः।।५।।

चारित्रं सर्व-जिनैश्चरितं प्रोक्तं च सर्व-शिष्येभ्यः।
प्रणमामि पंच-भेदं पंचम-चारित्र-लाभाय।।६।।

धर्मः सर्व-सुखाकरो हित-करो, धर्मं बुधाश्चिन्वते,
धर्मेणैव समाप्यते शिव-सुखं धर्माय तस्मै नमः।

धर्मान्-नास्त्य-परः सुहृद्-भव-भृतां धर्मस्य मूलं दया,
धर्मे चित्त-महं दधे प्रतिदिनं हे धर्म! मां पालय।।७।।

धम्मो मंगल-मुक्किट्ठं अहिंसा संयमो तवो।
देवा वि तं णमंसंति जस्स धम्मे सया मणो।।८।।

इच्छामि भन्ते! पडिकमणाचारमालोचेउं तत्थ देसासिआ, असणासिआ ठाणासिआ काला-सिआ मुद्दासिआ, काउसग्गासिआ पणमासिआ आव-त्तासिआ पडिक्कमणाए तत्थसु आवासएसु परिहीणदा जो मए अच्चासणा मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो तस्समिच्छा मे दुक्कडं।।९।।

दंसण-वय-समामाइय-पोसह-सचित्त-राइभत्ते य।
बंभाऽऽरंभ-परिग्गह-अणुमणमद्दिट्ठ-देसविरदेदे।।१।।

एयासु जधा कहिद पडिमासु पमादाइ कयाइचार सोहणट्ठं छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं। अरहंत सिद्ध आइरिय उवज्झाय सव्वसाहुसक्खियं, सम्मत्तपुव्वगं, सुव्वदं दिढव्वदं समारोहियं मे भवदु, मे भवदु, मे भवदु।।

अथ देवसियो (राइयं) पडिक्कमणाए सव्वाइचार विसोहिणिमित्तं, पुव्वाइरियकमेण चउवीस तित्थयर भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(**इति विज्ञाप्य-णमो अरहंताणं** इत्यादि **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं. २६७) बोलकर कायोत्सर्ग करें। पश्चात् **थोस्सामित्यादि चतुर्विंशति स्वत** (पृष्ठ सं. २६७) पढ़ें।)

चउवीसं तित्तथयरे उसहाइ-वीर-पच्छिमे वन्दे।
सव्वे सगण-गण-हरे सिद्धे सिरसा णमंसामि।।१।।

ये लोकेऽष्ट-सहस्र लक्षण-धरा, ज्ञेयार्णवान्तर्गता,
ये सम्यग्-भव-जाल-हेतु-मथनाश्चन्द्रार्क-तेजोऽधिकाः।
ये साध्विन्द्र-सुराप्सरो-गण-शतै-र्गीत-प्रणूतार्चितास्,
तान् देवान् वृषभादि-वीर-चरमान् भक्त्या नमस्याम्यहम्।।२।।

नाभेयं देवपूज्यं, जिनवर-मजितं सर्व-लोक-प्रदीपम्।
सर्वज्ञं संभवाख्यं, मुनि-गण-वृषभं नन्दनं देवदेवम्।।
कर्मारिघ्नं सुबुद्धिं, वर-कमल-निभं पद्म-पुष्पाभि-गंधम्।
क्षान्तं दान्तं सुपार्श्वं, सकल-शशि-निभं चंद्रनामान-मीडे।।३।।

विख्यातं पुष्पदंतं, भव-भय-मथनं शीतलं लोक-नाथम्
श्रेयांसं शील-कोशं, प्रवर-नर-गुरुं वासुपूज्यं सुपूज्यम्।।
मुक्तं दान्तेंद्रियाश्वं, विमल-मृषि-पतिं सिंहसेन्यं मुनींद्रम्
धर्मं सद् धर्म-केतुं, शम-दम-निलयं स्तौमि शांतिं शरण्यम्।।४।।

कुन्थुं सिद्धालयस्थं, श्रमण-पतिमरं त्यक्त-भोगेषु चक्रम्।
मल्लिं विख्यात-गोत्रं, खचर-गण-नुतं सुव्रतं सौख्य-राशिम्
देवेन्द्रार्च्यं नमीशं, हरि-कुल-तिलकं नेमिचन्द्रं भवान्तम्
पार्श्वं नागेंद्र-वंद्यं, शरण-मह-मितो वर्धमानं च भक्त्या।।५।।

अञ्चलिका

इच्छामि भंते! चउवीस-तित्थयर-भत्ति-काउ-स्सग्गो कओ, तस्सालोचेउं पंच-महा-कल्याण-संपण्णाणं, अट्ठ-महा-पाडिहेर-सयाणं, चउतीसाति-सयविसेस-संजुत्ताणं, बत्तीस-देविंद-मणि-मउड-मत्थय-महिदाणं, बलदेव-वासुदेव-चक्कहर-रिसि-मुणि-जइ-अणगारोवगूढाणं, थुइ-सह-सहस्स-

णिलयाणं, उस-हाइ-वीर-पच्छिम-मंगल-महा-पुरिसाणं, सया णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ गमणं, समाहि-मरणं, जिण-गुण-संपत्ति होदु मज्झं।

वद-समि-दिंदिय रोधो, लोचावासय-मचेल-मण्हाणं।
खिदि-सयण-मदंतवणं, ठिदि-भोयण-मेयभत्तं च।।१।।

एदे खलु मूल-गुणा, समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता।
एत्थ पमाद-कदादो, अइचारादो णियत्तोऽहं।।२।।

छेदोवट्टावणं होउ मज्झं

अथ सर्वातिचार-विशुद्ध्यर्थं (देवसियो) रात्रिक प्रतिक्रमण- क्रियायां कृत-दोष-निराकरणार्थं पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्मक्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति, प्रतिक्रमणभक्ति, निष्ठित-करण-वीर-भक्ति, चतुर्विंशति-तीर्थंकर-भक्तिः कृत्वा तद्धीनाधिक- दोष-विशुद्धयर्थं, आत्म-पवित्री-करणार्थं समाधिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

दसण वय सामाइय, पोसह सचित्त राइभत्तेय।
बंभारंभ परिग्गह, अणुमणमुद्दिट्ठदेस विरदेदे।।१।।

इयासु जधा कहिद पडिमासु पमादाइकदादिचार सोहणट्ठं खेदोवट्ठावणं होउ मज्झं अरहंत सिद्ध आइरिय उवज्झाय सव्वसाहु सक्खियं सम्मत्तपुव्वगं सुव्वंद दिढव्वदं समारोहियं मे भवदु, मे भवदु, मे भवदु।

अथ देवसिय (राइय) पडिक्कमणाएसव्वा-दिचार विसोहिणिमित्तं पुव्वायरिय कमेण आलोयण श्री सिद्धभत्ति पडिक्कमणभत्ति णिट्ठिदकरण वीर भत्ति चउवीस-तित्थयर भत्ति कृत्वा तद्धीनाधिक-त्वादिदोष परिहारार्थं सकल दोष निराकरणार्थं सर्वमलातिचार विशुद्ध्यर्थं आत्मपवित्रीकरणार्थं समाधिभक्ति कायोत्सर्गं करोमि।

अथेष्ठ प्रार्थना प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः।
शास्त्राभ्यासो जिनपति-नुतिः संगतिः सर्वदार्यैः।
सद्वृत्तानां गुण-गण-कथा दोष-वादे च मौनम्।
सर्वस्यापि प्रिय-हित-वचो भावनाचात्म-तत्त्वे।
सम्पद्यन्तां मम भव-भवे यावदेतेऽपवर्गः।।१।।

तव पादौ मम हृदये, मम हृदयं तव पद-द्वये लीनम्।
तिष्ठतु जिनेन्द्र! तावत्-यावन्-निर्वाण-सम्प्राप्तिः।।२।।

अक्खर-पयत्थ-हीणं, मत्ता-हीणं च जं मए भणियम्।
तं खमहु णाण-देव! य मज्झवि दुक्खक्खयं कुणउ।।३।।

आलोचना

इच्छामि भन्ते! समाहि-भत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सलोचेउं, रयणत्तय-सरूव-परमप्प-झाण-लक्खण-समाहि-भत्तीएसया णिच्च कालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ गमणं, समाहि-मरणम्, जिण-गुण-संपत्ति होउ मज्झं।

॥ इति श्रावक प्रतिक्रमणम् ॥

नैमित्तिक-क्रिया-विधिः

अथ अष्टमी-पर्व-क्रियाविधि

अथ अष्टमी-पर्व क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहाँ सर्वप्रथम नमस्कार करें, पश्चात् तीन आवर्त और एक शिरोनति कर सामायिक दण्डक पढ़ें। पश्चात् वृहद् सिद्धभक्ति (पृष्ठ सं. १५१) पढ़ें।)

अथ अष्टमी पर्व-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल-कर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री चैत्यभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहाँ तीन आवर्त, एक शिरोनति और नमस्कार सहित सामायिक दण्डक का उच्चारण कर कायोत्सर्ग करें। पश्चात चैत्यभक्ति (पृष्ठ सं. १५३) पढ़ें)

अथ अष्टमी पर्व-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल-कर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री श्रुतभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहाँ विध्यित् सामायिक दण्डक का उच्चारण कर अञ्चलिका सहित बृहद् श्रुतभक्ति (पृष्ठ सं. १५८) पढ़ें)

अथ अष्टमी पर्व-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल-कर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री चारित्रभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(विधिवत् सामायिक दण्डक बोलकर चारित्र भक्ति पढ़ें) पश्चात चारित्रलोचना (पृष्ठ सं. १६१) पढ़ें)

(अष्टमीर प्रतिक्रमण)

चारित्रलोचना

इच्छामि भंते! अट्ठमियम्मि आलोचेउं अट्ठण्हं दिवसाणं, अट्ठण्हं राइणं, अब्भंतरदो पंचविहो आयारो णाणायारो, दंसणायारो, तवायारो, वीरियायारो, चरित्तायारो चेदि।

तत्थ णाणायारो अट्ठविहो काले, विणए, उवहाणे, बहुमाणे, तहेव अणिण्हवणे, विंजय-अत्थ-त्तदुभये चेदि। णाणायारो-अट्ठविहो परिहाविदो,

से अक्खरहीणं वा, सरहीणं वा, विंजणहीणं वा, पदहीणं वा, अत्थ-हीणं वा, गंथ-हीणं वा, थएसु वा, थुइस वा, अत्थक्खाणेसु वा, अणियोगेसु वा, अणियोगद्दारेसु वा, अकाले-सज्झाओ कदो वा, कारिदो वा, कीरतो वा समणुमण्णिदो, काले वा, परिहाविदो, अच्छा-कारिदं वा, मिच्छा-मेलिदं वा, आ-मेलिदं, वा मेलिदं, अण्णहा-दिण्हं, अण्णहा-पडिच्छिदं, आवास-एसु-परिहीणदाए तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।१।।

दंसणायारो अट्ठविहो

णिस्संकिय णिकंक्खिय णिव्विदिगिंच्छा अमूढ-दिट्ठि य उवगूहण ठिदिकरणं वच्छल्ल-पहावणा चेदि।।

दंसणायारो अट्ठविहो परिहाविदो संकाए, कंखाए, विदिगिंछाए, अण्ण-दिट्ठी-पसंसणदाए, पर-पाखंड-पसंसणाए, अणायदण-सेवणाए, अवच्छल्लदाए, अपहावणाए तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।२।।

तवायारो बारसविहो अब्भंतरो-छव्विहो, बाहिरो-छव्विहो चेदि। तत्थ बाहिरो अणसणं, आमो-दरियं, वित्तिपरिसंखा, रस-परिच्चाओ, सरीर-परिच्चाओ, विविक्त-सयणासणं चेदि। तत्थ अब्भंतरो पायच्छितं, विणओ, वेज्जावच्चं, सज्झाओ, झाणं, विउस्सग्गो चेदि। अब्भंतरं-बाहिरं-बारसविहं-त्तवोकम्मंण-कदं, णिसण्णेण पडिक्कंतं तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।३।।

वीरियायारो पंचविहो परिहाविदो वर-वीरिय-परिक्कमेण, जहुत्त-माणेण, बलेण, वीरिएण, परिक्कमेण णिगूहियं, तवो-कम्मं, ण कदं, णिसण्णेण पडिक्कंतं तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।४।।

चरित्तायारो तेरसविहो परिहाविदो पंचमहव्व-दाणि, पंचसमिदीओ, तिगुत्तीओ चेदि। तत्थ पढमे महव्वदे पाणादिवादादो वेरमणं से पुढविकाइया-जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, आऊ काइया जीवा असंखेज्जा-संखेज्जा, तेऊ

काइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वाऊ काइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वणप्फदिकाइया जीवा अणताणंता हरिया, बीआ, अंकुरा, छिण्णा, भिण्णा, एदेसिं उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं, उवघादो कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

बे-इन्दियाजीवा असखेज्जासंखेज्जा, कुक्खि, किमि, संख, खुल्लय-वराडय-अक्ख-रिट्ठय-गण्डवाल, संबुक्क, सिप्पि, पुलविकाइया एदेसिं उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं, उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

ते-इन्दियाजीवा असंखेज्जासंखेज्जा, कुन्थूद्देहिय-विंच्छिय-गोभिंद-गोजुव-मक्कुण-पिपीलियाइया, एदेसिं उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं, उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

चउरिंदिया-जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, दंस-मसय-मक्खि-पयंग-कीड-भमर-महुयर-गोमच्छियाइया, एदेसिं उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं, उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

पंचिंदियाजीवा असंखेज्जासंखेज्जा अंडाइया, पोदाइया, जराइया, रसाइया, संसेदिमा, सम्मुच्छिमा, उब्भेदिमा, उववादिमा, अवि-चउरासीदि-जोणि-पमुह-सद-सहस्सेसु एदेसिं, उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं, उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।१।।

अहावरे दव्वे महव्वदे मुसावादादो वेरमणं से कोहेण वा, माणेण वा, मायाए वा, लोहेण वा, राएण वा, दोसेण वा, मोहेण वा, हस्सेण वा, भयेण वा, पदोसेण वा, पमादेण वा, पेम्मेण वा, पिवासेण वा, लज्जेण वा, गारवेण वा, अणादरेण वा, केण-विकारणेण जादेण वा, सव्वो मुसावादो

भासिओ, भासिविओ, भासिज्जंतो वि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।२।।

अहावरे तच्चे महव्वदे अदिण्णा-दाणादो वेरमणं से गामे वा, णयरे, खेडे वा, कव्वडे वा, मडंवे वा, मंडले वा, पट्टणे वा, दोणमुहे वा, घोसे वा, आसमे वा, सहाए वा, संवाहे वा, सण्णिवेसे वा, तिण्हं वा, कट्ठं वा, वियडिं वा, मणिं वा, एवमाइयं अदिण्णं गिण्हियं, गेण्हावियं, गेण्हिज्जंतं समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।३।।

अहावरे चउत्थे महव्वदे मेहुणादो वेरमणं से देविएसु वा, माणुसिएसु वा, तेरिच्छिएसु वा, अचेरणिएसु वा, मणुण्णामणुण्णेसु रूवेसु, मणुण्णामणुण्णेसु सद्देसु, मणुण्णामणुण्णेसु गंधेसु, मणुण्णामणुण्णेसु रसेसु, मणुण्णामणुण्णेसु फासेसु, चक्खिंदिय-परिणामे, सोदिंदिय-परिणामे, घाणिंदिय-परिणामे, जिब्भिदिय-परिणामे, फासिंदिय-परिणामे, णो-इंदिय-परिणामे, अगुत्तेण अगुत्तिंदिएण, णवविहं बंभचरियं, ण रक्खियं, ण रक्खावियं, ण रक्खिज्जंतो वि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।४।।

अहावरे पंचमे महव्वदे परिग्गहादो वेरमणं सो वि परिग्गहो दुविहो अब्भंतरो बाहिरो चेदि। तत्थ अब्भंतरो परिग्गहो णाणावरणीयं, दंसणावरणीयं, वेयणीयं, मोहणीयं, आउग्गं, णामं, गोदं, अंतरायं चेदि अट्ठविहो। तत्थ बाहिरो परिग्गहो उवयरण-भंड-फलह-पीढ-कमण्डलु-संथार-सेज्ज-उवसेज्ज-भत्त-पाणादि-भेदेण अणेय विहो, एदेण परिग्गहेण अट्ठविहं कम्मरयं बद्धं, बद्धावियं, बज्झन्तं वि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।५।।

अहावरे छट्ठे अणुव्वदे राइ-भोयणादो वेरमणं से असणं, पाणं, खाइयं, साइयं चेदि। चउव्विहो आहारो से तित्तो वा, कडुओ वा, कसाइलो वा, अमिलो वा, महुरो वा, लवणो वा, अलवणो वा, दुच्चितिओ, दुब्भासिओ, दुप्परिणामिओ, दुस्समिणिओ, रत्तीए भुत्तो, भुंजावियो,

भुंज्जिजंतो वि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।६।।

पंचसमिदीओ, इरियासमिदी, भासाासमिदी, एषणासमिदी, आदाण-णिक्खेवण समिदी, उच्चार-पस्सवण खेल-सिंहाणय-वियडि-पइट्ठावणसमिदी चेदि।

तत्थ इरियासमिदी पुव्वुत्तर-दक्खिण-पच्छिम चउदिसि, विदिसासु, विहरमाणेण, जुगंतर-दिट्ठिणा, भव्वेण दट्ठव्वा। डव-डव-चरियाए, पमाद-दोसेण, पाण-भूद-जीव-सत्ताणं, उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।७।।

तत्थ भासासमिदी कक्कसा, कडुआ, परुसा, णिट्ठुरा, परकोहिणी, मज्झंकिसा, अइ-माणिणी, अणयंकरा, छेयंकरा, भूयाण-वहंकरा चेदि। दसविहा भासा, भासिया, भासाविया, भासिज्जंतो वि समुण-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।८।।

तत्थ एसणासमिदी अहाकम्मेण वा, पच्छा-कम्मेण वा, पुरा-कम्मेण वा, उद्दिट्ठयडेण वा, णिद्दि-ट्ठिठयडेण वा, कीडयडेण वा, साइया, रसाइया, सइंगाला, सधूमिया, अइ-गिद्धए, अग्गीव, छण्हं जीव-णिकायाणं, विराहणं, काऊण, अपरिसुद्धं, भिक्खं, अण्णं, पाणं, आहारियं, आहाराविय, आहारिज्जंतं वि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।९।।

तत्थ आदाण णिक्खेवण-समिदी चक्कलं वा, फलहं वा, पोत्थयं वा, पीढं वा, कमण्डलुं वा, वियडिं वा, मणिं वा, एवमाइयं, उवयरणं, अप्पडिलेहिऊण-गेण्हंतेण वा, ठवंतेण वा, पाण-भूद-जीव-सत्ताणं, उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।१०।।

तत्थ उच्चार-पस्सवण-खेल-सिंहाणय-वियडि-पइट्ठा-वणिया समिदी, रत्तीए वा, वियाले वा, अचक्खु-विसए, अवत्थडिले, अब्भोवयासे,

सणिद्धे, सवीए, सहरिए, एवमाइएसु, अप्पासु-गट्ठाणेसु, पइट्ठावंतेण पाण-भूद- जीव- सत्ताणं, उवघादो कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।११।।

तिण्णि-गुत्तीओ, मणगुत्तीओ, वचि-गुत्तीओ, काय-गुत्तीओ चेदि। तत्थ मण-गुत्ती, अट्टे झाणे, रुद्दे झाणे, इह लोए-सण्णाए, पर-लोए-सण्णाए, आहार-सण्णाए, भय-सण्णाए, मेहुण-सण्णाए, परिग्गह-सण्णाए, एवमाइयाजु जा मण गुत्ती, ण रक्खिया, ण रक्खाविया, ण रक्खिज्जंतं वि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।१२।।

तत्थ वचि-गुत्ती, इत्थि-कहाए, अत्थ-कहाए, भत्त-कहाए, राय कहाए, चोर-कहाए, वेर-कहाए, परपासंड-कहाए, एवमाइयासु जा वचि-गुत्ती, ण रक्खिया, ण रक्खाविया, ण रक्खिज्जंतं वि समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।१३।।

तत्थ काय-गुत्ती चित्त-कम्मेसु वा, पोत्त-कम्मेसु वा, कट्ठ-कम्मेसु वा, लेप्प-कम्मेसु वा, लयकम्मेसु वा, एवमाइयासु जा काय गुत्ती, ण रक्खिया, ण रक्खाविया, ण रक्खिज्जंतं वि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।१४।।

दोसु अट्ट-रुद्द-संकिलेस-परिणामेसु, तीसु अप्प-सत्थ-संकिलेस-परिणामेसु, मिच्छाणाण-मिच्छादंसण-मिच्छा चरित्तेसु, चउसु, उवसग्गेसु, चउसु सण्णासु, चउसु पच्चएसु, पंचसु चरित्तेसु, छसु जीव-णिकाएसु, छसु आवासएसु, सत्तसु, भयेसु, अट्ठसु, सुद्धीसु, णवसु, बंभचेर-गुत्तीसु, दससु समण-धम्मेसु, दससु धम्म-ज्झाणेसु, दससु मुण्डेसु, बारसेसु, संजमेसु, बावीसाए परीसहेसु, पणवीसाए भावणासु, पणवीसाए किरियासु, अट्ठारस-सील-सहस्सेसु, चउरासीदि-गुण-सय-सहस्सेसु, मूलगुणेसु, उत्तर गुणेसु अट्ठमियम्मि अदिक्कमो, वदिक्कमो, अइचारो, अणाचारो, आभोगो, अणाभोगो जो तं पडिक्कमामि। मए पडिक्कंतं तस्स मे सम्मत्त-

मरणं पंडिय-मरण, वीरिय-मरणं, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ-गमणं-समाहि-मरणं, जिण-गुण-सम्पत्ति होदु मज्झं।

अथ अष्टमी पर्व-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल-कर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री पंच महागुरुभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहां विधिवत् कायोत्सर्ग करके पंचमहागुरुभक्ति (पृष्ठ सं. १६६) पढ़ें)

अथ अष्टमी पर्व-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल-कर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री शान्तिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(विधिवत् कायोत्सर्ग करके शांति भक्ति (पृष्ठ सं. १७०) पढ़ें)

अथ अष्टमी पर्वक्रियायां, पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल-कर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्ध भक्ति, श्रुत भक्ति, वृहदालोचनापूर्वक चारित्र-भक्ति, शान्ति भक्ति च कृत्वा तद्धीनाधिकत्वादि-दोष विशुद्धयर्थं आत्म-पवित्री-करणार्थं, समाधि-भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(विधिवत् कायोत्सर्ग करके समाधिभक्ति (पृष्ठ सं. १७३) पढ़ें)

(इति अष्टमी पर्व क्रिया समाप्त)

चतुर्दशी-क्रिया-विधिः

अथ चतुर्दशी-पर्व-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहाँ तीन आवर्त, एक शिरोनति और नमस्कार आदि विधिपूर्वक सामायिक दण्डक (पृष्ठ सं. २१३) पाठ पढ़ें।)

बृहद् सिद्धभक्ति पढ़ें

अथ चतुर्दशी-पर्व-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री चैत्य-भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहाँ चिधिवत् तीन आवर्त, एक शिरोनति एवं नमस्कार पूर्वक सामायिक दण्डक (पृष्ठ सं.-२१३) तथा **चतुर्विंशति स्तव** (पृष्ठ सं. २१४) पढ़ें।)

अथ चतुर्दशी-पर्व-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं

भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री पंचमहागुरुभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहाँ पर विधिवत् आवर्त, शिरोनति एवं नमस्कार आदि पूर्वक **सामायिक दण्डक** तथा **"चतुर्विंशति स्तव"** बोलें, पश्चात् पंचमहागुरुभक्ति पढ़ें।)

अथ चतुर्दशी-पर्व-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री शान्तिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहाँ पर विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं. २१३) पाठ बोलकर पश्चात् अंचलिका सहित श्री शान्तिभक्ति (पृष्ठ सं. १७०) पढ़ें।)

अथ चतुर्दशी-पर्व-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति, श्रुतभक्ति पंचमहागुरुभक्ति, शान्तिभक्ति च कृत्वा तद्धीनाधिकत्वादि-दोष-विशुद्ध्यर्थं आत्मपवित्री-करणार्थं समाधिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहाँ पर विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं. २१३) बोलकर पश्वात् अंचलिका सहित बृहद् समाधिभक्ति (पृष्ठ सं. १७३) पढ़ें।)

अथ पाक्षिकी-क्रिया-विधिः

नोट : यदि धर्म व्यासंग आदि के कारण चतुर्दशी की क्रिया चतुर्दशी के दिन न कर पावें तो पूर्णिमा और अमावस्या के दिन पाक्षिकी क्रिया करना चाहिए

अथ पाक्षिकी-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहाँ विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं. २१३) बोलकर पश्चात् बृहद् सिद्धभक्ति (पृष्ठ सं. १५१) बोलना चाहिए।)

अथ पाक्षिकी-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सालोचना चारित्रभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहाँ विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं. २१३) बोलकर चारित्रभक्ति पढ़ें पश्चात् बृहद् आलोचना (जो कि अष्टमी की क्रिया विधि में लिखी गई है उसे) पढ़ें।)

अथ पाक्षिकी-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं

भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री चैत्यभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहाँ विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं. २१३) विधान बोलकर बृहद् चैत्यभक्ति (पृष्ठ सं. १५३) बोलना चाहिए)

अथ पाक्षिकी-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री पंचमहागुरुभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहाँ विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं. २१३) विधान सहित पंचमहागुरुभक्ति (पृष्ठ सं. १६६) बोलना चाहिए।)

अथ पाक्षिकी-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री शान्तिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहाँ विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं. २१३) बोलकर पश्चात् शान्तिभक्ति (पृष्ठ सं. १७०) बोलना चाहिए।)

अथ पाक्षिकी-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धसालोचनाचारित्र-चैत्य-पंचमहागुरु-शान्ति-भक्तिं च कृत्वा तद्धीनाधिकत्वादि-दोष विशुद्ध्यर्थं आत्मपवित्री करणार्थं समाधिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं. २१३) विधान सहित समाधि भक्ति (पृष्ठ सं. १७३) बोलना चाहिए।

सिद्ध-प्रतिमा-दर्शन-विधिः

अथ सिद्धप्रतिमा-दर्शन-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यहाँ विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं. २१३) बोलकर अंचलिका सहित बृहद् सिद्धभक्ति (पृष्ठ सं. १५१) बोलना चाहिए।)

पूर्व-जिनचैत्य-वन्दना-क्रिया

अथ पूर्व-जिन-चैत्य-वन्दना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति-कायोत्सर्ग

करोम्यहम्।

(यहाँ विधिवत् **सामायिक दण्डक** बोलकर सिद्धभक्ति बोलना चाहिए।)

अथ पूर्व-जिन-चैत्य-वन्दना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सालोचना चारित्रभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं. २१३) बोलकर पहिले चारित्रभक्ति (पृष्ठ सं. १६१) पश्चात् वृहद् आलोचना पढ़ना चाहिए।

अथ पूर्व-जिन-चैत्य-वन्दना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री चैत्यभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** बोलकर चैत्यभक्ति (पृष्ठ सं. १५३) पढ़ना चाहिए।

अथ पूर्व-जिन-चैत्य-वन्दना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री पंचगुरुभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** बोलकर पंचगुरुभक्ति (पृष्ठ सं. १६६) पढ़ना चाहिए।

अथ पूर्व-जिन-चैत्य-वन्दना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री शान्तिभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहमं।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** बोलकर शान्तिभक्ति (पृष्ठ सं. १७०) पढ़ना चाहिए।

अथ पूर्व-जिन-चैत्य-वन्दना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्ध-सालोचनाचारित्र-चैत्य-पंचमहागुरु-शान्ति-भक्ति च कृत्वा तद्धीनाधिकत्वादि-दोष-विशुद्ध्यर्थं आत्मपवित्रीकरणार्थं श्री समाधिभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** बोलकर समाधिभक्ति (पृष्ठ सं. १७३) पढ़ना चाहिए।

अपूर्व-चैत्य-वज्दना-क्रिया-विधि

पूर्व जिन चैत्यवन्दना की जो विधि ऊपर लिखी है, वही विधि अपूर्व चैत्य वन्दना

की है, विशेष इतना है कि सिद्धभक्ति के बाद और चारित्रभक्ति के पूर्व श्रुतभक्ति पढ़ना चाहिए।

अनेक-अपूर्व-चैत्य-वन्दना-क्रिया-विधिः

अपूर्व चैत्य वन्दना की जो विधि है वहीं विधि अनेक-अपूर्व-चैत्यवन्दना की है।

पूर्व-जिनचैत्य-वन्दना-क्रिया

अथ श्रुतस्कन्ध-प्रतिष्ठापन-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

यहाँ विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं. २१३) और चतुर्विंशतिस्तव (पृष्ठ सं. २१४) पढ़कर वृहद् सिद्धभक्ति (पृष्ठ सं. १५१) पढ़ना चाहिए।

अथ श्रुतस्कन्ध-प्रतिष्ठापन-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री श्रुतभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** और **चतुर्विंशतिस्तव** पढ़कर वृहद श्रुतभक्ति (पृष्ठ सं. १५८) पढ़ना चाहिए। (इसके बाद श्रुतस्कन्ध की स्थापना कर श्रुतावतार का वर्णन करना चाहिए, पश्चात् नीचे लिखी विधि के अनुसार स्वाध्याय आदि करना चाहिए।)

अथ स्वाध्याय-प्रतिष्ठापना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री श्रुतभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृष्ठ सं. २१३) आदि बोलकर वृहद श्रुतभक्ति (पृष्ठ सं. १५८) पढ़ना चाहिए।

अथ स्वाध्याय-प्रतिष्ठापन-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री आचार्यभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** आदि बोलकर पश्चात् निम्नलिखित आचार्य भक्ति (पृष्ठ सं. १६६) पढ़ना चाहिए। (पश्चात् यहाँ स्वाध्याय सम्पन्न करना चाहिए)

अथ स्वाध्याय-प्रतिष्ठापन-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री श्रुतभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** आदि बोलकर श्रुतभक्ति (पृ. सं. १५८) पढ़ना चाहिए।

अथ श्रुत-पञ्चमी-पर्व-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री शान्तिभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** आदि बोलकर शान्तिभक्ति (पृ. सं. १७०) पढ़ना चाहिए।

अथ श्रुतपंचमी-पर्व-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति, आचार्यभक्ति, शांतिभक्ति च कृत्वा तद्धीनाधिकत्वादि-दोष-विशुद्ध्यर्थं, आत्मपवित्री-करणार्थं समाधिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. १७०) आदि बोलकर बृहद् समाधिभक्ति (पृ. सं. १७३) पढ़ना चाहिए।

अथ आष्टान्हिक-पर्व-क्रिया-विधिः

आष्टान्हिक पर्वों में अष्टमी के दिन सिद्धभक्ति के बाद और नन्दीश्वर भक्ति के पहिले श्रुतभक्ति, चारित्रभक्ति और चारित्रालोचना करना चाहिए तथा चतुर्दशी के दिन सिद्धभक्ति के बाद और नन्दीश्वर भक्ति के पूर्व चैत्यभक्ति एवं श्रुतभक्ति करना चाहिए, शेष दिनों की विधि नीचे लिखी जा रही है।

अथ आष्टाह्निक-पर्व-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. १७०) आदि बोलकर बृहद् सिद्धभक्ति (पृ. सं. १५१) बोलना चाहिए।

अथ आष्टाह्निक-पर्व-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री नन्दीश्वरभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. १७०) आदि बोलकर नन्दीश्वर भक्ति (पृ. सं. १८०) बोलना चाहिए।

अथ आष्टाह्निक-पर्व-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री पञ्चमहागुरुभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. १७०) आदि बोलकर पंचमहागुरुभक्ति (पृ. सं. १६६) बोलना चाहिए।

अथ आष्टाह्निक-पर्व-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री शान्तिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** आदि बोलकर शान्तिभक्ति बोलना चाहिए।

अथ आष्टाह्निक-पर्व-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्तिं, नन्दीश्वरभक्तिं, पंचमहागुरु-भक्तिं, शांतिभक्तिं च कृत्वा तद्धीनाधिकत्वादि-दोष-विशुद्ध्यर्थं आत्म-पवित्रीकरणर्थं समाधिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. २१३) एवं **चतुर्विंशतिस्तव** (पृ. सं. २१४) बोलकर बृहद् समाधिभक्ति बोलना चाहिए।

मंगल-गोचर-मध्याह्न-वन्दना-क्रिया-विधिः

नोटः वर्षा योग धारण और समापन के प्रथम दिन अर्थात् आषाढ़शुक्ला और कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी के दिन मध्याह्न देव वन्दना निम्नलिखित विधि के अनुसार करना चाहिए।

अथ मंगलगोचर-मध्याह्नवन्दना क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. २१३) एवं चतुर्विंशति स्तव (पृ. सं. २१४) पढ़कर वृहद् सिद्धभक्ति (पृ. सं. १५१) पढ़ना चाहिए।

अथ मंगलगोचर-मध्याह्नवन्दना क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री चैत्यभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** पढ़कर वृहद् चैत्यभक्ति (पृ. सं. १४३) पढ़ना चाहिए।

अथ मंगलगोचर-मध्याह्नवन्दना क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री पंचमहागुरुभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. २१३) आदि बोलकर पंचमहागुरुभक्ति (पृ. सं. १६६) पढ़ना चाहिए।

अथ मंगलगोचर-मध्याह्नवन्दना क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री शान्तिभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** आदि बोलकर शान्तिभक्ति (पृ. सं. १७०) पढ़ना चाहिए।

अथ मंगलगोचर-मध्याह्नवन्दना क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति, पंचमहागुरुभक्ति, शान्तिभक्ति च कृत्वा तद्धीनाधिकत्वादि दोष-विशुद्धयर्थं आत्म-पवित्री-करणार्थं कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. २१३) बोलकर समाधिभक्ति (पृ. सं. १७३) पढ़ना चाहिए।

अथ मंगल-गोचर-भक्तप्रत्याख्यान-क्रिया-विधिः

नोटः मंगलगोचर-मध्याह्न-देववन्दना क्रिया के बाद सभी साधुओं को गुरु (आचार्य) के पास जाकर वर्षायोग धारण या समापन हेतु चतुर्दशी का उपवास ग्रहण करने के लिए निम्नलिखित बृहत् (बड़ी प्रत्याख्यान विधि करना चाहिए।)

अथ मंगल-गोचर-भक्त-प्रत्याख्यान-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. २१३) नौ जाप्य और **चतुर्विंशति स्तव** (पृ. सं. २१४) करके बृहद्सिद्धभक्ति पढ़ना चाहिए।

अथ मंगल-गोचर-भक्त-प्रत्याख्यान-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री योगिभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. २१३) बोलकर एवं कायोत्सर्ग कर बृहद् योगिभक्ति (पृ. सं. १६४) पढ़ें। पश्चात् गुरु साक्षी पूर्वक चतुर्विध आहार का त्याग करें।

अथ मंगल-गोचर-भक्त-प्रत्याख्यान-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री आचार्यभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. २१३) , नौ जाप्य और **चतुर्विंशति स्तव** (पृ. सं. २१४) बोलकर बृहद् आचार्य भक्ति (पृ. सं. १६६) पढ़ें।

अथ मंगल-गोचर-भक्त-प्रत्याख्यान-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री शान्तिभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** आदि बोलकर शान्तिभक्ति (पृ. सं. १७०) पढ़ना चाहिए।

अथ मंगल-गोचर-भक्त-प्रत्याख्यान-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति, योगिभक्ति, आचार्यभक्ति, शान्तिभक्ति च कृत्वा तद्धीनाधिकत्वादि-दोष- विशुद्ध्यर्थं, आत्म-पवित्री-करणार्थं श्री समाधिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. २१३) कायोत्सर्ग और **चतुर्विंशति स्तव** (पृ. सं. २१४) करके बड़ी समाधि भक्ति पढ़ें।

नोट : यह सब उपर्युक्त क्रिया त्रयोदशी को की जायेगी, पश्चात् सभी साधुओं को मिलकर आषाढ शुक्ला चतुर्दशी की पूर्वरात्रि में वर्षायोग प्रतिष्ठापन (धारण) हेतु तथा कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी की अपर (पिछली) रात्रि में वर्षायोगनिष्ठापन (समापन) हेतु निम्नलिखित क्रिया करना चाहिए।

वर्षायोग धारण-समापन-क्रिया-विधिः

अथ वर्षायोग-प्रतिष्ठापन क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल- कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ.सं.-२) , कायोत्सर्ग और थोस्सामि बोलकर बड़ी सिद्धभक्ति पढ़ें।

अथ वर्षायोग-प्रतिष्ठापन क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल- कर्म-

क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री योगिभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. २१३), कायोत्सर्ग और **चतुर्विंशति स्तव** (पृ. सं. २१४) बोलकर योगिभक्ति (पृ. सं. १६४) पढ़ें।

पूर्व दिशा में -

यावन्ति जिन चैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये।
तावन्ति सततं भक्त्या त्रिःपरीत्य नमाम्यहम्।।

अथ वृषभजिन स्तोत्र

स्वयम्भुवा भूत-हितेन भूतले, समंजस-ज्ञान-विभूति-चक्षुषा।
विराजितं येन विधुन्वता तमः क्षपाकरेणेव गुणोत्करैः करैः।।१।।

प्रजापति-र्यः प्रथमं जिजीविषूः शशास कृष्यादिषु कर्मसु प्रजाः।
प्रबुद्धतत्त्वः पुनरद्भूतोदयो ममत्वतो निर्विविदे विदाम्बरः।।२।।

विहाय यः सागर-वारि-वाससं वधू-मिवेमां वसुधा-वधूं सतीम्।
मुमुक्षु-रिक्ष्वाकु-कुलादि-रात्मवान् प्रभुः प्रवव्राज सहिष्णु-रच्युतः।।३।।

स्वदोष-मूलं स्वसमाधि-तेजसा निनाय यो निर्दय-भस्मसात्-क्रियाम्।
जगाद तत्त्वं जगतेऽर्थिनेऽञ्जसा बभूव च ब्रह्मपदामृतेश्वरः।।४।।

स विश्व-चक्षु-र्वृषभोऽर्चितः सतां समग्र-विद्यात्म-वपु-र्निरंजनः।
पुनातु चेतो मम नाभिनन्दनो जिनोऽजित-क्षुल्लक-वादि-शासनः।।५।।

श्री अजित जिन स्तुति

यस्य प्रभावात् त्रिदिवच्युतस्य क्रीडास्वपि क्षीव-मुखारविन्दः।
अजेय-शक्ति-र्भुवि बन्धुवर्ग-श्चकार नामाजित इत्यबन्ध्यम्।।६।।

अद्यापि यस्याजित-शासनस्य सतां प्रणेतुः प्रति-मंगलार्थम्।
प्रगृह्यते नाम परं पवित्रं स्व-सिद्धि-कामेन जनेन लोके।।७।।

यः प्रादु-रासीत्प्रभु-शक्ति-भूम्ना भव्याश्या-लीन-कलंक-शान्त्यै।
महामुनि-र्मुक्त-घनोपदेहो यथारविन्दाभ्युदयाय भास्वान्।।८।।

येन प्रणीतं पृथु धर्मतीर्थं जेष्ठं जनाः प्राप्य जयन्ति दुःखम्।
गांगं ह्रदं चन्दन-पंक-शीतं गज-प्रवेका इव घर्मतप्ताः।।६।।

स ब्रह्मनिष्ठः सम-मित्र-शत्रु-र्विद्या-विनिर्वान्त-कषाय-दोषः।
लब्धात्म-लक्ष्मी-रजितोऽजितात्मा जिनः श्रियं मे भगवान् विधत्ताम!।।१०।।

अथ वर्षायोग प्रतिष्ठापन क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल- कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री लघुचैत्यभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. २१३), कायोत्सर्ग और **चतुर्विंशति स्तव** (पृ. सं. २१४) बोलकर निम्नलिखित चैत्यभक्ति (पृ. सं. १५३) पढ़ें।

अथ लघु-चैत्य-भक्ति

वर्षेषु वर्षान्तर-पर्वतेषु नन्दीश्वरे यानि च मन्दिरेषु।
यावन्ति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि वन्दे जिन-पुंगवानाम्।।१।।

अवनि-तल-गतानां कृत्रिमाकृत्रिमाणाम,
वन-भवन-गतानां दिव्य-वैमानिकानाम्।
इह मनुज-कृतानां देव-राजार्चितानाम्,
जिनवर-निलयानां भावतोऽहं स्मरामि।।२।।

जम्बू-धातकि-पुष्करार्ध-वसूधा-क्षेत्र-त्रये ये भवाः।
चंद्राम्भोज-शिखण्डि-कण्ठ-कनक-प्रावृड्-घना-भा-जिनाः।।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-लक्षण-धरा दग्धाष्ट-कर्मेन्धनाः।
भूतानागत-वर्तमान-समये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः।।३।।

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजत-गिरिवरे शाल्मलौ जम्बुवृक्षे,
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकर रुचके कुण्डले मानुषाङ्के।
इष्वाकारेऽञ्जनाद्रौ दधिमुख-शिखरे व्यन्तरे स्वर्गलोके,
ज्योति-र्लोकेऽभिवन्दे भुवन-महितले यानि चैत्यालयानि।।४।।

द्वौ कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवलौ द्वाविन्द्रनील प्रभौ,
द्वौ बन्धूक-सम-प्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियङ्गु-प्रभौ।
शेषाः षोडश जन्म-मृत्यु-रहिताः सन्तप्त-हेम-प्रभा-
स्ते सञ्ज्ञान-दिवाकराः सुर-नुताः सिद्धिं प्रयच्छन्तु नः।।5।।

इच्छामि भन्ते! चैत्य-भत्ति काउस्सग्गो, कओ तस्सालोचेउं, अहलोय-तिरियलोय-उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिण-चेइयाणि ताणि सव्वाणि तिसुवि लोएसु भवणवासिय-वाणविंतर-जोइ-सिय-कप्पवासिय-त्ति चउविहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण धुव्वेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण वासेण, दिव्वेण ण्हाणेण, णिच्चकालं अच्चंति, पुज्जंति, वंदंति, णमंसंति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो सुगइ-गमणं, समाहि-मरणं जिण-गुण-संपत्ति होउ मज्झं।

प्राग्-दिग्-विदिगन्तरे केवलि-जिन-सिद्ध-साधुगण-देवाः
ये सर्वद्धिं-समृद्धा योगिगणाँस्तानहं वन्दे।।1।।

इति पूर्व दिग्वन्दना

दक्षिण दिशा में -

यावन्ति जिन-चैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये।
तावन्ति सततं भक्त्या त्रिःपरीत्य नामाम्यहम्।।

श्री सम्भव जिन स्तोत्र

त्वं सम्भवः सम्भव तर्ष-रोगैः सन्तप्यमानस्य जनस्य लोके।
आसीरिहाकस्मिक एव वैद्यो वैद्यो यथा-नाथरुजां प्रशान्त्यै।।1।।

अनित्य-मत्राण-महर्द्धिक्रयाभिः प्रसक्त-मिथ्याध्यवसाय-दोषम्।
इदं जगज्जन्म-जरान्तकार्तं निरञ्जनां शान्ति-मजीगमस्त्वम्।।2।।

शतह्रदोन्मेष-चलं हि सौख्यं तृष्णामयाप्यायन-मात्र-हेतुः
तृष्णाभिवृद्धिश्च तपत्यजस्रं तापस्तदायासयतीत्यवादीः । ।3 । ।

बन्धश्च मोक्षश्च तयोश्च हेतु-र्बद्धश्च मुक्तश्च फलं च मुक्तेः ।
स्याद्वादिनो नाथ तवैव युक्तं नैकान्त-दृष्टेस्त्वमतोऽसि शास्ता । ।4 । ।

शक्रोऽप्यशक्तस्तव पुण्यकीर्तेः स्तुत्यां प्रवृत्तः किमु मादृशोऽज्ञः ।
तथापि भक्त्या स्तुत-पाद-पद्मो ममार्य देयाः शिवताति-मुच्चैः । ।5 । ।

श्री अभिनन्दन जिन स्तोत्र

गुणाभिनन्दा-दभिनन्दनो भवान् दयावधूंक्षान्ति-सखी-मशिश्रियत् ।
समाधितन्त्रस्तदुपोपपत्तये द्वयेन नैर्ग्रन्थ्यगुणेन चायुजत् । ।6 । ।

अचेतने तत्कृत-बन्धजेऽपि च ममेदमित्याभिनिवेशिकग्रहात् ।
प्रभङ्गुरे स्थावर-निश्चयेन च क्षतं जगत्तत्व-मजिग्रहद्-भवान् । ।7 । ।

क्षुधादि-दुःख-प्रतिकारतः स्थिति-र्न चेन्द्रियार्थ-प्रभवाल्प-सौख्यतः ।
ततो गुणो नास्ति च देह-देहिनो-रितीदमित्थं भगवान् व्यजिज्ञपत् । ।8 । ।

जनोऽतिलोलोप्यनुबंध-दोषतो भयादकार्येष्विह न प्रवर्तते ।
इहाप्यमुत्राप्यनुबंध-दोषवित् कथं सुखे संसजतीति चाब्रवीत् । ।9 । ।

स चानुबन्धोऽस्य जनस्य तापकृत् तृषोऽभिवृद्धिः सुखतो न च स्थितिः ।
इति प्रभो! लोकहितं यतो मतं ततो भवानेन गतिः सतां मतः । ।10 । ।

अथ वर्षायोग प्रतिष्ठापन (निष्ठापन) क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल- कर्म- क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री लघुचैत्यभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम् ।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. २१३) , कायोत्सर्ग और **चतुर्विंशति स्तव** (पृ. सं. २१४) बोलकर **"वर्षेषु वर्षान्तरपर्वतेषु"** इत्यादि लघुचैत्यभक्ति अंचलिका सहित पढ़ना चाहिए।

दक्षिण-दिग्-विदिगतरे केवलि-जिन-सिद्ध साधुगण-देवाः
ये सर्वर्द्धि-समृद्धा योगिगणाँस्तानहं वन्दे।।२।।

इति दक्षिण दिग्वन्दना

पश्चिम दिशा में -

यावन्ति जिन-चैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये।
तावन्ति सततं भक्त्या त्रिःपरीत्य नामाम्यहम्।।

श्री सुमतिनाथ जिन स्तोत्र

अन्वर्थ-संज्ञः सुमति-र्मुनिस्त्वं स्वयं मतं येन सुयंक्ति-नीतम्।
यतश्च शेषेषु मतेषु नास्ति सर्व-क्रिया-कारक-तत्त्व-सिद्धिः।।१।।

अनेक-मेकं च तदेव तत्त्वं भेदान्वय-ज्ञान-मिदं हि सत्यम्।
मृषोपचारोऽन्यतरस्य लोपे तच्छेष-लोपोऽपि ततोनुपाख्यम्।।२।।

सतः कथञ्चित्तदसत्त्व-शक्तिः खे नास्ति पुष्पं तरुषु प्रसिद्धम्।
सर्वस्वभाव-च्युत-मप्रमाणं स्ववाग्-विरुद्धं तव दृष्टितोऽन्यत्।।३।।

न सर्वथा नित्य-मुदेत्यपैति न च क्रिया-कारक-मत्र-युक्तम्।
नैवासतो जन्म सतो न नाशो दीपस्तमः पुद्गल-भावतोऽस्ति।।४।।

विधि-र्निषेधश्च कथञ्चिदिष्टौ विवक्षया मुख्य-गुण-व्यवस्था।
इति प्रणीतिः सुमतेस्तवेयं मति-प्रवेकः स्तुवतोऽस्तु नाथ।।५।।

श्री पद्मप्रभ जिन स्तोत्र

पद्मप्रभः पद्म-पलाश-लेश्यः पद्मालयालिंगित-चारु-मूर्तिः।
बभौ भवान् भव्य-पयोरुहाणां पद्माकराणामिव पद्मबन्धु।।६।।

बभार पद्मां च सरस्वतीं च भवान्-पुरस्तात्-प्रतिमुक्ति-लक्ष्म्याः।
सरस्वती-मेव समग्र-शोभां सर्वज्ञ-लक्ष्मीं ज्वलितां विमुक्तः।।७।।

शरीर-रश्मि-प्रसरः प्रभोस्ते बालार्करश्मि-च्छविरालिलेप।
नरामराकीर्ण-सभां प्रभाव-च्छैलस्य पद्मा-भमणेः स्वसानुम्।।८।।

नभस्तलं पल्लव-यन्निव त्वं सहस्र-पत्राम्बुज-गर्भचारैः।
पादाम्बुजैः पातित-मोह-दर्पो भूमौ प्रजानां विजहर्ष भूत्यै।।९।।

गुणाम्बुधे-र्विप्लुष-मप्यजस्रं नाखण्डस्तोतुमलं तवर्षे।
प्रागेव मादृक्किमु तति-भक्ति-र्मां बाल-मालापयतीद-मित्थम्।।१०।।

अथ वर्षायोग प्रतिष्ठापन (निष्ठापन) क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल- कर्म- क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री लघुचैत्यभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. २१३), कायोत्सर्ग और **चतुर्विंशति स्तव** (पृ. सं. २१४) बोलकर **"वर्षेषु वर्षान्तरपर्वतेषु"** इत्यादि लघुचैत्यभक्ति अञ्चलिका सहित पढ़ना चाहिए

पश्चिम-दिग्-विदिगतरे केवलि-जिन-सिद्ध साधुगण-देवाः
ये सर्वर्द्धि-समृद्धा योगिगणाँस्तानहं वन्दे।।३।।

इति पश्चिम दिग्वन्दना

उत्तर दिशा में -

यावन्ति जिन-चैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये।
तावन्ति सततं भक्त्या त्रिःपरीत्य नामाम्यहम्।।

श्री सुपार्श्व जिन स्तोत्र

स्वास्थ्यं यदात्यन्तिक-मेष पुंसां स्वार्थो न भोगः परिभङ्गुरात्मा
तृषोनुषंगान्न च ताप-शान्ति-रितीदमाख्यद्-भगवान् सुपार्श्वः।।१।।

अजंगमं जंगमनेय-यंत्रं यथा तथा जीवधृतं शरीरम्।
बीभत्सु पूति क्षयि तापकं च स्नेहो वृथात्रेति हितं त्वमाख्यः।।२।।

अलंघ्य-शक्ति-र्भवितव्यतेयं हेतु-द्वयाविष्कृत-कार्य-लिंगाः।
अनीश्वरो जन्तु-रहंक्रियार्त्तः संहत्य कार्येष्विति साध्ववादीः।।३।।

विभेति मृत्यो-र्न ततोऽस्ति मोक्षो नित्यं शिवं वाञ्छति नास्य लाभः।
तथापि बालो भय-काम-वश्यो वृथा स्वयं तप्यत इत्यवादीः।।४।।

सर्वस्य तत्त्वस्य भवान्-प्रमाता मातेव बालस्य हितानुशास्ता।
गुणावलोकस्य जनस्य नेता मयापि भक्त्या परिणूयसेऽद्य।।५।।

श्री चन्द्रप्रभजिन स्तोत्र

चन्द्रप्रभं चन्द्रमरीचि-गौरं चन्द्रं-द्वितीयं जगतीव कान्तम्।
वन्देऽभिवन्द्यं महता-मृषीन्द्रं जिनं जित-स्वान्त-कषाय-बंधम्।।६।।

यस्यांग-लक्ष्मी-परिवेश-भिन्नं तमस्तमोरेरिव रश्मि-भिन्नम।
ननाश बाह्यं बहुमानसं च ध्यान-प्रदीपातिशयेन भिन्नम्।।७।।

स्वपक्ष-सौस्थित्य-मदाऽवलिप्ता वाक्-सिंहनादै-र्विमदा बभूवुः।
प्रवादिनो यस्य मदार्द्रगण्डा गजा यथा केशरिणो निनादैः।।८।।

यः सर्वलोके परमेष्ठितायाः पदं बभूवाद्भुत-कर्म-तेजाः।
अनन्त-धामाक्षर-विश्वचक्षुः समन्त-दुःख-क्षय-शासनस्य।।९।।

स चन्द्रमा भव्य-कुमुद्वतीनां विपन्न-दोषाऽभ्र-कलंक-लेपः।
व्याकोश-वाङ्-न्याय-मयूख-मालः पूयात्-पवित्रो भगवान्-मनो मे।।१०।।

अथ वर्षायोग प्रतिष्ठापन (निष्ठापन) क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल- कर्म- क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री लघुचैत्यभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. २१३), कायोत्सर्ग और **चतुर्विंशति स्तव** (पृ. सं. २१४) बोलकर **"वर्षेषु वर्षान्तरपर्वतेषु"** इत्यादि लघुचैत्यभक्ति अञ्चलिका सहित पढ़ना चाहिए

उत्तर-दिग्-विदिगतरे केवलि-जिन-सिद्ध साधुगण-देवाः
ये सर्वर्द्धि-समृद्धा योगिगणाँस्तानहं वन्दे।।४।।

इति उत्तर दिग्वन्दना

अथ वर्षायोग प्रतिष्ठापन (निष्ठापन) क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री पंचगुरुभक्ति

कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. २१३) आदि पढ़कर पंचमहागुरुभक्ति अञ्चलिका (पृ. सं. १६६) सहित पढ़े।

अथ वर्षायोग प्रतिष्ठापन (निष्ठापन) क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री शान्तिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** आदि पढ़कर शान्तिभक्ति (पृ. सं. १७०) पढ़े।

अथ वर्षायोग प्रतिष्ठापन (निष्ठापन) क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति, योगिभक्ति, लघुचैत्यभक्ति, पंचगुरुभक्ति, शान्तिभक्ति, च कृत्वा तद्धीनाधिकत्वादि-दोष-विशुद्धयर्थं आत्मपवित्री-करणार्थं समाधिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. २१३), कायोत्सर्ग और **चतुर्विंशति स्तव** (पृ. सं. २१४) बोलकर बड़ी समाधिभक्ति (पृ. सं. १७३) पढ़ना चाहिए।

श्री वीर-निर्वाण-क्रिया-विधिः

अथ श्री वीर-निर्वाण-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. २१३), कायोत्सर्ग और **चतुर्विंशति स्तव** (पृ. सं. २१४) बोलकर बृहद्सिद्धभक्ति (पृ. सं. १५१) पढ़ना चाहिए।

अथ श्री वीर-निर्वाण-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री निर्वाणभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. २१३) आदि बोलकर पंचगुरुभक्ति (पृ. सं. १६६) पढ़ना चाहिए।

अथ श्री वीर-निर्वाण-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री शान्तिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** आदि बोलकर शान्तिभक्ति (पृ. सं. १७०) पढ़ना चाहिए।

अथ श्री वीर-निर्वाण-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल- कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति, निर्वाणभक्ति, पंचगुरुभक्ति, शान्तिभक्ति, च कृत्वा तद्धीनाधिकत्वादि-दोष विशुद्ध्यर्थं आत्म-पवित्री-करणार्थं, श्री समाधि-भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

विधिवत् **सामायिक दण्डक** (पृ. सं. २१३) आदि बोलकर बृहद् समाधिभक्ति (पृ. सं. १७३) पढ़ना चाहिए।

अथ लोच-करण-क्रिया-विधिः

अथ लोच-प्रतिष्ठापन-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म- क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री लघु-सिद्धभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

नौ बार णमोकार मंत्र का जाप-

सम्मत्त-णाण-दंसण-वीरिय-सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरु-लघु-मव्वावाहं अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं।।१।।

तवसिद्धे णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमस्सामि।।२।।

इच्छामि भन्ते! सिद्धभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण-सम्म-दंसण-सम्मचारित्त-जुत्ताणं, अट्ठविहकम्मविप्पमुक्काणं, अट्ठगुण-संपण्णाणं, उड्ढलोय-मत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं, णयसिद्धाणं, संजमसिद्धाणं, चरित्तसिद्धाणं अतीदा-णागद-वट्टमाण-कालझय सिद्धाणं, सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो, सुगइ-गमणं, समाहि-मरणं, जिण-गुण-संपत्ति होदु मज्झं।

अथ लोच-प्रतिष्ठापन-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म- क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री लघु-योगिभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

नौ बार णमोकार मंत्र का जाप-

प्रावृट्काले सविद्युत्प्रपतित-सलिले वृक्षमूलाधिवासाः,
हेमन्ते रात्रिमध्ये प्रति-विगत-भयाः काष्ठवत्-त्यक्त-देहाः।
ग्रीष्मे सूर्यांशु-तप्ता गिरि-शिखर-गताः स्थान-कूटांतरस्था-
स्ते मे धर्मं प्रदद्युर्मनिगण-वृषभा मोक्ष-निःश्रेणि-भूताः।।1।।

गिम्हे गिरि-सिहरत्था-वरिसायाले रुक्ख-मूल-रयणीसु।
सिसिरे वाहिर सयणा ते साहू वंदिमो णिच्चं।।२।।

गिरि-कन्दर-दुर्गेषु ये वसन्ति दिगम्बराः।
पाणिपात्र-पुटाहारास्ते यांति परमां गतिम्।।३।।

इच्छामि भन्ते! योगिभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, अड्ढाइज्ज-दीव-दो-समुद्दसु, पण्णा-रस-कम्म-भूमिसु, आदावण-रुक्ख-मूल-अब्भोवास-ठाण-मोण-वीरासणेक्कपास-कुक्कुडासण-चउ-छ-पक्ख-खवणादि-जोग-जुत्ताणं सव्वसाहूणं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो, सुगइ-गमणं समाहि-मरणं, जिणगुणसंपत्ति होदु मज्झं।

नोट : उपर्युक्त लघुसिद्ध भक्ति और लघुयोगिभक्ति पढ़कर लोच प्रारम्भ करना चाहिए तथा लोच समाप्त हो जाने पर निम्नलिखित भक्ति पढ़कर लोचक्रिया का निष्ठापन (समाप्त) करना चाहिए।

अथ लोचनिष्ठापनक्रियायां क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्री लघुसिद्धभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करना।

सम्मत्तणाण-दंसण ..... इत्यादि लघुसिद्ध भक्ति पढ़ना। तत्पश्चात् लोच सम्बन्धी प्रतिक्रमण करना चाहिए।

नोट : लोच के पश्चात् कौन सा प्रतिक्रमण करना चाहिए यह मुझे शास्त्रों में दृष्टिगत नहीं हुआ।

।। इति नमित्तिक क्रिया-विधि-समाप्तम्।।

दीक्षा-विधिः

अथ दीक्षा नक्षत्राणि

प्रणम्य शिरसा वीरं, जिनेन्द्रममलव्रतम्।
दीक्षा ऋक्षाणि वक्ष्यन्ते, संता शुभ फलाप्तये।।१।।

भरण्युत्तरफाल्गुन्यौ मघाचित्राविशाखिकाः।
पूर्वाभाद्रपदा भानि रेवती मुनि-दीक्षणे।।२।।

रोहिण चोत्तराषाढ़ा, उत्तरा भाद्रपत्तथा।
स्वातिः कृतिकया सार्धं, वर्ज्यते मुनिदीक्षणे।।३।।

अश्विनी-पूर्वाफाल्गुन्यौ, हस्तस्वात्यनुराधिकाः।
मूलं तथोत्तराषाढा, श्रवणः शतभिषक्तथा।।४।।

उत्तरा भाद्रपच्चापि, दशेति विशदाशयाः।
आर्यिकाणा व्रते योग्यान्, युषन्ति शुभहेतवः।।५।।

भरण्यां कृत्तिकायां च, पुष्ये श्लेषार्द्रयोस्तथा।
पुनर्वसौ च नो दद्यु, रार्यिकाव्रतमुत्तमाः।।६।।

पूर्वाभाद्रपदा मूलं, घनिष्ठा च विशाखिका।
श्रवणश्चेषु दीक्ष्यन्ते, क्षुल्लकाः शल्यवर्जिताः।।७।।

अथ दीक्षा ग्रहण क्रिया

सिद्धयोगि बृहद्भक्ति, पूर्वकं लिङ्गमर्प्यताम्
लुञ्चाख्यानाग्न्यपिच्छात्म, क्षम्यतां सिद्धभक्तितः।।

अथ दीक्षा ग्रहण क्रियायां-सिद्धभक्ति कायोत्सर्ग करोमि

बृहद् सिद्धभक्ति-**(सिद्धानुद्भूत..)** (पृ. सं. १५१) पढ़ना चाहिए।

अथ दीक्षा ग्रहण क्रियायां-..... योगिभक्ति-कायोत्सर्गं करोमि

(पृ. सं. १६४) से योगभक्ति (**जातिजरोरूरो....**) पढ़ना चाहिए।

अनंतरं लोचकरणं, नामकरणं, नाग्न्यप्रदानं, पिच्छप्रदानं च।

अथ दीक्षानिष्ठापनक्रियायां-सिद्धभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

दीक्षा धारण करने के बाद सिद्धभक्ति कायोत्सर्ग करता हूँ।

दीक्षादानोत्तर-कर्तव्यम् दीक्षा ग्रहण करने के बाद की क्रिया।

व्रतसमितीन्द्रियरोधाः पंच पृथक् क्षितिशयो रदाघर्षः
स्थितिसकृदशनेलुञ्चा, वश्यकषट्के विचेलताऽस्नानम्।
इत्यष्टविंशति मूल गुणान निक्षिप्य दीक्षिते।
संक्षेपेण सशीलादीन्, गणी कुर्यात्प्रति क्रमम।।

लोच-क्रिया

लोचो द्वित्रिचतुर्मासै, र्वरो मध्योऽधमः क्रमात्।
लघु प्राग्भक्तिभिः कार्यः सोपवासप्रतिक्रमः।।१।।

अथ लोच प्रतिष्ठापन क्रियायां-सिद्धभक्ति कायोत्सर्गं करोमि।

अथ लोच प्रतिष्ठापन क्रियायां-योगिभक्ति कायोत्सर्गं करोमि (जातिजरोरुरोग) अनन्तरं स्वहस्तेन पहस्तेनापि वा लोचः कार्याः।

अथ लोच निष्ठापन क्रियायां-सिद्धभक्ति-कायोत्सर्गं करोमि (तवसिद्धे इत्यादि) अनन्तरं प्रतिक्रमणं कर्त्तव्यम्।

बृहद्दीक्षाविधि

पूर्वदिने भोजनसमये भाजनादितिरस्कार-विधिं विधाय, आहारं गृहीत्वा, चैत्यालये आगच्छेत्। ततो बृहत्प्रत्याख्यान-प्रतिष्ठापने सिद्धयोगि-भक्तिं पठित्वा गुरुपार्श्वे प्रत्याख्यानं सोपवासं गृहीत्वा आचार्य-शांति समाधिभक्तीः पठित्वा गुरोः प्रणामं कुर्यात्।

अथ दीक्षादाने दीक्षादातृजना शांतिक, गणधर-वलयपूजादिकं यथाशक्ति कारयेत्। अथ दाता तं स्नानादिकं कारयित्वा, यथायोग्यालङ्कारयुक्तं महा-महोत्सवेन चैत्यालये समानयेत्। स देवशास्त्रगुरु-पूजां विधाय वैराग्यभावनापरः सर्वैः सह क्षमां कृत्वा गुरोरग्रे तिष्ठेत्।

ततो गुरोरग्रे संघस्याग्रे, दीक्षायै च यांचां कृत्वा, तदाज्ञया सौभाग्यवती स्त्री विहिता स्वस्ति-कोपरि श्वेतवस्त्रं प्रच्छाय तत्र पूर्वदिशाभिमुखः पर्यंकासनं कृत्वा आसते, गुरुश्चोत्तरा भमुखो भूत्वा संघाष्टकं संघं च परिपृच्छ्य लोचं कुर्यात्।

अथ तद्विधिः

बृहद्दीक्षयां लोचस्वीकारक्रियायां पूर्वा-चार्येत्यादिकमुच्चार्य सिद्ध योगिभक्तिं कृत्वा.....

मंत्र- ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष-कल्मषाय दिव्यतेजो-मूर्त्तये नमः श्री शांतिनाथाय शांतिकराय सर्व-विघ्न-प्रणाशनाय सर्वरोगाप-मृत्यु-विनाशनाय, सर्वपर-कृत-क्षुद्रोपद्रव-विनाशनाय सर्व-क्षामडामर-विनाशनाय ॐ हाँ हीं हूँ हौं हः अ सि आ उ सा अमुकस्य (दीक्षित व्यक्ति का नाम) सर्व शांतिं कुरु कुरु स्वाहा। इत्यनेन मंत्रेण गंधोदककादिकं त्रिवारं मंत्रयित्वा शिरसि निक्षिपेत्। शांतिमंत्रेण गंधोदकं त्रिःवारान् परिषिंच्य मस्तकं वाम हस्तेन स्पृशेत्। ततो दध्यक्षतगोमय-दूर्वां-कुरान् मस्तके वर्धमानमंत्रेण निक्षिपेत्।

वर्धमान मंत्र

मंत्र- ॐ नमो भयवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं, पायालं, लोयाणं, भूयाणं, जये वा, विवादे वा, थंभणे वा, रणंगणे वा, रायंगणे वा, मोहेण वा, सव्वजीवसत्ताणं, अपराजिदो भवदु रक्ख रक्ख स्वाहा।

ततः पवित्रभस्मपात्रं गृहीत्वा "ॐ णमो अरहंताणं" रत्त्रय-पवित्रीकृत्तोत्तमांगाय, ज्योतिर्मयाय, मतिश्रुतावधिमनःपर्यय केवलज्ञानाय, अ सि आ उ सा स्वाहा इदं मंत्रं पठित्वा शिरसि कर्पूर-मिश्रितं भस्म परिक्षिप्य "ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा स्वाहा," अनेन प्रथमं केशोत्पाटनं कृत्वा पश्चात् ॐ ह्रां अर्हद्भ्यो नमः, ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो नमः, ॐ ह्रूं सूरिभ्यो नमः, ॐ ह्रौं पाठकेभ्यो नमः, ॐ ह्रः सर्वसाधुभ्योनमः इत्युच्चरन् गुरुः स्वहस्तेन पंचवारान् केशान् उत्पाटयेत्। पश्चादन्यः कोऽपि लोचावसाने बृहद्दीक्षायां लोचनिष्ठापन-क्रियायां पूर्वाचार्येत्यादिकं पठित्वा सिद्धभक्तिं कुर्यात्। ततः शीर्ष प्रक्षाल्य गुरुभक्तिं कृत्वा, वस्त्राभरण-यज्ञोपवीतादिकं परित्यज्य तत्रैवावस्थाय दीक्षां याचयेत्। ततो गुरुः शिरसि श्रीकारं लिखित्वा "ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा ह्रीं स्वाहा" अनेन मंत्रेण जाप्यं १०८ दद्यात्। ततो गुरुस्तस्यांजलौ केशर-कर्पूरश्रीखंडेन श्रीकारं कुर्यात्।

श्रीकाररस्य चतुर्दिक्षु-

रयणत्तयं च वंदे, चउवीसजिणे च सव्वदा वंदे।
पंचगुरूणां वंदे, चारणचरणं सदा वंदे।।

इति पाठन् अंकान् लिखेत्। पूर्वे ३, दक्षिणे २४, पश्चिमे ५, उत्तरे २ इति लिखित्वा सम्यग्दर्शनाय नमः सम्यग्ज्ञानाय नमः, सम्यक्चारित्राय नमः इति पठन् तदुलैरञ्चलिं पूर्यत्तदुपरि नालिकेरं पूगीफलं च धृत्वा सिद्ध-चारित्र-योगभक्तिं पठित्वा व्रतादिकं दद्यात्।

तथाहि- उसे ही निम्न गाथा द्वारा आचार्य प्रकट करते हैं :-

वदसमिदिंदियरोधो, लोचावासयमचेलमण्हाणं।
खिदिसयणमदंतवणं, ठिदिभोयणमेयभत्तं च।।१।।

इति पठित्वा तद्व्याख्या विधेया-कालानुसारेणेतिनिरूप्य पंचमहाव्रत-

पंचसमित्यादि पठित्वा "सम्यक्त्वपूर्वकं दृढव्रतं सुव्रतं समारूढं ते भवतु" इति त्रीन् वारान् उच्चार्य व्रतानि दत्वा ततः शांतिभक्तिं पठेत्। ततः आशीः श्लोकं पठित्वा अंजलिस्थं तंदुलादिकं दात्रे दाययित्वा।

अथ षोडशसंस्कारारोपण

१. अयं सम्यग्दर्शनसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।

२. अयं सम्यज्ञानसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।

३. अयं सम्यक्चारित्रसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।

४. अयं बाह्याभ्यंतरतपः संस्कार इह मुनौ स्फुरतु।

५. अयं चतुरंगवीर्यसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।

६. अयं अष्टमातृकामंडलसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।

७. अयं शुद्ध्यष्टकावष्टंभसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।

८. अयं अशेषपरीषहजयसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।

९. अयं त्रियोगासंगमनिवृत्तिशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।

१०. अयं त्रियोगासंयमनिवृत्तिशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।

११. अयं दशासंयमनिवृत्तिशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।

१२. अयं चतुः संज्ञानिग्रहशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।

१३. अयं पंचेन्द्रियजयशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।

१४. अयं दशधर्मधारणशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।

१५. अयं अष्टादशसहस्रशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।

१६. अयं चतुरशीतिलक्षणसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।

इति प्रत्येकमुच्चार्य शिरसि लवंगपुष्पाणि क्षिपेत्।

'णमो अरहंताणं' इत्यादि ॐ परमहंसाय परमेष्ठिने हंस हंस हं हां हिं हीं हूं हैं हौं हः जिनाय नमः जिनं स्थापयामि संवौषट्, ऋषि मस्तके न्यसेत्। अथ गुर्वावलीं पठित्वा, अमुकस्य अमुकनामा त्वं शिष्य इति कथयित्वा संयमाद्युपकरणानि दद्यात्।

पिच्छिकादान

१. ॐ णमो अरहंताणं भो अन्तेवासिन्! षड्जीवनिकायरक्षणाय मार्दववादिगुणोपेतमिदं पिच्छिकोपकरणं गृहाणं गृहाणेति।

शास्त्रदान

२. ॐ णमो अरहंताणं, मतिश्रुतावधि मनःपर्यय-केवलज्ञानाय द्वादशांगश्रुताय नमः। भो अन्तेवासिन्! इदं ज्ञानोपकरणं गृहाण गृहाणेति।

शौचोपकरणं

३. कमंडलुं वामहस्तेन उद्धृत्य ॐ णमो अरहंताणं रत्नत्रयप-वित्रीकरणांगाय बाह्याभ्यन्तर मल-शुद्धाय नमः भो अन्तेवासिन् इदं शौचोपकरणं! गृहाण गृहाणेति।

तत्पश्चात् समाधिभक्तिं पठेत्। ततो नवदीक्षितो मुनिर्भक्त्या गुरुं प्रणम्य अन्यान् मुनीन् प्रणम्यो-पविशति यावद् व्रतारोपणं न भवति तावदन्ये मुनयः प्रतिवंदनां न ददति। ततो दातृ-प्रमुखाः जनाः उत्तम-फलानि अग्रे निधाय तस्मै नमोऽस्त्विति प्रणामं कुर्वन्ति।

ततस्तत्पक्षे द्वितीयपक्षे वा सुमुहूर्ते व्रतारोपणं कुर्यात्। तदा रत्नत्रयपूजां विधाय, पाक्षिकप्रतिक्रमण-पाठः पठनीय, तत्र पाक्षिकनियमग्रहणसमयात् पूर्वं यदा वदसमिदीत्यादि पठ्यते तदा पूर्ववत्व्रतादि दद्यात्। नियमग्रहणसमये यथायोग्यं एकं तपो दद्यात् (पल्य-विधानादिकं) दातृप्रभृतिः श्राव्रकेभ्योऽपि एकं-एकं तपो दद्यात् मुनयः प्रतिवदनां ददति।

अथ मुखशुद्धि मुक्तकरणे विधि

त्रयोदशसु पंचस् त्रिषु वा कच्चोलिकासु लवंग एला-पूंगीफलादिकं निक्षिप्य ताः कच्चोलिकाः गुरोरग्रे स्थापयेत्। मुखशुद्धि-मुक्तकरणंपाठ-क्रियाया-मित्याद्युच्चार्य सिद्ध-योगि आचार्य-शांति-समाधिभक्तिं-विधाय ततः पश्चान्मुखशुद्धिं गुहीयात्।

॥ इति महाव्रतदीक्षा विधिः॥

क्षुल्लक दीक्षा विधिः

अथ लघुदीक्षायां सिद्ध-योगि-शांति-समाधि-भक्तिं पठेत्। "ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हम् नमः" अनेन मंत्रेण जाप्यं २१ अथवा १०८ बार दीयते।

अन्यच्च विस्तारेण लघुदीक्षा विधि

अथ लघुदीक्षानेतृजनः पुरुषः स्त्री वा दाता संस्थापयति। यथायोग्यमलंकृतं कृत्वा चैत्यालये समानयेत्, देवं वंदित्वा सर्वैः सह क्षमां कृत्वा गुरोरग्रे च दीक्षां याचयित्वा तदाज्ञया सौभाग्यवती स्त्री-विहितस्वस्तिकोपरि श्वेतवस्त्र प्रच्छाद्य तत्र पूर्वाभिमुखः पर्यंकासनो गुरुश्चोत्तराभिमुखः संघाष्टकं संघं च परिपृच्छ्य लोचं कुर्यात्। अथ तद्विधिः-बृहद्दीक्षायां लोचस्वीकारक्रियायां पूर्वाचार्येत्यादिकमुच्चार्य सिद्ध-योगभक्तिं कृत्वा - ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष-कल्मषाय दिव्यतेजो-मूर्त्तये नमः श्री शांतिनाथाय शांतिकराय सर्व-विघ्न-प्रणाशनाय सर्वरोगाप- मृत्यु-विनाशनाय, सर्वपर-कृत-क्षुद्रोपद्रव-विनाशनाय सर्व-क्षामडामर- विनाशनाय ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अमुकस्य (दीक्षित व्यक्ति का नाम) सर्व शांतिं कुरु कुरु स्वाहा। इत्यनेन मंत्रेण गंधोदकं त्रिवारं मंत्रयित्वा शिरसि निक्षेपेत्। शांतिमंत्रेण गंधोदकं त्रिः परिषिंच्य मस्तकं वामहस्तेन स्पृशेत्। ततो दध्यक्षतगो- मयदूर्वांकुरान् मस्तके वर्धमानमंत्रेण निक्षिपेत्-

ॐ नमो भयवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जये वा, विवादे वा, थंभणे वा, रणंगणे वा, रायंगणे वा, सव्वजीवसत्ताणं, अपराजिदो भवदु रक्ख रक्ख स्वाहा। लोचादि विधिं महाव्रतवद्विधाय सिद्धभक्तिं योगिभक्तिं पठित्वा व्रतं दद्यात्।

दंसणवयसामाइय, पोसहसचित्तराइभत्ते य।
बंभारंभपरिग्गह, अणुमणुमुद्दिट्ठदेसविरदेदे।।१।।

गाथामिमां वारत्रयं पठित्वा व्याख्यां विधाय च गुर्वावलीं पठेत्। ततः

संयमाद्युपकरणं दद्यात्।

ॐ णमो अरहंताणं (आर्य-ऐलक) क्षुल्लके वा षट्जीवनिकायरक्षणाय मार्दवादिगुणोपेतमिदं पिच्छोपकरणं गृहाण गृहाण इति।

ॐ णमो अरहंताणं मतिश्रुतावधिमनः पर्यय-केवलज्ञानाय द्वादशांग-श्रुतायताय नमः। भो अन्तेवासिन्। इदं ज्ञानोपकरणं गृहाण गृहाणेति।

कमंडलुं वामहस्तेन उद्धृत्य ॐ णमो अरहंताणं रत्नत्रयपवित्रकरणाङ्गाय बाह्याभ्यन्तरमल-शुद्धाय नमः। भो अन्तेवासिन्। इदं शौचोपकरणं गृहाणं गृहाणेति।

॥ इति क्षुल्लकदीक्षा विधानं ॥

अथोपाध्याय (पददान) विधिः

शुभमुहूर्ते दाता गणधरवलय अर्चनं द्वादशांङ्ग श्रुतार्चनं च कारयेत्। ततः श्रीखंडादिना छटान् दत्वा तंदुलैः स्वस्तिकं कृत्वा, तदुपरि पट्टकं संस्थाप्य तत्र पूर्वाभिमुखं तमुपाध्यायपदयोग्यं मुनिमासयेत्। अथोपाध्यायपद-स्थापनं-क्रियायां-पूर्वाचार्येत्याद्युच्चार्यसिद्ध-श्रुतभक्तिं पठेत्। तत् आह्वानादि मंत्रानुच्चार्य शिरसि लवंग पुष्पाक्षतं क्षिपेत् तद्यथा-ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं, उपाध्यायायपरमेष्ठिन् अत्र एहि एहि संवौषट् आह्वाननं, स्थापनं, सन्निधिकरणं। ततश्च "ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं, उपाध्यायपरमेष्ठिने नमः" इमं मंत्रं सहेंदुना चन्दनेन शिरसि न्यसेत्। ततश्च शांति-समाधिभक्तिं पठेत्। ततः स उपाध्यायो गुरुभक्तिं दत्वा प्रणम्य दात्रे आशिष दद्यादिति।

॥ इत्युपाध्याय पददान् विधि ॥

अथाचार्य पद स्थापन विधिः

सुमुहूर्ते दाता शांतिकं गणधरवलयार्चनं च यथाशक्ति कारयेत्। ततः श्रीखंडादिना छटादिकं कृत्वा आचार्यपदयोग्यं मुनिमासयेत्। आचार्यपद-प्रातेष्ठापनक्रियायां इत्याद्युच्चार्य सिद्धाचार्यभक्तिं पठेत "ॐ

हूं परम सुरभिद्रव्य सन्दर्भ परिमलगर्भ तीर्थाम्बुसम्पूर्णसुवर्णकलश पंचकतोयेन परिषेच-यामिति स्वाहा । । इति पठित्वा कलशपंचकतोयेन पादौ परिषेचयेत् । ततः पंडिताचार्यो "निर्वेद सौष्ठ" इत्यादि महर्षिस्तवनं पठन् पादौ समंतात् परामृश्य गुणारोपणं कुर्यात् । ततः ओं हूं णमो आइरियाणं आचार्य परमेष्ठिन् । अत्र एहि एहि संवौषट्, आह्राननं, स्थापनं, सन्निधिकरणं । ततश्च "ओं हूं णमो आइरियाणं धर्माचार्याधिपतये नमः । अनेन मंत्रेण सहेन्दुना चन्दनेन पादयोर्द्वयोस्तिलकं दद्यात् । ततः शांति-समाधिभक्तिं कृत्वा, गुरुभक्त्या गुरुं प्रणम्य उपविशति । तत् उपासकास्तस्य पादयोरष्टतयिमिष्टिं कुर्वन्ति । यतश्च गुरुभक्तिं दत्वा प्रणमति । स उपासकेभ्य आशीर्वादं दद्यात् ।

॥ इति आचार्य पददान विधि ॥

मंत्र - ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं अर्हम् हं सः आचार्याय नमः । आचार्यवाचना मंत्र । अन्यच्च ।

मंत्र - ॐ ह्रीं श्रीं अर्हम् हं सः आचार्यायनमः । आचार्यमंत्र ।

॥ इति दीक्षा विधिः ॥

बारहभावना

वंदूं श्री अरहंत गुण, वीतराग विज्ञान।
वरणूँ बारह भावना, जग जीवन हितजान।।१।।

कहाँ गये चक्री जिन जीता भरतखंड सारा।
कहाँ गये वह राम अरु लछमन जिन रावन मारा।
कहां कृष्ण रुक्मणि सतभामा अरु संपति सगरी।
कहां गये वह रंगमहल अरु सोरन की नगरी।।२।।

नहीं रहे वह लोभी कौरव जूझ मरे रनमें।
गये राज तज पाँडव वनको अग्नि लगी तन मैं।
मोह नींद से उठ रे चेतन तुझे जगावन को।
हो दयालु उपदेश करें गुरु बारह भावन को।।३।।

अथिर भावना

सूरज चाँद छिपै निकलै ऋतु फिर-फिर कर आवै।
प्यारी आयू ऐसी बीतै पता नहीं पावै।
पर्वत पतित नदी सरिता जल बहकर नहीं हटता
स्वास चलत यों घटै काठ ज्यों आरे सों कटता।।४।।

ओस बूँद ज्यों गलै धूप में वा अंजुलि पानी।
छिन-छिन यौवन छीन होत है क्या समझै प्राणी।
इन्द्रजाल आकाश नगर सम जगसंपत्ति सारी।
अथिर रूप संसार विचारो सब नर अरु नारी।।५।।

अशरण भावना

काल-सिंह ने मृग चेतन को घेरा भव-वन में।
नहीं बचावन हारा कोई यों समझो मन में।
यंत्र मंत्र सेना धन संपत्ति राज पाट छूटे।
वश नहिं चलता काल लुटेरा काय नगरि लूटे।।६।।

चक्र रतन हलधर सा भाई कोइ न काम आया।
एक तीर के लगत कृष्ण की विनश गई काया।
देव धर्म गुरु शरण जगत में और नहीं कोई।
भ्रम से फिरे भटकता चेतन यूंही उमर खोई।।७।।

संसार भावना

जनम मरण अरु जरा रोग से सदा दुःखी रहता।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव भव परिवर्तन सहता।
छेदन भेदन नरक पशु गति वध बंधन सहना।
राग उदय से दुःख सुरगति में कहां सुखी रहना।।८।।

भोगि पुण्यफल हो इक इंदी क्या इसमें लाली।
मुतवाली दिन चार वही फिर खुरपा अरु जाली।
मानुष जन्म अनेक विपति में कहीं न सुख देखा।
पंचमगति सुख मिले शुभाशुभ को मेटो लेखा।।९।।

एकत्व भावना

जन्मे मरे अकेला चेतन सुख दुख का भोगी।
और किसी का क्या इक दिन यह देह जुदी होगी।
कमला चलत न पैंड जाय मरघट तक परिवारा।
अपने अपने सुख को रोवे पिता पुत्र दारा।।१०।।

ज्यों मेले में पंथी जन मिलि नेह फिरें धरते।
ज्यों तरुवर पै रैन बसेरा पँक्षी आ करते।
कोस कोई दो कोस कोई उड़ फिर थक थक हारे।
जाय अकेला हंस संग में कोई न पर मारे।।११।।

मोह रूप मृग तृष्णा जगमें मिथ्या जल चमकै।
मृग चेतन नित भ्रम में उठ उठ दौडे थक थककै।
जल नहिं पावै प्राण गमावै भटक भटक मरता।
वस्तु पराई माने अपनी भेद नहीं करता।।१२।।

तू चेतन अरु देह अचेतन यह जड़ तू ज्ञानी।
मिले अनादि यतन तें बिछुडै ज्यों पय अरु पानी।
रूप तुम्हारा सबसों न्यारा भेद ज्ञान करना।
जौलों पौरुष थकै न तौलों उद्यम सों टरना।।१३।।

अशुचि भावना

तू नित पौखे यह सूखै ज्यों धोवे त्यों मैली।
निश दिन करै उपाय देह का रोग दशा फैली।
मात पिता रज वीरज मिलकर बनी देह तेरी।
हाड मांस नश लहू राधकी प्रगट व्याधी घेरी।।१४।।

काना सांटा पड़ा हाथ यह चूसै तौ खोवै।
फलै अनंत जो धर्मध्यान की भूमि विषें बोवै।
केसर चंदन पुष्प सुगंधित वस्तु देख सारी।
देह सपरसत हुए अपावन निशदिन मल जारी।।१५।।

ज्यों सरजल आवन मोरी त्यों आश्रव कर्मन को।
दर्वित जीव प्रदेश गहैं जब पुदगल भरमन को।
भावित आश्रव भाव शुभाशुभ निशदिन चेतन को।
पाप पुण्य के दोनों कर्ता कारण बंधन को।।१६।।

संवर भावना

पन मिथ्यात्व योग पन्द्रह द्वादश अविरत जानो।
पंचरु बीस कषाय मिले सब सत्तावन मानो।
मोहभाव की ममता टारे पर परणत खोते।
करै मोख का यतन निराश्रव ज्ञानी जन होते।।१७।।

ज्यों मोरी में डाट लगावै तब जल रुक जाता।
त्यों आश्रव को रोकै संवर क्यों नहिं मन लाता।
पंच महाव्रत समिति गुप्त कर वचन काय मनको।
दशविध धर्म परीषह बाइस बारह भावन को।।१८।।

यह सब भाव सतावन मिलकर आस्रव को खोते।
सुपन दशा से जागो चेतन कहां पड़े सोते।
भाव शुभाशुभ रहित शुद्ध भावन संवर पावै।
डाट लगत यह नाव पड़ी मझधार पार जावै।।१६।।

निर्जरा भावना

ज्यों सरवर जल रुका सूखता तपन पड़े भारी।
संवर रोकै कर्म निर्जरा है सोखन हारी।
उदय भोग सविपाक समय पक जाय आम डाली।
दूजी है अविपाक पकावै पाल विषैं माली।।२०।।

पहली सबके होय नहीं कुछ सरै काम तेरा।
दूजी करै जु उद्यम करके मिटै जगत फेरा।
संवर सहित करो तप प्रानी मिलै मुकति रानी।
इस दुलहन की यही सहेली जानैं सब ज्ञानी।।२१।।

लोक भावना

लोक अलोक आकाश मांहि थिर निराधार जानो।
पुरुषरूप कर कटी भये षट द्रव्यन सों मानो।
इसका कोइ न करता हरता अमिट अनादी है।
अरू पुद्गल नाचै यामे कर्म उपाधी है।।२२।।

पाप पुन्यसों जीव जगत में नित सुख दुःख भरता।
अपनी करनी आप भरैसिर औरन के धरता।
मोह कर्म को ना समेट कर सब जग की आसा।
निज पद में थिर होय लोक के सीस करो बासा।।२३।।

बोधि दुर्लभ भावना

दुर्लभ है निगोद सै थावर अरु त्रसगति पानी।
नरकाया को सुरपति तरसैं सो दुर्लभ प्रानी।
उत्तमदेह सुसंगति दुर्लभ श्रावक कुल पाना।
दुर्लभ सम्यक दुर्लभ संयम पंचम गुण ठाना।।२४।।

दुर्लभ रत्नत्रय आराधन दीक्षा का धरना।
दुर्लभ मुनिवर को व्रत पालन शुद्धभाव करना।
दुर्लभ से दुर्लभ है चेतन बोधिज्ञान पावै।
पाकर केवलज्ञान नहीं फिर इस भव में आवै।।२५।।

षट् दरशन अरु बौद्धरु नास्तिक ने जग को लूटा।
मूसा ईसा और मुहम्मद का मजहब झूठा।
हो सुछंद सब पाप करै कर ताके सिर लावै।
कोई छिनक कोई करता से जग में भटकावै।।२६।।

वीतराग सर्वज्ञ दोष बिन श्री जिनकी वानी।
सप्त तत्त्व का वर्णन जामें सबको सुख दानी।
इनका चिंतन बार बार कर श्रद्धा उर धरना।
मंगल इसी जतनतैं इकदिन भवसागर तरना।।२७।।

चौबीस ठाणा

देव धर्म गुरु ग्रन्थ कों वन्दो मनवचकाय।
गुणठाणा परयन्त्र की रचना कहों बनाय।।

गति चार इंद्री पांच, कायषट योग पंद्रै।
वेद तीन चौकषाय ज्ञान आठ सारे है।।

संयम सात दृग चार लेश्याषट् भव्य दोय।
सैनी दोय सम्यक छै दोय ही आहारे हैं।।

गुण चौदा जीव चौदा प्रजा पर प्राण दस।
प्रत्यय सत्तावन उपयोग भेद बारह हैं।।

ध्यान सौले संज्ञा चार जाति लाख चउरासी।
आधघाटि कुल दौसै लाख कोडि धारे हैं।।

पहिले तें चतुलग गति चार पंचम में नर पशु विचार।
छट्ठेतें चौदम लग कही मानुष गति इक जानों सही।।

इन्द्री पाँचों हैं मिथ्यात्व दूजे तें चौदम लग जात।
इक पंचेन्द्री जिनवर कही इमि इन्द्रिय वर्णन बरणई।।

पहिले गुण षट्काय जु लसें दूजेतें चौदम त्रस बसे।
पहिले दूजे तेरम योग हारक द्विक बिन जान नियोग।।

तीजेमें दस इमि गिनिलाय मन वच अष्ट औदारिक काय।
वैक्रियक मिल सब दस भये चौथे त्रयोदश पहिले कहे।।

पंचम में मन वच वसु जान और औदारिक मिल नवठान।
प्रमत्त में एकादश योग हारक द्विक युत जान नियोग।।

सप्तमतें बारम लग जान नव पंचमवत् जान सुजान।
तेरम जोग सप्त निरधार अनुभय सत्य वचन मन चार।।

औदारिक औदारिकमिश्र कार्माण मिल सप्त जु मिश्र।
चौदम जोग भये सबक्षीण ये जोगन की विधि परवीन।।

वेद प्रथमतें नव लग तीन आगे वेद न जान प्रवीन।
अब कषाय को वर्णन करों गुण ठाणा भिन्न भिन्न उच्चरों।।

पहिले दूजे सर्व मिश्र इक बीस भनीजे।
चोथे हू एकबीस, चौकड़ी प्रथम न लीजे।।

अप्रत्याख्यानी बिना देश संयम में सतरा।
प्रत्याख्यानी बिना तेर षट सत वसु इतरा।।

नौवै गुण सब सात हैं संज्वलन त्रय वेद भव।
दशवें सूक्ष्म लोग इक आगे ही कसाय गव।।

प्रथम द्वितीय कुज्ञान तीन तीजे सु मिश्र धन।
चौथे तीन सुज्ञान पांचवें में भी इमि गन।।

षटतें द्वादश तईं ज्ञान केवल बिन चारों।
तेरम चौदम गुणस्थान केवल इक धारों।।

इहिविधि गुण पर ज्ञान को कथन कहो जगदीश ने।
अब संयम रचना कहूं जिमि सूत्तर भाषी जिने।।

पहिले तें चतु लगै असंयम ही इक जानो।
पंचम संयम देश छठे सप्तम इमि जानो।।

सामायिक छेदोपस्थापना परिहारविशुद्धि।
अष्टम नव गुण दोय नाहिं परिहारविशुद्धि।।

सांपराय सूच्छम दसे ग्यारमतें जु अयोग तक।
इक यथाख्यात ही जानिये, ये संयम सुखकर अधिक।।

पहिले दूजे दोय चक्षु अचक्षु भनीजे।
त्रय तें बारम तईं अवधियुत तीन गनीजे।।

केवल तेरम् चौद और षट लेश्या चतु लग।
पंचम षष्ठं सप्त तीन शुभ लेश्या हर अघ।।

पुनि अष्टम तें सयोग तक एक शुकल लेश्या कही।
गुण चौदह सब नासिकें जाय सिद्ध पदवी लही।।

पहिले भव्य अभव्य दुतियतें भवि चौदम तक।
त्रयगुण के जो नाम तहां वोही सम्यक इक।।

चतु पन षट् सत मांहि क्षय उपशम अरु वेदक।
वसुतें ग्यारम तई दोय उपशम अरु क्षायिक।।

शेषन क्षायिक ही कही सैनी असैनी मिथ्यात्व में।
गुण दूजे तें चौदम तई इक सैनी ही सुखपात में।।

पहिले दूजे हार अन्हारक तीजे हारक चौथे दोय।
पंचम तें बारम लग हारक तेरम हार अन्हारक होय।।

चौदम इक अनहार गनीजे गुनठाना चोदम इम लोय।
पहिले जीवसमास सकल है शेषन में त्रस ओर न कोय।।

पर्यापति चौदम लग षट् ही प्राण बार में लग दस जान।
तेरम् वच तन स्वास आयु चतु चौदम इक आयु पहिचान।।

संज्ञा कहियत षट् लग चारों, सप्त अष्ट त्रय हारन ठान।
नवमें मैथुन परिग्रह दोनों दसवें परिग्रह आगे हान।।

पहिले दूजे दर्श दोय कुज्ञान तीन हैं।
मिश्र मांहि त्रय दर्श, ज्ञान पुनि मिश्र तीन है।।

चतु पन षट्विज्ञान तीन शुभ रूप बखानो।
षट्तें द्वादश तईं सप्त मनःपर्यय जानो।।

तेरम चौदम दोय है केवल दर्शन ज्ञान युत्।
अब कछुकुध्यान वर्णन करो जिनशासन अनुसार वत्।।

पहिले दूजे अष्ट आर्त्तरुद्दर के जोई।
मिश्र मांहि नव जान धर्म का एक मिलोई।।

पुनिवृष के दुव भेद मिलें चतुगण बाणो।
पंचम त्रय वृष मिलें एकादश सब पहिचानो।।

षट् अनायतन त्रय धर्म चउं ग्यारम लग शुकल।
बारम तेरम पुनि चौदमें क्रमतें शेष त्रिक शुकल।।

पहिले पचपन कहे अहारक द्विक बिन जानो।
पंच मिथ्यात्व जु विना ही दुतिय पच्चास बखानो।।

तीजे मिश्र जु मांहि तीन चालीस बखानो।
अव्रत गण जिहिं नाम हुरिय चालीस छह जानो।।

यों कषाय जु पूर्ववत अव्रत ग्यारह पंच में।
चौबीस योग कषाय के प्रमत्त गिनिये संघ में।।

सप्तम अष्टम गुणस्थान बाईस जु आश्रव।
नव में सोलह लये धरम दस ग्यारम में नव।।

बारम में नव जान तेरमें सप्त गनीजे।
मन वच के दुय दोय औदारिक युगल सु लीजे।।

कारमाण मिल सप्त ये तेरम गण में जानिये।
पुनि चौदम में आश्रव नहीं यह मन वच उर आनिये।।

चौरासी लख योनी प्रथम गण ढाने सारी।
दूजेंतें चौ तई लाख छब्बीस विचारी।।

पंचम में नर पशु लाख अट्ठारह जानो।
षट्तें चौदह तई मनुज लख चौदह ढानों।।

कुल कोडि प्रथम जान अब दूजें तें चतुलग चऊ।
पंचम वर पशु सकल गन आगे मानव जान सऊ।।

ये सब रचना पर तनी यामें हूँ नहिं जीव।
तेरा दर्शन ज्ञान गण तामें रही सदीव।।

चौबीस दण्डक

वन्दों वीर सुधीर को महावीर गंभीर।
वर्धमान सन्मति महा देव देव अति वीर ।।

गत्यागत्य प्रकाश के गत्यागत्य व्यतीत।
अद्भुत अतिगति सुगति जो जनैसूर जगदीश।।

जाकी भक्ति बिना विफल गये अनन्ते काल।
अगणित गत्यागति धरी कटो न जग जंजाल।।

चौबीसों दंडकबिषै धरी अनन्ती देह।
नाहीं लखियो ज्ञान धन शुद्ध स्वरूप विदेह।।

जिनवाणी परसादतें लहिये आतम ज्ञान।
दहिये गत्यागति सबें गहिये पद निर्वाण।।

चौबीसों दंडक तनी गत्यागति सुन लेव।
सुनकर विरत्त भाव धरि चहुँगति पानी देव।।

पहिलो दंडक नारक तनो भवन पती दस दंडक भनो।
ज्योतिष व्यंतर सुरगति बास थावर पंच महादुख रास।।

विकलत्रय अरु नर तिर्यच पंचेन्द्रिय धारक पंरपंच।
ये चौबीसों दंडक कहे अब सुन इनमें भेद जु लहे।।

नारक की गति आगति दोय नर तिर्यंच पंचेन्द्रिय होय।
जाय असैनी पहिला लगैं मनबिन हिंसा करम न पगै।।

सरीसर्प दूजे लग जांहि तीजे लग पक्षी शक नाहीं।
सर्प जाय चोथे लग सही नाहर पंचम आगे नहीं।।

नारी छट्ठे लग ही जाय नर अरु मच्छ सातवें थाय।
ये तौ नरकतनी गति जान अब आगति भाखी भगवान।।

नरक सातवें को जो जीव पशुगति ही पावे दुखदीव।
और नारकी षष्ठ सदीव दो गति पावें नर पशु जीव।।

छट्ठे को निकसो जु कदापि सम्यक्त्वी होवें निष्पाप।
पंचम को निकसो मुनि होय चौथे के केवलि हू जोय।।

तृतीय नरक की निकासी जीव तीर्थंकर हू है जग पीव।
ये नारक की गत्यागत्य भाषी जिनवाणी में सत्य।।

तेरह दंडक देव निकाय तिनके भेद सुनो मन लाय।
नर त्रियंच पंचेन्द्री बिना औरन के सुरपद नहिं गिना।।

देव मरे गति पंच सहाय भू जल तरुवर नर पशु काय।
दूजे सुरग उपरले देव थावर है न कहैं जिनदेव।।

सहस्त्रारते ऊंचे सुरा मरकर होवे निश्चय नरा।
नर पशु भोगभूमि के दोय दूजे सुरग परे नहिं जोय।।

जाय नहिं यह निश्चय कही देवनि भोगभूमि नहिं लही।
करम भूमियां नर अरु ढोर इन बिन भोगभूमि नहिं और।।

जांय न तातें आगति होय गति इनको देवनि की होय।
कर्मभूमियां तिर्यग सत्त श्रावकव्रत धरि बारम गत्त।।

सहस्त्रार ऊपर चिर्यंच जांय नहीं ये तजि परपंच।
अव्रत सम्यक्त्वी नरभाय बारम तें ऊपर नहिं जाय।।

अन्यमति पंचाग्नी साध भवनत्रिक तें जाय व बाध।
परिव्राजक दंडी है जेह पंचम परे वाहि उपजेह।।

परम हंस नामा परमती सहस्त्रार ऊपर नहिं गति।
मोक्ष न पावे परमत मांहि जैन बिना नहीं कर्म नशाहिं।।

श्रावक आर्य अणुव्रत धार बहुरि श्राविकागण अविकार।
अच्युतस्वर्ग परे नहिं जाय ऐसो भेद कहो जिनराय।।

द्रव्यलिंग धारी जे जती नवग्रीवक आगे नहिं गती।
बाह्याभ्यन्तर परिग्रह होय परतछ लिंग निंद्य है सोय।।

पंच पंचोत्तर नव नवोत्तर महागुणा बिन और न धरा।
केई बार देव जिय भयो पै केई पद नाहीं लयो।।

इन्द्र हूवो न शची हू भयो लोक बाल कबहूं नहिं थयो।
लोकान्तिक हूवो न कदापि अनुत्तर महं पहुँचो न कदापि।।

ये पद धरि अन पद नहिं धरे अल्पकाल में मुक्तहिं बरे।
हे विमान सर्वारथ सिद्ध सबतें ऊँचों अतुल जु रिद्धि।।

ताके ऊपर है शिवलोक परे अनन्तानंत अलोक।
गति आगति देवनि की भनी अब सुनि लो मानुषगति तनी।।

चौबीसों दंडक के माहिं, मनुष जाहिं यामें शक नाहिं।
मुक्तिहु पावे मनुष मुनीश, सकल धरा को है अवनीश।।

मुनि बिन मोक्ष न पावें और, मनुष बिना नहिं मुनि को ठौर।
सम्यग्दृष्टी जे मुनिराय, भवदधि उतरे शिवपुर जाय।।

तहां जाय अविनश्वर होय, फिर जग में आवे नहिं कोय।
रहे सांसते आतम माहिं, आतमराम भये शक नाहिं।।

गति पच्चीस कही वरतनी, आगत पुनि बाईस हि भनी।
तेजकाय अरु वात जु काय, इन बिन और सबै नर थाय।।

गति पच्चीस आगति बाईस, मनुषतनी भाषी जगदीश।
ता ईश्वरसम आतमरूप, ध्यावे चिदानंद चिद्रूप।।

तो उतरे भवसागर भया, और न कोई शिवपुर लया।
ये सामान्य मनुष की कही, अब सुनि पदवी धर की सही।।

तीर्थंकर की आगति दोय, सुर नारक तें आवे सोय।
फेर न गति धारे जग ईश, जाय विराजे जग के शीश।।

चक्री अर्द्ध चक्री वाहली स्वर्गलोक तें आवें बली।
इनकी आगति एकहि कही, अब सुनिये जागति जू सही।।

चक्री की गति तीन बखान, स्वर्ग नरक अरु मोक्ष सुथान।
तप धारे तो सुर शिव जाय, मरे राज में नरक लहाय।।

आखिर पावे पद निर्वाण, पदवीधर ये पुरुष प्रधान।
बलभद्दर की है जुगती सुरग जायके है शिवपती।।

तप धारे ये निश्चय भाय, मुक्तिपात्र सूत्रन में गाय।
अर्द्ध चक्रि को एकहि भेद, जाय नरक में लहे जु खेद।।

राजमाहिं यह निश्चय मरे, तद्भव मुक्तिपंथ नहिं धरे।
आखिर पावें पद निर्वाण, पदवी धारक बड़े सूजान।।

इनकी आगति सुरगति जान, गति नरकन की कही बखान।
आखिर पावें पद शिवलोक, पुरुष शलाका शिव के थोक।।

ये पद पाय सु जग के जीव, अल्पकाल में ह्वै जगपीव।
औरहु पद केई गहे, कुलकर नारद हू नहिं लहे।।

रुद्र भये न मदन हू भये, जिनवर तात मात नहिं थये।
ये पद पाय रुलें नहिं जीव, थोरे दिन में ह्वैं शिवपीव।।

इनकी आगति श्रुततें जान, जागति रीति कहूँ जु बखान।
कुलकर देवलोक ही जाय, मदन मदन हरि ऊरध थाय।।

नारद्र रुद्र अधोगति जाय कलह कलंक महादुखदाय।
जन्मान्तर पावें निर्वाण बड़े पुरुष ये सूत्र प्रमाण।।

तीर्थंकर के पिता प्रसिद्ध स्वर्ग जाय के होवें सिद्ध।
माता स्वर्ग लोक ही जाय आखिर शिव सुख वेग लहाय।।

ये सब रीति मनुष की कही अब सुनि तिर्यगगति की सही।
पंचेन्द्री पशु मरण कराय चौबीसों दंडक में जाय।।

चौबीसों दंडकतें मरें पशु होय तो हानि न परे।
गति आगति वरणी चौबीस पंचेन्द्री पशु को जगदीश।।

ता परमेश्वर को पथ गहो चौबीसों दंडक को दहो।
विकलत्रय की दस दस गति अहागति भाषी है जिनपती।।

थावर पंचविकलत्रय तीन भइ तिर्यंच पंचेन्द्री लीन।
इनहीतें विकलत्रयथाय, इन ही दस में उपजे आय।।

नारक विन दंडक है जोय पृथ्वी पानी तरुवर होय।
तेज वायु मरि नव में जाय मनुष होय नहिं सूत्र कहाय।।

थावर पंच विकलत्रय ढोर य नव गति भाषी मदमोर।
दसतें आय तेज अरु वाय होय सही गावे जिनराय।।

ये चौबीसों दंडक कहे इनकूं त्याग परम पद लहे।
इनमें रुले सो जग को जीव इनसे तिरे सो त्रिभुवन पीव।।

जीव ईश में और न भेद ये कर्मी वे करम उछेद।
कर्मबंध जौलों जगजंत नाशत कर्म हाये भगवंत।।

मिथ्या अव्रत जोग अरु मद प्रमाद कषाय।
इन्द्रिय विषय जु त्यागिये भ्रमण दूर हो जाय।।

जिन बिन गति बहुते धरी भयौ नहिं सुलझार।
जिन मारग उर धारिकें लहिये भवदधि पार।।

जिन भज सब परपंच तज बड़ी बात है येह।
पंच महाव्रत धारिके भवजल को जल देह।।

अन्तःकरण जु शुद्ध है जिन धरमी अभिराम।
भाषा भविजन कारणे भाषी 'दौलतराम'।।

श्रीगृद्धपिच्छाचार्यविरचितम्

तत्त्वार्थसूत्रम्

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये।।

अथ प्रथमोऽध्यायः

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्ष-मार्गः।।१।। तत्त्वार्थ-श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्।।२।। तन्निसर्गादधिगमाद्वा।।३।। जीवाजीवास्रव-बन्ध-संवर-निर्जरा-मोक्षास्तत्त्वम्।।४।। नाम-स्थापना-द्रव्य-भावतस्त-न्न्यासः।।५।। प्रमाण-नयैरधिगमः।।६।। निर्देश-स्वामित्व-साधनाधिकरण-स्थिति-विधानतः।।७।। सत्संख्या-क्षेत्र-स्पर्शन-कालान्तर-भावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। मति-श्रुतावधि-मनःपर्यय-केवलानि ज्ञानम्।।९।। तत्प्रमाणे।।१०।। आद्ये परोक्षम्।।११।। प्रत्यक्षमन्यत्।।१२।। मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम्।।१३।। तदिन्द्रियानिन्द्रिय-निमित्तम्।।१४।। अवग्रहेहावाय-धारणाः।।१५।। बहु-बहुविध-क्षिप्रानिःसृतानुक्त-ध्रुवाणां सेतराणाम्।।१६।। अर्थस्य।।१७।। व्यञ्जनस्यावग्रहः।।१८।। न चक्षुरनिन्द्रिया-भ्याम्।।१९।। श्रुतं मति-पूर्वं द्व्यनेक-द्वादश-भेदम्।।२०।। भव-प्रत्ययोऽवधिर्देव-नारकाणाम्।।२१।। क्षयोपशम-निमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम्।।२२।। ऋजु-विपुलमती मनःपर्ययः।।२३।। विशुद्ध्यप्रतिपा-ताभ्यां तद्विशेषः।।२४।। विशुद्धि-क्षेत्र-स्वामि-विषये-भ्योऽवधि-मनः पर्याययोः।।२५।। मति-श्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्व-पर्यायेषु।।२६।। रूपिष्ववधेः।।२७।। तदनन्त-भागे-मनःपर्ययस्य।।२८।। सर्व-द्रव्य-पर्यायेषु केवलस्य।।२९।। एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्ना-चतुर्भ्यः।।३०।। मति-श्रुतावधयो

विपर्ययश्च ।।३१।। सदसतोरविशेषाद्य- दृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ।।३२।। नैगम-संग्रह-व्यवहारर्जुसूत्र-शब्द- समभिरूढैवंभूता नयाः ।।३३।।

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

औपशमिक-क्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्व- मौदयिक-पारिणामिकौ च ।।१।। द्वि-नवाष्टा-दशैकविंशति-त्रि-भेदा यथाक्रमम् ।।२।। सम्यक्त्व-चारित्रे ।।३।। ज्ञान-दर्शन-दान- लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणि च ।।४।। ज्ञानाऽज्ञानदर्शन-लब्धय- श्चतुस्त्रित्रि-पञ्च भेदाः सम्यक्त्व-चारित्र-संयमासंयमाश्च ।।५।। गति-कषाय-लिंग-मिथ्यादर्शनाज्ञाना-संयतासिद्ध-लेश्याश्चतुश्चतु-स्त्र्येकैकैकैक-षड्भेदाः ।।६।। जीव-भव्या-भव्यत्वानि च ।।७।। उपयोगो लक्षणम् ।।८।। स द्विविधोऽष्ट-चतुर्भेदः ।।९।। संसारिणो मुक्ताश्च ।।१०।। समनस्कामनस्काः ।।११।। संसारिणस्त्रस-स्थावराः ।।१२।। पृथिव्यप्तेजोवायु-वन-स्पतयः स्थावराः ।।१३।। द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः ।।१४।। पञ्चेन्द्रियाणि ।।१५।। द्विविधानि ।।१६।। निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ।।१७।। लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ।।१८।। स्पर्शन-रसन-घ्राण-चक्षुः-श्रोत्राणि ।।१९।। स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण- शब्दास्तदर्थाः ।।२०।। श्रुतमनिन्द्रियस्य ।।२१।। वन-स्पत्यन्ता-नामेकम ।।२२।। कृमिपिपीलिका-भ्रमर-मनुष्या-दीनामेकैक-वृद्धानि ।।२३।। संज्ञिनः समनस्काः ।।२४।। विग्रह-गतौ कर्म-योगः ।।२५।। अनुश्रेणि गतिः ।।२६।। अविग्रहा जीवस्य ।।२७।। विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ।।२८।। एकसमयाविग्रहा ।।२९।। एकं द्वौ त्रीन्वा-नाहारकः ।।३०।। संमूर्च्छन-गर्भोपपादा जन्म ।।३१।। सचित्त-शीत-संवृताः सेतरा

मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः । ।३२ । । जरायु-जाण्डज-पोतानां गर्भः । ।३३ । देव-नारकाणा-मुपपादः । ।३४ । । शेषाणां संमूर्च्छनम् । ।३५ । औदारिक-वैक्रियिकाहारक-तैजस-कार्मणानि शरीराणि । ।३६ । । पर परं सूक्ष्मम् । ।३७ । । प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक् तैजसात् । ।३८ । अनन्त-गुणे परे । ।३६ । । अप्रतीघाते । ।४० । । अनादि-संबन्धे च । ।४१ । । सर्वस्य । ।४२ । । तदादीनि भाज्यानि युग-पदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः । ।४३ । । निरुपभोगमन्त्यम् । ।४४ । । गर्भसंमूर्च्छ-नजमाद्यम् । ।४५ । । औपपादिकं वैक्रियिकम् । ।४६ । । लब्धि-प्रत्ययं च । ।४७ । । तैजसमपि । ।४८ । । शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव । ।४६ । । नारक-संमूर्च्छिनो नपुंसकानि । ।५० । । न देवाः । ।५१ । । शेषास्त्रिवेदाः । ।५२ । । औपपादिक-चरमोत्तमदेहासंख्येय-वर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः । ।५३ । ।

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्यायः ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

रत्न-शर्करा-बालुका-पंक-धूम-तमो-महातमः प्रभा-भूमयो घनाम्बुवाताकाश-प्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः । ।१ । । तासु त्रिंशत्पञ्चविंशति-पञ्चदश-दश-त्रि-पञ्चोनैक-नरक-शतसहस्राणि पञ्च चैव यथाक्रमम् । ।२ । । नारका नित्याशुभतर-लेश्या-परिणाम-देह-वेदना-विक्रियाः । ।३ । । परस्परोदीरित-दुःखाः । ।४ । । संक्लिष्टाऽसुरोदीरित-दुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः । ।५ । । तेष्वेक-त्रि-सप्त-दश-सप्तदश-द्वाविंशति- त्रयस्त्रिंशत्सा- गरोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः । ।६ । । जम्बूद्वीप-लवणोदादयः शुभनामानो द्वीप-समुद्राः । ।७ । । द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्व-पूर्व-परिक्षेपिणो वलयाकृतयः । ।८ । । तन्मध्ये मेरु-नाभिर्वृत्तो योजन-शतसहस्र-विष्कम्भो जम्बूद्वीपः । ।६ । । भरत-हैमवत-हरि-विदेह-

रम्यक-हैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ।।१०।। तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषध-नील- रुक्मि शिखरिणो वर्षधर-पर्वताः ।।११।। हेमार्जुन-तपनीय-वैडूर्य-रजत- हेममयाः ।।१२।। मणिविचित्र-पार्श्वा उपरिमूले च तुल्य-विस्ताराः ।।१३।। पद्म-महापद्म-तिगिञ्छ-केशरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीका ह्रदा-स्तेषामुपरि ।।१४।। प्रथमो योजन-सहस्रायामस्तदर्द्ध-विष्कम्भो ह्रदः ।।१५।। दश-योजनावगाहः ।।१६।। तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ।।१७।। तद्द्विगुण-द्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च ।।१८।। तन्निवासिन्यो देव्यः श्री-ह्री-धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिक-परिषत्काः ।।१९।। गंगा-सिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता-सीता-सीतोदा-नारी-नरकान्ता-सुवर्ण-रूप्य-कूला-रक्ता-रक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः ।।२०।। द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ।।२१।। शेषास्त्वपरगाः ।।२२।। चतुर्दश-नदी-सहस्र-परिवृता गंगा-सिन्ध्वादयो नद्यः ।।२३।। भरतः षड्विंशति-पञ्चयोजनशत-विस्तारः षट् चैकोनविंशति-भागा योजनस्य ।।२४।। तद्द्विगुण-द्विगुण-विस्तारा वर्षधर-वर्षा विदेहान्ताः ।।२५।। उत्तरा-दक्षिण-तुल्याः ।।२६।। भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्य-वसर्पिणीभ्याम् ।।२७।। ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः ।।२८।। एक-द्वि-त्रि-पल्योपम-स्थितयो हैमवतक-हारि-वर्षक-दैवकुरवकाः ।।२९।। तथोत्तराः ।।३०।। विदेहेषु संख्येय-कालाः ।।३१।। भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवति-शत-भागः ।।३२।। द्विर्धातकीखण्डे ।।३३।। पुष्करार्धे च ।।३४।। प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्याः ।।३५।। आर्या म्लेच्छाश्च ।।३६।। भरतैरावत-विदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरुत्तर-कुरुभ्यः ।।३७।। नृस्थिती पराऽवरे त्रिपल्यो-पमान्तर्मुहूर्ते ।।३८।। तिर्यग्योनिजानां च ।।३९।।

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

देवाश्चतुर्णिकायाः ।।१।। आदितस्त्रिषु पीतान्त-लेश्याः ।।२।। दशाष्ट-पञ्च द्वादश विकल्पाः कल्पोपपन्न-पर्यन्ताः ।।३।। इन्द्र-सामानिक-त्रायस्त्रिंश-पारिषदात्मरक्ष-लोक-पालानीक-प्रकीर्णकाभियोग्य-किल्विषि-काश्चैकशः ।।४।। त्रायस्त्रिंश-लोकपाल-वर्ज्या व्यन्तर-ज्योतिष्काः ।।५।। पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ।।६।। काय-प्रवीचारा आ ऐशानात् ।।७।। शेषाः स्पर्श-रूप-शब्द-मनः-प्रवीचाराः ।।८।। परेऽप्रवीचाराः ।।९।। भवनवासिनोऽसुर-नाग-विद्युत्सुपर्णाग्निवात-स्त-नितोदधि-द्वीप-दिक्कुमाराः ।।१०।। व्यन्तराः किन्नर-किम्पुरुष-महोरग-गन्धर्व-यक्ष-राक्षस-भूत-पिशाचाः ।।११।। ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्र-प्रकीर्णक-तारकाश्च ।।१२।। मेरु-प्रदक्षिणा नित्य-गतयो नृ-लोके ।।१३।। तत्कृतः काल-विभागः ।।१४।। बहिरवस्थिताः ।।१५।। वैमानिकाः ।।१६।। कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ।।१७।। उपर्युपरि ।।१८।। सौधर्मै-शान-सानत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर-लान्तव-कापिष्ठ-शुक्र-महा-शुक्र-शतार-सहस्रारेष्वानत-प्राण-तयो-रारणाच्युतयो-र्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय-वैजयन्त-जयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ।।१९।। स्थिति-प्रभाव-सुख-द्युति-लेश्या-विशुद्धीन्द्रियावधि-विषय-तोऽधिकाः ।।२०।। गतिशरीर-परिग्रहाऽभिमानतो हीनाः ।।२१।। पीत-पद्म-शुक्ल-लेश्या द्वि-त्रि-शेषेषु ।।२२।। प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ।।२३।। ब्रह्म-लोकालया लौकान्तिकाः ।।२४।। सारस्वतादित्य-वह्न्य-रुण-गर्दतोय-तुषिताव्याबाधारिष्टाश्च ।।२५।। विजयादिषु द्वि-चरमाः ।।२६।। औपपादिक-मनुष्येभ्यः शेषास्तिर्य-ग्योनयः ।।२७।। स्थितिरसुर-नाग सुपर्ण-द्वीपशेषाणां सागरोपम-त्रिपल्योपमार्द्ध-हीन-मिताः ।।२८।।

सौधर्मै-शानयोः सागरोपमे अधिके।।२६।। सानत्कुमार-माहेन्द्रयोः सप्त।।३०।। त्रि-सप्त-नवैकादश-त्रयोदश-पञ्च-दशभिरधिकानि तु।।३१।। आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च।।३२।। अपरा पल्योपममधिकम्।।३३।। परतः परतः पूर्वा पूर्वाऽनन्तरा।।३४।। नारकाणां च द्वितीयादिषु।।३५।। दश-वर्ष-सहस्राणि प्रथमायाम्।।३६।। भवनेषु च।।३७।। व्यन्तराणां च।।३८।। परा पल्योपममधिकम्।।३९।। ज्योतिष्काणां च।।४०।। तदष्ट-भागोऽपरा।।४१।। लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम्।।४२।।

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥

अथ पंचमोऽध्यायः

अजीव-काया धर्माधर्माकाश-पुद्गलाः।।१।। द्रव्याणि।।२।। जीवाश्च।।३।। नित्याऽवस्थितान्यरूपाणि।।४।। रूपिणः पुद्गलाः।।५।। आ आकाशादेक-द्रव्याणि।।६।। निष्क्रियाणि च।।७।। असंख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैक-जीवानाम्।।८।। आकाशस्यानन्ताः।।९।। संख्येयासंख्येयाश्च पुद्गलानाम्।।१०।। नाणोः।।११।। लोकाकाशेऽ-वगाहः।।१२।। धर्माऽधर्मयोः कृत्स्ने।।१३।। एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम्।।१४।। असंख्येय-भागादिषु जीवानाम्।।१५।। प्रदेश-संहार-विसर्पाभ्यां प्रदीपवत्।।१६।। गति-स्थित्युप-ग्रहौ धर्माधर्मयोरुपकारः।।१७।। आकाशस्यावगाहः।।१८।। शरीर-वाङ्-मन-प्राणापानाः पुद्गलानाम्।।१९।। सुख-दुःख-जीवित-मरणोपग्रहाश्च।।२०।। परस्परोग्रहो जीवानाम्।।२१।। वर्तना-परिणाम-क्रियाः परत्वाऽपरत्वे च कालस्य।।२२।। स्पर्श-रस-गंध-वर्णवन्तः पुद्गलाः।।२३।। शब्द-बन्ध-सौक्ष्म्य-स्थौल्य-संस्थान-भेद-तमश्छा-याऽऽत-

पोद्योतवन्तश्च।।२४।। अणवः स्कन्धाश्च।।२५।। भेद-संघातेभ्य उत्पद्यन्ते।।२६।। भेदादणुः।।२७।। भेद-संघाताभ्यां चाक्षुषः।।२८।। सद् द्रव्य-लक्षणम्।।२९।। उत्पाद-व्ययध्रौव्य-युक्तं सत्।।३०।। तद्भावाऽव्ययं नित्यम्।।३१।। अर्पिताऽनर्पितसिद्धेः।।३२।। स्निग्ध-रूक्ष-त्वाद् बन्धः।।३३।। न जघन्य-गुणानाम्।।३४।। गुण-साम्ये सदृशानाम्।।३५।। द्व्यधिकादि-गुणानां तु।।३६।। बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च।।३७।। गुण-पर्ययवद् द्रव्यम्।।३८।। कालश्च।।३९।। सोऽनन्तसमयः।।४०।। द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः।।४१।। तद्भावः परिणामः।।४२।।

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे पञ्चमोऽध्यायः ॥

अथ षष्ठमोऽध्यायः

काय-वाङ्-मनः कर्म योगः।।१।। स आस्रवः।।२।। शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य।।३।। सकषायाऽकषाययोः साम्परायिकेर्यापथयोः।।४।। इन्द्रिय-कषायाऽव्रत-क्रियाः पञ्च-चतुः पञ्च-पञ्चविंशति-संख्याः पूर्वस्य भेदाः।।५।। तीव्र-मन्द-ज्ञाताऽज्ञात-भावाऽधिकरण-वीर्य-विशेषेभ्यस्त-द्विशेषः।।६।। अधिकरणं जीवाजीवाः।।७।। आद्यं संरम्भ-समारम्भारम्भ-योग-कृत-कारिताऽनुमत-कषायविशेषै-स्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः।।८।। निर्वर्तना-निक्षेप-संयोग-निसर्गा-द्वि-चतुर्द्वि-त्रि-भेदाः परम्।।९।। तत्प्रदोषनि-ह्नव-मात्सर्यान्तरा-यासादनोपघाता ज्ञान-दर्शनावरणयोः।।१०।। दुःख-शोक-तापाऽऽक्रन्दन-वध-परिदेवना-न्यात्म-परोभय स्थान्यसद्वेद्यस्य।।11।। भूतव्रत्यनुकम्पा-दान-सराग-संयमादियोगः क्षान्तिः शौचमिति सद्वेद्यस्य।।१२।। केवलि-श्रुत-संघ-धर्म-देवाऽवर्णवादो दर्शनमोहस्य।।१३।। कषायोदयात्तीव्र-परिणामश्चारित्रमोहस्य।।१४।। बह्वा-रम्भ-परिग्रहत्व नारक-

कर्मरहितोऽहम्।। चतुर्दशगुणस्थानांतर्गतोऽहम्।। एकोनविंशति जीव समास रहितोऽहम्।। षट्पर्याप्ति रहितोऽहम्।। दशप्राण रहितोऽहम्।। चतुःसंज्ञारहितोऽहम्।। अष्टविध ज्ञानोपयोगान्तर्गतोऽहम्।। चतुर्विधदर्शनोपयोगान्तर्गतोऽहम्।। दशविध धर्मध्यानान्तर्गतोऽहम्।। चतुर्विध रौद्रध्यान रहितोऽहम्।। दशविध धर्मध्यानान्तर्गतोऽहम्।। चतुर्विध शुक्लध्यानान्तर्गतोऽहम्।। पंच मिथ्यात्त्व रहितोऽहम्।। मूलोत्तर कर्मप्रकृति रहितोऽहम्।। द्रव्यास्रव-भावास्रव रहितोऽहम्।। द्रव्यबंध-भावबंध रहितोऽहम्।। द्रव्य निर्जरा भाव निर्जरान्तर्गतोऽहम्।। द्रव्य-मोक्ष, भावमोक्षान्तर्गतोऽहम्।। पावनोऽहं, पवित्रोऽहम्।। कुलयोनि रहित सिद्धस्वरूपोऽहम्।।

धर्म-ध्यान-भावना धर्मध्यान

निःशंकितान्तर्गत परिणाम परिणत वीतरागानुभूति स्वरूपोऽहम्।। निःकांक्षितांतरंग परिणाम परिणत वीतरागानुभूति स्वरूपोऽहम्।। निर्विचिकित्सांतांतरंग परिणाम परिणत वीतरागानुभूति स्वरूपोऽहम्।। अमूढदृष्टययांतांतरंग परिणाम परिणत वीतरागानुभूति स्वरूपोऽहम्।। उपगूहनांगांतरंग परिणाम परिणत वीतरागानुभूति स्वरूपोऽहम्।। स्थितिकरणांगांतरंग परिणाम परिणत वीतरागानुभूति स्वरूपोऽहम्।। वात्सल्यांगांतरंग परिणाम परिणत वीतरागानुभूति स्वरूपोऽहम्।। प्रभावनांगांतरंग परिणाम परिणत वीतरागानुभूति स्वरूपोऽहम्।। शुद्धज्ञानानुचरणरूपांतरंग परिणाम परिणत वीतरागानुभूति स्वरूपोऽहम्।। शुद्धचारित्र परिणाम परिणत वीतरागानुभूति स्वरूपोऽहम्।। स्पर्शनेन्द्रियांतर्गत वीतराग परिणाम परिणत वीतरागानुभूति स्वरूपोऽहम्।। रसनेन्द्रियान्तर्गत वीतराग परिणाम परिणत वीतरागानुभूति स्वरूपोऽहम्।। प्राणेन्द्रियान्तर्गत वीतराग परिणाम परिणत वीतरागानुभूति स्वरूपोऽहम्।। चक्षुरिन्द्रियान्तर्गत वीतराग परिणाम परिणत वीतरागानुभूति स्वरूपोऽहम्।। कर्णेन्द्रियान्तर्गत वीतराग परिणाम परिणत वीतरागानुभूति स्वरूपोऽहम्।। परमानन्द परिणाम परिणत वीतरागानुभूति स्वरूपोऽहम्।। सहजानन्द परिणाम परिणत वीतरागानुभूति स्वरूपोऽहम्।। नित्यानन्द परिणाम परिणत वीतरागानुभूति स्वरूपोऽहम्।। निर्विकाररूप परिणाम परिणत वीतरागानुभूति स्वरूपोऽहम्।। निरामय स्वरूपोऽहम्।। अनन्तसुख सम्पन्नोऽहम्।।

स्याऽऽयुषाः ।।१५।। माया तैर्यग्यो-नस्य ।।१६।। अल्पारम्भपरिग्रहत्वं मानुषस्य ।।१७।। स्वभाव-मार्दवं च ।।१८।। निःशीलव्रतत्त्वं च सर्वेषाम् ।।१९।। सराग-संयम-संयमा-संयमाकामनिर्जरा-बालतपांसि दैवस्य ।।२०।। सम्यक्त्वं च ।।२१।। योगवक्रता विसंवादनं चाऽशुभ-स्य नाम्नः ।।२२।। तद्विपरीतं शुभस्य ।।२३।। दर्शनविशुद्धि-र्विनयसंपन्नता शील-व्रतेष्वनतीचारोऽभीक्ष्णज्ञानोपयोग-संवेगौ शक्तितस्त्याग-तपसी साधु-समाधिर्वैयावृत्यकरण-मर्हदाचार्य-बहुश्रुत-प्रवचन-भक्तिराऽऽव- श्यकाऽपरि-हाणिर्मार्ग-प्रभावना प्रवचन-वत्सलत्वमिति तीर्थकं-रत्वस्य ।।२४।। परात्म-निन्दा-प्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ।।२५।। तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ।।२६।। विघ्नकरणमन्तरायस्य ।।२७।।

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे षष्ठोऽध्यायः ॥

अथ सप्तमोऽध्यायः

हिंसाऽनृत-स्तेयाब्रह्म-परिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ।।१।। देशसर्वतोऽणु-महती ।।२।। तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च ।।३।। वाङ्मनोगुप्तीर्याऽऽदा-ननिक्षेपण-समित्या-लोकित-पानभोजनानि पञ्च ।।४।। क्रोध-लोभ- भीरुत्व- हास्य-प्रत्याख्यानान्यनुवीचि-भाषणं च पंच ।।५।। शून्यागार-विमोचिता-वास-परोपरोधाकरण भैक्ष्यशुद्धि-सधर्माविसंवादाः पंच ।।६।। स्त्रीरागकथा-श्रवण-तन्मनो-हरांगनिरीक्षण-पूर्वरतानुस्मरण-वृष्येष्ट-रस-स्वशरीर-संस्कार-त्यागाः पञ्च ।।७।। मनोज्ञाऽमनोज्ञेन्द्रिय-विषय-राग-द्वेष-वर्जनानि पञ्च ।।८।। हिंसादिष्विहामुत्रऽपाया-ऽवद्यदर्शनम् ।।९।। दुःखमेव वा ।।१०।। मैत्री-प्रमोद-कारुण्य-माध्यस्थ्यानि च सत्त्वगुणाधिक-क्लिश्यमानाऽ-विनयेषु ।।११।। जगत्कायस्वभावौ वा संवेग-वैराग्यार्थम् ।।१२।। प्रमत्तयोगात्प्राण-व्यपरोपणं हिंसा ।।१३।। असद-

भिधानमनृतम्।।१४।। अदत्तादानं स्तेयम्।।१५।। मैथुनमब्रह्म।।१६।। मूर्च्छा परिग्रहः।।१७।। निशल्यो व्रती।।१८।। अगार्यनगारश्च।।१९।। अणुव्रतोऽगारी।।२०।। दिग्देशाऽनर्थदण्डविरति-सामायिक-प्रोषधो-पवासोपभोग-परिभोग-परिमाणाऽतिथिसंविभाग व्रत-संपन्नश्च।।२१।। मारणा-न्तिकीं सल्लेखनां जोषिता।।२२।। शंका-कांक्षा-विचिकित्सा-न्यदृष्टि-प्रशंसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतीचाराः।।२३।। व्रत-शीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम्।।२४।। बन्ध-वधच्छेदातिभारारोपाणाऽन्नपननिरोधाः।।२५।। मिथ्योप-देश-रहोभ्याख्यान-कूटलेखक्रिया-न्यासापहार-साकार-मंत्रभेदाः।।२६।। स्तेनप्रयोग-त्तदाहृताऽऽदान-विरुद्ध-राज्यातिक्रम-हीनाधिकमानोन्मान-प्रतिरूपक-व्यवहाराः।।२७।। परविवाहकर-णेत्वरिका-परिगृहीताऽपरिगृहीता-गमनाऽनंगक्रीडा-कामतीव्रभि-निवेशाः।।२८।। क्षेत्रवास्तु-हिरण्यसुवर्ण-धनधान्य-दासीदास-कुप्य-प्रमाणातिक्रमाः।।२९।। ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रम-क्षेत्र-वृद्धि-स्मृत्यन्तराधानानि।।३०।।आनयन-प्रेष्यप्रयोग-शब्द-रूपानुपात-पुद्गलक्षेपाः।।३१।। कन्दर्प-कौत्कुच्य-मौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोग परिभोगाऽऽनर्थक्यानि ।।३२।।योग-दुःप्रणिधानाऽनादर-स्मृत्यनु-पस्थानानि।।३३।। अप्रत्यवेक्षिताऽप्रमार्जितोत्सर्गादान-संस्तरोपक्र-मणाऽना-दर-स्मृत्यनुपस्थानानि।।३४।। सचित्तसम्बन्ध-संमिश्राभि-षव-दुःपक्वाहारः।।३५।। सचित्त-निक्षेपापिधान-पर-व्यपदेश-मात्सर्य्य-कालाऽतिक्रमाः।।३६।। जीवित-मरणा-शंसा-मित्रानुराग-सुखानुबन्ध-निदानानि।।३७।। अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम्!।।३८।। विधि-द्रव्य-दातृ-पात्र-विशेषात्तद्विशेषः।।३९।।

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्यायः ॥

अथ अष्ठमोऽध्यायः

मिथ्यादर्शनाऽविरति-प्रमाद-कषाय-योगा बन्ध-हेतवः ।।१।। सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गला-नाऽऽदत्ते स बन्धः ।।२।। प्रकृति-स्थित्यनुभव-प्रदेशास्तद्-द्विधयः ।।३।। आद्यो ज्ञानदर्शनावरण-वेदनीय-मोहनीयायु-र्नाम-गोत्रान्तरायाः ।।४।। पञ्च-नव-द्वयष्टा-विंशति-चतु-र्द्विचत्वारिंशद्-द्वि-पञ्च-भेदा यथाक्रमम् ।।५।। मतिश्रुता-वधिमनःपर्यय-केवलानाम् ।।६।। चक्षु-रचक्षुरवधि-केवलानां निद्रा-निद्रानिद्रा-प्रचला-प्रचलाप्रचला-स्त्यानगृद्धयश्च ।।७।। सदसद्वेद्ये ।।८।। दर्शन-चारित्र-मोहनीया-कषाय-कषायवेदनीयाख्या-स्त्रि-द्वि-नव-षोडशभेदाः सम्यक्त्व-मिथ्यात्व-त्तदुभया-न्यकषायकषायौ हास्य-रत्य-रति-शोक-भय-जुगुप्सा-स्त्री-पुन्नपुंसक-वेदा अनन्तानु-बन्ध्य-प्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान-संज्वलन-विकल्पाश्चैकशः क्रोध-मान-माया-लोभाः ।।९।। नारक-तैर्यग्योन-मानुष-दैवानि ।।१०।। गति-जाति-शरीरांगोपांग-निर्माण-बन्धन-संघात-संस्थान-संहनन-स्पर्श-रस-गंध-वर्णानुपूर्व्यागुरु-लघू-पघात-परघातातपोद्योतोच्छ्वास-विहायोगतयः प्रत्येकशरीर-त्रस-सुभग सुस्वर-शुभ-सूक्ष्म-पर्याप्ति-स्थिरादेय-यशःकीर्ति-सेतराणि तीर्थकरत्वं च ।।११।। उच्चैर्नीचैश्च ।।१२।। दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणाम् ।।१३।। आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरो-पम-कोटीकोट्यः परा स्थितिः ।।१४।। सप्ततिर्मोहनीयस्य ।।१५।। विंशतिर्नाम-गोत्रयोः ।।१६।। त्रयस्त्रिंशत्सागरोप-माण्यायुषः ।।१७।। अपरा द्वादश-मुहूर्ता वेदनीयस्य ।।१८।। नाम-गोत्रयोरष्टौ ।।१९।। शेषाणामन्तर्मुहूर्ता ।।२०।। विपाकोऽनुभवः ।।२१।। स यथानाम ।।२२।। ततश्च निर्जरा ।।२३।। नाम-प्रत्ययाः सर्वतो योग-विशेषात् सूक्ष्मैकक्षेत्रा-वगाहस्थिता-सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्त-प्रदेशाः ।।२४।। सद्वेद्य-शुभायु-र्नामगोत्राणि पुण्यम् ।।२५।। अतोऽन्य-त्पापम् ।।२६।।

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रेऽष्टमोध्यायः ॥

अथ नवमोऽध्यायः

आस्रव-निरोधः संवरः।।१।। स गुप्ति-समिति-धर्मानुप्रेक्षापरीषहजय-चारित्रैः।।२।। तपसा निर्जरा च।।३।। सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः।।४।। ईर्याभाषैषणादान-निक्षेपोत्सर्गाः समितयः।।५।। उत्तम-क्षमा-मार्दवार्जव-शौच-सत्य-संयम- तप-स्त्यागाकिञ्चन्य-ब्रह्मचर्याणि धर्मः।।६।। अनित्याशरण-संसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रवसंवर-निर्जरा-लोक-बोधिदुर्लभ-धर्मस्वा-ख्यातत्वानुचिन्तन-मनुप्रेक्षाः।।७।। मार्गाच्यवन-निर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः।।८।। क्षुत्पिपासा-शीतोष्णदंशमशक-नाग्न्यारति-स्त्री-चर्या-निषद्या-शय्याक्रोशवध-याचनालाभ-रोग-तृण-स्पर्श-मल-सत्कारपुरस्कार-प्रज्ञाज्ञानाऽदर्शनानि।।९।। सूक्ष्मसाम्पराय-छद्मस्थवीत-रागयोश्चतुर्दश।।१०।। एकादश जिने।।११।। बादर-साम्पराये सर्वे।।१२।। ज्ञानावरणे प्रज्ञाऽज्ञाने।।१३।। दर्शनमोहान्तराययोर-दर्शनाऽलाभौ।।१४।। चारित्रमोहे नाग्न्यारति-स्त्री-निषद्याऽऽक्रोश-याचना-सत्कार-पुरस्काराः।।१५।। वेदनीये शेषाः।।१६।। एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नै-कोनविंशतेः।।१७।। सामायिकच्छेदोपस्थापना परिहार-विशुद्धि-सूक्ष्मसाम्पराय-यथाख्यातमिति चारित्रम्।।१८।। अनशनावमौदर्य-वृत्तिपरिसंख्यान-रस-परित्याग-विविक्तशय्यासन-कायक्लेशा बाह्यं तपः।।१९।। प्रायश्चित्त-विनय-वैयावृत्त्य-स्वाध्याय-व्युत्सर्ग-ध्यानान्युत्तरम्।।२०।। नवचतुर्दश-पंच-द्विभेदा यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ।।२१।। आलोचन-प्रतिक्रमण-तदुभय-विवेक-व्युत्सर्ग-तपश्छेद-परिहारोपस्थापनाः।।२२।। ज्ञान-दर्शन-चारित्रोपचाराः।।२३।। आचार्यो- पाध्याय-तपस्वि-शैक्ष-ग्लान-गण-कुल-संघ-साधु-मनोज्ञानाम्।।२४।। वाचना-पृच्छनानुप्रेक्षाम्नाय-धर्मोपदेशाः।।२५।। बाह्याभ्यन्त-रोपध्योः।।26।। उत्तम-

संहननस्यैकाग्र-चिन्ता-निरोधो ध्यानमान्त-र्मुहूर्तात् । ।२७ । । आर्त्त-रौद्र-धर्म्य-शुक्लानि । ।२८ । । परे मोक्ष-हेतू । ।२९ । । आर्त्तममनोज्ञस्य संप्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृति-समन्वा-हारः । ।३० । । विपरीतं मनोज्ञस्य । ।३१ । । वेदनायाश्च । ।३२ । । निदानं च । ।३३ । । तदविरत-देशविरत-प्रमात्तसंयतानाम् । ।३४ । । हिंसानृत-स्तेय-विषय-संरक्षणेभ्यो रौद्रमविरत-देश-विरतयोः । ।३५ । । आज्ञाऽपाय-विपाक-संस्थान-विचयाय धर्म्यम् । ।३६ । । शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः । ।३७ । । परे केवलिनः । ।३८ । । पृथक्त्वैकत्ववितर्क-सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति-व्युपरत-क्रियानिवर्तीनि । ।३९ । । त्र्येकयोग-काययोगाऽयोगानाम् । ।४० । । एकाश्रये सवितर्क-वीचारे पूर्वे । ।४१ । । अवीचारं द्वितीयम् । ।४२ । । वितर्कः श्रुतम् । ।४३ । । वीचारोऽर्थ-व्यञ्जन योगसङ्क्रान्तिः । ।४४ । । सम्यग्दृष्टि-श्रावक-विरतानन्त-वियोजक-दर्शनमोह-क्षपकोपशम-कोपशांतमोह-क्षपक-क्षीणमोह जिनाः क्रमशोऽसंख्येय-गुण-निर्जराः । ।४५ । । पुलाक-बकुश-कुशील-निर्ग्रन्थ-स्नातका निर्ग्रन्थाः । ।४६ । । संयम-श्रुत-प्रतिसेवना-तीर्थ-लिंग-लेश्योपपाद-स्थान-विकल्पतः साध्याः । ।४७ । ।

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे नवमोध्यायः ॥

अथ दसमोऽध्यायः

मोहक्षयाज्ज्ञान-दर्शनावरणान्तराय-क्षयाच्च केवलम् । ।१ । । बन्धहेत्वभाव-निर्जराभ्यां कृत्स्न-कर्म-विप्रमोक्षो मोक्षः । ।२ । । औपशमिकादि-भव्यत्वानां च । ।३ । । अन्यत्र केवलसम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-सिद्धत्वेभ्यः । ।४ । । तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्याऽऽलोकान्तात् । ।५ । । पूर्वप्रयोगाद-संगत्वाद् बन्धच्छेदात् तथागतिपरिणामाच्च । ।६ । । आ-विद्धकुलालचक्रवद्-व्यपगतलेपाऽलाबुवदेरण्ड-बीज-वदग्नि-

शिखावच्च । ।७ । । धर्मास्तिकायाभावात् । ।८ । । क्षेत्र-काल-गति-लिंग-तीर्थ-चारित्र-प्रत्येकबुद्धबोधित-ज्ञानाऽव-गाहनान्तर- संख्याल्पबहुत्वतः साध्याः । ।६ । ।

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्यायः ॥

अक्षर-मात्र-पद-स्वरहीनं, व्यञ्जन-सन्धि-विवर्जित-रेफम् ।
साधुभिरत्र मम क्षमितव्यं, को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे । ।१ । ।

दशाध्याय-परिच्छिन्ने, तत्त्वार्थे पठिते सति ।
फलं स्यादुपवासस्य, भाषितं मुनिपुङ्गवैः । ।२ । ।

तत्त्वार्थ-सूत्र-कर्त्तारं, गृद्धपिच्छोपलक्षितम् ।
वन्दे गणीन्द्र-संजातमुमास्वामि-मुनीश्वरम् । ।३ । ।

अरहंत-भासियत्थं गणहरदेवेहिं गंथियं सव्वं ।
पणमामि भत्तिजुत्तो, सुदणाणमहोवहिं सिरसा । ।६ । ।

गुरवः पान्तु नो नित्यं ज्ञान-दर्शन-नायकाः ।
चारित्रार्णव-गम्भीराः मोक्ष-मार्गोपदेशकाः । ।७ । ।

कोटीशतं द्वादशचैव कोट्यो लक्षाण्यशीतिस्त्र्यधिकानि चैव-
पंचाशदष्टौ च सहस्रसंख्यमेतच्छ्रुतं पंचपदं नमामि । ।८ । ।

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रं समाप्तम् ॥

श्रीमाघनन्द्याचार्यविरचित

अध्यात्मध्यानसूत्राणि

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झयाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं।।

रागद्वेषमोहरहितोऽहम्।।१।। क्रोधमानमायालोभरहितोऽहम्।।२।।पञ्चेन्द्रियविषयव्यापारशून्योऽहम्।।३।।मनोवचन-कायक्रिया-रहितोऽहम्।।४।। द्रव्यकर्म-भावकर्म-नोकर्म-रहितोऽहम्।।५।। ख्यातिपूजालाभादि-विभावभाव-रहितोऽहम्।।६।। दृष्टश्रुतानुभूत-भोगकांक्षा-रहितोऽहम्।।७।।शल्यत्रय-रहितोऽहम्।।८।।गारवत्रय-रहितोऽहम्।।९।। दण्डत्रय-रहितोऽहम्।।१०।।

विभावपरिणामशून्योऽहम्।।११।। निजनिरञ्जन-स्वरूपोऽ-हम्।।२।।स्वशुद्धात्म-सम्यक्श्रद्धान-परिणतोऽहम्।।१३।। भेद-ज्ञानानुष्ठान-परिणतोऽहम्।।१४।। अभेदरत्नत्रयरूपोऽहम्।।१५।। निर्विकल्प-समाधि-सञ्जातोऽहम्।।१६।।वीतराग-सहजानन्द-स्वरूपोऽ-हम्।।१७।। अत्यानन्द-स्वरूपोऽहम्।।१८।। स्वसंवेदन-ज्ञानामृत-भरितोऽहम्।।१९।। ज्ञायकैकस्वभावोऽहम्।।२०।।

सहजशुद्धपारिणामिक-स्वभावरूपोऽहम्।।२१।। सहजशुद्ध-ज्ञानान्दैक-स्वभावोऽहम्।।२२।।महाचलनिर्भरानन्द-रूपोऽहम्।।२३।। चिन्मात्रमूर्ति-स्परूपोऽहम्।।२४।। चैतन्यरत्नाकर-स्वरूपोऽहम्।।२५।। चैतन्यामरद्रुम-स्वरूपोऽहम्।।२६।। चैतन्यामृत-आहारस्वरूपोऽ-हम्।।२७।। ज्ञानपुञ्जस्वरूपोऽहम्।।२८।। ज्ञाना-मृतप्रवाह-स्वरूपोऽ-हम्।।२९।। चैतन्यरसरसायन-स्वरूपोऽहम्।।३०।।

चैतन्यचिह्न-स्वरूपोऽहम्।।३१।। चैतन्यकल्याणवृक्षस्वरूपोऽ-

हम् ।।३२।। ज्ञानज्योतिःस्वरूपोऽहम् ।।३३।। ज्ञानार्णव-स्वरूपोऽहम् ।।३४।। निरुपम-निर्लेप-स्वरूपोऽहम् ।।३५।। निरवद्य-स्वरूपोऽहम् ।।३६।। शुद्धचिन्मात्र-स्वरूपोऽहम् ।।३७।। अनन्तज्ञान-स्वरूपोऽहम् ।।३८।। अनन्तदर्शन-स्वरूपोऽहम् ।।३९।। अनन्तवीर्य-स्वरूपोऽहम् ।।४०।।

अनन्तसुख-स्वरूपोऽहम् ।।४१।। सहजानन्द-स्वरूपोऽहम् ।।४२।। परमानन्द-स्वरूपोऽहम् ।।४३।। परमज्ञानानन्द-स्वरूपोऽहम् ।।४४।। सदानन्द-स्वरूपोऽहम् ।।४५।। चिदानन्द-स्वरूपोऽहम् ।।४६।। निजानन्द-स्वरूपोऽहम् ।।४७।। सहजसुखानन्द-स्वरूपोऽहम् ।।४८।। नित्यानन्द-स्वरूपोऽहम् ।।४९।। शुद्धात्म-स्वरूपोऽहम् ।।५०।।

परमज्योतिःस्वरूपोऽहम् ।।५१।। स्वात्मोपलब्धि-स्वरूपोऽहम् ।।५२।। शुद्धात्मसंवित्ति-स्वरूपोऽहम् ।।५३।। भूतार्थ-स्वरूपोऽहम् ।।५४।। परमार्थ-स्वरूपोऽहम् ।।५५।। समयसारसमूह-स्वरूपोऽहम् ।।५६।। अध्यात्मसार-स्वरूपोऽहम् ।।५७।। परममंगल-स्वरूपोऽहम् ।।५८।। परमोत्तम-स्वरूपोऽहम् ।।५९।। सकलकर्मक्षयकारण- स्वरूपोऽहम् ।।६०।।

परमाद्वैत-स्वरूपोऽहम् ।।६१।। शुद्धोपयोग-स्वरूपोऽहम् ।।६२।। निश्चयषडावश्यक-स्वरूपोऽहम् ।।६३।। परमसमाधि-स्वरूपोऽहम् ।।६४।। परमस्वास्थ्य-स्वरूपोऽहम् ।।६५।। परमस्वाध्याय-स्वरूपोऽहम् ।।६६।। परमभेदज्ञान-स्वरूपोऽहम् ।।६७।। परमसंवेदन-स्वरूपोऽहम् ।।६८।। परमसमरसीभाव-स्वरूपोऽहम् ।।६९।। केवल-ज्ञान-स्वरूपोऽहम् ।।७०।।

केवलदर्शन-स्वरूपोऽहम् ।।७१।। अनन्तवीर्य-स्वरूपोऽहम् ।।७२।।

परमसूक्ष्म-स्वरूपोऽहम्।।७३।। अवगाहन-स्वरूपोऽहम।।७४।। अगुरुलघु-स्वरूपोऽहम्।।७५।। अव्याबाध-स्वरूपोऽहम्।।७६।। अष्टविधकर्म-रहितोऽहम्।।७७।। निरञ्जनस्वरूपोऽहम्।।७८।। नित्योऽहम्।।७९।। अष्टगुणसहितोऽहम्।।८०।।

कृतकृत्योऽहम्।।८१।। लोकाग्रवासिस्वरूपोऽहम्।।८२।। अनुपमोऽहम्।।८३।।अचिन्त्योऽहम्।।८४।।अतर्क्योऽहम्।।८५।। अप्रमेयस्वरूपोऽहम्।।८६।। अतिशयस्वरूपोऽहम्।।८७।। अक्षय-स्वरूपोऽहम्।।८८।।शाश्वतोऽहम्।।८९।।शुद्धस्वरूपोऽहम्।।९०।।

सिद्धस्वरूपोऽहम्।।९१।।सत्तात्मक-सिद्ध-स्वरूपोऽहम्।।९२।। अनुभवात्मकसिद्धस्वरूपोऽहम्।।९३।। सोऽहम्, शुद्धोऽहम्।।९४।। चित्कलास्वरूपोऽहम्।।९५।।चैतन्यपुञ्जस्वरूपोऽहम्।।९६।।सदा-नन्द-स्वरूपोऽहम्।।९७।। परमशरण्योऽहम्।।९८।। स्वयम्भूरऽ-हम्।।९९।। अतिशयातिशयातीत (अतिशयातिशय) अमूर्तानन्त-सुख-स्वरूपोऽहम्।।१००।।

श्रीमाघनन्द्याचार्यविरचित

शास्त्रसारसमुच्चयः

(२०३ सूत्राणि)

श्रीमन्नम्रामरस्तोमं, प्राप्तानन्तचतुष्टयम्।
नत्वा जिनाधिपं वक्ष्ये, शास्त्रसारसमुच्चयम्।।

अथ प्रथमानुयोगवेदः

त्रिविधः कालः।।१।। द्विविधः।।२।। षड्विधो वा।।३।। दशविधाः कल्पद्रुमाः।।४।। चतुर्दश कुलकरा इति।।५।। षोडश-भावनाः।।६।। चतुर्विंशति तीर्थंकराः।।७।। चतुस्त्रिंशदति-

शयाः ।।८।। पञ्चमहाकल्याणानि ।।६।। घातिचतुष्टयम् ।।१०।। अष्टादश दोषाः ।।११।। समवसरणेकादश भूमयः ।।१२।। द्वादश गणाः ।।१३।। अष्टमहाप्रातिहार्याणि ।।१४।। अनन्तचतुष्टयमिति ।।१५।। द्वादश चक्रवर्तिणः ।।१६।। सप्ताङ्गानि ।।१७।। चतुर्दश-रत्नानि ।।१८।। नवनिधयः ।।१९।। दशाङ्गभोगाः ।।२०।। नव-बलदेवाः ।।२१।। वासुदेव-प्रतिवासुदेव-नीरदाश्चेति ।।२२।।

।इति प्रथमोऽध्यायः।।

अथ करणानुयोगवेदः

त्रिविधो लोकः ।।१।। सप्त नरकाः ।।२।। एकोनपञ्चाशत् पटलानि ।।३।। इन्द्रकाणि च ।।४।। चतुरुत्तर-षट्शत-नव-सहस्रं श्रेणिबद्धानि ।।५।। सप्तचत्वारिंशदुत्तर-त्रिंशताधिक-नवति-सहस्रालङ्कृत-त्र्यशीतिलक्ष प्रकीर्णकानि ।।६।। चतुरशीति-लक्षबिलानि ।।७।। चतुर्विधं दुःखमिति ।।८।। जम्बूद्वीप-लवण-समुद्रादयोऽसंख्यातद्वीपसमुद्राः ।।९।। तत्रार्ध-तृतीय-द्वीपसमुद्रौ मनुष्यक्षेत्रं ।।१०।। पञ्चदश कर्मभूमयः ।।११।। तत्रार्ध-भोगभूमयः ।।१२।। षण्णवति कुभोगभूमयः ।।१३।। पञ्चमन्दरगिरयः ।।१४।। जम्बूवृक्षाः ।।१५।। शाल्मलयश्च (पुष्कराणि च) ।।१६।। चतुस्त्रिंशद् वर्षधरपर्वताः ।।१७।। त्रिंशदुत्तरशत-सरोवराः ।।१८।। सप्त-तिर्महानद्याः ।।१९।। विंशतिर्नाभिनगाः ।।२०।। विंशतिर्यमक-गिरयश्च ।।२१।। शतं वक्षारक्ष्माधराः ।।२४।। षष्ठिर्विभङ्गनद्याः ।।२५।। षष्ट्युत्तरशतं विदेहजनपदाः ।।२६।। सप्तत्यधिकशतं विजयार्धपर्वताः ।।२७।। वृषभगिरयश्चेति ।।२८।। देवाश्चतुर्णि-कायाः ।।२९।। भवनवासिनो दशविधाः ।।३०।। अष्टविधाः व्यन्तराः ।।३१।। पञ्चविधाः ज्योतिष्काः ।।३२।।

द्वादशविधाः वैमानिकाः ।।३३।। षोडशस्वर्गाः ।।३४।। नवग्रैवेयकाः ।।३५।। नवानुदिशाः ।।३६।। पञ्चानुत्तराः ।।३७।। त्रिषष्ठीपटलानि ।।३८।। इन्द्रकाणि च ।।३९।। षोडशोत्तराष्टशतान्वित- सप्तसहस्र-श्रेणिबद्धानि ।।४०।। चतुरशीतिलक्षैकोननवतिसहस्रैकशतचतुश्-चत्वारिंशत् प्रकीर्णकानि ।।४१।। चतुरशीतिलक्ष-सप्तनवति-सहस्र-त्रयोविंशति विमानानि ।।४२।। ब्रह्म-लोकान्तालयाश्चतुर्विंशति लौकान्तिकाः ।।४३।। अणिमाद्यष्टगुणाः ।।४४।।

।इति द्वितीयोऽध्यायः।।

अथ चरणानुयोगवेदः

पञ्चलब्धयः ।।१।। करणं त्रिविधं ।।२।। सम्यक्त्वं द्विविधं ।।३।। त्रिविधं ।।४।। दशविधं वा ।।५।। तत्र वेदकसम्यक्त्वस्य पञ्चविं-शतिर्मलानि ।।६।। अष्टाङ्गानि ।।७।। अष्टगुणाः ।।८।। पञ्चातिचारा इति ।।९।। एकादश निलयाः ।।१०।। त्रिविधो निर्वेगः ।।११।। सप्तव्यसनानि ।।१२।। शल्यत्रयं ।।१३।। अष्टौ मूलगुणाः ।।१४।। पञ्चाणुव्रतानि ।।१५।। त्रीणि गुणव्रतानि ।।१६।। शिक्षाव्रतानि चत्वारि ।।१७।। सप्त शीलानि ।।१८।। व्रतशीलेषु पञ्च-पञ्चातिचाराः ।।१९।। मौनं सप्तस्थानम् ।।२०।। अन्तरायाश्च ।।२१।। श्रावक-धर्म-श्चतुर्विधः ।।२२।। जैनाश्रमाश्च ।।२३।। तत्र ब्रह्मचारिणः पञ्चविधाः ।।२४।। आर्यकर्माणि षट् ।।२५।। तत्रेज्या दशविधा ।।२६।। अर्थोपार्जनकर्माणि षट् ।।२७।। दत्तीश्चतुर्विधा ।।२८।। क्षत्रियो द्विविधः ।।२९।। भिक्षुश्चतुर्विधाः ।।३०।। यतिर्द्वि-विधः ।।३१।। मुनयस्त्रिविधाः ।।३२।। ऋषयश्-चतुर्विधाः ।।३३।। तत्र राजर्षयो द्विविधाः ।।३४।। ब्रह्मर्षयश्च ।।३५।। मरणं द्वित्रिचतुः

पञ्चविधं वा ।।३६।। पञ्चातिचाराः ।।३७।। द्वादशानुप्रेक्षाः ।।३८।। यतिधर्मो दशविधः ।।३९।। अष्टाविंशति-र्मूलगुणाः ।।४०।। पञ्चमहाव्रतस्थौर्यार्थं भावनाः पंच-पंच ।।४१।। गुप्तित्रयं ।।४२।। अष्टौ प्रवचनमातृकाः ।।४३।। अष्टादशसहस्र-शीलानि ।।४४।। चतुरशीतिलक्ष उत्तरगुणाः ।।४५।। द्वाविंशति-परिषहाः ।।४६।। द्वादशविधं तपः ।।४७।। द्वादशविधानि प्राय-श्चित्तानि ।।४८।। आलोचनं च ।।४९।। चतुर्विधो विनयः ।।५०।। दशविधानि वैयावृत्यानि ।।५१।। पञ्चविधः स्वाध्याय ।।५२।। द्विविधोव्युत्सर्ग ।।५३।। ध्यानंचतुर्विधम् ।।५४।। आर्त्तं च ।।५५।। रौद्रमपि ।।५६।। धर्मध्यानं दशविधं ।।५७।। शुक्लध्यानं चतुर्विधम् ।।५८।। अष्टौ ऋद्धयः ।।५९।। बुद्धिरष्टादशभेदाः ।।६०।। विक्रियाऋृद्धिर्द्विविधा (क्रियाऋद्धिर्द्विविधा) ।।६१।। विक्रियैकादशविधा ।।६२।। तपः सप्तविधं ।।६३।। बलं त्रिविधं ।।६४।। भेषजमष्ट-विधम् ।।६५।। रसः षड्विधः ।।६६।। अक्षीणर्द्धि-र्द्विविधश्चेति ।।६७।। पञ्चविधाः निर्ग्रन्थाः ।।६८।। आचारश्च ।।६९।। समा-चारं दशविधं ।।७०।। सप्त परमस्थानानि ।।७१।।

।इति तृतीयोऽध्यायः।।

अथ द्रव्यानुयोगवेदः

षड्द्रव्याणि ।।१।। पञ्चास्तिकायाः ।।२।। सप्त तत्त्वानि ।।३।। नव पदार्थाः ।।४।। चतुर्विधो न्यासः ।।५।। द्विविधं प्रमाणं ।।६।। पञ्च संज्ञानानि ।।७।। त्रीण्यज्ञानानि ।।८।। मतिज्ञानं षट्-त्रिंशदुत्तरत्रिशतभेदम् ।।९।। द्विविधं श्रुतज्ञानं ।।१०।। द्वादशाङ्गानि ।।११।। चतुर्दश प्रकीर्णकानि ।।१२।। त्रिविधमवधिज्ञानं

नव नयाः ।।१६।। सप्तभङ्गा इति ।।१७।। पञ्च भावाः ।।१८।। औपशमिको द्विविधः ।।१९।। क्षायिको नवविधः ।।२०।। अष्टादशविधः क्षायोपशमिकः ।।२१।। औदयिक एकविंशतिविधः ।।२२।। पारिणामिकस्त्रिविधः ।।२३।। गुणजीवमार्गणास्थानानि प्रत्येकं चतुर्दश ।।२४।। द्विविधमेकेन्द्रियम् ।।२५।। विकलत्रयं ।।२६।। पञ्चेन्द्रियं द्विविधं ।।२७।। षट् पर्याप्तयः ।।२८।। दश प्राणाः ।।२९।। चतस्राः संज्ञाः ।।३०।। गतिश्चतुर्विधा ।।३१।। पञ्चेन्द्रियाणि ।।३२।। षड्जीवनिकायाः ।।३३।। त्रिविधो योगः ।।३४।। पञ्चदशविधो वा ।।३५।। वेदस्त्रिविधः ।।३६।। नवविधो वा ।।३७।। चत्वारः कषायाः ।।३८।। अष्टौ ज्ञानानि ।।३९।। सप्त संयमाः ।।४०।। चत्वारि दर्शनानि ।।४१।। षड्लेश्याः ।।४२।। द्विविधं भव्यत्वं ।।४३।। षड्विधा सम्यक्त्वमार्गणा ।।४४।। द्विविधं संज्ञित्वं ।।४५।। आहारोपयोगश्चेति ।।४६।। पुद्गलाकाश-कालास्रवाश्च प्रत्येकं द्विविधः ।।४७।। बन्धहेतवः पञ्चविधाः ।।४८।। बन्धश्च-तुर्विधः ।।४९।। अष्टकर्माणि ।।५०।। ज्ञानावरणीयं पञ्च-विधं ।।५१।। दर्शनावरणीयं नवविधं ।।५२।। वेदनीयं द्विविधम् ।।५३।। मोहनीयमष्टाविंशतिविधं ।।५४।। आयुश्चतुर्विधम् ।।५५।। द्विचत्वारिशद्विधं नाम ।।५६।। द्विविधं गोत्रं ।।५७।। पञ्चविध-मन्तरायं ।।५८।। पुण्यं द्विविधम् ।।५९।। पापं च ।।६०।। संवरश्च ।।६१।। एकादश्या निर्जरा ।।६२।। त्रिविधो मोक्षहेतुः ।।६३।। द्विविधो मोक्षः ।।६४।। द्वादश सिद्धस्यानुयोगद्वाराणि ।।६५।। अष्टौ सिद्धगुणाः ।।६६।।

।इति चतुर्थोऽध्यायः।।

।। इति शास्त्रसारसमुच्चय सूत्राणि समाप्तानि ।।

दशविधधर्मध्यान स्वरूपम्

अपाय विचय चिंतन परिणाम परिणति स्वरूपोऽहम्।।१।। अपाय विचय चिंतन परिणाम परिणति स्वरूपोऽहम्।।२।। जीव विचय चिंतन परिणाम परिणति स्वरूपोऽहम्।।३।। अजीव विचय चिंतन परिणाम परिणति स्वरूपोऽहम्।।४।। विपाक विचय चिंतन परिणाम परिणति स्वरूपोऽहम्।।५।। विराग विचय चिंतन परिणाम परिणति स्वरूपोऽहम्।।६।। भय विचय चिंतन परिणाम परिणति स्वरूपोऽहम्।।७।। संस्थान विचय चिंतन परिणाम परिणति स्वरूपोऽहम्।।८।। आज्ञा विचय चिंतन परिणाम परिणति स्वरूपोऽहम्।।९।। करण विचय चिंतन परिणाम परिणति स्वरूपोऽहम्।।१०।। सोऽहं, शुद्धोऽहं, बुद्धोऽहम्।।

आर्तध्यान त्याग भावना

ॐ नमः, सोऽहं, निरंजनोऽहम्।।१।। इष्ट वियोगज-आर्तध्यान रहितोऽहम्।।२।। अनिष्ट संयोगज-आर्तध्यान रहितोऽहम्।।३।। पीड़ा-चिंतन निदान-बन्द-रहितोऽहम्।।४।। निदान बन्दज-आर्तध्यान रहितोऽहम्।।५।। वीतराग परिणाम परिणति सहितोऽहम्।।६।। सोऽहं, नित्योऽहं, सत्योऽहं, निरंजनोऽहम्।।७।।

रौद्रध्यान त्याग भावना

हिंसानन्द रौद्रध्यान रहितोऽहम्।।१।। मृशानन्द रौद्रध्यान रहितोऽहम्।।२।। चौर्यानन्द रौद्रध्यान रहितोऽहम्।।३।। परिग्रहानन्द रौद्रध्यान रहितोऽहम्।।४।।

अर्हद्गुण स्थापना धर्मध्यान-ध्यानम्

घातिचतुष्टय रहितोऽहम्।।१।। अष्टादशदोष रहितोऽहम्।।२।। पंचमहाकल्याणांकितोऽहम्।।३।। अष्टमहा प्रातिहार्य विशिष्टोऽहम्।।४।। चतुस्त्रिंशदतिशय समेतोऽहम्।।५।। शतेन्द्र वृन्द वन्द्यपादारविन्दद्वयोऽहम्।।६।। विशिष्टनन्त-चतुष्टय-स्वरूपोऽहम्।।७।। अंतरंग बहिरंग लक्ष्मी समेतोऽहम्।।८।। परमकल्याण-रसोपेतोऽहम्।। सर्वभाषात्मक दिव्यध्वनि स्वरूपोऽहम्।। कोट्यादित्य प्रभारूप परमौदारिक दिव्य शरीरोपोऽहम्।। परम मंगलोऽहम्।। परम पवित्रोऽहम्।। त्रिजगद् गुरुस्वरूपोऽहम्।। शाश्वतोऽहम्।। जगत्त्रय कालत्रयवर्तिसकल पदार्थ युगपत्परिच्छेदक केवलज्ञान स्वरूपोऽहम्।। विशदाखंडैक प्रत्यक्ष प्रतिभासमान

सकल विमल केवल दर्शन स्वरूपोऽहम्।। अतिन्द्रियातिशयानन्त सुख स्वरूपोऽहम्।। विर्यानन्तबल स्वरूपोऽहम्।। अचिन्त्यानन्तगुण स्वरूपोऽहम्।। सोऽहम्, शुद्धोऽहम्, बुद्धोऽहम्।।

सालम्बन सिद्धस्वरूप धर्मध्यानम्

ज्ञानावरणादि मूलोत्तर कर्म प्रकृति कर्म प्रकृति रहितोऽहम्।। सकल विमल केवलज्ञानादि गुणसमेतोऽहम्।। निष्क्रियटंकोत्कीर्ण ज्ञायकैक स्वरूपोऽहम्।। अमूर्तोऽहम्।। अखण्डोऽहम्।। शुद्ध चिन्मयोऽहम्।। निर्व्यग्रसहजानन्द सुखमयोऽहम्।। शुद्ध जीवघनाकारोऽहम्।। नित्योऽहम्, निरंजनोऽहम्, निर्मलोऽहम्, निष्कलंकोऽहम्।। लोकाग्रनिवासोऽहम्।। त्रिजगद्वन्दितोऽहम्।। अनन्तज्ञान स्वरूपोऽहम्।। अनन्तसुख स्वरूपोऽहम्।। अनन्तगुण स्वरूपोऽहम्।। अनन्त शक्ति स्वरूपोऽहम्।। अनन्तानन्त स्वरूपोऽहम्।। निर्वेद स्वरूपोऽहम्।। निर्मोह स्वरूपोऽहम्।। निरामयस्वरूपोऽहम्।। निरायुध स्वरूपोऽहम्।। निर्नाम स्वरूपोऽहम्।। निर्गोत्र स्वरूपोऽहम्।। निर्विघ्न स्वरूपोऽहम्।। निर्गति स्वरूपोऽहम।। निरिन्द्रिय स्वरूपोऽहम्।। निष्कषाय स्वरूपोऽहम्।। निर्योग स्वरूपोऽहम।। निजशुद्धात्मस्मरण निश्चयसिद्धोऽहम्।। परमज्योति स्वरूपोऽहम्।। निजनिरंजन स्वरूपोऽहम्।। चिन्मय स्वरूपोऽहम्।। ज्ञानानन्द स्वरूपोऽहम्।। सोऽहम्, शुद्धोऽहम्, बुद्धोऽहम।।

आचार्य परमेष्ठिगुण संकलन धर्मध्यान

निश्चय पंचाचार स्वरूपोऽहम्।। व्यवहार पंचाचाररंतर्गतोऽहम्।। परमदया परिणति स्वरूपोऽहम्।। निजनिरंजन स्वरूपोऽहम्।। पंच प्रकार संसार सागरोत्तरण कारणभूतोऽहम।। पात्ररूपोऽहम्।। चित्तस्वभावना प्रायोऽहम्।। चातुर्वण्य चक्रर्वण्य चक्रवर्त्याचार्य परमेष्ठि स्वरूपोऽहम्।। निजनित्यानन्दैकतत्त्व भावस्वरूपोऽहम्।। सकल विमल केवलज्ञान-दर्शन स्वरूपोऽहम्।। दण्डत्रय खण्डना खण्ड दूर स्वरूपोऽहम्।। चतुर्गति संसार दूर स्वरूपोऽहम्।। भूतार्थषडावश्यक स्वरूपोऽहम्।। सप्तभयविप्रमुक्त स्वरूपोऽहम्।। विशिष्टगुण-पुष्ट स्वरूपोऽहम्।। नव-केवल-लब्धि स्वरूपोऽहम्।। अष्टविधकर्ममलकलंक रहितोऽहम्।। अष्टादश दोष रहितोऽहम्।। सप्तनयव्यतिकर स्वरूपोऽहम्।। सोऽहं, शिवोऽहं, शुद्धोऽहं, बुद्धोऽहम्।।

उपाध्याय परमेष्ठिगुण स्वावलंबन धर्मध्यान

निश्चय-व्यवहार धर्म प्रतिपादकोऽहम्।। अष्टविधज्ञानाचार स्वरूपोऽहम्।। अष्टविध-दर्शनाचार स्वरूपोऽहम्।। पंचविध-वीर्याचार स्वरूपोऽहम्।।

त्रयोदशविध चारित्राचार स्वरूपोऽहम्।। क्षायिक ज्ञान स्वरूपोऽहम्।। क्षायिक दर्शन स्वरूपोऽहम्।। क्षायिक चारित्र स्वरूपोऽहम्।। क्षायिक सम्यक्त्व स्वरूपोऽहम्।। क्षायिक पंचलब्धि स्वरूपोऽहम्।। परम विशुद्ध चिद्रूप स्वरूपोऽहम्।। विशुद्ध चैतन्य स्वरूपोऽहम्।। शुद्ध चित्तकाय स्वरूपोऽहम्।। शुद्ध जीव पदार्थ स्वरूपोऽहम्।। शुद्ध जीव द्रव्य स्वरूपोऽहम्।। शुद्ध जीवास्तिकाय स्वरूपोऽहम्।। सोऽहम्, शुद्धोऽहम्, बुद्धोऽहम्, शिवोऽहम्, शंकरोऽहम्।

आचार्य परमेष्ठिगुण स्वावलंबन धर्मध्यान

अखण्ड-शुद्ध-ज्ञानैक स्वरूपोऽहम्।। स्वभाविक ज्ञान-दर्शन स्वरूपोऽहम्।। अंतरंग रत्नत्रय स्वरूपोऽहम्।। अनंतचतुष्टय स्वरूपोऽहम्।। पंचभाव स्वरूपोऽहम्।। नय-निक्षेप-प्रमाणरहित स्वरूपोऽहम्।। सप्तभय-विप्रमुक्त स्वरूपोऽहम्।। अद्वैत परमात्मसुख स्वरूपोऽहम्।। अष्टविध कर्मविनिर्मुक्त स्वरूपोऽहम्।। अविचलित शुद्ध चिदानंद स्वरूपोऽहम्।। त्रिविधकरण त्रयान्तर्गतोऽहम्।। व्यवहार रत्नत्रयान्तर्गतोऽहम्।। निश्चय रत्नत्रयान्तर्गतोऽहम्।। दण्डत्रयरहितोऽहम्।। शल्यत्रय रहितोऽहम्।। योगत्रय रहितोऽहम्।। लोकत्रयान्तर्गतोऽहम्।। कर्मत्रय रहितोऽहम्।। भावकर्मान्तर्गत परिणतोऽहम्।। क्षयोपशम लब्ध्यन्तर्गतोऽहम्।। विशुद्ध लब्ध्यन्तर्गतोऽहम्।। देशना लब्ध्यन्तर्गतोऽहम्।। प्रायोग्य-लब्ध्यन्तर्गतोऽहम्।। करणलब्ध्यन्तर्गतोऽहम्।। अधः प्रवृत्ति- करणान्तर्गतोऽहम्।। अपूर्व-करणान्तर्गतोऽहम्।। अनिवृत्ति-करणान्तर्गतोऽहम्।। सिद्धोऽहं, बुद्धोऽहम्।।

सिद्ध-स्वरूप-भावना धर्मध्यान

चतुर्गति गमन रहित सिद्ध स्वरूपोऽहम्।। पंचेन्द्रिय रहित सिद्ध स्वरूपोऽहम्।। षट्काय रहित सिद्ध स्वरूपोऽहम्।। पंचदशयोग रहित सिद्ध स्वरूपोऽहम्।। सप्तकाययोग रहित सिद्ध स्वरूपोऽहम्।। त्रिवेद रहित सिद्ध स्वरूपोऽहम्।। नवपदार्थ रहित सिद्ध स्वरूपोऽहम्।। षोडश कषाय रहित सिद्ध स्वरूपोऽहम्।। नव-नो-कषाय रहित सिद्ध स्वरूपोऽहम्।। सप्तभय नामकर्म रहित सिद्ध स्वरूपोऽहम्।। अष्टविध ज्ञानान्तर्गत स्वरूपोऽहम।। सप्तसंयमान्तर्गतोऽहम्।। चतुर्विध दर्शनान्तर्गतोऽहम्।। षड्लेश्या रहित सिद्ध स्वरूपोऽहम्।। भव्यभव्यत्व रहित सिद्ध स्वरूपोऽहम्।। षट्सम्यग्दर्शनान्तर्गतोऽहम्।। दश-सम्यक्त्वान्तर्गतोऽहम्।। संज्ञि-असंज्ञि कर्म रहितोऽहम्।। आहारकानाहारक

स देवदत्तो यथा ।।४।। दर्शनस्मरणकारणकं सङ्कलनं प्रत्यभिज्ञानं तिर्यक्-
तत्सदृशं तद्विलक्षणं तत्प्रतियोगीत्यादि ।।५।। यथा स एवायं देवदत्तः
गोसदृशो गवयः गोविलक्षणो महिष इदमस्माद्दूरं, वृक्षोऽयमित्यादि ।।६।।
उपलम्भानुपलम्भनिमित्तं व्याप्तिज्ञानमूहः ।।७।। इदमस्मिन्सत्येव
भवत्यसति न भवत्येवेति च ।।८।। साधनात्साध्यविज्ञानमनुमानम् ।।९।।
यथाग्नावे-वधूमस्तदा-भावे न भवत्येवेति च ।।१०।। साध्याविनाभावित्वेन
निश्चितो हेतुः ।।११।। सहक्रमभावनियमोऽविनाभावः ।।१२।।
सहचारिणोर्व्याप्य- व्यापकयोश्च सहभावः ।।१३।। पूर्वोत्तर-चारिणोः
कार्य्यकारणयोश्च क्रमभावः ।।१४।। तर्कात्तन्निर्णयः ।।१५।।
इष्टमबाधितमसिद्धं साध्यं ।।१६।। सन्दिग्धविप-र्य्यस्ताव्युत्पन्नानां साध्यत्वं
यथा स्यादित्यसिद्धपदम् ।।१७।। अनिष्टाध्य-क्षादिबाधितयोः साध्यत्वं
माभूदितीष्टाबाधितवचनम् ।।१८।। न चासिद्धवदिष्टं प्रतिवादिनः
।।१९।। प्रत्यायनाय हीच्छा वक्तुरेव ।।२०।। साध्यं धर्मः क्वचित्तद्विशिष्टो
वा धर्मी ।।२१।। पक्ष इति यावत् ।।२२।। प्रसिद्धो धर्मी ।।२३।।
विकल्पसिद्धे तस्मिन्सत्तेतरे साध्ये ।।२४।। अस्ति सर्वज्ञो नास्ति
खरविषाणम् ।।२५।। प्रमाणोभयसिद्धे तु साध्यधर्मविशिष्टता
साध्या ।।२६।। अग्निमानयं देशः परिणामी शब्द इति यथा ।।२७।।
व्याप्तौ तु साध्यं धर्म एव ।।२८।। अन्यथा तदघटनात् ।।२९।।
साध्यधर्म्माधारसन्देहापनोदाय गम्यमानस्यापि पक्षस्य वचनम् ।।३०।।
साध्यधर्मिणि साधनधर्मावबो- धनाय पक्षधर्मोपसंहारवत् ।।३१।। को वा
त्रिधा हेतुमुक्ता समर्थयमानो न पक्षयति ।।३२।। एतद्वयमेवानुमानाङ्ग
नोदाहरणम् ।।३३।। न हि तत्साध्यप्रतिपत्यङ्ग तत्र यथोक्त-हेतोरेव
व्यापारात् ।।३४।। तदविनाभाव-निश्चयार्थं वा विपक्षे बाधकप्रमाणबलादेव
तत्सिद्धेः ।।३५।। व्यक्तिरूपं च निदर्शनं सामान्येन तु व्याप्तिस्तत्रापि

श्रीमन्माणिक्यनन्दिविरचितानि

परीक्षामुखसूत्राणि

प्रमाणादर्थसंसिद्धिस्तदाभासाद्विपर्य्ययः।
इति वक्ष्ये तयोर्ल्लक्ष्म सिद्धमल्पं लघीयसः।।१।।

स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मकं ज्ञानं प्रमाणम्।।१।। हिताहितप्राप्ति-परिहारसमर्थं हि प्रमाणं ततो ज्ञानमेव तत्।।२।। तन्निश्चयात्मकं समारोपविरुद्धत्वादनुमानवत्।।३।।अनिश्चितोऽपूर्वार्थः।।४।।दृष्टोऽपि समारोपात्तादृक्।।५।।स्वोन्मुखतया प्रतिभासनं स्वस्य व्यवसायः।।६।। अर्थस्येव तदुन्मुखतया।।७।।घटमहमात्मना वेद्मि।।८।।कर्मवत्कर्तृ-करणक्रियाप्रतीतेः।।९।। शब्दानुच्चारणेऽपि स्वस्यानुभवनमर्थवत्।।१०।। को वा तत्प्रतिभासिन-मर्थमध्यक्षमिच्छंस्तदेव तथा नेच्छेत्।।११।।प्रदीपवत्।।12।।तत्प्रामाण्यं स्वतः परतश्च।।१३।।

इति प्रमाणस्य स्वरूपोद्देशः प्रथमः।।

तद्द्वेधा।।१।। प्रत्यक्षेतरभेदात्।।२।। विशदं प्रत्यक्षम्।।३।। प्रतीत्यन्तराव्यवधानेन विशेषवत्तया वा प्रतिभासनं वैशद्यम्।।४।। इन्द्रियानिन्द्रयनिमित्तं देशतः सांव्यवहारिकम्।।५।।नार्था-लोकौ कारणं परिच्छेद्यत्वात्तमोवत्।।६।। तदन्वयव्यतिरेकानु-विधानाभावाच्च केशोण्डुकज्ञानवन्नक्तंचरज्ञानवच्च।।७।। अतज्जन्यमपि तत्प्रकाशकं प्रदीपवत्।।८।।स्वावरणक्षयोपशम-लक्षण योग्यतया हि प्रतिनियतमर्थं व्यवस्थापयति।।९।। कारणस्य च परिच्छेद्यत्वे करणादिना व्यभिचारः।।१०।।सामग्रीविशेष-विश्लेषिताखिलावरणमतीन्द्रियमशेषतो मुख्यम्।।११।।सावरणत्वे करणजन्यत्वे च प्रतिबन्धसम्भवात्।।१२।।

इति प्रत्येक्षोद्देशः द्वितीय।।

परोक्षमितरत्।।१।। प्रत्यक्षादिनिमित्तं स्मृतिप्रत्यभिज्ञान-तर्कानु-

मानागमभेदं । ।२ । । संस्कारोद्बोधनिबन्धना तदित्याकारा स्मृतिः । ।३ । । स देवदत्तो यथा । ।४ । । दर्शनस्मरणकारणकं सङ्कलनं प्रत्यभिज्ञानं तदेवेदं तत्सदृशं तद्विलक्षणं तत्प्रतियोगीत्यादि । ।५ । । यथा स एवायं देवदत्तः गोसदृशो गवयः गोविलक्षणो महिष इदमस्माद्दूरं, वृक्षोऽयमित्यादि । ।६ । । उपलम्भानुपलम्भनिमित्तं व्याप्तिज्ञानमूहः । ।७ । । इदमस्मिन्सत्येव भवत्यसति न भवत्येवेति च । ।८ । । साधनात्साध्यविज्ञानमनुमानम् । ।९ । । यथाग्नावे-वधूमस्तदा-भावे न भवत्येवेति च । ।१० । । साध्याविनाभावित्वेन निश्चितो हेतुः । ।११ । । सहक्रमभावनियमोऽविनाभावः । ।१२ । । सहचारिणोर्व्याप्य- व्यापकयोश्च सहभावः । ।१३ । । पूर्वोत्तर-चारिणोः कार्य्यकारणयोश्च क्रमभावः । ।१४ । । तर्कात्तन्निर्णयः । ।१५ । । इष्टमबाधितमसिद्धं साध्यं । ।१६ । । सन्दिग्धविप–र्य्यस्ताव्युत्पन्नानां साध्यत्वं यथा स्यादित्यसिद्धपदम् । ।१७ । । अनिष्टाध्य-क्षादिबाधितयोः साध्यत्वं माभूदितीष्टाबाधितवचनम् । ।१८ । । न चासिद्धवदिष्टं प्रतिवादिनः । ।१९ । । प्रत्यायनाय हीच्छा वक्तुरेव । ।२० । । साध्यं धर्मः क्वचित्तद्विशिष्टो वा धर्मी । ।२१ । । पक्ष इति यावत् । ।२२ । । प्रसिद्धो धर्मी । ।२३ । । विकल्पसिद्धे तस्मिन्सत्तेतरे साध्ये । ।२४ । । अस्ति सर्वज्ञो नास्ति खरविषाणम् । ।२५ । । प्रमाणोभयसिद्धे तु साध्यधर्मविशिष्टता साध्या । ।२६ । । अग्निमानयं देशः परिणामी शब्द इति यथा । ।२७ । । व्याप्तौ तु साध्यं धर्म एव । ।२८ । । अन्यथा तदघटनात् । ।२९ । । साध्यधर्म्माधारसन्देहापनोदाय गम्यमानस्यापि पक्षस्य वचनम् । ।३० । । साध्यधर्मिणि साधनधर्मावबो- धनाय पक्षधर्मोपसंहारवत् । ।३१ । । को वा त्रिधा हेतुमुक्ता समर्थयमानो न पक्षयति । ।३२ । । एतद्वयमेवानुमानाङ्ग नोदाहरणम् । ।३३ । । न हि तत्साध्यप्रतिपत्यङ्ग तत्र यथोक्त-हेतोरेव व्यापारात् । ।३४ । । तदविनाभाव-निश्चयार्थं वा विपक्षे बाधकप्रमाणबलादेव तत्सिद्धेः । ।३५ । । व्यक्तिरूपं च निदर्शनं सामान्येन तु व्याप्तिस्तत्रापि

तद्विप्रतिपत्तावनवस्थानं स्याद् दृष्टान्तान्त-रापेक्षणात्। ।३६।। नापि व्याप्तिस्मरणार्थं तथाविधहेतुप्रयोगादेव तत्स्मृते। ।३७।। तत्परमभिधीयमानं साध्यधर्मिणि साध्यसाधने सन्दे-हयति। ।३८।। कुतोन्यथोपनयनिगमने ।।३९।। न च ते तदङ्गे, साध्य-धर्मिणि हेतुसाध्ययोर्वचनादेवासंशयात् ।।४०।। समर्थनं वा वरं हेतुरूपमनुमानावयवो वाऽस्तु साध्ये तदुपयोगात। ।४१।। बाल-व्युत्पत्त्यर्थं तत्रयोपगमे शास्त्र एवासौ न वादेऽनुपयोगात्। ।४२।। दृष्टान्तो द्वेधाऽन्वयतिरेकभेदात्। ।४३।। साध्यव्याप्तं साधनं यत्र प्रदर्श्यते सोऽन्वयदृष्टान्तः। ।४४।। साध्याभावे साधनाभावो यत्र कथ्यते स व्यतिरेकदृष्टान्तः। ।४५।। हेतोरुपसंहार उपनयः। ।४६।। प्रतिज्ञायास्तु निगमनं। ।४७।। तदनुमानं द्वेधा। ।४८।। स्वार्थपरार्थभेदात्। ।४९।। स्वार्थमुक्तलक्षणम्। ।५०।। परार्थं तु तदर्थपरामर्शिवचनाज्जातम्। ।५१।। तद्वचनमपि तद्धेतुत्वात्। ।५२।। सहेतुर्द्वेधोपलब्ध्यनुपलब्धिभेदात्। ।५३।। उपलब्धिर्विधिप्रतिषेधयोर-नुपलब्धिश्च। ।५४।। अविरुद्धोपलब्धि-र्विधौ षोढा व्याप्यकार्यकारण-पूर्वोत्तरसहचरभेदात्। ।५५।। रसादेक-सामग्र्यनुमानेन रूपानुमान-मिच्छद्भिरिष्टमेव किञ्चित्कारणं हेतुर्यत्र सामर्थ्याप्रतिबन्ध-कारणन्तरावैकल्ये। ।५६।। न च पूर्वोत्तरचारिणो-स्तादात्म्यं तदुत्पत्तिर्वा कालव्यवधाने तदनुपलब्धेः। ।५७।। भाव्यतीतयोर्मरण-जाग्रद्बोधयोरपि नारिष्टोद्बोधौ प्रति हेतुत्वम्। ।५८।। तद्व्यापाराश्रितं हि तद्भावभावित्वम्। ।५९।। सहचारिणोरपि परस्परपरिहारेणाव- स्थानात्सहोत्पादाच्च। ।६०।। परिणामी शब्द कृतकत्वाद्य एवं स एवं दृष्टो यथा घटः, कृतकश्चायं, तस्मात्परिणामीति, यस्तु न परिणामी स न कृतको दृष्टो यथा वन्ध्यास्तनन्धयः, कृतकश्चायं, तस्मात्परिणामी। ।६१।। अस्त्यत्र देहिनि बुद्धिर्व्यवहारादेः। ।६२।। अस्त्यत्रच्छाया छत्रात्। ।६३।। उदेष्यति शकटं कृत्तिकोदयात्। ।६४।।

उद्गाद्धरणिः प्राक् तत एव।।६५।। अस्त्यत्र मातुलिङ्गे रूपं रसात्।।६६।। विरुद्धतदुपलब्धिः प्रतिषेधे तथा।।६७।। नास्त्यत्र शीतस्पर्श औष्ण्यात्।।६८।। नास्त्यत्र शीतस्पर्शो धूमात्।।६९।। नास्मिन् शरीरिणि सुखमस्ति हृदयशल्यात्।।७०।। नोदेष्यति मूहूर्त्तान्ते शकटं रेवत्युदयात्।।७१।। नोदगाद्धरणि मूहूर्तात्पूर्वं पुष्योदयात्।।७२।। नास्त्यत्र भित्तौ परभागाभावोऽर्वाग्भागदर्शनात्।।७३।। अविरुद्धानुपलब्धिः प्रतिषेधे सप्तधा स्वभावव्यापककार्यकारण-पूर्वोत्तरसहचरानुपलम्भभेदात्।।७४।। नास्त्यत्र भूतले घटोऽनुप-लब्धेः।।७५।। नास्त्यत्र शिंशपा वृक्षानुपलब्धेः।।७६।। नास्त्यत्रा- प्रतिबद्धसामर्थ्योऽग्निर्धूमानुपलब्धेः।।७७।। नास्त्यत्र धूमोऽनग्नेः।।७८।। न भविष्यति मूहूर्तान्ते शकटं कृत्तिकोदयानुपलब्धेः नोद्गाद्धरणिर्मुहूर्ता-त्प्राक्तत एव।।७९।। नास्त्यत्र समतुमायामुन्नामो नामानुपलब्धेः।।८०।। विरुद्धानुपलब्धिर्विधौ त्रेधा विरुद्ध-कार्यकारणस्वभावनुपलब्धि भेदात्।।८१।। यथास्मिन्प्राणिनि व्याधि विशेषोऽस्ति निरामयचेष्टानुपलब्धेः।।८२।। अस्त्यत्रदेहिनि दुःखमिष्टसंयोगा-भावात्।।८३।। अनेकान्तात्मकं वस्त्वेकान्तस्व-रूपानुपलब्धेः।।८४।। परम्परया संभवत्साधनमत्रैवान्तर्भावनीयम्।।८५।। अभूदत्र चक्रे शिवकः स्थासात्।।८६।। कार्यकार्यमवि-रुद्धकार्योपलब्धौ।।८७।। नास्त्यत्र गृहायां मृगक्रीडनं मृगरिसं-शब्दनात्, कारणविरुद्धकार्यं विरुद्धकार्योपलब्धौ यथा।।८८।। युत्पन्नप्रयो गस्तु तथोपपत्त्याऽन्यथानुपपत्त्यैव वा।।८९।। अग्गिमानयं देशस्तथैव धूमवत्वोपपत्तेर्धू मवत्वान्यथानुपपत्तेर्वा।।९०।। हेतुप्रयोगे हि यथा व्याप्तिग्रहणं विधीयते सा च तावन्मात्रेण व्युत्पन्नैरवधा-र्यते।।९१।। तावता च साध्यसिद्धिः।।९२।। तेन पक्षस्तदाधार-सूचनायोक्तः।।९३।। आप्तवचनादि निबन्धनमर्थज्ञानमागमः।।९४।। सहजयोग्यता-सङ्केतवशाद्धि शब्दादयो वस्तुप्रतिपत्तिहेतवः।।९५।। यथा मेर्वादयः

सन्ति।।६६।।

इति परोक्षप्रपञ्चस्तृतीयः समुदेश।।

सामान्यविशेषात्मा तदर्थो विषयः।।१।।अनुवृत्तव्यावृत्तप्रत्ययगोचरत्वात्पूर्वोत्तराकारपरिहारावाप्तिस्थितिलक्षण-परि-णामेनार्थक्रियोपपत्तेश्च।।२।। सामान्यं द्वेधा तिर्यगूर्ध्वता-भेदात्।।३।। सदृशपरिणामस्तिर्यक् खण्डमुण्डादिषु गोत्ववत्।।४।। परापरविवर्त्तव्यापिद्रव्यमूर्ध्वता मृदिवस्थासादिषु।।५।। विशेषश्च।।६।। पर्यायव्यतिरेकभेदात्।।७।।एकस्मिन्द्रव्ये क्रम-भाविनः परिणामाः पर्याया आत्मनि हर्षविषादा-दिवत्।।८।।अर्थान्तरगतो विसदृशपरिणामो व्यतिरेको गोमहिषा- दिवत्।।९।।

इति प्रमाणस्य विषयसमुद्देशश्चतुर्थः।।

अज्ञाननिवृत्तिर्हानोपादानोपेक्षाश्च फलम्।।१।।प्रमाणाद-भिन्नं भिन्नं च।।२।। यः प्रमिमीते स एव निवृत्ताज्ञानो जहा-त्यादत्त उपेक्षते चेति प्रतीतेः।।३।।

इति प्रमाणस्य फलसमुद्देशः।।

ततोऽन्यत्तदाभासम्।।१।।अस्वसंविदित-गृहीतार्थ-दर्शन-संशयादयः प्रमाणाभासाः।।२।। स्वविषयोपदर्शकत्वाभावात्।।३।। पुरुषान्तरपूर्वार्थगच्छत्तृणस्पर्शस्थाणुपुरुषादिज्ञानवत्।।४।। चक्षूरसयोर्द्रव्ये संयुक्तसमवायवच्च।।५।।अवैशद्ये प्रत्यक्षं तदाभासं बौद्धस्याकस्माद् धूमदर्शनाद् बह्निविज्ञानवत्।।६।। वैशद्येऽपि परोक्षं तदाभासं मीमांसकस्य करणज्ञानवत्।।७।। अतस्मिंस्तदिति ज्ञानं स्मरणाभासं जिनदत्ते स देवदत्तो यथा।।८।। सदृशे तदेवेदं तस्मिन्नेव तेन सदृशं यमलकवदित्यादि प्रत्यभि-ज्ञानाभासम्।।९।।असंबद्धे तज्ज्ञानं तर्काभासं यावांस्तत्पुत्रः स श्याम इति यथा।।१०।। इदमनुमानाभासम्।।११।। तत्रानिष्टादिः

पक्षाभासः ।।१२।। अनिष्टो मीमांसकस्यानित्यः शब्दः ।।१३।। सिद्धः श्रावणः शब्दः ।।१४।। बाधितः प्रत्यक्षानुमानागमलोक- स्ववचनैः ।।१५।। तत्र प्रत्यक्षबाधितो यथाऽनुष्णोऽग्निद्रव्यत्वा-ज्जलवत् ।।१६।। अपरिणामी शब्दः कृतकत्वात् घटवत् ।।१७।। प्रेत्यासुखप्रदो धर्मः पुरुषाश्रि-तत्वादधर्मवत् ।।१८।। शुचि नर-शिरः कपालं प्राण्यङ्गत्वाच्छङ्ख-शुक्तिवत् ।।१९।। माता मे वन्ध्या पुरुषसंयोगेप्यगर्भत्वात् ।।२०।। हेत्वाभासा असिद्ध-विरुद्धानैकान्तिकाकिञ्चत्कराः ।।२१।। असत्सत्तानिश्च-योऽसिद्धः ।।२२।। अविद्यमानसत्ताकः परिणामी शब्द-श्चाक्षुषत्वात् ।।२३।। स्वरूपेणैवासिद्धत्वात् ।।२४।। अविद्य-माननिश्चयो मुग्ध बुद्धिं प्रत्यग्निरत्र धूमात् ।।२५।। तस्य वाष्पा-दिभावेन भूतसंघाते सदेहात् ।।२६।। सांख्यं प्रति परिणामी शब्दः कृतकत्वात् ।।२७।। तेनाज्ञातत्वात् ।।२८।। विपरीत-निश्चितविनाभावो विरुद्धोऽपरिणामी शब्दः कृतकत्वात् ।।२९।। विपक्षेऽप्यविरुद्धवृत्तिरनैकान्तिकाः ।।३०।। निश्चित-वृत्तिरनित्यः शब्दः प्रमेयत्वाद् घटवत् ।।३१।। आकाशे नित्येऽप्यस्य निश्चयात् ।।३२।। शङ्कितवृत्तिस्तु नास्ति सर्वज्ञो वक्तृवात् ।।३३।। सर्वज्ञत्वेन वक्तृत्वाऽविरोधात् ।।३४।। सिद्धे प्रत्यक्षादि बाधिते च साध्ये हेतुरकिञ्चित्करः ।।३५।। सिद्धः श्रावणः शब्द शब्दत्वात् ।।३६।। किञ्चिदकरणात् ।।३७।। यथाऽनु-ष्णोऽग्निर्द्रव्यत्वादित्यादौ किञ्चत्कर्तुमश- क्यत्वात् ।।३८।। लक्षण एवासौ दोषो व्युत्पन्नप्रयोगस्य पक्षादोषेणैव दुष्टत्वात् ।।३९।। दृष्टान्ताभासा अन्वयेऽसिद्धसाध्यसाधनोभयाः ।।४०।। अपौरुषेयः शब्दोऽमूर्तत्वादिन्द्रियसुखपरमाणुघटवत् ।।४१।। विरीतान्व-यश्च यद्पौरुषेयं तदमूर्त्तम् ।।४२।। विद्युदादिनाऽतिप्रसङ्गात् ।।४३।। व्यतिरेकेऽसिद्धतद्व्यतिरेकाः परमाण्विन्द्रियसुखाकाशवत् ।।४४।। विपरीत व्यतिरेकश्च यत्रामूर्त्तं तत्रापौरुषेयम् ।।४५।। बालप्रयोगाभासः

पञ्चावयवेषु कियद्धीनता।।४६।। अग्निमानयं प्रदेशो धूपवत्त्वात् यदित्थं तदित्थं यथा महानसः।।४७।। धूम-वांश्चायम्।।४८।। तस्मादग्निमान् धूम-वांश्चायम्।।४९।। स्पष्टतया प्रकृतप्रतिपत्तेरयोगात् ।।५०।। रागद्वेषमोहा-क्रान्त-पुरुषवचनाज्जातमागमाभासम्।।५१।। यथा नद्यास्तीरे मोदक- राशयः सन्ति धावध्वं माणवाः।।५२।। अङ्गुल्यग्रेहस्तियूथ-सतमास्ते इति च।।५३।। विसंवादात्।।५४।। प्रत्यक्षमेवैकं प्रमाण-मित्यादिसंख्या-भासम्।।५५।। लौकायतिकस्य प्रत्यक्षः परलोका-दिनिषेधस्य परबुद्ध्या-देश्चासिद्धरेतद्विषयत्वात्।।५६।। सौगत-सांख्ययौगप्राभाकरजैमिनीयानां प्रत्यक्षानुमानागमोपमानार्था-पत्त्यभावैरेकैकाधिकैर्व्याप्तिवत्।।५७।। अनुमानादेस्तद्विषयत्वे प्रमाणान्तरत्वम्।।५८।। तर्कस्येव व्याप्तिगोचरत्वे प्रमाणान्तर-त्वमप्रमाणस्याव्यवस्थापकत्वात्।।५९।। प्रतिभासभेदस्य च भेद-कत्वात्।।६०।। विषयाभासः सामान्यं विशेषो द्वयं वा स्वतंत्रम्।।६१।। तथा प्रतिभासनात्कार्याकरणाच्च।।६२।। समर्थस्य करणे सर्वदोत्पत्तिरनपेक्षत्वात्।।६३।। परापेक्षणे परिणामित्व-मन्यथा तदभावात्।।६४।। स्वयमसमर्थस्याकारकत्वात्पूर्ववत्।।६५।। फलाभासं प्रमाणादभिन्नं भिन्नमेव वा।।६६।। अभेदे तद्व्यवहारानुपपत्तेः।।६७।। व्यावृत्याऽपि न तत्कल्पना फलान्त-राद्व्यावृत्याऽफलत्वप्रसंगात्।।६८।। प्रमाणान्तराद्व्यावृत्त्येवा प्रमाणत्वस्य।।६९।। तस्माद्वास्तवो भेदः।।७०।। भेदे त्वात्मान्तर-वत्तदनुपपत्तेः।।७१।। समवायेऽतिप्रसङ्गः।।७२।। प्रमाणतदा-भासौ दुष्टतयोद्भावितौ परिहृतापरिहृतदोषौ वादिनः साधन-तदाभासौ प्रतिवादिनो दूषणभूषणे च।।७३।। सम्भवदन्यद्वि चारणीयम्।।७४।।

परीक्षामुखमादर्शं हेयोपादेयतत्त्वयोः।
संविदे मादृशो बालः परीक्षादक्षवद्व्यधाम्।।

इति प्रमाणास्याभासोद्दशः षष्ठ।।

इति परीक्षामुखसूत्राणि समाप्तानि

अथ बृहद्द्रव्य संग्रह

जीवमजीवं दव्वं, जिणवरवसहेण जेण णिद्दिट्ठं।
देविंद-विंद-वंदं वंदे, तं सव्वदा सिरसा।।१।।

जीवो उवओगमओ, अमुत्ति कत्ता सदेहपरिमाणो।
भोत्ता संसारत्थो, सिद्धो सो विस्सोड्ढगई।।२।।

तिक्काले चदुपाणा, इंदियबलमाउआणपाणो य।
ववहारा सो जीवो, णिच्चयणयदो दु चेदणा जस्स।।३।।

उवओगो दुवियप्पो, दंसणणाणं च दंसणं चदुधा।
चक्खु अचक्खू ओही, दंसणमध केवलं णेयं।।४।।

णाणं अट्ठवियप्पं, मदिसुदिओही अणाणणाणाणि।
मणपज्जयकेवलमवि, पच्चक्खपरोक्खभेयं च।।५।।

अट्ठ चदु णाण दंसण, सामण्णं जीवलक्खणं भणियं।
ववहारा सुद्धणया, सुद्धं पुण दंसणं णाणं।।६।।

वण्ण रस पंच गंधा, दो फासा अट्ठ णिच्छया जीवे।
णो संति अमुत्ति तदो, ववहारा मुत्ति बंधादो।।७।।

पोग्गलकम्मादीणं, कत्ता ववहारदो दु णिच्छयदो।
चेदणकम्माणादा, सुद्धणया सुद्धभावाणं।।८।।

ववहारा सुहदुक्खं, पुग्गलकम्मप्फलं पभुंजेदि।
आदा णिच्छयणयदो, चेदणभावं खु आदस्स।।९।।

अणुगुरुदेहपमाणो, उवसंहारप्पसप्पदो चेदा।
असमुहदो ववहारा, णिच्छयणयदो असंखदेसो वा।।१०।।

पुढविजलतेयवाउ, वणप्फदी विविहथावरेइंदी।
विगतिगचदुपंचक्खा, तसजीवा होंति संखादी।।११।।

समणा अमणा णेया, पर्चेंदिय णिम्मणा परे सव्वे।
बादरसुहुमेइंदी, सव्वे पज्जत्त इदरा य।।१२।।

मग्गणगुणठाणेहि य, चउदसहि हवंति तह असुद्धणया।
विण्णेया संसारी, सव्वे सुद्धा हु सुद्धणया।।१३।।

णिक्कम्मा अट्ठगुणा, किंचूणा चरमदेहदो सिद्धा।।
लोयग्गठिदा णिच्चा, उप्पादवयेहिं संजुत्ता।।१४।।

अज्जीवो पुण णेओ, पुग्गलधम्मो अधम्म आयासं।
कालो पुग्गल मुत्तो, रूवादिगुणो अमुत्ति सेसा हु।।१५।।

सद्दो बंधो सुहुमो, थूलो संठाणभेदतमछाया।
उज्जोदादवसहिया, पुग्गलदव्वस्स पज्जाया।।१६।।

गइपरिणयाण धम्मो, पुग्गलजीवाण गमणसहयारी।
तोयं जह मच्छाणं, अच्छंता णेव सो णेई।।१७।।

ठाणजुदाण अधम्मो, पुग्गलजीवाण ठाणसहयारी।
छाया जह पहियाणं, गच्छंता णेव सो धरई।।१८।।

अवगासदाणजोग्गं, जीवादीणं वियाण आयासं।
जेण्हं लोगागासं, अल्लोगागासमिदि दुविहं।।१९।।

धम्माऽधम्मा कालो, पुग्गलजीवा य संति जावदिये।
आयासे सो लोगो, तत्तो परदो अलोगुत्तो।।२०।।

दव्वपरिवट्टरूवो, जो सो कालो हवेइ ववहारो।
परिणामादिलक्खो, वट्टणलक्खो य परमट्ठो।।२१।।

लोयायासपदेसे, इक्केक्के जे ठिया हु इक्केक्का।
रयणाणं रासी मिव, ते कालाणू असंखदव्वाणि।।२२।।

एवं छब्भेयमिदं, जीवाजीवप्पभेददो दव्वं।
उत्तं कालविजुत्तं, णायव्वा पंच अत्थिकाया दु।।२३।।

संति जदो तेणेदे, अत्थीत्ति भणंति जिणवरा जम्हा।
काया इव बहुदेसा, तम्हा काया य अत्थिकाया य।।२४।।

होंति असंखा जीवे, धम्माधम्मे अणंत आयासे।
मुत्ते तिविह पदेसा, कालस्सेगो ण तेण सो काओ।।२५।।

एयपदेसो वि अणू, णाणाखंधप्पदेसदो होदि।
बहुदेसो उवयारा, तेण य काओ भणंति सव्वण्हु।।२६।।

जावदियं आयासं, अविभागीपुग्गलाणुउट्टद्धं।
तं खु पदेसं जाणे, सव्वाणुट्ठाणदाणरिहं।।२७।।

आसव बंधण संवर, णिज्जर मोक्खा सपुण्णपावा जे।
जीवाजीवविसेसा, ते वि समासेण पभणामो।।२८।।

आसवदि जेण कम्मं, परिणामेणप्पणो स विण्णेओ।
भावासवो जिणुत्तो, कम्मासवणं परो होदि।।२९।।

मिच्छत्ताविरदिपमाद, जोगकोहादओऽथ विण्णेया।
पण पण पणदस तिय चदु, कमसो भेदा दु पुव्वस्स।।३०।।

णाणावरणादीणं, जोग्गं जं पोग्गलं समासवदि।
दव्वासवो स णेओ, अणेयभेओ जिणक्खादो।।३१।।

बज्झदि कम्मं जेण दु, चेदणभावेण भावबंधो सो।
कम्मादपदेसाणं, अण्णोण्णपवेसणं इदरो।।३२।।

पयडिट्ठिदिअणुभाग, प्पदेसभेदादु चदुविधो बंधो।
जोगा पयडिपदेसा, ठिदिअणुभागा कसायदो होंति।।३३।।

चेदणपरिणामो जो, कम्मस्सासवणिरोहणे हेऊ।
सो भावसंवरो खलु, दव्वासवरोहणे अण्णो।।३४।।

वदसमिदीगुत्तीओ, धम्माणुपिहा परीसहजओ य।
चारित्तं बहुभेयं, णायव्वा भावसंवरविसेसा।।३५।।

जह कालेण तवेण य, भुत्तरसं कम्मपुग्गलं जेण।
भावेण सडदि णेया, तस्सडणं चेदि णिज्जरा दुविहा।।३६।।

सव्वस्स कम्मणो, जो खयहेदू अप्पणो हु परिणामो।
णेयो स भावमोक्खो, दव्वविमोक्खो य कम्मपुधभावो।।३७।।

सुहअसुहभावजुत्ता, पुण्णं पावं हवंति खलु जीवा।
सादं सुहाउ णामं, गोदं पुण्णं पराणि पावं च।।३८।।

सम्मद्दंसणणाणं, चरणं मुक्खस्स कारणं जाणे।
ववहारा णिच्छयदो, तत्तियमइओ णिओ अप्पा।।३६।।

रयणत्तयं ण वट्टइ, अप्पाणं मुयत्तु अण्णदवियम्हि।
तम्हा तत्तियमइयो, होदि हु मोक्खस्स कारणं आदा।।४०।।

जीवादीसद्दहणं, सम्मत्तं रूवमप्पणो तं तु।
दुरभिणिवेसविमुक्कं, णाणं सम्मं खु होदि सदि जम्हि।।४१।।

संसयविमोहविब्भम, विवज्जियं अप्पपरसरूवस्स।
गहणं सम्मंणाणं, सायारमणेयभेयं च।।४२।।

जं सामण्णं गहणं, भावाणं णेव कट्टुमायारं।
अविसेसिदूण अट्ठे, दंसणमिदि भण्णए समए।।४३।।

दंसणपुव्वं णाणं, छदुमत्थाणं ण दुण्णि उवओगा।।
जुगवं जम्हा केवलि, णाहे जुगवं तु ते दोवि।।४४।।

असुहादो विणिवित्ती, सुहे पवित्ती य जाण चारित्तं।
वदसमिदिगुत्तिरूवो, ववहारणया दु जिणभणियं।।४५।।

बहिरब्भंतर किरिया, रोहो भवकारणप्पणासट्ठं।।
णाणिस्स जं जिणुत्तं, तं परमं सम्मचारित्तं।।४६।।

दुविहं पि मुक्खहेउं, ज्झाणे पाउणदि जं मुणी णियमा।
तम्हा पयत्तचित्ता, जूयं ज्झाणं समब्भसह।।४७।।

मा मुज्झह मा रज्जह, मा दूसह इट्ठणिट्ठअत्थेसु।
थिरमिच्छह जइ चित्तं, विचित्तझाणप्पसिद्धीए।।४८।।

पणतीससलोछप्पण, चदुदुगमेगं च जबह ज्झाएह।
परमेट्ठिवाचयाणं, अण्णं च गुरुवएसेण।।४६।।

णट्ठचदुघाइकम्मो, दंसणसुहणाणवीरियमईओ।
सुहदेहत्थो अप्पा, सुद्धो अरिहो विचिंतिज्जो।।५०।।

णट्ठट्ठकम्मदेहो, लोयालोयस्स जाणओ दट्ठा।
पुरिसायारो अप्पा, सिद्धो झाएह लोहसिहरत्थो।।५१।।

दंसणणाणपहाणे, वीरियचारित्तवरतवायारे।
अप्पं परं च जुंजइ, सो आयरिओ मुणी णेओ।।५२।।

जो रयणत्तयजुत्तो, णिच्चं धम्मोपदेसणे णिरदो।
सो उवज्झाओ अप्पा, जदिवरवसहो णमो तस्स।।५३।।

दंसणणाणसमग्गं, मग्गं मोक्खस्स जो हु चारित्तं।
साधयति णिच्चसुद्धं, साहू स मुणी णमो तस्स।।५४।।

जं किंचिवि चिंतंतो, णिरीहवित्ती हवे जदा साहू।
लद्धूणय एयत्तं, तदाहु तं तस्स णिच्छयं ज्झाणं।।५५।।

मा चिट्ठह मा जंपह, मा चिन्तह किंचि जेण होइ थिरो।
अप्पा अप्पम्मि रओ, इणमेव परं हवे ज्झाणं।।५६।।

तवसुदवदवं चेदा, ज्झाणरहधुरंधरो हवे जम्हा।
तम्हा तत्तियणिरदा, तल्लद्धीए सदा होइ।।५७।।

दव्वसङ्गहमिणं मुणिणाहा, दोससंचयचुदा सुदपुण्णा।
सोधयंतु तणुसुत्तधरेण, णेमिचन्दमुणिणा भणियं जं।।५८।।

इष्टोपदेशः

यस्य स्वयं स्वभावाप्ति, रभावे कृत्स्नकर्मणः।
तस्मै संज्ञानरूपाय, नमोऽस्तु परमात्मने।।१।।

योग्योपादानयोगेन, दृषदः स्वर्णता मता (यथा)।
द्रव्यादिस्वादिसंपत्ता, वात्मनोऽप्यात्मता मता।।२।।

वरं व्रतैः पदं दैवं, नाऽव्रतैर्वत नारकम्।
छायाऽऽतपस्थयोर्भेदः, प्रतिपालयतोर्महान्।।३।।

यत्र भावः शिवं दत्ते, द्यौः कियद्दूरवर्तिनी।
यो नयत्याशु गव्यूति, क्रोशार्धे किं स सीदति।।४।।

हृषीकजमनातंकं, दीर्घकालोपलालितम्।
नाके नाकौकसां सौख्यं, नाके नाकौकसामिव।।५।।

वासनामात्रमेवैतत्, सुखं दुःखं च देहिनां।
तथा ह्युद्वेजयंत्येते, भोगा रोगा इवाऽऽपदि।।६।।

मोहेन संवृतं ज्ञानं, स्वभावं लभते न हि।
मत्तः पुमान्पादार्थानां, यथा मदनकोद्रवैः।।७।।

वपुर्गृहं धनं दाराः, पुत्रा मित्राणि शत्रवः।
सर्वथान्यस्वभावानि, मूढः स्वानि प्रपद्यते।।८।।

विराधकः कथं हंत्रे, जनाय परिकुप्यति।
त्र्यंगुलं पातयन्पद्भ्यां, स्वयं दंडेन पात्यते।।१०।।

राग-द्वेष-द्वयी-दीर्घनेत्राऽऽकर्षण-कर्मणा।
अज्ञानात्सुचिरं जीवः, संसाराब्धौ भ्रमत्यसौ।।११।।

विपद्भवपदाऽऽवर्ते, पादिके वातिवाह्यते।
यावत्तावद्भवंत्यन्याः, प्रचुरा विपदः पुरः।।१२।।

दुरर्ज्येनाऽसुरक्षेण, नश्वरेण धनादिना।
स्वस्थंमन्यो जनः कोऽपि, ज्वरवानिव सर्पिषा।।१३।।

विपत्तिमात्मनो मूढ़ः, परेषामिव नेक्षते।
दह्यमान-मृगाऽऽकीर्ण, वनांतर-तरुस्थवत्।।१४।।

आयुर्वृद्धिक्षयोत्कर्ष, हेतुं कालस्य निर्गम।
वांछतां धनिनामिष्टं, जीवितात्सुतरां धनम्।।१५।।

त्यागाय श्रेयसे वित्त-मवित्तः संचिनोति यः।
स्वशरीरं स पंकेन, स्नास्यामीति विलम्पति।।१६।।

आरंभे तापकान्प्राप्ता, वतृप्तिप्रतिपादकान्।
अंते सुदुस्त्यजानकामान्, कामं कः सेवते सुधीः।।१७।।

भवंति प्राप्य यत्संग-मशुचीनि शुचीन्यपि।
स कायः संतंतापाय, स्तदर्थं प्रार्थना वृथा।।१८।।

यज्जीवस्योपकाराय, तद्देहस्याऽपकारकम्।
यद्देहस्योपकाराय, तज्जीवस्यापकारकम्।।१९।।

इतश्चिन्तामणिर्दिव्य, इतः पिण्याकखण्डकम्।
ध्यानेन चेदुभे लभ्ये, क्वाऽऽद्रियन्तां विवेकिनः।।२०।।

स्वसंवेदनसुव्यक्तस्तनुमात्रो निरत्ययः।
अत्यंतसौख्यवानात्मा, लोकालोकविलोकनः।।२१।।

संयम्य करणा-ग्राम, मेका-ग्रत्वेन चेतसः।
आत्मानमात्मवान्ध्या ये-दात्मनेवात्मनि स्थितम्।।२२।।

अज्ञानोपास्तिरज्ञानं, ज्ञानं ज्ञानिसमाश्रयः।
ददाति यत्तु यस्यास्ति-सुप्रसिद्धमिदं वचः।।२३।।

परीषहाद्यविज्ञाना-दास्रवस्य निरोधिनी।
जायतेऽध्यात्मयोगेन, कर्मणामाशु निर्जरा।।२४।।

कटस्य कर्त्ताहमिति, सम्बंधः स्याद् द्वयोर्द्वयोः।
ध्यानं ध्येयं यदात्मैव, सम्बंधः कीदृशस्तदा।।२५।।

बध्यते मुच्यते जीवः, सममो निर्मर्मः क्रमात्।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन, निर्ममत्वं विचिंतयेत्।।२६।।

एकोऽहं निर्ममः शुद्धो, ज्ञानी योगीन्द्रगोचरः।
बाह्याः संयोगजा भावा, मत्तः सर्वेऽपि सर्वथा।।२७।।

दुःखसन्दोहभागित्वं, संयोगादिह देहिनाम्।
त्यजाम्येनं ततः सर्वं, मनोवाक्कायकर्मभिः।।२८।।

न मे मृत्युः कुतो भीति, र्न मे व्याधिः कुतो व्यथा।
नाहं बालो न वृद्धोऽहं, न युवैतानि पुद्गले।।२९।।

भुक्तोज्झिता मुहुर्मोहान, मया सर्वेऽपि पुद्गलाः।
उच्छिष्टेष्विव तेष्वद्य, मम विज्ञस्य का स्पृहा।।३०।।

कर्म कर्महिताऽऽबन्धि, जीवो जीवहितस्पृहः।
स्व-स्व-प्रभाव-भूयस्त्वे, स्वार्थं को वा न वांछति।।३१।।

परोपकार मुत्सृज्य, स्वोपकारपरो भव।
उपकुर्वन्परस्याज्ञो, दृश्यमानस्य लोकवत्।।३२।।

गुरुपदेशादभ्यासात्, संवित्तेः स्व-परांतरं।
जानाति यः स जानाति, मोक्षसौख्यं निरन्तरम्।।३३।।

स्वस्मिन्सदाभिलाषित्वा, दभीष्टज्ञापकत्वतः।
स्वयं हित (ते) प्रयोक्तृत्वा, दात्मैव गुरुरात्मनः।।३४।।

नाऽज्ञो विज्ञत्वमायाति, विज्ञो नाऽज्ञत्वमृच्छति।
निमित्तमात्रमन्यस्तु, गतेर्धर्मास्तिकायवत्।।३५।।

अभवच्चित्तविक्षेप, एकांते तत्त्वसंस्थितिः।
अभ्यस्येदभियोगेन, योगी तत्त्वं निजात्मनः।।३६।।

यथा यथा समायाति, संवित्तौ तत्त्वमुत्तमम्।
तथा तथा न रोचन्ते, विषयाः सुलभा अपि।।३७।।

यथा यथा न रोचंते, विषयाः सुलभा अपि।
तथा तथा समायाति, संवित्तौ तत्त्वमुत्तमम्।।३८।।

निशामयति निःशेस, मिंद्रजालोपमं जगत्।
स्पृहयत्यात्मलाभाय, गत्वाऽन्यत्राऽनुतप्यते।।३६।।

इच्छत्येकांतसंवासं, निर्जनं जनिताऽदरः।
निजकार्यवशात्किञ्चि, दुक्त्वा विस्मरति द्रुतम्।।४०।।

ब्रूवन्नपि हि न ब्रुते, गच्छन्नपि न गच्छति।
स्थिरीकृतात्मतत्त्वस्तु, पश्यन्नपि न पश्यति।।४१।।

किमिदं कीदृशं कस्य, कस्मात्क्वेत्यविशेषयन्।
स्वदेहमपि नाऽवैति, योगी योगपरायणः।।४२।।

यो यत्र निवसन्नास्ते, स तत्र कुरुते रतिं।
यो यत्र रमते तस्माद-न्यत्र स न गच्छति।।४३।।

अगच्छंस्तद्विशेषाणा-मनभिज्ञश्च जायते।
अज्ञाततद्विशेषस्तु, बध्यते न विमुच्यते।।४४।।

परः परस्ततो दुःख-मात्मैवात्मा ततः सुखम्।
अतएव महात्मान, स्तन्निमित्तं कृत्तोद्यमाः।।४५।।

अविद्वान्पुद्गलद्रव्यं, योऽभिनन्दति तस्य तत्।
न जातु जन्तोः सामीप्यं, चतुर्गतिषु मुञ्चति।।४६।।

आत्मानुष्ठाननिष्ठस्य, व्यवहारबहिः स्थितेः।
जायते परमानन्दः, कश्चिद् योगेन योगिनः।।४७।।

आनन्दो निर्दहत्युद्धं, कर्मेन्धनमनारतम्।
न चाऽसौ खिद्यते योगी, बहिर्दुःखेष्वचेतनः।।४८।।

अविद्याभिदुरं ज्योतिः, परं ज्ञानमयं महत्।
प्रष्टव्यं तदेष्टव्यं, तद्द्रष्टव्यं मुमुक्षुभिः।।४६।।

जीवोऽन्यः पुद्गलश्चान्य, इत्यसौ तत्त्वसङ्ग्रहः।
यदन्यदुच्यते किञ्चित्सोऽस्तु तस्यैव विस्तरः।।५०।।

इष्टोपदेशमिति सम्यग्धीत्य धीमान्,
मानापमानसमतां स्वमताद् वितन्य।
मुक्ताग्रहो विनिवसन्सजने वने वा,
मुक्तिश्रियं निरुपमामुपयाति भव्यः।।५१।।

राग द्वेष मद मोह रहित हूँ जन्म मरण आश्चर्य नहीं
क्षुधा तृषा विस्मय नहिं मेरा, रोग शोक का नाम नहीं।
इन्द्र चन्द्र अहमिन्द्र पूजते, क्या नरेन्द्र क्या असुरपति।
सिद्ध स्वरूपी स्वयं आत्मा, केवलज्ञानी जगतपति।।
अनन्त सुखों का आकर हंसा, धैर्यवीर्य सच्छीलमयी।
समझो आतम नित्य निरंजन, ध्यान योग्य वह सकलमयी।।१।।

श्रीमत्स्वामिसमन्तभद्राचार्यविरचितो

रत्नकरण्ड-श्रावकाचारः

अथ प्रथमोऽध्यायः

मंगलाचरणम्

नमः श्री वर्द्धमानाय निर्द्धूत-कलि-लात्मने।
सालोकानां त्रिलोकानां यद्विद्या दर्पणायते।।१।।

धर्मोपदेशप्रतिज्ञा

देशयामि समीचीनं धर्मं कर्म-निव-र्हणम्।
संसारदुःखतः सत्वान् यो धरत्युत्तमे सुखे।।२।।

धर्मस्य लक्षणम्

सद्दृष्टि-ज्ञान-वृत्तानि धर्मं धर्मेश्वरा विदुः।
यदीय प्रत्यनीकानि भवन्ति भवपद्धति।।३।।

सम्यग्दर्शन लक्षणम्

श्रद्धानं परमार्थाना-माप्तागम-तपोभृताम्।
त्रि-मूढा-पोढ-मष्टांग सम्यग्दर्शन-मस्मयम्।।४।।

आप्तलक्षणम्

आप्तेनोच्छिन्न-दोषेण सर्वज्ञे-नागमेशिना।
भवितव्यं नियोगेन नान्यथा ह्याप्तता भवेत्।।५।।

वीतरागकथनम्

क्षुत्पि-पासा-जरा-त्तकं-जन्मान्तक भयस्मयाः।
न रागद्वेष-मोहाश्च यस्याप्तः सः प्रकीर्त्यते।।६।।

हितोपदेशिनः कथनम्

परमेष्ठी परंज्योतिर्विरागो विमलः कृती।
सर्वज्ञोऽनादि-मध्यान्तः सार्वः शास्तोपलाल्यते।।७।।

हितोपदेशिनः कथनम्

अनात्मार्थं विना रागैः शास्ता शास्ति सतो हितम्।
ध्वनन् शिल्पिकर-स्पशन्मुरजः किमपेक्षते।।८।।

शास्त्रलक्षणम्

आप्तोपज्ञ-मनुल्लंघ्य-मदृष्टेष्ट विरोधकम्।
तत्त्वोपदेश-कृत्सार्वं शास्त्रं कापथ-घट्टनम्।।६।।

गुरुलक्षणम्

विषयाशावशातीतो निराम्भोऽपरिग्रहः।
ज्ञानध्यान-तपोरक्त-स्तपस्वी सः प्रशस्यते।।१०।।

अष्टांगकथनम्

१. निःशंकितांगम्

इदमेवे-दृशमेव तत्त्वं नान्यन्न चान्यथा।
इत्य-कम्पाय-साम्भोव-त्सन्मार्गेऽसंशया रुचि।।११।।

२. निःकांक्षितांगम्

कर्मपरवशे सान्ते दुःखैरन्तरितोदये।
पापबीजे सुखेऽनास्था श्रद्धानाकांक्षणा स्मृता।।१२।।

३. निर्विचिकित्सितांगम्

स्वभावतोऽशुचौ काये रत्नत्रय-पवित्रिते।
निर्जुगुप्सा गुणप्रीति-र्मता निर्वि-चिकित्सिता।।१३।।

४. अमूढदृष्ट्यंगम्

कापथे पथि दुःखानां कापथस्थेऽप्यसम्मतिः।
असम्पृक्तिरनुत्कीर्तिरमूढ़ा दृष्टिरुच्यते।।१४।।

५. उपगूहनांगम्

स्वयं शुद्धस्य मार्गस्य बालाशक्तजनाश्रयाम्।
वाच्यां यत्प्रमार्जन्ति तद्वदन्त्युपगूहनम्।।१५।।

६. स्थितिकरणांगम्

दर्शनाच्चरणाद्वापि चलतां धर्मवत्सलैः।
प्रत्यवस्थापनं प्राज्ञैः स्थितिकरण-मुच्यते।।१६।।

७. वात्सल्यांगम्

स्वयूथ्यान्प्रति सद्भाव-सनाथाऽपेत-कैतवा।
प्रतिपत्तिर्यथायोग्यं वात्सल्यमभिलप्यते।।१७।।

८. प्रभावनांगम्

अज्ञान-तिमिरव्याप्ति-मपाकृत्य यथायथम्।
जिनशासनमाहात्म्यप्रकाशः स्यात्प्रभावना।।१८।।

अष्ठांगधारिनामानि

तावदञ्जनचौरोऽङ्गे ततोऽनन्तमती स्मृता।
उद्दायनस्तृतीयेऽपि तुरीये रेवती मता।।१९।।

ततो जिनेन्द्रभक्तोऽन्यो वारिषेणस्ततः परः।
विष्णुश्च वज्रनामा च शेषयोर्लक्षतां गतौ।।२०।।

अंगहीन दर्शन व्यर्थत्वम्

नांगहीनमलं छेत्तुं दर्शनं जन्मसन्ततिम्।
न हि मन्त्रोऽक्षरन्यूनो निहन्ति विषवेदनाम्।।२१।।

लोकमूढ़ता

आपगा-सागर-स्नान-मुच्चयः सिकताश्मनाम्।
गिरिपातोऽग्नि-पातश्च लोकमूढं निगद्यते।।२२।।

देवमूढ़ता

वरोपलिप्सयाशावान् रागद्वेषमलीमसः।
देवता यदुपासीत देवमूढ़मुच्यते।।२३।।

गुरुमूढ़ता

सग्रन्थारम्भ-हिंसानां संसार-वर्तवर्तिनाम्।
पाखण्डिनां पुरस्कारो ज्ञेयं पाखण्डि-मोहनम्।।२४।।

अष्टमदनामानि

ज्ञानं पूजां कुलं जातिं बलमृद्धिं तपो वपुः।
अष्टावाश्रित्य मानित्वं स्मय-माहु-र्गतस्मयाः।।२५।।

मदस्यनिष्टत्वम्

स्मयेन योऽन्यानत्येति धर्मस्थान् गर्विताशयः
सोऽत्येति धर्ममात्मीय न धर्मो धार्मिकैर्विना।।२६।।

यदि पापनिरोधोऽन्यसम्पदा किं प्रयोजनम्।
अथ पापास्रवोऽस्त्यन्य सम्पदा किं प्रयोजनम्।२७।।

सम्यग्दर्शनमहिमा

सम्यग्दर्शन-सम्पन्न-मपि मातंगदेहजम्।
देवा देवं विदुर्भस्म-गूढ़ांगारान्त-रौजसम्।।२८।।

श्वापि देवोऽपि देवः श्वा जायते धर्मकिल्विषात्।
कापि नाम भवेदन्या सम्पद्धर्म्माच्छरीरिणाम्।।२९।।

भयाशास्नेह-लोभाच्च कुदेवागम-लिंगिनाम्।
प्रणामं विनयं चैव न कुर्युः शुद्धदृष्टयः।।३०।।

दर्शनं ज्ञानचारित्रात्साधिमानमुपाश्नुते।
दर्शनं कर्णधारं तन्मोक्षमार्गे प्रचक्षते।।३१।।

विद्यावृत्तस्य संभूति-स्थिति-वृद्धि-फलोदयाः।
न सन्त्यसति सम्यक्त्वे बीजाभावे तरोरिव।।३२।।

गृहस्थो मोक्षमार्गस्थो निर्मोहो नैव मोहवान्।
अनगारो गृही श्रेयान् निर्मोहो मोहिनो मुनेः।।३३।।

न सम्यक्त्वसमं किञ्चित त्रैलोक्ये त्रिजगत्यपि।
श्रेयोऽश्रेयश्च मिथ्यात्वसमं नान्यत्तनूभृताम्।।३४।।

सम्यग्दृष्टेरनुत्पत्तिस्थानानि

सम्यग्दर्शनशुद्धा नारकतिर्यङ्-नपुंसक-स्त्रीत्वानि।
दुष्कुल-विकृताल्पायु-दरिद्रतां च व्रजन्ति नाप्यव्रतिकाः।।३५।।

ओजस्तेजोविद्या-वीर्य-यशो-वृद्धि-विजय-विभवसनाथाः
महाकुल महार्था मानवतिलका भवन्ति दर्शनपूताः।।३६।।

अष्टगुणपुष्टितुष्टा दृष्टिविशिष्टाः प्रकृष्टशोभाजुष्टाः।
अमराप्सरसां परिषदि चिरं रमन्ते जिनेन्द्रभक्तः स्वर्गे।।३७।।

नवनिधि-सप्तद्वय-रत्नाधीशः सर्व-भूमि-पतयश्चक्रम्।
वर्तयितुं प्रभवन्ति स्पष्टदृशः क्षत्रमौलि-शेखर-चरणाः।।३८।।

अमरासुर-नरपतिभि-र्यमधर-पतिभिश्च नूतपादाम्भोजा।
दृष्ट्या सुनिश्चितार्था वृषचक्रधरा भवन्ति लोकशरणा।।३९।।

शिव-मजर-रुज-मक्षय-मव्याबाधं विशोकभयशंकम्।
काष्टागत-सुखविद्या विभवं विमलं भजन्ति दर्शनशरणाः।।४०।।

देवेन्द्र चक्रमहिमानममेयमानम्,
राजेन्द्रचक्रमवनीन्द्र शिरोऽर्चनीयम्।
धर्मेन्द्र चक्रमधरीकृतसर्वलोकं,
लब्धा शिवं च जिनभक्तिरुपैति भव्यः।।४१।।

(अथ द्वितीयोऽध्याय)

सम्यग्ज्ञानस्य लक्षणम्

अन्यूनमनतिरिक्तं याथातथ्यं विना च विपरीतात्।
निःसन्देहं वेद यदाहुस्तज्ज्ञानमागमिनः।।४२।।

प्रथमानुयोगकथनम्

प्रथमानुयोग-मर्थाख्यानं चरितं पुराणमपि पुण्यम्।
बोधिसमाधि-निधानं बोधति बोधः समीचीनः।।४३।।

करणानुयोगकथनम्

लोकलोविभक्तेः युगपरिवृत्ते-श्चतुर्गतीनां च।
आदर्शमिव तथा-मतिरवैति करणानुयोगं च।।४४।।

चरणानुयोगकथनम्

गृहमेध्यनगाराणां चारित्रोत्पत्ति-वृद्धि-रक्षांगम्।
चरणानुयोगसमयं सम्यग्ज्ञानं विजानाति।।४५।।

द्रव्यनुयोगकथनम्

जीवाजीवसुतत्त्वै पुण्यापुण्ये च बन्धमोक्षौ च।
द्रव्यानुयोगदीपः श्रुतविद्यालोकमातनुते।।४६।।

(अथ तृतीयोध्यायः)

चारित्रस्यावश्यकता

मोहतिमिरापहणे दर्शन-लाभा-दवाप्त-संज्ञान।
रागद्वेष निवृत्यै चरणं प्रतिपद्यते साधुः।।४७।।

रागद्वेष-निवृत्ते-र्हिंसादि निवर्तना कृता भवति।
अनपेक्षि-तार्थवृत्तिः क पुरुषः सेवते नृपतीन्।।४८।।

चारित्रकथनम्

हिंसा-नृतचौर्येभ्यो मैथुन-सेवा-परिग्रहाभ्यां च।
पापप्रणालिकाभ्यो विरतिः संज्ञस्य चारित्रम्।।४६।।

चारित्रभेदौ

सकलं विकलं चरणं तत्सकलं सर्वसंगविरतानाम्।
अनगाराणां विकलं सागाराणां ससंगानाम्।।५०।।

विकल (गृहस्थ) चारित्रभेदाः

गृहिणां त्रेधा तिष्ठत्यणुगुण-शिक्षाव्रतात्मकं चरणम्।
पंचत्रिचतुर्भेदं त्रयं यथासंख्यामाख्यातम्।।५१।।

अणुव्रतम्

प्राणातिपातवितथव्याहारस्तेयकाममूर्च्छेभ्यः।
स्थूलेभ्यः पापेभ्यो व्युपरमणमणुव्रतं भवति।।५२।।

अहिंसाणुव्रतम्

संकल्पात्-कृत-कारित-मननाद्योगत्रयस्य चरसत्वान्।
न हिनस्ति यत्तदाहुः स्थूलवधाद्विरमणं निपुणाः।।५३।।

अहिंसाणुव्रतस्य पंचातीचाराः

छेदन-बंधन-पीडन-मतिभारारोपणं व्यतीचाराः
आहार-वारणापि च स्थूलवधाद् व्युपरतेः पंच।।५४।।

सत्याणुव्रतम्

स्थूल-मलीकं न वदति न परान् वादयति सत्यमपि विपदे।
यत्तद्वदन्ति सन्तः स्थूलमृषावाद वैरमणम्।।५५।।

सत्याणुव्रत के पाँच अतिचार

परिवादरहोभ्याख्या, पैशुन्यं कृटलेखकरणं च।
न्यासापहारितापि च, व्यतिक्रमाः पञ्च सत्यस्य।।५६।।

अचौर्याणुव्रतम्

निहितं वा पतितं वा सुविस्मृतं वा परस्वमविसृष्टम्।
न हरति चयन्न च दत्ते तदकृषचौर्यादुपारमणम्।।५७।।

अचौर्याणुव्रतस्य पंचातीचारा

चौरप्रयोग चौरार्थादान विलोप सदृश सन्मिश्राः।
हीनाधिकविनिमानं पंचास्तेये व्यतीपाताः।।५८।।

ब्रह्मचर्याणुव्रतम्

न तु परदारान् गच्छति न परान् गमयति च पापभीतेर्यत्।
सा परदारनिवृत्तिः स्वदारसन्तोष नामापि।।५९।।

ब्रह्मचर्याणुव्रतस्य पंचातिचाराः

अन्य-विवाहाकरणा-नंगक्रीडा-विटत्व-विपुलतृषाः।
इत्वरिकागमनं चास्मरस्य पंच व्यतीचारा।।६०।।

परिमित परिग्रहाणुव्रतम्

धनधान्यादिग्रन्थं परिमाय ततोऽधिकेषु निस्पृहता।
परिमित-परिग्रहः स्यादिच्छा परिमाणनामापि।।६१।।

परिमितपरिग्रहाणुव्रतस्य पंचातिचाराः

अतिवाहनातिसंग्रह-विस्मय-लोभातिभारवहनानि।
परिमितपरिग्रहस्य च विक्षेपाः पंच कथ्यन्ते।।६२।।

पंचाणुव्रत फलम्

पंचाणुव्रतनिधयो निरतिक्रमणाः फलन्ति सुरलोकम्
यत्रावधिरष्टगुणा दिव्यशरीरं च लभ्यन्ते।।६३।।

पंचाणुव्रत प्रसिद्धानां नामानि

मातंगो धनदेवश्च वारिषेणस्ततः परः।
नीली जयश्च सम्प्राप्ताः पूजातिशयमुत्तमम्।।६४।।

हिंसादिपंचपापेसु प्रसिद्धानां नामानि

धनश्री-सत्यघोषौ च तापसा-रक्षकावपि।
उपाख्येयास्तथा शमश्रु नवनीतो यथाक्रमम्।।६५।।

गृहमेधिनामष्टौ मूलगुणाः

मद्य-मांस-मधु-त्यागैः सहाणुव्रत-पंचकम्।
अष्टौ मूल-गुणानाहु-र्गृहिणां श्रमणोत्तमाः।।६६।।

त्रीणि गुणव्रतानि

दिग्व्रत-मनर्थदण्डव्रतं च भोगोपभोग-परिमाणम्
अनुबृंहणाद्-गुणाना-माख्यानित गुणव्रतान्यार्याः।।६७।।

दिग्व्रतम्

दिग्वलयं परिगणितं कृत्वाऽतोऽहं बहिर्न यास्यामि।
इति संकल्पो दिग्व्रतमामृत्यणु पापविनिवृत्त्यै।।६८।।

दिग्व्रतस्य मर्यादा

मकराकर-सरिदटवी-गिरिजनपद-योजनानि मर्यादाः।
प्राहुर्दिशां दशानां प्रतिसंहारे प्रसिद्धानि।।६९।।

दिग्व्रतस्य माहात्म्यम्

अवधे-र्बहिरणु-पापप्रतिविरते-र्दिग्व्रतानि धारयताम्।
पंच-महाव्रत-परिणति-मणुव्रतानि प्रपद्यन्ते।।७०।।

प्रत्याख्यान-तनुत्वान्मन्दतराश्चरणमोह-परिणामाः।
सत्वेन दुःखधारा महाव्रताय प्रकल्प्यन्ते।।७१।।

महाव्रतलक्षणम्

पंचानां पापानां हिंसादीनां मनोवचःकायैः।
कृत-कारितानुमोदै-स्त्यागस्तु महाव्रतं महताम्।।७२।।

दिग्व्रतस्यातिचाराः

ऊर्ध्वा-धस्ता-त्तिर्यग्व्यतिपाताः क्षेत्रवृद्धिरवधीनाम्।
विस्मरणं दिग्विरतेरत्याशाः पंच मन्यन्ते।।७३।।

अनर्थदण्डव्रतम्

अभ्यन्तरं दिग्वधे-रपार्थिकेभ्यः सपापयोगेभ्यः।
विरमण-मनर्थदण्डव्रतं च विदुर्व्रतधराग्रण्यः।।७४।।

अनर्थदण्डस्य भेदाः

पापो-पदेश हिंसा-दाना-पध्यानदुःश्रुतीः पंच।
प्राहुः प्रमादचर्या-मनर्थदण्डानदण्डधराः।।७५।।

पापोपदेशः

तिर्यक्क्लेषवणिज्या हिंसारम्भ-प्रलम्भ-नादीनाम्
कथाप्रसंगप्रसवः स्मर्तव्यः पाप-उपदेशः।।७६।।

हिंसादानम्

परशु-कृपाण-खनित्र-ज्वलनायुधशृंगशृंखलादीनाम्।
वधहेतूनां दानं हिंसादानं ब्रुवन्ति बुधाः।।७७।।

अपध्यानम्

बधबंधच्छेदादेर्द्वेषाद्रागाच्च परकलत्रादेः।
आध्यानमपध्यानं शासति जिनशासने विशदाः।।७८।।

दुःश्रुतिः

आरम्भ-संगसाहस-मिथ्यात्व-द्वेष-राग-मद-मदनैः।
चेतः कलुषयतां श्रुतिरवधीनां दुःश्रुतिर्भवति।।७९।।

प्रमादचर्य्या

क्षिति-सलिल-दहनपवनारम्भं विफलं वनस्पतिच्छेदम्।
सरणं सारणमपि च प्रमादचर्यां प्रभाषन्ते।।८०।।

अनर्थदण्डव्रतस्यातिचाराः

कन्दर्पं कौत्कुच्यं मौखर्य-मति-प्रसाधनं पंच।
असमीक्ष्य चाधिकरणं व्यतीतयोऽनर्थदण्डकृद्विरतेः।।८१।।

भोगोपभोग परिमाणव्रतम्

अक्षार्थानां परिसंख्यानं भोगोप-भोग-परिमाणम्।
अर्थवतामप्यवधौ रागरतीनां तनूकृतये।।८२।।

भोगोपभोगभेदौ

भुक्त्वा परिहातव्यो भोगो भुक्त्वा पुनश्च भोक्तव्यः।
उपभोगोऽशन-वसन-प्रभृति-पंचेन्द्रियो विषयः।।८३।।

मधु-मांस-मद्यनिषेधः

त्रसहति-परिहरणार्थं क्षौद्रं पिशितं प्रमाद-परिहृतये।
मद्यं च वर्जनीयं जिनचरणौ शरणमुपयातैः।।८४।।

अल्पफल-बहुविघात-निषेधः

अल्पफल-बहुविघातान् मूलकमार्द्राणि शृंगवेराणि।
नवनीत निम्बकुसुमं कैतकमित्येव मवहेयम्।।८५।।

यदनिष्टं तद्व्रत-येद्यच्चा-नुपसेव्य-मेतदपि जह्यात्।
अभिसन्धि-कृताविरति-र्विषयाद्योग्याद्व्रतं भवति।।८६।।

यम और नियम का लक्षण

नियमो यमश्च विहितौ द्धेधा भोगोपभोग संहारात।
नियमः परिमितकालो, यावजजीवं यमो ध्रियते।।८७।।

नियमविधिः

भोजन-वाहन-शयन-स्नान-पवित्रांग-राग-कुसुमेषु।
ताम्बूल-वसनभूषण-मन्मथसंगीतगीतेषु।।८८।।

अद्य दिवा रजनीं वा पक्षो मासस्तद्धर्तुरयनं वा।
इतिकालपरिच्छित्या प्रत्याख्यानं भवेन्नियमः।।८९।।

भोगोपभोग परिमाणव्रतातिचाराः

विषय-विषतोऽनुपेक्षानुस्मृति-रति लौल्यमतितृषानुभवो।
भोगोप-भोगपरमाख्यातिक्रमाः पंच कथ्यन्ते।।९०।।

चत्वारि शिक्षाव्रतानि

देशावकाशिकं वा सामयिकं प्रोषधोपवासो वा।
वैय्यावृत्यं शिक्षाव्रतानि चत्वारि शिष्टानि।।९१।।

देशावकाशिक-शिक्षाव्रतम्

देशवकाशिकं स्यात्कालपरिच्छेदनेन देशस्य।
प्रत्यहमणुव्रतानां प्रतिसंहारो विशालस्य।।९२।।

देशावकाशिकव्रतस्य क्षेत्रमर्यादा

गृहहारिग्रामाणां क्षेत्रनदीदावयोजनानां च।
देशावकाशिकस्य स्मरन्ति सीम्नां तपोवृद्धाः।।९३।।

देशावकाशिकव्रतस्य कालमर्यादा

संवत्सरमृतुरयनं मासचतुर्मासपक्षमृक्षं च।
देशावकाशिकस्य प्राहुः कालावधिं प्राज्ञाः।।९४।।

देशावकाशिकव्रतस्य सार्थकता

सीमान्तानां परतः स्थूलेतर-पंचपाप-संत्यागात्।
देशावकाशिकेन च महाव्रतानि प्रसाध्यन्ते।।६५।।

देशावकाशिकव्रतस्य पंचातिचाराः

प्रेषणाशब्दानयनं रूपाभिव्यक्तिपुद्गलक्षेपौ।
देशावकाशिकस्य व्यपदिश्यन्तेऽत्ययाः पंच।।६६।।

सामायिकशिक्षाव्रतम्

आसमय-मुक्तिमुक्तं पंचाघानामशेषभावेन।
सर्वत्र च सामयिकाः सामयिकं नाम शंसन्ति।।६७।।

सामायिकविधिः

मूर्धरुहमुष्टिवासोबंधं पर्यंकबंधनं चापि।
स्थानमुपवेशनं वा समयं जानन्ति समयज्ञाः।।६८।।

एकान्ते सामयिकं निर्व्याक्षेपे वनेषु वास्तुषु च।
चैत्यालयेषु वापि च परिचेतव्यं प्रसन्नधिया।।६९।।

व्यापारवैमनस्याद्विनिवृत्त्यामन्तरात्मविनिवृत्त्या।
सामयिकं बध्नीयादुपवासे चैकभुक्ते वा।।१००।।

सामयिकं प्रतिदिवसं यथावदप्यनलसेन चेतव्यम्।
व्रतपंचकपरिपूरणकारणमवधानयुक्तेन।।१०१।।

सामयिक शिक्षाव्रतस्य सार्थकता

सामयिके सारम्भाः परिग्रहा नैव सन्ति सर्वेऽपि।
चेलोपसृष्टमुनिरिव गृही तदा याति यतिभावम्।।१०२।।

सामायिके परीषहसहनम्

शीतोष्ण-दंशमश-कपरिषह-मुपसर्गमपि च मौनधराः।
सामयिकं प्रतिपन्ना अधिकुर्वीरन्नचलयोगाः।।१०३।।

सामायिके किं विचार्यं

अशरणमशुभमनित्यं दुःखमनात्मानमावसामि भवम्।
मोक्षस्तद्विपरीतात्मेति ध्यायन्तु सामयिके।।104।।

सामायिकस्य पंचातिचाराः

वाक्कायमानसानां दुःप्रणिधानान्यनादरास्मरणे।
सामयिकस्यातिगमा व्युच्यन्ते पंचभावेन।।१०५।।

प्रोषधोपवासशिक्षाव्रतम्

पर्वण्यष्टम्यां च ज्ञातव्यः प्रोषधोपवासस्तु।
चतुरभ्यवहार्याणां प्रत्याख्यानं सदिच्छाभिः।।१०६।।

प्रोषधोपवासे किं त्याज्यं

पंचानां पापानामलंक्रियारम्भगन्धपुष्पाणाम्।
स्नानाञ्जननस्यानामुपवासे परिहृतिं कुर्य्यात्।।१०७।।

उपवासे किं कर्त्तव्य

धर्मामृतं सतृष्णः श्रवणाभ्यां पिबतु पाययेद्वान्यान्।
ज्ञानध्यानपरो वा भवतूपसन्नतन्द्रालुः।।१०८।।

प्रोषधोपवासः

चतुराहारविसर्जनमुपवासः प्रोषधः सकृद्भुक्तिः।
स प्रोषधोपवासो यदुपोष्यारम्भमाचरति।।१०९।।

प्रोषधोपवासस्य पंचातिचाराः

ग्रहणविसर्गास्तरणान्यदृष्टमृष्टान्यनादरास्मरणे।
यत्प्रोषधोपवासे व्यतिलंघनपंचकं तदिदम्।।११०।।

वैयावृत्त्यं शिक्षाव्रतम्

दानं वैयावृत्त्यं धर्माय तपोधनाय गुणनिधये।
अनपेक्षितोपचारोपक्रियमगृहाय विभवेन।।१११।।

पुनश्च

व्यापत्तिव्यपनोदः पदयोः संवाहनं च गुणरागात्।
वैयावृत्यं यावानुपग्रहोऽन्योऽपि संयमिनाम्।।११२।।

पुनश्च

नवपुण्यैः प्रतिपत्ति सप्तगुणसमाहितेन शुद्धेन।
अपसूनारम्भाणामर्याणामिष्यते दानम्।।११३।।

दानफलम्

गृहकर्मणापि निचितं कर्म विमाष्टि खलु गृहविमुक्तानाम्
अतिथीनां प्रतिपूजा रुधिरमलं धावते वारि।।११४।।

उच्चैर्गोत्रं प्रणतेर्भोगो दानादुपासनात्पूजा।
भक्तेः सुन्दररूपं स्तवनात्कीर्तिस्तपोनिधिषु।।११५।।

क्षितिगतमिव वटबीजं पात्रगतं दानमल्पमपि काले।
फलतिच्छायाविभवं बहुफलमिष्टं शरीरभृताम्।।११६।।

दानभेदाः

आहारौषधयोरप्युपकरणावासयोश्च दानेन।
वैयावृत्यं ब्रुवते चतुरात्मत्वेन चतुरस्रा।।११७।।

दानफलस्य प्रसिद्धभोक्तारः

श्रीषेणवृषभसेने कौण्डेशः शूकरश्च दृष्टान्ताः।
वैयावृत्यस्यैते चतुर्विकल्पस्य मन्तव्याः।।११८।।

वैयावृत्ये (दाने) जिनपूजाविधाम्

देवाधिदेवचरणे परिचरणं सर्वदुःख निर्हरणम्।
कामदुहि कामदाहिनि परिचिनुयादादृतो नित्यम्।।११९।।

पूजायाः फलस्य दृष्टान्तः

अर्हच्चरणसपर्या-महानुभावं महात्मनामवदत्
भेकः प्रमोदमत्तः कुसुमेनैकेन राजगृहे।।१२०।।

वैयावृत्यस्य पञ्चातिचाराः

हरित-पिधान-निधाने ह्यनादरास्मरणमत्सरत्वानि।
वैयावृत्यस्यैते व्यतिक्रमाः पंच कथ्यन्ते।।१२१।।

सल्लेखना लक्षणम्

उपसर्गे दुर्भिक्षे जरसि रुजायां च निःप्रतीकारे।
धर्माय तनुविमोचनामाहुः सल्लेखनामार्याः।।१२२।।

सल्लेखनाया आवश्यकता

अन्तःक्रियाधिकरणं तपः फलं सकलदर्शिनः स्तुवते।
तस्माद्यावद्विभवं समाधिमरणे प्रयतितव्यम्।।१२३।।

समाधिमरणस्य विधिः

स्नेहं वैरं संगं परिग्रहं चापहाय शुद्धमनाः।
स्वजनं परिजनमपि च क्षांत्वा क्षमयेत्प्रियैर्वचनैः।।१२४।।

आलोच्य सर्वमेनः कृतकारितमनुमतं च निव्याजम्।
आरोपयेन्महाव्रतमामरणस्थायि निःशेषम्।।१२५।।

शोकं भयमवसादं क्लेदं कालुष्यमरतिमपि हित्वा।
सत्त्वोत्साहमुदीर्य च मनः प्रसाद्यं श्रुतैरमृतैः।।१२६।।

आहारं परिहाप्य क्रमशः स्निग्धं विवर्द्धयेत्पानम्।
स्निग्धं च हापयित्वा खरपानं पूरयेत्क्रमशः।।१२७।।

खरपानहापनामपि कृत्वा कृत्वोपवासमपि शक्त्या।
पंचनमस्कारमनास्तनुं त्यजयेत्सर्वयत्नेन।।१२८।।

सल्लेखनायाः पंचातिचाराः

जीवितमरणाशंसे भयमित्रस्मृतिनिदाननामानः।
सल्लेखनातिचाराः पंच जिनेन्द्रैः समादिष्टाः।।१२९।।

सल्लेखनायाः फलम्

निःश्रेयसमभ्युदयं निस्तीरं दुस्तरं सुखाम्बुनिधिम्।
निःपिबति पीतधर्मा सर्वैर्दुःखैरनालीढः।।१३०।।

मोक्षकथनम्

जन्मजरामयमरणैः शोकैर्दुःखैर्भयैश्च परिमुक्तम्
निर्वाणं शुद्धसुखं निःश्रेयसमिष्यते नित्यम्।।१३१।।

विद्यादर्शनशक्तिस्वास्थ्य प्रह्लादतृप्तिशुद्धियुजः।
निरतिशया निरवधयो निःश्रेयसमावसन्ति सुखम्।।१३२।।

काले कल्पशतेऽपि च गते शिवानां न विक्रिया लक्षा।
उत्पातोऽपि यदि स्यात्त्रिलोकसम्भ्रान्तिकरणपटुः।।१३३।।

निःश्रेयसमधिपन्नस्त्रैलोक्यशिखामणिश्रियं दधते।
निष्कीट्टिकालिकाच्छविचामीकरभासुरात्मानः।।१३४।।

पूजार्थाज्ञैश्वर्यैर्बलपरिजनकामभोगभूयिष्ठैः।
अतिशयतिभुवनमद्भुतमभ्युदयं फलति सद्धर्मः।।१३५।।

श्रावकास्यैकादश प्रतिमाः

श्रावकपदानि देवैरेकादश देशितानि येषु खलु।
स्वगुणाः पूर्वगुणैः सह संतिष्ठन्ते क्रमविवृद्धाः।।१३६।।

1. दार्शनिकः

सम्यग्दर्शनशुद्धः संसारशरीरभोगनिर्विण्णः।
पंचगुरुचरणशरणो दार्शनिकस्तत्त्वपथगृह्यः।।१३७।।

2. व्रतिकः

निरतिक्रमणमणुव्रतपंचकमपि शीलसप्तकं चापि।
धारयते निःशल्यो योऽसौ व्रतिनां मतो व्रतिकः।।१३८।।

3. सामायिकः

चतुरावर्तत्रितयश्चतुः प्रणामस्थितो यथाजातः।
सामयिको द्विनिषद्यस्त्रियोगशुद्धिस्त्रिसंन्ध्यमभिवन्दी।।१३९।।

4. प्रौषधनियमविधायी

पर्वदिनेषु चतुर्ष्वपि मासे मासे स्वशक्तिमनिगुह्य।
प्रोषधनियमविधायी प्रणधिपरः प्रोषधानशनः।।१४०।।

5. सचित्तविरतः

मूलफलशाकशाखाशरीकन्दप्रसूनबीजानि।
नामानि योऽत्ति सोऽयं सचित्तविरतो दयामूर्तिः।।१४१।।

6. रात्रिभुक्तित्यागी

अन्नं पानं खाद्यं लेयं नाश्नाति यो विभावर्याम्।
स च रात्रिभुक्तिविरतः सत्त्वेष्वनुकम्पमानमनाः।।१४२।।

7. ब्रह्मचारी

मलबीजं मलयोनिं गलन्मलं पूतगन्धिबीभत्सम्।
पश्यन्नंगमनंगाद्विरमति यो ब्रह्मचारी सः।।१४३।।

8. आरम्भत्यागी

सेवाकृषिवाणिज्यप्रमुखादारम्भतो व्युपारमति।
प्राणातिपातहेतोर्योऽसावारम्भविनिवृत्तः।।१४४।।

9. परिचित्तपरिग्रहत्यागी

बाह्येषु दशसु वास्तुषु ममत्वमुत्सृज्य निर्ममत्वरतः।
स्वस्थः सन्तोषपरः परिचित्तपरिग्रहाद्विरतः।।१४५।।

10. अनुमतित्यागी

अनुमतिरारम्भे वा परिग्रहे वैहिकेषु कर्मसु वा।
नास्ति खलु यस्य समधीरनुमतिविरतः स मन्तव्यः।।१४६।।

11. उत्कृष्ट श्रावकः

गृहतो मुनिवनमित्वा गुरुपकण्ठे व्रतानि परिगृह्य।
भैक्ष्याशनस्तपस्यन्नुत्कृष्टश्चेलखण्डधरः।।१४७।।

श्रेष्ठज्ञातुर्लक्षणम्

पापमरातिर्धर्मो बन्धुर्जीवस्य चेति निश्चिन्वन्।
समयं यदि जानीते श्रेयो ज्ञाता ध्रुवं भवति।।१४८।।

उपसंहारः

येन स्वयं वीतकलंकद्या दृष्टिः क्रियारत्नकरण्डभावम्।
नीतस्तमायाति पतीच्छयेव सर्वार्थसिद्धिस्त्रिषु विष्टपेषु।।१४९।।

अन्तमंगलम्

सुखयतु सुखभूमिः कामिनं कामिनीव
सुतमिव जननी मां शुद्धशीला भुनक्तु।
कुलमिव गुणभूषणा कन्यका संपुनीता-
ज्जिनपतिपदपद्मप्रेक्षिणी दृष्टिलक्ष्मीः।।१५०।।

वारसाणुपेक्खा (द्वादशानुप्रेक्षा)

मंगलाचरण और प्रतिज्ञा वाक्य

णमिऊण सव्वसिद्धे झाणुत्तम खविद् दीह संसारे।
दस दस दो दो य जिणे दस दो अणुपेहणं वोच्छे।।१।।

बारह अनुप्रेक्षाओं के नाम

अध्धुवमसरणमेगत्तमण्णसंसारलोगमसुचित्तं
आसव-संवर-णिज्जर धम्मं बोहिं च चिंतेज्जा।।२।।

अध्रुव अनुप्रेक्षा

वर-भवण-जाण-वाहण-सयणासण-देवमणुवरायाणं।
मादु-पिदु-सजण-भिच्च-संबंधिणो य पिदि-वियाणिच्चा।।३।।

सामग्गिदियरूवं आरोग्गं जोव्वणं बलं तेजं।
सोहग्गं लावण्णं सुरधणुमिव सस्सयं ण हवे।।४।।

जलबुब्बुदसक्कधणुखणरुचिघणसोहमिव थिरं ण हवे
अहमिंदट्ठाणाइं बलदेवप्पहुदिपज्जाया।।५।।

जीवणिबद्धं देहं खीरोदयमिव विणस्सदे सिग्घं
भोगोपभोगकारणदव्वं णिच्चं कहं होदि।।६।।
परमट्ठेण दु आदा देवासुरमणुवरायविहवेहिं।
वदिरित्तो सो अप्पा सस्सदमिदि चिंतए णिच्चं।।७।।

अशरणानुप्रेक्षा

मणिमंतोसहरक्खा हयगयरहओ य सयलविज्जाओ
जीवाणं ण हि सरणं तिसु लोए मरणसमयम्हि।।८।।

सग्गो हवे हि दुग्गं भिच्चा देवा या पहरणं वज्जं।
अइरावणो गइंदो इंदस्स ण विज्जदे सरणं।।९।।

णवणिहि चउदहरयणं हयमत्तगइंद चाउरंगबलं
चक्केसस्स ण सरणं पेच्छंतो कद्दये काले।।१०।।

जाइजरामरणरोगभयदो रक्खेदि अप्पणो अप्पा।
तम्हा आदा सरणं बंधोदयसत्तकम्मवदिरित्तो।।११।।

अरुहा सिद्धाइरिया उवज्झाया साहु पंचपरमेट्ठी।
ते वि हु चिट्ठदि अदि तम्हा आदा हु मे सरणं।।१२।।

सम्मत्तं सण्णाणं सच्चारित्तं च सत्तवो चेव।
चउरो चिट्ठदि अदि तम्हा आदा हु मे सरणं।।१३।।

एकत्वानुप्रेक्षा

एक्को करेदि कम्मं एक्को हिंडदि य दीहसंसारे।
एक्को जायदि मरदि य तस्स फलं भुंजदे एक्को।।१४।।

एक्को करेदि पावं विसयणिमित्तेण तिव्वलोहेण
णिरयतिरियेसु जीवो तस्स फलं भुंजदे एक्को।।१५।।

एक्को करेदि पुण्णं धम्मणिमित्तेण पत्तदाणेण।
मणुवदेवेसु जीवो तस्स फलं भुंजदे एक्को।।१६।।

पात्र के तीन भेदों तथा अपात्र का वर्णन

उत्तमपत्तं भणियं सम्मत्तगुणेण संजुदो साहू।
सम्मादिट्ठी सावय मज्झिमपत्तो हु विण्णेओ।।१७।।

णिद्दिट्ठो जिणसमये अविरदसम्मो जहण्णपत्तोत्ति
सम्मत्तरयणरहिओ अपत्तमिदि संपरिक्खेज्जो।।१८।।

दंसणभट्टा भट्टा दंसणभट्टस्स णत्थि णिव्वाणं।
सिज्झंति चरियभट्टा दंसणभट्टा ण सिज्झंति।।१९।।

एक्कोहं णिम्ममो सुद्धो णाणदंसणलक्खणो।
सुद्धेयत्तमुपादेयमेवं चिंतेइ संजदो।।२०।।

अन्यत्वानुप्रेक्षा

मादापिदरसहोदरपुत्तकलत्तादिबंधुसंदोहो।
जीवस्स ण संबंधो णियकज्जवसेण वट्टंति।।२१।।

अण्णो अण्णं सोयदि मदोत्ति मम णाहगो त्ति मण्णंतो।
अप्पाणं ण हु सोयदि संसारमहण्णवे बुड्ढं।।२२।।

अण्णं इमं सरीरादिगं पि होज्ज बाहिरं दव्वं।
णाणं दंसणमादा एवं चिंत्तेहि अण्णत्तं।।२३।।

संसारानुप्रेक्षा

पंचविहे संसारे जाइजरामरणरोगभयपउरे।
जिणमग्गमपेच्छंतो जीवो परिभमदि चिरकालं।।२४।।

सव्वे वि पोग्गला खलु एगे भुत्तुज्झिया हु जीवेण।
असयं अणंतखुत्तो पुग्गलपरियट्टसंसारे।।२५।।

क्षेत्र परिवर्तन का स्वरूप

सव्वम्हि लोयखेत्ते कमसो तं णत्थि जं ण उप्पण्णं।
उग्गाहणेण बहुसो परिभमिदो खेत्तसंसारे।।२६।।

काल परिवर्तन का स्वरूप

अवसप्पिणिउस्सप्पिणिसमयावलियासु णिरवसेसासु।
जादो मुदो य बहुसो परिभमिदो कालसंसारे।।२७।।

भव परिवर्तन का स्वरूप

णिरयाउजहण्णादिसु जाव दु उवरिल्लया दु गेवेज्जा।
मिच्छत्तसंसिदेण दु बहुसो वि भवट्ठिदी भमिदो।।२८।।

सव्वे पयडिट्ठिदिओ अणुभागपदेसबंधठाणाणि।
जीवो मिच्छत्तवसा भमिदो पुण भावसंसारे।।२९।।

पुत्तकलत्तणिमित्तं अत्थं अज्जयदि पापबुद्धीए।
परिहरदि दयादाणं सो जीवो भमदि संसारे।।३०।।

मम पुत्तं ममभज्जा मम धणधण्णो त्ति तिव्वकंखाए।
चइऊण धम्मबुद्धिं पच्छा परिपडदि दीहसंसारे।।३१।।

मिच्छोदयेण जीवो णिंदंतो जेण्हभासियं धम्मं।
कुधम्मकुलिंगकुतित्थं मण्णंतो भमदि संसारे।।३२।।

हंतूण जीवरासिं महुमंसं सेविऊण सुरयाणं।
परदव्ववरकलत्तं गहिऊण य भमदि संसारे।।३३।।

जत्तेण कुणइ पावं विसयणिमित्तं च अहणिसं जीवो।
मोहंधयारसहिओ तेण दु परिपडदि संसारे।।३४।।

णिच्चिदरधादु सत्त यतरु दस वियलिंदिएसु छच्चेव।
सुरणिरयतिरियचउरो चोद्दस मणुए सदसहस्सा।।३५।।

संजोगविप्पजोगं लाहालाहं सुहं च दुक्खं च।
संसारे भूदाणं होदि हु माणं तहावमाणं च।।३६।।

कम्मणिमित्तं जीवो हिंडदि संसारघोरकंतारे।
जीवस्स ण संसारो णिच्चयणय कम्मणिम्मुक्को।।३७।।

संसारमदिक्कंतो जीवोवादेयमिदि विचिंतेज्जो।
संसारदुहक्कंतो जीवो सो हेयमिति विचिंतेज्जो।।३८।।

लोकानुप्रेक्षा

जीवादिपयत्थाणं समवाओ सो णिरुच्चए लोगो।
तिविहो हवेइ लोगो अहमज्झिमउड्ढभेएण।।३९।।

णिरया हवंति हेट्ठा मज्झे दीवंबुरासयो संखा।
सग्गो तिसट्ठिभेओ एत्तो उड्ढं हवे मोक्खो।।४०।।

स्वर्ग के त्रेशठ भेदों का वर्णन

इगतीस सत्त चत्तारि दोण्णि एक्केक्क छक्क चदुकप्पे।
तित्तिय एक्केक्कें दियणामा उड्ढआदि तेसट्ठी।।४१।।

असुहेण णिरयतिरियं सुहउवजोगेण दिविजणरसोक्खं।
सुद्धेण लहइ सिद्धिं एवं लोयं विचिंतिज्जो।।४२।।

अशुचित्वानुप्रेक्षा

अट्ठीहिं पडिबद्धं मंसविलित्तं तएण ओच्छण्णं।
किमिसंकुलेहिं भरियमचोक्खं देहं सयाकालं।।४३।।

दुग्गंधं बीभत्थं कलिमलभरिदं अचेयणं मुत्तं।
सडणप्पडणसहावं देहं इदि चिंतए णिच्चं।।४४।।

रसरुहिरमंसमेदट्ठीमज्जसंकुलं पुत्तपूयकिमिबहुलं।
दुग्गंधमसुचि चम्ममयमणिच्चमचेयणं पडणं।।४५।।

देहादो वदिरित्तो कम्मविरहिओ अणंतसुहणिलयो।
चोक्खो हवेइ अप्पा इदि णिच्चं भावणं कुज्जा।।४६।।

आस्त्रावानुप्रेक्षा

मिच्छतं अविरमणं कसायजोगा य आसवा होंति।
पण पण चउतियभेदा सम्मं परिकित्तिदा समए।।४७।।

मिथ्यात्व तथ अविरति के पांच भेद

एयंतविणयविवरियसंसयमण्णाणमिदि हवे पंच।
अविरमणं हिंसादी पंचविहो सो हवइ णियमेण।।४८।।

चार कषाय और तीन योग

कोहो माणो माया लोहो वि य चउव्विहं कसायं खु।
मण वचिकाएण पुणो जोगो तिवियप्पमिदि जाणे।।४९।।

असुहेदरभेदेण दु एक्केकं वण्णिदं हवे दुविहं।
आहारादी सण्णा असुहमणं इदि विजाणेहि।।५०।।

किण्हादि तिण्णि लेस्सा करणजसोक्खेसु गिद्धिपरिणामो।
ईसा विसादभावो असुहमणं त्ति य जिणा वेंति।।५१।।

रागो दोसो मोहो हास्सादि-णोकसायपरिणामो।
थूलो वा सुहुमो वा असुहमणे त्ति य जिणा वेंति।।५२।।

भत्तित्थिरायचोरकहाओ वयणं वियाण असुहमिदि।
बंधणछेदणमारणकिरिया सा असुहकायेत्ति।।५३।।

मोत्तूण असुहभावं पुव्वुत्तं णिरवसेसदो दव्वं।
वद समिदि-सील-संजम-परिणामं सुहमणं जाणे।।५४।।

संसारछेदकारणवयणं सुहवयणमिदि जिणुद्दिट्ठं।
जिणदेवादिसु पूजा सुहकायं त्ति य हवे चेट्ठा।।५५।।

जम्मसमुद्दे बहुदोस बीचिये दुक्खजलचराकिण्णे।
जीवस्स परिब्भमणं कम्मासवकारणं होदि।।५६।।

कम्मासवेण जीवो बूडदि संसारसागरे घोरे।
जं णाणवसं किरिया मोक्खणिमित्तं परंपरया।।५७।।

आसवहेदू जीवो जम्मसमुद्दे णिमज्जदे खिप्पं।
आसवकिरिया तह्मा मोक्खणिमित्तं ण चिंतेज्जो।।५८।।

पारंपज्जाएण दु आसवकिरियाए णत्थि णिव्वाणं।
संसारगमणकारणमिदि णिंदं आसवो जाण।।५९।।

पुव्वुत्तासवभेया णिच्छयणयएण णत्थि जीवस्स।
उहयासवणिम्मुक्कं अप्पाणं चिंतए णिच्चं।।६०।।

संवरानुप्रेक्षा

चलमलिनमगाढं च वज्जिय, सम्मत्तदिढकवाडेण।
मिच्छत्तासवदारणिरोहो होदित्ति जिणेहि णिद्दिट्ठं।।६१।।

पंचमहव्वयमणसा अविरमणणिरोहणं हवे णियमा।
कोहादि आसवाणं दाराणि कसायरहिय पलगेहि।।६२।।

सुहजोगस्स पवित्ती संवरणं कुणदि असुहजोगस्स।
सुहजोगस्स णिरोहो सुद्धुवजोगेण संभवदि।।६३।।

सुद्धुवजोगेण पुणो धम्मं सुक्कं च होदि जीवस्स।
तम्हा संवरहेदू झाणो त्ति विचिंतए णिच्चं।।६४।।

जीवस्स ण संवरणं परमत्थणएण सुद्धभावादो।
संवरभावविमुक्कं अप्पाणं चिंतए णिच्चं।।६५।।

निर्जरानुप्रेक्षा

बंधपदेसग्गलणं णिज्जरणं इदि जिणेहि पण्णत्तं।
जेण हवे संवरणं तेण दु णिज्जरणमिदि जाणे।।६६।।

सा पुण दुविहा णेया सकालपक्का तवेण कयमाणा।
चदुगदियाणं पढमा वयजुत्ताणं हवे विदिया।।६७।।

धर्मानुप्रेक्षा

एयारसदसभेयं धम्मं सम्मत्तपुव्वयं भणियं।
सागारणगाराणं उत्तमसुहसंपजुत्तेहिं।।६८।।

गृहस्थ के ग्यारह धर्म

दंसणवयसामाइयपोसहसच्चित्तरायभत्ते य।
बम्हारंभपरिग्गह अणुमणमुद्दिट्ठ देसविरदेदे।।६९।।

मुनिधर्म के दश भेद

उत्तमखममद्दवज्जवसच्चसउच्चं च संजमं चेव।
तवचागमकिंचण्हं बह्मा इदि दसविहं होदि।।७०।।

उत्तम क्षमा का लक्षण

कोहुप्पत्तिस्स पुणो बहिरंगं जदि हवेदि सक्खादं।
ण कुणदि किंचि वि कोहं तस्स खमा होदि धम्मो त्ति।।७१।।

मार्दव धर्म का लक्षण

कुलरूवजादिबुद्धिसु तपसुदसीलेसु गारवं किंचि।
जो ण वि कुव्वदि समणो मद्दवधम्मं हवे तस्स।।७२।।

आर्जव धर्म का लक्षण

मोत्तूण कुडिलभावं णिम्मलहिदएण चरदि जो समणो।
अज्जवधम्मं तइयो तस्स दु संभवदि णियमेण।।७३।।

सत्य धर्म का लक्षण

परसंतावयकारणवयणं मोत्तूण सपरहिदवयणं।
जो वददि भिक्खु तुरियो तस्स दु धम्मो हवे सच्चं।।७४।।

शौच धर्म का लक्षण

कंखाभावणिवित्तिं किच्चा वेरग्गभावणाजुत्तो।
जो वट्टदि परममुणी तस्स दु धम्मो हवे सोच्चं।।७५।।

संयम धर्म का लक्षण

वदसमिदिपालणाए दंडच्चाएण इंदियजएण।
परिणममाणस्स पुणो संजमधम्मो हवे णियमा।।७६।।

उत्तम तप का लक्षण

विसयकसायविणिग्गहभावं काऊण झाणसज्झाए।
जो भावइ अप्पाणं तस्स तवं होदि णियमेण।।७७।।

णिव्वेगतियं भावइ मोहं चइऊण सव्वदव्वेसु।
जो तस्स हवे चागो इदि भणिदं जिणवरिंदेहिं।।७८।।

आकिञ्जन्य धर्म का लक्षण

होऊण य णिस्संगो णियभावं णिग्गहित्तु सुहदुहदं।
णिद्दंदेण दु वट्टदि अणयारो तस्स किंचण्हं।।७९।।

ब्रह्मचर्य धर्म का लक्षण

सव्वंगं पेच्छंतो इत्थीणं तासु मुयदि दुब्भावं।
सो बह्मचेरभावं सक्कदि खलु दुद्धरं धरिदुं।।८०।।

सावयधम्मं चत्ता जदि धम्मे जो हु वट्टए जीवो।
सो ण य वज्जदि मोक्खं धम्मं इदि चिंतए णिच्चं।।८१।।

णिच्छयणएण जीवो सागारणगारधम्मदो भिण्णो।
मज्झत्थभावणाए सुद्धप्पं चिंतए णिच्चं।।८२।।

बोधिदुर्लभ भावना

उपज्जदि सण्णाणं जेण उवाएण तस्सुवायस्स।
चिंता हवेइ बोही अच्चंतं दुल्लहं होदि।।८३।।

कम्मुदयजपज्जया हेयं खाओवसमियणाणं खु।
सगदव्वमुवादेयं णिच्छत्ति होदि सण्णाणं।।८४।।

मूलुत्तरपयडीओ मिच्छत्तादी असंखलोगपरिमाणा।
परदव्वं सगदव्वं अप्पा इदि णिच्छयणएण।।८५।।

एवं जायदि णाणं हेयमुवादेय णिच्छये णत्थि।
चिंतिज्जइ मुणि बोहिं संसारविरमणट्ठे य।।८६।।

वारस अणुवेक्खाओ पच्चक्खाणं तहेव पडिक्कमणं।
आलोयणं समाहिं तम्हा भावेज्ज अणुवेक्खं।।८७।।

रत्तिदिवं पडिकमणं पच्चक्खाणं समाहिं सामइयं।
आलोयणं पकुव्वदि जदि विज्जदि अप्पणो सत्ती।।८८।।

मोक्खगया जे पुरिसा अणाइकालेण वारअणुवेक्खं।
परिभाविऊण सम्मं पणमामि पुणो पुणो तेसिं।।८६।।

किं पलविएण बहुणा, जे सिद्धा णरवरा गये काले।
सिज्झिहदि जेवि भविया तं जाणह तस्स माहप्पं।।६०।।

इदि णिच्छयववहारं जं भणियं कुन्दकुन्दमुणिणाहे।
जो भावइ सुद्धमणो सो पावइ परमणिव्वाणं।।६१।।

सिरि कुन्दकुन्दाइरियकदं

समयपाहुडं

पूर्वरंग

वंदित्तु सव्वसिद्धे धुवमचलमणोवमं गइं पत्ते।
वोच्छामि समयपाहुडमिणमो सुदकेवलीभणियं।।१।।

जीवो चरित्तदंसणणाणट्ठिउ तं हि ससमयं जाण।
पुग्गलकम्मपदेसट्ठियं च तं जाण परसमयं।।२।।

एयत्तणिच्छयगओ समओ सव्वत्थ सुंदरो लोए।
बंधकहा एयत्ते तेण विसंवादिणी होई।।३।।

सुदपरिचिदाणुभूया सव्वस्स वि कामभोगबन्धकहा।
एयत्तस्सुवलंभो णवरि ण सुलहो विहत्तस्स।।४।।

तं एयत्तविहत्तं दाएहं अप्पणो सविहवेण।
जदि दाएज्ज पमाणं चुक्किज्ज छलं ण घेत्तव्वं।।५।।

णवि होदि अप्पमत्तो ण पमत्तो जाणओ दु जो भावो।
एवं भणंति सुद्धं णाओ जो सो उ सो चेव।।६।।

ववहारेणुवदिस्सइ णाणिस्स चरित्त दंसणं णाणं।
णवि णाणं ण चरित्तं ण दंसणं जाणगो सुद्धो।।७।।

जह णवि सक्कमणज्जो अणज्जभासं विणा उ गाहेउं।
तह ववहारेण विणा परमत्थुवएसणमसक्कं।।८।।

जो हि सुएणहिगच्छइ अप्पाणमिणं तु केवलं सुद्धं।
तं सुयकेवलिमिसिणो भणंति लोयप्पईवयरा।।९।।

जो सुयणाणं सव्वं जाणइ सुयकेवलिं तमाहु जिणा।
णाणं अप्पा सव्वं जह्मा सुयकेवली तह्मा।।१०।।

णाणह्मि भावणा खलु कादव्वा दंसणे चरित्ते य।
ते पुण तिण्णिवि आदा तह्मा कुण भावणं आदे।।१०-१।।

जो आदभावणमिणं णिच्चुवजुत्तो मुणी समाचरदि।
सो सव्व-दुक्ख-मोक्खं पावदि अचिरेण कालेण।।१०-२।।

ववहारोऽभूयत्थो भूयत्थो देसिदो दु सुद्धणओ।
भूदत्थमस्सिदो खलु सम्माइट्ठी हवइ जीवो।।११।।

सुद्धो सुद्धादेसो णायव्वो परमभावदरिसीहिं।
ववहारदेसिदा पुण जे दु अपरमे ट्ठिदा भावे।।१२।।

भूयत्थेणाभिगदा जीवाजीवा य पुण्णपावं च।
आसवसंवरणिज्जर बंधो मोक्खो य सम्मत्तं।।१३।।

जो पस्सदि अप्पाणं अबद्धपुट्ठं अणण्णयं णियदं।
अविसेसमसंजुत्तं तं सुद्धणयं वियाणेहि।।१४।।

जो पस्सदि अप्पाणं अबद्धपुट्ठं अणण्णमविसेसं
अपदेस-सुत्त-मज्झं पस्सदि जिणसासणं सव्वं।।१५।।

दंसणणाणचरित्ताणि सेविदव्वाणि साहुणा णिच्चं।
ताणि पुण जाण तिण्णिवि अप्पाणं चेव णिच्छयदो।।१६।।

जह णाम को वि पुरिसो रायाणं जाणिऊण सद्दहदि।
तो तं अणुचरदि पुणो अत्थत्थीओ पयत्तेण।।१७।।

एवं हि जीवराया णादव्वो तह य सद्दहेदव्वो।
अणुचरिदव्वो य पुणो सो चेव दु मोक्खकामेण।।१८।।

कम्मे णोकम्मह्मि य अहमिदि अहकं च कम्म णोकम्मं।
जा एसा खलु बुद्धि अप्पडिबुद्धो हवदि ताव।।१९।।

जीवेव अजीवे वा संपदि समयम्हि जत्थ उवजुत्तो।
तत्थेव बंधमोक्खो हवदि समासेण णिद्दिट्ठो।।१९-१।।

जं कुणदि भावमादा कत्ता सो होदि तस्स भावस्स।
णिच्छयदो ववहारा पोग्गलकम्माण कत्तारं।।१९-२।।

अहमेदं एदमहं अहमेदस्सेव होमि मम एदं।
अण्णं जं परदव्वं सचित्ताचित्तमिस्सं वा।।२०।।

आसि मम पुव्वमेदं एदस्स अहंपि आसि पुव्वंहि।
होहिदि पुणोवि मज्झं एयस्स अहंपि होस्सामि।।२१।।

एयं तु असंभूदं आदवियप्पं करेदि संमूढो।
भूदत्थं जाणंतो ण करेदि दु तं असंमूढो।।२२।।

अण्णाणमोहिदमदी मज्झमिणं भणदि पुग्गलं दव्वं।
बद्धमबद्धं च तहा जीवो बहुभावसंजुत्तो।।२३।।

सव्वण्हुणाणदिट्ठो जीवो उवओगलक्खणो णिच्चं।
कह सो पुग्गलदव्वी-भूदो जं भणसि मज्झमिणं।।२४।।

जदि सो पुग्गलदव्वी-भूदो जीवत्तमागदं इदरं।
तो सत्तो वुत्तुं जे मज्झमिणं पुग्गलं दव्वं।।२५।।

जदि जीवो ण सरीरं तित्थयरायरियसंथुदी चेव।
सव्वाँवि हवदि मिच्छा तेण दु आदा हवदि देहो।।२६।।

ववहारणयो भासदि जीवो देहो य हवदि खलु इक्को।
ण दु णिच्छयस्स जीवो देहो य कदावि एकट्ठो।।२७।।

इणमण्णं जीवादो देहं पुग्गलमयं थुणित्तु मुणी।
मण्णदि हु संथुदो वंदिदो मए केवली भयवं।।२८।।

तं णिच्छये ण जुज्जदि ण सरीरगुणा हि होंति केवलिणो।
केवलिगुणे थुणदि जो सो तच्चं केवलिं थुणदि।।२९।।

णयरम्मि वण्णिदे जह ण वि रण्णो वण्णणा कदा होदि।
देहगुणे थुव्वंते ण केवलिगुणा थुदा होंति।।३०।।

जो इंदिये जिणित्ता णाणसहावाधियं मुणदि आदं।
तं खलु जिदिंदियं ते भणंति जे णिच्छिदा साहू।।३१।।

जो मोहं तु जिणत्ता णाणसहावाधियं मुणइ आदं।
तं जिदमोहं साहुँ परमट्ठवियाणया विंति।।३२।।

जिदमोहस्स दु जइया खीणो मोहो हविज्ज साहुस्स।
तइया हु खीणमोहो भण्णदि सो णिच्छयविदूहि।।३३।।

सव्वे भावे जम्हा पच्चक्खाई परेत्ति णादूणं।
तम्हा पच्चक्खाणं णाणं णियमा मुणेयव्वं।।३४।।

जह णाम कोवि पुरिसो परदव्वमिणंति जाणिदुं चयदि।
तह सव्वे परभावे णाऊण विमुञ्चदे णाणी।।३५।।

णत्थि मम को वि मोहो बुज्झदि उवओग एव अहमिक्को।
तं मोहणिम्ममत्तं समयस्स वियाणया विंति।।३६।।

णत्थि मम धम्मआदी बुज्झदि उवओग एव अहमिक्को।
तं धम्मणिम्ममत्तं समयस्स वियाणया विंति।।३७।।

अहमिक्को खलु सुद्धो, दंसणणाणमइओ सदारूवी।
णवि अत्थि मज्झ किंचिवि अण्णं परमाणुमित्तं पि।।३८।।

जीव अजीव अधिकार

अप्पाणमयाणंता मूढा दु परप्पवादिणो केई।
जीवं अज्झवसाणं कम्मं च तहा परूविंति।।३९।।

अवरे अज्झवसाणेसु तिव्वमंदाणुभागगं जीवं।
मण्णंति तहा अवरे णोकम्मं चावि जीवोत्ति।।४०।।

कम्मस्सुदयं जीवं अवरे कम्माणुभागमिच्छंति।
तिव्वत्तणमंदत्तणगुणेहिं जो सो हवदि जीवो।।४१।।

जीवो कम्मं उहयं दोण्णिवि खलु केवि जीवमिच्छंति।
अवरे संजोगेण दु कम्माणं जीवमिच्छंति।।४२।।

एवंविहा बहुविहा परमप्पाणं वंदति दुम्मेहा।
ते ण परमट्ठवाई णिच्छयवाईहिं णिद्दिट्ठा।।४३।।

एए सव्वे भावा पुग्गलदव्वपरिणामणिप्पण्णा।
केवलिजिणेहिं भणिया कह ते जीवो त्ति वुच्चंति।।४४।।

अट्ठविहं पि य कम्मं सव्वं पुग्गलमयं जिणा विंति।
जस्स फलं तं बुच्चइ दुक्खं ति विपच्चमाणस्स।।४५।।

ववहारस्स दरीसणमुवएसो वण्णिदो जिणवरेहिं।
जीवा एदे सव्वे अज्झवसाणादओ भावा।।४६।।

राया हु णिग्गदो त्तिय एसो बलसमुदयस्स आदेसो।
ववहारेण दु उच्चदि तत्थेक्को णिग्गदो राया।।४७।।

एमेव य ववहारो अज्झवसाणादिअण्णभावाणं।
जीवो त्ति कदो सुत्ते तत्थेको णिच्छिदो जीवो।।४८।।

अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं।
जाण अलिंगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं।।४९।।

जीवस्य णत्थि वण्णो णवि गंधो णवि रसो णवियं फासो।
ण वि रूवं ण सरीरं ण वि संठाणं ण संहणणं।।५०।।

जीवस्स णत्थि रागो णवि दोसो णेव विज्जदे मोहो।
णो पच्चया ण कम्मं णोकम्मं चावि से णत्थि।।५१।।

जीवस्स णत्थि वग्गो ण वग्गणा णेव फड्ढया केई।
णो अज्झप्पट्ठाणा णेव य अणुभागठाणाणि।।५२।।

जीवस्स णत्थि केई जोगट्ठाणा ण बंधठाणा वा।
णेव य उदयट्ठाणा ण मग्गणट्ठाणया केई।।५३।।

णो ठिदि बंधट्ठाणा जीवस्स ण संकिलेसठाणा वा।
णेव विसोहिट्ठणा णो संजमलद्धिठाणा वा।।५४।।

णेव य जीवट्ठाणा ण गुणट्ठाणा य अत्थि जीवस्स।
जेण दु एदे सव्वे पुग्गलदव्वस्स परिणामा।।५५।।

ववहारेण दु एदे जीवस्स हवंति वण्णमादीया।
गुणठाणंता भावा ण दु केई णिच्छयणयस्स।।५६।।

एएहिं य संबंधो जहेव खीरोदयं मुणेदव्वो।
ण य हुँति तस्स ताणि दु उवओगगुणाधिगो जम्हा।।५७।।

पंथे मुस्संतं पस्सिदूण लोगा भणंति ववहारी।
मुस्सदि एसो पंथो ण य पंथो मुस्सदे कोई।।५८।।

तह जीवे कम्माणं णोकम्माणं च पस्सिदुं वण्णं।
जीवस्स एस वण्णो जिणेहिं ववहारदो उत्तो।।५९।।

गंधरसफासरूवा देहो संठाणमाइया जे य।
सव्वे ववहारस्स य णिच्छयदण्हू ववदिसंति।।६०।।

तत्थभवे जीवाणं संसारत्थाण होंति वण्णादि।
संसारपमुक्काणं णत्थि हु वण्णादओ केई।।६१।।

जीवो चेव हि एदे सव्वे भावात्ति मण्णसे जदि हि।
जीवस्साजीवस्स य णत्थि विसेसो दु दे कोई।।६२।।

अह संसारत्थाणं जीवाणं तुज्झ होंति वण्णादी।
तम्हा संसारत्था जीवा रूवित्तमावण्णा।।६३।।

एवं पुग्गलदव्वं जीवो तहलक्खेण मूढमदी।
णिव्वाणमुवगदो वि य जीवत्तं पुग्गलो पत्तो।।६४।।

एक्कं च दोण्णि तिण्णि य चत्तारि य पंच इंदिया जीवा।
वादरपज्जत्तिदरा पयडीओ णामकम्मस्स।।६५।।

एदाहि य णिव्वत्ता जीवट्ठाणाड करणभूदाहिं।
पयडीहिं पुग्गलमईहिं ताहिं कहं भण्णदे जीवो।।६६।।

पज्जत्तापज्जत्ता जे सुहुमा बादरा य जे चेव।
देहस्स जीवसण्णा सुत्ते ववहारदो उत्ता।।६७।।

मोहणकम्मस्सुदया दु वण्णिया जे इमे गुणट्ठाणा।
ते कह हवंति जीवा जे णिच्चमचेदणा उत्ता।।६८।।

कर्त्ता-कर्म अधिकार

जाव ण वेदि विसेसंतरं तु आदासवाण दोह्मंपि।
अण्णाणी तावदु सो कोधादिसु वट्टदे जीवो।।६९।।

कोधादिसु वट्टंतस्स तस्स कम्मस्स संचओ होदि।
जीवस्सेवं बंधो भणिदो खलु सव्वदरसीहिं।।७०।।

जइया इमेण जीवेण अप्पणो आसवाण य तहेव।
णादं होदि विसेसंतरं तु तइया ण बंधो से।।७१।।

णादूण आसवाणं असुचित्तं च विवरीयभावं च।
दुक्खस्स कारणं ति य तदो णियत्तिं कुणदि जीवो।।७२।।

अहमिक्को खलु सुद्धो णिम्ममओ णाणदंसणसमग्गो।
तह्मि ठिओ तच्चित्तो सव्वे एए खयं णेमि।।७३।।

जीवणिबद्धा एए अधुव अणिच्चा तहा असरणा य।
दुक्खा दुक्खफलात्ति य णादूण णिवत्तए तेहिं।।७४।।

कम्मस्स य परिणामं णोकम्मस्स य तहेव परिणामं।
ण करेइ एयमादा जो जाणदि सो हवदि णाणी।।७५।।

णवि परिणमइ ण गिह्णइ उप्पज्जइ ण परदव्वपज्जाए।
णाणी जांणतो वि हु पुग्गलकम्मं अणेविहं।।७६।।

ण वि परिणमदि ण गिह्णदि उप्पज्जदि ण परदव्वपज्जाए।
णाणी जांणतो वि हु सगपरिणामं अणेयविहं।।७७।।

ण वि परिणमदि ण गिह्णदि उप्पज्जदि ण परदव्वपज्जाए।
णाणी जाणंतो वि हु पुग्गलकम्मप्फलमणंतं।।७८।।

णवि परिणमदि ण गिह्णदि उप्पज्जदि ण परदव्वपज्जाए।
पुग्गलदव्वं पि तहा परिणमइ सएहिं भावेहिं।।७९।।

जीवपरिणामहेदुं कम्मत्तं पुग्गला परिणमंति।
पुग्गलकम्मणिमित्तं तहेव जीवो वि परिणमइ।।८०।।

णवि कुव्वइ कम्मगुणे जीवो कम्मं तहेव जीवगुणे।
अण्णोण्णणिमित्तेण दु परिणामं जाण दोह्मि।।८१।।

एएण कारणेण दु कत्ता आदा सएण भावेण।
पुग्गलकम्मकयाणं ण दु कत्ता सव्वभावाणं।।८२।।

णिच्छयणयस्स एवं आदा अप्पाणमेव हि करेदि।
वेदयदि पुणो तं चेव जाण अत्ता दु अत्ताणं।।८३।।

ववहारस्स दु आदा पुग्गलकम्मं करेदि णेयविहं।
तं चेव पुणो पेयइ पुग्गलकम्मं अणेयविहं।।८४।।

जदि पुग्गलकम्ममिणं कुव्वदि तं चेव वेदयदि आदा।
दो किरियावदिरित्तो पसज्जए सो जिणावमदं।।८५।।

जह्मा दु अत्तभावं पुग्गलभावं च दोवि कुव्वंति।
तेण दु मिच्छादिट्ठी दोकिरियावादिणो हुँति।।८६।।

मिच्छत्तं पुण दुविहं जीवमजीवं तहेव अण्णाणं।
अविरदि जोगो मोहो कोहादीया इमे भावा।।८७।।

पुग्गलकम्मं मिच्छं जोगो अविरदि अणाणमज्जीवं।
उवओगो अण्णाणं अविरइ मिच्छं च जीवो दु।।८८।।

उवओगस्स अणाई परिणामा तिण्ण मोहजुत्तस्स।
मिच्छत्तं अण्णाणं अविरदिभावो य णायव्वो।।८९।।

एएसु य उवओगो तिविहो सुद्धो णिरंजणो भावो।
जं सो करेदि भावं उवओगो तस्स सो कत्ता।।९०।।

जं कुणइ भावामादा कत्ता सो होदि तस्स भावस्स।
कम्मत्तं परिणमदे तह्मि सयं पुग्गलं दव्वं।।९१।।

परमप्पाणं कुव्वं अप्पाणं पि य परं करिंतो सो।
अण्णाणमओ जीवो कम्माणं कारगो होदि।।६२।।

परमप्पाणमकुव्वं अप्पाणं पि य परं अकुव्वंतो।
सो णाणमओ जीवो कम्माणमकाओ होदि।।६३।।

तिविहो एसुवओगो अप्पवियप्पं करेइ कोहोहं।
कत्ता तस्सुवओगस्स होइ सो अत्तभावस्स।।६४।।

तिविहो एसुवओगो अप्पवियप्पं करेदि धम्माई।
कत्ता तस्सुवओगस्स होदि सो अत्तभावस्स।।६५।।

एवं पराणि दव्वाणि अप्पयं कुणदि मंदबुद्धीओ।
अप्पाणं अवि य परं करेइ अण्णाणभावेण।।६६।।

एदेण दु सो कत्ता आदा णिच्छयविदूहिं परिकहिदो।
एवं खलु जो जाणदि सो मुच्चदि सव्वकत्तित्तं।।६७।।

ववहारेण दु आदा करेदि घडपडरथाणि दव्वाणि।
करणाणि य कम्माणि य णोकम्माणीह विविहाणि।।६८।।

जदि सो परदव्वाणि य करिज्ज णियमेण तम्मओ होज्ज।
जह्मा ण तम्मओ तेण सो ण तेसिं हवदि कत्ता।।६९।।

जीवो ण करेदि घडं णेव पडं णेव सेसगे दव्वे।
जोगुवओगा उप्पादगा य तेसिं हवदि कत्ता।।१००।।

जे पुग्गलदव्वाणं परिणामा होंति णाणआवरणा।
ण करेदि ताणि आदा जो जाणदि सो हवदि णाणी।।१०१।

जं भावं सुहमसुहं करेदि आदा स तस्सु खलु कत्ता।
तं तस्स होदि कम्मं सो तस्स दु वेदगो अप्पा।।१०२।।

जो जह्मि गुणे दव्वे सो अण्णह्मि दु ण संकमदि दव्वे।
सो अण्णमसंकंतो कह तं परिणमएँ दव्वं।।१०३।।

दव्वगुणस्स य आदा ण कुणदि पुग्गलमयम्हि कम्मम्हि।
तं उभयमकुव्वंतो तम्हि कहं तस्स सो कत्ता।।१०४।।

जीवम्हि हेदुभूदे बंधस्स दु पस्सिदूण परिणामं।
जीवेण कदं कम्मं भण्णदि उवयारमत्तेण।।१०५।।

जोधेहिं कदे जुद्धे राएण कदंति जंपदे लोगो।
तह ववहारेण कदं णाणावरणादि जीवेण।।१०६।।

उत्पादेदि करेदि य बंधदि परिणामएदि गिण्हदि य।
आदा पुग्गलदव्वं ववहारणयस्स वत्तव्वं।।१०७।।

जह राया ववहारा दोसगुणुप्पादगोत्ति आलविदो।
तह जीवो ववहारा दव्वगुणुप्पादगो भणिदो।।१०८।।

सामण्णपच्चया खलु चउरो भण्णंति बंधकत्तारो।
मिच्छत्तं अविरमणं कसायजोगा य बोद्धव्वा।।१०९।।

तेसिं पुणोवि य इमो भणिदो भेदो दु तेरसवियप्पो।
मिच्छादिट्ठीआदि जाव सजोगिस्स चरमंतं।।११०।।

एदे अचेदणा खलु पुग्गलकम्मुदयसंभवा जम्हा।
ते जदि करंति कम्मं णवि तेसिं वेदगो आदा।।१११।।

गुणसण्णिदा दु एदे कम्मं कुव्वंति पच्चया जह्मा।
तह्मा जीवोऽकत्ता गुणा य कुव्वंति कम्माणि।।११२।।

जह जीवस्स अणण्णुवओगो कोहो वि तह जदि अणण्णो।
जीवस्साजीवस्स य एवमणण्णत्तमावण्णं।।११३।।

एवमिह जो दु जीवो सो चेव दु णियमदो तहाजीवो।
अयमेयत्ते दोसो पच्चयणोकम्मकम्माणं।।११४।।

अह दे अण्णो कोहो अण्णुवओगप्पगो हवदि चेदा।
जह कोहो तह पच्चय कम्मं णोकम्ममवि अण्णं।।११५।।

जीवे ण सयं बद्धं ण सयं परिणमदि कम्मभावेण।
जइ पुग्गलदव्वमिणं अप्परिणामी तधा होदि।।११६।।

कम्मइयवग्गणासु य अपरिणमंतीसु कम्मभावेण।
संसारस्स अभावो पसज्जदे संखसमओ वा।।११७।।

जीवो परिणामयदे पुग्गलदव्वाणि कम्मभावेण।
ते सयमपरिणमंते कहं णु परिणामयदि चेदा।।११८।।

अह सयमेव हि परिणमदि कम्भावेण पुग्गलं दव्वं।
जीवो परिणामयदे कम्मं कम्मत्तमिदि मिच्छा।।११९।।

णियमा कम्मपरिणदं कम्मं चि य होदि पुग्गलं दव्वं।
तह तं णाणावरणाइपरिणदं मुणसु तच्चेव।।१२०।।

ण सयं बद्धो कम्मे ण सयं परिणमदि कोहमादीहिं।
जइ एस तुज्झ जीवो अप्परिणामी तदा होदि।।१२१।।

अपरिणमंतम्हि सयं जीवो कोहादिएहिं भावेहिं।
संसारस्स अभावो पसज्जदे संखसमओ वा।।१२२।।

पुग्गलकम्मं कोहो जीवं परिणामएदि कोहत्तं।
तं सयमपरिणमंतं कहं णु परिणामयदि कोहो।।१२३।।

अह सयमप्पा परिणमदि कोहभावेण एस दे बुद्धी।
कोहो परिणामयदे जीवं कोहत्तमिदि मिच्छा।।१२४।।

कोहवजुत्तो कोहो माणुवजुत्तो य माणमेवादा।
माउवजुत्तो माया लोहुवजुत्तो हवदि लोहो।।१२५।।

जं कुणदि भावमादा कत्ता सो होदि तस्स कम्मस्स।
णाणिस्स स णाणमओ अण्णाणमओ अणाणिस्य।।१२६।।

अण्णाणमओ भावो अणाणिणो कुणदि तेण कम्माणि।
णाणमओ णाणिस्स दु ण कुणदि तह्मा दु कम्माणि।।१२७।।

णाणमया भावाओ णाणमओ चेव जायदे भावो।
जम्हा तम्हा णाणिस्स सव्वे भावा हु णाणमया।।१२८।।

अण्णाणमया भावा अण्णाणो चेव जायए भावो।
जम्हा तम्हा भावा अण्णाणमया अणाणिस्स।।१२९।।

कणयमया भावादो जायंते कुंण्डलादयो भावा।
अयमयया भावादो जह जायंते दु कडयादी।।१३०।।

अण्णाणमया भावा अणाणिणो बहुविहा वि जायंते।
णाणिस्स दु णाणमया सव्वे भावा तहा होंति।।१३१।।

अण्णाणस्स सु उदओ जं जीवाणं अतच्चउवलद्धी।
मिच्छत्तस्स दु उदओ जीवस्स असद्दहाणत्तं।।१३२।।

उदओ असंजमस्स दु जं जीवाणं हवेइ अविरमणं
जो दु कलुसोवओगो जीवाणं सो कसाउदओ।।१३३।।

तं जाण जोगउदयं जो जीवाणं तु चिट्ठउच्छाहो।
सोहणमसोहणं वा कादव्वो विरदिभावो वा।।१३४।।

एदेसु हेदुभुदेसु कम्मइयवग्गणागयं जं तु।
परिणमदे अट्ठविहं णाणावरणादिभावेहिं।।१३५।।

तं खलु जीवणिबद्धं कम्मइयवग्गणागदं जइया।
तइया दु होदि हेदू जीवो परिणामभावाणं।।१३६।।

जीवस्स दु कम्मेण य सह परिणामा दू होंति रागादि।
एवं जीवो कम्मं च दोवि रागादिमावण्णा।।१३७।।

एकस्स दु परिणामो जायदि जीवस्स रागमादीहिं।
ता कम्मोदयहेदूहिं विणा जीवस्स परिणामो।।१३८।।

जइ जीवेण सहच्चिय पुग्गलदव्वस्स कम्मपरिणामो।
एवं पुग्गलजीवा हु क्षेवि कम्मत्तमावण्णा।।१३९।।

एकस्स दु परिणामो पुग्गलदव्वस्स कम्मभावेण।
ता जीवभावहेदूहिं विणा कम्मस्स परिणामो।।१४०।।

जीवे कम्मं बद्धं पुट्ठं चेदि ववहारणयभणिदं।
सुद्धणयस्स दु जीवे अबद्धपुट्ठं हवइ कम्मं।।१४१।।

कम्मं बद्धमबद्धं जीवे एवं तु जाण णयपक्खं।
पक्खातिदक्कंतो पुण यंण्णदि जो सो समयसारो।।१४२।।

दोण्हवि णयाण भणियं जाणइ णवरिं तु समयपडिबद्धो।
ण दु णयपक्खं गिण्हदि किंचिवि णयपक्खपरिहीणो।।१४३।।

सम्मद्दंसणणाणं एदं लहदित्ति णवरि ववदेसं।
सव्वणयपक्खरहिदो भणिदो जो सो समयसारो।।१४४।।

पुण्य-पाप अधिकार

कम्ममसुहं कुसीलं सुहक्म्मं चावि जाणह सुसीलं।
किह तं होदि सुसीलं जं संसारं पवेसेदि।।१४५।।

सौवण्णियं पि णियलं बंधदि कालायसं पि जह पुरिसं।
बंधदि एवं जीवं सुहमसुहं वा कदं कम्मं।।१४६।।

तह्मा दु कुसीलेहिय रायं मा कुणह मा व संसग्गं।
साधीणो हि विणासो कुसीलसंसग्ग रायेण।।१४७।।

जह णाम कोवि पुरिसो कुच्छियसीलं जणं वियाणित्ता।
वज्जेदि तेण समयं संसग्गं रायकरणं च।।१४८।।

एमेव कम्मपयडी सीलसहावं चि कुच्छिदं णाउं।
वज्जंति परिहरंति य तस्संसग्गं सहावरया।।१४९।।

रत्तो बंधदि कम्मं मुञ्चदि जीवो विरागसंपण्णो।
एसो जिणोवदेशो तह्मा कम्मेसु मा रज्ज।।१५०।।

परमट्ठो खलु समओ सुद्धो जो केवली मुणी णाणी।
तह्मि ट्ठिदा सहावे मुणिणो पावंति णिव्वाणं।।१५१।।

परमट्ठम्मि दु अठिदो जो कुणदि तवं वदं च धारेई।
तं सव्वं बालतवं बालवदं विंति सव्वण्हू।।१५२।।

वदणियमाणि धरंता सीलाणि तहा तवं च कुव्वंता।
परमट्ठबाहिरा जे णिव्वाणं ते ण विंदंति।।१५३।।

परमट्ठबाहिरा जे ते अण्णाणेण पुण्णमिच्छंति।
संसारगमणहेदुं वि मोक्खहेउं अजाणंता।।१५४।।

जीवादीसद्दहणं सम्मत्तं तेसिमधिगमो णाणं।
रायादीपरिहरणं चरणं एसो दु मोक्खपहो।।१५५।।

मोत्तूण णिच्छयट्ठं ववहारेण विदुसा पवट्टंति।
परमट्ठमस्सिदाण दु जदीण कम्मक्खओ विहिओ।।१५६।।

वत्थस्स सेदभावो जह णासेदि मलमेलणासत्तो।
मिच्छत्तमलोच्छण्णं तह सम्मत्तं खु णायव्वं।।१५७।।

वत्थस्स सेदभावो जह णासेदि मलमेलणासत्तो।
अण्णाणमलोच्छण्णं तह णाणं होदि णायव्वं।।१५८।।

वत्थस्स सेदभावो जह णासेदि मलमेलणासत्तो।
कसायमलोच्छण्णं तह चारित्तं पि णादव्वं।।१५९।।

सो सव्वणाणदरिसी कम्मरएण णियेणवच्छण्णो।
संसारसमावण्णो ण विजाणदि सव्वदो सव्वं।।१६०।।

सम्मत्तपडिणिबद्धं मिच्छत्तं जिणवरेहि परिकहियं।
तस्सोदयेण जीवो मिच्छादिट्ठित्ति णायव्वो।।१६१।।

णाणस्स पडिणिबद्धं अण्णाणं जिणवरेहि परिकहियं।
तस्सोदयेण जीवो अण्णाणी होदि णायव्वो।।१६२।।

चारित्तपडिणिबद्धं कसायं जिणवरेहि परिकहियं।
तस्सोदयेण जीवो अचरित्तो होदि णायव्वो।।१६३।।

आश्रव अधिकार

मिच्छत्तं अविरमणं कसायजोगा य सण्णसण्णा दु।
बहुविहभेया जीवे तस्सेव अणण्णपरिणामा।।१६४।।

णाणावरणादीयस्स ते दु कम्मस्स कारणं होंति।
तेसिंपि होदि जीवो य रागदोसादिभावकरो।।१६५।।

णत्थि दु आसवबन्धो सम्मादिट्ठिस्स आसवणिरोहो।
संते पुव्वणिबद्धे जाणदि सो ते अबंधंतो।।१६६।।

भावो रागादिजुदो जीवेण कदो दु बंधगो भणिदो।
रागादिविप्पमुक्को अंबधगो जाणगो णवरिं।।१६७।।

पक्के फलम्मि पडिए जह ण फलं बज्झए पुणो विंटे।
जीवस्स कम्मभावे पडिए ण पुणोदयमुवेई।।१६८।।

पुढवीपिंडसमाणा पुव्वणिबद्धा दु पच्चया तस्स।
कम्मसरीरेण दु ते बद्धा सव्वे मि णाणिस्स।।१६९।।

चउविह अणेयभेयं बंधंते णाणदंसणगुणेहिं।
समये समये जह्मा तेण अबंधोत्ति णाणी दु।।१७०।।

जह्मा दु जहण्णादो णाणगुणादो पुणोवि परिणमदि।
अण्णत्तं णाणगुणो तेण दु सो बंधगो भणिदो।।१७१।।

दंसणणाणचरित्तं जं परिणमदे जहण्णभावेण।
णाणी तेण दु बज्झदिं पुग्गलकम्मेण विविहेण।।१७२।।

सव्वे पुव्वणिबद्धा दु पच्चया संति सम्मदिट्ठिस्स।
उवओगप्पाओगं बंधंते कम्मभावेण।।१७३।।

संति दु णिरुवभोज्जा बाला इत्थी जहेव पुरिसस्स।
बंधदि ते उवभोज्जे तरुणी इत्थी जह णरस्स।।१७४।।

होदूण णिरुवभोज्जा तह बंधदि जह हवंति उवभोज्जा।
सत्तट्ठविहा भूदा णाणावरणादिभावेहिं।।१७५।।

एदेण कारणेण दु सम्मादिट्ठि अबंधगो होदि (भणिदो)।
आसवभावाभावे ण पच्चया बंधगा भणिदा।।१७६।।

रागो दोसषो मोहो य आसवा णत्थि सम्मदिट्ठिस्स।
तह्मा आसवभावेण विणा हेदू ण पच्चया होंति।।१७७।।

हेदू चदुव्वियप्पो अट्ठवियप्पस्स कारणं भणिदं।
तेसिं पि य रागादी तेसिमभावे ण बज्झंति।।१७८।।

जह पुरिसेणाहारो गहिओ परिणमइ सो अणेयविहं।
मंसवसारुहिरादी भावे उयरग्गिसंजुत्तो।।१७९।।

तह णाणिस्स दु पुव्वं जे बद्धा पच्चया बहुवियप्पं।
बज्झंते कम्मं ते णयपरिहीणा उ ते जीवा।।१८०।।

संवर अधिकार

उवओए उवओगो कोहादिसु णत्थि को वि उवओगो।
कोहे कोहो चेव हि उवओगे णत्थि खलु कोहो।।१८१।।

अट्ठवियप्पे कम्मे णोकम्मे चावि णत्थि उवओगो।
उवओगह्मि य कम्मं णोकम्मं चावि णो अत्थि।।१८२।।

एयं तु अविवरीदं णाणं जइया दु होदि जीवस्स।
तइया ण किंचि कुव्वदि भावं उवओगसुद्धप्पा।।१८३।।

जह कणयमग्गितवियं पि कणयसहावं ण तं परिच्चयइ।
तह कम्मोदयतविदो ण जहदि णाणी उ णाणित्तं।।१८४।।

एवं जाणइ णाणी अण्णाणी मुणदि रायमेवादं।
अण्णाणतमोच्छण्णो आदसहावं अयाणंतो।।१८५।।

सुद्धं तु वियाणंतो शुद्धं चेवप्पयं लहदि जीवो।
जाणंतो दु असुद्धं असुद्धमेवप्पयं लहइ।।१८६।।

अप्पाणमप्पणा रुंधिऊण दो पुण्णपावजाऐसु।
दंसणणाणह्मि ठिदो इच्छाविरणो य अण्णह्मि।।१८७।।

जो सव्वसंगमुक्को झायदि अप्पाणमप्पणो अप्पा।
ण वि कम्मं णोकम्मं चेदा चेयेइ एयत्तं।।१८८।।

अप्पाणं झायंतो दंसणणाणमओ अणण्णमओ।
लहइ अचिरेण अप्पाणमेव सो कम्मपविमुक्कं।।१८९।।

तेसिं हेअ भणिदा अज्झवसाणाणि सव्वदरसीहिं।
मिच्छत्तं अण्णाणं अविरयिभावो य जोगो य।।१९०।।

हेउअभावे णियमा जायदि णाणिस्स आसवणिरोहो।
आसवभावेण विणा जायदि कम्मस्स वि णिरोहो।।१९१।।

कम्मस्साभावेण य णोकम्माणं पि जायइ णिरोहो।
णोकम्मणिरोहेण य संसारणिरोहणं होइ।।१९२।।

निर्जरा अधिकार

उवभोगमिन्दियेहिं दव्वाणमचेदणाणमिदराणं।
जं कुणदि सम्मदिट्ठी तं सव्वं णिज्जरणिमित्तं।।१९३।।

दव्वे उवभुज्जंते णियमा जायदि सुहं वा दुक्खं वा।
तं सुहदुक्खमुदिण्णं वेददि अह णिज्जरं जादि।।१९४।।

जह विसमुवभुज्जन्तो वेज्जो पुरिसो ण मरणमुवयादि।
पुग्गलकम्मस्सुदयं तह भुञ्जदि णेव वज्झए णाणी।।१९५।।

जह मज्जं पिवमाणो अरदिभावेण मज्जदि ण पुरिसो।
दव्वुवभोगो अरदो णाणी वि ण वज्झदि तहेव।।१९६।।

सेवंतोवि ण सेवदि असेवमाणोवि सेवगो कोइव।
पगरणचेट्ठा कस्सवि ण य पायरणोत्ति सो होइ।।१९७।।

उदयविवागो विविहो कम्माणं वण्णिओ जिणवरेहिं।
ण दु ते मज्झ सहावा जाणगभावो दु अहमिक्को।।१९८।।

पुग्गलकम्मं रागो तस्स विवागोदओ हवदि एसो।
ण दु एस मज्झ भावो जाणगभावो हु अहमिक्को।।१६६।।

एवं सम्मादिट्ठी अप्पाणं मुणदि जाणयसहावं।
उदयं कम्मविवागं य मुअदि तच्चं वियाणंतो।।२००।।

परमाणुमित्तयं पि हु रायादीणं तु विज्जदे जस्स।
णवि सो जाणदि अप्पाणयं तु सव्वागमधरोवि।।२०१।।

अप्पाणमयाणंतो अणप्पयं चावि सो अयाणंतो।
कह होदि सम्मदिट्ठी जीवाजीवे अयाणंतो।।२०२।।

आदह्मि दव्वभावे अपदे मोत्तूण गिण्ह तह णियदं।
थिरमेगमिमं भावं उवलब्भंतं सहावेण।।२०३।।

आभिणिसुदोहिमणकेवलं च तं होदि एक्कमेव पदं।
सो एसो परमट्ठो जं लहिदुं णिव्वुदिं जादि।।२०४।।

णाणगुणेण विहीणा एयं तु पयं बहुवि ण लहंति।
तं गिण्ह णियदमेदं जदि इच्छसि कम्मपरिमोक्खं।।२०५।।

एदह्मि रदो णिच्चं संतुट्ठो होहि णिच्चमेदह्मि।
एदेण होहि तित्तो होइदि तुह उत्तमं सोक्खं।।२०६।।

को णाम भणिज्ज बुहो परदव्वं मम इमं हवदि दव्वं।
अप्पाणमप्पणो परिग्गहं तु णियदं वियाणंतो।।२०७।।

मज्झं परिग्गहो जइ तदो अहमजीवदं तु गच्छेज्ज।
णादेव अहं जह्मा तह्मा ण परिग्गहो मज्झ।।२०८।।

छिज्जदु वा भिज्जदु वा णिज्जदु वा अहव जादु विप्पलयं।
जह्मा तह्मा गच्छदु तहहावि ण परिग्गहो मज्झं।।२०६।।

अपरिग्गहो अणिच्छो भणिदो णाणी य णिच्छदे धम्मं।
अपरिग्गहो दु धम्मस्स जाणगो तेण सो होइ।।२१०।।

अपरिग्गहो अणिच्छो भणिदो णाणी य गिच्छदि अधम्मं।
अपरिग्गहो अधम्मस्स जाणगो तेण सो होदि।।२११।।

अपरिग्गहो अणिच्छो भणिदो णाणी य णिच्छदे असणं।
अपरिग्गहो दु असणास्स जाणगो तेण सो होदि।।२१२।।

अपरिग्गहो अणिच्छो भणिदो णाणी य णिच्छदे पाणं।
अपरिग्गहो दु पाणस्स जाणगो तेण सो होदि।।२१३।।

एमादिए दु विविहे सव्वे भावे य णेच्छदे णाणी।
जाणगभावो णियदो णिरालंबो दु सव्वत्थ।।२१४।।

उप्पण्णोदयभोगो विओबुद्धिए तस्स सो णिच्चं।
कंखामणागयस्स य उदयस्स ण कुव्वदे णाणी।।२१५।।

जो वेददि वेदिज्जदि समए समए विणस्सदे उहयं।
तं जाणगो दु णाणी उभयंपि ण कंखदि कयावि।।२१६।।

बंधुवभोगणिमित्ते अज्झवसाणोदएसु णाणिस्स।
संसारदेहविसएसु णेव उप्पज्जदे रागो।।२१७।।

णाणी रागप्पजहो सव्वदव्वेसु कम्ममज्झगदो।
णो लिप्पदि रजएण दु कद्दममज्झे जहा कणयं।।२१८।।

अण्णाणी पुण रत्तो सव्वदव्वेसु कम्ममज्झगदो।
लिप्पदि कम्मरएण दु कद्दममज्झे जहा लोहं।।२१९।।

भुञ्जंतस्स वि विविहे सच्चित्ताचित्तमिस्सिये दव्वे।
संखस्स सेदभावो ण वि सक्कदि किण्णगो काउं।।२२०।।

तह णाणिस्स वि विविहे सच्चित्ताचित्तमिस्सए दव्वे।
भुञ्जंतस्स वि णाणं ण सक्कमण्णाणदं णेदुं।।२२१।।

जइया स एव संखो सेदसहावं सयं पजहिदूण।
गच्छेज्ज किण्हभावं तइया सुक्कत्तणं पजहे।।२२२।।

तह णाणी वि हु जइया णाणसहावं तयं पजहिऊण।
अण्णाणेण परिणदो तइया अण्णाणदं गच्छे।।२२३।।

पुरिसो जह को वि इह वित्तिणिमित्तं तु सेवए रायं।
तो सो विदेदि राया विविहे भोगे सुहुप्पाए।।२२४।।

एमेव जीवपुरिसो कम्मरयं सेवदे सुहणिमित्तं।
तो सो विदेदि कम्मो विविहे भोगे सुहुप्पाए।।२२५।।

जह पुण सोच्चिय पुरिसो वित्तिणिमित्तं ण सेवदे रायं।
तो सो ण देदि राया विविहे भोगे सुहुप्पाए।।२२६।।

एमेव सम्मदिट्ठी विसयत्थं सेवदे ण कम्मरयं।
तो सो ण देहि कम्मो विविहे भोगे सुहुप्पाए।।२२७।।

सम्मादिट्ठी जीवा णिस्संका होंति णिब्भया तेण।
सत्तभयविप्पमुक्का जह्मा तह्मा दु णिस्संका।।२२८।।

जो चत्तारि वि पाये छिंददि ते कम्मबंधमोहकरे।
सो णिस्संको चेदा सम्मादिट्ठी मुणेयव्वो।।२२९।।

जो दुण करेदि कंखं कम्मफले तह सव्वधम्मेसु।
सो णिक्कंखो चेदा सम्मादिट्ठी मुणेयव्वो।।२३०।।

जो ण करेदि दुगुच्छं चेदा सव्वेसिमेव धम्माणं।
सो खलु णिव्विदिगिच्छो सम्मादिट्ठी मुणेयव्वो।।२३१।।

जो हवइ असम्मूढो चेदा सद्दिट्ठि सव्वभावेसु।
सो खलु अमूढदिट्ठी सम्मादिट्ठी मुणेयव्वो।।२३२।।

उम्मग्गं गच्छंतं संग पि मग्गे ठवेदि जो चेदा।
सो ठिदिकरणाजुत्तो सम्मादिट्ठी मुणेयव्वो।।२३४।।

जो कुणदि वच्छलत्तं तिण्हं साहूण मोक्खमग्गम्मि।
सो वच्छलभावजुदो सम्मादिट्ठी मुणेयव्वो।।२३५।।

विज्जारहमारुढो मणोरहपहेसु भमइ जो चेदा।
जो जिणणाणपहावी सम्मादिट्ठी मुणेयव्वो।।२३६।।

बंध अधिकार

जह णाम कोवि पुरिसो णेहभत्तो दु रेणुबहुलम्मि।
ठाणम्मि ठाइदूण य करेइ सत्थेहिं वायामं।।२३७।।

छिंददि भिंददि य तहा तालीतलकयलिवंसपिंडीओ।
सच्चित्ताचित्ताणं करेइ दव्वाणमुवघायं।।२३८।।

उवघायं कुव्वंतस्स तस्स णाणाविहेहि करणेहिं।
णिच्छयदो चिंतिज्ज हु किं पच्चयगो दु रयबंधो।।२३९।।

जो सो दु णेहभावो तह्मि णरे तेण तस्स रयबंधो।
णिच्छयदो विण्णेयं ण कायचेट्ठाहि सेसाहिं।।२४०।।

एवं मिच्छादिट्ठी वट्टंतो बहुविहासु चिट्ठासु।
रायाइ उवओगे कुव्वंतो लिप्पइ रयेण।।२४१।।

जह पुण सो चेव णरो णेहे सव्वह्मि अवणिये संते।
रेणुबहुलम्मि ठाणे करेदि सत्थेहिं वायामं।।२४२।।

छिंददि भिंददि य तहा तालीतलकयलिवंसपिंडीओ।
सच्चित्ताचित्ताणं करेइ दव्वाणमुवघायं।।२४३।।

उवघायं कुव्वंतस्स तस्स णाणाविहेहिं करणेहिं।
णिच्छयदो चिंतिज्ज हु किंपच्चयगो ण रयबंधो।।२४४।।

जो सो अहेणभावो तह्मि णरे तेण तस्सऽरयबंधो।
णिच्छयदो विण्णेयं ण कायचेट्ठाहिं सेसाहिं।।२४५।।

एवं सम्मादिट्ठी वट्टंतो बहुविहेसु जोगेसु।
अकरंतो उवओगे रागाइ ण लिप्पइ रयेण।।२४६।।

जो मण्णादि हिंसामि य हिंसिज्जामि य परेहिं सत्तेहिं।
सो मूढो अण्णाणी णाणी एत्तो दु विवरीदो।।२४७।।

आउक्खयेण मरणं जीवाणं जिणवरेहिं पण्णत्तं।
आउं ण हरेसि तुमं कह ते मरणं कयं तेसिं।।२४८।।

आउक्खयेण मरणं जीवाणं जिणवरेहिं पण्णत्तं।
आउं ना हरंति तुहं कह ते मरणं कयं तेहिं।।२४९।।

जो मण्णदि जीवेमि य जीविज्जामि य परेहिं सत्तेहिं।
सो मूढो अण्णाणी णाणी एत्तो दु विवरीदो।।२५०।।

आउदयेण जीवदि जीवो एवं भणंति सव्वण्हू।
आउं च ण देसि तुमं कहं तए जीवियं कयं तेसिं।।२५१।।

आउदयेण जीवदि जीवो एवं भणंति सव्वण्हू।
आउंचण दिंति तुहं कहं णु ते जीवियं कयं तेहिं।।२५२।।

जो अप्पणा दु मण्णदि दुःखिदसुहिदे करेमि सत्तेत्ति।
सो मूढो अण्णाणी णाणी एत्तो दु विवरीदो।।२५३।।

कम्मोदएण जीवा दुक्खिदसुहिदा हवंति जदि सव्वे।
कम्मं च ण देसि तुमं दुक्खिदसुहिदा कहं कया ते।।२५४।।

कम्मोदयेण जीवा दुक्खिदसुहिदा हवंति जदि सव्वे।
कम्मं च ण दिंति तुहं कदोसि कहं दुक्खिदो तेहिं।।२५५।।

कम्मोदएण जीवा दुःखिदसुहिदा हवंति जदि सव्वे।
कम्मं च ण दिंति तुहं कह तं सुहिदो कदो तेहिं।।२५६।।

जो मरइ जो य दुहिदो जायदि कम्मोदयेण सो सव्वो।
तह्मा दु मरिदो दे दुहाविदो चेदि ण हु मिच्छा।।२५७।।

जो ण मरदि ण य दुहिदो सोवि य कम्मोदयेण चेव खलु।
तह्मा ण मारिदो णो दुहाविदो चेदि ण हु मिच्छा।।२५८।।

एसा दु जा मई दे दुःखिदसुहिदे करेमि सत्तेत्ति।
एसा दे मूढमई सुहासुहं बंधए कम्मं।।२५९।।

दुक्खिदसुहिदे सत्ते करेमि ज एवमज्झवसिदं ते।
तं पावबंधगं वा पुण्णस्स वा बंधगं होदि।।२६०।।

मारिमि जीवावेमि य सत्ते जं एवमज्झवसिदं ते।
तं पावबंधगं वा पुण्णस्स व बंधगं होदि।।२६१।।

अज्झवसिदेण बंधो सत्ते मारेउ मा व मारेउ।
एसो बंधसमासो जीवाणं णिच्छयणयस्य।।२६२।।

एवमलिये अदत्ते अबंभचेरे परिग्गहे चेव।
कीरइ अज्झवसाणं जं तेण दु बज्झए पावं।।२६३।।

तहवि य सच्चे दत्ते बंभे अपग्गिहत्तणे चेव।
कीरइ अज्झवसाणं जं तेण दु बज्झए पुण्णं।।२६४।।

वत्थुं पडुच्च जं पुण अज्झवसाणं तु होइ जीवाणं।
ण यि वत्थुदो दु बंधो अज्झवसाणेण बंधोत्थि।।२६५।।

दुक्खिदसुहिदे जीवे करेमि बंधेमि तह विमोचेमि।
जा एसा मूढमइ णिरत्थ्या सा हु दे मिच्छा।।२६६।।

अज्झवसाणणिमित्तं जीवा बज्झंति कम्मणा जदि हि।
मुच्चंति मोक्खमग्गे ठिदा य ता किं करेसि तुमं।।२६७।।

सव्वे करेइ जीवो अज्झवसाणेण तिरियणेरयिये।
देवमणुये य सव्वे पुण्णं पावं च णेहविहं।।२६८।।

धम्माधम्मं च तहा जीवाजीवे अलोयलोयं च।
सव्वे करेंइ जीवो अज्झवसाणेण अप्पाणं।।२६९।।

एदाणि णात्थि जेसिं अज्झवसाणाणि एवमादीणि।
ते असुहेण सुहेण य कम्मेण मुणी ण लिप्पंति।।२७०।।

बुद्धी ववसाओवि य अज्झवसाणं मइ य विण्णाणं।
एक्कट्ठमेव सव्वं चित्तं भावो य परिणामो।।२७१।।

एवं ववहारणओ पडिसिद्धो जाण णिच्छयणयेण।
णिच्छयणयासिदा पुण मुणिणो पावंति णिव्वाणं।।२७२।।

वदसमिदीगुत्तीओ सीलतवं जिणवरेहि पण्णत्तं।
कुव्वंतोवि अभव्वो अण्णाणी मिच्छदिट्ठी दु।।२७३।।

मोक्खं असद्दहंतो अभवियसत्तो दु जो अधीएज्ज।
पाठो ण करेदि गुण असद्दहंतस्स णाणं तु।।२७४।।

सद्दहदि य पत्तियदि य, रोचेदि य तह पुणो य फासेदि।
धम्मं भोगणिमित्तं, ण दु सो कम्मक्खयणिमित्तं।।२७५।।

आयारादी णाणं जीवादी दंसणं च विण्णेयं।
छज्जीवणिकं च तहा भणइ चरित्तं तु ववहारो।।२७६।।

आदा खु मज्झ णाणं आदा मे दंसणं चरित्तं च।
आदा पच्चक्खाणं आदा मे संवरो जोगो।।२७७।।

जह फलिहमणी सुद्धो ण सयं परिणमइ रायमाईहि।
रंगिज्जदि अण्णेहिं दु सो रत्तादीहिं दव्वेहिं।।२७८।।

एवं णाणी सुद्धो ण सयं परिणमइ रायमाईहि।
राइज्जदि अण्णेहिं दु सो रत्तादीहिं दोसेहिं।।२७९।।

ण य रायदोसमोहं कुव्वदि णाणी कसायभावं वा।
सयमप्पणो ण सो तेण कारगो तेसि भावाणं।।२८०।।

रायह्मि य दोसह्मिय कसायकम्मेसु चेव जे भावा।
तेहिं दु परिणमंतो रायाई बंधदि पुणोवि।।२८१।।

रायह्मि य दोसह्मि य कसायकम्मेसु चेव जे भावा।
तेहिं दु परिणमंतो रायाई बंधदे चेदा।।२८२।।

अप्पडिक्कमणं दुविहं अपच्चक्खाणं तहेव विण्णेयं।
एएणुवएसेण य अकारओ वण्णिओ चेया।।२८३।।

अपडिक्कमणं दुविहं दव्वे भावे तहा अपच्चक्खाणं।
एएणुवएसेण य अकारओ वण्णिओ चेया।।२८४।।

जावं अपडिक्कमणं अपच्चक्खाणं च दव्वभावाणं।
कुव्वइ आदा तावं कत्ता सो होइ णायव्वो।।२८५।।

आधाकम्माईया पुग्गलदव्वस्स जे इमे दोसा।
कह ते कुव्वइ णाणी परदव्वगुणा उ जे णिच्चं।।२८६।।

आधाकम्मं उद्देसियं च पोग्गलमयं इमं दव्वं।
कह तं मम होइ कयं जं णिच्चमचेयणं उत्तं।।२८७।।

मोक्ष अधिकार

जह णाम कोवि पुरिसो बंधणयम्मि चिरकालपडिवद्धो।
तिव्वं मंदसहावं कालं च वियाणए तस्स।।२८८।।

जइ णवि कुणइ च्छेदं ण मुच्चदे तेण बंधणवसो सं।
कालेण हु बहुएणवि ण सो णरो पावइ विमोक्खं।।२८६।।

इय कम्मबंधणाणं पएसीहइपयडिमेवणुभागं।
जाणंतोवि ण मुच्चइ मुच्चइ सो चेव जइ सुद्धो।।२६०।।

जह बंधे चिंतंतो बंधणबद्धो ण पावइ विमोक्खं।
तह बंधे चिंतंतो जीवो वि ण पावइ विमोक्खं।।२६१।।

जह बंधे छित्तूण य बंधणबद्धो उ पावइ विमोक्खं।
तह बंधे छित्तूण य जीवो संपावइ विमोक्खं।।२६२।।

बंधाणं च सहावं वियाणिओ अप्पणो सहावं च।
बंधेसु जो विरज्जदि सो कम्मविमोक्खणं कुणइ।।२६३।।

जीवो बंधो य तहा छिज्जंति सलक्खणेहिं णियएहिं।
पण्णाछेदणएण उ छिण्णा णाणत्तमावण्णा।।२६४।।

जीवो बंधो य तहा छिज्जंति सलक्खणेहिं णियएहिं।
बंधो छेएदव्वो सुद्धो अप्पा य घेत्तव्वो।।२६५।।

कह सो घिप्पइ अप्पा पण्णाए सो उ घिप्पए अप्पा।
जह पण्णाइ विहत्तो तह पण्णाएव घित्तव्वो।।२६६।।

पण्णाए घित्तव्वो जो चेदा सो अहं तु णिच्छयदो।
अवसेसा जे भावा ते मज्झ परे त्ति णायव्वा।।२६७।।

पण्णाए घित्तव्वो जो दट्ठा सो अहं तु णिच्छयओ।
अवसेसा जे भावा ते मज्झ परे त्ति णायव्वा।।२६८।।

पण्णाए घित्तव्वो जो णादा सो अहं तु णिच्छयदो।
अवसेसा जे भावा तु मज्झ परे त्ति णादव्वा।।२६९।।

को णाम भणिज्ज बुहो णाउं सव्वे पराइए भावे।
मज्झमिणंति य वयणं जाणंतो अप्पयं सुद्धं।।३००।।

थेयाइ अवराहे कुव्वदि जो सो उसंकिदो भमई।
मा बज्झेज्जं केण वि चोरो त्ति जणम्मि वियरंतो।।३०१।।

जो ण कुणइ अवराहे सो णिस्संको दु जणवए भमदि।
ण वि तस्स वज्झिदुं जे चिंता उप्पज्जदि कयाइ।।३०२।।

एवंहि सावराहो वज्झामि अहं तु संकिदो चेया।
जइ पुण णिरवराहो णिस्संकोहं ण वज्झामि।।३०३।।

संसिद्धिराधसिद्धं साधियमाराधियं च एयट्ठं।
अवगयराधो जो खलु चेया सो होइ अवराधो।।३०४।।

जो पुण णिरवराधो चेया णिस्संकिओ उ सो होइ।
आराहणए णिच्चं वट्टेइ अहं ति जाणंतो।।३०५।।

पडिकमणं पडिसरणं परिहारो धारणा णियत्ती य।
णिंदा गरहा सोही अट्ठविहो होइ विसकुंभो।।३०६।।

अप्पडिकमणं अप्पडिसरणंअप्परिहारो अधारणा चेव।
अणियत्ती य अणिंदागरहासोही अमयकुंभो।।३०७।।

दवियं जं उप्पज्जइ गुणेहिं तं तेहि जाणसु अणण्णं।
जह कडयादीहिं दु पज्जएहिं कणयं अणण्णमिह।।३०८।।

जीवस्साजीवस्स दु जे परिणामा दु देसिया सुत्ते।
तं जीवमजीवं वा तेहिमणण्णं वियाणहि।।३०९।।

ण कुदोचि वि उप्पण्णो जह्मा कज्जं ण तेण सो आदा।
उप्पादेदि ण किंचि वि कारणमवि तेण ण स होइ।।३१०।।

कम्मं पडुच्च कत्ता कत्तारं तह पडुच्च कम्माणि।
उप्पज्जंति यणियमा सिद्धी दु ण दीसए अण्णा।।३११।।

चेया दु पयडिअट्ठं उप्पज्जइ विणस्सइ।
पयडीवि चेययट्ठं उप्पज्जइ विणस्सइ।।३१२।।

एवं बंधो उ दोण्हंपि अण्णोण्णप्पच्चया हवे।
अप्पणो पयडीए य संसारो तेण जायए।।३१३।।

जा एस पयडीयट्ठं चेयाणेव विमुञ्चए।
अयाणओ हवे ताव मिच्छाइट्ठी असंजओ।।३१४।।

जया विमुच्चए चेया कम्मटफलमणंतयं।
तया विमुत्तो हवइ जाणओ पासओ मुणी।।३१५।।

अण्णाणी कम्मफलं पयडिसहावट्ठिओ दु वेदेइ।
णाणी पुण कम्म्फलं जाणइ उदियं ण वेदेइ।।३१६।।

ण मुयइ पयडिमभव्वो सुट्ठु वि अज्झाइऊण सत्थाणि।
गुडदुद्धं पि पिवंता ण पण्णया णिव्विसा हुंति।।३१७।।

णिव्वेयसमावण्णो णाणी कम्मप्फलं वियाणेइ।
महुरं कडुयं बहुविहमवेयओ तेण सो होइ।।३१८।।

ण वि कुव्वइ ण वि वेयइ णाणी कम्माइं बहुपयाराइं।
जाणइ पुण कम्मफलं बंधं पुण्णं च पावं च।।३१९।।

दिट्ठी जहेव णाणं अकारयं तह अवेदयं चेव।
जाणदि य बंधमोक्खं कम्मुदयं णिज्जरं चेव।।३२०।।

लोयस्स कुणइ विण्हू सुरणारयतिरियमाणुसे सत्ते।
समणाणं पि य अप्पा जइ कुव्वइ छव्विहे काये।।३२१।।

लोगसमणाणमेयं सिद्धंतं जइ ण दीसइ विसेसो।
लोयस्स कुणइ विण्हू समणाण वि अप्पओ कुणइ।।३२२।।

एवं ण को वि मोक्खो दीसइ लोयसमणाण दोण्हं पि।
णिच्चं कुव्वंताणं सदेवमणुयासुरे लोए।।३२३।।

ववहारभासिएण उ परदव्वं मम भणंति अविदिदत्था।
जाणंति णिच्छयेण उ ण य मम परमाणुमिच्चमवि किंचि।।३२४।।

जह कोवि णरो जंपइ अम्हंगामविसयणयररट्ठं।
ण य होंति तस्स ताणि उ भणइ य मोहेण सो अप्पा।।३२५।।

एमेव मिच्छदिट्ठी णाणी णीस्संसयं हवइ एसो।
जो परदव्वं मम इदि जाणंतो अप्पयं कुणइ।।३२६।।

तम्हा ण मेत्ति णिच्चा दोण्हं विएयाण कत्तविवसायं।
परदव्वे जाणंतो जाणेज्जो दिट्ठिरहियाणं।।३२७।।

मिच्छत्तं जइ पयडी मिच्छाइट्ठी करेइ अप्पाणं।
तम्हा अचेदणा दे पयडी णणु कारगो पत्तो।।३२८।।

अहवा एसो जीवो पुग्गलदव्वस्स कुणइ मिच्छत्तं।
तम्हा पुग्गलदव्वं मिच्छाइट्ठी ण पुण जीवो।।३२९।।

अह जीवो पयडी तह पुग्गलदव्वं कुणंति मिच्छत्तं।
तम्हा दोहिं कदं तं दोण्णि वि भुंजंति तस्स फलं।।३३०।।

अह ण पयडी ण जीवो पुग्गलदव्वं करेदि मिच्छत्तं।
तम्हा पुग्गलदव्वं मिच्छत्तं तं तु ण हु मिच्छा।।३३१।।

कम्मेहिं दु अण्णाणी किज्जइ णाणी तहेव कम्मेहिं।
कम्मेहिं सुहाविज्जइ जग्गाविज्जइ तहेव कम्मेहिं।।३३२।।

कम्मेहिं सुहाविज्जइ दुक्खाविज्जइ तहेव कम्मेहिं।
कम्मेहिं य मिच्छत्तं णिज्जइ णिज्जइ असंजमं चेव।।३३३।।

कम्मेहि भमाडिज्जदि उड्ढमहो चावि तिरियलोयं च।
कम्मेहि चेव किज्जइ सुहासुइ जित्तियं किंचि।।३३४।।

जम्हा कम्मं कुव्वइ कम्मं देई हर त्ति जं किंचि।
तम्हा उ सव्वेजीवा अकारया हुंति आवण्णा।।३३५।।

पुरिसित्थियाहिलासी इत्थीकम्मं च पुरिसमहिमलसइ।
एसा आयरियपरंपरागया एरिसी दु सुई।।३३६।।

तम्हा ण कोवि जीवो अबंभचारी उ अहम् उवएसे।
जम्हा कम्मं चेव हि कम्मं अहिलसइ इदि भणियं।।३३७।।

जह्मा घाएइ परं परेण घादिज्जए य सा पयडी।
एएणच्छेण किर भण्णइ परघायणामित्ति।।३३८।।

तह्मा ण को वि जीवो उवयादओ अत्थि अह्म उवदेसे।
जह्मा कम्मं चेव हि कम्मं घाएदि इदि भणियं।।३३९।।

एवं संखुवएसं जे उ परुविंति एरिसं समणा।
तेसिं पयडी कुव्वइ अप्पा य अकारया सव्वे।।३४०।।

अहवा मण्णसि मज्झं अप्पा अप्पाणमप्पणो कुणई।
एसो मिच्छसहावो तुम्हं एयं मुणंतस्स।।३४१।।

अप्पा णिच्चोअसंखिज्जपदेसो देसिओ दु समयम्हि।
ण वि सो सक्कइ तत्तो हीणो अहियो य काउं जे।।३४२।।

जीवस्स जीवरूवं वित्थरदो जाण लोगमित्तं खु।
तत्तो सो किं हीणो अहिओ व कहं कुणइ दव्वं।।३४३।।

अह जाणओ उ भावो णाणसहावेण अत्थि इ त्ति मय।
तह्मा ण वि अप्पा अप्पयं तु समयप्पणो कुणइ।।३४४।।

केहिंचि दु पज्जयेहिं विणस्सए णेव केहिं चि दु जीवो।
जम्हा तम्हा कुव्वदि सो वा अण्णो व णेयंतो।।३४५।।

केहिंचि दु पज्जएहिं विणस्सए णेव केहिंचि दु जीवो।
जह्मा तह्मा कुवदि सो वा अण्णो व णेयंतो।।३४६।।

जो चेव कुणइ सो चिय ण वेयए जस्स एस सिद्धंतो।
सो जीवो णायच्वो मिच्छादिट्ठी अणारिहदो।।३४७।।

अण्णोकरेइ अण्णो परिभुंजइ जस्स एस सिद्धंतो।
सो जीवो णादव्वो मिच्छादिट्ठी अणारिहदो।।३४८।।

जह सिप्पिओ उकम्मं कुव्वइ ण य सो उ तम्मओ होइ।
तह जीवोवि य कम्मं कुव्वदि ण य तम्मओ होइ।।३४९।।

जह सिप्पिओ उ करणेहिं कुव्वइ णय सो उ तम्मओ होइ।
तह जीवो करणेहिं कुव्वइ ण य तम्मओ होइ।।३५०।।

जह सिप्पिओ दु करणाणि गिण्हइ ण य सो उ तम्मओ होइ।
तह जीवो करणाणि उ गिण्हइ ण य तम्मओ होइ।।३५१।।

जह सिप्पओ दु कम्मफलं भुजंदि णय सो उ तम्मओ होइ।
तह जीवो कम्मफलं भुंजइ ण य तम्मओ होइ।।३५२।।

एवं ववहारस्स उ वत्तव्वं दरिसणं समासेण।
सुणु णिच्छयस्स वयणं परिणामकयं तु जं होई।।३५३।।

जह सिप्पिओ उ चिट्ठं कुव्वइ हवइ य तहा अणण्णो से।
तह जीवो वि य कम्मं कुव्वइ हवइ य अणण्णो से।।३५४।।

जह चेट्ठं कुव्वंतो उ सिप्पिओ णिच्चदुक्खिओ होइ।
तत्तो सिया अणण्णो तह चेट्ठंतो दुही जीवो।।३५५।।

जह सेडिया दु ण परस्स सेडिया सेडिया य सा होइ।
तह जाणओ दु ण परस्स जाणओ जाणओ सो दु।।३५६।।

जह सेडिया दु ण परस्स सेडिया य सा होइ।
तह पासओ दु ण परस्स पासओ पासओ सो दु।।३५७।।

जह सेडिया दु ण परस्स सेडिया सेडिया दु सा होइ।
तह संजओ दु ण परस्स संजओ संजओ सो दु।।३५८।।

जह सेडिया दु ण परस्स सेडिया सेडिया दु सा होदि।
तह दंसंण दु ण परस्स दंसणं दंसणं तं तु।।३५६।।

एवं तु णिच्छयणयस्स भासियं णाणदंसण चरित्ते।
सुणु ववहारणयस्स य वत्तव्वं से समासेण।।३६०।।

जह परदव्वं सेडदि हु सेडिया अप्पणो सहावेण।
तह परदव्वं जाणइ णाया वि सयेण भावेण।।३६१।।

जह परदव्वं सेडदि हु सेडिया अप्पणो सहावेण।
तह परदव्वं पस्सइ जीवो वि सयेण भावेण।।३६२।।

जह परदव्वं सेडदि हु सेडिया अप्पणो सहावेण।
तह परदव्वं विजहइ णादया वि सयेण भावेण।।३६३।।

जह परदव्वं सेडदि हु सेडिया अप्पणो सहावेण।
तह परदव्वं सद्दहइ सम्मदिट्ठी सहावेण।।३६४।।

एवं ववहारस्स दु विणिच्छओ णाणदंसणचरित्ते।
भणिओ अण्णेसु वि पज्जएसु एमेव णायव्वो।।३६५।।

दसंणणाणचरित्तं किंचि वि णत्थि दु अचेयणे विसये।
तह्मा किं घादयदे चदेयिदा तेसु विसएसु।।३६६।।

दंसणणाणचरितं किंचिवि णत्थि दु अचेयणे कम्मे।
तह्मा किं घादयदे चेदयिदा तम्हि कम्मम्हि।।३६७।।

दंसणणाणचरित्तं किंचिविणत्थि दुअचेयणे काये।
तह्मा किं घादयदे चेदयिदा तेसु कायेसु।।३६८।।

णाणस्स दंसणस्स य भणिओ घाओ तहा चरित्तस्स।
ण वि तम्हि पुग्गलदव्वस्स कोऽवि घाओ उ णिद्दिट्ठो।।३६९।।

जीवस्स जे गुणा केईणत्थि खलु ते परेसु दव्वेसु।
तह्मा सम्माइट्ठिस्स णत्थि रागो उ विसएसु।।३७०।।

रागो दोसो मोहो जीवस्सेव य अणण्णपरिणामा।
एएण कारणेण उ सद्दादिसु णत्थि रागादी।।३७१।।

अण्णदविएण अण्णदवियस्स ण कीरए गुणुप्पओ।
तह्मा उ सव्वदव्वा उप्पज्जंते सहावेण।।३७२।।

णिंदियसंथुदवयणाणि पोग्गला परिणमंति बहुयाणि।
ताणि सुणिऊण रूसदि तूसदि य अहं पुणो भणिदो।।३७३।।

पोग्गलदव्वं सद्दत्तपरिणयं तस्स जइ गुणो अण्णो।
तह्मा ण तुमं भणिओ किंचि वि किं रूससि अबुद्धो।।३७४।।

असुहो सुहो व सद्दोणतं भणइ सुणसु मंति सो चेव।
ण य एइ विणिग्गहिउं सोंयविसय मागयं सद्दं।।३७५।।

असुहं सुहं च रुवं ण तं भणइ मिच्छ मंति सोचेव।
ण य एइ विणिग्गहिउं चक्खुविसयमागयं रुवं।।३७६।।

असुहो सुहो वगंधो ण तं भणइ जिग्घ मंति सो चेव।
णय एइ विणिग्गहिउं घाणविसयमागयं गंधं।।३७७।।

असुहो सुहो व रसो ण तं भणइ रसय मं ति सो चेव।
ण य एइ विणिग्गहिउं रसणविसयमागयं तु रसं।।३७८।।

असुहो सुहो व फासोण तं भणइ फुससु मंति सो चेव।
ण य एइ विणिग्गहिउं कायविसयमागयं फासं।।३७९।।

असुहो सुहो व गुणो णं त भणइ वुज्झ मंति सो चेव।
ण य एइ विणिग्गहिउं बुद्धिविसयमागयं तु गुणं।।३८०।।

असुहं सुहं वदव्वं ण तं भणइ बुज्झ मंति सो चेव।
ण य एइ विणिग्गहिउं बुद्धिविसयमागयं दव्वं।।३८१।।

एयं तु जाणिऊण उवसमं णेव गच्छई मूढो।
णिग्गहमणा परस्स य सयं च बुद्धिं सिवमपत्तो।।३८२।।

कम्मं जं पुव्वकयं सुहासुहमणेयवित्थर विसेसं।
तत्तो णियत्तए अप्पयं तु जो सो पडिक्कमणं।।३८३।।

कम्मं जं सुहमसुहं जह्मि य भावह्मि वज्झइ भविस्सं।
तत्तो णियत्तए जो सो पच्चखाणं हवइ चेया।।३८४।।

जं सुहमसुहमुदिण्णं संपडि य अणेयवित्थरविसेसं।
तं दोसं जो चेयइ सो खलु आलोयणं चेया।।३८५।।

णिच्चं पच्चक्खाणं, कुव्वइ णिच्चं य पडिक्कमदिजो।
णिच्चं आलोचेयइ सो हु चरित्तं हवइ चेया।।३८६।।

वेदंतो कम्मफलं अप्पाणं कुणइ जो दु कम्मफलं।
सो तं पुणोवि बंधइ वीयं दुक्खस्स अट्ठविहं।।३८७।।

वेदंतो कम्मफलं मए कमं मुणइ जो दु कम्मफलं।
सो तं पुणोवि बंधइ वीयं दुक्खस्स अट्ठविहं।।३८८।।

वेदंतो कम्मफलं सुहिदो दुहिदो य हवदि जो चेदा।
सो तं पुणोवि बंधइ वीयं दुक्खस्स अट्ठविहं।।३८९।।

सत्थं णाणं ण हवइ जह्मा सत्थं ण याणए किंचि।
तह्मा अण्णं णाणं अण्णं सत्थं जिणा विंति।।३९०।।

सद्दो णाणं ण हवइ जह्मा सद्दो ण याणए किंचि।
तह्मा अण्णं णाणं अण्णं सद्दं जिणा विंति।।३९१।।

रुवं णाणं ण हवइ जह्मा रुवं ण याणए किंचि।
तह्मा अण्णं णाणं अण्णं रुवं जिणा विंति।।३६२।।

वण्णो णाणं ण हवइ जह्मा वण्णो ण याणए किंचि।
तह्मा अण्णं णाणं अण्णं वण्णं जिणा विंति।।३६३।।

गंधो णाणं ण हवइ जह्मा गंधो ण याणए किंचि।
तह्मा अण्णं णाणं अण्णं गंधं जिणा विंति।।३६४।।

ण रसो दु हवदि णाणं जह्मा दु रसोण या णए किंचि।
तह्मा अण्णं णाणं रसं य अण्णं जिणा विंति।।३६५।।

फासो ण हवइ णाणं जह्मा फासो ण याणए किंचि।
तह्मा अण्णं णाणं अण्णं फासं जिणा विंति।।३६६।।

कम्मं णाणं ण हवइ जह्मा कम्मं ण याणए किंचि।
तह्मा अण्णं णाणं अण्णं कम्मं जिणा विंति।।३६७।।

धम्मो णाणं ण हवइ जह्मा धम्मो ण याणए किंचि।
तह्मा अण्णं णाणं अण्णं धम्मं जिणा विंति।।३६८।।

णाणमधम्मो ण हवइ जह्माधम्मो ण याणए किंचि।
तह्मा अण्णं णाणं अण्णमधम्मं जिणा विंति।।३६९।।

कालो णाणं ण हवइ जह्मा कालो ण याणए किंचि।
तह्मा अण्णं णाणं अण्णं कालं जिणा विंति।।४००।।

आयासंपि ण णाणं जह्मा यासं ण याणए किंचि।
तह्मायासं अण्णं अण्णं णाणं जिणा विंति।।४०१।।

णज्झवसाणं णाणं अज्जवसाणंअचेदणं जह्मा।
तह्मा अण्णं णाणं अज्झवसाणं तहा अण्णं।।४०२।।

जह्मा जाणइ णिच्चं तह्मा जीवो दु जाणओ णाणी।
णाणं च जाणयादो अव्वदिरित्तं मुणेयव्वं।।४०३।।

णाणं सम्मादिट्ठिं दु संजमं सुत्तमगंपुव्वगयं।
धम्माधम्मं च तहा पव्वज्जं अब्भुवेंत्ति बुहा।।४०४।।

अत्ता जस्सामुत्तो ण हु सो आहारओ हवइ एवं।
आहारो खलु मुत्तो जह्मा सो पुग्गलमओ उ।।४०५।।

णवि सक्कइ घित्तुं जं ण विमोत्तुं जं य जं परद्दव्वं।
सो कोवि य तस्स गुणो पाओग्गिओ विस्ससो वावि।।४०६।।

तह्मा उ जो विसुद्धो चेया सो णेव गिण्हए किंचि।
णेव विमुचइ किंचिवि जीवाजीवाण दव्वाणं।।४०७।।

पाखंडीलिंगाणि व गिहिलिंगाणि व बहूप्पयाराणि।
घित्तुं वंदति मूढा लिंगमिणं मोक्खमग्गोत्ति।।४०८।।

ण उ होदि मोक्खमग्गो लिंग जं देहणिम्ममा अरिहा।
लिंगं मुइत्तु दंसणणाणचरित्ताणि सेयंति।।४०९।।

ण वि एस मोक्खमग्गो पाखंडीयगिहिमयाणि लिंगाणि।
दंसणणाणचरित्ताणि मोक्खमग्गं जिणा विंति।।४१०।।

तह्मा दु हित्तु लिंगे सागारणगारिएहिं वा गहिए।
दंसणाणणचरित्ते अप्पाणं जुंज मोक्खपहे।।४११।।

मोक्खपहे अप्पाणं ठवेहि तं चेव झाहि तं चेय।
तत्थेव विहर णिच्चं मा विहरसु अण्णदव्वेसु।।४१२।।

पाखंडीलिंगेसु व गिहिलिंगेसु व बहुप्पयारेसु।
कुव्वंति जे ममत्तं तेहिं ण णायं समयसारं।।४१३।।

ववहारिओ पुण णओ दोण्णिवि लिंगाणि भणइ मोक्खपहे।
णिच्छयणओ ण इच्छइ मोक्खपहे सव्वलिंगाणि।।४१४।।

जो समयपाहुडमिणं पठिहूणं अत्थतच्चदो णाउं।
अत्थे ठाही चेया सो होही उत्तमं सोक्खं।।४१५।।

।इदि सिरिकुन्दकुन्दाइरियकदं पाणीदं समयपाहुडं।।

श्री कुन्दकुन्दाइरियकदो।

पंचत्थिकायसंगहो

इंदसदवंदियाणं तिहुअणहिदमधुरविसदवक्काणं।
अंतातीदगुणाणं णमो जिणाणं जिदभवाणं।।१।।

समणमुहुग्गदमट्ठं चदुग्गदिणिवारणं सणिव्वाणं।
एसो पणमिय सिरसा समयमियं सुणह वोच्छामि।।२।।

समवाओ पंचण्हं समउ त्ति जिणुत्तमेहि पण्णत्तं।
सो चेव हवदि लोगो तत्तो अमिओ अलोगो खं।।३।।

जीवा पुग्गलकाया धम्माधम्मा तहेव आयासं।
अत्थित्तम्हि य णियदा अणण्णमइया अणुमहंता।।४।।

जेसिं अत्थि सहाओ गुणेहिं सह पज्जएहिं विविहेहिं।
ते होंति अत्थिकाया णिप्पण्णं जेहिं तइलुक्कं।।५।।

ते चेव अत्थिकाया तेकालियभावपरिणदा णिच्चा।
गच्छंति दवियभावं परियट्टणलिंगसंजुत्ता।।६।।

अण्णोण्णं पविसंता देंता ओगासमण्णमण्णस्स।
मेलंता वि णिच्चं सगं सभावं ण विजहंति।।७।।

सत्ता सव्वपयत्था सविस्सरूवा अणंतपज्जाया।
भंगुप्पादधुवत्ता सप्पडिवक्खा हवदि एक्का।।८।।

दवियदि गच्छदि ताइं ताइं सब्भावपज्जयाइं जं।
दवियं तं भण्णंते अणण्णभूदं तु सत्तादो।।९।।

दव्वं सल्लक्खणयं उप्पादव्वयधुवत्तसंजुत्तं।
गुणपज्जयासयं वा जं तं भण्णंति सव्वण्हू।।१०।।

उप्पत्ती व विणासो दव्वस्स य णत्थि अत्थि सब्भावो।
विगमुप्पादधुवत्तं करेंति तस्सेव पज्जाया।।११।।

पज्जयविजुलुदं दव्वं दव्वविजुत्ता य पज्जया णत्थि।
दोण्हं अणण्णभूदं भावं समणा परूविंति।।१२।।

दव्वेण विणा ण गुणा गुणेहिं दव्वं विणा ण संभवदि।
अव्वदिरित्तो भावो दव्वगुणाणं हवदि तम्हा।।१३।।

सिय अत्थि णत्थि उहयं अव्वत्तव्वं पुणो य तत्तिदयं।
दव्वं खु सत्तभंगं आदेसवसेण संभवदि।।१४।।

भावस्स णत्थि णासो णत्थि अभावस्स चेव उप्पादो।
गुणपज्जयेसु भावा उप्पादवए पकुव्वंति।।१५।।

भावा जीवादीया जीवगुणा चेदणा य उवओगो।
सुरणरणारयतिरिया जीवस्य य पज्जया बहुगा।१६।।

भावा जीवादीया जीवगुणा चेदणा य उवओगो।
सुरणरणारयतिरिया जीवस्य य पज्जया बहुगा।।१७।।

सो चेव जादि मरणंजादि ण णट्ठोण चेव उप्पण्णो।
उप्पण्णो य विणट्ठो देवो मणुसो त्ति पज्जाओ।।१८।।

एवं सदो विणासो असदो जीवस्स णत्थि उप्पादो।
तावदिओ जीवाणं देवो मणुसो त्ति गदिणामो।।१९।।

णाणावरणादीया भावा जीवेण सुट्ठु अणुबद्धा।
तेसिमभावं किच्चा अभूदपुव्वो हवदि सिद्धो।।२०।।

एवं भावमभावं भावाभावं अभावभावं च।
गुणपज्जयेहिं सहिदो संसरमाणो कुणदि जीवो।।२१।।

जीवा पुग्गलकाया आयासं अत्थिकाइया सेसा।
अमया अत्थित्तमया कारणभूदा हि लोगस्स।।२२।।

सब्भावसभावाणं जीवाणं तह य पुग्गलाणं च।
परियट्टणसंभूदो कालो णियमेण पण्णत्तो।।२३।।

ववगदपणवण्णरसो ववगददोगंधअट्ठफासो य।
अगुरुलहुगो अमुत्तो वट्टणलक्खो य कालो त्ति।।२४।।

समओ णिमिसो कट्ठा कला य णाली तदो दिवारत्ती।
मासो दु अयणसंवच्छरोत्ति कालो परायत्तो।।२५।।

णत्थि चिरं वा खिप्पं मत्तारहिदं तु सा वि खलु मत्ता।
पुग्गलदव्वेण विणा तह्मा कालो पडुच्चभवो।।२६।।

जीवोत्ति हवदि चेदा उपओगविसेसिदो पहू कत्ता।
भोत्ता य देहमेत्तो ण हि मुत्तो कम्मसंजुत्तो।।२७।।

कम्ममलविप्पमुक्को उड्ढं लोगस्स अंतमधिगंता।
सो सव्वणाणदरिसी लहदि सुहमणिंदियमणंतं।।२८।।

जादो सयं स चेदा सव्वण्हू सव्वलोगदरसी य।
पप्पोदि सुहमणंतं अव्वाबाधं सगममुत्तं।।२९।।

पाणेहिं चदुहिं जीवदि जीविस्सदि जो हु जीविदो पुव्वं।
सो जीवो पाणा पुण बलमिंदियमाउ-उस्सासो।।३०।।

अगुरुलहुगा अणंता तेहिं अणंतेहिं परिणदा सव्वे।
देसेहिं असंखादा सिय लोगं सव्वमावण्णा।।३१।।

केचित्तु अणावण्णा मिच्छादंसणकसायजोगजुदा।
विजुदा य तेहिं बहुगा सिद्धा संसारिणो जीवा।।३२।।

जह पउमरायरयणं खित्तं खीरे पभासयदि खीरं।
तह देही देहत्थो सदेहमेत्तं पभासयदि।।३३।।

सव्वत्थ अत्थि जीवो ण य एक्को एक्काय एक्कट्ठो।
अज्झवसाणविसिट्ठो चेट्ठदि मलिणी रजमलेहिं।।३४।।

जेसिं जीवसहावो णत्थि अभावो य सव्वहा तस्स।
ते होंति भिण्णदेहा सिद्धा वचिगोयरमदीदा।।३५।।

ण कुदोचि वि उप्पण्णो जम्हा कज्जं ण तेण सो सिद्धो।
उप्पादेदि ण किंचि वि कारणमवि तेण ण स होदि।।३६।।

सस्सदमध उच्छेदं भव्वमभव्वं च सुण्णमिदरं च।
विण्णाणमविण्णाणं ण वि जुज्जदि असदि सब्भावे।।३७।।

कम्माणं फलमेक्को एक्को कज्जं तु णाणमध एक्को।
चेदयदि जीवरासी चेदगभावेण तिविहेण।।३८।।

सव्वे खलु कम्मफलं थावरकाया तसा हि कज्जजुदं।
पाणित्तमदिक्कंता णाणं विंदंति ते जीवा।।३९।।

उवओगो खलु दुविहो णाणेण य दंसणेण संजुत्तो।
जीवस्स सव्वकालं अणण्णभूदं वियाणीहि।।४०।।

आभिणिसुदोधिमणकेवलाणि णाणाणि पंचभेयाणि।
कुमदिसुदविभंगाणि य तिण्णि वि णाणेहिं संजुत्ते।।४१।।

दंसणमवि चक्खुजुदं अचक्खुजुदमवि य ओहिणा सहियं।
अणिधणमणंतविसयं केवलियं चावि पण्णत्तं।।४२।।

ण वियप्पदि णाणादो णाणी णाणाणि होंति णेगाणि।
तम्हा दु विस्सरूवं भणियं दवियत्ति णाणीहिं।।४३।।

जदि हवदि दव्वमण्णं गुणदो य गुणा य दव्वदो अण्णे।
दव्वाणंतियमधवा दव्वाभावं पकुव्वंति।।४४।।

अविभत्तमणण्णत्तं दव्वगुणाणं विभत्तमण्णत्तं।
णिच्छन्ति णिच्छयण्हू तव्विवरीदं हि वा तेसिं।।४५।।

ववदेसा संठाणा संखा विसया य होंति ते बहुगा।
ते तेसिमणण्णत्ते अण्णत्ते चावि विज्जंते।।४६।।

णाणं धणं च कुव्वदि धणिणं जह णाणिणं च दुवेधेहिं।
भण्णंति तह पुधत्तं एयत्तं चावि तच्चण्हू।।४७।।

णाणी णाणं च सदा अत्थंतरिदा दु अण्णमण्णस्स।
दोण्हं अचेदणत्तं पसजदि सम्मं जिणावमदं।।४८।।

ण हि समवायादो अत्थंतरिदो दु णाणदो णाणी।
अण्णाणीति य वयणं एगत्तप्पसाधगं होदि।।४९।।

समवत्ती समवाओ अपुधब्भूदो य अजुदसिद्धो य।
तम्हा दव्वगुणाणं अजुदासिद्धित्ति णिद्दिट्ठा।।५०।।

वण्णरसगंधफासा परमाणुपरूविदा विसेसाहिं।
दव्वादो य अणण्णा अण्णत्तपगासगा होंति।।५१।।

दंसणणाणाणि तहा जीवणिबद्धाणि णण्णभूदाणि।
ववदेसदो पुधत्तं कुव्वंति हि णो सभावादो।।५२।।

जीवा अणाइणिहणा संता णंता य जीवभावादो।
सब्भावदो अणंता पंचग्गगुणाप्पधाणा य।।५३।।

एवं सदो विणासो असदो जीवस्स होइ उप्पादो।
इदि जिणवरेहिं भणियं अण्णोण्णविरुद्धमविरुद्धं।।५४।।

णेरइयतिरियमणुआ देवा इदि णामसंजुदा पयडी।
कुव्वंति सदो णासं असदो भावस्स उप्पादं।।५५।।

उदयेण उवसमेण य खयेण दुहिं मिस्सिदेहिं परिणामे।
जुत्ता ते जीवगुणा बहुसु य अत्थेसु विच्छिण्णा।।५६।।

कम्मं वेदयमाणो जीवो भावं करेदि जारिसयं।
सो तेण तस्स कत्ता हवदि त्ति य सासणे पढिदं।।५७।।

कम्मेण विणा उदयं जीवस्स ण विज्जदे उवसमं वा।
खइयं खओवसमियं तम्हा भावं तु कम्मकदं।।५८।।

भावो जदि कम्मकदोअत्ता कम्मस्स होदि किध कत्ता।
ण कुणदि अत्ता किंत्ति वि मुत्ता अण्णं सगं भावं।।५९।।

भावो कम्मणिमित्तो कम्मं पुण भावकारणं हवदि।
ण दु तेसिं खलु कत्ता ण विणा भूदा दु कत्तारं।।६०।।

कुव्वं सगं सहावं अत्ता कत्ता सगस्स भावस्स।
ण हि पोग्गलकम्माणं इदि जिणवयणं मुणेयव्वं।।६१।।

कम्मं पि सगं कुव्वदि सेण सहावेण सम्ममप्पाणं।
जीवो वि य तारिसओ कम्मसहावेण भावेण।।६२।।

कम्मं कम्मं कुव्वदि जदि सो अप्पा करेदि अप्पाणं।
किध तस्स फलं भुंजदि अप्पा कम्मं च देदि फलं।।६३।।

ओगाढगाढणिचिदो पोग्गलकायेहिं सव्वदो लोगो।
सुहुमेहिं बादरेहिं य णंताणंतेहिं विविहेहिं।।६४।।

अत्ता कुणदि सहावं तत्थ गदा पोग्गला सभावेहिं।
गच्छंति कम्मभावं अण्णण्णोगाहमवगाढा।।६५।।

जह पुग्गलदव्वाणं बहुप्पयारेहिं खंधणिव्वत्ती।
अकदा परेहिं दिट्ठा तह कम्माणं वियाणाहि।।६६।।

जीवा पुग्गलकाया अण्णण्णोगाढगहणपडिबद्धा।
काले विजुज्जमाणा सुहदुक्खं दिति भुंजंति।।६७।।

तम्हा कम्मं कत्ता भावेण हि संजुदोध जीवस्स।
भोत्ता दु हवदि जीवो चेदगभावेण कम्मफलं।।६८।।

एवं कत्ता भोत्ता होज्झं अप्पा सगेहिं कम्मेहिं।
हिंडदि पारमपारं संसारं मोहसंछण्णो।।६९।।

उवसंतखीणमोहो मग्गं जिणभासिदेण समुवगदो।
णाणाणुमग्गचारी णिव्वाणपुरं वजदि धीरो।।७०।।

एको चेव महप्पा सो दुवियप्पो तिलक्खणो होदि।
चदुचंकमणो भणिदो पंचग्गुणप्पधाणो य।।७१।।

छक्कापक्कमजुत्तो उवउत्तो सत्तभंगसब्भावो।
अट्ठासओ णवत्थो जीवो दसट्ठाणगो भणिदो।।७२।।

पयडिट्ठिदिअणुभागप्पदेसबंधेहिं सव्वदो मुक्को।
उड्ढं गच्छदि सेसा विदिसावज्जं गदिं जंति।।७३।।

खंधा या खंधदेसा खंधपदेसा य होंति परमाणु।
इदि ते चदुव्वियप्पा पुग्गलकाया मुणेयव्वा।।७४।।

खंधं सयलसमत्थं तस्स दु अद्धं भणंति देसो त्ति।
अद्धद्धं च पदेसो परमाणु चेव अविभागी।।७५।।

बादरसुहुमगदाणं खंधाणं पुग्गलो त्ति ववहारो।
ते होंति छप्पयारा तेलोक्कं जेहिं णिप्पण्णं।।७६।।

सव्वेसिं खंधाणं जो अंतो तं वियाण परमाणु।
सो सस्सदो असद्दो एक्को अविभागि मुत्तिभवो।।७७।।

आदेशमत्तमुत्तो धादुचदुक्कस्स कारणं जो दु।
सो णेओ परमाणू परिणामगुणो सयमसद्दो।।७८।।

सद्दो खंधप्पभवो खंधो परमाणुसंगसंघादो।
पुट्ठेसु तेसु जायदि सद्दो उप्पादगो णियदो।।७९।।

णिच्चो णाणवकासो ण सावकासो पदेसदो भेत्ता।
खंधाणं पि य कत्ता पविहत्ता कालसंखाणं।।८०।।

एयरसवण्णगंधं दो फासं सद्दकारणमसद्दं।
खंधंतरिदं दव्वं परमाणुं तं वियाणेहि।।८१।।

उवभोज्जमिंदिएहिं य इंदियकाया मणोय कम्माणि।
जं हवदि मुत्तमण्णं तं सव्वं पुग्गलं जाणे।।८२।।

धम्मत्थिकायमरसं अवण्णगंधं असद्दमप्फासं।
लोगागाढं पुट्ठं पिहुलमसंखादियपदेसं।।८३।।

अगुरुगलघुगेहिं सया तेहिं अणंतेहिं परिणदं णिच्चं।
गदिकिरिया जुत्ताणं कारणभूदं सयमकज्जं।।८४।।

उदयं जह मच्छाणं गमणाणुग्गहयरं हवदि लोए।
तह जीवपुग्गलाणं धम्मं व वियाणेहि।।८५।।

जह हवदि धम्मदव्वं तह तं जाणेह दव्वमधमक्खं।
ठिदिकिरियाजुत्ताणं करणभूदं तु पुढवीव।।८६।।

जादो अलोगलोगो जेसिं सब्भावदो य गमणठिदी।
दो वि य मया विभत्ता अविभत्ता लोयमेत्ता य।।८७।।

ण य गच्छिदि धम्मत्थी गमणं ण करेदि अण्णदवियस्स।
हवदि गती सप्पसरो जीवाणं पुग्गलाणं च।।८८।।

विज्जदि जेसिं गमणं ठाणं पुण तेसिमेव संभवदि।
ते सगपरिणामेहिं दु गमणं ठाणं च कुव्वंति।।८९।।

सव्वेसिं जीवाणं सेसाणं तह य पुग्गलाणं च।
जं देदि विवरमखिलं तं लोए हवदि आयासं।।९०।।

जीवा पुग्गलकाया धम्माधम्मा य लोगदोण्णा।
तत्तो अणण्णमण्णं आयासं अंतवदिरित्तं।।९१।।

आगासं अवगासं गमणट्ठिदिकारणेहिं देदि जदि।
उड्ढंगदिप्पधाणा सिद्धा चिट्ठंति किध तत्थ।।९२।।

जह्मा उवरिट्ठाणं सिद्धाणं जिणवरेहिं पण्णत्तं।
तह्मा गमणट्ठाणं आयासे जाण णत्थि त्ति।।९३।।

जदि हवदि गमणहेदू आगासं ठाणकारणं तेसिं।
पसजदि अलोगहाणी लोगस्स य अंतपरिवुड्ढी।।९४।।

तहमा धम्माधम्मा गमणट्ठिदिकारणाणि णागासं।
इदि जिणवरेहिं भणिदं लोगसहावं सुणंताणं।।९५।।

धम्माधम्मागासा अपुधब्भूदा समाणपरिमाणा।
पुधगुवलद्धिविसेसा करन्ति एगत्तमण्णत्तं।।९६।।

आगासकालजीवा धम्माधम्मा य मुत्तिपरिहीणा।
मुत्तं पुग्गलदव्वं जीवो खलु चेदणो तेसु।।९७।।

जीवा पुग्गलकाया सह सक्किरिया हवंत्ति ण य सेसा।
पुग्गलकाया जीवा खंधा खलु कालकरणा दु।।९८।।

जे खलु इंदियगेज्झा विसया जीवेहिं होंति ते मुत्ता।
सेसं हवदि अमुत्तं चित्तं उभयं समादियदि।।९९।।

कालो परिणामभवो परिणामो दव्वकालसंभूदो।
दोण्हं एस सहावो कालो खणभंगुरो णियदो।।१००।।

कालो त्ति य ववदेसो सब्भावपरूवगो हवदि णिच्चो।
उप्पण्णप्पद्धंसी अवरो दीहंतरट्ठाई।।१०१।।

एदे कालागासा धम्माधम्मा य पुग्गला जीवा।
लब्भंति दव्वसण्णं कालस्स दु णत्थि कायत्तं।।१०२।।

एवं पवयणसारं पंचत्थियसंगहं वियाणित्ता।
जो मुयदि रागदोसे सो गाहदि दुक्खपरिमोक्खं।।१०३।।

मुणिऊण एतदट्ठं तदणुगमणुज्ज्दो णिहदमोहो।
पसमिय-रागद्दोसो हवदि हदपरावरो जीवो।।१०४।।

नवपदार्थाधिकार

अभिवंदिऊण सिरसा अपुणब्भवकारणं महावीरं।
तेसिं पयत्थभंगं मोक्खस्स वोच्छामि।।१०५।।

सम्मत्तणाणजुत्तं चारित्तं रागदोसपरिहीणं।
मोक्खस्स हवदि मग्गो भव्वाणं लद्धबुद्धीणं।।१०६।।

सम्मत्तं सद्दहणं भावाणं तेसिमधिगमो णाणं।
चारित्तं समभावो विसयेसु विरुढमग्गाणं।।१०७।।

जीवाजीवा भावो पुण्णं पावं च आसवं तेसिं।
संवरणिज्जरबंधो मोक्खो य हवंति ते अट्ठा।।१०८।।

जीवा संसारत्था णिव्वादा चेदणप्पगा दुविहा।
उवओगलक्खणा वि य देहादेहप्पवीचारा।।१०९।।

पुढवी य उदगमगणी वाउ वणप्फदि जीवसंसिदा काया।
देंति खलु मोहबहुलं फासं बहुगा वि ते तेसिं।।११०।।

तित्थावरतणुजोगा अणिलाणलकाइया य तेसु तसा।
मणपरिणामविरहिदा जीवा एइंदिया णेया।।१११।।

एदे जीवणिकाया पंचविधा पुढविकाइयादीया।
मणपरिणमविरहिदा जीवा एगेंदिया भणिया।।११२।।

अंडेसु पवड्ढंता गब्भत्था माणुसा य मुच्छगया।
जारिसया तारिसया जीवा एगेंदिया णेया।।११३।।

संवुक्कमादुवाहा संखा सिप्पी अपादगा य किमी।
जाणंति रसं फासं जे ते बेइन्दिया जीवा।।११४।।

जूगागुंभीमक्कुणपिपीलिया विच्छियादिया कीडा।
जाणंति रसं फासं गंधं तेइन्दिया जीवा।।११५।।

उद्दंसमसयमक्खियमधुकरभमरा पतंगमादीया।
रूपं रसं च गंधं फासं पुण ते विजाणंति।।११६।।

सुरणरणारयतिरिया वण्णरसप्फासगंधसद्दण्हू।
जलचरथलचरखचरा बलिया पंचेन्दिया जीवा।।११७।।

देवा चउण्णिकाया मणुया पुण कम्मभोगभूमीया।
तिरिया बहुप्पयारा णेरइया पुढविभेयगदा।।११८।।

खीणे पुव्वणिबद्धे गदिणामे आउसे य ते वि खलु।
पापुण्णंति य अण्णं गदिमाउस्सं सलेस्सवसा।।११९।।

एदे जीवणिकाया देहप्पविचारमस्सिदा भणिदा।
देहविहूणा सिद्धा भव्वा संसारिणो अभव्वा य।।१२०।।

ण हि इंदियाणि जीवा काया पुण छप्पयार पण्णत्ता।
जं हवदि तेसु णाणं जीवो त्ति य तं परूवंति।।१२१।।

जाणदि पस्सदि सव्वं इच्छदि सुक्खं विभेदि दुक्खादो।
कुव्वदि हिदमहिदं वा भुंजदि जीवो फलं तेसिं।।१२२।।

एवमभिगम्म जीवं अण्णेहिं वि पज्जएहिं बहुगेहिं।
अभिगच्छदु अज्जीवं णाणंतरिदेहिं लिंगेहिं।।१२३।।

आगासकालपुग्गलधम्माधम्मेसु णत्थि जीवगुण।
तेसिं अचेदणत्तं भणिदं जीवस्स चेदणदा।।१२४।।

सुहदुक्खजाणणा वा हिदपरियम्मं च अहिदभीरुत्तं।
जस्स ण विज्जदि णिच्चं तं समणा विंति अज्जीवं।।१२५।।

संठाणा संघादा वण्णरसप्फासगंधसद्दा य।
पोग्गलदव्वप्पभवा होंति गुणा पज्जया य बहू।।१२६।।

अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं।
जाण अलिंगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं।।१२७।।

जो खलु संसारत्थो जीवो तत्तो दु होदि परिणामो।
परिणामादो कम्मं कम्मादो होदि गदिसु गदी।।१२८।।

गदिमधिगदस्स देहो देहादो इंदियाणि जायंते।
तेहिं दु विसयग्गहणं तत्तो रागो व दोसो वा।।१२९।।

जायदि जीवस्सेवं भावो संसारचक्कवालम्मि।
इदि जिणवरेहिं भणिदो अणादिणिधणो सणिधणो वा।।१३०।।

मोहो रागो दोसो चित्तपसादो य जस्स भावम्मि।
विज्जदि तस्स सुहो वा असुहो व होदि परिणामो।।१३१।।

सुहपरिणामो पुण्णं असुहो पावं ति हवदि जीवस्स।
दोण्हं पोग्गलमेत्तो भावो कम्मत्तणं पत्तो।।१३२।।

जम्हा कम्मस्स फलं विसयं फासेहिं भुंजदे णियदं।
जीवेण सुहं दुक्खं तम्हा कम्माणि मुत्ताणि।।१३३।।

मुत्तो फासदि मुत्तं मुत्तो मुत्तेण बंधमणुहवदि।
जीवो मुत्तिविरहिदो गाहदि ते तेहिं उग्गहदिं।।१३४।।

रागो जस्स पसत्थो अणुकंपासंसिदो य परिणामो।
चित्तम्हि णत्थि कलुसं पुण्णं जीवस्स आसवदि।।१३५।।

अरहंतसिद्धसाहुसु भत्ती धम्मम्मि जा य खलु चेट्ठा।
अणुगमणं पि गुरूणं पसत्थरागो त्ति वुच्चंति।।१३६।।

तिसिदं वुभुक्खिदं वा दुहिदं दट्ठूण जो दु दुहिदमणो।
पडिवज्जदि तं किवया तस्सेसा होदि अणुकंपा।।१३७।।

कोधो व जदा माणो माया लोभो व चित्तमासेज्ज।
जीवस्स कुणदि खोहं कलुसो त्ति य तं बुधा बेंति।।१३८।।

चरिया पमादबहुला कालुस्सं लोलदा य विसयेसु।
परपरितावपवादो पावस्स य आसवं कुणदि।।१३९।।

सण्णाओ च तिलेस्सा इंदियवसदा य अट्ठरुद्दाणि।
णाणं च दुप्पउत्तं मोहो पावप्पदा होंति।।१४०।।

इंदियकसायसण्णा णिग्गहिदा जेहिं सुट्ठु मग्गम्मि।
जावत्तावत्तेहिं पिहियं पावासवच्छिद्दं।।१४१।।

जस्स ण विज्जदि रागो दोसो मोहो व सव्वदव्वेसु।
णासवदि सुहं असुहं समसुहदुक्खस्य भिक्खुस्स।।१४२।।

जस्स जदा खलु पुण्णं जोगे पावं च णत्थि विरदस्स।
संवरणं तस्स तदा सुहासुहकदस्स कम्मस्स।।१४३।।

संवरजोगेहिं जुदो तवेहिं जो चिट्ठदे बहुविहेहिं।
कम्माणं णिज्जरणं बहुगाणं कुणदि सो णियदं।।१४४।।

जो संवरेण जुत्तो अप्पट्ठपसाधगो हि अप्पाणं।
मुणिऊण झादि णियदं णाणं सो संधुणोदि कम्मरयं।।१४५।।

जस्स ण विज्जदि रागो दोसो मोहो व जोगपरिकम्मो।
तस्स सुहासुहडहणो झाणमओ जायए अगणी।।१४६।।

जं सुहमसुहमुदिण्णं भावं रत्तो करेदि जदि अप्पा।
सो तेण हवदि बद्धो पोग्गलकम्मेण विविहेण।।१४७।।

जोगणिमित्तं गहणं जोगो मणवयणकायसंभूदो।
भावणिमित्तो बंधो भावो रदिरागदोसमोहजुदो।।१४८।।

हेदू चदुव्वियप्पो अट्ठवियप्पस्स कारणं भणिदं।
तेसिं पि य रागादी तेसिमभावे ण बज्झंति।।१४९।।

हेदुमभावे णियमा जायदि णाणिस्स आसवणिरोधो।
आसवभावेण विणा जायदि कम्मस्स दु णिरोधो।।१५०।।

कम्मस्साभावेण य सव्वण्हू सव्वलोगदरिसी य।
पावदि इंदियरहिदं अव्वाबाहं सुहमणंतं।।१५१।।

दंसणणाणसमग्गं झाणं णो अण्णदव्वसंजुत्तं।
जायदि णिज्जरहेदू सभावसहिदस्स साधुस्स।।१५२।।

जो संवरेण जुत्तो णिज्जरमाणोध सव्वकम्माणि।
ववगदवेदाउस्सो मुयदि भवं तेण सो मोक्खो।।१५३।।

मोक्षमार्गप्रपञ्चसूचिका-चूलिका

जीवसहावं णाणं अप्पडिहददंसणं अणण्णमयं।
चरियं च तेसु णिदं अत्थित्तमणिंदियं भणियं।।१५४।।

जीवो सहावणियदो अणियदगुणपज्जओध परसमओ।
जदि कुणदि सगं समयं पब्भस्सदि कम्मबंधादो।।१५५।।

जो परदव्वम्मि सुहं असुहं रागेण कुणदि जदि भावं।
सो सगचरित्तभट्ठो परचरियचरो हवदि जीवो।।१५६।।

आसवदि जेण पुण्णं पावं वा अप्पणोध भावेण।
सो तेण परचरित्तो हवदि त्ति जिणा परूवंति।।१५७।।

जो सव्वसंगमुक्को णण्णमणो अप्पणं सहावेण।
जाणदि पस्सदि णियदं सो सगचरियं चरदि जीवो।।१५८।।

चरियं चरदि सगं सो जो परदव्वप्पभावरहिदप्पा।
दंसणणाणवियप्पं अवियप्पं चरदि अप्पादो।।१५९।।

धम्मादीसद्दहणं सम्मत्तं णाणमंगपुव्वगदं।
चिट्ठा तवंहि चरिया ववहारो मोक्खमग्गो त्ति।।१६०।।

णिच्छयणयेण भणिदो तिहि तेहिं समाहिदो हु जो अप्पा।
ण कुणदि किंचिवि अण्णं ण मुयदि सो मोक्खमग्गो त्ति।।१६१।।

जो चरदि णादि पिच्छदि अप्पाणं अप्पणा अणण्णमयं।
सो चारित्तं णाणं दंसणमिदि णिच्चिदो होदि।।१६२।।

जेण विजाणदि सव्वं पेच्छदि सो तेण सोक्खमणुहवदि।
इदि तं जाणदि भविओ अभव्वसत्तो ण सद्दहदि।।१६३।।

दंसणणाणचरित्ताणि मोक्खमग्गोऽत्ति सेविदव्वाणि।
साधूहि इदं भणिदं तेहिं दु बंधो व मोक्खो वा।।१६४।।

अण्णाणादो णाणी जदि मण्णदि सुद्धसंपओगादो।
हवदित्ति दुक्ख मोक्खं परसमयरदो हवदि जीवो।।१६५।।

अरहंतसिद्धचेदियपवयणगणणाणभत्तिसंपण्णो।
बंधदि पुण्णं बहुसो ण हु सो कम्मक्खयं कुणदि।।१६६।।

जस्स हिदयेणुमेत्तं वा परदव्वम्हि विज्जदे रागो।
सो ण विजाणदि समयं सगस्स सव्वागमधरो वि।।१६७।।

धरिदुं जस्स ण सक्कं चित्तुब्भामं विणा दु अप्पाणं।
रोधो तस्स ण विज्जदि सुहासुहकदस्स कम्मस्स।।१६८।।

तह्मा णिव्वुदिकामो णिस्संगो णिम्ममो य हविय पुणो।
सिद्धेसु कुणदि भत्तिं णिव्वाणं तेण पप्पोदि।।१६९।।

सपयत्थं तित्थयरं अभिगदबुद्धिस्स सुत्तरोइस्स।
दूरतरं णिव्वाणं संजमतवसंपओत्तस्स।।१७०।।

अरहंतसिद्धचेदियपवयणभत्तो परेण णियमेण
जो कुणदि तवोकम्मं तवोकम्मं सो सुरलोगं समादियदि।।१७१।।

तह्मा णिव्वुदिकामो रागं सव्वत्थ कुणदु मा किंचि।
सो तेण वीदरागो भविओ भवसायरं तरदि।।१७२।।

मग्गप्पभावणट्ठं पवयणभत्तिप्पचोदिदेण मया।
भणियं पवयणसारं पंचत्थियसंगहं सुत्तं।।१७३।।

।इति पंचास्तिकायसंग्रहो।।

श्री कुन्दकुन्दाइरियकदो।

णियमसारो

जीवाधिकार

णमिऊण जिणं वीरं अणंतवरणाणदंसणसहावं।
वोच्छामि णियमसारं केवलिसुदकेवलीभणिदं।।१।।

मग्गो मग्गफलं ति य दुविहं जिणसासणे समक्खादं।
मग्गो मक्खउवाओ तस्स फलं होइ णिव्वाणं।।२।।

णियमेण य जं कज्जं तं णियमं णाणदंसणचरित्तं।
विवरीयपरिहरत्थं भणिदं खलु सारमिदि वयणं।।३।।

णियमं मोक्खउवाओ तस्स फलं हवंति परमणिव्वाणं।
एदेसिं तिण्हं पि य पत्तेयपरुवणा होई।।४।।

अत्तागमतच्चाणं सद्दहणादो हवेइ सम्मत्तं।
ववगयअसेसदोसो सयलगुणप्पा हवे अत्तो।।५।।

छुहतण्हभीरुरोसो रागो मोहो चिंता जरा रूजामिच्चू।
सेदं खेद मदो रइ विम्हियणिद्दा जणुव्वेगो।।६।।

णिस्सेसदोसरहिओ केवलणाणाइपरमविभवजुदो।
सो परमप्पा उच्चइ तव्विवरीओ ण परमप्पा।।७।।

तस्स मुहुग्गदवयणं पुव्वावरदोसविरहियं सुद्धं।
आगममिदि परिकहियं तेण दु कहिया हवंति तच्चत्था।।८।।

जीवा पुग्गलकाया धम्माधम्मा य काल आयासं।
तच्चत्था इदि भणिदा णाणागुणपज्जएहिं संजुत्ता।।९।।

जीवो उवओगमओ उवओगो णाणदंसणो होइ।
णाणुवओगो दुविहो सहावणाणं विहावणाणं ति।।१०।।

केवलमिंदियरहियं असहायं तं सहावणाणं ति।
सण्णाणिदरवियप्पे विहावणाणं हवे दुविहं।।११।।

सण्णाणं चउभेयं मदिसुदओही तहेव मणपज्जं।
अण्णाणं तिवियप्पं मदियाई भेददो चेव।।१२।।

तह दंसणउवओगो ससहावेदरवियप्पदो दुविहो।
केवलमिंदियरहियं असहायं तं सहावमिदि भणिद।।१३।।

चक्खुअचक्खुओही तिण्णि वि भणिदं विभावदिट्ठित्ति।
पज्जाओ दुवियप्पो सपरावेक्खो य णि रवेक्खो।।१४।।

णरणारयतिरियसुरा पज्जाया ते विभावमिदि भणिदा।
कम्मोपाधिविवज्जियपज्जाया ते सहावमिदि भणिदा।।१५।।

माणुस्सा दुवियप्पा कम्ममहीभोगभूमिसंजादा।
सत्तविहा णेरइया णादव्वा पुढविभेदेण।।१६।।

चउदहभेदा भणिदा तेरिच्छा सुरगणा चउब्भेदा।
एदेसिं वित्थारं लोयविभागेसु णादव्वं।।१७।।

कत्ता भोक्ता आदा पोग्गलकम्मस्स होदि ववहारो।
कम्मजभावेणादा कत्ता भोत्ता दु णिच्छयदो।।१८।।

दव्वत्थिएण जीवा वदिरित्ता पुव्वभणिदपज्जाया।
पज्जयणयेण जीवा संजुत्ता होंति दुविहेहिं।।१९।।

अजीवाधिकार

अणुखंधवियप्पेण दु पुग्गलदव्वं हवेइ दुवियप्पं।
खंधा हु छप्पयारा परमाणू चेव दुवियप्पो।।२०।।

अइथूलथूल थूलं थूलसुहुमं च सुहुमथूलं च।
सुहुमं अइसुहुमं इदि धरादियं होदि छब्भेयं।।२१।।

भूपव्वदमादीया भणिदा अइथूलथूलमिदि खंधा।
थूला इदि विण्णेया सप्पीजलतेलमादीया।।२२।।

छायातवमादीया थूलेदरखंधमिदि वियाणाहि।
सुहुमथूलेदि भणिया खंधा चउरक्खविसया य।।२३।।

सुहुमा हंवति खंधा पाओग्गा कम्मवग्गणस्स पुणो।
तव्विवरीया खंधा अइसुहुमा इदि परूवेंति।।२४।।

धाउचउक्कस्स पुणो जं हेऊ कारणं ति तं णेयो।
खंधाणं उवसाणं णादव्वो कज्जपरमाणु।।२५।।

अत्तादि अत्तमज्झं अत्तंतं णेव इंदिएगेज्झं।
अविभागी जं दव्वं परमाणू तं वियाणाहि।।२६।।

एयरसरूवगंधं दोफासं तं हवे सहावगुणं।
विहावगुणमिदि भणिदं जिणसमये सव्वपयडत्तं।।२७।।

अण्णणिरावेक्खो जो परिणामो सो सहावपज्जाओ।
खंधसरुवेण पुणो परिणामो सो विहावपज्जाओ।।२८।।

पुग्गलदव्वं उच्चइ परमाणू णिच्छएण इदरेण।
पुग्गलदव्वो ति पुणो ववदेसो होदि खंधस्स।।२९।।

गमणणिमित्तं धम्ममधम्मं ठिदिजीवपुग्गलाणं च।
अवगहणं आयासं जीवादीसव्वदव्वाणं।।३०।।

समयावलिभेदेण दु दुवियप्पं अइव होइ तिवियप्पं।
तीदो संखेज्जावलिहदसिद्धाणप्पमाणं तु।।३१।।

जीवादुपुग्गलादो णंतगुणा चावि (झावि) संपदा समया।
लोयायासे संति य परमट्ठो सो हवे कालो।।३२।।

जीवादीदव्वाणं परिवट्टणकारणं हवे कालो।
धम्मादिचउण्हं णं सहावगुणपज्जया होंति।।३३।।

एदे छद्दव्वाणि य कालं मोत्तूण अत्थिकाय त्ति।
णिद्दिट्ठा जिणसमये काया हु बहुप्पदेसत्तं।।३४।।

संखेज्जासंखेज्जाणंतपदेसा हवंति मुत्तस्स।
धम्माधम्मस्स पुणो जीवस्स असंखदेसा हु।।३५।।

लोयायासे ताव इदरस्स अणंतयं हवे देसा।
कालस्स ण कायत्तं एयपदेसो हवे जह्मा।।३६।।

पुग्गलदव्वं मुत्तं मुत्तिविरहिया हवंति सेसाणि।
चेदणभावो जीवो चेदणगुणवज्जिया सेसा।।३७।।

शुद्धभावाधिकार

जीवादिबहित्तच्चं हेयमुवादेयमप्पणो अप्पा।
कम्मोपाधिसमुब्भवगुणपज्जाएहिं वदिरित्तो।।३८।।

णो खलु सहावठाणा णो माणवमाणभावठाणा वा।
णो हरिसभावठाणा णो जीवस्साहरिस्सठाणा वा।।३९।।

णो ठिदिबंधट्ठाणा पयडिट्ठाणा पदेस ठाणा वा।
णो अणुभागट्ठाणा जीवस्स णा उदयठाण वा।।४०।।

णो खइयभावठाणा णो खयउवसमसहावठाणा वा।
ओदइयभावठाणा णो उवसमणे सहावठाणा वा।।४१।।

चउगइभवसंभमणं जाइजरामरणरोगसोगा य।
कुलजोणिजीवमग्गणठाणा जीवस्स णो संति।।४२।।

णिद्दंडो णिद्दंद्दो णिम्ममो णिक्कलो णिरालंबो।
णीरागो णिद्दोसो णिम्मूढो णिब्भयो अप्पा।।४३।।

णिग्गंथो णीरागो णिस्सल्लो सयलदोसणिम्मुक्को।
णिक्कामो णिक्कोहो णिम्माणो णिम्मदो अप्पा।।४४।।

वण्णरसगंधफासा थीपुंसणंउसयादिपज्जाया।
संठाणा संहणणा सव्वे जीवस्स णो संति।।४५।।

अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं।
जाण अलिंगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं।।४६।।

जारिसिया सिद्धप्पा भवमल्लिय जीव तारिसा होंति।
जरमरणजम्ममुक्का अट्ठगुणालंकिया जेण।।४७।।

असरीरा अविणासा अणिंदिया णिम्मला विसुद्धप्पा।
जह लोयग्गे सिद्धा तह जीवा संसिदी णेया।।४८।।

एदे सव्वे भावा ववहारणयं पडुच्च भणिदा हु।
सव्वे सिद्धसहावा सुद्धणया संसिदी जीवा।।४९।।

पुव्वुत्तसयलभावा परदव्वं परसहावमिदि हेयं।
सगदव्वमुवादेयं अतरतच्चं हवे अप्पा।।५०।।

विवरीयाभिणिवेस विवज्जिय सद्दहणमेव सम्मत्तं।
संसयविमोहविब्भमविवज्जियं होदि सण्णाणं।।५१।।

चलमलिणमगाढत्तविवज्जियसद्दहणमेव सम्मत्तं।
अधिगमभावो णाणं हेयोवादेयतच्चाणं।।५२।।

सम्मत्तस्स णिमित्तं जिणसुत्तं तस्स जाणया पुरिसा।
अंतरहेऊ भणिदा दंसणमोहस्स खयपहुदी।।५३।।

सम्मत्तं सण्णाणं विज्जदि मोक्खस्स होदि सुण चरणं।
ववहारणिच्छएण दु तम्हा चरण पवक्खामि।।५४।।

ववहारणयचरित्ते ववहारणयस्स होदि तवचरणं।
णिच्छयणयचारित्ते तवचरणं होदि णिच्छयदो।।५५।।

व्यवहारचारित्राधिकार

कुलजोणिजीवमग्गणठाणइसु जाणिऊण जीवाणं।
तस्सारं भणियत्तणपरिणामो होइ पढमवदं।।५६।।

रागेण व दोसेण व मोहेण व मोसभासपरिणामं।
जो पजहदि साहु सया विदियवदं होइ तस्सेव।।५७।।

गामे वा णयरे वाऽरण्णे व पेच्छिऊण परमत्थं।
जो मुयदि गहणभावं तिदियवदं होदि तस्सेव।।५८।।

दट्ठूण इत्थिरूवं वांछाभावं णियत्तदे तासु।
मेहुणसण्णविवज्जियपरिणामो अहव तुरीयवदं।।५९।।

सव्वेसिं गंथाणं चागो णिरवेक्खभावणापुव्वं।
पंचमवदमिदि भणिदं चारित्तभरं वहंतस्स।।६०।।

पासुगमग्गेण दिवा अवलोगंतो जुगप्पमाणं हि।
गच्छइ पुरदो समणो इरियासमिदी हवे तस्स।।६१।।

पेसुण्णहासकक्कसपरणिंदप्पप्पसंसियं वयणं।
परिचत्ता सपरहिदं भासासमिदी वंदतस्स।।६२।।

कदकारिदाणुमोदणरहिदं तह पासुगं पसत्थं च।
दिण्णं परेण भत्तं समभुत्ती एसणासमिदी।।६३।।

पोत्थइकमंडलाइं गहणविसग्गेसु पयतपरिणामो।
आदावणणिक्खेवणसमिदी होदि त्ति णिद्दिट्ठा।।६४।।

पासुगभूमिपदेसे गूढे रहिए परोपरोहेण।
उच्चारादिच्चागो पइट्ठासमिदी हवे तस्स।।६५।।

कालुस्समोहसण्णारागद्दोसाइअसुह भावाणं।
परिहारो मणुगुत्ती ववहारणयेण परिकहियं।।६६।।

थीराजचोरभत्तकहादिवयणस्स पावहेउस्स।
परिहारो वयगुत्ती अलियादिणियत्तिवयणं वा।।६७।।

बंधणछेदणमारणआकुंचण तह पसारणादीया।
कायकिरियाणियत्ती णिद्दिट्ठा कायगुत्ति त्ति।।६८।।

जा रायादिणियत्ती मणस्स जाणीहि त मणोगुत्ती।
अलियादिणियत्तिं वा मोणं वा होई वदिगुत्ती।।६९।।

कायकिरियाणियत्ती काउस्सग्गो सरीरगे गुत्ती।
हिंसाइणियत्ती वा सरीरगुत्ति त्ति णिद्दिट्ठा।।७०।।

घणघाइकम्मरहिया केवलणाणाइपरमगुणसहिया।
चोत्तिसअदिसयजुत्ता अरिहंता एरिसा होंति।।७१।।

णट्ठट्ठकम्मबंधा अट्ठमहागुणसमण्णिया परमा।
लोयग्गठिदा णिच्चा सिद्धा ते एरिसा होंति।।७२।।

पंचाचारसमग्गा पंचिंदियदंतिदप्पणिद्दलणा।
धीरा गुणगंभीरा आयरिया एरिया होंति।।७३।।

रयणत्तय संजुत्ता जिणकहियपयत्थदेसया सूरा।
णिक्कंखभावसहिया उवज्झाया एरिसा होंति।।७४।।

वावारविप्पमुक्का चउव्विहा राहणासयारत्ता।
णिग्गंथा णिम्मोहा साहूदे एरिसा होंति।।७५।।

एरिसयभावणाए ववहारणयस्स होदि चारित्तं।
णिच्छयणयस्स चरणं एतो उड्ढं पवक्खामि।।७६।।

परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार

णाहं णारयभावो तिरियत्थो मणुवदेवपज्जाओ।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंता णेव कत्तीणं।।७७।।

णाहं मग्गणठाणो णाहं गुणठाण जीवठाणो ण।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंता णेव कत्तीणं।।७८।।

णाहं बालो बुड्ढो ण चेव तरुणो ण कारणं तेसिं।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंत्ता णेव कत्तीणं।।७९।।

णाहं रागो दोसो ण चेव मोहो ण कारणं तेसिं।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंत्ता णेव कत्तीणं।।८०।।

णाहं कोहो माणो ण चेव माया ण होमि लोहो हं।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंत्ता णेव कत्तीणं।।८१।।

एरिसभेदब्भासे मज्झत्थो होदि तेण चारित्तं।
तं दढकरणणिमित्तं पडिक्कमणादी पवक्खामि।।८२।।

मोत्तूण वयणरयणं रागादीभाववारणं किच्चा।
अप्पाणं जो झायदि तस्स दु होदि त्ति पडिकमणं।।८३।।

आराहणाइ वट्टइ मोत्तूण विराहण विसेसेण।
सो पडिकमणं उच्चइ पडिकमणमओ हवे जह्मा।।८४।।

मोत्तूण अणायारं आयारे जो दु कुणदि थिरभावं।
सो पडिकमणं उच्चइ पडिकमणमओ हवे जह्मा।।८५।।

उम्मग्गं परिचत्ता जिणमप्पगे जो दु कुणदि थिरभावं।
सो पडिकमणं उच्चइ पडिकमणमओ हवे जह्मा।।८६।।

मोत्तूण सल्लभावं णिस्सल्ले जो दु साहु परिणमदि।
सो पडिकमणं उच्चइ पडिकमणमओ हवे जह्मा।।८७।।

चत्ता अगुत्तिभावं तिगुत्तिगुत्तो हवेइ जो साहू।
सो पडिकमणं उच्चइ पडिकमणमओ हवे जह्मा।।८८।।

मोत्तूण अट्टरुद्दं झाणं जो झादि धम्मसुक्कं वा।
सो पडिकमणं उच्चइ जिणवरणिद्दिट्ठसुत्तेसु।।८९।।

मिच्छत्तपहुदिभावा पुव्वं जीवेण भाविया सुइरं।
सम्मत्तपहुदिभावा अभाविया होंति जीवेण।।९०।।

मिच्छादंसणणाणचरित्तं चइऊण णिरवसेसेण।
सम्मत्तणाणचरणं जो भावइ सो पडिक्कमणं।।९१।।

उत्तमअट्ठं आदा तम्हि ठिदा हणदि मुणिवरा कम्मं।
तम्हा दु झाणमेव हि उत्तमअट्ठस्स पठिकमणं।।९२।।

झाणणिलीणो साहू परिचागं कुणइ सव्वदोसाणं।
तम्हा दु झाणमेव हि सव्वदिचारस्स पडिकमणं।।९३।।

पडिकमणणामधेये सुत्ते जह वण्णिदं पडिक्कमणं।
तह णच्चा जो भावइ तस्स तदा होदि पडिकमणं।।९४।।

निश्चयप्रत्याख्यानाधिकार

मोत्तूण सयलजप्पमणागयसुहमसुहवारणं किच्चा।
अप्पाणं जो झायदि पच्चक्खाणं हवे तस्स।।९५।।

केवलणाणसहावो केवलदंसणसहावसुहमइओ।
केवलसत्तिसहावो सो हं इदि चिंतए णाणी।।६६।।

णियभावं णवि मुच्चइ परभावं णेव गेण्हए केइं।
जाणदि पस्सदि सव्वं सो हं इदि चिंतए णाणी।।६७।।

पयडिट्ठिदि अणुभागप्पदेसबंधेहिं वज्जिदो अप्पा।
सो हं इदि चिंतिज्जो तत्थेव य कुणदि थिरभावं।।६८।।

ममत्तिं परिवज्जामि णिम्ममत्तिमुवट्ठिदो।
आलंबणं च मे आदा अवसेसं च वोसरे।।६९।।

आदा खु मज्झ णाणे आदा मे दंसणे चरित्ते य।
आदा पच्चक्खाणे आदा मे संवरे जोगे।।१००।।

एगो य मरदि जीवो एगो य जीवदि सयं।
एगस्स जादि मरणं एगो सिज्झदि णीरयो।।१०१।।

एको मे सासदो अप्पा णाणदंसणलक्खणो।
सेसा मे बाहिरा भावा सव्वे संजोगलक्खणा।।१०२।।

जं किंचि मे दुच्चरित्तं सव्वं तिविहेण वोसरे।
सामाइयं तु तिविहं करेमि सव्वं णिरायारं।।१०३।।

सम्मं मे सव्वभूदेसु वेरं मज्झं ण केणवि।
आसाए वोसरित्ता णं समाहि पडिवज्जए।।१०४।।

णिक्कसायस्स दंतस्स सूरस्स ववसायिणो।
संसारभयभीदस्स पच्चक्खाणं सुहं हवे।।१०५।।

एवं भेदब्भासं जो कुव्वइ जीवकम्मणो णिच्चं।
पच्चक्खाणं सक्कदि धरिदुं सो संजदो णियमा।।१०६।।

परमालोचनाधिकार

णोकम्मकम्मरहियं विहावगुणपज्जएहिं वदिरित्तं।
अप्पाणं जो झायदि समणस्सालोयणं होदि।।१०७।।

आलोयणमालुंछण वियडीकरणं च भावसुद्धी य।
चउविहमिह परिकहियं आलोयणलक्खणं समए।।१०८।।

जो पस्सदि अप्पाणं समभावे संठवित्तु परिणामं।
आलोयणमिदि जाणह परमजिणंदस्स उवएसं।।१०९।।

कम्ममहीरुहमूलच्छेदसमत्थो सकीयपरिणामो।
साहीणो समभावो आलुंछणमिदि समुद्दिट्ठं।।११०।।

कम्मादो अप्पाणं भिण्णं भावेइ विमलगुणणिलयं।
मज्झत्थभावणाए वियडीकरणं त्ति विण्णेयं।।१११।।

मदमाणमायलोहविवज्जियभावो दु भावसुद्धि त्ति।
परिकहियं भव्वाणं लोयालोयप्पदरिसीहिं।।११२।।

शुद्धनिश्चयप्रायश्चित्ताधिकार

वदसमिदिसीलसंजमपरिणामो करणणिग्गहो भावो।
सो हवदि पायछित्तं अणवरयं चेव कायव्वो।।११३।।

कोहादिसगब्भावक्खयपहुदिभावणाए णिग्गहणं।
पायच्छित्तं भणिदं णियगुणचिंत्ता य णिच्छयदो।।११४।।

कोहं खमया माणं समद्दवेणज्जवेण मायं च।
संतोसेण य लोहं जयदि खु ए चउविहकसाए।।११५।।

उक्किट्ठो जो बोहो णाणं तस्सेव अप्पणोचित्तं।
जो धरइ मुणी णिच्चं पायच्छित्तं हवे तस्स।।११६।।

किं बहुणा भणिएण दु वरतवचरणं महेसिणं सव्वं।
पायच्छित्तं जाणह अणेयकम्माण खयहेऊ।।११७।।

णंताणंतभवेण समज्जिअसुहअसुहकम्मसंदोहो।
तवचरणेण विणस्सदि पायच्छित्तं तवं तह्मा।।११८।।

अप्पसरुवालंबणभावेण दु सव्वभावपरिहारं।
सक्कदि कादुं जीवो तह्मा झाणं हवे सव्वं।।११९।।

सुहअसुहवयणरयणा रायादीभाववारणं किच्चा।
अप्पाणं जो झायदि तस्स दु णियमं हवे णियमा।।१२०।।

कायाईपरदव्वे थिरभावं परिहरत्तु अप्पाणं।
तस्स हवे तणुसग्गं जो झायइ णिव्विअप्पेण।।१२१।।

परमसमाध्यधिकार

वयणोच्चारणकिरियं परिचत्ता वीयरायभावेण।
जो झायदि अप्पाणं परमसमाही हवे तस्स।।१२२।।

संजमणियमतवेण दु धम्मज्झाणेण सुक्कझाणेण।
जो झायइ अप्पाणं परमसमाही हवे तस्स।।१२३।।

किं काहदि वणवासो कायकिलेसो विचित्तउववासो।
अज्झयणमोणपहुदी समदारहियस्स समणस्स।।१२४।।

विरदो सव्वसावज्जे त्तिगुत्तो पिहिदिंदिओ।
तस्स सामाइगं ठाई इदि केवलिसासणे।।१२५।।

जो समो सव्वभूदेसु थावरेसु तसेसु वा।
तस्स सामाइगं ठाई इदि केवलिसासणे।।१२६।।

जस्स सण्णिहिदो अप्पा संजमे णियमे तवे।
तस्स सामाइगं ठाई इदि केवलिसासणे।।१२७।।

जस्स रागो दु दोसो दु विगडिं ण जाणेइ दु।
तस्स सामाइगं ठाई इदि केवलिसासणे।।१२८।।

जो दु अट्टं च रुद्दं च झाणं वज्जेदि णिच्चसा।
तस्स सामाइगं ठाई इदि केवलिसासणे।।१२९।।

जो दु पुण्णं च पावं च भावं वज्जेदि णिच्चसा।
तस्स सामाइगं ठाई इदि केवलिसासणे।।१३०।।

जो दु हस्सं रई सोगं अरदिं वज्जेदि णिच्चसा।
तस्स सामाइगं ठाई इदि केवलिसासणे।।१३१।।

जो दुगंछा भयं वेदं सव्वं वज्जेदि णिच्चसा।
तस्स सामाइगं ठाई इदि केवलिसासणे।।१३२।।

जो दु धम्मं च सुक्कं च झाणं झाएदि णिच्चसा।
तस्स सामाइगं ठाई इदि केवलिसासणे।।१३३।।

परमभक्त्यधिकार

सम्मत्तणाणचरणे जो भत्तिं कुणइ सावगो समणो।
तस्स दु णिव्वुदिभत्ती होदि त्ति जिणेहि पण्णतं।।१३४।।

मोक्खंगयपुरिसाणं गुणभेदं जाणिऊण तेसिं पि।
जो कुणदि परमभत्तिं ववहारणयेण परिकहियं।।१३५।।

मोक्खपहे अप्पाणं ठविऊण य कुणदि णिव्वुदी भत्ती।
तेण दु जीवो पावइ असहायगुणं णियप्पाणं।।१३६।।

रायादीपपरिहारे अप्पाणं जो दु जुंजदे साहू।
सो जोगभत्तिजुत्तो इदरस्स य कह हवे जोगो।।१३७।।

सव्वविअप्पाभावे अप्पाणं जो दु जुंजदे साहू।
सो जोगभत्तिजुत्तो इदरस्स य किह हवे जोगो।।१३८।।

विवरीयाभिणिवेसं परिचत्ता जोण्हकहियतच्चेसु।
जो जुंजदि अप्पाणं णियभावो सो हवे जोगो।।१३९।।

उसहादिजिणवरिंदा एवं काऊण जोगवरभत्तिं।
णिव्वुदिसुहमावण्णा तह्मा धरु जोगवरभंत्ति।।१४०।।

निश्चयपरमावश्यकाधिकार

जो ण हवदि अण्णवसो तस्स दु कम्मं भणंति आवासं।
कम्मविणासणजोगो णिव्वुदिमग्गो त्ति पज्जुत्तो।।१४१।।

ण वसो अवसो अवसस्स कम्म वावस्सयं त्ति बोधव्वा।
जुत्ति त्ति उवाअंत्ति य णिरवयवो होदि णिज्जुत्ती।।१४२।।

वट्टदि जो सो समणो अण्णवसो होदि असुहभावेण।
तह्मा तस्स दु कम्मं आवस्सयलक्खणं ण हवे।।१४३।।

जो चरदि संजदो खलु सुहभावे सो हवेइ अण्णवसो।
तह्मा तस्स दु कम्मं आवसयलक्खणं ण हवे।।१४४।।

दव्वगुणपज्जयाणं चित्तं जो कुणइ सो वि अण्णवसो।
मोहांधयारववगयसमणा कहयंति एरिसयं।।१४५।।

परिचत्ता परभावं अप्पाणं झादि णिम्मलसहावं।
अप्पवसो सो होदि हु तस्स दु कम्मं भणंति आवासं।।१४६।।

आवासं जह इच्छसि अप्पसहावेसु कुणदि थिरभावं।
तेण दु सामण्णगुणं संपुण्णं होदि जीवस्स।।१४७।।

आवासएण हीणो पब्भट्ठो होदि चरणदो समणो।
पुव्वुत्तकमेण पुणो तम्हा आवासयं कुज्जा।।१४८।।

आवासएण जुत्तो समणो सो होदि अंतरंगप्पा।
आवासयपरिहीणो समणो सो होदि बहिरप्पा।।१४६।।

अंतरबाहिरजप्पे जो वट्टइ सो हवेइ बहिरप्पा।
जप्पेसु जो ण वट्टइ सो उच्चइ अंतरंगप्पा।।१५०।।

जो धम्मसुक्कझाणम्मि परिणदो सो वि अंतरंगप्पा।
झाणविहीणो समणो बहिरप्पा इति विजाणीहि।।१५१।।

पडिकमणपहुदिकिरियं कुव्वंतो णिच्छयस्स चारित्तं।
तेण दु विरागचरिए समणो अब्भुट्ठिदो होदि।।१५२।।

वयणमयं पडिकमणं वयणमयं पच्चखाण णियमं च।
आलोयण वयणमयं तं सव्वं जाण सज्झायं।।१५३।।

जदि सक्कदि कादुं जे पडिकमणादिं करेज्ज झाणमयं।
सत्तिविहीणो जा जइ सद्दहणं चेव कायव्वं।।१५४।।

जिणकहियपरमसुत्ते पडिकमणादिय परीक्खऊण फुडं।
मोणव्वएण जोई णियकज्जं साहये णिच्चं।।१५५।।

णाणा जीवा णाण कम्मं णाणाविहं हवे लद्धी।
तम्हा वयणविवादं सगपरसमएहिं वज्जिज्जो।।१५६।।

लद्धूण णिहि एक्को तस्स फलं अणुहवेइ सुजणत्ते।
तह णाणी णाणणिहिं भुंजेइ चइत्तु परतत्तिं।।१५७।।

सव्वे पुराणपुरिसा एवं आवासयं च काऊण।
अपमत्तपहुदिठाणं पडिवज्ज य केवली जादा।।१५८।।

शुद्धोपयोगाधिकार

जाणदि पस्सदि सव्वं ववहारणएण केवली भगवं।
केवलणाणी जाणदि पस्सदि णियमेण अप्पाणं।।१५९।।

जुगवं वट्टइ णाणं केवलणाणिस्स दंसण च तहा।
दिणयरपयासतापं जह वट्टइ तह मुणेयव्वं।।१६०।।

णाणं परप्पयासं दिट्ठि अप्पप्पयासया चेव।
अप्पा सपरपयासो होदि त्ति हि मण्णसे जदि हि।।१६१।।

णाणं परप्पयासं तइया णाणेण दंसणं भिण्णं।
ण हवदि परदव्वगयं दंसणमिदि वण्णिदं तह्मा।।१६२।।

अप्पा परप्पयासो तइया अप्पेण दंसणं भिण्णं
ण हवदि परदव्वगयं दंसणमिदि वण्णिदं तह्मा।।१६३।।

णाणं परप्पयासं ववहारणयेण दंसणं तह्मा।
अप्पा परप्पयासो ववहारणयेण दंसणं तह्मा।।१६४।।

णाणं अप्पपयासं णिच्छयणयएण दंसणं तह्मा।
अप्पा अप्पपयासो णिच्छयणयएण दंसणं तह्मा।।१६५।।

अप्पसरूवं पेच्छदि लोयालोयं ण केवलीभगवं।
जइ कोइ भणइ एवं तस्स य किं दूसणं होइ।।१६६।।

मुत्तममुत्तं दव्वं चेयणमियरं सगं च सव्वं च।
पेच्छंतस्स दु णाणं पच्चक्खमणिंदियं होइ।।१६७।।

पुव्वुत्तसयलदव्वं णाणागुणपज्जएण संजुत्तं।
जो ण य पेच्छइ सम्मं परोक्खदिट्ठी हवे तस्स।।१६८।।

लोयालोयं जाणइ अप्पाणं णेव केवली भगवं।
जइ कोइ भणइ एवं तस्स य किं दूसणं होई।।१६९।।

णाणं जीवसरूवं तम्हा जाणेइ अप्पगं अप्पा।
अप्पाणं ण वि जाणदि अप्पादो होदि विदिरित्तं।।१७०।।

अप्पाणं विणु णाणं णाणं विणु अप्पगो ण संदेहो।
तम्हा सपरपयासं णाणं तह दंसणं होदि।।१७१।।

जाणंतो पस्संतो ईहापुव्वं ण होइ केवलिणो।
केवलीणाणी तम्हा तेण दु सोऽबंधगो भणिदो।।१७२।।

परिणामपुव्ववयणं जीवस्स य बंधकारणं होई।
परिणामरहियवयणं तम्हा णाणिस्स ण हि बंधो।।१७३।।

ईहापुव्वं वयणं जीवस्स य बंधकारणं होई।
ईहारहियं वयणं तम्हा णाणिस्स ण हि बंधो।।१७४।।

ठाणणिसेज्जविहारा ईहापुव्वं ण होइ केवलिणो।
तम्हा ण होइ बंधो साक्खट्ठं मोहणीयस्स।।१७५।।

आउस्स खयेण पुणो णिण्णासो होइ सेसपयडीणं।
पच्छा पावइ सिग्घं लोयग्गं समयमेत्तेण।।१७६।।

जाइजरमरणरहियं परमं कम्मट्ठवज्जियं सुद्धं।
णाणाइचउसहावं अक्खयमविणासमच्छेयं।।१७७।।

अव्वाबाहमणिंदियमणोवमं पुण्णपावणिम्मुक्कं।
पुणरागमणविरहियं णिच्चं अचलं अणालंबं।।१७८।।

णवि दुक्खं णवि सुक्खं णवि पीडा णेव विज्जदे बाहा।
णवि मरणं णवि जणणं तत्थेव य होइ णिव्वाणं।।१७६।।

णवि इंदिय उवसग्गा णवि मोहो विम्हियो ण णिद्दा य।
ण य तिण्हा णेव छुहा तत्थेव य होइ णिव्वाणं।।१८०।।

णवि कम्मं णोकम्मं णवि चिंता णेव अट्टरुद्दाणि।
णवि धम्मसुक्कझाणे तत्थेव य होइ णिव्वाणं।।१८१।।

विज्जदि केवलणाणं केवलसोक्खं च केवलं विरियं।
केवलदिट्ठि अमुत्तं अत्थित्तं सप्पदेसत्तं।।१८२।।

णिव्वाणमेव सिद्धा सिद्धा णिव्वाणमिदि समुद्दिट्ठा।
कम्मविमुक्को अप्पा गच्छइ लोयग्गपज्जंतं।।१८३।।

जीवाणं पुग्गलाणं गमणं जाणेहि जाव धम्मत्थी।
धम्मत्थिकायभावे तत्तो परदो ण गच्छंति।।१८४।।

णियमं णियमस्स फलं णिद्दिट्ठं पवयणस्स भत्तीए।
पुव्वावरविरोधो जदि अवणीय पूरयंतु समयण्हा।।१८५।।

ईसाभावेण पुणो केई णिंदंति सुंदरं मग्गं।
तेसिं वयणं सोच्चाऽभत्तिं मा कुणह जिणमग्गे।।१८६।।

णियभावणाणिमित्तं मए कदं णियमसारणामसुदं।
णच्चा जिणोवदेसं पुव्वावरदोसणिम्मुक्कं।।१८७।।

इति णियमसारो

श्री कुन्दकुन्दाइरियकदो।

रयणसारो

णमिदूण वड्ढमाणं परमप्पाणं जिणं तिसुद्धेण।
वोच्छामि रयणसारं सायारणयारधम्मीणं।।१।।

पुव्वं जिणेहि भणिदं जहट्ठिदं गणहरेहि वित्थरिदं।
पुव्वयरियक्कमजं तं बोल्लदि जो हु सिद्दिट्ठी।।२।।

मदिसुदणाणबलेण दु सच्छंदं बोल्लदे जिणुद्दिट्ठं।
जो सो होदि कुदिट्ठी ण होदि जिणमग्गलग्गरवो।।३।।

सम्मत्तरयणसारं मोक्खमहारुक्खमूलमिदि भणिदं।
तं जाणिज्जदि णिच्छयववहारसरूवदो भेयं।।४।।

भयवसणमलविवज्जिद-संसारसरीरभोगणिव्विण्णो।
अट्ठगुणंगसमग्गो दंसणसुद्धो हु पंचगुरुभत्तो।।५।।

णियसुद्धप्पणुरत्तो बहिरप्पावत्थवज्जिदा णाणी।
जिण-मुणि-धम्मं मण्णदि गददुक्खो होदि सद्दिट्ठी।।६।।

मदमूढमणायदणं संकादिवसणभयमदीयारं।
जेसिं चउवालेसे ण संति ते होंति सद्दिट्ठी।।७।।

उहयगुणवसणभयमलवेरग्गादीयार-भत्तिविग्घं वा।
एदे सत्तत्तरिया दंसणसावयगुणा भणिदा।।८।।

देवगुरुसमयभत्ता संसारसरीरभोगपरिचत्ता।
रयणत्तयसंजुत्ता ते मणुया सिवसुहं पत्ता।।९।।

दाणं पूया सीलं उववासं बहुविहं पि खवणं पि।
सम्जुदं मोक्खसुहं सम्मविणा दीहसंसारं।।१०।।

दाणं पूया मुक्खं सावयधम्मे ण सावया तेण विणा।
झाणाज्झयणं मुक्खं जदिधम्मेतं विणा तहा सो वि।।११।।

दाण ण धम्म ण चाग ण भोग ण बहिरप्प जो पयंगो सो।
लोहकसायग्गिमुहे पडिदो मरिदो ण संदेहो।।१२।।

जिणपूया मुणिदाणं करेदि जो देदि सत्तिरूवेण।
सम्मादिट्ठी सावय-धम्मी सो होदि मोक्खमग्गरदो।।१३।।

पूयफलेण तिलोक्के सुरपुज्जो हवदि सुद्धमणो।
दाणफलेण तिलोए सारसुहं भुज्जदे णियदं।।१४।।

दाणं भोयणमेत्तं दिण्णदि धण्णो हवेदि सायारो।
पत्तापत्तविसेसं सद्दंसणे किं वियारेण।।१५।।

दिण्णदि सुपत्तदाणं विसेसदो होदि भोगसग्गमही।
णिव्वाणसुहं कमसो णिद्दिट्ठं जिणवरिंदेहिं।।१६।।

खेत्तविसेसे काले ववि सुवीयं फलं जहा विउलं।
होदि तहा तं जाणह पत्तविसेसेसु दाणफलं।।१७।।

इह णियसुवित्तवीयं जो ववदि जिणुत्तसत्तखेत्तेसु।
सो तिहुवणरज्जफलं भुज्जदि कल्लाणपंचफलं।।१८।।

मादु-पिदु-पुत्त-मित्तं कलत्त-धण-धण्ण-वत्थु-वाहण-विहवं।
संसारसारसोक्खं सव्वं जाणह सुपत्तदाणफलं।।१९।।

संत्तगरज्ज-णवणिहि-भंडार-सडंगबल-चउद्दस रयणं।
छण्णवदि सहस्सित्थी विहवं जाणह सुपत्तदाणफलं।।२०।।

सुकुलसुरूवसुलक्खणसुमदिसुसिक्खासुसीलसुगुणसुचरितं।
सयलं सुहाणुभवणं विहवं जाणह सुपत्तदाणफलं।।२१।।

जो मुणि भुत्तवसेसं भुज्जदि सो भुज्जदे जिणुद्दिट्ठ।
संसारसारसोक्खं कमसो णिव्वाणवरसोक्खं।।२२।।

सीदुण्ह-वाय-पिउलं सिलेसिम्मं तह परिसमं वाहिं।
कायकिलेसुववासं जाणिच्चा दिण्णदे दाणं।।२३।।

हिदमिदमण्णं पाणं णिरवज्जोसहिं णिराउलं ठाणं।
सयणासणमुवयरणं जाणिच्चा देदि मोक्खमग्गरदो।।२४।।

अणयाराणं वेज्जावच्चं कुज्जा जहेह जाणिच्चा।
गब्भब्भमेव मादा-पिदुच्च णिच्चं तहा णिरालसया।।२५।।

सप्पुरिसाणं दाणं कप्पतरूणं फलाण सोहा वा।
लोहीणं दाणं जदि विमाण सोहा सवं जाणे।।२६।।

जस-किर्त्ति-पुण्णलाहे देदि सुबहुगं पि जत्थ तत्थेव।
सम्मादिसुगुणभायण पत्तविसेसं ण जाणंति।।२७।।

जंतं मंतं तंतं परिचरिदं पक्खवाद पियवयणं।
पडुच्च पंचमयाले भरहे दाणं ण किं पि मोक्खस्स।।२८।।

दाणीणं दारिद्दं लोहीणं किं हवदि महइसरियं।
उहयाणं पुव्वज्जिद कम्मफलं जाव होदि थिरं।।२९।।

धणधण्णादिसमिद्धे सुहं जहा होदि सव्वजीवाणं।
मुणिदाणादिसमिद्धे सुहं तहा तं विणा दुक्खं।।३०।।

पत्त विणा दाणं च सुपुत्त विणा बहुधणं महाखेत्तं।
चित्त विणा वय-गुण-चारित्तं णिक्कारणं जाणे।।३१।।

जिण्णुद्धार-पदिट्ठा-जिणपूया-तित्थवंदण वसेसधणं।
जो भुञ्जदि सो भुञ्जदि जिणदिट्ठं णरयगदिदुक्खं।।३२।।

पुत्तकलत्तविदूरो दारिद्दो पंगुमूकबहिरंधो।
चांडालादिकुजादो पूयादाणादि दव्वहरो।।३३।।

इच्छिदफलं ण लब्भदि जदि लब्भदि सो ण भुञ्जदे णियदं।
वाहीणमायरो सो पूयादाणादि दव्वहरो।।३४।।

गदहत्थपादणासिय-कण्णउरंगुल विहीणदिट्ठीए।
जो तिव्वदुक्खमूलो पूयादाणादि दव्वहरो।।३५।।

खय-कुट्ठ-मूल-सूला लूय-भयंदर-जलोयरक्खिसिरो।
सीदुण्हवाहिरादी पूयादाणंतरायकम्मफलं।।३६।।

णरइ-तिरियाइ-दुगदी दरिद्द-वियलंग-हाणि-दुक्खाणि।
देव-गुरु-सत्थवंदण-सुदभेद-सज्झयविघणफलं।।३७।।

सम्मविसोही-त्तव-गुण-चरित-सण्णाण-दाणपरिहीणं।
भरहे दुस्समकाले मणुयाणं जायदे णियदं।।३८।।

णहि दाणं णहि पूया णहिं सीलं णहि गुणं ण चारित्तं।
जे जइणा भणिदा ते णेरइया होंति कुमाणुसा तिरिया।।३९।।

ण वि जाणदि कज्जमकज्जं सेयमसेयं पुण्णपावं हि।
तच्चमतच्चं धम्ममधम्मं सो सम्मउम्मुक्को।।४०।।

ण वि जाणदि जोग्गमजोग्गं णिच्चमणिच्चं हेयमुवादेयं।
सच्चमसच्चं भव्वमभव्वं सो सम्मउम्मुक्को।।४१।।

लोइयजणणसंगादो हीदि महामुहरकुडिलदुब्भावो।
लोइय संगं तह्मा जोइवि तिविहेण मुच्चाहो।।४२।।

उग्गो तिव्वो दुट्ठो दुब्भावो दुस्सुदो दुरालावो।
दुम्मदरदो विरुद्धो सो जीवो सम्मउम्मुक्को।।४३।।

खुद्दो रुद्दो रुट्ठो अणिट्ठ पिसुणो सगव्वियोसूयो।
गायण-जयण-भडंण-दुस्सणसीलो दु सम्मउम्मुक्को।।४४।।

वाणर-गद्दह-साण-गय वग्घ-वराह-कराह।
मक्खि-जलूय-सहाव णर जिणवर धम्म विणास।।४५।।

सम्म विणा सण्णाणं सच्चारित्तं ण होदि णियमेण।
तो रयणत्तय मज्झे सम्मगुणुक्किट्ठमिदि जिणुद्दिट्ठं।।४६।।

कुतव कुलिंगि कुणाणी कुवय कुसीले कुदंसण कुसत्थे।
कुणिमित्ते संथुय थुदि पसंसणं सम्महाणि होदि णियमं।।४७।।

तणुकुट्ठी कुलभंगं कुणदि जहा मिच्छमप्पणो वि तहा।
दाणादि सुगुणभंगं गदिभंगं मिच्छमेव हो कट्ठं।।४८।।

देव-गुरु-धम्म-गुण-चारित्त-तवापार-मोक्खगदिभेयं।
जिणवयण सुदिट्ठि विणा दीसदि किं जाणदे सम्मं।।४९।।

एक्क खणं ण वि चिंतदि मोक्खणिमित्तं णियप्पसब्भावं।
अणिसि विचिंतदि पावं बहुलालावं मणे विचिंतेदि।।५०।।

मिच्छामदि मदमोहासवमत्तो बोल्लदे जहा भुल्लो।
तेण ण जाणदि अप्पा अप्पाणं सम्मभावाणं।।५१।।

पुव्वट्ठिद खवदि कम्म पविसदु णो देदि अहिणवं कम्मं।
इह-परलोय महप्पं देदि तहा उवसमो भावो।।५२।।

सम्मादिट्ठी कालं बोल्लदि वेरग्गणाणभावेहिं।
मिच्छादिट्ठी वांछा दुब्भावालस्सकलहेहिं।।५३।।

अज्जवसप्पिणि भरहे पउरा रुद्दट्ठझाणया दिट्ठा।
णट्ठा दुट्ठा कट्ठा पाविट्ठा किण्ह-णील-काओदा।।५४।।

अज्जवसप्पिणि भरहे पंचमयाले मिच्छपुव्वया सुलहा।
सम्मत्तपुव्व सायारणयारा दुल्लहा होंति।।५५।।

अज्जवसप्पिणि भरहे धम्मज्झाणं पमादरहिदो त्ति।
होदि त्ति जिणुदिट्ठं ण हु मण्णदि सो हु कुदिट्ठी।।५६।।

असुहादो णिरयाऊ सुहभावादो दु सग्गसुहमाओ।
दुहसुहभावं जाणदु जं ते रुच्चेद तं कुज्जा।।५७।।

हिंसादिसु कोहादिसु मिच्छाणाणेसु पक्खवाएसु।
मच्छरिदेसु मदेसु दुरहिणिवेसेसु असुहलेस्सेसु।।५८।।

विकहादिसु रुद्दट्टज्झाणेसु असुयगेसु दंडेसु।
सल्लेसु गारवेसु य जो वट्टदि असुहभावो सो।।५९।।

दव्वत्थिकाय छप्पण तच्चपयत्थेसु सत्तणवगेसु।
बंधणमोक्खे तक्कारणरूवे वारसणुवेक्खे।।६०।।

रयणत्तयस्सरूवे अज्जाकम्मे दयादि सद्धम्मे।
इच्चेव माइगे जो वट्टदि सो होदि सुहभावो।।६१।।

सम्मत्तगुणाइ सुगदि मिच्छादो होदि दुग्गदी णियमा।
इदि जाण किमिह बहुणा जं रुच्चदि तं कुज्जाहो।।६२।।

मोह ण छिज्जदि अप्पा दारुणकम्मं करेदि बहुवारं।
ण हु पावदि भवतीरं किं बहुदुक्खं वहेदि मूढ़मदी।।६३।।

धरियउ बाहिरलिंगं परिहरियउ बाहिरक्ख सोक्खं हि।
करियउ किरियाकम्मं मरियउ जम्मियउ बहिरप्प जीवो।।६४।।

मोक्खणिमित्तं दुक्खं वहेदि परलोय दिट्ठि तणुदंडी।
मिच्छाभाव ण छिज्जदि किं पावदि मोक्खसोक्खं हि।।६५।।

ण हु दंडदि कोहादिं देहं दंडदि कहं खवदि कम्मं।
सप्पो किं मुवदि तहा वम्मीए मारदे लोए।।६६।।

उवसमतवभावजुदो णाणी सो ताव संजदो होदि।
णाणी कसायवसगो असंजदो होदि सो ताव।।६७।।

णाणी खवेदि कम्मं णाणबलेणेदि बोल्लदे अण्णाणी।
वेज्जो भेसज्जमहं जाणे इदि णस्सदे वाही।।६८।।

पुव्वं सेवदि मिच्छा-मलसोहणहेदु सम्म-भेसज्जं।
पच्छा सेवदि कम्मामयणासणचरिय-भेसज्जं।।६९।।

अण्णाणीदो विसयविरत्तादो होदि सयसहस्सगुणो।
णाणी कसायविरदो विसयासत्तो जिणुद्दिट्ठं।।७०।।

विणओ भत्तिविहीणो महिलाणं रोदणं विणा णेहं।
चागो वेरग्ग विणा एदेदो वारिआ भणिदा।।७१।।

सुहडो सूरत्त विणा महिला सोहग्गरहिद परिसोहा।
वेरग्ग-णाण-संजम हीणा खवणा ण किं पि लब्भंते।।७२।।

वत्थुसमग्गो मूढो लोही लब्भदि फलं जहा पच्छा।
अण्णाणी जो विसयासत्तो लहदि जहा चेवं।।७३।।

वत्थुसमग्गो णाणी सुपत्तदाणी फलं जहा लहदि।
णाणसमग्गो विसयपरिचत्तो लहदि जहा चेव।।७४।।

भू-महिला-कणयादि-लोहाहि-विसहरं कहं पि हवे।
सम्मत्तणाण-वेरग्गो सहमंतेण-जिणुद्दिट्ठं।।७५।।

पुव्वं जो पंचिंदिय तणु-मण-वचि-हत्थ-पाय-मुंडाओ।
पच्छा सिर मुंडाओ सिवगदिपहणायगो होदि।।७६।।

पदिभत्तिविहीण सदी भिच्चो जिणसमयभत्तिहीण जण्णो।
गुरुभत्तिहीण सिस्सो दुग्गदिमग्गाणुलग्गओ णियदं।।७७।।

गुरुभत्तिविहीणाणं सिस्साणं सव्वसंगविरदाणं।
ऊसरखेत्ते ववदं सुवीयसमं जाण सव्वणुट्ठाणं।।७८।।

रज्जं पहाणहीणं पदिहीणं देसगामरट्ठवलं।
गुरुभत्तिहीण सिस्साणुट्ठाणं णस्सदे सव्वं।।७९।।

सम्माण विणा रुइ भत्ति विणा दाणं दया विणा धम्मो।
गुरु-भत्ति विणा तव-गुण-चारित्तं णिप्फलं जाण।।८०।।

हीणादाणवियारविहीणादो बाहिरक्खसोक्खं हि।
किं तजियं किं भजियं किं मोक्ख ण दिट्ठं जिणुद्दिट्ठं।।८१।।

कायकिलेसुववासं दुद्धरतवयरणकारणं जाण।
तं णियसुद्धप्परुई परिपुण्णं चेदि कम्मणिम्मूलं।।८२।।

कम्म ण खवेदि जो परब्रह्म ण जाणदि सम्मउम्मुक्को।
अत्थ ण तत्थ ण जीयो लिंगं घेत्तूण किं करेदि।।८३।।

अप्पाणं पि ण पेच्छदि ण मुणदि ण वि सद्दहदि ण भावेदि।
बहुदुक्खभारमूलं लिंगं घेत्तूण किं करेदि।।८४।।

जाव ण जाणदि अप्पा अप्पाणं दुक्खमप्पणो ताव।
तेण अणंतसुहाणं अप्पाणं भावए जोई।।८५।।

णियतच्चुवलद्धि विणा सम्मत्तुवलद्धि णत्थि णियमेण।
सम्मत्तुवलद्धि विणा णिव्वाणं णत्थि णियमेण।।८६।।

सालविहीणो राओ दाणदयाधम्मरहिद गिहिसोहा।
णाणविहीण तवो वि य जीव विणा देहसोहं ण।।८७।।

मक्खी सिलिम्मि पडिदो मुवदि जहा तह परिग्गहे पडिदो।
लोही मूढो खवणो कायकिलेसेसु अण्णाणी।।८८।।

णाणाब्भास विहीणो सपरं तच्चं ण जाणदे किं पिं।
झाणं तस्स ण होदी हु ताव ण कम्मं खवेदि ण हु मोक्खं।।८९।।

अज्झयणमेव झाणं पंचेदियणिग्गहं कसायं पि।
तत्तो पंचमयाले पवयणसारब्भासमेव कुज्जाहो।।९०।।

पावारंभणिवित्ती पुण्णारंभे पउत्तिकरणं पि।
णाणं धम्मज्झाणं जिणभणिदं सव्वजीवाणं।।९१।।

सुदणाणब्भासं जो ण कुणदि सम्मं ण होदि तवयरणं।
कुव्वंतो मूढमदी संसारसुहाणुरत्तो सो।।९२।।

तच्चवियारणसीलो मोक्खपहाराहणासहावजुदो।
अणवरयं धम्मकहापसंगओ होदि मुणिरायो।।९३।।

विकहादिविप्पमुक्को आहाकम्मादि विराहिदो णाणी।
धम्मुद्देसणकुसलो अणुपेहा भावणाजुदो जोई।।९४।।

णिंदावंचणदूरो परिसह-उवसग्ग-दुक्खसहमाणो।
सुहझाणज्झयणरदो गदसंगो होदि मुणिराओ।।९५।।

अवियप्पो णिद्दंदो णिम्मोहो णिक्कलंकओ णियदो।
णिम्मलसहावजुत्तो जोगी सो होदि मुणिराओ।।६६।।

तिव्वं कायकिलेसं कुव्वंतो मिच्छभावसंजुत्तो।
सव्वण्हुवदेसे सो णिव्वाणसुहं ण गच्छेदि।।६७।।

रायादिमलजुदाणं णियप्पूवं ण दिस्सदे किं पि।
समलादरिसे रूवं ण दिस्सदे जह तहा णेयं।।६८।।

दंडत्तयसल्लत्तय मंडिदमाणो असूयगो साहू।
भंडण-जायणसीलो हिंडदि सो दीहसंसारे।।६६।।

देहादिसु अणुरत्ता विसयासत्ता कसायसंजुत्ता।
आदसहावे सुत्ता ते साहू सम्मपरिचत्ता।।१००।।

आरंभे धणधण्णे उवयरणे कंखिया तहासूया।
वयगुणसीलविहीणा कसायकलहपिया मुहरा।।१०१।।

संघविरोहकुसीला सच्छंदा रहिदगुरुकुला मूढा।
रायादिसेवया ते जिणधम्मविराहया साहू।।१०२।।

जोइस-वेज्जा-मंतोवजीवणं वायवस्स ववहारं।
धणधण्णपरिग्गहणं समणाणं दूसणं होदि।।१०३।।

जे पावारंभरदा कसायजुत्ता परिग्गहासत्ता।
लोयववहारपउरा ते साहू सम्मउम्मुक्का।।१०४।।

ण सहंति इदरप्पं थुवंति अप्पाणमप्पमाहप्पं।
जिब्भणिमित्तं कज्जं कुणंति ते साहू सम्मउम्मुक्का।।१०५।।

चम्मट्ठि-मंसलवलुद्धो सुणहो गज्जदे मुणिं दिट्ठा।
जह तह पाविट्ठो सो धम्मिट्ठं दिट्ठा सगीयट्ठो।।१०६।।

भुज्जेदि जहालाहं लहेदि जदि णाणसंजमणिमित्तं।
झाणज्झयणणिमित्तं अणयारो मोक्खमग्गरदो।।१०७।।

उदरग्गियसमण-मक्खमक्खण-गोयार-सब्भपूरण-भमरं।
णादूण तप्पयारे णिच्चेवं भुञ्जदे भिक्खू।।१०८।।

रसरुहिरमंसमेदट्ठिसुकिलमलमुत्तपूयकिमिबहुलं।
दुग्गंधमसुइचम्ममयमणिच्चमचेदणं पडणं।।१०९।।

बहुदुक्खभायणं कम्मकारणं भिण्णमप्पणो देहं।
तं देहं धम्माणुट्ठाणकारणं चेदि पोसदे भिक्खू।।११०।।

संजमतवझाणज्झयणविणाणए गिण्हदे पडिगहणं।
बज्जदि गिण्हदि भिक्खु ण सक्कदे वज्जिदुं दुक्खं।।१११।।

कोहेण य कलहेण य जायणसीलेण संकिलेसेण।
रुद्देण य रोसेण य भुञ्जदि किं विंतरो भिक्खू।।११२।।

दिव्वुत्तरणसरिच्छं जाणिच्चाहो धरेदि जदि सुद्धो।
तत्तायसपिंडसमं भिक्खू तुह पाणिगदपिंडं।।११३।।

अविरद-देस-महव्वय आगमरुइणं वियारतच्चण्हं।
पत्तंतरं सहस्सं णिद्दिट्ठं जिणवरिंदेहिं।।११४।।

उवसमणिरीहझाणज्झयणादि महागुणा जहा दिट्ठा।
जेसिं ते मुणिणाहा उत्तमपत्ता तहा भणिदा।।११५।।

ण वि जाणदि जिणसिद्धसरूवं तिविहेण तह णि यप्पाणं।
जो तिव्वं कुणदि तवं सो हिंडदि दीहसंसारे।।११६।।

दंसणसुद्धो धम्मज्झाणरदो संगवज्जिदो णिस्सल्लो।
पत्तविसेसो भणिदो सो गुणहीणो दु विवरीदो।।११७।।

सम्मादिगुणविसेसं पत्तविसेसं जिणेहि णिद्दिट्ठं।
तं जाणिदूण देदि सुदाणं जो सो हु मोक्खरदो।।११८।।

णिच्छयववहारसरूवं जो रयणत्तयं ण जाणदि सो।
जं कीरदि तं मिच्छारूवं सव्वं जिणुद्दिट्ठं।।११९।।

किं जाणि दूण सयलं तच्चं किच्चा तवं च किं बहुलं।
सम्मविसोहिविहीणं णाणतवं जाण भववीयं।।१२०।।

वयसीगुणसीलपरीसहजयं च चरियं तवं छडावसयं।
झाणज्झयणं सव्वं सम्म विणा जाण भववीयं।।१२१।।

खाई-पूया-लाहं सक्काराइं किमिच्छसे जोई।
इच्छसि जदि परलोयं तेहिं किं तुज्झ परलोयं।।१२२।।

कम्मादविहाव सहावगुणं जो भाविदूण भावेण।
णियसुद्धप्पा रुच्चदि तस्सय णियमेण होदि णिव्वाणं।।१२३।।

मूलुत्तरुत्तरुत्तर दव्वादो भावकम्मदो मुक्को।
आसव-बंधण-संवर-णिज्जर जाणेदि कि बहुणा।।१२४।।

विसयविरत्तो मुञ्चदि विसयासत्तो ण मुञ्चदे जोई।
बहिरंतरपरमप्पाभेदं जाणहिं किं बहुणा।।१२५।।

णियअप्पणाण झाणज्झयणसुहामियरसायणं पाणं।
मोत्तूणक्खाण सुहं जो भुञ्जदि सोहु बहिरप्पा।।१२६।।

किंपायफलं पक्कं विसमिस्सिद मोदगिंदवारुण सोहं।
जिव्हसुयं दिट्ठिपियं जह तह जाणक्खसोक्खं पि।।१२७।।

देह कलत्तं पुत्तं मित्तादि विहावचेदणारूवं।
अप्पसरूवं भावदि सो चेव हवेदि बहिरप्पा।।१२८।।

इंदियविसयसुहादिसु मूढमदी रमदि ण लहदि तच्चं।
बहुदुक्खमिदि ण चिंतदि सो चेव हवेदि बहिरप्पा।।१२९।।

जं जं अक्खाणसुहं तं तं तिव्वं करेदि बहु दुक्खं।
अप्पाणमिदि ण चिंतदि सो चेव हवेदि बहिरप्पा।।१३०।।

जेसिं अमेज्झमज्झे उप्पण्णाणं हवेदि तत्थ रुई।
तह बहिरप्पाणं बहिरिंदिय-विसएसु होदि मदी।।१३१।।

पूयसूयरसाणाण खारामियभक्खभक्खणाणं पि।
मणु जाइ जहा मज्झे बहिरप्पाणं तहा णेयं।।१३२।।

सिविणे वि ण भुञ्जदि विसयाइं देहादि भिण्णभावमदी।
भुञ्जदि णियप्परूवो सिवसुहरत्तो दु मज्झिमप्पो सो।।१३३।।

मलमुत्तघडव्व चिरंवासिद दुव्वासणं ण मुञ्चेदि।
पक्खालिद सम्मत्तजलो य णाणमियेण पुण्णो वि।।१३४।।

सम्मादिट्ठी णाणी अक्खाणसुहं कहं पि अणुहवदि।
केणावि ण परिहरणं वाहीणविणासणट्ठ भेसज्जं।।१३५।।

किं वहुणा हो तजि बहिरप्पसरूवाणि सयलभावाणि।
भजि मज्झिम परमप्पा वत्थु सरूवाणि भावाणि।।१३६।।

चउगदि-संसारगमणकारणभूदाणि दुक्खहेदूणि।
ताणि हवे बहिरप्पा वत्थुसरूवाणि भावाणि।।१३७।।

मोक्खगदिगमणकारणभूदाणि पसत्थपुण्णहेदूणि।
ताणि हवे दुविहप्पा वत्थुसरूवाणि भवाणि।।१३८।।

दव्वगुणपज्जयेहिं जाणदि परसगसमयादि विभेदं।
अप्पाणं जाणदि सो सिवगदिपहणायगो होदी।।१३९।।

बहिरंतरप्पभेदं परसमयं भाणदे जिणिंदेहिं।
परमप्पा सगसमयं तब्भेदं जाण गुणठाणे।।१४०।।

मिस्सो त्ति बाहिरप्पा तरतमया तुरियं अंतरप्प जहण्णो।
संतो त्ति मज्झिमंतर खीणुत्तम परम जिणसिद्धा।।१४१।।

मूढत्तय सल्लत्तय दोसत्तय दंडगारवत्तयेहि।
परिमुक्को जोगी सो सिवगदिपहणायगो होदि।।१४२।।

रयणत्तय-करणत्तय-जोगत्तय-गुत्तित्तय विसुद्धेहि।
संजुत्तो जोई सो सिवगदिपहणायगो होदि।।१४३।।

जिणलिंगहरो जोई विराय-सम्मत्तसंजुदो णाणी।
परमोवेक्खाइरियो सिवगदिपहणायगो होदि।।१४४।।

बहिरब्भंतरगंथविमुक्को सुद्धोपजोयसंजुत्तो।
मूलुत्तरगुणपुण्णो सिवगदिपहणायगो होदि।।१४५।।

जं जादिजरामरणं दुहदुट्ठविसाहिविसविणासयरं।
सिवसुहलाहं सम्मं संभावदि सुणदि साहदे साहू।।१४६।।

किं बहुणा हो देविंदाहिंदणरिंद-गणहरिंदेहिं।
पुज्जा परमप्पा जे तं जाण पहाणसम्मगुणं।।१४७।।

उवसम्मइ सम्मत्तं मिच्छतबलेणं पेल्लदे तस्स।
परिवट्टंति कसाया उवसप्पिणी कालदोसेण।।१४८।।

गुण-वय-त्तव-सम-पडिमा-दाणं-जलगालणं-अणत्थमिदं।
दंसण-णाण-चरित्तं किरिया तेवण्ण सावया भणिदा।।१४९।।

णाणेण झाणसिद्धि झाणादो सव्वकम्मणिज्जरणं।
णिज्जरणफलं मोक्खं णाणब्भासं तदा कुज्जा।।१५०।।

कुसलस्स तवो णिवुणस्स संजमो समपरस्स वेरग्गो।
सुद्धभावणेण तत्तिय तम्हा सुदभावणं कुणह।।१५१।।

कालमणंतं जीवो मिच्छत्तसरूवेण पंचसंसारे।
हिंडदि ण लहदि सम्मं संसारब्भमणपारंभो।।१५२।।

सम्मद्दंसणशुद्धं जाव दु लभदे हि ताव सुही।
सम्मद्दंसणसुद्धं जाव ण लभदे हि ताव दुही।।१५३।।

किं बहुणा वयणेण दु सव्वं दुक्खेव सम्मत्त विणा।
सम्मत्तेण विजुत्तं सव्वं सोक्खेव जाणं खु।।१५४।।

णिक्खेवणयपमाणं सद्दालंकारछंद लहियाणं।
णाडय पुराण कम्मं सम्मं विणा दीहसंसारं।।१५५।।

वसदि-पडिमोवयरणे गणगच्छे समय-संघ-जादि कुले।
सिस्स-पडिसिस्सछत्ते सुदजादे कप्पडे पुत्थे।।१५६।।

पिच्छे-संथरणे इच्छासु लोहेण कुणदि ममयारं।
जावच्च अट्टरुद्दं ताव ण मुञ्चेदि ण हु सोक्खं।।१५७।।

रयणत्तयमेव गणं गच्छं गमणस्स मोक्खमग्गस्स।
संघो गुणसंघादो समओ खलु णिम्मलो अप्पा।।१५८।।

मिहिरो मंहधयारं मरुदो मेहं महावणं दाहो।
बज्जो गिरिं जहा विणसिज्जदि सम्मं तहा कम्मं।।१५९।।

मिच्छंधयाररहिदं हियमज्झं सम्मरयणदीवकलावं।
जो पज्जलदि स दीसदि सम्मं लोयत्तयं जिणुद्दिट्ठं।।१६०।।

पवयणसारब्भासं परमप्पज्झाणकारणं जाण।
कम्मखवणणिमित्तं कम्मक्खवणे हि मोक्खसुहं।।१६१।।

धम्मज्झाणब्भासं करेदि तिविहेण भावसुद्धेण।
परमप्पझाणचेट्ठो तेणेव खवेदि कम्माणि।।१६२।।

आदिसोहण जोगेण सुद्धं हेमं हवेदि जह तह य।
कालादीलद्धीए अप्पा परमप्पओ हवदि।।१६३।।

कामदुहिं कप्पतरुं चिंतारयणं रसायणं परसं।
लद्धो भुञ्जदि सोक्खं जहच्छिदं जाण तह सम्मं।।१६४।।

सम्म णाणं वेरग्ग-त्तवोभावं णिरीहवित्ति-चारित्तं।
गुणसीलसहावं तह उप्पज्जदि रयणसारमिणं।।१६५।।

गंथ मिणं जिणदिट्ठं ण हु मण्णदि ण हु सुणेदि ण हु पढदि।
ण हु चिंतदि ण हु भावदि सो चेव हवेदि कुदिट्ठी।।१६६।।

इदि सज्जण पुज्जं रयणसारगंथं णिरालसो णिच्चं।
जो पढदि सुणदि भावदि सो पावदि सासदं ठाणं।।१६७।।

इदि रयणसार गंथो समत्तो

श्री कुन्दकुन्दाइरियकदो।

पवयणसारो

ज्ञानतत्त्व-प्रज्ञापन

एस सुरासुरमणुसिंदवंदिदं धोदघाइकम्ममलं।
पणमामि वड्ढमाणं तित्थं धम्मस्स कत्तारं।।१।।

सेसे पुण तित्थयरे ससव्वसिद्धे विसुद्धसब्भावे।
समणे य णाणदंसणंचरित्ततववीरियायारे।।२।।

ते ते सव्वे समगं समगं पत्तेगमेव पत्तेगं।
वंदामि य वट्टंते अरहंते माणुसे खेत्ते।।३।।

किच्चा अरहंताणं सिद्धाणं तह णमो गणहराणं।
अज्झावयवग्गाणं साहूणं चेव सव्वेसिं।।४।।

तेसिं विसुद्धदंसणणाणपहाणासमं समासेज्ज।
उपसंपयामि सम्मं जत्तो णिव्वाणसंपत्ती।।५।।

संपज्जदि णिव्वाणं देवासुरमणुयरायविहवेहिं।
जीवस्स चरित्तादो दंसणणाणप्पहाणादो।।६।।

चारित्तं खलु धम्मो धम्मो जो सो समोत्ति णिद्दिट्ठो।
मोहक्खोहविहीणो परिणामो अप्पणो हु समो।।७।।

परिणमदि जेण दव्वं तक्कालं तम्मय त्ति पण्णत्तं।
तम्हा धम्मपरिणदो आदा धम्मो मुणेयव्वो।।८।।

जीवो परिणमदि जदा सुहेण असुहेण वा सुहो असुहो।
सुद्धेण तदा सुद्धो हवदि हि परिणामसब्भावो।।९।।

णत्थि विणा परिणामं अत्थो अत्थं विणेह परिणामो।
दव्वगणपज्जयत्थो अत्थो अत्थित्तणिव्वत्तो।।१०।।

धम्मेण परिणदप्पा अप्पा जदि सुद्धसंपयोगजुदो।
पावदि णिव्वाणसुहं सुहोवजुत्तो व सग्गसुहं।।११।।

असुहोदएण आदा कुणरो तिरियो भवीय णेरइयो।
दुक्खसहस्सेहिं सदा अभिहुदो भमदि अच्चंतं।।१२।।

अइसयमादसमुत्थं विसयातीदं अणोवममणंतं।
अव्वुच्छिण्णं च सुहं सुद्धवओगप्पसिद्धाणं।।१३।।

सुविदिदपयत्थसुत्तो संजमतवसंजुदो विगदरागो।
समणो समसुहदुक्खो भणिदो सुद्धोवओगो त्ति।।१४।।

उवओगविसुद्धो जो विगदावरणंतरायमोहरओ।
भूदो सयमेवादा जादि परं णेयभूदाणं।।१५।।

तह सो लद्धसहावो सव्वण्हू सव्वलोगपदिमहिदो।
भूदो सयमेवादा हवदि सयंभु त्ति णिद्दिट्ठो।।१६।।

भंगविहेणो य भवो संभवपरिवज्जिदो विणासो हि।
विज्जदि तस्सेव पुणो ठिदिसंभवणाससमवाओ।।१७।।

उप्पादो य विणासो विज्जदि सव्वस्स अट्ठजादस्स।
पज्जाएण दु केणवि अट्ठो खलु होदि सब्भूदो।।१८।।

तं सव्वट्ठवरिट्ठं इट्ठं अमरासुरप्पहाणेहिं।
जे सद्दहंति जीवा तेसिं दुक्खाणि खीयंति।।१६-१।।

पक्खीणघादिकम्मो अणंतवरवीरिओ अहियतेजो।
जादो अदिंदिओ सो णाणं सोक्खं च परिणमदि।।१६-२।।

सोक्खं वा पुण दुक्खं केवलणाणिस्स णत्थि देहगदं।
जम्हा अदिंदियत्तं जादं जम्हा दु तं णेयं।।२०।।

परिणमदो खलु णाणं पच्चक्खा सव्वदव्वपज्जाया।
सो णेव ते विजाणदि उग्गहपुव्वाहिं किरियाहिं।।२१।।

णत्थि परोक्खं किंचि वि समंत सव्वक्खगुणसमिद्धस्स।
अक्खातीदस्स सदा सयमेव हि णाणजादस्स।।२२।।

आदा णाणपमाणं णाणं णेयप्पमाणमुद्दिट्ठं।
णेयं लोयालोयं तम्हा णाणं तु सव्वगयं।।२३।।

णाणप्पमाणमादा ण हवदि जस्सेह तस्स सो आदा।
हीणो वा अहिओ वा णाणादो हवदि धुवमेव।।२४।।

हीणो जदि सो आदा तण्णाणमचेदणं ण जाणादि।
अहिओ वा णाणादोणाणेण विण कहं णादि।।२५।।

सव्वगदो जिणवसहो सव्वेवि य तग्गया जगदि अट्ठा।
णाणमयादो य जिणो विसयादो तस्स ते भणिदा।।२६।।

णाणं अप्प त्ति मदं वट्टदि णाणं विणा ण अप्पाणं।
तम्हा णाणं अप्पा अप्पा णाणं व अण्णं वा।।२७।।

णाणी णाणसहावो अट्ठा णेयप्पगा हि णाणिस्स।
रूवाणि व चक्खूणं णेवण्णोण्णेसु वट्टंति।।२८।।

ण पविट्ठो णाविट्ठो णाणी णेयेसु रुवमिव चक्खू।
जाणदि पस्सदि णियदं अक्खातीदो जगमसेसं।।२९।।

रयणमिह इंदणीलं दुद्धज्झसियं जहा सभासाए।
अभिभूय तं पि दुद्धं वट्टदि तह णाणमत्थसु।।३०।।

जदि ते ण संति अट्ठा णाणे णाणं ण होदि सव्वगयं।
सव्वगयं वा णाणं कहं ण णाणट्ठिया अट्ठा।।३१।।

गेण्हदिणेव ण मुंचदि ण परं परिणमदि केवली भगवं।
पेच्छदि समंतदो सो जाणदि सव्वं णिरवसेसं।।३२।।

जो हि सुदेण विजाणदि अप्पाणं जाणगं सहावेण।
तं सुदकेवलिमिसिणो भणंति लोगप्पदीवयरा।।३३।।

सुत्तं जिणोवदिट्ठं पोग्गलदव्वप्पगेहिं वयणेहिं।
तं जाणणा हि णाणं सुत्तस्स य जाणणा भणिया।।३४।।

जो जाणदि सो णाणं ण हवदि णाणेण जाणगो आदा।
णाणं परिणमदि सयं अट्ठा णाणट्ठिया सव्वे।।३५।।

तम्हा णाणं जीवो णेयं दव्वं तिहा समक्खादं।
दव्वं ति पुणो आदा परं च परिणामसंबद्धं।।३६।।

तक्कालिगेव सव्वे सदसब्भूदा हि पज्जया तासिं।
वट्टंते ते णाणे विसेसदो दव्वजादीणं।।३७।।

जे णेव हि संजाया जे खलु णट्ठा भवीय पज्जाया।
ते होंति असब्भूदा पज्जाया णाणपच्चक्खा।।३८।।

जदि पच्चक्खमजादं पज्जायं पलयिदं च णाणस्स।
ण हवदि वा तं णाणं दिव्वं ति हि के परुवेंति।।३९।।

अत्थं अक्खणिवदिदं ईहापुव्वेहिं जे विजाणंति।
तेसिं परोक्खभूदं णादुमसक्कं ति पण्णत्तं।।४०।।

अपदेसं सपदेसं मुत्तममुत्तं च पज्जयमजादं।
पलयं गदं च जाणदि त णाणमदिंदियं भणियं।।४१।।

परिणमदि णेयमट्ठं णादा जदि णेव खाइगं तस्स।
णाणं ति तं जिणिंदा खवयंतं कम्ममेवुत्ता।।४२।।

उदयगदा कम्मंसा जिणवरवसहेहिं णियदिणा भणिया।
तेसु विमूढो रत्तो दुट्ठो वा बंधमणुभवदि।।४३।।

ठाणणिसेज्जविहारा धम्मुवदेसो य णियदयो तेसिं।
अरहंताणं काले मायाचारो व्व इत्थीणं।।४४।।

पुण्यफला अरहंता तेसिं किरिया पुणो हि ओदइया।
मोहदिहिं विरहिदा तम्हा सा खाइग त्ति मदा।।४५।।

जदि सो सुहो व असुहो ण हवदि आदा सयं सहावेण।
संसारो वि ण विज्जदि सव्वेसिं जीवकायाणं।।४६।।

जं तक्कालियमिदरं जाणदि जुगव समंतदो सव्वं।
अत्थं विचित्तविसमं तं णाणं खाइयं भणियं।।४७।।

जो ण विजाणदि जुगवं अत्थे तिक्कालिगे तिहुवणत्थे।
णादुं तस्स ण सक्कं सपज्जयं दव्वमेगं वा।।४८।।

दव्वं अणंतपज्जयमेगमणंताणि दव्वजादीणि।
ण विजाणदि जदि जुगवं किध सो सव्वाणि जाणादि।।४९।।

उप्पज्जदि जदि णाणं कमसो अट्ठे पहुच्च णाणिस्स।
तं णेव हवदि णिच्चं ण खाइगं णेव सव्वगदं।।५०।।

तिक्कालणिच्चविसमं सयलं सव्वत्थसंभवं चित्तं।
जुगवं जाणदि जोण्हं अहो हि णाणस्स माहप्पं।।५१।।

ण वि परिणमदि ण गेण्हदि उप्पज्जदि णेव तेसु अट्ठेसु।
जाणण्णवि ते आदा अबंधगो तेण पण्णत्तो।।५२-१।।

तस्स पमाइं लोगो देवासुरमणु अरायसंबंधो।
भत्तो करेदि णिच्चं उवजुत्तो तं तहा वि अहं।।५२-२।।

अत्थि अमुत्तं मुत्तं अदिंदियं इंदियं च अत्थेसु।
णाणं च तहा सोक्खं जं तेसु परं च तं णेयं।।५३।।

जं पेच्छदो अमुत्तं मुत्तेसु अदिंदियं च पच्छण्णं।
सयलं सगं च इदरं तं णाणं हवदि पच्चक्खं।।५४।।

जीवो सयं असुत्तो मुत्तिगदो तेण मुत्तिणा मुत्तं।
ओगेण्हित्ता जोग्गं जाणदि वा तेण जाणादि।।५५।।

फासो रसो य गंधो वण्णो सद्दो य पोग्गला होंति।
अक्खाणं ते अक्खा जुगवं ते णेव गेण्हंति।।५६।।

परदव्वं ते अक्खा णेव सहावो त्ति अप्पणो भणिदा।
उवलद्धं तेहि कधं पच्चक्खं अप्पणो होदि।।५७।।

जं परदो विण्णाणं तं तु परोक्खं ति भणिदमट्ठेसु।
जदि केवलेण णादं हवदि हि जीवेण पच्चक्खं।।५८।।

जादं सयं समंत्तं णाणमणंतत्थवित्थडं विमलं।
रहिदं तु ओग्गहादिहिं सुहं ति एगंतियं भणिदं।।५९।।

जं केवलं ति णाणं तं सोक्खं परिणमं च सो चेव।
खेदो तस्स ण भणिदा जम्हा घादी खयं जादा।।६०।।

णाणं अत्थंतगयं लोयालोएसु वित्थडा दिट्ठी।
णट्ठमणिट्ठं सव्वं इट्ठं पुण जं तु तं लद्धं।।६१।।

णो सद्दहंति सोक्खं सुहेसु परमं ति विगदघादीणं।
सुणिदूण ते अभव्वा भव्वा वा तं पडिच्छंति।।६२।।

मणुआसुरामरिंदा अहिद्दुदा इंदिएहिं सहजेहिं।
असहंता तं दुक्खं रमंति विसएसु रम्मेसु।।६३।।

जेसिं विसएसु रदी तेसिं दुक्खं वियाण सब्भावं।
जइ तं ण हि सब्भावं वावारो णत्थि विसयत्थं।।६४।।

पप्पा इट्ठे विसये फासेहिं समस्सिदे सहावेण।
परिणममाणे अप्पा सयमेव सुहं ण हवदि देहो।।६५।।

एगंतेण हि देहो सुहं ण देहिस्स कुणदि सग्गे वा।
विसयवसेण दु सोक्खं दुक्खं वा हवदि सयमादा।।६६।।

तिमिरहरा जइ दिट्ठी जणस्स दीवेण णत्थि कायव्वं।
तह सोक्खं सयमादा विसया किं तत्थ कुव्वंति।।६७।।

सयमेव जहादिच्चो तेजो उण्हो य देवदा णभसि।
सिद्धो वि तहा णाणं सुहं च लोगे तहा देवो।।६८-१।।

तेजो दिट्ठी णाणं इड्ढी सोक्खं तहेव ईसरियं।
तिहुवणपहाणदइयं माहप्पं जस्स सो अरिहो।।६८-२।।

तं गुणदो अधिगदरं अविच्छिदं मणुवदेवपादिभावं।
अपुणब्भावणिबद्धं पणमामि पुणो पुणो सिद्धं।।६८-३।।

देवदजदिगुरुपूजासु चेव दाणम्मि वा सुसीलेसु।
उववासादिसु रत्तो सुहोवओगप्पगो अप्पा।।६९।।

जुत्तो सुहेण आदा तिरिओ वा माणुसो व देवो वा।
भूदो तावदि कालं लहदि सुहं इंदियं विविहं।।७०।।

सोक्खं सहावसिद्धं णत्थि सुराणं पि सिद्धमुवदेसे।
ते देहवेदणट्टा रमंति विसएसु रम्मेसु।।७१।।

णरणारयतिरियसुरा भजन्ति जदि देहसंभवं दुक्खं।
किह सो सुहो व असुहो उवओगो हवदि जीवाणं।।७२।।

कुलिसाउहचक्कधरा सुहोवओगप्पगेहिं भोगेहिं।
देहादीणं विद्धिं करेंति सुहिदा इवाभिरदा।।७३।।

जदि संति हि पुण्णाणि य परिणामसमुब्भवाणि विविहाणि।
जणयंति विसयतण्हं जीवाणं देवदंताणं।।७४।।

ते पुण उदिण्ण तण्हा दुहिदा तण्हाहिं विसयसोक्खाणि।
इच्छति अणुभवंति य आमरणं दुक्खसंतत्ता।।७५।।

सपरं बाधासहिदं विच्छिण्णं बंधकारणं विसमं।
जं इंदिएहि लद्धं तं सोक्खं दुक्खमेव तहा।।७६।।

ण हि मण्णदि जो एवं णत्थि विसेसो त्ति पुण्णपावाणं।
हिंडदि घोरमपारं संसारं मोहसंछण्णो।।७७।।

एवं विदिदत्थो जो दव्वेसु ण रागमेदि दोसं वा।
उवओगविसुद्धो सो खवेदि देहुब्भवं दुक्खं।।७८।।

चत्ता पावारंभं समुट्ठिदो वा सुहम्मि चरियम्मि।
ण जहदि जदि मोहादी ण लहदि सो अप्पगं सुद्धं।।७९-१।।

तव संजमप्पसिद्धो सुद्धो सग्गापवग्ग मग्ग करो।
अमरासुरिंदमहिदो देवो सो लोयसिहरत्थो।।७६-२।।

तं देवदेवदेवं जदिवरवसहं गुरुं तिलोयस्स।
पणमंति जे मणुस्सा ते सोक्खं अक्खयं जंति।।७६-३।।

जो जाणदि अरहंतं दव्वत्तगुणत्तपज्जयत्तेहिं।
सो जाणदि अप्पाणं मोहो खलु जादि तस्स लयं।।८०।।

जीवो ववगदमोहो उवलद्धो तच्चमप्पणो सम्मं।
जहदि जदि रागदोसे सो अप्पाणं लहदि सुद्धं।।८१।।

सव्वे वि य अरहंता तेण विधाणेण खविदकम्मंसा।
किच्चा तधोवदेसं णिव्वादा ते णमो तेसिं।।८२-१।।

दंसणसुद्धा पुरिसा णाणपहाणा सम्मग्चरियत्था।
पूजासक्कारारिहा दाणस्स य हि ते णमो तेसिं।।८२-२।।

दव्वादिएसु मूढो भावो जीवस्स हवदि मोहो त्ति।
खुब्भदि तेणुच्छण्णो पप्पा रागं व दोसं वा।।८३।।

मोहेण व रागेण व दोसेण व परिणदस्स जीवस्स।
जायदि विविहो बंधो तम्हा ते संखवइदव्वा।।८४।।

अट्टे अजधागहणं करुणाभावो य तिरियमणुएसु।
विसएसु य प्पसंगो मोहस्सेदाणि लिंगाणि।।८५।।

जिण सत्थादो अट्ठेपच्चक्खादीहिं बुज्झदो णियमा।
खीयदि मोहोवचयो तम्हा सत्थं समधिदव्वं।।८६।।

दव्वाणि गुणा तेसिं पज्जाया अट्ठसण्णया भणिया।
तेसु गुणपज्जयाणं अप्पा दव्व त्ति उवदेसो।।८७।।

जो मोहरागदोसे णिहणदि उवलब्भ जोण्हमुवदेसं।
सो सव्वदुक्खमोक्खं पावदि अचिरेण कालेण।।८८।

णाणप्पगमप्पाणं परं च दव्वत्तणाहिसंबद्धं।
जाणदि जदि णिच्छयदो जो सो मोहक्खयं कुणदि।।८६।।

तम्हा जिणमग्गादो गुणेहिं आदं परं च दव्वेसु।
अभिगच्छदु णिम्मोहं इच्छदि जदि अप्पणो अप्पा।।६०।।

सत्तासंबद्धेदे सविसेसे जो हि णेव सामण्णे।
सद्दहदि ण सो समणो तत्तो धम्मो ण संभवदि।।६१।।

जो णिहदमोहदिट्ठी आगमकुसलो विरागचरियम्हि।
अब्भुट्ठिदो महप्पा धम्मो त्ति विसेसिदो समणो।।६२-१।।

जो तं दिट्ठा तुट्ठो अब्भुट्ठित्ता करेदि सक्कारं।
वदंणणमंसणादिहिं तत्तो सो धम्ममादियदि।।६२-२।।

तेण णरा व तिरिच्छा देविं वा माणुसिं गदिं पप्पा।
विहविस्सरियेहिं सया संपुण्णमणोरहा होंति।।६२-३।।

ज्ञेयतत्त्व-प्रज्ञापन

तम्हा तस्स णमाइं किच्चा णिच्चंपि तम्मणो होज्ज।
वोच्छामि संगहादो परमट्ठविणिच्छयाधिगमं।।६३-१।।

अत्थो खलु दव्वमओ दव्वाणि गुणप्पगाणि भणिदाणि।
तेहिं पुणो पज्जाया पज्जयमूढा हि परसमया।।६३-२।।

जे पज्जएसु णिरदा जीवा परसमइग त्ति णिद्दिट्ठा।
आदसहावम्हि ठिदा ते सगसमया मुणेदव्वा।।६४।।

अपरिच्चत्तसहावेणुप्पादव्वयधुवत्तसंबद्धं।
गुणवं च सपज्जायं जं तं दव्वं ति वुच्चंति।।६५।।

सब्भावो हि सहावो गुणेहिं सगपज्जएहिं चित्तेहिं।
दव्वस्स सव्वकालं उप्पादव्वयधुवत्तेहिं।।६६।।

इह विविहलक्खणाणं लक्खणमेगं सदित्ति सव्वगयं।
उवदिसदा खलु धम्मं जिणवरवसहेण पण्णत्तं।।६७।।

दव्वं सहावसिद्धं सदिति जिणा तच्चदो समक्खादा।
सिद्धं तध आगमदो णेच्छदि जो सो हि परसमओ।।६८।।

सदवट्ठिदं सहावे दव्वं दव्वस्स जो हि परिणामो।
अत्थेसु सो सहावो ठिदिसंभवणाससंबद्धो।।६६।।

ण भवो भंगविहीणो भंगो वा णत्थि संभवविहीणो।
उप्पादोवि य भंगो ण विणा धोव्वेण अत्थेण।।१००।।

उप्पादट्ठिदिभंगा विज्जंते पज्जएसु पज्जाया।
दव्वं हि संति णियदं तम्हा दव्वं हवदि सव्वं।।१०१।।

समवेदं खलु दव्वं संभवठिदिणाससण्णिदट्ठेहिं।
एक्कम्मि चेव समये तम्हा दव्वं खु तत्तिदयं।।१०२।।

पाडुब्भवदि य अण्णो पज्जाओ पज्जओ वयदि अण्णो।
दव्वस्स तं पि दव्वं णेव पणट्ठं ण उप्पण्णं।।१०३।।

परिणमदि सयं दव्वं गुणदो य गुणंतरं सदविसिट्ठं।
तम्हा गुणपज्जाया भणिया पुण दव्वमेव त्ति।।१०४।।

ण हवदि जदि सद्दव्वं असद्धुवं हवदि तं कहं दव्वं।
हवदि पुणो अण्णं वा तम्हा दव्वं सयं सत्ता।।१०५।।

पविभत्तपदेसत्तं पुधत्तमिदि सासणं हि वीरस्स।
अण्णत्तमतब्भावो ण तब्भवं होदि कधमेगं।।१०६।।

सद्दव्वं सच्च गुणो सच्चेव य पज्जओ त्ति वित्थारो।
जो खलु तस्स अभावो सो तदभावो अतब्भावो।।१०७।।

जं दव्वं तं ण गुणो जोवि गुणो सो ण तच्चमत्थादो।
एसो हि अतब्भावो णेव अभावो त्ति णिद्दिट्ठो।।१०८।।

जो खलु दव्वसहावो परिणामो सो गुणो सदविसिट्ठो।
सदवट्ठिदं सहावे दव्वं ति जिणोवदेसोयं।।१०६।।

णत्थि गुणो त्ति व कोई पज्जाओ त्तीह वा विणा दव्वं।
दव्वत्तं पुण भावो तम्हा दव्वं सयं सत्ता।।११०।।

एवंविहं सहावे दव्वं दव्वत्थपज्जयत्थेहिं।
सदसब्भावणिबद्धं पादुब्भावं सदा लभदि।।१११।।

जीवो भवं भविस्सदि णरोऽमरो वा परो भवीय पुणो।
किं दव्वत्तं पजहदि ण जहं अण्णो कहं होदि।।११२।।

मणुवो ण होदि देवो देवो वा माणुसो व सिद्धो वा।
एवं अहोज्जमाणो अणण्णभावं कधं लहदि।।११३।।

दव्वट्ठिएण सव्वं दव्वं तं पज्जयट्ठिएण पुणो।
हवदि य अण्णमणण्णं तक्काले तम्मयत्तादो।।११४।।

अत्थि त्ति य णत्थि त्ति य हवदि अवत्तव्वमिदि पुणो दव्वं।
पज्जाएण दु केण वि तदुभयमदिट्ठमण्णं वा।।११५।।

एसो त्ति णत्थि कोई ण णत्थि किरिया सहावणिव्वत्ता।
किरिया हि णत्थि अफला धम्मो जदि णिप्फलो परमो।।११६।।

कम्मं णामसमक्खं सभावमध अप्पणो सहावेण।
अभिभूय णरं तिरियं णेरइयं वा सुरं कुणदि।।११७।।

णरणारयतिरियसुरा जीवा खलु णामकम्मणिव्वत्ता।
ण हि ते लद्धसहावा परिणममाणा सकम्माणि।।११८।।

जायदि णेव ण णस्सदि खणभंगसमुब्भवे जणे कोई।
जो हि भवो सो विलओ संभवविलय त्ति ते णाणा।।११९।।

तम्हा दु णत्थि कोई सहावसमवट्ठिदो त्ति संसारे।
संसारो पुण किरिया संसरमाणस्स दव्वस्स।।१२०।।

आदा कम्ममलिमसो परिणामं लहदि कम्मसंजुत्तं।
तत्तो सिलिसदि कम्मं तम्हा कम्मं तु परिणामो।।१२१।।

परिणामो सयमादा सा पुण किरिय त्ति होदि जीवमया।
किरिया कम्म त्ति मदा तम्हा कम्मस्स ण दु कत्ता।।१२२।।

परिणमदि चेदणाए आदा पुण चेदणा तिधाभिमदा।
सा पुण णाणे कम्मे फलम्मि वा कम्मणो भणिदा।।१२३।।

णाणं अट्ठवियप्पो कम्मं जीवेण जं समारद्धं।
तमणेगविधं भणिदं फलं ति सोक्खं व दुक्खं वा।।१२४।।

अप्पा परिणामप्पा परिणामो णाणकम्मफलभावी।
तम्हा णाणं कम्मं फलं च आदा मुणेदव्वो।।१२५।।

कत्ता करणं कम्मं फलं च अप्प त्ति णिच्छिदो समणो।
परिणमदि णेव अण्णं जदि अप्पाणं लहदि सुद्धं।।१२६।।

दव्वं जीवमजीवं जीवो पुण चेदणोवओगमओ।
पोग्गलदव्वप्पमुहं अचेदणं हवदि य अजीवं।।१२७।।

पोग्गलजीवणिबद्धो धम्माधम्मत्थिकायकालड्ढो।
वट्टदि आगासे जो लोगो सो सव्वेकाले दु।।१२८।।

उप्पादट्ठिदिभंगा पोग्गलजीवप्पगस्स लोगस्स।
परिणामा जायंते संघादादो व भेदादो।।१२९।।

लिंगेहिं जेहिं दव्वं जीवमजीवं च हवदि विण्णादं।
तेऽतब्भावविसिट्ठा मुत्तामुत्ता गुणा णेया।।१३०।।

मुत्ता इंदियगेज्झा पोग्गलदव्वप्पगा अणेगविधा।
दव्वाणममुत्ताणं गुणा अमुत्ता मुणेदव्वा।।१३१।।

वण्णरसगंधफासा विज्जंते पुग्गलस्स सुहुमादो।
पुढवीपरियंतस्स य सद्दो सो पोग्गलो चित्तो।।१३२।।

आगासस्सवगाहो धम्मद्दव्वस्स गमणहेदुत्तं।
धम्मेदरदव्वस्स दु गुणो पुणो ठाणकारणदा।।१३३।।

कालस्स वट्टणा से गुणोवओगो त्ति अप्पणो भणिदो।
णेया संखेवादो गुणा हि मुत्तिप्पहीणाणं।।१३४।।जुगलं।।

जीवा पोग्गलकाया धम्माधम्मा पुणो य आगासं।
सपदेसेहिं असंखा णत्थि पदेस त्ति कालस्स।।१३५-१।।

एदाणि पंचदव्वाणि उज्झियकालं तु अत्थिकाय त्ति।
भण्णंते काया पुण बहुप्पदेसाण पचयत्तं।।१३५-२।।

लोगालोगेसु णभो धम्माधम्मेहिं आददो लोगो।
सेसे पडुच्च कालो जीवा पुण पोग्गला सेसा।।१३६।।

जध ते णभप्पदेसा तधप्पदेसा हवंति सेसाणं।
अपदेसो परमाणु तेण पदेसुब्भवो भणिदो।।१३७।।

समओ दु अप्पदेसो पदेसमेत्तस्स दव्वजादस्स।
वदिवददो सो वट्टदि पदेसमागासदव्वस्स।।१३८।।

वदिवददो तं देसं तस्सम समओ तदो परो पुव्वो।
जो अत्थो सो कालो समओ उप्पण्णपद्धंसी।।१३९।।

आगासमणुणिविट्टं आगासपदेससण्णया भणिदं।
सव्वेसिं च अणूणं सक्कदि तं देदुमवगासं।।१४०।।

एक्को व दुगे बहुगा संखातीदा तदो अणंता य।
दव्वाणं च पदेसा संति हि समय त्ति कालस्स।।१४१।।

उप्पादो पद्धंसो विज्जदि जदि जस्स एगसमयम्हि।
समयस्स सो वि समओ सभावसमवट्ठिदो हवदि।।१४२।।

एगम्हि संति समये संभवठिदिणाससण्णिदा अट्ठा।
समयस्स सव्वकालं एस हि कालाणुसब्भावो।।१४३।।

जस्स ण संति पदेसा पदेसमेत्तं व तच्चदो णादुं।
सुण्णं जाण तमत्थं अत्थंतरभूदमत्थीदो।।१४४।।

सपदेसेहिं समग्गो लोगो अट्ठेहिं णिट्ठिदो णिच्चो।
जो तं जाणदि जीवो पाणचदुक्काभिसंबद्धो।।१४५।।

इंदियपाणो य तधा बलपाणो तह य आउपाणो य।
आणप्पाणप्पाणो जीवाणं होंति पाणा ते।।१४६-१।।

पंच वि इंदियपाणा मणवचिकाया य तिण्णि बलपाणा।
आणप्पाणप्पाणो आउगपाणेण होंति दसपाणा।।१४६-२।।

पाणेहिं चदुहिं जीवदि जीविस्सदि जो हि जीविदो पुव्वं।
सो जीवो पाणा पुण पोग्गलदव्वेहिं णिव्वत्ता।।१४७।।

जीवो पाणणिबद्धो बद्धो मोहादिएहिं कम्मेहिं।
उवभुंजं कम्मफलं बज्झदि अण्णेहिं कम्मेहिं।।१४८।।

पाणाबाधं जीवो मोहपदेसेहिं कुणदि जीवाणं।
जदि सो हवदि हि बंधो णाणावरणादिकम्मेहिं।।१४९।।

आदा कम्ममलिमसो धरेदि पाणो पुणो पुणो अण्णे।
ण चयदि जाव ममत्तिं देहपधाणेसु विसयेसु।।१५०।।

जो इंदियादिविजई भवीय उवओगमप्पगं झादि।
कम्मेहिं सो ण रज्जदि किह तं पाणा अणुचरंति।।१५१।।

अत्तित्तणिच्छिदस्स हि अत्थस्सत्थंतरम्हि संभूदो।
अत्थो पज्जाओ सो संठाणादिप्पभेदेहिं।।१५२।।

णरणारयतिरियसुरा संठाणादीहिं अण्णहा जादा।
पज्जाया जीवाणं उदयादिहिं णामकम्मस्स।।१५३।।

तं सब्भावणिबद्धं दव्वसहावं तिहा समक्खादं।
जाणदि जो सवियप्पं ण मुहदि सो अण्णदवियम्हि।।१५४।।

अप्पा उवओगप्पा उवओगो णाणदंसणं भणिदो।
सो वि सुहो असुहो वा उवओगो अप्पणो हवदि।।१५५।।

रोगेण वा छुधाए तण्हाए वा समेण वा रूढं।
दिट्ठा समणं साहू पडिवज्जदु आदसत्तीए।।२५२।।

वेज्जावच्चणिमित्तं गिलाणगुरुबालवुड्ढसमणाणं।
लोगिगजणसंभासा ण णिंदिदा वा सुहोवजुदा।।२५३।।

एसा पसत्थभूदा समणाणं वा पुणो घरत्थाणं।
चरिया परेत्ति भणिदा ताएव परं लहदि सोक्खं।।२५४।।

रागो पसत्थभूदो वत्थुविसेसेण फलदि विवरीदं।
णाणाभूमिगदाणिह बीजाणिव सस्सकालम्हि।।२५५।।

छदुमत्थविहिदवत्थुसु वदणियमज्झयणझाणदाणरदो।
ण लहदि अपुणब्भावं भावं सादप्पगं लहदि।।२५६।।

अविदिदपरमत्थेसु य विसयकसायाधिगेसु पुरिसेसु।
जुट्ठं कदं व दत्तं फलदि कुदेवेसु मणुवेसु।।२५७।।

जदि ते विसयकसाया पाव त्ति परूविदा व सत्थेसु।
किह ते तप्पडिबद्धा पुरिसा णित्थारगा होंति।।२५८।।

उवरदपावो पुरिसो समभावो धम्मिगेसु सव्वेसु।
गुणसमिदिदोवसेवी हवदि स भागी सुमग्गस्स।।२५९।।

असुभोवयोगरहिदा सुद्धुवजुत्ता सुहोवजुत्ता वा।
णित्थारयंति लोगं तेसु पसत्थं लहदि भत्तो।।२६०।।

दिट्ठा पगदं वत्थुं अब्भुट्ठाणप्पधाणकिरियाहिं।
वट्टदु तदो गुणादो विसेसिदव्वो त्ति उवदेसो।।२६१।।

अब्भुट्ठाणं गहणं उवासणं पोसणं च सक्कारं।
अंजलिकरणं पणमं भणिदमिह गुणाधिगाणं हि।।२६२।।

अब्भुट्ठेया समणा सुत्तत्थविसारदा उवासेया।
संजमतवणाणड्ढा पणिवदणीया हि समणेहि।।२६३।।

ण हवदि समणो त्ति मदो संजमतवसुत्तसंपजुत्तो वि।
जदि सद्दहदि ण अत्थे आदपधाणे जिणक्खादे।।२६४।।

अववददि सासणत्थं समणं दिट्ठा पदोसदो जो हि।
किरियासु णाणुमण्णदि हवदि हि सो णट्ठचारित्तो।।२६५।।

गुणदोधिगस्स विणयं पडिच्छगो जो वि होमि समणो त्ति।
होज्जं गुणाधरो जदि सो होदि अणंतसंसारी।।२६६।।

अधिगगुणा सामण्णे वट्टंति गुणाधरेहिं किरियासु।
जदि ते मिच्छुवजुत्ता हवंति पब्भट्ठचारित्ता।।२६७।।

णिच्छिदसुत्तत्थपदो समिदकसाओ तवोधिगो चावि।
लोगिगजणसंसग्गं ण चयदि जदि संजदो ण हवदि।।२६८।।

णिग्गंथो पव्वइदो वट्टदि जदि ए हिगेहिं कम्मेहिं।
सो लोगिगो त्ति भणिदो संजमतवसंपजुत्तो वि।।२६९।।

तह्मा समं गुणादो समणो समणं गुणेहिं वा आहियं।
अधिवरुदु तम्हि णिच्चं इच्छदि जदि दुक्ख परिमोक्खं।।२७०।।

जे अजधागहिदत्था एदे तच्च त्ति णिच्छिदा समये।
अच्चंतफलसमिद्धं भमंति ते तो परं कालं।।२७१।।

अजधाचारविजुत्तो जधत्थपदणिच्छिदो पसंतप्पा।
अफले चिरं ण जीवदि इह सो संपुण्णसामण्णो।।२७२।।

सम्मं विदिदपदत्था चत्ता उवहिं बहित्थमज्झत्थं।
विसयेसु णावसत्ता जे ते सुद्धा त्ति णिद्दट्ठा।।२७३।।

सुद्धस्स य सामण्णं भणियं सुद्धस्स दंसणं णाणं।
सुद्धस्स य णिव्वाणं सो च्चिय सिद्धो णमो तस्स।।२७४।।

बुज्झदि सासणमेयं सागारणगारचरियया जुत्तो।
जो सो पवयणसारं लहुणा कालेण पप्पोदि।।२७५।।

इति प्रवचनचार (पवयणसारो)

श्री कुन्दकुन्दाइरियकदो।

अट्ठपाहुणं

दंसणपाहुडं

काऊण णमुक्कारं जिणवरवसहस्स वड्ढमाणस्स।
दसणमग्गं वोच्छामि जहाकमं समासेण।।१।।

दंसणमूलो धम्मो उवइट्ठो जिणवरेहिं सिस्साणं।
तं सोऊण सकण्णे दंसणहीणो ण वंदिव्वो।।२।।

दंसणभट्ठा भट्ठा दंसणभट्ठस्स णत्थि णिव्वाणं।
सिज्झंति चरियभट्ठा दंसणभट्ठा ण सिज्झंति।।३।।

सम्मत्तरयणभट्ठा जाणंता बहुविहाइं सत्थाइं।
आराहणाविरहिया भमंति तत्थेव तत्थेव।।४।।

सम्मत्तविरहिया णं सुट्ठु वि उग्गं तवं चरंता णं।
ण लहंहि बोहिलाहं अवि वाससहस्स कोडीहिं।।५।।

सम्मत्त-णाण-दंसण-बलवीरिय-वड्ढमाण जे सव्वे।
कलिकलुसपावरहिया वरणाणी होंति अइरेण।।६।।

सम्मत्तसलिलपवहो णिच्चं हियए पवट्टए जस्स।
कम्मं बालुययवरणं बन्धुच्चिय णासए तस्स।।७।।

जे दंसणेसु भट्ठा णाणे भट्ठा चरित्तभट्ठा य।
एदे भट्ठ वि भट्ठा सेसं पि जणं विणासंति।।८।।

जो कोवि धम्मसीलो संजमतवणियमजोयगुणधारी।
तस्स य दोस कहंता भग्गा भग्गत्तणं दिंति।।९।।

जह मूलम्मि विणट्ठे दुमस्स परिवार णत्थि परिवड्ढी।
तह जिणदंसणभट्ठा मूलविणट्ठा ण सिज्झंति।।१०।।

जह मूलाओ खंधो साहापरिवार बहुगुणो होई।
तह जिणदंसण मूलो णिद्दिट्ठो मोक्खमग्गस्स।।११।।

जे दंसणेसु भट्ठा पाए ण पडंति दंसणधराणं।
ते होंति लल्लमूआ बोही पुण दुल्लहा तेसिं।।१२।।

जे वि पडंति च तेसिं जाणंता लज्जागारवभयेण।
तेसिं पि णत्थि बोहि पावं अणुमोअमाणाणं।।१३।।

दुविहं पि गंथचायं तीसु वि जोएसु संजमो ठाद।
णाणम्मि करणसुद्धे उब्भसणे दंसणं होई।।१४।।

सम्मत्तादो णाणं णाणादो सव्वभावउवलद्धी।
उवलद्धपयत्थे पुण सेयासेयं वियाणेदि।।१५।।

सेयासेयविदण्हू उद्धुददुस्सील सीलवंतो वि।
सीलफलेणब्भुदयं तत्तो पुण लहइ णिव्वाणं।।१६।।

जिणवयणमोसहमिणं विसयसुहविरेयणं अमिदभूयं।
जर-मरण-वाहिहरणं खयकरणं सव्वदुक्खाणं।।१७।।

एक्कं जिणस्स रूवं बीयं उक्किट्ठसाववाणं तु।
अवरट्ठियाणं तइयं चउत्थं पुण लिंगदंसणं णत्थि।।१८।।

छद्दव्व णव-पयत्था पंचत्थी सत्त तच्च णिद्दिट्ठा।
सद्दहइ ताण रूवं सो सद्दिट्ठी मुणेयव्वो।।१९।।

जीवादीसद्दहणं सम्मत्तं जिणवरेहिं पण्णत्तं।
ववहारा णिच्छयदो अप्पाणं हवइ सम्मत्तं।।२०।।

एवं जिणपण्णत्तं दंसणंरयणं धरेह भावेण।
सारं गुणरयणत्तय सोवाणं पढम मोक्खस्स।।२१।।

जं सक्कइ तं कीरइ जं च ण सक्केइ तं च सद्दहणं।
केवलिजिणेहिं भणियं सद्दहमाणस्स सम्मत्तं।।२२।।

दंसणणाणचारत्ते तवविणये णिच्चकालसुपसत्था।
एदे दु वंदणीया जे गुणवादी गुणधराणं।।२३।।

सहजुप्पण्णं रूवं दट्ठुं जो मण्णए ण मच्छरिओ।
सो संजमपडिवण्णो मिच्छाइट्ठी हवइ एसो।।२४।।

अमराण वंदियाणं रूवं दट्ठूण सीलसहियाणं।
जे गारवं करंति य सम्मत्तविवज्जिया होंति।।२५।।

अस्संजदं ण वन्दे वत्थविहिणोवि सो ण वंदिज्ज।
दुण्णि वि होंति समाणा एगो वि ण संजदो होदि।।२६।।

ण वि देहो वंदिज्जइ ण वि य कुलो ण वि य जाइसंजुत्तो।
को वंदमि गुणहीणो ण हु समणो णेव सावओ होइ।।२७।।

वंदामि तवसमण्णा सीलं च गुणं च बंभचेरं च।
सिद्धिगमणं च तेसिं सम्मत्तेण सुद्धभावेण।।२८।।

चउसट्ठि चमरसहिओ चउतीसहि अइसएहिं संजुत्तो।
अणुवरबहुसत्तहिओ कम्मक्खयकारणणिमित्तो।।२९।।

णाणेण दंसणेण य तवेण चरियेण संजमगुणेण।
चउहिं पि समाजोगे मोक्खो जिणसासणे दिट्ठो।।३०।।

णाणं णरस्स सारो सारो वि णरस्स होइ सम्मत्तं।
सम्मताओ चरणं चरणाओ होइ णिव्वाणं।।३१।।

णाणम्मि दंसणम्मि य तवेण चरिएण सम्मसहिएण।
चउण्हं वि समाजोगे सिद्धा जीवा ण सन्देहो।।३२।।

कल्लाणपरंपरया लहंति जीवा विसुद्धसम्मत्तं।
सम्मद्दंसण-रयणं अग्घेदि सुरासुरे लोए।।३३।।

दट्ठूण य मणुयत्तं सहियं तह उत्तमेण गुत्तेण।
लद्धूण य सम्मत्तं अक्खयसुक्खं च मोक्खं च।।३४।।

विहरदि जाव जिणिंदो सहसट्ठसुलक्खणेहिं संजुत्तो।
चउतीसअइसयजुदो सा पडिमा थावरा भणिया।।३५।।

बारसविह-त्तवजुत्ता कम्मं खविऊण विहिबलेण स्सं।
वोसट्टचत्तदेहा णिव्वाणमणुत्तरं पत्ता।।३६।।

सुत्तपाहुडं

अरहंतभासियत्थं गणहरदेवेहिं गंथियं सम्मं।
सुत्तत्थमग्गणत्थं सवणा साहंति परमत्थं।।१।।

सुत्तम्मि जं सुदिट्ठं आइरियपरंपरेण मग्गेण।
णाऊण दुविह सुत्तं वट्टइ सिवमग्ग जो भव्वो।।२।।

सुत्तं हि जाणमाणो भवस्स भवणासणं च सो कुणदि।
सूई जहा असुत्ता णासदि सुत्ते सहा णो वि।।३।।

पुरिसो वि जो ससुत्तो ण विणासइ सो गओ वि संसारे।
सच्चेयण पच्चक्खं णासदि तं सो आदिस्समाणो वि।।४।।

सुत्तत्थं जिणभणियं जीवाजीवादि-बहुविहं अत्थं।
हेयाहेयं च तहा जो जाणइ सो हु सद्दिट्ठी।।५।।

जं सुत्तं जिणउत्तं ववहारो तह य जाण परमत्थो।
तं जाणिऊण जोई लहइ सुहं खवइ मलपुंजं।।६।।

सुत्तत्थपयविणट्ठो मिच्छादिट्ठी हु सो मुणेयव्वो।
खेडेवि ण कायव्वं पाणिपत्तं सचेलस्स।।७।।

हरिहरतुल्लो वि णरो सग्गं गच्छेइ एइ भवकोडी।
तहवि ण पावइ सिद्धिं संसारत्थो पुणो भणिदो।।८।।

उक्किट्ठसीहचरियं बहुपरियम्मो य गुरूयभारो य।
जो विहरइ सच्छंदं पावं गच्छेदि होदि मिच्छत्तं।।९।।

णिच्चेलपाणिपत्तं उवइट्ठं परमजिणवरिंदेहिं।
एक्को हि मोक्खमग्गो सेसा य अमग्गया सव्वे।।१०।।

जो संजमेसु सहिओ आरम्भपरिग्गहेसु विरओ वि।
सो होइ वंदणोओ ससुरासुरमाणुसे लोए।।११।।

जे वावीसपरीसह सहंति सत्तीसएहिं संजुत्ता।
ते होंति वंदणीया कम्मक्खयणिज्जरा साहू।।१२।।

अवसेसा जे लिंगी दंसणणाणेण सम्म संजुत्ता।
चेलेण य परिगहिया ते भणिया इच्छणिज्जाय।।१३।।

इच्छायारमहत्थं सुत्तठिओ जो हु छंडए कम्मं।
ठाणे ट्ठियसम्मत्तं परलोयसुहंकरो होई।।१४।।

अह पुण अप्पा णिच्छदि धम्माइं करेदि णिरवसेसाइं।
तहवि ण पावदि सिद्धिं संसारत्थो पुणो भणिदो।।१५।।

एएण कारणेण य तं अप्पा सद्दहेह तिविहेण।
जेण य लहेह मोक्खं तं जाणिज्जइ पयत्तेण।।१६।।

बालग्गकोडिमित्तं परिगहगहणं ण होइ साहूणं।
भुंजेइ पाणिपत्ते दिण्णण्णं इक्कठाणम्मि।।१७।।

जहजायरूवसरिसो तिलतुसमित्तं ण गिहदि हत्थेसु।
जइ लेइ अप्पबहुयं तत्तो पुण जाइ णिग्गोदं।।१८।।

जस्स परिग्गहगहणं अप्पं बहुयं च हवइ लिंगस्स।
सो गरहिउ जिणवयणे परिगहरहिओ णिरायारो।।१९।।

पंचमहव्वयजुत्तो तिहिं गुत्तिहिं जो स संजुदो होई।
णिग्गंथमोक्खमग्गो सो होदि हु वंदणिज्जो य।।२०।।

दुइयं च उत्तलिंगं उक्किट्ठं अवरसावयाणं च।
भिक्खं भमेइ पत्तो समिदिभासेण मोणेण।।२१।।

लिंगं इत्थीणं हवदि भुंजइ पिंडं सुएयकालम्मि।
अज्जिय वि एक्कवत्था वत्थावरणेण भुंजेइ।।२२।।

ण वि सिज्झइ वत्थधरो जिणसासणे जइ वि होइ तित्थयरो।
णग्गो विमोक्खमग्गो सेसा उम्मग्गया सव्वे।।२३।।

लिंगम्मि य इत्थीणं ययणंतरे णाहिकक्खदेसेसु।
भणिओ सुहुमो काओ तासं कह होइ पव्वज्जा।।२४।।

जइ दंसणेण सुद्धा उत्ता मग्गेण सावि संजुत्ता।
घोरं चरिय चरित्तं इत्थीसु ण पव्वया भणिया।।२५।।

चित्तासोहि ण तेसिं ढिल्लं भावं तहा सहावेण।
विज्जदि मासा तेसिं इत्थीसु ण संकया झाणं।।२६।।

माहेण अप्पगाहा समुद्दसलिले सचेलअत्थेण।
इच्छा जाहु णियत्ता ताह णियत्ताइं सव्वदुक्खाइं।।२७।।

चरित्तपाहुडं

सव्वण्हू सव्वदंसी णिम्मोहा वीयराय परमेट्ठी।
वंदित्तु तिजगवंदा अरहंता भव्वजीवेहिं।।१।।

णाणं दंसणं सम्मं चारित्त सेहि-कारणम् तेसिं।
मुक्खा राहण-हेडं चारित्तं पाहुडं वोच्छे।।२।।

एए तिण्णि वि भावा हवंति जीवस्स अक्खयामेया।
तिण्हि पि सोहणत्थे जिणभणियं दुविहं चारित्तं।।३।।

जं जाणइ तं णाणं जं पिच्छइ तं च दसणं भणियं।
णाणस्स पिच्छियस्स य समवण्णा होइ चारित्तं।।४।।

जिणणाणदिट्ठिसुद्धं पढमं सम्मत्तचरणचारित्तं।
विदियं संजमचरणं जिणणाणसदेसियं तं पि।।५।।

एवं चिय णाऊण य सव्वे मिच्छत्तदोस-संकाई।
परिहरि सम्मत्तमला जिणभणिया तिविहजोएण।।६।।

णिस्संकिय णिक्कंखिय णिव्विदिगिंछा अमूढ़दिट्ठी य।
उवगूहण ठिदिकरणं वच्छल्ल पहावणा य ते अट्ठ।।७।।

तं चेव गुणविसुद्धं जिणसम्मत्तं सुमुक्खठाणाय।
जं चरइ णाणजुत्तं पढमं सम्मत्तचरणचारित्तं।।८।।

सम्मत्तचरणसुद्धा संजमचरणस्स जइ व सुपसिद्धा।
णाणी अमूढदिट्ठी अचिरे पावंति णिव्वाणं।।९।।

वच्छल्लं विणएण य अणुकंपाए सुदाणदच्छाए।
मग्गणगुणसंसणाए अवगूहण रक्खणाए य।।१०।।

एएहिं लक्खणेहिं य लक्खिज्जइ अज्जवेहिं भावेहिं।
जीवो आराहंतो जिणसम्मत्तं अमोहेण।।११।।

उच्छाहभावणा संपसंससेवा कुदंसणे सद्धा।
अण्णाणमोह मग्गे कुव्वंतो जहदि-जिणसम्मं।।१२।।

उच्छाहभावणा-संपसंससेवा सुदंसणे सद्धा।
ण जहदि जिणसम्म्तं कुव्वंतो णाणमग्गे।।१३।।

अण्णाणं मिच्छत्तं वज्जइ णाणे विसुद्धसम्मत्ते।
अह मोहं सारंभं परिहर धम्मे अहिंसाए।।१४।।

पव्वज्ज संगचाए पयट्ठ सुत्तवे सुसंजमे भावे।
होइ सुविसुद्धझाणं णिम्मोहे वीयरायत्ते।।१५।।

मिच्छादंसणमग्गे मलिणे अण्णाणमोहदोसेहिं।
बज्झंति मूढजीवा मिच्छत्ता-बुद्धिउदएण।।१६।।

सम्मदंसण पस्सदि जाणदि णाणेण दव्वपज्जाया।
सम्मेण य सद्दहदि परिहरदि चरित्तजे दोसे।।१७।।

एए तिण्णि वि भावा हवंति जीवस्स मोहरहियस्स।
णियगुणमाराहंतो अचिरेण वि कम्म परिहरइ।।१८।।

संखिज्जमसंखिज्जगुणं च संसारिमेरूमत्ता णं।
सम्मत्तमणुचरंता करंति दुक्खक्खयं धीरा।।१९।।

दुविहं संजमचरणं सायारं तह हवे णिरायारं।
सायारं संग्गथे परिग्गहा रहिय खलु णिरायारं।।२०।।

दंसण वय समाइय पोसह सचित्त रायभत्ते य।
बंभारंभ-परिग्गह अणुमण उद्दिट्ठ देसविरदो य।।२१।।

पंचेवणुव्वयाइं गुणव्वयाइं हवंति तह तिण्णि।
सिक्खावय चत्तारि य संजमचरणं च सायारं।।२२।।

थूले तसकायवहे थूले मोसे तितिक्खथूले य।
परिहारो परपिम्मे परिग्गहारंभपरिमाणं।।२३।।

दिसिविदिसिमाण पढमं अणत्थदंडस्स वज्जणं विदियं।
भोगोपभोगपरिमा इयमेव गुणव्वया तिण्णि।।२४।।

सामाइयं च पढमं विदियं च तहेव पोसहं भणियं।
तइयं च अतिहिपुज्जं चउत्थ सल्लेहणा अंते।।२५।।

एवं सावयधम्मं संजमचरणं उदेसियं सयलं।
सुद्धं संजमचरणं जइधम्मं णिक्कलं वोच्छे।।२६।।

पंचिंदियसंवरणं पंच-वया पंचविंसकिरियासु।
पंच-समिदि तय-गुत्ती संजमचरणं णिरायारं।।२७।।

अमणुण्णे य मणुण्णे सजीवदव्वे अजीवदव्वे य।
ण करेई रायदोसे पंचेंदियसंवरो भणिओ।।२८।।

हिंसाविरइ अहिंसा असच्चविरई अदत्तविरई य।
तुरियं अबंभविरई पंचम संगम्मि विरई य।।२९।।

साहंति जं महल्ला आयरियं जं महल्लपुव्वेहिं।
जं च महल्लाणि तदो महल्लया इत्तहे ताइं।।३०।।

वयगुत्ती मणगुत्ती इरियासमिदी सुदाणणिक्खेवो।
अवलोयभोयणाए अहिंसए भावणा होंति।।३१।।

कोहभयहासलोहा मोहा विवरीयभावणा चेव।
विदियस्स भावणाए ए पंचेव य तहा होंति।।३२।।

सुण्णागारणिवासो विमोचितावास जं परोधं च।
एसणसुद्धिसउत्तं साहम्मो संविसंवादो।।३३।।

महिलालोयणपुव्वरइ-सरणससत्तवसहिविकहाहिं।
पुट्ठियरसेहिं विरओ भावण पंचावि तुरियम्मि।।३४।।

अपरिग्गह समणुण्णेसु सद्दपरिसरसरूवगंधेसु।
रायद्दोसाईणं परिहारो भावणा होंति।।३५।।

इरिया भासा एसण जा सा आदाण चेव णिक्खेवो।
संजमसोहिणिमित्ते खंति जिणा पंच समिदोओ।।३६।।

भव्वजणबोहणत्थं जिणमग्गे जिणवरेहिं जह भणियं।
णाणं णाणसरूवं अप्पाणं तं वियाणेहि।।३७।।

जीवाजीवविहत्ती जो जाणइ सो हवेइ सण्णाणी।
रायादिदोसरहिओ जिणसासणे मोक्खमग्गुत्ति।।३८।।

दंसणणाणचरित्तं तिण्णिवि जाणेह परमसद्धाए।
जं जाणिऊण जोई अइरेण लहंति णिव्वाणं।।३६।।

पाऊण णाणसलिलं णिम्मलसुविसुद्धभावसंजुत्ता।
होंति सिवालयवासी तिहुवणचूड़ामणी सिद्धा।।४०।।

णाणगुणेहिं विहीणा ण लहंते ते सुइच्छियं लाहं।
इय णाउं गुणदोसं तं सण्णाणं वियाणेहि।।४१।।

चारित्तसमारूढो अप्पासु परं ण ईहए णाणी।
पावइ अइरेण सुहं अणोवमं जाण णिच्छयदो।।४२।।

एवं संखेवेण य भणियं णाणेण वीयराएण।
सम्मत्तसंजमासयदुण्हं पि उदेसियं चरणं।।४३।।

भावेह भावसुद्धं फुडु रइयं चरणपाहुडं चेव।
लहु चउगइ चइऊणं अचिरेणऽपुणब्भवा होई।।४४।।

बोहपाहुडं

बहुसत्थअत्थजाणे संजमसम्मत्तसुद्धतवयरणे।
वंदित्ता आयरिए कसायमलवज्जिदे सुद्धे।।१।।

सयलजणबोहणत्थं जिणमग्गे जिणवरेहिं जह भणियं।
वुच्छामि समासेणय छक्कायहियंकरं सुणसु।।२।।

आयदणं चेदिहरं जिणपडिमा दंसणं च जिणबिंबं।
भणियं सुवीयरायं जिणमुद्दा णाणमदत्थं।।३।।

अरहंतेण सुदिट्ठं जं देवं तित्थमिह य अरहंतं।
पावज्ज-गुणविसुद्धा इय णायव्वा जहाकमसो।।४।।

मणवयणकायदव्वा आसत्ता जस्स इंदिया विसया।
आयदणं जिणमग्गे णिद्दिट्ठं संजयं रूवं।।५।।

मयरायदोस मोहो कोहो लोहो य जस्स आयत्ता।
पंचमहव्यधारी आयदणं महरिसी भणियं।।६।।

सिद्धं जस्स सदत्थं विसुद्धझाणस्स णाणजुत्तस्स।
सिद्धायदणं सिद्धं मुणिवरवसहस्स मुणिदत्थं।।७।।

बुद्धं जं वोहंतो अप्पाणं चेइयाइं अण्णं च।
पंचमहव्वयसुद्धं णाणमयं जाण चेदिहरं।।८।।

चेइय बंधं मोक्खं दुक्खं सुक्खं च अप्पयं तस्स।
चेइहरं जिणमग्गे छक्काय हियंकरं भणियं।।९।।

सपरा जंगमदेहा दंसणणाणेण सुद्धचरणाणं।
णिग्गंथवीयराया जिणमग्गे एरिसा पडिमा।।१०।।

जं चरदि सुद्धचरणं जाणइ पिच्छेइ सुद्धसम्मत्तं।
सा होइ वंदणीया णिग्गंथा संजदा पडिमा।।११।।

दंसणअणंतणाणं अणंतवीरिय अणंतसुक्खा य।
सासयसुक्ख अदेहा मुक्का कम्मट्ठबंधेहिं।।१२।।

णिरुवममचलमखोहा निम्मि विया जंगमेण रूवेण।
सिद्धठाणम्मि ठिया वोसरपडिमा धुवा सिद्धा।।१३।।

दंसेइ मोक्खमग्गं सम्मत्तं संजमं सुधम्मं च।
णिग्गंथं णाणमयं जिणमग्गे दंसणं भणियं।।१४।।

जह फुल्लं गंधमयं भवदि हु खीरं स घियमयं चावि।
तह दंसणं हि सम्मं णाणमयं होइ रूवत्थं।।१५।।

जिणविम्बं णाणमयं संजमसुद्धं सुवीयरायं च।
जं देइ दिक्खसिक्खा कम्मक्खयकारणे सुद्धा।।१६।।

तस्स य करह पणामं सव्वं पुज्जं च विणय वच्छल्लं।
जस्स य दंसण णाणं अत्थि धुवं चेयणाभावो।।१७।।

तववयगुणेहिं सुद्धो जाणदि पिच्छेइ सुद्धसम्मत्तं।
अरहंतमुद्द ऐसा दायारी दिक्खसिक्खा य।।१८।।

दढसंजममुद्दाए इन्दियमुद्दा कसायदढमुद्दा।
मुद्दा इह णाणाए जिणमुद्दा एरिसा भणिया।।१९।।

संजमसंजुत्तस्स य सुझाणजोयस्स मोक्खमग्गस्स।
णाणेण लहदि लक्खं तम्हा णाणं च णायव्वं।।२०।।

जह णवि लहदि हु लक्खं रहिओ कंडस्स वेज्जयविहीणो।
तह णवि लक्खदि लक्खं अण्णाणी मोक्खमग्गस्स।।२१।।

णाणं पुरिसस्स हवदि लहदि सुपुरिसो वि विणयसंजुत्तो।
णाणेण लहदि लक्खं लक्खंतो मोक्खमग्गस्स।।२२।।

मइ धणु जस्स थिरं सदगुण वाणा सुअत्थि रयणत्तं।
परमत्थबद्धलक्खो ण वि चुक्कदि मोक्खमग्गस्स।।२३।।

सो देवो जो अत्थं धम्मं कामं सुदेइ णाणं च।
सो देइ जस्स अत्थि दु अत्थो धम्मो य पव्वज्जा।।२४।।

धम्मो दयाविसुद्धो पव्वज्जा सव्वसंगपरिचत्ता।
देवो ववगयमोहो उदययरो भव्वजीवाणां।।२५।।

वयसम्मत्तविसुद्धे पंचिंदियसंजदे णिरावेक्खे।
ण्हाएउ मुणी तित्थे दिक्खासिक्खा सुण्हाणेण।।२६।।

जं णिम्मलं सुधम्मं सम्मत्तं संजमं तवं णाणं।
तं तित्थं जिणमग्गे हवेइ जदि संतिभावेण।।२७।।

णामे ठवणे हि य संदव्वे भावेहि सगुणपज्जाया।
चउणागदि संपदिमं भावा भावंति अरहंतं।।२८।।

दंसण अणंत णाणे मोक्खो णट्ठट्ठकम्मबंधेण।
णिरुवमगुणमारूढो अरहंतो एरिसो होई।।२९।।

जरवाहिजम्ममरणं चउगइगमणं च पुण्ण पावं च।
हंतूण दोसकम्मे हुउ णाणमयं च अरहंतो।।३०।।

गुणठाणमग्गणेहिं य पज्जत्तीपाणजीवठाणेहिं।
ठावण पंचविहेहिं पणयव्वा अरूहपुरिसस्स।।३१।।

तेरहमे गुणठाणे सजोइकेवलिय होइ अरहंतो।
चउतीस अइसयगुणा होंति हु तस्सट्ठ पडिहारा।।३२।।

गइ इंदियं च काए जोए वेए कसाय णाणे य।
संजम दंसण लेस्सा भविया सम्मत्त सण्णि आहारे।।३३।।

आहारो य सरीरो तह इंदियमणआणपाणभासा य।
पज्जत्तिगुणसमिद्धो उत्तमदेवो हवइ अरहो।।३४।।

पंच वि इंदियपाणा मणवयकाएण तिण्णि बलपाणा।
आणप्पाणप्पाणा आउगपाणेण होंति दह पाणा।।३५।।

मणुयभवे पंचिंदिय जीवट्ठाणेसु होइ चउदसमे।
एदे गुणगणजुत्तो गुणमारूढो हवइ अरहो।।३६।।

जरवाहिदुक्खरहियं आहारणिहारवज्जियं विमलं।
सिंहाण खेल सेओ णत्थि दुगंछा य दोसो य।।३७।।

दस पाणा पज्जत्ती अट्ठसहस्सा य लक्खणा भणिया।
गोखीरसंखधवलं मंसं रुहिरं च सव्वंगे।।३८।।

एरिसगुणेहिं सव्वं अइसयवंतं सुपरिमलामोयं।
ओरालियं च कायं णायव्वं अरहपुरिसस्स।।३९।।

मयरायदोसरहिओ कसायमलवज्जिओ य सुविसुद्धो।
चित्तपरिणामरहिदो केवलभावे मुणेयव्वो।।४०।।

सम्मद्दंसणि पस्सइ जाणदि णाणेण दव्वपज्जाया।
सम्मत्तगुणविसुद्धो भावो अरहस्स णायव्वो।।४१।।

सुण्णहरे तरुहिट्ठे उज्जाणे तह मसाणवासे वा।
गिरिगुह गिरिसिहरे वा भीमवणे अहव-वसिते वा।।४२।।

सवसासत्तं तित्थं वचचइदालत्तयं च वुत्तेहिं।
जिणभवणं अह वेज्झं जिणमग्गे जिणवरा विंति।।४३।।

पंचमहव्वयजुत्ता पंचिदियसंजया णिरावेक्खा।
सज्झायझाणजुत्ता मुणिवरवसहा णिइच्छन्ति।।४४।।

गिहगंथमोहमुक्का बावीसपरीसहा जियकषाया।
पावारंभविमुक्का पव्वज्जा एरिसा भणिया।।४५।।

धणधण्णवत्थदाणं हिरण्णसयणासणाइ छत्ताइं।
कुद्दाणविरहरहिया पव्वज्जा एरिसा भणिया।।४६।।

सत्तूमित्ते य समा पसंसणिंदा अलद्धिलद्धिसमा।
तणकणए समभावा पव्वज्जा एरिसा भणिया।।४७।।

उत्तममज्झिमगेहे दारिद्दे ईसरे णिरावेक्खा।
सव्वत्थ गिहिदपिंडा पव्वज्जा एरिसा भणिया।।४८।।

णिग्गंथा णिस्संगा णिम्माणासा अराय णिद्दोसा।
णिम्मम णिरहंकारा पव्वज्जा एरिसा भणिया।।४६।।

णिण्णेहा णिल्लोहा णिम्मोहा णिव्वियार णिक्कलुसा।
णिब्भय णिरासभावा पव्वज्जा एरिसा भणिया।।५०।।

जहजायरूवसरिसा अवलंबियभुअ णिराउहा संता।
परकियणिलयणिवासा पव्वज्जा एरिसा भणिया।।५१।।

उवसमखमदमजुत्ता सरीरसक्कारवज्जिया रुक्खा।
मयरायदोसरहिया पव्वज्जा एरिसा भणिया।।५२।।

विवरीयमूढभावा पणट्ठकम्मट्ठ णट्ठमिच्छत्ता।
सम्मत्तगुणविसुद्धा पव्वज्जा एरिसा भणिया।।५३।।

जिणमग्गे पव्वज्जा छहसंहणणेसु भणिय णिग्गंथा।
भावंति भव्वपुरिसा कम्मक्खयकारणे भणिया।।५४।।

तिलतुसमत्तणिमित्तसम बाहिरग्गंथसंगहो णत्थि
पव्वज्ज हवइ एसा जह भणिया सव्वदरसीहिं।।।५५।।

उवसग्गपरिसहसहा णिज्जणदेसे हि णिच्च अत्थेइ।
सिल कट्ठे भूमितले सव्वे आरुहइ सव्वत्थ।।५६।।

पसुमहिलसंढसंगं कुसीलसंगं ण कुणइ विकहाओ।
सज्झायझाणजुत्ता पव्वज्जा एरिसा भणिया।।५७।।

तववयगुणेहिं सुद्धा संजमसम्मत्तगुणविसुद्धा य।
सुद्धा गुणेहिं सुद्धा पव्वज्जा एरिसा भणिया।।५८।।

एवं आयत्तणगुणपज्जंता बहुविसुद्धसम्मत्ते।
णिग्गंथे जिणमग्गे संखेवेणं जहाखादं।।५९।।

रूवत्थं सुद्धत्थं जिणमग्गे जिणवरेहिं जह भणियं।
भव्वजणबोहणत्थं छक्कायहियंकरं उत्तं।।६०।।

सद्दवियारो हूओ भासासुत्तेसु जं जिणे कहियं।
सो तह कहियं णायं सीसेण य भद्दबाहुस्स।।६१।।

बारसअंगवियाणं चउदसपुव्वंगविउलवित्थरणं।
सुयणि भद्दबाहू गमयगुरु भयवओ जयओ।।६२।।

भावपाहुडं

णमिऊण जिणवरिंदे णरसुरभवणिदवंदिए सिद्धे।
वोच्छामि भावपाहुडमवसेसे संजदे सिरसा।।१।।

भावो य पढमलिंगं ण दव्वलिंगं च जाण परमत्थं।
भावो कारणभूदो गुणदोसाणं जिणा वेंति।।२।।

भावविसुद्धणिमित्तं बाहिरगंथस्स कीरए चाओ।
बाहिरचाओ विहलो अब्भंतरगंथजुत्तस्स।।३।।

भावरहिओ ण सिज्झइ जइ वि तवं चरइ कोडिकोडीओ
जम्मंतराइ बहुसो लंबियहत्थो गलियवत्थो।।४।।

परिणामम्मि असुद्धे गंथे मुञ्चेइ बाहिरे य जई।
बाहिरगंथच्चाओ भावविहूणस्स किं कुणइ।।५।।

जाणहि भावं पढमं किं ते लिंगेण भावरहिएण।
पंथिय सिवपुरिपंथं जिणउवइट्ठं पयत्तेण।।६।।

भावरहिएण सउरिस अणाइकालं अणंतसंसारे।
गहिउज्झियाइं बहुसो बाहिरणिग्गंथरूवाइं।।७।।

भीसणणरयगईए तिरियगईए कुदेवमणुगइए।
पत्तो सि तिव्वदुक्खं भावहि जिणभावणा जीव।।८।।

सत्तसु णरयावासे दारुणभीसाइं असहणीयाइं।
भुत्ताइं सुइरकालं दुःक्खाइं णिरंतरं सहियाइ।।९।।

खणणुत्तावणवालणवेणविच्छेयणाणिरोहं च।
पत्तो सि भावरहिओ तिरियगईए चिरं कालं।।१०।।

आगंतुक माणसियं सहजं सारीरियं च चत्तारि।
दुक्खाइं मणुयजम्मे पत्तो सि अणंतयं कालं।।११।।

सुरणिलयेसु सुरच्छरविभोयकाले य माणसं तिव्वं।
संपत्तो सि महाजस दुःखं सुहभावणारहिओ।।१२।।

कंदप्पमाइयाओ पंच वि असुहादिभावणाई य।
भाऊण दव्वलिंगी पहीणदेवो दिवे जाओ।।१३।।

पासत्थभावणाओ अणाइकालं अणेयवाराओ।
भाउण दुहं पत्तो कुभावणाभावबीएहिं।।१४।।

देवाण गुण विहूई इड्ढीमाहप्प बहुविहं दट्ठुं।
होऊण हीणदेवो पत्तो बहु माणसं दुक्खं।।१५।।

चउविहविकहास्सत्तो मयमत्तो असुहभावपयडत्थो।
होऊण कुदेवत्तं पत्तो सि अणेयवाराओ।।१६।।

असुईवीहत्थेहि य कलिमलबहुलाहि गब्भवसहीहि।
वसिओ सि चिरं कालं अणेयजणणीण मुणिपवर।।१७।।

पीओ सि थणच्छीरं अणंतजम्मंतराइं जणणीणं
अण्णाण्णाण महाजस सायरसलिलादु अहिययरं।।१८।।

तुह मरणे दुक्खेण अण्णण्णाणं अणेयजणणीणं।
रुण्णाण णयणणीरं सायरसलिलादु अहिययरं।।१९।।

भवसायरे अणंते छिण्णुज्झिय केसणहरणालट्ठी।
पुञ्जइ जइ को वि जए हवदि य गिरिसमधियारासी।।२०।।

जलथलसिहिपवणंवरगिरिसरिदरितरूवणाइ सव्वत्तो।
वसिओ सि चिरं कालं तिहुवणमज्झे अण्णप्पवसो।।२१।।

गसियाइं पुग्गलाइं भुवणोदरवत्तियाइं सव्वाइं।
पत्तो सि तो ण तित्तिं पुणरुत्तं ताइं भुञ्जंतो।।२२।।

जम्हा पंचविहाचारं आचरंतो पभासदि।
आयरियाणि देसंतो आइरिओ तेण वुच्चदे।।५१०।।

आइरियणमोक्कारं भावेण य जो करेदि पयदमदी।
सो सव्व दुक्खमोक्खं पावदि अचिरेण कालेण।।*।।

बारसंगे जिणक्खादं सज्झायं कथितं बुधे।
उवदेसइ सज्झायं तेणुवज्झाउ उच्चदि।।५११।।

उवज्झायणमोक्कारं भावेण य जो करेदि पयदमदी।
सो सव्वदुक्खमोक्खं पावइ अचिरेण कालेण।।*।।

णिव्वाणसाधए जोगे सदा जुंजंति साधवो।
समा सव्वेसु भूदेसु तह्मा ते सव्वसाधवो।।५१२।।

साहूण णमोक्कारं भावेण य जो करेदि पयदमदी।
सो सव्वदुक्खमोक्खं पावइ अचिरेण कालेण।।*।।

एवं गुणजुत्ताणं पंचगुरुणं विसुद्धकरणेहिं।
जो कुणदि णमोक्कारं सो पावदि णिव्वुदिं सिंग्घं।।५१३।।

एसो पंचणमोयारो सव्वपावपणासणो।
मंगलेसु य सव्वेसु पढमं हवदि मगलं।।५१४।।

ण वसो अवसो अवसस्म कम्ममावस्सयंति बोधव्वा।
जुत्ति त्ति उबाय त्ति य णिरवयवा होदि णिज्जुत्ती।।५१५।।

सामाइय चउवीसत्थववंदणयं पडिक्कमणं।
पच्चक्खाणं च तहा काओसग्गो हवदि छट्ठो।।५१६।।

सामाइयणिज्जुत्ती वोच्छामी जहाकमं समासेण।
आयरियपरंपराए जहागदं आणुपुव्वीए।।५१७।।

णाम ट्ठवणा दव्वे खेत्ते काले तहेव भावे य।
सामाइयह्मि एसो णिक्खेओ छव्विहो णेओ।।५१८।।

पडिदेससमयपुग्गलआउगपरिणामणामकालट्ठं।
गहिउज्झियाइं बहुसो अणंतभवसायरे जीव।।३५।।

तेयाला तिण्णि सया रज्जूणं लोयखेत्तपरिमाणं।
मुत्तूणट्ठ पएसा जत्थ ण दुरूदुल्लिओ जीवो।।३६।।

एककैककंगुलि वाही छण्णवदी होंति जाण मणुयाणं।
अवसेसे य सरीरे रोया मण कित्तिया भणिया।।३७।।

ते रोया वि य सयला सहिया ते परवसेण पुव्वमवे।
एवं सहसि महाजस किं वा बहुएहिं लविएहिं।।३८।।

पित्तंतमुत्तफेएसकालिज्जयरूहिरखरिसकिमिजाले।
उयरे वसिओ सि चिरं णवण्णामासेहिं पत्तेहिं।।३९।।

दियसंगट्ठियमसणं आहारियं मायभुत्तमण्णांते।
छद्दिखरिसाण मज्झे जठरे वसिओ सि जणणीए।।४०।।

सिसुकाले य अयाणे असुईमज्झम्मि लोलिओ सि तुमं।
असुई असिया बहुसो मुणिवर बालत्तपत्तेण।।४१।।

मंसट्ठिसुक्कसोणियपित्तंतसवत्तकुणिमदुग्गंधं।
खरिसवसापूय खिब्भिस भरियं चितेहिं देहउडं।।४२।।

भावविमुत्तो ण य मुत्तो बंधवाइमित्तेण।
इय भाविऊण उज्झसु गंधं अब्भंतरं धीर।।४३।।

देहादिचत्तसंगो माणकसाएण कलुसिओ धीर!।
अत्तावणेण जादो बाहुबली कित्तियं कालं।।४४।।

महुपिंगो णाम मुणी देहाहारादिचत्तवावारो।
सवणत्तणं ण पत्तो णियाणमित्तेण भवियणुय।।४५।।

अण्णं च वसिट्ठमुणी पत्तो दुक्खं णियाणदोसेण।
सो णत्थि वासठाणो जत्थ ण दुरूदुल्लिओ जीवो।।४६।।

सो णत्थि तप्पएसो चउरासीलक्खजोणिवासम्मि।
भाव विरओ वि सवणो जत्थ ण दुरूदुल्लिओ जीव।।४७।।

भावेण होइ लिंगी ण हु लिंगी होइ दव्वमित्तेण।
तम्हा कुणिज्ज भावं किं कीरइ दव्वलिंगेण।।४८।।

दंडयणयरं सयलं डहिडं अब्भंतरेण दोसेण।
जिणलिंगेण वि बाहू पडिओ सो रउखं नरयं।।४६।।

अवरोत्ति दव्ववण्णो दंसणवरणाणचरणपब्भट्ठो।
दीवायणो त्ति णामो अणंतसंसारिओ जाओ।।५०।।

भावसवणो य धीरो जुवईजणवेढिओ विशुद्धमई।
णामेण सिवकुमारो परीत्तसंसारिओ जादो।।५१।।

अंगाइं यदस य दुण्णि य चउदस पुव्वाइं सयलसुयणाणं।
पढिओ अभव्वसेणो ण भावसवणत्तणं पत्तो।।५२।।

तुसमासो घोसंतो भावविसुद्धो महाणुभावो य।
णामेण य सिवभूई केवलणाणी फुड जाओ।।५३।।

भावेण होइ णग्गो वाहिरलिंगेण किं च णग्गेण।
कम्मपयडीण णियरं णासइ भावेण दव्वेण।।५४।।

णग्गत्तणं अकज्जं भावणरहियं जिणेहिं पण्णत्तं।
इय णाऊण य णिच्चं भाविज्जहि अप्पयं धीर।।५५।।

देहादिसंगरहिओ माणकसाएहिं सयलपरिचत्तो।
अप्पा अप्पम्मि रओ स भावलिंगीहवे साहू।।५६।।

ममत्तिं परिवज्जामि णिम्ममत्तिमुवट्ठिदो।
आलबणं च मे आदा अवसेसाइं वोसरे।।५७।।

आदा खु मज्झ णाणे आदा मे दंसणे चरित्ते य।
आदा पच्चक्खाणे आदा मे संवरे जोगे।।५८।।

एगो मे सस्सदो अप्पा णाणदंसणलक्खणो।
सेसा मे बाहिरा भावा सव्वे संजोगलक्खणा।।५९।।

भावेह भावसुद्धं अप्पा सुविसुद्धणिम्मलं चेव।
लहु चउगइ चइऊणं जइ इच्चह सासयं सुक्खं।।६०।।

जो जीवो भावंतो जीवसहावं सुभावसंजुत्तो।
सो जरमरणविणासं कुणइ फुडं लहइ णिव्वाणं।।६१।।

जीवो जिणपण्णत्तो णाणसहाओ य चेयणासहिओ।
सो जीवो णायव्वो कम्मक्खयकरणणिम्मित्तो।।६२।।

जेसिं जीवसहाओ णत्थि अभावो य सव्वहा तत्थ।
ते होंति भिण्णदेहा सिद्धा वचिगोयरमतीदा।।६३।।

अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं।
जाणमलिंगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं।।६४।।

भावहि पंचपयारं णाणं अण्णाणणासणं सिग्घं।
भावणभावियसहियो दिवसिवसुहभायणो होइ।।६५।।

पढ़िएण वि किं कीरइ किं वा सुणिएण भावरहिएण।
भावो कारणभूदो सायारणयारभूदाणं।।६६।।

दव्वेण सयल णग्गा णारयतिरिया य सयलसंघाया।
परिणामेण असुद्धा ण भावसवणत्तणं पत्ता।।६७।।

णग्गो पावई दुक्खं णग्गो संसारसायरे भमई।
णग्गो ण लहइ बोहिं जिणभावणवज्जिओ सुइरं।।६८।।

अयसाण भायणेण य किं ते णग्गेण पावमलिणेण।
पेसुण्णहासमच्छरमायाबहुलेण सवणेण।।६९।।

पयडहिं जिणवरलिंगं अब्भिंतरभावदोसपरिसुद्धो।
भावमलेण य जीवो बाहिरसंगम्मि मयलियइ।।७०।।

धम्मम्मि णिप्पवासो दोसावासो य उच्छुफुल्लसमो।
णिप्फलणिग्गुणयारो णउसवणो णग्गरूवेण।।७१।।

जे रायसंगजुत्ता जिणभावणरहियदव्व णिग्गंथा।
ण लहंति ते समाहिं बोहिं जिणसासणे विमले।।७२।।

भावेण होइ णग्गो मिच्छत्ताईं य दोस चइऊणं।
पच्छा दव्वेण मुणी पयडदि लिंगं जिणाणए।।७३।।

भावो वि दिव्वसिवसुक्खभायणो भाववज्जिओ सवणो।
कम्मलमलिणचित्तो तिरियालयभायणो पावो।।७४।।

खयरामरमणुयकरं जलिमालाहिं च संथुया विउला।
चक्कहररायलच्छी लब्भेइ बोही ण भव्वणुआ।।७५।।

भावं तिविहपयारं सुहासुहं सुद्धमेव णायव्वं।
इदि जिणवरेहिं भणियं जं सेयं तं समायरह।।७६।।

सुद्धं सुद्धसहावं अप्पा अप्पम्मि तं च णायव्वं।
इदि जिणवरेहिं भणियं जं सेयं तं समायरह।।७७।।

पयलियमाणकसाओ पयलियमिच्छत्तमोहसमचित्तो।
पावइ तिहुयणसारं बोही जिणसासणे जीवो।।७८।।

विसयविरत्तो समणो छद्दसवरकारणाइं भाऊण।
तित्थयरणामकम्मं बंधइ अइरेण कालेण।।७९।।

वारसविहतवयरणं तेरस किरियाउ भाव तिविहेण।
धरहि मणमत्तदुरियं णाणांकुसएण मुणिपवर।।८०।।

पंचविहचेलचायं खिदिसयणं दुविहसंजमं भिक्खू।
भावं भावियपुव्वं जिणलिंगं णिम्मलं सुद्धं।।८१।।

जह रयणाणं पवरं वज्जं जह तरूगणाण गोसीरं।
तह धम्माणं पवरं जिणधम्मं भाविभवमहणं।।८२।।

पूयादिसु वयसहियं पुण्णं हि जिणेहिं सासणे भणियं।
मोहक्खोह विहीणो परिणामो अप्पणो धम्मो।।८३।।

सद्दहदि य पत्तेदि य रोचेदि य तह पुणो वि फासेदि।
पुण्णं भोयणिमित्तं ण हु सो कम्मक्खयणिमित्तं।।८४।।

अप्पा अप्पम्मि रओ रायादिसु सयलदोसपरिचत्तो।
संसारतरणहेदू धम्मोत्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं।।८५।।

अहपुण अप्पा णिच्छदि पुण्णईं करेदि णिरवसेसाइं।
तह वि ण पावदि सिद्धिं संसारत्थो पुणो भणिदो।।८६।।

एएण कारणेण य तं अप्पा सद्दहेह तिविहेण।
जेण य लहेह मोक्खं तं जाणिज्जह पयत्तेण।।८७।।

मच्छो वि सालिसित्थो असुद्धभावो गओ महाणरयं।
इय णाउं अप्पाणं भावह जिणभावणं णिच्चं।।८८।।

बाहिरसंगच्चाओ गिरिसरिदरिकंदराइ आवासो।
सयलो णाणज्झयणो णिरत्थओ भावरहियाणं।।८६।।

भंजसु इंदियसेण भंजसु मणोमक्कडं पयत्तेण।
मा जणरंजणकरणं बाहिरवयवेस तं कुणसु।।६०।।

णवकणोकसाय वग्गं मिच्छत्तं चयसु भावसुद्धीए।
चेइयपवयणगुरुणं करेहिं भत्तिं जिणाणाए।।६१।।

तित्थयरभासियत्थं गणहरदेवेहिं गंथियं सम्मं।
भावहि अणुदिणु अतुलं विसुद्धभावेण सुयणाणं।।६२।।

पीऊण णाणसलिलं णिम्महतिसडाहसोसउम्मुक्का।
होंति सिवालयवासी तिहुवणचूड़ामणी सिद्धा।।६३।।

दस दस दो सुपरीसह सहहि मुणी सयलकाल काएण।
सुत्तेण अप्पमत्तो संजम घादं पमोत्तूण।।६४।।

जह पत्थरो ण भिज्जइ परिट्ठिओ दीहकालमुदएण।
तह साहू वि ण भिज्जइ उवसग्गपरीसहेहिं तो।।६५।।

भावहि अणुवेक्खाओ अवरे पणवीसभावणा भावि।
भावरहिएण किं पुण बाहिरलिंगेण कायव्वं।।६६।।

सव्वविरओ विभावहि णव य पयत्थाइं सत्त तच्चाइं।
जीवसमासाइं मुणी चउदस गुणठाणणामाइं।।६७।।

णवविहबंभं पयडहिं अब्बंभं दसविहं पमोत्तूण।
मेहुणसण्णासत्तो भमिओसि भण्णवे भीमे।।६८।।

भावसहिदो य मुणणो पावइ आराहणाचउक्कं च।
भावरहिदो य मुणिवर भमह चिरं दीहसंसारे।।६९।।

पावंति भावसवणा कल्लाणपरंपराइं सोक्खाइं।
दुक्खाइं दव्वसवणा णरतिरियकुदेवजोणीए।।१००।।

छायालदोसदूसियमसणं गसिउं असुद्धभावेण।
पत्तो सि महावसणं तिरियगईए अणप्पवसो।।१०१।।

सच्चित्तमत्तपाणं गिद्धी दप्पेणऽधी पभुत्तूण।
पत्तोसि तिव्वदुक्खं अणाइकालेण तं चिंत।।१०२।।

कंद मूलं बीजं पुप्फं पत्तादि किंचि सच्चित्तं।
असिऊण माणगव्वं भमिओ सि अणंतसंसारे।।१०३।।

विणयं पंचपयारं पालहि मणवयणकायजोएण।
अविणयणरा सुविहियं तत्तो मुत्तिं ण पावंति।।१०४।।

णियसत्तीए महाजस भत्तीराएण णिच्चकालम्मि।
तं कुण जिणभत्तिपरं विज्जावच्चं दसवियप्पं।।१०५।।

जं किंचि कयं दोसं मणवयकाएहिं असुहभावेण।
तं गरहि गुरुसयासे गारव मायं च मोत्तूण।।१०६।।

दुज्जणवयणचढक्कं णिट्ठुरकडुयं सहंति सप्पुरिसा।
कम्ममलणासणट्ठं भावेण य णिम्मा सवणा।।१०७।।

पावं खवइ असेसं खमाए पडिमंडिओ य मुणिपवरो।
खेयरअमरणराणं पसंसणीओ धुवं होई।।१०८।।

इय णाऊण खमागुण खमेहि तिविहेण सयल जीवाणं।
चिरसंचियकोहसिहिं वरखमसलिलेण सिंचेह।।१०९।।

दिक्खाकालाईयं भावहि अवियारदंसणविसुद्धो।
उत्तमबोहिणिमित्तं असारसाराणि मुणिऊण।।११०।।

सेवहि चउविहलिंगं अब्भंतरलिंगसुद्धिमावण्णो।
बाहिरलिंगमकज्जं होइ फुडं भावरहियाणं।।१११।।

आहारभयपरिग्गहमेहुणसण्णाहि मोहिओसि तुमं।
भमिओ संसारवणे अणाइकालं अणप्पवसो।।११२।।

बाहिरसयणत्ताणतरुमूलाईणि उत्तरगुणाणि।
पालहि भावविशुद्धो पूयालाहं ण ईहंतो।११३।।

भावहि पढमं तच्चं विदियं तदियं चउत्थ पंचमयं।
तियरणसुद्धो अप्पं अणाइणिहणं तिवग्गहरं।।११४।।

जाव ण भावइ तच्चं जाव ण चिंतेह चिंतणीयाइं।
ताव ण पावइ जीवो जरमरणविवज्जियं ठाणं।।११५।।

पावं हवइ असेसं पुण्णमसेसं च हवइ परिणामा।
परिणामादो बंधो मुक्खो जिणसासणे दिट्ठो।।११६।।

मिच्छत्त तह कसाया असंजमजोगेहिं असुहलेसेहिं।
बंधइ असुहं कम्मं जिणवयणपरम्मुहो जीवो।।११७।।

तव्विवरीओ बंधइ सुहकम्मं भावसुद्धिमावण्णो।
दुविहपयारं बंधइ संखेवेणेव वज्जरियं।।११८।।

णाणावरणदीहिं य अट्ठविकम्मेहि वेढिओ य अहं।
डहिऊण इण्हि पयडमि अणंतणाणाइगुणचित्तां।।११६।।

सीलसहस्सट्ठारस चउरासीगुणगणाण लक्खाइं।
भावहि अणुदिणु णिहलं असप्पलावेण किं बहुणा।।१२०।।

झायहि धम्मं सुक्कं अट्टरउद्दं च झाण मुत्तूण।
रुद्दट्ठ झाइयाइं इमेण जीवेण चिरकालं।।१२१।।

जे के वि दव्व सवणा इंदियसुह आउलाण छिंदंति।
छिंदतिं भावसवणा झाण कुठारेहिं भव रुक्खं।।१२२।।

जह दीवो गब्भहरे मारुयवाहाविवज्जिओ जलइ।
तह रायाणिलरहिओ झाणपईवो वि पज्जलई।।१२३।।

झायहि पंच वि गुरुवे मंगलचउसरणलोयपरियरिए।
णरसुरखेयरमहिए आराहणणायगे वीरे।।१२४।।

णाणमयविमलसीयलसलिलं पाऊण भविय भायेण।
वाहिजरमरणवेयणडाहविमुक्का सिवा होंति।।१२५।।

जह वीयम्मि य दडढे ण वि रोहइ अंकुरो य महिवीढे।
तह कम्मवीयदड्ढे भवंकुरो भावसवणाणं।।१२६।।

भावसण्णो वि पावइ सुक्खइं दुहाइं दव्वसवणो य।
इय णाऊं गुणदोसे भावेण य संजुदो होइ।।१२७।।

तित्थयरगणहराइं अब्भुदयपरंपराइं सोक्खाइं।
पावंति भावसहिया संखेवि जिणेहिं वज्जरियं।।१२८।।

ते धण्णा ताण णमो दंसणवरणाणचरणसुद्धाणं।
भावसहियाण णिच्चं तिविहेण पणट्ठमायाणं।।१२९।।

इड्ढिमतुलं विउव्विय किण्णरकिंपुरिसअमरखरेहिं।
तेहिं वि ण जाइ मोहं जिणभावणभाविओ धीरो।।१३०।।

किं पुण गच्छइ मोहं णरसुरसुक्खाण अप्पसाराणं।
जाणंतो पस्संतो चितंतो मोक्ख मुणिधवलो।।१३१।।

उत्थरइ जा ण जरओ रोयग्गी जा ण डहइ देहउडिं।
इंदियबलं ण वियलइ ताव तुमं कुणहि अप्पहियं।।१३२।।

छज्जीव छउायदणं णिच्चं मणवयणकायजोएहिं।
कुरू दय परिहर मुणिवर भावि अपुव्वं महासत्त।।१३३।।

दसविहपाणाहारो अणंतभवसायरे भमंतेण।
भोयसुहकारणट्ठं कदो य तिविहेण सयलजीवाणं।।१३४।।

पाणिवहेहि महाजस चउरासीलक्खजोणिमज्झम्मि।
उप्पजंत मरंतो पत्तो सि णिरंतरं दुक्खं।।१३५।।

जीवाणमभयदाणं देहि मुणी पाणिभूयसत्ताणं।
कल्लाणसुहणिमित्तं परंपरा तिविह सुद्धीए।।१३६।।

असियसय किरियवाई अक्किरियाणं च होइ चुलसीदी।
सत्तट्ठी अण्णाणी वेणइया होंति बत्तीसा।।१३७।।

ण मुयइ पयडि अभव्वो सुट्ठु वि आयण्णिऊण जिणधम्मं।
गुडदुद्धं पि पिवंता ण पण्णया णिव्विसा होंति।।१३८।।

मिच्छत्तछण्णदिट्ठी दुद्धी रागगहगहियचित्तेहि।
धम्मं जिणपण्णत्तं अभव्वजीवो ण रोचेदि।।१३९।।

कुच्छियधम्मम्मि रओ कुच्छियपासंडिभत्तिसंजुत्तो।
कुच्छियतवं कुणंतो कुच्छियगइभायणो होइ।।१४०।।

इय मिच्छत्तावासे कुणयकुसत्थेहिं मोहिओ जीवो।
भमिओ अणाइकालं संसारे धीर चिंतहि।।१४१।।

पासंडी तिण्णि सया तिसट्ठि भेया उमग्ग मुत्तूण।
रूंभहि मणु जिणमग्गे असप्पलावेण किं बहुणा।।१४२।।

जीवविमुक्को सवओ दंसणमुक्को य होइ चलसवओ।
सवओ लोयअपुज्जो लोउत्तरयम्मि चलसवओ।।१४३।।

जह तारयाण चंदो मयराओ मयउलाण सव्वाणं।
अहिओ तह सम्मत्तो रिसिसावयदुविहधम्माणं।।१४४।।

जह फणिराओ रेहइ फणमणिमाणिक्ककिरण विप्फरिओ।
तह विमलदंसणधरो जिणभत्ती पवयणे जीवो।।१४५।।

जह तारायणसहियं ससहरबिंबं खमंडले विमले।
भाविय तववयविमलं जिणलिंगं दंसणविसुद्धं।।१४६।।

इयणाऊ गुणदोसं दंसणरयणं धरेह भावेण।
सारं गुणरयणाणं सोवाणं पढम मोक्खस्स।।१४७।।

कत्ता भोइ अमुत्तो सरीरमित्तो अणाइणिहणो य।
दंसणाणाणुवओगो णिद्दिट्ठो जिणवरिंदेहिं।।१४८।।

दंसणणाणावरणं मोहणिण अंतराइयं कम्मं।
णिट्ठवइ भवियजीवो सम्मं जिणभावणाजुत्तो।।१४९।।

बलसोक्खणाणदंसण चत्तारि वि पायड़ा गुणा होंति।
णट्ठे घाइचउक्के लोयालोयं पयासेदि।।१५०।।

णाणी सिव परमेट्ठी सव्वण्हू विण्हु चउमुहो बुद्धो।
अप्पो वि य परमप्पो कम्मविमुक्को य होइ फुडं।।१५१।।

इय घाइकम्ममुक्को अट्ठारहदोसवज्जिओ सयलो।
तिहुवणभवणपदीवो देउ ममं उत्तमं बोहिं।।१५२।।

जिणवरचरणंबुरुहं णमंति जे परमभत्तिराएण।
ते जम्मवेल्लिमूलं खणंति वरभावसत्थेण।।१५३।।

जह सलिलेण ण लिप्पइ कमलणिपत्तं सहावपयडीए।
तह भावेण ण लिप्पइ कसायविसएहिं सप्पुरिसो।।१५४।।

ते च्चिय भणामिहं जे सयलफला सीलसंजमगुणेहिं।
बहुदोसाणावासो सुमलिणचित्तो ण सावयसमो सो।।१५५।।

ते धीरवीरपुरिसा खमदमखग्गेण विप्फुरंतेण।
दुज्जयपबलबलुद्धर कसायभड़-णिज्जिया जेहिं।।१५६।।

धण्णा ते भयवंता दंसणणाणग्गपवरहत्थेहिं।
विसयमयरहरपडिया भविया उत्तारिया जेहिं।।१५७।।

मायावेल्लि असेसा मोहमहातरूवरम्मि आरुढा।
विसयविसपुप्फफुल्लिय लुणंति मुणि णाणसत्थेहिं।।१५८।।

मोहमयगारवेहिं य मुक्का जे करुणभावसंजुत्ता।
ते सव्वदुरियखंभं हणंति चारित्तखग्गेण।।१५६।।

गुणगणमणिमालाए जिणमयगयणे णिसायरमुणिंदो।
तारावलियपरियरिओ पुण्णिमइं दुव्व पवणपहे।।१६०।।

चक्कहररामकेसवसुखरजिणगणहराइ-सोक्खाइं।
चारणमुणिरिद्धीओ विसुद्धभावा णरा पत्ता।।१६१।।

सिवमजरामरलिंगमणोवममुत्तमं परमविमलमतुलं।
पत्ता वरसिद्धिसुहं जिणभावणभाविया जीवा।।१६२।।

किं जंपिएण बहुणा अत्थो धम्मो य काममोक्खो य।
अण्णे वि य वावारा भावम्मि परिट्ठया सव्वे।।१६३।।

ते मे तिहु वण महिया सिद्धा सुद्धा णि रंजणा णिच्चा।
दिंतु बर भाव सुट्ठिं दंसण णाणे चरित्ते य।।१६३-१।।

इय भावपाहुडमिणं सव्वं बुद्धेहि देसियं सम्मं।
जो पढइ सुणइ भावइ सो पावइ अविचलं ठाणं।।१६४।।

मोक्खपाहुडं

णाणमयं अप्पाणं उवलद्धं जेण झडियकम्मेण।
चइउण य परदव्वं णमो णमो तस्य देवस्य।।१।।

णामिऊण य तं देवं अणंतवरणाणदंसणं सुद्धं।
वोच्छं परमप्पाणं परमपयं परमजोईणं।।२।।

जं जाणिऊण जोई जोअत्थो जोईऊण अणवरयं।
अव्वाचाहमणंतं अणोवमं हवइ णिव्वाणं।।३।।

तिपयारो सो अप्पा परमंतरबाहिरो दु हेऊणं।
तत्थ परो झाइज्जइ अंतोबाएण चइवि बहिरप्पा।।४।।

अक्खाणि बहिरप्पा अन्तरअप्पा हु अप्पसंकप्पो।
कम्मकलंकविमुक्को परमप्पा भण्णए देवो।।५।।

मलरहिओ कलचत्तो अणिंदिओ केवलो विसुद्धप्पा।
परमेट्ठी परमजिणो सिवंकरो सासओ सिद्धो।।६।।

आरुहवि अन्तरप्पा बहिरप्पा छंडिऊण तिविहेण।
झाइज्जइ परमप्पा उवइट्ठं जिणवरिंदेहिं।।७।।

बहिरत्थे फुरियमणो इंदियदारेण णियसरूवचुओ।
णियदेहं अप्पाणं अज्झवसदी मूढदिट्ठीओ।।८।।

णियदेहसरिस्सं पिच्छिऊण परविग्गहं पयत्तेण।
अच्चेयणं पि गहियं झाइज्जइ परमभागेण।।९।।

सपरज्झवसाएणं देहेसु य अविदिदत्थमप्पाणं।
सुयदाराईविसए मणुयाणं वड्ढए मोहो।।१०।।

मिच्छाणाणेसु रओ मिच्छाभावेण भावियो संतो।
मोहोदएण पुणरवि अंगं सं मण्णए मणुओ।।११।।

जो देहे णिरवेक्खो णिद्दंदो णिम्ममो णिरारंभो।
आदसहावे सुरओ जोई सो लहइ णिव्वाणं।।१२।।

परदव्वरओ बज्झइ विरओ मुच्चेइ विविहकम्मेहि।
एसो जिणउवदेसो समासदो बंधमुक्खस्स।।१३।।

सद्दव्वरओ सवणो सम्माइट्ठी हवेइ णियमेण।
सम्मत्तपरिणदो पुण खवेइ दुट्ठट्ठकम्मेहिं।।१४।।

जो पुण परदव्वरओ मिच्छादिट्ठी हवेइ सो साहू।
मिच्छत्तपरिणदो पुण बज्झदि दुट्ठट्ठकम्मेहिं।।१५।।

परदव्वाओ दुग्गई सद्दव्वादो हु सुग्गई हवइ।
इय णाऊण सदव्वे कुणह रई विरइ इयरम्मि।।१६।।

आदसहावादण्णं सचित्ताचित्तमिस्सियं हवदि।
तं परदव्वं भणियं अवितथं सव्वदरिसीहिं।।१७।।

दुट्ठट्ठकम्मरहियं अणोवमं णाणविग्गहं णिच्चं।
सुद्धं जिणेहिं कहियं अप्पाणं हवदि सद्दव्वं।।१८।।

जे झायंति सदव्वं परदव्वपरम्मुहा दु सुचरित्ता।
ते जिणवराण मग्गं अणुलग्गा लहहिं णिव्वाणं।।१९।।

जिणवरमएण जोई झाणे झाएइ सुद्धमप्पाणं।
जेण लहइ णिव्वाणं ण लहइ किं तेण सुरलोयं।।२०।।

जो जाई जोयणसयं दियहेणेक्केण लेवि गुरुभारं।
सो किं कोसद्धं पि हु ण सक्कए जाउ भुवणयले।।२१।।

जो कोडिए ण जिप्पइ सुहणो संगामएहिं सव्वेहिं।
सो किं जिप्पइ इक्किक णरेण संगामए सुहडो।।२२।।

सग्गं तवेण सव्वो वि पावए तहिं वि झाणजोएण।
जो पावइ सो पावइ परलोए सासयं सोक्खं।।२३।।

अइसोहणजोएणं सुद्धं हेमं हवेइ जह तह य।
कालाई लद्धीए अप्पा परमप्पओ हवदि।।२४।।

वर वयतवेहिं सग्गो मा दुक्खं होउ णिरइ इयरेहिं।
छायातविट्ठायाणं पडिवालंताण गुरुभेयं।।२५।।

जो इच्छइ णिस्सरिदुं संसारमहण्णवाउ रूंदस्स।
कम्मिंधणाण डहणं सो झायइ अप्पयं सुद्धं।।२६।।

सव्वे कसाय मोत्तुं गारवमयरायदोसवामोहं।
लोयववहारविरदो अप्पा झाएह झाणत्थो।।२७।।

मिच्छत्तं अण्णाणं पावं पुण्णं चएवि तिविहेण।
मोणव्वएण जोई जोयत्थो जोयए अप्पा।।२८।।

जं मया दिस्सदे रूवं तंण्ण जाणदि सव्वहा।
जाणगं दिस्सदे णंतं तम्हा जंपेमि केण हं।।२६।।

सव्वासवणिरोहेण कम्मं खवदि संचिदं।
जोयत्थो जाणए जोई जिणदेवेण भासियं।।३०।।

जो सुत्तो ववहारो सो जोई जग्गए सकज्जम्मि।
जो जग्गदि ववहारे सो सुत्तो अप्पणो कज्जे।।३१।।

इय जाणिऊण जोई ववहारं चयइ सव्वहा सव्वं।
झायइ परमप्पाणं जह भणियं जिणवरिंदेण।।३२।।

पंचमहव्वयजुत्तो पंचसु समिदीसु तीसु गुत्तीसु।
रयणत्तयसंजुत्तो झाणज्झयणं सया कुणह।।३३।।

रयणत्तयमाराहं जीवो आराहओ मुणेयव्वो।
आराहणाविहाणं तस्स फलं केवलं णाणं।।३४।।

सिद्धो शुद्धो आदा सव्वण्हू सव्वलोयदरिसी य।
सो जिणवरेहिं भणिओ जाण तुमं केवलं णाणं।।३५।।

रयणत्तय पि जोई आराहइ जो हु जिणवरमएण।
सो झायदि अप्पाणं परिहरदि परं ण संदेहो।।३६।।

जं जाइ तं णाणं जं पिच्छइ तं च दंसणं णेयं।
तं चारित्त भणियं परिहारो पुण्णपावाणं।।३७।।

तच्चरुई सम्मत्तं तच्चग्गहणं च हवइ सण्णाणं।
चारित्त परिहारो परूवियं जिणवरिंदेहिं।।३८।।

दंसणसुद्धो सुद्धो दंसणसुद्धो लहेइ णिव्वाणं।
दंसणविहीण पुरिसो ण लहइ तं इच्छियं लाहं।।३९।।

इय उवएसं सारं जरमरणहरं खु मण्णए जं तु।
तं सम्मत्तं भणियं सवणाणं सावयाणं पि।।४०।।

जीवाजीवविहत्ती जोई जाणेइ जिणवरमएणं।
तं सण्णाणं भणियं अवियत्थं सव्वदरसीहिं।।४१।।

जं जाणिऊण जोई परिहारं कुणइ पुण्णपावाणं।
तं चारित्तं भणियं अवियप्पं कम्मरहिएण।।४२।।

जो रयणत्तयजुतो कुणइ तवं संजदो ससत्तीए।
सो पावइ परमपयं झायंतो अप्पयं सुद्धं।।४३।।

तिहि तिण्णि धरवि णिच्चं तियरहिओ तह तिएण परियरिओ।
दोदोसविप्मुक्को परमप्पा झायए जोई।।४४।।

मयमायकोहरहिओ लोहेण विवज्जिओ य जो जीवो।
णिम्मलसहावजुत्तो सो पावइ उत्तमं सोक्खं।।४५।।

विसयकसाएहि जुदो रुद्दो परमप्पभावरहियमणो।
सो ण लहइ सिद्धि सुहं जिणमुद्दपरम्मुहो जीवो।।४६।।

जिणमुद्दं सिद्धिसुहं हवेइ णियमेण जिणवरुद्दिट्ठा।
सिविणे वि ण रुच्चइ पुण जीवा अच्छंति भवगहणे।।४७।।

परमप्पय झायंतो जोई मुच्चेइ मलदलोहेण।
णादियदि णवं कम्मं णिदिट्ठं जिणवरिंदेहिं।।४८।।

होऊण दिढचरित्तो दिढसम्मत्तेण भावियमईओ।
झायंतो अप्पाणं परमपयं पावए जोई।।४९।।

चरणं हवइ सधम्मो धम्मो सो हवइ अप्पसमभावो।
सो रागरोसरहिओ जीवस्स अणण्णपरिणामो।।५०।।

जह फलिहमणि विसुद्धो परदव्वजुदो हवेइ अण्णं सो।
तह रागादिविजुत्तो जीवो हवदि हु अणण्णविहो।।५१।।

देव गुरुम्मि य भत्तो साहम्मि य संजदेसु अणुरत्तो।
सम्मत्तमुव्वहंतो झाणरओ होइ जोई सो।।५२।।

उग्गतवेणण्णाणी जं कम्मं खवदि भवहि बहुएहि।
तं णाणी तिहि गुत्तो खवेइ अंतोमुहूत्तेण।।५३।।

सुहजोण सुभावं परदव्वे कुणइ रागदो साहू।
सो तेण दु अण्णाणी णाणी एत्तो दु विवरीदो।।५४।।

आसवहेदू य तहा भावं मोक्खस्स कारणं हवदि।
सो तेण दु अण्णाणी आदसहावास्स विवरीदो।।५५।।

जो कम्मजादमइओ सहावणाणस्स खंडदूसयरो।
सो तेण दु अण्णाणी जिणसासणदूसगो भणिदो।।५६।।

णाणं चारित्तहीणं दंसणहीणं तवेहि संजुत्तं।
अण्णेसु भावरहियं लिंगग्गहणेण किं सोक्खं।।५७।।

अच्चेयणं पि चेदा जो मण्णइ सो हवेइ अण्णाणी।
सो पुणं णाणी भणिओ जो मण्णइ चेयणे चेदा।।५८।।

तवरहियं जं णाणं णाणविजुत्तो तवो वि अकयत्थो।
तम्हा णाणतवेणं संजुत्तो लहइ णिव्वाणं।।५६।।

धुवसिद्धि तित्थयरो चउणाणजुदो करेइ तवयरणं।
णाऊण धुवं कुज्जा तवयरणं णाणजुत्तो वि।।६०।।

बाहिरलिंगेण जुदो अब्भंतरलिंगरहियपरियम्मो।
सो सगचरित्तभट्ठो मोक्खपहविणासगो साहू।।६१।।

सुहेण भाविदं णाणं दुहे जादे विणस्सदि।
तम्हा जहाबलं जोई अप्पा दुक्खेहि भावए।।६२।।

आहारासणणिद्दाजयं च काऊण जिणवरमएण।
झायव्वो णियअप्पा णाऊणं गुरुपसाएण।।६३।।

अप्पा चरित्तवंतो दंसणणाणेण संजुदो अप्पा।
सो झायव्वो णिच्चं णाऊणं गुरुपसाएण।।६४।।

दुक्खे णज्जइ अप्पा अप्पा णाऊण भावणा दुक्खं।
भावियसहावपुरिसो विसयेसु विरज्जए दुक्खं।।६५।।

ताम ण णज्जइ अप्पा विसएसु णरो पवट्टए जाम।
विसए विरत्तचित्तो जोई जाणेई अप्पाणं।।६६।।

अप्पा णाऊण णरा केई सब्भावभावपब्भट्ठा।
हिंडंति चाउरंगं विसएसु विमोहिया मूढा।।६७।।

जे पुण विषयविरत्ता अप्पा णाऊण भावणासहिया।
छंडंति चाउरंगं तवगुणजुत्ता ण संदेहो।।६८।।

परमाणुपमाणं वा परदव्वे रदि हवेदि मोहादो।
सो मूढो अण्णाणी आदसहावस्स विवरीओ।।६९।।

अप्पा झायंताणं दंसणसुद्धीण दिढचरित्ताणं।
होदि धुवं णिव्वाणं विसएसु विरत्तचित्ताणं।।७०।।

जेण रागे परे दव्वे संसारस्स हि कारणं।
तेणावि जोइणो णिच्चं कुज्जा अप्पे सभावणा।।७१।।

णिंदाए य पसंसाए दुक्खे य सुहएसु य।
सत्तूणं चेव बंधूणं चारित्तं समभावदो।।७२।।

चरियावरिया वदसमिदिवज्जिया सुद्धभावपब्भट्ठा।
केई जंपंति णरा ण हु कालो झाणजयस्स।।७३।।

सम्मत्तणाणरहिओ अभव्वजीवो हु मोक्खपरिमुक्को।
संसारसुहे सुरदो ण हु कालो भणइ झाणस्स।।७४।।

पंचसु महव्वदेसु य पंचसु समिदीसु तीसु गुत्तीसु।
जो मूढो अण्णाणी ण हु कालो भणइ झाणस्स।।७५।।

भरहे दुस्समकाले धम्मज्झाणं हवेइ साहुस्स।
तं अप्पसहावठिदे ण हु मण्णइ सो वि अण्णाणी।।७६।।

अज्ज वि तिरयणसुद्धा अप्पा झाए वि लहइ इंदत्तं।
लोयंतियदेवत्तं तत्थ चुआ णिव्वुदिं जंति।।७७।।

जे पावमोहियमई लिंगं घेत्तूण जिणवरिंदाणं।
पावं कुणंति पावा ते चत्ता मोक्खमग्गम्मि।।७८।।

जे पंचचेलसत्ता गंथग्गाहीय जायणासीला।
आधाकम्मम्मि रया ते चत्ता मोक्खमग्गम्मि।।७९।।

णिग्गंथमोहमुक्का बावीसपरीसहा जियकसाया।
पावारंभविमुक्का ते गहिया मोक्खमग्गम्मि।।८०।।

उद्धद्धमज्झलोये केई मज्झं ण अहयमेगागी।
इय भावणाए जोई पावंति हु सासयं सोक्खं।।८१।।

देवगुरूणं भत्ता णिव्वेयपरंपरा विचिंतिंता।
झाणरया सुचरित्ता ते गहिया मोक्खमग्गम्मि।।८२।।

णिच्छयणयस्स एवं अप्पा अप्पम्मि अप्पणे सुरदो।
सो होदि हु सुचरित्तो जोई सो लहइ णिव्वाणं।।८३।।

पुरिसायारो अप्पा जोई वरणाणदंसणसमग्गो।
जो झायदि सो जोई पावहरो हवदि णिद्दंदो।।८४।।

एवं जिणेहि कहियं सवणाणं सावयाण पुण पणसु।
संसारविणासयरं सिद्धियरं कारणं परमं।।८५।।

गहिऊण य सम्मत्तं सुणिम्मलं सुरगिरीव णिक्कंपं।
तं झाणे झाइज्जइ सावय दुक्खक्खयट्ठाए।।८६।।

सम्मत्तं जो झायइ सम्माइट्ठी हवेइ सो जीवो।
सम्मत्तपरिणदो पुण खवेइ दुट्ठट्ठकम्माणि।।८७।।

किं बहुणा भणिएण जे सिद्धा णरवरा गए काले।
सिज्झिहहि जे वि भविया तं जाणह सम्ममाहप्पं।।८८।।

ते धण्णा सुकयत्था ते सूरा ते वि पंडिया मणुया।
सम्मत्तं सिद्धियरं सिवणे वि ण मइलियं जेहिं।।८९।।

हिंसारहिए धम्मे अट्ठारहदोसवज्जिए देवे।
णिग्गंथे पव्वयणे सद्दहणं होइ सम्मत्तं।।९०।।

जहजायरूवरूवं सुसंजयं सव्वसंगपरिचत्तं।
लिंगं ण परावेक्खं जो मण्णइ तस्स सम्मत्तं।।९१।।

कुच्छियदेवं धम्मं कुच्छियलिंगं च वंदए जो दु।
लज्जाभयगारवदो मिच्छादिट्ठी हवे सो हु।।९२।।

सपरावेक्खं लिंगं राई देवं असंजयं वंदे।
मणइ मिच्छादिट्ठी ण हु मण्णइ सुद्धसम्मत्तो।।९३।।

सम्माइट्ठी सावय धम्मं जिणदेवदेसियं कुणदि।
विवरीयं कुव्वंतो मिच्छादिट्ठी मुणेयव्वो।।९४।।

मिच्छादिट्ठी जो सो संसारे संसरेइ सुहरहिओ।
जम्मजरमरणपउरे दुक्खसहस्सउले जीवो।।९५।।

सम्मगुण मिच्छदोसो मणेण परिभाविऊण तं कुणसु।
जं ते मणस्स रुच्चइ किं बहुणा पलविएणं तु।।९६।।

बाहिरसंगविमुक्को ण वि मुक्को मिच्छभाव णिग्गंथो।
किं तस्स ठाणमउणं ण वि जाणदि अप्पसमभावं।।९७।।

मूलगुणं छित्तूण य बाहिरकम्मं करेइ जो साहू।
सो ण लहइ सिद्धिसुहं जिणलिंगविराहगो णिच्चं।।६८।।

किं काहिदि बहिकम्मं किं काहिदि बहुविहं च खवणं च।
किं काहिदि आदावं आदसहावस्स विवरीदो।।६९।।

जदि पढदि बहुसुदाणि य जदि काहिदि बहुविहे च चारित्ते।
तं बालसुदं चरणं हवेइ अप्पस्स विवरीदं।।१००।।

वेरग्गपरो साहू परदव्वपरम्मुहो य जो होदि।
संसारसुहविरत्तो सगसुद्धसुहेसु अणुरत्तो।।१०१।।

गुणगणविहूसियंगो हेयोपादेयणिच्छिदो साहू।
झाणज्झयणे सुरदो सो पावइ उत्तमं ठाणं।।१०२।।

णविएहिं जं णविज्जइ झाइज्जइ झाइएहिं अणवरयं।
थुव्वंतेहिं थुणिज्जइ देहत्थं किं पि तं मुणह।।१०३।।

अरुहा सिद्धायरिया उज्झाया साहू पंच परमेट्ठी।
ते विहु चिट्ठहि आदे तम्हा आदा हु मे सरणं।।१०४।।

सम्मत्तं सण्णाणं सच्चारित्तं हि सत्तवं चेव।
चउरो चिट्ठहि आदे तम्हा आदा हु मे सरणं।।१०५।।

एवं जिणपण्णत्तं मोक्खस्य य पाहुडं सुभत्तीए।
जो पढइ सुणइ सो पावइ सासयं सोक्खं।।१०६।।

लिंगपाहुडं

काऊण णमोकारं अरहंताणं तहेव सिद्धाणं।
वोच्छामि समणलिंगं पाहुडसत्थं समासेण।।१।।

धम्मेण होइ लिंगं ण लिंगमत्तेण धम्मसंपत्तो।
जाणेहि भावधम्मं किं ते लिंगेण कायव्वो।।२।।

जो पावमोहिदमदी लिंगं घेत्तूण जिणवरिंदाणं।
उवहसदि लिंगिभावं लिंगं णारदो लिंगीणं।।३।।

णच्चदि गायदि तावं वायं वाएदि लिंगरूवेण।
सो पावमोहिदमदी तिरिक्खजोणी ण सो समणो।।४।।

सम्मूहदि रक्खेदि य अट्टं झाएदि बहुपयत्तेण।
सो पावमोहिदमदी तिरिक्खजोणी ण सो समणो।।५।।

कलहं वादं जूवा णिच्चं बहुमाणगव्विओ लिंगी।
वच्चदि णरयं पाओ करमाणो लिंगिरूवेण।।६।।

पाओपहदभावो सेवदि य अबंभु लिंगिरूवेण।
सो पावमोहिदमदी हिंडदि संसारकांतारे।।७।।

दंसणणाणचरित्ते उवहाणे जह ण लिंगरूवेण।
अट्टं झायदि झाणं अणंतसंसारिओ होदि।।८।।

जो जोडदि विवाहं किसिकम्मवणिज्जजीवघादं च।
वच्चदि णरयं पाओ करमाणो लिंगिरूवेण।।९।।

चोराण मिच्छवाण य जुद्ध विवादं च तिव्वकम्मेहिं।
जंतेण दिव्वमाणो गच्छदि लिंगी णरयवासं।।१०।।

दंसणणाणचरित्ते तवसंजमणियमणिच्चकम्मम्मि।
पीडयदि वट्टमाणे पावदि लिंगी णरयवासं।।११।।

कंदप्पाइय वट्टइ करमाणो भोयणेसु रसगिद्धिं।
माई लिंगविवाई तिरिक्खजोणी ण सो समणो।।१२।।

धावदि पिंडणिमित्तं कलहं काऊणः भुज्जदे पिंडं।
अवरुपरुई संत्तो जिणमग्गि ण होइ सो समणो।।१३।।

गिण्हदि अदत्तदाणं परणिंदा वि य परोक्खदूसेहिं।
जिणलिंगं धारंतो चोरेण व होइ सो समणो।।१४।।

उप्पड दि पडदि धावदि पुढवीओ खवंदि लिंगरूपेण।
इरियावह धारंतो तिरिक्खजोणी ण सो समणो।।१५।।

वंधो णिरओ संतो सस्सं खडेदि तह य वसुहं पि।
छिंददि तरूगण बहुसो तिरिक्खजोणी ण सो समणो।।१६।।

रागे करेदि णिच्चं महिलावग्गं परं च दूसेदि।
दंसणणाणविहीणो तिरिक्खजोणी ण सो समणो।।१७।।

पव्वज्जहीणगहिणं णेहं सासम्मि वट्टदे बहुसो।
आयारविणयहीणो तिरक्खजोणी ण सो समणो।।१८।।

एवं सहिओ मुणिवर संजदमज्झम्मि वट्टदे णिच्चं।
बहुलं पि जाणमाणो भावविणट्ठो ण सो समणो।।१९।।

दंसणणाणचरित्ते महिलावग्गम्मि देदि वोपट्ठो।
पासत्थ वि हु णियट्ठो भावविणट्ठो ण सो समणो।।२०।।

पुंश्चलिघरि जो भुञ्जइ णिच्चं संथुणदि पोसए पिंडं।
पावदि बालसहावं भावविणट्ठो ण सो समणो।।२१।।

इय लिंगपाहुडमिणं सव्वं बुद्धेहिं देसियं धम्मं।
पालेइ कट्ठसहियं सो गाहदि उत्तमं ठाणं।।२२।।

सीलपाहुडं

वीरं विसालणयणं रत्तुप्पलकोमलस्समप्पायं।
तिविहेण पणमिऊणं सीलगुणाणं णिसामेह।।१।।

सीलस्स य णाणस्स य णत्थि विरोहो बुधेहिं णिद्दिट्ठो।
णवरि य सीलेण विणा विसया णाणं विणासंति।।२।।

दुक्खे णज्जहि णाणं णाणं णाऊण भावणा दुक्खं।
भावियमई व जीवो विसयेसु विरज्जए दुक्खं।।३।।

ताव ण जाणदि णाणं विसयवलो जाव वट्टए जीवो।
विसए विरत्तमेत्तो ण खवेइ पुराइयं कम्मं।।४।।

णाणं चरित्तहीणं लिंगग्गहणं च दंसणविहूणं।
संजमहीणो य तवो जइ चरइ णिरत्थयं सव्वं।।५।।

णाणं चरित्तसुद्धं लिंगग्गहणं च दंसणविसुद्धं।
संजमसहिदो य तवो धोओ वि महाफलो होइ।।६।।

णाणं णाऊण णरा केई विसयाइभावसंसत्ता।
हिंडंति चादुरगदिं विसएसु विमोहिया मूढ़ा।।७।।

जे पुण विसयविरत्ता णाणं णाऊण भावणासहिदा।
छिंदंति चादुरगदिं तवगुणजुत्ता ण संदेहो।।८।।

जह कंचणं विसुद्धं धम्मइयं खडियलवणलेवेण।
तह जीवो वि विसुद्धं णाणविसलिलेण विमलेण।।९।।

णाणस्स णत्थि दोसो कुप्पुरिसाणो वि मंदबुद्धीणो।
जे णाणगव्विदा होऊणं विसएसु रज्जंति।।१०।।

णाणेण दंसणेण य तवेण चरिएण सम्मसहिएण।
होहदि परिणिव्वाणं जीवाण चरित्तसुद्धाणं।।११।।

सीलं रक्खंताणं दंसणसुद्धाणं दिढचरित्ताणं।
अत्थि धुवं णिव्वाणं विसएसु विरत्तचित्ताणं।।१२।।

विसएसु मोहिदाणं कहियं मग्गं पि इट्ठदरिसीणं।
उम्मग्गं दरिसीणं णाणं पि णिरत्थयं तेसिं।।१३।।

कुमयकुसुदपसंसा जाणंता बहुविहाइं सत्थाणि।
शील वदणाणरहिदा ण हु ते आराधया होंति।।१४।।

रूवसिरिगव्विदाणं जुव्वणलावण्णकंतिकलिदाणं।
सीलगुणवज्जिदाणं णिरत्थयं माणुसं जम्म।।१५।।

वायणछंदवइसेसियववहारणायसत्थेसु।
वेदेऊण सुदेसु य तेसु सुयं उत्तमं शीलं।।१६।।

सीलगुणमंडिदाणं देवा भवियाण वल्लहा होंति।
सुदपारयपउरा णं दुस्सीला अप्पिला लोए।।१७।।

सव्वे वि य परिहीणा रूवविरूवा वि पदिदसुवया वि।
सीलं जेसु सुसीलं सुजीविदं माणुसं तेसिं।।१८।।

जीवदया दम सच्चं अचोरियं बंभचेरसंतोसे।
सम्मद्दंसण णाणं तओ य सीलस्स परिवारो।।१९।।

सीलं तवो विसुद्धं दंसणसुद्धी य णाणसुद्धी य।
सीलं विसयाण अरी सीलं मोक्खस्स सोवाणं।।२०।।

जह विसयलुद्ध विसदो तह थावरजंगमाण घोराणं।
सव्वेसिं पि विणासदि विसयविसं दारुणं होई।।२१।।

वार एक्कम्मि य जम्मे मरिज्ज विसवेयणाहदो जीवो।
विसयविसपरिहया णं भमंति संसारकांतारे।।२२।।

णरएसु वेयणाओ तिरिक्खिए माणएसु दुक्खाइं।
देवेसु वि दोहग्गं लहंति विसयासिता जीवा।।२३।।

तुसधम्मंतबलेण य जह दव्वं ण हि णराण गच्छेदि।
तवसीलमंत कुसली खवंति विसयं विसं व खलं।।२४।।

वट्टेसु य खडेसु य भद्देसु य विसालेसु अंगेसु।
अंगेसु य पप्पेसु य सव्वेसु य उत्तमं सीलं।।२५।।

पुरिसेण वि सहियाए कुसमयमूढेहि विसयलोलेहिं।
संसारे भमिदव्वं अरयघरट्टं च भूदेहिं।।२६।।

आदेहि कम्मगंठी जावद्धा विसयरागरंगेहिं।
तं छिंदंति कयत्था तवसंजमसीलयगुणेण।।२७।।

उदधीव रदणभरिदो तवविणयंसीलदाणरयणाणं।
सोहे तोय ससीलो णिव्वाणमणुत्तरं पत्तो।।२८।।

सुणहाण गद्दहाण य गोपसुमहिलाण दीसदे मोक्खो।
जे सोधंति चउत्थं पिच्छिज्जंता जणेहि सव्वेहिं।।२९।।

जइ विसयलोलएहिं णाणीहि हविज्ज साहिदो मोक्खो।
तो सो सच्चइपुत्तो दसपुव्वीओ वि किं गदो णरयं।।३०।।

जह णाणेण विसोहो सीलेण विणा बुहेहिं णिद्दट्ठो।
दस पुव्वियस्स भावो ण किं पुणु णिम्मलो जादो।।३१।।

जाए विसयविरत्तो सो गमयदि णरयवेयणा पउरां।
ता लेहदि अरुहपयं भणियं जिणवड्ढमाणेण।।३२।।

एवं बहुप्पयारं जिणेहि पच्चक्खणाणदरसीहिं।
सीलेण य मोक्खपयं अक्खातीदं य लोयणाणेहिं।।३३।।

सम्मत्तणाणदंसणतववीरियपंचयारमप्पाणं।
जलणो वि पवणसहिदो डहंति पोरायणं कम्मं।।३४।।

णिद्दड्ढअट्ठकम्मा विसयविरत्ता जिदिंदिया धीरा।
तवविणयसीलसहिदा सिद्धा सिद्धिं गदिं पत्ता।।३५।।

लावण्णासीलकुसला जम्ममहीरुहो जस्स सवणस्स।
सो सीलो स महप्पा भमित्थ गुणवित्थरं भविए।।३६।।

णाणं झाणं जोगो दंसणसुद्धी य वीरियायत्तं।
सम्मत्तदंसणणेण य लहंति जिणसासणे बोहिं।।३७।।

जिणवयणगहिदसारा विसयविरत्ता तपोधणा धीरा।
सीलसलिलेण ण्हावा ते सिद्धालयसुहं जंति।।३८।।

सव्वगुणखीणकम्मा सुहदुक्खविवज्जिदा मणविसुद्धा।
पप्फोडियकम्मरसा हवंति आराहणा पयडा।।३९।।

अरहंते सुहभत्ती सम्मत्तं दंसणेण सुविसुद्धं।
सीलं विसयविरागो णाणं पुण केरिसं भणियं।।४०।।

समाप्तम्

श्री कुन्दकुन्दाइरियकदो।

मूलाचारो

मूलगुणेसु विसुद्धे वंदित्ता सव्वसंजदे सिरसा।
इहपरलोगहिदत्थे मूलगुणे कित्तइस्सामि।।१।।

णाणादिरयणतियमिह सज्झं तं साधयंति जमणियमा।
जत्थ जमा संस्सदिया णियमा णियतप्पपरिणामा।।*।।

ते मलुत्तरसण्णा मूलगुणा महव्वदादि अडवीसा।
तव परिसहादिभेदा चोत्तीसा उत्तरगुणक्खा।।*।।

पंचय महव्वयाइं समिदीओ पंच जिणवरुद्दिट्ठा।
पंचेविंदियरोहा छप्पि य आवासया लोओ।।२।।

आचेलकमण्हाणं खिदिसयणमदंतधंसणं चेव।
ठिदिभोयणेयभत्तं मूलगुणा अट्ठवीसा दु।।३।।

हिंसाविरदी सच्चं अदत्तपरिवज्जणं च बंभं च।
संगविमुत्ती य तहा महव्वया पंच पण्णत्ता।।४।।

कायेंदियगुणमग्गणकुलाउजोणीसु सव्वजीवाणं।
णाऊण य ठाणादिसु हिंसादिविवज्जणमहिंसा।।५।।

रागादीहिं असच्चं चत्ता परतावसच्चवयणुत्तिं।
सुत्तत्थाण विकहणे अयधावयणुज्झणं-सच्चं।।६।।

गामादिसु पडिदाइं अप्पप्पहुदिं परेण संगहिदं।
णादाणं परदव्वं अदत्तपरिवज्जणं तं तु।।७।।

मादुसुदाभगिणीव य दट्ठूणित्थित्तियं च पडिरुवं।
इत्थिकहादिणियत्ती तिलोयपुज्जं हवे बंभं।।८।।

जीवणिबद्धाऽबद्धा परिग्गहा जीवसंभवा चेव।
तेसिं सक्कच्चागो इयरम्हि य णिम्ममोऽसंगो।।९।।

इरियाभासा एसण णिक्खेवादाणमेव समिदीओ।
पदिठावणिया य तहा उच्चारादीण पंच विहा।।१०।।

फासुयमग्गेण दिवा जुगंतरप्पेहिणा सकज्जेण।
जंतूणि परिहरंते णिरियासमिदी हवे गमणं।।११।।

पेसुण्णहासकक्कसपरणिंदाप्पपसंसविकहादी।
वज्जित्ता सपरहिंयं भासासमिदी हवे कहणं।।१२।।

छादालदोससुद्धं कारणजुत्तं विसुद्धणवकोडी।
सीदादीसमभुत्ती परिसुद्धा एसणासमिदी।।१३।।

णाणुवहि संजमुवहिं सउचुवहिं अण्णमप्पमुवहिं वा।
पयदं गहणिक्खेवो समिदी आदाणणिक्खेवा।।१४।।

एगंते अच्चिते दूरे गूढे विसालमविरोहे।
उच्चारादिच्चाओ पदिठावणिया हवे समिदी।।१५।।

जियदु व मरदु व जीवो अयदाचारस्स णिच्छिदा हिंसा।
पयदस्स णत्थि बंधो हिंसामित्तेण समिदस्स।।*।।

चक्खू सोदं घाणं जिब्भा फासं च इंदिया पंच।
सगसगविसेएहिंतो णिरोहियव्वा सया मुणिणा।।१६।।

सच्चित्ताचित्ताणं किरियासंठाणवण्णभेएसु।
रागादिसंगहरणं चक्खुणिरोहो हवे मुणिणो।।१७।।

सड्जादिजीवसद्दे वीणादिअजीवसंभवे सद्दे।
रागादीण णिमित्ते तदकरणं सोदरोधो दु।।१८।।

पयडीवासणगंधे जीवाजीवप्पगे सुहे असुहे।
रागद्देसाकरणं घाणणिरोहो मुणिवरस्स।।१९।।

असणादिचदुवियप्पे पंचरसे फासुगम्हि णिरवज्जे।
इट्ठाणिट्ठाहारे दत्ते जिब्भाजओऽगिद्धी।।२०।।

जीवाजीवसमुत्थे कक्कडमउगादिअट्ठभेदजुदे।
फासे सुहे य असुहे फासणिरोहो असंमोहो।।२१।।

समदा थवो य वंदण पाडिक्कमणं तहेव णादव्वं।
पच्चक्खाण विसग्गो करणीयावासया छप्पि।।२२।।

जीविदमरणे लाभालाभे संजोयविप्पओगे य।
बंधुरिसुहदुक्खादिसु समदा सामाइयं णाम।।२३।।

उसहादिजिणवराणं णामणिरुत्तिं गुणाणुकित्तिं च।
काऊण अच्चिदूण य तिसुद्धिपणमो थवो णेओ।।२४।।

अरहंतसिद्धपडिमातवसुदगुणगुरुगुरुण रादीणं।
किदिकम्मेणि दरेण य तियरणसंकोचणं पणमो।।२५।।

दव्वे खेत्ते काले भावे य कयावराहसोहणयं।
णिंदणगरहणजुत्तो मणवचकायेण पडिक्कमणं।।२६।।

णामादीणं छण्हं अजोगपरिवज्जणं तियरणेण।
पच्चक्खाणं णेयं अणागयं चागमे काले।।२७।।

देवस्सियणियमादिसु जहुत्तमाणेण उत्तकालम्हि।
जिणगुणचिंतणजुत्तो काउस्सग्गो तणुविसग्गो।।२८।।

वियतियचउक्कमासे लोचो उक्कस्समज्झिमजहण्णो।
सपडिक्कमणे दिवसे उववासेणेव कायव्वो।।२९।।

वत्थाजिणवक्केण य अहवा पत्ताइणा असंवरणं।
णिब्भूसण णिग्गंथं अच्चेलक्कं जगदि पुज्जं।।३०।।

ण्हाणादिवज्जणेण य विलित्तजल्लमल्लसेदसव्वंगं।
अण्हाणं घोरगणं संजमदुगपालयं मुणिणो।।३१।।

फासुय भूमिपएसे अप्पमसंथारिदम्हि पच्छण्णे।
दंडं धणुव्व सेज्जं खिदिसयणं एयपासेण।।३२।।

अंगुलिणहावलेहणिकलीहिं पासाणछल्लियादीहिं।
दंतमलासोहणयं संजमगुत्ती अदंतमणं।।३३।।

अंजलिपुडेण ठिच्चा कुड्डाइविवज्जणेण समपायं।
पडिसुद्धे भूमितिए असणं ठिदिभोयणं णाम।।३४।।

उदयत्थमणे काले णालीतियवज्जियम्हि मज्झम्हि।
एकम्हि दुअ तिए वा मुहुत्तकालेयभत्तं तु।।३५।।

एवं विहाणजुत्ते मूलगुणे पालिऊण तिविहेण।
होऊण जगदि पुज्जो अक्खयसोक्खं लहइ मोक्खं।।३६।।

सव्वदुक्खप्पहीणाणं सिद्धाणं अरहदो णमो।
सद्दहे जिणपण्णत्तं पच्चक्खामि य पाववं।।३७।।

णमोत्थु धुद पावाणं सिद्धाणं च महेसिणं।
संथरं पडिवज्जामि जहा केवलिदेसियं।।३८।।

जं किंचि मे दुच्चरियं सव्वं तिविहेण वोसरे।
सामाइयं च तिविहं करेमि सव्वं णिरायारं।।३९।।

बज्झब्भंतरमुवहिं सरीराइं च सभोयणं।
मणसा वचि कायेण सव्वं तिविहेण वोसरे।।४०।।

सव्वं पाणारंभं पच्चक्खामि अलीयवयणं च।
सव्वमदत्तादाणं मेहूण परिग्गहं चेव।।४१।।

सम्मं मे सव्वभूदेसु वेरं मज्झं ण केणवि।
आसा वोसरित्ताणं समाहिं पडिवज्जए।।४२।।

छक्करण चउव्विहत्थी किदकारिदअणुमोदिदं चेव।
जोगेसु अवम्भस्स य भंगा खलु होंति अक्खसंचारे।।*।।

खमामि सव्वजीवाणं सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूदेसु वेरं मज्झं ण केणवि।।४३।।

रायबंधं पदोसं च हरिसं दीणभाववयं।
उस्सुगत्तं भयं सोगं रदिमरदिं च वोसरे।।४४।।

ममत्तिं परिवज्जामि णिम्ममत्तिमुवट्ठिदो।
आलंबणं च मे आदा अवसेसाइं वोसरे।।४५।।

आदा हु मज्झ णाणे आदा मे दंसणे चरित्ते य।
आदा पच्चक्खाणे आदा मे संवरे जोए।।४६।।

एओ य मरइ जीवो एओ य उववज्जइ।
एयस्स जाइ मरणं एओ सिज्झइ णीरओ।।४७।।

एओ मे सस्सओ अप्पा णाणदंसणलक्खणो।
सेसा मे बाहिरा भावा सव्वे संजोगलक्खणा।।४८।।

संजोयमूलं जीवेण पत्तं दुक्खपरंपरं।
तम्हा संजोयसंबंधं सव्वं तिविहेण वोसरे।।४९।।

मूलगुण उत्तरगुणे जो मे णाराहिओ पमाएण।
तमहं सव्वं णिंदे पडिक्कमे आगममिस्साणं।।५०।।

अस्संजममण्णाणं मिच्छत्तं सव्वमेव य ममत्तिं।
जीवेसु अजीवेसु य तं णिंदे तं च गरिहामि।।५१।।

सत्तभए अट्ठमए सण्णा चत्तारि गारवे तिण्णि।
तेत्तीसाच्चासणाओ रायद्दोसं च गरिहामि।।५२।।

इहपरलोयत्ताणं अगुत्तिमरणं च वेयणाकम्हिभया।
विण्णाणिस्सरियाणा कुलबलतवरूवजाइ मया।।५३।।

आहारदिसण्णा चत्तारि वि होंति जाण जिणवयणे।
सादादिगारवा ते तिण्णि वि णियमा पवज्जेजो।।*।।

इह जादि बाहिया वि य जीवा पावंति दारुणं दुक्खं।
सेवंता वि य उभये ताओ चत्तारि सण्णाओ।।*।।

आहारदंसणेण य तस्सुवजोगेण आमकोठाए।
सादिदरुदीरणाए हवदि हु आहारसण्णा हु।।*।।

अइभीमदंसणेण य तस्सुवजोगेण ओमसत्तीए।
भकम्मुदीरणाए भयसण्णा जायदे चदुहिं।।*।।

पणिदरसभोयणेण य तस्सुवजोगे कुसील सेवाए।
वेदस्सुदीरणाए मेहुणसण्णा हु जायदे चदुहिं।।*।।

उवयरणदंसणेण य तस्सुवजोएण मुच्छिदाए य।
लोहस्सुदीरणाए परिग्गहे जायदे सण्णा।।*।।

पंचेव अत्थिकाया छज्जीवणिकाय महव्वया पंच।
पवयणमाउपयत्था तेतीसच्चासणा भणिया।।५४।।

णिंदामि णिंदणिज्जं गरहामि य जं मे गरहणीयं।
आलोचेमि य सव्वं सब्भंतर बाहिरं उवहिं।।५५।।

जह बालो जंप्पंतो कज्जमकज्जं च उज्जुयं भणदि।
तह आलोचेयव्वं मायामोसं च मोत्तूणं।।५६।।

णाणम्हि दंसणम्हि य तवे चरित्ते य चउसु वि अकंपो।
धीरो आगमकुसलो अपरस्साई रहस्साणं।।५७।।

एरिसगुणजुत्ताणं आइरियाणं विसुद्धभावेण।
आलोचेदि सुविहिदो सव्वे दोसे पमोत्तूणं।।*।।

रागेण य दोसेण य जं मे अकदण्हुयं पमादेण।
जो मे किंचिवि भणिओ तमहं सव्वं खमावेमि।।५८।।

तिविहं भणंति मरणं बालाणं बालपंडियाणं च।
तइयं पंडियमरणं जं केवलिणो अणुमरंति।।५९।।

जे पुण पणट्ठमदिया पचलियसण्णा य वक्कभावा य।
असमाहिणा मरंते ण हु ते आराहया भणिया।।६०।।

मरणे विराहिए देवदुग्गई दुल्लहा य किर बोही।
संसारो य अणंतो होइ पुणो आगमे काले।।६१।।

का देवग्गईओ का बोही केण ण बुज्झय मरणं।
केण व अणंतपारे संसारे हिण्डए जीओ।।६२।।

कंदप्पमाभिजोग्गं किब्बिससम्मोहमासुरत्तं च।
ता देव दुग्गदीओ मरणम्मि विराहिए होंति।।६३।।

असत्तमुल्लावेंतो पण्णावेंतो य बहुजणं कुणइं।
कंदप्परइसमावण्णो कंदप्पेसुउववज्जइ।।६४।।

मंताभियोग कोदुगभूदीकम्मं पउंजदे जो सो।
इड्ढिरससादहेदुं अभियोगं भावणं कुणदि।।*।।

अभिजुंजइ बहुभावे साहू हस्साइयं च बहुवयणं।
अभिजोगेहिं कम्मेहिं जुत्तो वाहणेसु उववज्जइ।।६५।।

तित्थयराणं पडिणीओ संघस्स य चेइयस्म सुत्तस्स।
अविणीदो णियडिल्लो किब्बिसियेसूववज्जेइ।।६६।।

उम्मग्गदेसओ मग्गणासओ मग्गविपडिवण्णो य।
मोहेण य मोहंतो संमोहेसूववज्जेदि।।६७।।

खुद्दी कोही माणी मायी तह संकिलिट्ठो तवे चरिते य।
अणुबद्धवेररोई असुरेसूववज्जदे जीवो।।६८।।

मिच्छादंसणरत्ता सणिदाणा किण्हलेसमोगाढा।
इह जे मरंति जीवा तेसिं पुण दुल्लहा बोही।।६९।।

सम्मद्दंसणरत्ता अणियाणा सुक्क लेस्समोगाढा।
इह जे मरंति जीवा तेसिं सुलहा हवे बोही।।७०।।

जे पुण गुरुपडिणीया बहुमोहा ससबला कुसीला य।
असमाहिणा मरंते ते होंति अणंतसंसारा।।७१।।

जिणवयणे अणुरत्ता गुरुवयणं जे करंति भावेण।
असबल असंकिलिट्ठा ते होंति परित्तसंसारा।।७२।।

बालमरणाणि बहुसो बहुयाणि अकामयाणि मरणाणि।
मरिहंति ते वराया जे जिणवयणं ण जाणंति।।७३।।

सत्थग्गहणं विसभक्खणं च जलणं जलप्पवेसो य।
अणयारभंडसेवी जम्मणमरणाणुबंधीणि।।७४।।

उड्ढमधोतिरियम्मि दु कदाणि बालमरणाणि बहूगाणि।
दंसण णाण सहगदो पंडियमरणं अणुमरिस्से।।७५।।

उव्वेयमरणंजादीमरणं णिरएसु वेदणाओ य।
एदाणि संभरंतो पंडियमरणं अणुमरिस्से।।७६।।

एक्कं पंडिदमरणं छिंददि जादीसयाणि बहुगाणि।
तं मरणं मरिदव्वं जेण मदं सुम्मदं होदि।।७७।।

जइ उत्पज्जइ दुक्खं तो दट्ठव्वो सभावदो णिरये।
कदमं मए ण पत्तं संसारे संसरंतेण।।७८।।

संसारचक्कवालम्मि मए सव्वेवि पुग्गला बहूसो।
आहारिदा य परिणामिदा य ण य मे गदा तित्ती।।७९।।

तिणकट्ठेण व अग्गी लवण समुद्दो णदीसहस्सेहिं।
ण इमो जीवो सक्को तिप्पेदुं कामभोगेहिं।।८०।।

कंखिदकलुसिदभूदो कामभोगेसु मुच्छिदो संतो।
अभुंजंतोवि य भोगे परिणामेण णिबज्झेइ।।८१।।

आहारणिमित्तं किर मच्छा गच्छंति सत्तमिं पुढविं।
सच्चित्तो आहारो ण कप्पदि मणसा वि पत्थेदुं।।८२।।

पुव्वं कदपरियम्मो अणिदाणो ईहिदूण मदिबुद्धि।
पच्छा मलिदकसाओ सज्जो मरणं पडिच्छाहि।।८३।।

हंदि चिर भाविदा वि य जे पुरूसा मरणदेसयाणंम्हि (लंम्मि)।
पुव्वकदकम्मगरुयत्तणेण पच्छा परिवडंति।।८४।।

तह्मा चंदयवेज्झस्स कारणेण उज्जदेण पुरिसेण।
जीवो अविरहिद गुणो कादव्वो मोक्खमग्गम्मि।।८५।।

कणयलदा णागलदा विज्जुलदा तहेव कुंदलदा।
एदाविय तेण हदा मिथिलाणयरिए महिंदयत्तेण।।८६।।

सायर गो बल्लहगो कुलदत्तो वड्ढमाणगो चेव।
दिवसेणिक्केण हदा मिथिलाए महिंददत्तेण।।८७।।

जहणिज्जावयर हिया णावाओ वररदण सुपुण्णाओ।
पट्टणमासण्णाओ खु पमादमूला णिबुड्ढंति।।८८।।

बाहिरजोगविरहिओ अब्भंतरजोगझाणमालीणो।
जह तम्हि देसयाले अमूढ सण्णो जहसु देहं।।८६।।

हंतूण रागदोसे छेत्तूण य अट्ठकम्मसंखलियं।
जम्मणमरणहट्टं भेत्तूण भवाहि मुच्चिहिसि।।६०।।

सव्वमिदं उवदेसं जिणदिट्ठं सद्दहामि तिविहेण।
तसथावर खेमकरं सारं णिव्वाण मग्गस्स।।६१।।

ण हि तम्हि देसयाले सक्को बारसविहो सुदक्खंधो।
सव्वो अणुचिंतेदुं बलिणा वि समत्थचित्तेण।।६२।।

एक्कम्हि विदियम्हि पदे संवेगो वीयरायमग्गम्मि।
वच्चदि णरो अभिक्खं तं मरणंते ण मोत्तव्वं।।६३।।

सत्तक्खरसज्झाणं अरहंताणं णमोत्ति भावेण।
जो कुणदि अणण्णमदी सो पावदि उत्तमं ठाणं।।*।।

एदह्मादो एक्कं हि सलोगं मरणदेसयालह्मि।
आराहणउवजुत्तो चिंतंतो आ राधओ होदि।।६४।।

जिणवयणमोसहमिणं विसयसुहविरेयणं अमिदभूदं।
जरमरणवाहिवेयणखयकरणं सव्वदुक्खाणं।।६५।।

णाणं सरणं मे दंसणं च सरणं च चरिय सरणं च।
तव संजमं च सरणं भगवं सरणं महावीरो।।६६।।

आराहण उवजुत्तो कालं काऊण सुविहिओ सम्मं।
उक्कस्सं तिण्णिभवे गन्तूण य लहइ निव्वाणं।।६७।।

समणो मेत्ति य पढमं विदियं सव्वत्थ संजदो मेत्ति।
सव्वं च वोसरामि य एदं भणिदं समासेण।।६८।।

लद्धं अलद्धपुव्वं जिणवयणसुभासिदं अमिद भूदं।
गहिदो सुग्गइमग्गो णाहं मरणस्स बीहेमि।।६९।।

वीरेण वि मरिदव्वं णिव्वीरेण वि अवस्स मरिदव्वं।
जदि दोहिं विहि मरिदव्वं वरं हि वीरत्तणेण मरिदव्वं।।१००।।

सीलेण वि मरिदव्वं णिस्सीलेण वि अवस्स मरिदव्वं।
जइ दोहिं वि मरियव्वं वरं हि सीलत्तणेण मरियव्वं।।१०१।।

चिरउसिदबंभयारी पप्फोडेदूण सेसयं कम्मं।
अणुपुव्वीए विसुद्धो सुद्धो सिद्धिं गदिं जादि।।१०२।।

णिम्ममो णिरहंकारो णिक्कसाओ जिदिंदिओ धीरो।
अणिदाणो दिठिसंपण्णो मरंतो आराहओ होइ।।१०३।।

णिक्कसायस्स दंतस्स सूरस्स ववसाइणो।
संसारभयभीदस्स पच्चक्खाणं सुहं हवे।।१०४।।

एदं पच्चक्खाणं जो काहदि मरणदेसयालम्मि।
धीरो अमूढसण्णो सो गच्छइ उत्तमं ठाणं।।१०५।।

वीरो जरमरणरिऊ वीरो विण्णाणणाणसंपण्णो।
लोगस्सुज्जोययरो जिणवरचंदो दिसदु बोधिं।।१०६।।

जा गदी अरहंताणं णिट्ठिदट्ठाणं च जा गदी।
जा गदी वीदमोहाणं सा मे भवदु सस्सदा।।१०७।।

एस करेमि पणामं जिणवरवसहस्स वड्ढमाणस्स।
सेसाणं च जिणाणं सगणगणधराणं च सव्वेसिं।।१०८।।

सव्वं पाणारंभं पच्चक्खामि अलीयवयणं च।
सव्वमदत्तादाणं मेहूणपरिग्गहं चेव।।१०६।।

सम्मंमे सव्वभूदेसु वेरं मज्झ ण केण इ।
आसाए वोसरित्ताणं समाधिं पडिवज्जए।।११०।।

सव्वं आहारविहिं सण्णाओ आसए कसाए य।
सव्वं चेय ममत्तिं जहामि सव्वं खमावेमि।।१११।।

सव्वो गुणगणणिलओ मोक्खसुहे सिग्घं हेदु।
सव्वो चाउव्वण्णो ममापराधं।।*।।

एदम्हि देसशयाले उवक्कमो जीविदस्स जदि मज्झं।
एदं पच्चक्खाणं णित्थिण्णे पारणा हुज्ज।।११२।।

सव्वं आहारविहिं पच्चक्खामि पाणयं वज्ज।
उवहिं च वोसरामि य दुविहं तिविहेण सावज्जं।।११३।।

पंच वि इंदियमुंडा वचमुंडा हत्थपायमणमुंडा।
तणुमुंडेण वि सहिया दसमुंडा वण्णिया समये।।*।।

जो कोइ मज्झ उवही सब्भंतर बाहिरो य हवे।
आहारं च सरीरं जावज्जीवा य वोसरे।।११४।।

जम्मालीणा जीवा तरंति संसारसायरमणंतं।
तं सव्वजीवसरणं णंददु जिणसासणं सुइरं।।११५।।

जा गदी अरहंताणं णिट्ठिदट्ठाणं च जा गदी।
जा गदी वीदमोहाणं सा मे भवदु सस्सदा।।116।।

एगं पंडियमरणं छिंदइ जाई सयाणि बहुगाणि।
तं मरणं मरिदव्व जेण मदं सुम्मदं होदि।।११७।।

एगम्हिय भवगहणे समाहिमरणं लहिज्ज जदि जीवो।
सत्तट्ठभवग्गहणे णिव्वाणमणुत्तरं लहादि।।११८।।

णत्थि भयं मरणसमं जम्मणसमयं ण विज्जदे दुक्खं।
जम्मणमरणादकं छिंदि ममतिं सरीरादो।।११९।।

पढमं सव्वदि चारं विदियं तिविहं भवे पडिक्कमणं।
पाणस्स परिच्चयणं जावज्जीवाय मुत्तमट्ठं च।।१२०।।

पंचवि इंदियमुंडा वचमुंडा हत्थपायमण मुंडा।
तणु मुंडेण वि सहिया दस मुंडा वण्णिया समए।।१२१।।

तेलोक्कपूयणीए अरहंते वंदिऊण तिविहेण।
वोच्छं सामाचारं समासदो आणुपुव्वीयं।।१२२।।

समदा सामाचारो सम्माचारो समो व आचारो।
सव्वेसिं सम्माणं सामाचारो दु आचारो।।१२३।।

दुविहो सामाचारो ओघोवि य पदविभागिओ चेव।
दसहा ओघो भणिओ अणेगहा पदविभागी य।।१२४।।

इच्छामिच्छाकारो तधाकारो य आसिआ णिसिही।
आपुच्छा पडिपुच्छा छंदणसणिमंतणा य उवसंपा।।१२५।

इट्ठे इच्छाकारो मिच्छाकारो तहेव अवराहे।
पडिसुणणम्हि तहत्ति य णिग्गमणे आसिया भणिया।।१२६।।

पविसंते य णिसिही आपुच्छणिया सकज्ज आरंभे।
साधम्मिणा य गुरुणा पुव्वणिसिट्ठम्हि पडिपुच्छा।।१२७।।

छंदण गहिदे दव्वे अगहिददव्वे णिमंतणा भणिदा।
तुह्म महंति गुरुकुले आदणिसग्गो दु उवसंपा।।१२८।।

ओघियसामाचारो एसो भणिदो हु दसविहो णेओ।
एतो य पदविभागो समासदो वण्णइस्सामि।।१२६।।

उग्गमसूरप्पहुदी समणाहोरत्तमंडले कसिणे।
जं आचरंति सददं एसो भणिदो पदविभागी।।१३०।।

संजमणाणुवकरणे अण्णुवकरणे च जायणे अण्णे।
जोगग्हणादीसु य इच्छाकारो दु कादव्वो।।१३१।।

जं दुक्कडं तु मिच्छा तं णेच्छदि दुक्कडं पुणो कादुं।
भावेण पडिक्कंतो तस्स भवे दुक्कडे मिच्छा।।१३२।।

वायणपडिच्छण्णाए उवदेसे सुत्तअत्थकहणाए।
अवितहमेदत्ति पुणो पडिच्छणाए तधाकारो।।१३३।।

कंदरपुलिणगुहादिसु पवेसकाले णिसोहियं कुज्जा।
तेहिंतो णिग्गमणे तहासिया होदि कायव्वा।।१३४।।

आदावणादिगहणे सण्णा उब्भामगादि गमणे वा।
विणयेणायरियादिसु आपुच्छा होदि कायव्वा।।१३५।।

जं किंचि महाकज्जं करणीयं पुच्छिऊण गुरुआदी।
पुणरवि पुच्छदि साहू तं जाणसु होदि पडिपुच्छा।।१३६।।

गहिदुवकरणे विणए वंदनसुत्तत्थपुच्छणादीसु।
गणधरवसहादीणं अणुवुत्तिं छंदणिच्छाए।।१३७।।

गुरुसाहम्मियदव्वं पुत्थयमण्णं च गेण्हिदुं इच्छे।
तेसिं विणयेण पुणो णिमंतणा होइ कायव्वा।।१३८।।

उवसंपया य णेया पंचविहा जिणवरेहिं णिद्दिट्ठा।
विणये खेत्ते मग्गे सुहदुक्खे चेव सुत्ते य।।१३९।।

पाहुणविणउवचारो तेसिं चावासभूमिसंपुच्छा।
दाणाणुवत्तणादी विणये उवसंपया णेया।।१४०।।

संजम तव गुण सीला जमणियमादी य जह्मि खेत्तह्मि।
वड्ढंति तह्मि वासो खेत्ते उवसंपया णेया।।१४१।।

पाहुणवत्थव्वाणं अण्णोण्णागमणागमणसुहपुच्छा।
उवसंपदा य मग्गे संजमतवणाणजोगजुत्ताणं।।१४२।।

सुहदुक्खे उवयारो वसही आहार भेसजादीहिं।
तुह्मं अहंति वयणं सुहदुक्खुवसंपया णेया।।१४३।।

उवसंपया य सुत्ते तिविहा सुत्तत्थतदुभया चेव।
एक्केक्का विय तिविहा लोइय वेदे तहा समये।।१४४।।

कोई सव्वसमत्थो सगुरुसुदं सव्वमागमित्ताणं।
विणएणुवक्कमित्ता पुच्छइ सगुरुं पयत्तेण।।१४५।।

तुज्झं पादपसाएण अण्णमिच्छामि गंतुमायदणं।
तिण्णि व पंच व छा वा पुच्छाओ एत्थ सो कुणइ।।१४६।।

एवं आपुच्छित्ता सगवरगुरुणा विसज्जिओ संतो।
अप्पचउत्थो तदिओ बिदिओ वा सो तदो णीदी।।१४७।।

गिहिदत्थे य विहारो विदिओऽगिहिदत्थसंसिदो चेव।
एत्तो तदियविहारो णाणुण्णादो जिणवरेहिं।।१४८।।

तवसुत्त सत्त एगत्तभावसंघडणधिदिसमग्गो य।
पविआ आगमबलिओ एयविहारी अणुण्णादो।।१४९।।

सच्छंदगदागदीसयणणिसयणादाणभिक्खवोसरणे।
सच्छंदजंपरोचि य मा मे सत्तूवि एगागी।।१५०।।

गुरुपरिवादो सुदवुच्छेदो तित्थस्स मइलणा जडदा।
भिंभलकुसील पासत्थदा य उस्सारकप्पम्हि।।१५१।।

कंटयरवण्णुयपडिणियसाणगोणादिसप्पमेच्छेहिं।
पावइ आदविवत्तो विसेण व विसूइया चेव।।१५२।।

गारविओ गिद्धीओ माइल्लो अलसलुद्धणिद्धम्मो।
गच्छे विसंवसंतो णेच्छइ संघाडयं मंदो।।१५३।।

आणा अणवत्था विय मिच्छत्ताराहणादणासो य।
संजम विराहणा वि य एदे दु णिकाइया ठाणा।।१५४।।

तत्थ ण कप्पइ वासो जत्थ इमे णत्थि पंच आधारा।
आइरिय उवज्झाया पवत्तथेरा गणधरा य।।१५५।।

सिस्साणुग्गहकुसलो धम्मुवदेसो य संघवट्टवओ।
मज्जादुवदेसो वि य गणपरिरक्खो मुणेयव्वो।।१५६।।

जं तेणतर लद्धंसच्चित्ताचित्तमिस्सयं दव्वं।
तस्स य सो आइरिओ अरिहदि एवंगुणो सो वि।।१५७।।

संगहणुग्गहकुसलो सुत्तत्थविसारओ पहियकित्ती।
किरिआचरण सुजुत्तो गाहुय आदेज्ज वयणो य।।१५८।।

गंभीरो दुद्धरिसो सूरो धम्मप्पहावणासीलो।
खि दिससिसायरसरसो कमेण तं सो दु संपत्तो।।१५६।।

आएसं एज्जंतं सहसा दट्ठूण संजदा सव्वे।
वच्छल्लाणासंगहपणमणहेदुं समुट्ठंति।।१६०।।

पच्चुग्गमणं किच्चा सत्तपदं अण्णमण्णपणमं च।
पाहुणकरणीयकदे तिरयणसंपुच्छणं कुज्जा।।१६१।।

आएसस्स तिरत्तं णियमा संघाडओ दु दायव्वो।
किरियासंथारादिसु सहवासपरिक्खणाहेऊं।।१६२।।

आगंतुय वत्थव्वापडिलेहाहिं तु अण्णमण्णाहिं।
अण्णोण्णकरणचरणं जाणणहेदुं परिक्खंति।।१६३।।

आवासयठाणादिसु पडिलेहणवयणगहणणिक्खेवे।
सज्झाएगविहारे भिक्खग्गहणे परिच्छंति।।१६४।।

विस्समिदो तद्दिवसं मीमंसित्ता णिवेदयदि गणिणे।
विणएणागमकज्जं विदिए तदिए व दिवसम्मि।।१६५।।

आगंतुकणामकुलं गुरुदिक्खामाण वरिसगवासं च।
आगमणदिसासिक्खापडिकमणादी य गुरुपुच्छा।।१६६।।

जदि चरणकरणसुद्धो णिच्चुज्जुत्तो विणीद मेधावी।
तस्सिट्ठं कधिदव्वं सगसुदसत्तीए भणिऊण।।१६७।।

जदि इदरो सोऽजोग्गो छेदमुवट्ठावणं च कादव्वं।
जदि णेच्छदि छडेज्जो अह गिण्हदि सोवि छेदरिहो।।१६८।।

एवंविधिणुववण्णो एवंविधिणेव सोवि संगहिदो।
सुत्तत्थं सिक्खंतो एवं कुज्जा पयत्तेण।।१६९।।

पडिलेहिऊणसम्मं दव्वं खेत्तं चकाल भावे य।
विणयउवयार जुत्तेणज्झेदव्वं पयत्तेण।।१७०।।

दव्वादिवदिक्कमणं करेदि सुत्तत्थसिक्खलोहेण।
असमाहिमसज्झायं कलहं वाहिं वियोगं च।।१७१।।

संथारवासयाणं पाणीलेहाहिं दंसणुज्जोवे।
जत्तेणुभये काले पडिलेहा होदि कायव्वा।।१७२।।

उब्भामगादिगमणे उत्तरजोगे सकज्ज आरंभे।
इच्छाकारणिजुत्तो आपुच्छा होइ कायव्वा।।१७३।।

गच्छे वेज्जावच्चं गिलाणगुरुबालबुड्ढसेहाणं।
जहजोगं कादव्वं सगसत्तीए पयत्तेण।।१७४।।

दिवसियरादियपक्खियचाउम्मासियवरिस्स किरियासु।
रिसिदेववंदणादिसु सहजोगो होदि कायव्वो।।१७५।।

मणवयणकायजोगेणुप्पण्णवराध जस्स गच्छम्मि।
मिच्छाकारं किच्चा णियत्तणं होदि कायव्वं।।१७६।।

अज्जागमणे काले ण अत्थिदव्वं तधेव एक्केण।
ताहिं पुण सल्लावो ण य कायव्वो अकज्जेण।।१७७।।

तासिं पुण पुच्छाओ इक्किस्से णय कहिज्ज एक्को दु।
गणिणी पुरओ किच्चा जदि पुच्छइ तो कहेदव्वं।।१७८।।

तरुणो तरुणीए सह कहा व सल्लावणं च जदि कुज्जा।
आणाकोवादीया पंचवि दोसा कदा तेण।।१७९।।

णो कप्पदि विरदाणं विरदीण मुवासयह्मि चिट्ठेदुं।
तत्थ णिसेज्ज उवट्टणसज्झायाहारभिक्खवोसरणं।।१८०।।

थेरं चिरपव्वइयं आयरियं बहुसुदं च तवसिं वा।
ण गणेदि काममलिणो कुलमवि समणो विणासेइ।।१८१।।

कण्णं विधवं अन्तेउरियं तह सइरिणी सलिंगं वा।
अचिरेणल्लियमाणो अववादं तत्थ पप्पोदि।।१८२।।

पियधम्मो दढधम्मो संविग्गोऽवज्जभीरु परिसुद्धो।
संगहणुग्गहकुसलो सददं सारक्खणाजुत्तो।।१८३।।

गंभीरो दुद्धरिसो मिदवादी अप्पकोदुहल्लो य।
चिरपव्वइदो गिहिदत्थो अज्जाणं गणधरो होदि।।१८४।।

एवं गुणवदिरित्तो जदि गणधारित्तं करेदि अज्जाणं।
चत्तारि कालगा से गच्छादिविराहणा होज्ज।।१८५।।

आयंबिल णिव्वियडी एयट्ठाणं तहेव खमणं च।
एक्केक्क एकमासं करेदि जदि कालगं एक्कं।।*।।

किं बहुणा भणिदेण दु जा इच्छा गणधरस्स सा सव्वा।
कादव्वा तेण भवे एसेव विधि दु सेसाणं।।१८६।।

एसो अज्जाणंपि अ सामाचारो जहक्खिओ पुव्वं।
सव्वह्मि अहोरत्ते विभासि दव्वो जधाजोग्गं।।१८७।।

अण्णोण्णणुकूलाओ अण्णोण्णहिरक्खणाभिजुत्ताओ।
गयरोसवेरमाया सलज्जमज्जादकिरियाओ।।१८८।।

अज्झयणे परियट्टे सवणे तहाणुपेहाए।
तवविणयसंजमेसु य अविरहिदुपओगजोगजुत्ताओ।।१८९।।

अविकारवत्थवेसा जल्लमलविलित्तचत्तदेहाओ।
धम्मकुलकित्तिदिक्खापडिरुपविसुद्धचरियाओ।।१९०।।

अगिहत्थमिस्सणिलए असण्णिवाए विसुद्धसंचारे।
दो तिण्णिव अज्जाओ बहुगीओ वा सहत्थंति।।१९१।।

ण य परगेहमकज्जे गच्छे कज्जे अवस्सगमणिज्जे।
गणिणीमापुच्छित्ता संघाडेणेव गज्छेज्ज।।१९२।।

रोदणण्हावणभोयणपयणं सुत्तं च छव्विहारंभे।
विरदाण पादमक्खणधोवणगेयं च ण य कुज्जा।।१९३।।

पाणियणयणं छेणं गिहबोहरणं च गेहसारमणं।
कुड्डावलिप्पाणं कुड्डविदे एदंतु छव्विहारंभो।।*।।

तिण्णिव पंच व सत्त व अज्जाओ अण्णमण्णरक्खाओ।
थेरीहिं संहतरिदा भिक्खाय समोदरंति सदा।।१९४।।

पंच छ सत्त हत्थे सूरी अज्झावगो य साधु य।
परिहरिऊणज्जाओ गवासणेणेव वंदंति।।१९५।।

एवं विधाणचरियं चरंति जे साधवो व अज्जाओ।
ते जगपुज्जं कित्तिं सुहं च लद्धूण सिज्झंति।।१९६।।

एवं सामाचारो बहुभेदो वण्णिदो समासेण।
वित्थारसमावण्णो वित्थरिदव्वो बुहजणहिं।।१९७।।

तिहुयणमंदरमहिदे तिलोगबुद्धे तिलोगमत्थत्थे।
तेलोक्कविदिदवीरे तिविहेण च पणिवदे सिद्धे।।१९८।।

दंसणणाणचरित्ते तवे विरियाचरह्मि पंचविहे।
वोच्छं अदिचोरहं कारिदे अणुमोदिदे अ कदे।।१६६।।

दंसणचरणविसुद्धी अट्ठविहा जिणवरेहिं णिद्दिट्ठा।
दंसणमलसोहणयं वोच्छं तं सुणह एयमणा।।२००।।

णिस्संकिद णिक्कंखिद णिव्विदिगिंच्छा अमूढदिट्ठीय।
उवगूहणठिदिकरणं वच्छल्ल पभावणा य ते अट्ठ।।२०१।।

मग्गो मग्गफलंति य दुविहं जिणसासणे समक्खादं।
मग्गो खलु सम्मत्तं मग्गफलं होई णिव्वाणं।।२०२।।

भूयत्थेणाभिगदा जीवाजीवा य पुण्णपावं च।
आसवसंवरणिज्जरबंधो मोक्खो य सम्मत्तं।।२०३।।

दुविहा य होंति जीवा संसारत्था य णिव्वुदा चेव।
छद्धा संसारत्था सिद्धिगदा णिव्वुदा जीवा।।२०४।।

पुढवी आऊ तेऊ वाऊ य वणप्फदी तहा य तसा।
छत्तीसविहा पुढवी तिस्से भेदा इमे णेया।।२०५।।

पुढवी पुढवीकाओ पुढवीकाइव पुढविजीवो य।
सहारणा य मुक्को सरीरगहिओ भवंतरिदो।।*।।

पुढवी य बालुगा सक्करा य उवले सिला लोणे य।
अय तवं तउय सीसय रुप्पसुवण्णो य वइरे य।।२०६।।

हरिदाले हिंगुलये मणोसिला सस्संगजण पवाले य।
अब्भपडलब्भवालुय बादरकाया मणिविधीय।।२०७।।

गोमज्झगेय रुजगे अंके फलिहे य लोहिदंके य।
चंदप्पभेय वेरुलिए जलकंते सूरकंतेय।।२०८।।

गेरुय चंदण वव्वग वय मोए तह मसारगल्ले य।
ते जाण पुढविजीवा जाणित्ता परिहरेदव्वा।।२०९।।

ओसाय हिमग महिगा हरदणु सुद्धोदगे घणुदगे य।
ते जाण आउजीवा जाणित्ता परिहरेदव्वा।।२१०।।

इंगाल जाल अच्ची मुम्मुर सुद्धागणीय अगणी य।
ते जाण तेउजीवा जाणित्ता परिहरेदव्वा।।२११।।

बादुब्भामो उक्कलि मंडलि गुंजा महाघण तणूय।
ते जाण वाउजीवा जाणित्ता परिहरेदव्वा।।२१२।।

मूलग्गपोरबीजा कंदा तह खंधबीजबीजरुहा।
संमुच्छिमा य भणिया पत्तेयाणंतकाया य।।२१३।।

कंदा मूला छल्ली खंधं पत्तं पवाल पुप्फफलं।
गुच्छा गुम्मा वल्ली तणाणि तह पव्व काया य।।२१४।।

जलकंजियाण मज्झे इट्टय धम्मीय सिंगमज्झे य।
सेवाल पणग केणुग कवगो कुहणो जहाकमं होंति।।*।।

सेवालपणग केण्णग कवगो कुहणो य बादरा काया।
सव्वे वि सुहमकाया सव्वत्थ जलत्थलागासे।।२१५।।

गूढसिरसंधिपव्वं समभंगमहीरुहं च छिण्णरुहं।
साहारणं सरीरं तब्विवरीयं च पत्तेयं।।२१६।।

होदि वणप्फदि वल्लो रुक्ख तणादी तहेव एइंदी।
ते जाण हरितजीवा जाणित्ता परिहरेदव्वा।।२१७।।

दुविधा तसा य उत्ता विगला सगलेंदिया मुणेयव्वा।
बितिचउरिंदिय विगला सेसा सगलिंदिया जीवा।।२१८।।

संखो गोभी भमरादिया दु विगलिंदिया मुणेदव्वा।
सकलिंदिया य जलथलखचरा सुरणारयणरा य।।२१९।।

कुलजोणि मग्गणाविय णादव्वा चेव सव्वजीवाणं।
णाऊण सव्वजीवे णिस्संका होदि कादव्वा।।२२०।।

बावीस सत्त तिण्णि य सत्त य कुलकोडिसदसहस्साइं।
णेया पुढविदगागणिवाऊक्कायाण पडिसंखा।।२२१।।

कोडिसदसस्साइं सत्तट्ठ णव य अट्ठवीसं चं।
वेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय हरिदकायाणं।।२२२।।

अट्टत्तेरस बारस दसयं कुलकोडिसदसहस्साइं।
जलचरपक्खिचउप्पयउर परिसप्पेसु णव होंति।।२२३।।

छव्वीसं पणवीसं चउदस कुलकोडिसदसहस्साइं।
सुरणेरइयणराणं जहाकमं होइ णायव्वं।।२२४।।

एया य कोडिकोडी णवणवदी कोडिसदसहस्साइं।
पण्णांसच सहस्सा संवंगीणं कुलाण कोडीओ।।२२५।।

णिच्चिदरधादु सत्त य तरु दस विगलिंदिए सुछच्चेव।
सुरणरयतिरिय चउरो चउदश मणुएसु सदसहस्सा।।२२६।।

तसथावरा य दुविहा जोग गइकसाय इंदियविधीहिं।
बहुविह भव्वाभव्वा एस गदी जीवणिद्देसे।।२२७।।

णाणं पंचविधं पि अ अण्णाणतिगं च सागरुवओगो।
चदु दंसणमणगारो सव्वे तल्लक्खणा जीवा।।२२८।।

एवं जीवविभागा बहु भेदा वण्णिया समासेण।
एवंविध भावरहियम जीवदव्वेत्ति विण्णेयं।।२२६।।

अज्जीवा वि य दुविहा रूवारूवा य रूविणो चदुधा।
खंधा य खंधदेसो खांधपदेसो अणू य तहा।।२३०।।

खंधं सयलसमत्थं तस्स दु अद्धं भणंति देसोत्ति।
अद्धद्धं च पदेसो परमाणू चेय अविभागी।।२३१।।

खंधा देसपदेसा जाव अणुत्तीवि पोग्गला रूवी।
वण्णादिमंत जीवेण होंति बंधा जहाजोग्गं।।*।।

पुढवी जलं च छाया चउरिंदिय विसयकम्मपरमाणू।
छव्विहभेयं भणियं पुग्गलदव्वं जिणवरेहिं।।*।।

बाद-वादरबादर बादरसुहुमं च सुहुमथूलं च।
सुहुमं सुहुमसुहुमं धरादियं होदि छब्भेयं।।*।।

धम्माधम्मागासा अरूविणो चेव होंति तह कालो।
गदिठाणोग्गह होइ य कमसो परिवट्टणगुणो य।।*।।

ते पुणुधम्माधम्मागासा य अरूविणो य तह कालो।
खंधा देसपदेसा अणुत्तिविय पोग्गला रूवी।।२३२।।

गदिठाणोग्गाहणकारणाणि कमसो दु वत्तणगुणो य।
रूवरसगंध फासदि कारणा कम्मबंधस्स।।२३३।।

सम्मत्तेण सुदेण य विरदीए कसायणिग्गहगुणेहिं।
जो परिणदो स पुण्णो तव्विवरीदेण पावं तु।।२३४।।

पुण्णस्सासवभूदा अणुकंपा सुद्ध एव उवओगो।
विवरीदं पावस्स दु आसवहेउं वियाणाहि।।२३५।।

णेहोउप्पिदगत्तस्स रेणओ लग्गदे जधा अंगे।
तह रागदोससिणे होल्लिदस्स कम्मं मुणेयव्वं।।२३६।।

मिच्छत्तं अविरमणं कसायजोगा य आसवा होंति।
अरिहंतवुत्तअत्थेसु विमोहो होइ मिच्छत्तं।।२३७।।

अविरमणं हिंसादि पंचवि दोसा हवंति णादव्वा।
कोधादी य कसाया जोगो जीवस्स चेट्ठा दु।।२३८।।

मिच्छत्तासवदारं रुंभइ सम्मत्तदढकवाडेण।
हिंसादिदुवाराणि वि दढवदफलिहेहिं रुंब्भन्ति।।२३९।।

आसवदि जं तु कम्मं कोधादीहिं तु अपदजीवाणं।
तप्पडिवक्खेहिं विदु रुंभंति तमप्पमत्ता दु।।२४०।।

मिच्छत्ताविरदीहि य कसायजोगेहिं जं च आसवदि।
दंसणविरमणणिग्गहणिरोधणेहिं तु णासवदि।।२४१।।

संयम जोगे जुत्तो जो तवसा चेट्ठदे अणेगविधं।
सो कम्मणिज्जराए विउलाए वट्टदे जीवो।।२४२।।

जह धाऊ धम्मंतो सुज्झदि सो अग्गिणा दु संतत्तो।
तवसा तधा विसुज्झदि जीवो कम्मेहिं कणयं व।।२४३।।

जोगा पयडिपदेसा ठिदिअणुभागं कसायदो कुणदि।
अपरिणदुच्छिण्णेसु य बंधट्ठिदि कारणं णत्थि।।२४४।।

पुव्वकदकम्मसडणं तु णिज्जरा सा पुणो हवे दुविहा।
पढमा विवागजादा विदिया अविवागजादा य।।२४५।।

कालेण उवाएण य पच्चंति जधा वणप्फदिफलाणि।
तध कालेण उवाएण य पच्चंति कदाणि कम्माणि।।२४६।।

रागी बंधइ कम्मं मुच्चइ जीवो विरागसंपण्णो।
एसो जिणोवएसो समासदो बंधमोक्खाणं।।२४७।।

अरहंतसिद्धसाहूसुदभत्ती धम्मम्हि जा हि खलु चेट्ठा।
अणुगमणं य गुरुणं पसत्थरागोत्ति उच्चदि सो।।*।।

अरहंतसिद्धचेदियपवयणगणणाणभत्तिसंपुण्णो।
बज्झदि बहु सो पुण्णं ण हु सो कम्मक्खयं कुणदि।।*।।

विसयकसाओगाढो दुस्सुदिदुच्चित्तदुट्ठगोट्ठिजुदो।
उग्गो उम्मग्गपरो उवओगो जस्स सो असुहो।।*।।

सुविदिदपदत्थजुत्तो संजमतवसंजुदो विगदरागो।
समणो समसुहदुक्खो भणिदो सुद्धोवओगोत्ति।।*।।

जं खलु जिणोवदिट्ठं तमेव तत्थमिदि भावदो गहणं।
सम्मद्दंसणभावो तं विवरीदं च मिच्छत्तं।।*।।

णव य पदत्था एदे जिणदिट्ठा वण्णिदा मए तच्चा।
एत्थ भवे जा संका दंसणघादी हरदि एसो।।२४८।।

तिविहा य होइ कंखा इहपरलोए तहा कुधम्मे य।
तिविहं पि जो ण कुज्जा दंसणसुद्धि मुवगदो सो।।२४९।।

बलदेवचक्कवट्टीसेट्ठीरायत्तणादि अहिलासो।
इहपरलोगे देवत्तपत्थणा दंसणाभिघादी सो।।२५०।।

रत्तवडचरगतावसपरिवहत्तादीणमण्णतित्थीणं।
धम्मह्मि य अहिलासो कुधम्मकंखा हवदि एसा।।२५१।।

विदिगिंच्छा वि य दुविहा दव्वे भावे य होइ णायव्वा।
उच्चारादिसु दव्वे खुधाहिए भावविदिगिंछा।।२५२।।

उच्चारं पस्सवणं खेलं सिंघाणयं च चम्मट्ठी।
पूयं च मंससोणिदवंतं जल्लादि साधूणं।।२५३।।

छुहतण्हा सीदुण्हा दंसमसयमचेलभावो य।
अरदि रदि इत्थि चरिया णिसीधिया सेज्ज अक्कोसो।।२५४।।

बधजायणं अलाहो रोग तणप्फास जल्लसक्कारो।
तह चेव पण्णपरिसह अण्णाणमदंसणं खमणं।।२५५।।

लोइयवेदियसामाइएसु तह अण्णदेवमूढत्तं।
णच्चा दंसणघादी ण य कायव्वं ससत्तीए।।२५६।।

कोडिल्लमासुरक्खा भारहरामायणादि जे धम्मा।
होज्जु व तेसु विसुत्ती लोइयमूढो हवदि एसो।।२५७।।

ऋव्वेदसामवेदा वागणुवादादिवेदसत्थाइं।
तुच्छाणि त्तिण गेण्हइ वेदियमूढो हवदि एसो।।२५८।।

रत्तवड चरगतावसपरिहत्तादीय अण्ण पासंढा।
संसार तारगत्तिय जदि गेण्हइ समयमूढो सो।।२५९।।

ईसरबंभाविण्हू अज्जाखंदादिया य जे देवा।
ते देवभावहीणा देवत्तणभावणे मूढो।।२६०।।

दंसणचरणविवण्णे जीवे दट्ठूण धम्मभत्तीए।
उपगूहणं करिंतो दंसणसुद्धो हवदि एसो।।२६१।।

दंसणवरणुवभट्ठे जीवे दट्ठूण धम्मबुद्धीए।
हिदमिदमवगूहिय ते खिप्पं तत्तो णियत्तेई।।२६२।।

चादुव्वण्णे संघे चदुगदि संसारणित्थरणभूदे।
वच्छल्लं कादव्वं वच्छे गावी जहा गिद्धी।।२६३।।

धम्मकहाकहणेण य बाहिरजोगेहिं चावि णवज्जेहिं।
धम्मो पहाविदव्वो जीवेसु दयाणुकंपाए।।२६४।।

जं खलु जिणोव दिट्ठं तमेव तत्थित्ति भावदो गहणं।
सम्मद्दंसण भावो तव्वि वरीदं च मिच्छतं।।२६५।।

संवेगो वेरग्गो णिंदा गरिहा य उवसमो भत्ती।
अणुकंपा वच्छल्ला गुणा य सम्मत्तजुत्तस्स।।*।।

दंसणचरणो एसो णाणाचारं च वोच्छमट्ठविहं।
अट्ठविहकम्ममुक्को जेण य जीवो लहइ सिद्धिं।।२६६।।

जेणं तच्चं विवुज्झेज्ज जेणं चित्तं णिरुज्झदि।
जेण अत्ता विसुज्झेज्ज तं णाणं जिणसासणे।।२६७।।

जेण रागा विरज्जेज्ज जेण सेएसु रज्जदि।
जेण मित्तीं पभावेज्ज तं णाणं जिणसासणे।।२६८।।

काले विणए उवहाणे बहुमाणे तहेव णिण्हवणे।
वंजण अत्थ तदुभए णाणाचारो दु अट्ठविहो।।२६९।।

पादोसियवेरत्तियगोसग्गियकालमेव गेण्हित्ता।
उभये कालह्मि पुणो सज्झाओ होदि कायव्वो।।२७०।।

सज्झाये पट्ठवणे जंघच्छायं वियाण सत्तपयं।
पुव्वण्हे अवरण्हे तावदियं चेव णिट्ठवणे।।२७१।।

आसाढे सत्तपदे आउड्ढपदे य पुस्समासम्हि।
सत्तंगुलखयवुड्ढी मासे मासे तदिदराम्हि।।*।।

आसाढे दुपदा छाया पुस्समासे चदुप्पदा।
वड्ढदे हीयदे चावि मासे मासे दुअंगुला।।२७२।।

णवसत्तपंचगाहापरिमाणं दिसिविभागसोहीए।
पुव्वण्हे अवरण्हे पदोसकाले य सज्झाये।।२७३।।

दिसिदाह उक्कपडणं विज्जुचडक्कामणिंदधणुगं च।
दुग्गंधसंज्झदुद्दिणचंदग्गह सूरराहुजुज्झं च।।२७४।।

कलहादि धूमकेदू धरणीकंपं च अब्भगज्जं च।
इच्चेवमाइ बहुया सज्झाये वज्जिदा दोसा।।२७५।।

रुहिरादिपूयमंसं दव्वे खेत्ते सदहत्थपरिमाणं।
कोधादिसंकिलेसा भावविसोही पढणकाले।।२७६।।

सुत्तं गणहरकहिदं तहेव पत्तेय बुद्धि कहिदं च।
सुदकेवलिणा कहिदं अभिण्णदसपुव्वकहिदं च।।२७७।।

तं पढिदुमसज्झाये णो कप्पदि विरदइत्थिवग्गस्स।
एत्तो अण्णो गंथो कप्पदि पढिदुं असज्झाए।।२७८।।

आराहणणिज्जुत्ती मरणविभत्ती य संगहत्थुदिओ।
पच्चक्खाणावासयधम्मकहाओ य एरिसओ।।२७९।।

उद्देससमुद्देसे अणुणापणए य होंति पंचेव।
अंगसुदखंधझेणुव देसा वि य पदविभागी य।।२८०।।

पलियंकणिसेज्जगदो पडिलेहिय अंजलीकदपणामो।
सुत्तत्थजोगजुत्तो पढिदव्वो आदसत्तोए।।२८१।।

सुत्तत्थं जप्पंतो अत्थविसुद्धं च तदुभयविसुद्धं।
पयदेण य वाचंतो णाणविणीदो हवदि एसो।।*।।

विणयेण सुदमधीदं जदि वि पमादेण होदि विस्सरिदं।
तमुवट्ठादि परभवे केवलणाणं च आवहदि।।*।।

आयंविलणिव्वियडी अण्णं वा होदि जस्स कादव्वं।
तं तस्स करेमाणो उपहाण जुदो हवदि एसो।।२८२।।

सुत्तत्थं जप्पंतो वायंतो चावि णिज्जराहेदुं।
आसादणं ण कुज्जा तेण किदं होदि बहुमाणं।।२८३।।

कुलवयसीलविहूणे सुत्तत्थं सम्मगागमित्ता णं।
कुलवयसीलमहल्ले णिण्हवदोसो दु जप्पंतो।।२८४।।

विंजणसुद्धं सुत्तं अत्थविसुद्धं च तदुभयविसुद्धं।
पयदेण य जप्पंतो णाणविसुद्धो हवइ एसो।।२८५।।

विणएण सुदमधीदं जदिवि पमादेण होदि विस्सरिदं।
तमुवट्ठादि परभवे केवलणाणं च आवहदि।।२८६।।

तित्थयकहियं अत्थं गणहररचिदं यदीहिं अणुचरिदं।
णिव्वाणहेदुभूदं सुदमहमखिलं पणिवदामि।।*।।

णाणाचारो एसो णाणगुणसमण्णिदो मए वुत्तो।
एत्तो चरणाचारं चरणगुणसमण्णिदं वोच्छं।।२८७।।

पाणिवह मुसावाद अदत्तमेहुणपरिग्गहा विरदी।
एस चरित्ताचारो पंचविहो होदि णादव्वो।।२८८।।

एइंदियादिपाणा पंचविहावज्जभीरुणा सम्मं।
ते खलु ण हिंसिदव्वा मणवचिकायेण सव्वत्थ।।२८९।।

हस्सभयकोहलोहा मणवचिकायेण सव्वकालम्मि।
मोसं ण य भासिज्जो पच्चयघादी हवदि एसो।।२९०।।

गामे णगरे रण्णे थूलं सचित्त बहुसपडिवक्खं।
तिविहेण वज्जिदव्वं अदिण्णगहणं च तण्णिच्चं।।२६१।।

अच्चित्तदेवमाणुस तिरिक्खजादं च मेहुणं चदुधा।
तिविहेण तं ण सेवदि णिच्चंपि मुणीहि पयदमणो।।२६२।।

गामं णयरं रण्णं थूलं सच्चित्त बहुसपडिवक्खं।
अज्झत्थबाहिरत्थं तिविहेण परिग्गहं वज्जे।।२६३।।

साहंति जं महत्थं आचरिदाणि य जं महल्लेहिं।
जं च महल्लाणि तदो महव्वयाइं भवे ताइं।।२६४।।

तेसिं चेव वदाणं रक्खट्ठं रादि भोयण णियत्ति।
अट्ठ य पवयणमादा य भावणाओ य सव्वाओ।।२६५।।

तेसिं पंचण्हं पि य ण्हयाणमावज्जणं च संका वा।
आद विवत्ती अ हवे रादी भत्तप्पसंगेण।।२६६।।

पणिधाणजोगजुत्तो पंचसु समिदीसु तीसु गुत्तीसु।
एस चरित्ताचारो अट्ठविहो होइ णायव्वो।।२६७।।

पणिधाणंपि य दुविहं पसत्थ तह अप्पसत्थं च।
समिदीसु य गुत्तीसु य पसत्थ सेसमप्पसत्थं तु।।२६८।।

सद्दरसरुवगंधे फासे य मणोहरे य इदरे य।
जं रागदोसगमणं पंचविहं होइ पणिधाणं।।२६९।।

णो इंदियपणिधाणं कोहे माणे तहेव मायाए।
लोभे य णोकसाए मणपणिधाणं तु तं वज्जे।।३००।।

णिक्खेवणं च गहणं इरिया भासेसणा य समिदीओ।
पदिठावणियं च तहा उच्चारादीणि पंचविहा।।३०१।।

मग्गुज्जोवुवओगालंबणसुद्धीहिं इरियदो मुणिणो।
सुत्ताणु वीचि भणिया इरियासमिदी पसयणम्मि।।३०२।।

इरिया वह पडिवण्णेणवलोगंतेण होदि गंतव्वं।
पुरदो जुगत्पमाणं सयापमत्तेण संतेण।।३०३।।

सयडं जाण जुग्गं वा रहो वा एवमादिया।
बहुसो जेण गच्छंति सो मग्गो फासुओ हवे।।३०४।।

हत्थी अस्सो खरोढो वा गोमहिसगवेलया।
बहुसो जेण गच्छंति सो मग्गो फासुओ हवे।।३०५।।

इत्थी पुंसा व गच्छंति आदवेण य जं हदं।
सत्थपरिणदो चेव सो मग्गो फासुओ हवे।।३०६।।

सच्चं असच्चमोसं अलियादीदोसवज्जमणवज्जं।
वदमाणस्सणवीची भासासमिदी हवे सुद्धा।।३०७।।

जणवदसम्मदठवणा णामेरुवे पडुच्च सच्चे य।
संभावणववहारे भावे ओपम्मसच्चे य।।३०८।।

जणपदसच्चं जध ओदणादि यवुच्चदि य सव्वभासेण।
बहुजणसम्मदमवि होदि जं तु लोए जहा देवी।।३०६।।

ठवणा ठविदं जह देवदादि णामं च देवदत्तादि।
उक्कडदरोत्ति वण्णे रूवे सेओ जध बलाया।।३१०।।

अण्णं अपेक्खसिद्धं पडुच्चसच्चं जहा हवदि दिग्घं।
ववहारेण य सच्चं रज्जादि कूरो जहा लोए।।३११।।

संभावणा य सच्चं जदि णामेच्छेज्ज एव कुज्जंति।
जदि सक्को इच्छेज्जो जंबूदीवं हि पल्हत्थे।।३१२।।

हिंसादिदोसविजुदं सच्चमगप्पिय विभावदो भावं।
ओवम्मेण दु सच्चं जाणदु पलिदोवमादीया।।३१३।।

तव्विवरीदं मोसं तं उभयं जत्थ सच्चमोसं तं।
तव्विवरीदा भासा असच्चमोसा हवदि दिट्ठा।।३१४।।

आमंतणि आणवणी जायणिसं पुच्छणी य पण्णवणी।
पच्चक्खाणी भासा छट्टी इच्छाणुलोमा य।।३१५।।

संसयवयणी य तहा असच्चमोसा य अट्ठमी भासा।
णवमी अणक्खरगया असच्चमोसा हवदि दिट्ठा।।३१६।।

सावज्जजोग्गवयणं वज्जंतोऽवज्जभीरु गुणकंखी।
सावज्जवज्जवयणं णिच्चं भासेज्ज भासंतो।।३१७।।

उग्गमउप्पादणएसणेहिं पिंडं च उवधि सज्जं च।
सोधंतस य मुणिणो परिसुज्झइ एसणासमिदी।।३१८।।

आदाणे णिक्खेवे पडिलेहिय चक्खुणा पमज्जेज्जो।
दव्वं च दव्वठाणं संजमलद्धीए सो भिक्खू।।३१९।।

सहसाणाभोइयदुप्पमज्जिद अप्पच्चुवेक्खणा दोसा।
परिहरमाणस्स हवे समिदी आदाणणिक्खेवा।।३२०।।

वणदाहकिसिमसिकदे थंडिल्लेणुप्परोध वित्थिण्णे।
अवगदजंतुविवित्ते उच्चारादी विसज्जेज्जो।।३२१।।

उच्चारं पस्सवणं खेलं सिंघाणयादियं दव्वं।
अच्चित्तभूमिदेसे पडिलेहित्ता विसज्जेज्जो।।३२२।।

रादो दु पमज्जित्ता पण्णसमण पेक्खिदम्मि ओगासे।
आसंकविसुद्धीए अवहत्थगफासणं कुज्जा।।३२३।।

जदि तं हवे असुद्धं विदियं तदियं अणुण्णए साहू।
लहुए अणिच्छयारे ण देज्ज साधम्मिए गुरुए।।३२४।।

पदिठवणासमिदी वि य तेणेव कमेण वण्णिदा होदि।
वोसरणिज्जं दव्वं तु थंडिले वोसरंतस्स।।३२५।।

एदाहिं सया जुत्तो समिदीहिं महिं विहरमाणो दु।
हिंसादीहि ण लिप्पइ जीवणिकाआउले साहू।।३२६।।

पउमिणिपत्तं व जहा उदएण ण लिप्पदि सिणेहगुणजुत्तं ।
तह समिदीहिं ण लिप्पदि साहू काएसु इरियंतो । ।३२७ । ।

सरवासेहिं पंडते हिंजह दिढकवचो ण भिज्जदि सरेहिं ।
तह समिदीहिं ण लिप्पइ साहू काएसु इरियंतो । ।३२८ । ।

जत्थेव चरदि बालो परिहारण्हू वि चरदि तत्थेव ।
वज्झदि पुण सो बालो परिहारण्हू विमुच्चदि सो । ।३२९ । ।

तम्हा चेट्ठिदकामो जइया तइया भवाहि तं समिदो ।
समिदो हु अण्ण ण दियदि खवेदि पोराणय कम्मं । ।३३० । ।

मणवचकायपउत्ती भिक्खू सावज्जकज्जसंजुत्ता ।
खिप्पं णिवारयंतो तीहिंदु गुत्तो हवदि एसो । ।३३१ । ।

जा रायादिणियत्ती मणस्स जाणाहि तं मणोगुत्ती ।
अलियादिणियत्ती वा मोणं वा होदि वचिगुत्ती । ।३३२ । ।

कायकिरियाणियत्ती काउस्सग्गो सरीरगेगुत्ती ।
हिंसादिणियत्ती वा सरीरगुत्ती हवदि एसा । ।३३३ । ।

खेत्तस्स वई णयरस्स खाइया अहव होइ पायारो ।
तह पावस्स णिरोहो ताओ गुत्तीउ साहुस्स । ।३३४ । ।

तम्हा तिविहेण तुमं णिच्चं मणवयण कायजोगेहिं ।
होहिसु समाहिदमई णिरंतरं झाणसज्झाए । ।३३५ । ।

एताओ अट्ठपवयणमादाओ णाणदंसणचरित्तं ।
रक्खंति सदा मुणिणो मादा पुत्तं व पयदाओ । ।३३६ । ।

एसणणिक्खेवादाणिरियासमिदी तहा मणोगुत्ती ।
आलोयभोयणं पि य अहिंसाए भावणा पंच । ।३३७ । ।

कोहभयलोहहासपइण्णा अणुवीचिभासणं चेव ।
विदियस्स भावणाओ वदस्स पंचेव ता होंति । ।३३८ । ।

जायण समणुण्णमणा अणण्णभावो वि चत्तपडिसेवी।
साधम्मि ओवकरणस्सणुवीचीसेवणं चावि।।३३६।।

महिलालोयणपुव्वरदिसरणसंसत्तवसधिविकहाहिं।
पणिदरसेहिं य विरदी य भावणा पंच बह्मह्मि।।३४०।।

अपरिग्गहस्स मुणिणो सद्दप्फरिसरसरूवगंधेसु।
रागद्दोसादीणं परिहारो भावणा पंच।।३४१।।

ण करेदि भावणाभाविदो हु पीलं वदाणसव्वेसिं।
साधू पासुत्ता समणागवि किंदाणि वेदंतो।।३४२।।

एदाहि भावणाहिं दु तम्हा भावेहि अप्पमत्तो त्तं।
अच्छिद्दाणि अखंडाणि ते भविस्संति हु वदाणि।।३४३।।

एसो चरणाचारो पंचविधो वण्णिदो समासेण।
एसो य तवाचारं समासदो वण्णयिस्सांमि।।३४४।।

दुविहा य तवाचारो बाहिर अब्भंतरो मुणेयव्वो।
एक्कक्को वि य छद्धा जधाकमं तं परुवेमो।।३४५।।

अणसण अवमोदरियं रसपरिचाओ य वुत्ति परिसंखा।
कायस्स वि परितावो विवित्तसयणासणं छट्ठं।।३४६।।

इत्तिरियं जावजीवं दुविहं पुण अणसणं मुणेयव्वं।
इत्तिरियं साकंखं णिरावकखं हवे विदियं।।३४७।।

छट्ठट्ठमदसमदुवादसेहिं मासद्धमासखमणाणि।
कणगेगावलिआदी तवोविहाणाणि णाहारे।।३४८।।

भत्तपइण्णाइंगिणिपाउवगमणाणि जाणि मरणाणि।
अण्णेवि एवमादी बोधव्वा णिरवकंखाणि।।३४६।।

बत्तीसाकिर कवला पुरिसस्स दु होदि पयदि आहारो।
एगकवलादिहिं तत्तो ऊणियगहणं उमोदरियं।।३५०।।

धम्मावासयजोगे णाणादीये उवग्गहं कुणदि।
ण य इंदयप्पदोसयरी उम्मोदरितवोवुत्ती।।३५१।।

खीरदहिसप्पितेल गुडलवणाणं च जं परिच्चयणं।
तित्त कटु कसायंविल मधुर रसाणं च जं चयणं।।३५२।।

चत्तारि महावियडीय होंति णवणीदमज्जमंसमधू।
कंखापसंगदप्पासंजमकारीओ एदाओ।।३५३।।

आणाभिकंखिणा वज्जभीरुणा तवसमाधि कामेण।
ताओ जावज्जीवं णिव्वुड्ढाओ पुरा चेव।।३५४।।

गोयर पमाणदायगभायणणाणाविहाण जं गहणं।
तह एसणस्स गहणं विविहस्स य वुत्तिपरिसंखा।।३५५।।

ठाणसयणासणेहिं य विविहेहिं य उग्गयेहिं बहुएहिं।
अणुवीची परिताओ कायकिलेसो हवदि एसो।।३५६।।

तेरिक्खिय माणुस्सिय सविगारियदेविगेहि संसत्ते।
वज्जेंति अप्पमत्ता णिलए सयणासणट्ठाणे।।३५७।।

सो णाम बाहिरतवो जेण मणोदुक्कडं ण उट्ठेदि।
जेण य सद्धा जायदि जेण य जोगा ण हीयंते।।३५८।।

एसो दु बाहिरतवो बाहिरजणपायडो परमघोरो।
अब्भंतरजणणादं बोच्छं अब्भंतरं वितवं।।३५९।।

पायच्छित्तं विणयं वेज्जावच्चं तहेव सज्झायं।
झाणं च विउस्सग्गो अब्भंतरओ तवो एसो।।३६०।।

पायच्छित्तं त्ति तवो जेण विसुज्झदि हु पुव्वकयपावं।
पायच्छित्तं पत्तोत्ति तेण वृत्तं दसविहं तु।।३६१।।

आलोयणपडिकमणं उभयविवेगो तहा विउस्सग्गो।
तव छेदो मूलं विय परिहारो चेव सद्दहणा।।३६२।।

पोराणकम्मखवणं खिवणं णिज्जरणसोधणं धुवणं।
पुंछणमुच्छिवणछिदणंत्ति पायच्छित्तस्स णामाइं।।३६३।।

दंसणणाणे विणओ चरित्ततवओवचारिओ विणओ।
पंचविहो खलु विणओ पंचमगइणायगो भणिओ।।३६४।।

उवगूहणादि आ पुव्वुत्ता तह भत्तिआदिआ य गुणा।
संकादिवज्जणं पि य दंसणविणओ समासेण।।३६५।।

जे अत्थपज्जया खलु उवदिट्ठा जिणवरेहिं सुदणाणे।
ते तह रोचेदि णरो दंसणविणओ हवदि एसो।।३६६।।

काले विणए उवहाणे बहुमाणे तहेव णिण्हवणे।
वंजण अत्थतदुभयं विणओ णाणम्हि अट्ठविहो।।३६७।।

णाणं सिक्खदि णाणं गुणेदि णाणं परस्स उवदिसदि।
णाणेण कुणदि णायं णाणविणीदो हवदि एसो।।३६८।।

इंदियकसायपणिहाण पिय गुत्तीओ चेव समिदीओ।
एसो चरित्तविणओ समासदो होइं णायव्वो।।३६९।।

उत्तरगुण उज्जोगो सम्मं अहियासणा य सद्धा य।
आवास याण मुचिदाणं अपरिहाणी यणुस्सेहो।।३७०।।

भत्ती तवोधियम्हि य तवम्हि अहीलणा य सेसाणं।
एसो तवम्हि विणओ जहुत्त चारित्तसाहुस्स।।३७१।।

काइयवाइयमाणसिओत्ति अ तिविहो दु पंचमो विणओ।
सो पुण सव्वो दुविहो पच्चक्खो तह परोक्खो य।।३७२।।

अब्भुट्ठाणं किदिअम्मं णवणं अंजली य मुंडाणं।
पच्चूगच्छणमेत्ते एछिदस्सणुसाहणं चेव।।३७३।।

णीचं ठाणं णीचं गमणं णीचं च आसणं सयणं।
आसणदाणं उवगरणदाणओगासदाणं च।।३७४।।

पडिरुवकायसंफासणदायपडिरूपकालकिरिया य।
पेसणकरणं संथरकरणं उवकरणपडिलिहणं।।३७५।।

इच्चेवमादिओ जो उवयारो कीरदे सरीरेण।
एसो काइयविणओ जहारिहं साहुवग्गस्स।।३७६।।

पूयावयणं हिदभासणं मिदभासणं च मधुरं च।
सुत्ताणुवीचिवयणं अणिट्ठुरमकक्कसं वयणं।।३७७।।

उवसंतवयणमगिहत्थवयणमकिरियमहीलणं वयणं।
एसो वाइयविणओ जहारिहं होदि कादव्वो।।३७८।।

पापविसोत्तिअपरिणामवज्जणं पियहिदे य परिणामो।
णादव्वो संखेवेणेसो माणसिओ विणओ।।३७६।।

इय एसो पच्चक्खो विणओ पारोक्खिओ विजं गुरुणो।
विरहम्मि वि वट्टिज्जदि आणाणिद्देसचरियाए।।३८०।।

अहओपचारिओ खलु विणओ तिविहो समासदो भणिओ।
सत्त चउव्विह दुविहो बोधव्वो आणुपुव्वीए।।।३८१।।

अब्भुट्ठाणं सण्णदि आसणदाणं अणुप्पदणं च।
किदियम्मं पडिरूवं आसणचाओ य अणुव्वजणं।।३८२।।

हिदमिदपरिमिद भासा अणवीचीभासंण च वोधव्वं।
अकुसलमणस्स रोधो कुसलमणपवत्तओ चेव।।३८३।।

रादिणिए उणरादिणिएसु अ अज्जासु चेव गिहिवग्गे।
विणओ जहारिओ सो कायव्वो अप्पमत्तेण।।३८४।।

विणएण विप्पहीणस्स हवदि सिक्खा णिरत्थिया सव्वा।
विणओ सिक्खाए फलं विणयफलं सव्वकल्लाणं।।३८५।।

विणओ मोक्खद्दारं विणयादो संजमो तवो णाणं।
विणएणाराहिज्जदि आइरिओ सव्वसंघो य।।३८६।।

आयारजीदकप्पगुणदीवणा अत्तसोधिणिज्जंजा।
अज्जवमद्दव लाहवभत्तीपल्हादकरणं च।।३८७।।

कित्तीमित्ती माणस्स भंजण गुरुजणे य बहुमाणं।
तित्थयराणं आणा गुणाणुमोदो य विणयगुणा।।३८८।।

आइरियादिसु पंचसु सबालवुड्ढाउले सु गच्छेसु।
वेज्जवच्चं वुत्तं कादव्वं सव्वसत्तीए।।३८६।।

गुणाधिए उवज्झाए तवस्सि सिस्से य दुब्बले।
साहुगण कुले संघे समणुण्णे य चापदि।।३६०।।

सेज्जोग्गासणिसेज्जो तहोव हिपडिलेहणाहि उवग्गहिदे।
आहारोसहवायणविकिंचणंवंदणादीहिं।।३६१।।

अद्धाणतेसावदरायणदीरोधणासिवे ओमे।
वेज्जावच्चं वुत्तं संगहसारक्खणोवेदं।।३६२।।

परियट्टणा य वायण पडिच्छणाणुपेहणा य धम्मकहा।
थुदिमंगल संजुत्तो पंचविहो होइ सज्झाओ।।३६३।।

अट्टं च रूद्दसहियं दोण्णि वि झाणाणि अप्पसत्थाणि।
धम्मं सुक्कं च दुवे पसत्थझाणाणि णेयाणि।।३६४।।

अमणुण्णजोगइट्ठविओगपरीसहणिदाण करणेसु।
अट्टं कसायसहियं झाणं भणिदं समासेण।।३६५।।

तेणिक्क मोससारक्खणेसु तध चेव छव्विहारंभे।
रुद्दं कसायसहिदं झाणं भणियं समासेण।।३६६।।

अवहट्टु अट्टरुद्दे महाभए सुग्गदीयपच्चूहे।
धम्मे वा सुक्के वा होहि समण्णागदमदीओ।।३६७।।

एयग्गेण मणं णिरुंभिऊण धम्मं चउव्विहं झाहि।
आणापायविवायविचओ य संठाणविचयं च।।३६८।।

पंचत्थिकायछज्जीवणिकाये कालदव्वमण्णे य।
आणागेज्झे भावे आणाविचयेण विचिणादि।।३६६।।

कल्लाणपावगाओपाए विचिणादि जिणमदमुविच्च।
विचिणादि वा अपाये जीवाण सुहे य असुहे य।।४००।।

एआणेयभवगयं जीवाणं पुण्णपावकम्मफलं।
उदओदीरणसंकमबंधं च विचिणादि।।४०१।।

उड्ढमहतिरिय लोए विचिणादि सपज्जए ससंठाणे।
एत्थेव अणुगदाओ अणुपेक्खाओ य विचिणादि।।४०२।।

अद्धुवमसरणमेगत्तमण्णसंसारलोगमसुचित्तं।
आसवसंवरणिज्जरधम्मं बोधिं च चिंतिज्जो।।४०३।।

उवसंतो दु पुहुत्तं झायदि झाणं विदक्कवीचारं।
खीणकसाओ झायदि एयत्तविदक्कवीचारं।।४०४।।

सुहुमकिरियं सजोगी झायदि झाणं च तदिय सुक्कं तु।
जं केवली अजोगी झायदि झाणं समुच्छिण्णं।।४०५।।

दुविहो य विउस्सग्गो अब्भंतर बाहिरो मुणेयव्वो।
अब्भंतर कोहादी बाहिर खेत्तादियं दव्वं।।४०६।।

मिच्छत्तवेदरागा तहेव हस्सादिया य छद्धोसा।
चत्तारि यह कसाया चोद्दस अब्भंतरा गंथा।।४०७।।

कोहो माणो माया लोहो रागो तहेव दोसो य।
मिच्छत्त वेदरतिअरदिहास सोगभयदुगुंछाय।।*।।

खेत्तं वप्थुं धणधण्णगदं दुपदचदुप्पदगदं च।
जाणसयणासणाणि य कुप्पे भंडेसु दस होंति।।४०८।।

बारसविधह्मि वि तवे सब्भंतरबाहिरे कुसलदिट्ठे।
णवि अत्थि ण विय होही सज्झायसमं तवो कम्मं।।४०९।।

सज्झायं कुव्वंतो पंचेंदियसंवुडो तिगुत्तो य।
हवदि य एअग्गमणो विणएण समाहिओ भिक्खू।।४१०।।

सिद्धिप्पासादवदंसयस्स करणं चदुव्विहं होदि।
दव्वे खेत्ते काले भावे वि य आणुपुव्वीए।।४११।।

अब्भंतरसोहणओ एसो अब्भंतरो तओ भणिओ।
एत्तो विरियाचारं समासओ वण्णइस्सामि।।४१२।।

बलवीरियसत्तिपरक्कमधिदिबलमिदि पंचधा उत्तं।
तेसिं तु तहाजोग्गं आचरणं वीरियाचारो।।*।।

अणुगूहियबलविरिओ परक्कामदि जो जहुत्तमाउत्तो।
जुंजदि य जहा थाणं विरियाचारोत्ति णादव्वो।।४१३।।

पडिसेवापडि सुणणं संवासो चेव अणुमदी तिविहा।
उद्दिट्ठं जदि भुंजदि भोगदि य होदि पडिसेवा।।४१४।।

उद्दिट्ठं जदि विचरदि पुव्वं पच्छा व होदि पडिसुणणा।
सावज्जसंकिलिट्ठो ममत्ति भावो दु संवासो।।४१५।।

पुढविदगतेउवाऊवणप्फदी संजमो य बोधव्वो।
विगतिगचदुपचेंदिय अजीवकाये सुसंजमणं।।४१६।।

अप्पडिलेहं दुप्पडिलेहमुवेखु अवहट्टसंजमो चेव।
मणवयणकायसंजमसत्तरसविहो दु णादव्वो।।४१७।।

णियदु व मरदु जीवो अयदाचारस्स णिच्छिदा हिंसा।
पयदस्स णत्थि बंधो हिंसामित्तेण समिदस्स।।*।।

अपयत्ता वा चरिया सयणासणठाणचंकमादीसु।
समणस्स सव्वकालं हिंसा सांतत्तिया त्ति मता।।*।।

अयदाचारो समणो छसु वि कायेसु बंधगोत्ति मदो।
चरदि यदं यदि णिच्चं कमलं व जले निरुवलेओ।।*।।

असिअसणि परुसवणदहवग्घग्गकिण्ण सप्पसरिसस्स।
मा देहि ठाणवासं दुग्गदिमग्गं च रोचिस्स।।*।।

पचंरसपंचवण्णा दो गंधे अट्ठ फास सत्त सरा
मणसा चोद्दसजीवा इन्दियपाणा य संजमो णेओ।।४१८।।

दंसणणाणचरित्ते तवविरियाचारणिग्गहसमत्थो।
अत्ताणं जो समणो गच्छदि सिद्धिं धुदकिलेसो।।४१९।।

तिरदणपुरूगुणसहिदे अरहंते विदिदसयल सब्भावे।
पणमिय सिरिसा वोच्छं समासदो पिण्डसुद्धी दु।।४२०।।

उग्गम उप्पादण एसणं च संजोजणं पमाणं च।
इंगाल धूम कारण अट्ठविहा पिण्डसुद्धी दु।।४२१।।

आधाकम्मुद्देसिय य अज्झोवज्झेय पूदिमिस्से य।
ठविदे बलि पाहुडिदे पादुक्कारे य कीदे य।।४२२।।

पामिच्छे परियट्टे अभिहडमुब्भिण्ण मालाआरोहे।
अच्छिज्जे अणिसट्ठे उग्गमदोसादु सोलसिमे।।४२३।।

छज्जीवणिकायाणं विराहणोद्दावणादिणिप्पण्णं।
आधाकम्मं णेयं सयपरकदमादसंपण्णं।।४२४।।

देवदपासंडट्ठं किविणट्ठं चावि जं तु उद्दिसियं।
कदमण्णसमुद्देसं च चदुव्विहं वा समासेण।।४२५।।

जावदियं उद्देसो पासंडोत्ति य हवे समुद्देसो।
समणोत्ति य आदेसो णिग्गंथोत्ति य हवे समादेसो।।४२६।।

जलतुंदलपक्खेवो दाणट्ठं संजदाण सयपयणे।
अज्झोवज्झं णेयं अहवा पागं तु जाव रोहो वा।।४२७।।

अप्पासुएण मिस्सं पासुयदव्वं तू पूदिकम्मं तं।
चुल्ली उक्खलि दव्वी भयणगंधत्ति पंचविहं।।४२८।।

पासंडेहि य सद्धं सागारेहिं य जदण्णमुद्दिसियं।
दादुमिदि संजदाणं सिद्धं मिस्सं वियाणाहि।।४२६।।

पागादु भायणाओ अण्णह्मि य भायणह्मि पक्खविय।
सघरे व परघरे वा णिहिदं ठविदं वियाणहि।।४३०।।

जक्खयणागादीणं बलिसेसं सबलित्ति पण्णत्तं।
संजदआगमणट्ठं बलियकम्मं वा बलिं जाणे।।४३१।।

पाहुडिहं पुण दुविहं बादर सुहमं च दुविहमेक्केक्कं।
ओकस्सणमुक्कस्सण महाकालो वट्टणा वड्ढी।।४३२।।

दिवसे पक्खे मासे वास परत्तीय बादरं दुविहं।
पुव्वपरमज्झवेलं परियत्तं दुविह सुहुमं च।।४३३।।

पादुक्कारो दुविहो संकमणपयासणा य बोधव्वो।
भायणभोयणदीणं मंडवविरलादियं कमसो।।४३४।।

कीदयडं पुण दुविहं दव्वं भावं च सगपरं दुविहं।
सच्चित्तादो दव्वं विज्जामंतादि भावं च।।४३५।।

डहरिय रिणं तु भणियं पामिच्छं ओदणादि अण्णदरं।
तं पुण दुविहं भणिदं सवड्ढियमवड्ढियं चावि।।४३६।।

वीहीकूरादीहिं य सालीकूरादियं तु जं गहिदं।
दातुमिति संजदाणं परियट्टं होदि णायव्वं।।४३७।।

देसत्ति य सव्वत्ति य दुविहं पुण अभिहडं वियाणाहि।
आचिण्णमणाचिण्णं देसाविहडं हवे दुविहं।।४३८।।

उज्जु तिहिं सत्तहिं वा घरेहिं जदि आगदं दु आचिण्णं।
परदो वा तेहिं भवे तव्विवरीदं अणाचिण्णं।।४३९।।

सव्वाभिहडं चदुधा सयपरगामे सदेसपरदेसे।
पुव्वपरपाडणयडं पढमं सेसं पि णादव्वं।।४४०।।

पिहिदं लंछिदियं वा ओसहघिदसक्करादि जं दव्वं।
उब्भिण्णिऊण देयं उब्भिण्णं होदि णादव्वं।।४४१।।

णिस्सेणीकट्ठादिहि णिहिदं पूयादियं तु घेत्तूणं।
मालारोहं किच्चा देयं मालारोहणं णाम।।४४२।।

रायाचोरादीहिं य संजदभिक्खासमं तु दट्ठुण।
बीहेदूण णिजुज्जं अच्छिज्जं होदि णादव्वं।।४४३।।

अणिसट्टं पुण दुविहं इस्सरमहणिस्सरं च दुवियप्पं।
पढमिस्सरसारक्खं वत्तावत्तं च संघाडं।।४४४।।

धादीदूदणिमित्ते आजीवं वणिवग्गे य तेगिंछे।
कोधी माणी मायी लोही य हवंति दस एदे।।४४५।।

पुव्वी पच्छा संथुदि विज्जामंते य चुण्णजोगे य।
उप्पादणा य दोसो सोलसमो मूलकम्मे य।।४४६।।

मज्जणमंडणधादी खेल्लावणखीर अंबधादी य।
पंचविधधादि कम्मेणुप्पादो धादिदोसो दु।।४४७।।

जलथल आयासगदं सयपरगामे सदेस परदेसे।
संबंधिवयणणयणं दूदीदोषो हवदि एसो।।४४८।।

वंजणमंगं च सरं णिण्ण भूमं च अंतरिक्खं च।
लक्खण सुविणं च तहा अट्ठविहं होइ णेमित्तं।।४४६।।

जादी कुलं च सिप्पं तवकम्मं ईसरत्त आजीवं।
तेहिं पुण उप्पादो आजीवदोसो हवदि एसो।।४५०।।

साणकिविणतिधिमांहणपासंडियसवणकागदाणादी।
पुण्णं णवेति पुट्ठे पुण्णेत्ति यवणीवयं वयणं।।४५१।।

कोमारतणुतिगिंछारसायणविसभूदखारतंतं च।
सालंकियंच सल्लं तिगिछदोसो दु अट्ठविहो।।४५२।।

कोधेण य माणेण य मायालोभेण चावि उप्पादो।
उप्पादणा य दोसो चदुव्विहो होदि णायव्वो।।४५३।।

कोधो य हत्थिकप्पे माणो वेणायडम्मि णयरम्मि।
माया वाणारसिए लोहो पुण रासियाणम्मि।।४५४।।

दायगपुरदो कित्ती तं दाणवदी जसोधरो वेत्ति।
पुव्वीसं थुदिदोसो विस्सरिदे बोधणं चावि।।४५५।।

पच्छा संथुदिदोसो दाणं गहिदूण तं पुणो कित्तिं।
विक्खादो दाणवदी तुज्झ जसो विस्सुदो वेंति।।४५६।।

विज्जा साधितसिद्धा तिस्से आसापदाणकरणेहिं।
तस्से माहप्पेण य विज्जादोसो दु उप्पादो।।४५७।।

सिद्धे पढिदे मंते तस्य य आसापदाणकरणेण।
तस्स य माहप्पेण य उप्पादो मंतदोसो दु।।४५८।।

आहारदायगाणं विज्जामंतेहिं देवदाणं तु।
आहूय साधिदव्वा विज्जामंतो हवे दोसो।।४५९।।

णेत्तस्संजणचुण्णं भूसणचुण्णं च गत्तसोभयरं।
चुण्णं तेणुप्पादो चुण्णयदोसो हवदि एसो।।४६०।।

अवसाणं वसियरणं संजोजयणं च विप्पजुत्ताणं।
भणिदं तु मूलकम्मं एदे उप्पादणा दोसा।।४६१।।

सकिदमक्खिदणिक्खिद पिहिदं संववहरणदायगुम्मिस्से।
अपरिणदलित्तछोडिद एषण दोसाइं दस एदे।।४६२।।

असणं च पाणयं वा खादियमध सादियं च अज्झप्पे।
कप्पियमकप्पियत्ति य संदिद्धं सकियं जाणे।।४६३।।

ससिणिद्धेण य देयं हत्थेण य भायणेण दव्वीए।
एसो मक्खिददोसो परिहरदव्वो सदा मुणिणा।।४६४।।

सच्चित्त पुढविआऊ तेऊ हरिदं च बीयतसजीवा।
जं तेसिमुवरि ठविदं णिक्खित्तं होदि छब्भेयं।।४६५।।

सच्चित्तेण व पिहिदं अथवा अच्चित्तगुरुगपिहिदं च।
तं छंडिय जं पेयं पिहिदं त होदि बोधव्वो।।४६६।।

संववहरणं किच्चा पदादुमिदि चेलभायणादीणं।
असमक्खिय जं देयं संववहरणो हवदि दोसो।।४६७।।

सूदी सुंडी रोगी मदयणपुंसय पिसायणग्गो य।
उच्चारपडिदवंतरूहिरवेसी समणी अंगमक्खीया।।४६८।।

अतिबाला अतिवुड्ढा घासत्ती गब्भिणी य अंधलिया।
अंतरिदा व णिसण्णा उच्चत्था अहव णीच्चत्था।।४६९।।

फूयणपज्जलणं वा सारणपच्छादणं च विज्झवणं।
किच्चा तहग्गिकज्जं णिव्वादं घट्टणं चावि।।४७०।।

लेवणमज्जणकम्मं पियमाणं दारयं च णिक्खिविय।
एवंविहादिया पुण दाणं जदि दिंति दायगा दोसा।।४७१।।

पुढवी आऊ य तहा हरिदा वीया तसा य सज्जीवा।
पंचेहि तेहिं मिस्सं आहारं होदि उम्मिस्सं।।४७२।।

तिलतंडुलउसणोदयं चणोदयं तुसोदयं अविद्धत्थं।
अण्णं पि व्रहाविहं वा अपरिणदं णेव गेण्हिज्जो।।४७३।।

गेरुयहरिदालेण व सेडीय मणोसिलामपिट्ठेण।
सपबालोदणलेबेण व देयं करभायणे लित्तं।।४७४।।

बहुपरिसाडणमुज्झिअ आहारो परिगलंत दिज्जंतं।
छंडिय भुजणमहवा छंडियदोसो हवे णेओ।।४७५।।

संजोयणा य दोसो जो संजोएदि भत्तपाणं तु।
अदिमत्तो आहारो पमाणदोसो हवदि एसो।।४७६।।

तं होदि सयंगालं जं आहारेदि मुच्छिदो संतो।
तं पुण होदि सधूमं जं आहारेदि णिदिंदो।।४७७।।

छहिं कारणेहिं असणं आहारंतो वि आयरदि धम्मं।
छहिं चेव कारणेहिं दु णिज्जुहंतो वि आचरदि।।४७८।।

वेयणवेज्जावच्चे किरियाठाणे य संजमट्ठाए।
तध पाणधम्म चिंता कुज्जा एदेहिं आहारं।।४७६।।

आदंके उवसग्गे तिरक्खणे बंभचेरगुत्तीओ।
पाणिदयातवहेऊ सरीरपरिहार वोच्छेदो।।४८०।।

ण बलाउसाउअट्ठं ण सरीरस्सुवचयट्ठतेजट्ठं।
णाणट्ठसंजमट्ठं झाणट्ठं चेव भुंजेज्जो।।४८१।।

णवकोडीपरिसुद्धं असणं बादालदोसपरिहीणं।
संजोजणाए हीणं पमाणसहियं विहिसुदिण्णं।।४८२।।

विगदिंगालविधूमं छक्कारणसंजुदं कमविसुद्धं।
जत्तासाधणमेत्तं चोद्दसमलवज्जिदं भुंजे।।४८३।।

णहरोमजंतु अट्ठी कणकुंडयपूयचम्मरुहिर मंसाणि।
बीयफलकंदमूलां छिण्णाणि मला चद्दसाहोंति।।४८४।।

पगदा असओ जह्मा तह्मादो दव्वदोत्ति तं दव्वं।
फासुगमिदि सिद्धेवि य अप्पट्ठकदं असुद्धं तु।।४८५।।

जह मच्छयाण पयदे मदणुदयेमच्छया हि मज्जंति।
णहि मंडूगा एवं परमट्ठकदे जदि विसुद्धो।।४८६।।

आधाकम्मपरिणदो फासुगदव्वे वि बंधओ भणिओ।
सुद्धं गवेसमाणो आधकम्मे वि सो सुद्धो।।४८७।।

सव्वो वि पिंडदोसो दव्वे भावे समासदो दुविहो।
दव्वगदो पुण दव्वे भावगदो अप्पपरिणामो।।४८८।।

सव्वेसणं च विद्देसणं च सुद्धासणं च ते कमसो।
एसणसमिदिविसुद्धं णिव्वियडमवंजणं जाणे।।४८६।।

दव्वं खेत्तं कालं भावं बलवीरियं च णाऊणं।
कुज्जा एषणसमिदिं जहोवदिट्ठं जिणमदम्मि।।४६०।।

अद्धमसणस्स सव्विंजणस्स उदरस्स तदिय मुदयेण।
वाउसंचरणट्ठं चउत्थमवसेसये भिक्खू।।४६१।।

सूरुदयत्थमणादो णालतीयवज्जिदे असणकाले।
तिगदुगएगमुहुत्ते जहण्णमज्झिम्ममुक्कस्से।।४६२।।

एकम्हि दोण्णि तिण्णि य मुहुत्तकालो दु उत्तमादीगो।
पुरदो य पच्छिमेण य णालीतिगवज्जिदो चारे।।*।।

भिक्खाचरियाए पुण गुत्तीगुणसीलसंजमादीणं।
रक्खंतो चरदि मुणी णिव्वेदतिगं च पेच्छंतो।।४६३।।

आणा अणवत्था वि य मिच्छत्ताराहणादणासो य।
संजमविराहणा वि य चरियाए परिहरेदव्वा।।४६४।।

कागा मेज्झा छद्दी रोहण रूहिरं च अस्सुवादं च
जण्हूहिह्ममरिसं जक्कूवरि वदिक्कमो चेव।।४६५।।

णामि अधोणिग्गमणं पच्च क्खिवयसेवणा य जंतुवहो।
कागादिपिंडहरणं पाणीदो पिंडपडणं च।।४६६।।

पाणीए जंतुवहो मंसाददिंसणे य उवसग्गे।
पादंतरम्मि जीवो संपादोभायणाणं च।।४६७।।

उच्चारं पस्सवणं अभोजगिह पवेसणं तहा पडणं।
उववेसणं सदंसं भूमीसंफास णिट्ठुवणं।।४६८।।

उदरक्किमिणिग्गमणं अदत्त गहणं पहारगामडा होय।
पादेण णिंचि गहणं करेण वा जं च भूमिए।।४६६।।

एदे अण्णे बहुजा कारण भूदा अभीय णस्सेह।
बीहण लोगदुगुंछ ण संजम णिव्वेदणट्ठंच।।५००।।

जेणेह पिंडसुद्धी उवदिट्ठा जेहिं धारिदा सम्मं।
ते वीरसाधुवग्गा तिरदणसुद्धिं मम दिसंतु।।५०१।।

सगबोधदीवणिज्जिदभुवणत्तयरद्धमंदमोहतमो।
णमिदसुरासुरसंघो जयदु जिणिंदो महावीरो।।*।।

काऊण णमोक्कारं अरहंताणं तहेव सिद्धाणं।
आइरियउवज्झाए लोगम्मि य सव्वसाहूणं।।५०२।।

आवासयणिज्जुत्ती वोच्छामि जहाकमं समासेण।
आयरिपरंपराए जहागदा आणुपुव्वीए।।५०३।।

रागद्दोसकसाए य इंदियाणि य पंच य।
परिसहे उवसग्गे णासयंतो णमोरिहा।।५०४।।

अरिहंति णमोक्कारं अरिहा पूजा सुरुत्तमा लोए।
रजहंता अरिहंति य अरहंता तेण उच्चदे।।५०५।।

अरहंतणमोक्कारं भावेण य जो करेदि पयदमदी।
सो सव्वदुक्खमोक्खं पावदि अचिरेण कालेण।।५०६।।

दीहकालमयं जंतू उसिदो अट्ठकम्महिं।
सिदे धत्ते णिधत्ते य सिद्धत्तमुववच्छइ।।५०७।।

आवेसणी सरीरे इंदियभंडो मणो व आगरिओ।
धमिदव्वजीवलोहो बावीसपरससिहग्गीहिं।।५०८।।

सिद्धाणं णमोक्कारं भावेण य जो करेदि पयदमदी।
सो सव्वदुक्खमोक्खं पावदि अचिरेण कालेण।।*।।

सदा आयरविद्दण्हू सदा आयरियं चरे।
आयारमायारवंतो आयरिओ तेण उच्चदे।।५०९।।

जो रुवगंधसद्दे य भोगे वज्जदि णिच्चसा।
तस्स सामायियं ठादि इदि केवलिसासणे।।५३०।।

जो दु अट्ठं च रुद्दं च झाणं वज्जदि णिच्चसा।
तस्स सामायियं ठादि इदि केवलिसासणे।।*।।

जो दु धम्मं च सुक्कं च झाणे झायदि णिच्चसा।
तस्स सामायियं ठादि इदि केवलिसासणे।।५३१।।

सावज्जजोगपरिवज्जणट्ठं सामाइयं केवलिहिं पसत्थं।
गिहत्थधम्मोऽपरमत्ति णिच्चा कुज्जा बुधो अप्पहियं पसत्थं।।५३२।

सामाइयम्मि दु कदे समणो इर सावओ हवदि जम्हा।
एदेण कारणेण दु बहुसो सामाइयं कुज्जा।।५३३।।

सामाइए कदे सावएण विद्धो मओ अरण्णम्मि।
सो य मओ उद्धादो ण यसो सामाइयं फिडिओ।।५३४।।

बावीसं तित्थयरा सामायिय संजमं अवदिसति।
छेदुवठावणियं पुण भयवं उसहो यवीरो य।।५३५।।

आचक्खिदुं विभजिदुं विण्णादुं चावि सुहदरं होदि।
एदेण कारणेण दु महव्वदा पंच पण्णत्ता।।५३६।।

आदीए दुव्विसोधण णिहणे तह सुट्ठदुरणुपाले य।
पुरिमा य पच्छिमा वि हु कप्पाकप्पं ण जाणंति।।५३७।।

अज्जवजडा अणज्जवजडा च उसहवीर तिथ्य जा मणुजा।
तेसिं सुबोधमुत्तं छेदोवट्ठावणं बुत्तं।।*।।

पडिलिहियअंजलिकरो उवजुत्तो उट्ठिऊण एयमणो।
अव्वाखित्तो वुत्तो करेदि सामाइयं भिक्खू।।५३८।।

सामाइयणिज्जुत्ती एसा कहिया मया समासेण।
चउवीसयणिज्जुत्ती एतो उड्ढं पवक्खामि।।५३९।।

णामट्ठवणा दव्वे खेत्ते काले य होदि भावे य।
एसो थवह्मि णेओ णिक्खेवो छव्विहो होई।।५४०।।

लोगुज्जोए धम्मतित्थयरे जिणवरे य अरहंते।
कित्तण केवलिमेव य उत्तमबोहिं मम दिसंतु।।५४१।।

लोयदि आलोयदि पल्लोयदि सल्लोयदित्ति एगत्थो।
जह्मा जिणेहिं कसिणं तेणेसो वुच्चदे लोओ।।५४२।।

णमट्ठवणं दव्वं खेत्तं चिण्हं कसायलोओ य।
भवलोगो भावलोगो पज्जयलोगो च णादव्वो।।५४३।।

णामाणि जाणि काणि चि सुहासुहाणि लोगह्मि।
णामलोगं वियाणाहि अणंतजिणदेसिदं।।५४४।।

ठविदं ठाविदं चावि जं किं वि अत्थि लोगह्मि।
ठवणालोगं वियाणाहि अणंतजिणदेसिदं।।५४५।।

जीवाजीवं रूवारूवं सपदेसमप्पदेसं च।
दव्वलोगं वियाणाहि अणंतजिणदेसिदं।।५४६।।

परियट्टणदो ठिदिअविसेसेण विसेसिदं दव्वं।
कालोत्ति तं हि भणिदं तेहि असंखेज्जकालाणु।।*।।

परिणाम जीवमुत्तं सपदेसं एक्कखेत्त किरिओ य।
णिच्चं कारण कत्ता सव्वगदिदरह्मि अपवेसो।।५४७।।

आयासं सपदेशं उड्ढमहोतिरिय लोगं च।
खेत्तलोगं वियाणाहि अणंतजिणदेसिदं।।५४८।।

जं दिट्ठं संठाणं यव्वाण गुणाण पज्जयाणं च।
चिण्हलोगं वियाणाहि अणंतजिणदेसिदं।।५४९।।

कोधो माणो माया लोभो उदिण्णा जस्य जंतुणो।
कसायलोगं वियाणाहि अणंतजिणदेसिदं।।५५०।।

णेरइयदेवमाणुसतिरिक्खजोणिं गदा य जे सत्ता।
णिययभवे वट्टंता भवलोगं तं विजाणाहि।।५५१।।

तिव्वो रागो य दोसो य उदिण्णा जस्य जंतुणो।
भावलोगं वियाणाहि अणंतजिणदेसिदं।।५५२।।

दव्वगुणखेत्तपज्जय भवाणुभावो य भावपरिणामो।
जाण चउव्विमेयं पज्जयलोगं समासेण।।५५३।।

उज्जोवो खलु दुविहो णादव्वो दव्वभावसंजुत्तो।
दव्वुज्जोवो अग्गी चंदो सूरो मणी चेव।।५५४।।

भावुज्जोवो णाणं जह भणियं सव्वभावदरिसीहिं।
तस्स दुप ओगकरणे भावुज्जोवो त्ति णादव्वो।।५५५।।

लोयालोयपयासं अक्खलियं णिम्मलं असंदिद्धं।
जं णाणं अरहंता भावुज्जोवो त्ति वुच्चंति।।*।।

पंचविहो खलु भणिओ भावुज्जोवो य जिणवरिंदेहिं।
आभिणि बोहिय सुद ओहिणाणमणकेवलं ओय।।५५६।।

दव्वुज्जोवो जोवो पडिहण्णदि परिमिदम्मि खेत्तम्मि।
भावुज्जोवो जोवो लोगालोगं पयासेदि।।५५७।।

लोगस्सुज्जोवयरा दव्वुज्जोएण ण हु जिणा होंति।
भावुज्जोवयरा पुण होंति जिणवरा चउव्वीसा।।५५८।।

तिविहो य होदि धम्मो सुदधम्मो अत्थिकायधम्मो य।
तदिओ चरित्तधम्मो सुदधम्मो एत्थ पुण तित्थं।।५५९।।

दुविहं च होइ तित्थं णादव्वं दव्वभावसंजुत्तं।
एदेसिं दोण्हंपि य पत्तेय परूवणा होदि।।५६०।।

दाहोपसमणतण्हाछेदो मलपंकपवहणं चेव।
तिहिं कारणेहिं जुत्तो तह्मा तं दव्वदो तित्थं।।५६१।।

दंसणाणचरित्ते णिज्जुत्ता जिणवरा दु सव्वेवि।
तिहिं कारणेहिं जुत्ता तह्मा ते भावदो तित्थं।।५६२।।

तण्हावदाह छेदणकम्ममल विणासणसमत्थं।
तिहिं कारणेहिं जुत्तं सुत्तं पुण भावदो तित्थं।।*।।

जिदकोहमाणमाया जिदलोहा तेण ते जिणा होंति।
हंता अरिं च जम्मं अरिहंता तेण वुच्चंति।।५६३।।

अरिहंति वंदणणमंसणाणि अरिहंति पूयसक्कारं।
अरिहंति सिद्धिगमणं अरहंता तेण उच्चंति।।५६४।।

किह तेण कित्तणिज्जा सदेव मणुया सुरेहिं लोगेहिं।
दंसणणाणचरित्ते तव विणओ जेहिं पण्णत्तो।।५६५।।

सव्वं केवलिकप्पं लोगं जाणंति तह य पस्संति।
केवलणाणचरित्ता तह्मा ते केवली होंति।।५६६।।

मिच्छत्त वेदणीयं णाणावरणं चरित्तमोह च।
तिविहा तमाहु मुक्का तह्मा ते उत्तमा होंति।।५६७।।

आरोग्ग बोहिलाहं दिंतु समाहिं च मे जिणवरिंदा।
किं ण हु णिदाणमेयं णवरि विभासेत्थ कायव्वा।।५६८।।

भासा असच्चमोसा णवरि हु भत्तीय भासिदा एसा।
ण हु खीण राग दोसा दिंति समाहिं च बोहिं च।।५६९।।

जं तेहिं दु दादव्वं तं दिण्णं जिणवरेहिं सव्वेहिं।
दंसणणाणचरित्तस्स एस तिविहस्स उवदेसो।।५७०।।

भत्तीए जिणवराणं खीयदि जं पुव्वसंचियं कम्मं।
आयरिय पसाएण य विज्जा मंता य सिज्झंति।।५७१।।

अरहंतेसु य राओ ववगद रागेसु दोसरहिएसु।
धम्मह्मि य जो राओ सुदे य जो बारसविधह्मि।।५७२।।

आयरियेसु य राओ समणेसु य बहुसुदे चरित्तड्ढे।
एसो पसत्थराओ हवदि सरागेसु सव्वेसु।।५७३।।

तेसिं अहिमुहदाए अत्था सिज्झंति तह य भत्तीए।
तो भत्तिरागपुव्वं वुच्चइ एदं णहु णिदाणं।।५७४।।

चउरंगुलंतरपादो पडिलेहिय अंजली कयपसत्थो।
अव्वाखित्तो वुत्तो कुणदि य चउवीसत्थयं भिक्खू।।५७५।।

चउवीसयणिज्जुत्ती एसा कहिया मए समासेण।
वंदणणिज्जुत्ती पुण एत्तो उड्ढं पवक्खामि।।५७६।।

णाम ट्ठवणा दव्वे खेत्ते काले य होदि भावे य।
एसो खलु वंदणगे णिक्खेवो छव्विहो भणिंदो।।५७७।।

किदियम्मं चिदियम्मं पूयाकम्मं च विणयकम्मं च।
कादव्वं केण कस्स व कधेव कहिं व कदिखुत्तो।।५७८।।

कदि ओणदं कदि सिरं कदिए आवत्तगेहिं परिसुद्धं।
कदिदोसविप्पमुक्कं किदियम्मं होदि कादव्वं।।५७९।।

जह्मा विणेदि कम्मं अट्ठविहं चाउरंग मोक्खो य।
तह्मा वदंति विदुसो विण ओत्ति विलीणसंसारा।।५८०।।

पुव्वं चेव य विणओ परुविदो जिणवरेहिं सव्वेहिं।
सव्वासु कम्मभूमिसु णिच्चं सो मोक्खमग्गम्मि।।५८१।।

लोगाणुवित्तिविण ओ अत्थणिमित्ते य कामतंते य।
भयविणओ य चउत्थो पंचमओ मोक्खविणओ य।।५८२।।

अब्भुट्ठाणं अंजलि आसणदाणं च अतिहिपूजा य।
लोगाणुवित्तिविंणओ देवदपूया सविहवेण।।५८३।।

भासाणुवत्ति छंदाणुवत्तणं दसकालदाणं च।
लोकाणुवत्ति विणओ अंजलिकरणं च अत्थकदे।।५८४।।

एमेव काम तंते भयविणओ चेव आणुपुव्वीए।
पंचमओ खलु विणओ परुवणा तस्सिमा होदि।।५८५।।

दंसणणाणचरित्ते तवविणओ ओवचारिओ चेव।
मोक्खह्मि एस विणओ पंचविहो होदि णायव्वो।।५८६।।

जे दव्वपज्जया खलु उवदिट्ठा जिणवरेहिं सुदणाणे।
ते तह सद्दहदि णरो दंसण विणओत्ति णादव्वो।।५८७।।

णाणी गच्छदि णाणी वंचदि णाणी णवं च णादियदि।
णाणेण कुणदि चरणं तह्मा णाणे हवे विणओ।।५८८।।

पोराणयकम्मरयं चरिया रित्तं करेदि जदमाणो।
णवकम्मं ण य बंधदि चरित्तविणओ त्ति णादव्वो।।५८६।।

अवणयदि तवेण तमं उवणयदि मोक्खमग्गमप्पाणं।
तवविणयणियमिदमदी सो तवविंणओ त्ति णादव्वो।।५६०।।

तह्मा सव्वपयत्तेण विणयत्तं मा कदाइ छंडिज्जो।
अप्पसुदो वि य पुरिसो खवेदि कम्माणि विणएण।।५६१।।

पंचमहव्वयगुत्तो संविग्गोऽणालसो अमाणी य।
किदियम्म णिज्जरट्ठी कुणइ सदा ऊणरादिणिओ।।५६२।।

आइरियउवज्झायाणं पवत्तयत्थेरगणधरादीणं।
एदेसिं किदियम्मं कादव्वं णिज्जरट्ठाए।।५६३।।

णो वंदिज्ज अविरदं मादापिदुगुरुणरिंद अण्णतित्थं व।
देसविरद देवं वा विरदो पासत्थपणगं वा।।५६४।।

पासत्थो य कुसीलो संसत्तो सण्ण मिगचरित्तो य।
दंसणणाणचरित्ते अणिउता मंदसंवेगा।।५६५।।

वसहीसु य पडिवद्धो अहवा उवयरणकारओ भणिओ।
पासत्थो समणाणं पासत्थो णाम सो होई।।*।।

कोहादि कलुसिदप्पा वयगुण सीलेहि चावि परिहीणो।
संघस्स अयसकारी कुसील समणो त्ति णायव्वो।।*।।

वेज्जेण व मंतेण व जोइसकुसलत्तणेण पडिवद्धो।
राजादी सेवंतो संसत्तो णाम सो होई।।*।।

जिणवयण मयाणंतो मुक्कधुरो णाणचरण परिभट्ठो।
करणालसो भवित्ता सेवदि ओसण्णसेवाओ।।*।।

आयरियकुलं मुच्चा विहरइ एगागिणो य जो समणो।
जिणवयणं णिंदंतो सच्छंदो हाइ मिगचारी।।*।।

दंसणणाणचरित्ते तवविणए णिच्चकाल पासत्था।
एदे अवंदणिज्जा छिद्दप्पेही गुणधराणं।।५६६।।

समणं वंदिज्ज मेघावी संजदं सुसमाहिदं।
पंचमहव्वदकलिदं असंजमदुगंछयं धीरं।।५६७।।

दंसणणाणचरित्ते तव विणए णिच्चकालमुवजुत्ता।
एदे खु वंदणिज्जा जे गुणवादी गुणधराणं।।५६८।।

वसदिविहारे काइयसण्णा भिक्खाविहारभूमीदो।
चेदियपुरगामादो गुरुम्हि एते समुट्ठंति।।*।।

असमाणेहि गुरुम्हि य वसभचउक्के वि एस चेव वदी।
तेसु असमाणेसु य पुज्जो जो सव्वचेट्ठो सो।।*।।

वाखित्तपराहुत्तं तु पमत्तं मा कदाइ वंदिज्जो।
आहारं च करंतो णोहारं वा जदि करेदि।।५६६।।

आसणे आसणत्थं च उवसतं उवट्ठिदं।
अणुविण्णय मेधावी किदियम्मं पउंजदे।।६००।।

आलोयणाय करणे पडिपुच्छा पूयणे य सज्झाए।
अवराहे य गुरूणं वंदणमेदेसु ठाणेसु।।६०१।।

चत्तारि पडिक्कमणे किदियम्मा तिण्णि होंति सज्झाए।
पुव्वण्हे अवरण्हे किदियम्मा चोद्दसा होंति।।६०२।।

दोणंद तु जधाजादं बारसावत्तमेव य।
चदुस्सिरं तिसुद्धं च किदियम्मं पउंजदे।।६०३।।

तिविहं तियरणसुद्धं मयरहियं दुविहठाणपुणरुत्तं।
विणएण कमविसुद्धं किदियम्मं होदि कायव्वं।।६०४।।

अणाठिदं च थद्धं च पविद्धं परिपीडिदं।
दोलाइयमंकुसियं तहा कच्छभरिंगियं।।६०५।।

मच्छुव्वत्तं मणोदुट्ठं वेदिआबद्धमेव य।
भयसा चेव भयत्तं इड्ढिगारवगारवं।।६०६।।

तेणिदं पडिणिदं चावि पदुट्ठं तज्जिदं तधा।
सद्दं च हीलिदं चावि तह तिवलिदकुंचिदं।।६०७।।

दिट्ठमदिट्ठं चावि य संघस्स करमोयणं।
आलद्धमणालद्धं च हीणमुत्तरचूलियं।।६०८।।

मूगं च ढ्ढुरं चावि चुलुलिद मपच्छिमं।
बत्तीसदोसविसुद्धं किदियम्मं पंउजदे।।६०९।।

किदियम्मंपि करंतो ण होदि किदियम्मणिज्जराभागी।
वत्तीसाणाण्णदरं साहू ठाणं विराहंतो।।६१०।।

हत्थंतरेण बाधे संफासपमज्जणं पउज्जंतो।
जाचेंतो वंदणयं इच्छाकारं कुणइ भिक्खू।।६११।।

तेण च पडिच्छिदव्वं गारवरहिएण सुद्धभावेण।
किदियम्मकारकस्सवि संवेगं संजणंतेण।।६१२।।

वंदणणिज्जुत्ती पुण एसा कहिया मए समासेण।
पडिकमणणिजुत्ती पुण एत्तो उड्ढं पवक्खामि।।६१३।।

णामट्ठवणा दव्वे खेत्ते काले तहेव भावे य।
एसो पडिक्कमणगे णिक्खेवो छव्विहो णेओ।।६१४।।

पडिकमणं देवसियं रादिय इरिपापधं च बोधव्वं।
पक्खिय चादुम्मासिय संवच्छरमुत्तमट्ठं च।।६१५।।

पडिकमओ पडिकमणं पडिकमिदव्वं च होदि णादव्वं।
एदेसिं पत्तेयं परूवणा होदि तिण्हंपि।।६१६।।

जीवो दु पडिक्कमओ दव्वे खेत्ते य काल भावे य।
पडिगच्छदि जेण जह्मि तं तस्स भवे पडिक्कमणं।।६१७।।

पडिकमिदव्वं दव्वं सच्चित्ताचित्तमिस्सियं तिविहं।
खेत्तं च गिहादीयं कालो दिवसादिकालह्मि।।६१८।।

मिच्छत्तपडिक्कमणं तह चेव असंजमे पडिक्कमणं।
कसाएसु पडिक्कमणं जोगेसु य अप्पसत्थेसु।।६१९।।

काऊण य किदियम्मं पडिलेहियअंजलीकरणसुद्धो।
आलोचिज्ज सुविहिदो गारवमाणं च मोत्तूण।।६२०।।

आलोचिय अवराहं ठिदिओ सुद्धो अहं ति तुट्ठमणो।
पुणरवि तमेव जुज्जइ तोसत्थं होइ पुणरुत्तं।।*।।

आलोचणं दिवसियं रादिअइरियापधं च बोद्धव्वं।
पक्खिय चादुम्मासिय संवच्छर मुत्तमट्ठं च।।६२१।।

अणा भोगकिदं कम्मं जं किं वि मणसा कदं।
तं सव्वं आलोचेज्जहु अव्वाखित्तेण चेदसा।।६२२।।

आलोचणमालुंचण विगडीकरणं च भावसुद्धी दु।
आलोचदह्मि आराधणा अणालोचणे भज्जा।।६२३।।

उप्पण्णा उप्पण्णा माया आणुपुव्वसो णिहंतव्वा।
आलोचणणिंदणगरहणहिं ण पुणो तिअं विदिअं।।६२४।।

आलोचणणिंदणगरहणाहिं अब्भुट्ठिओ अकरणाए।
तं भावपडिक्कमणं सेसं पुण दव्वदो भणिअं।।६२५।।

भावेण अणुवजुत्तो दव्वीभूदो पडिक्कमदि जो दु।
जस्सट्ठं पडिकमदे तं पुण अट्ठं ण साधेदि।।६२६।।

भावेण संपजुत्तो जदत्थजोगो य जंपदे सुत्तं।
सो कम्मणिज्जराए विउलाए वट्टदे साधु।।६२७।।

सपडिक्कमणो धम्मो पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स।
अवराहे पडिकमणं मज्झिमयाणं जिणवराणं।।६२८।।

जावेदु अप्पणो वा अण्णदरे वा भवे अदीचारो।
तावेदु पडिक्कमणं मज्झिमयाणं जिणवराणं।।६२९।।

इरियागोयरसुमिणादि सव्वमाचरदु मा व आचरदु।
पुरिमचरिमादु सव्वे सव्वं णियमा पडिक्कमंदि।।६३०।।

मज्झिमया दिढबुद्धी एयग्गमणा अमोहलक्खा य।
तह्मा हु जमाचरंति जं गरहंता वि सुज्झंति।।६३१।।

पुरिमचरिमादु जह्मा चलचित्ता चेव मोहलक्खा य।
तो सव्वपडिक्कमणं अंधलयघोडयदिट्ठंतो।।६३२।।

पडिकमणणिजुत्ती पुण एसा कहिया मए समासेण।
पच्चक्खाणणिजुत्तो एत्तो उड्ढं पवक्खामि।।६३३।।

णाम ट्ठवणा दव्वे खेत्ते काले य होदि भावे य।
एसो पच्चक्खाणे णिक्खेवो छव्विहो णेओ।।६३४।।

पच्चक्खाओ पच्चक्खाणं पच्चक्खियव्वमेवं तु।
तीदे पच्चुप्पण्णे अणागदे चेव कालह्मि।।६३५।।

आणाय जाणणावियं उवजुत्तो मूलमज्झणिद्देसे।
सागारमणागारं अणुपालेंतो दढधिदीओ।।६३६।।

एसो पच्चक्खाओ पच्चक्खाणिति वुच्चदे चाओ।
पच्चक्खिदव्वमुवहिं आहारो चेव बोद्धव्वो।।६३७।।

पच्चक्खाणं उत्तरगुणेसु खमणादि होदि णेयविहं।
तेणवि अ एत्थ पयदं तं पि य इणमो दसविहं तु।।६३८।।

अणागदमदिकंतं कोडीसहिदं णिखंडिदं चेव।
सागारमणागारं परिमाणगदं अपरिसेसं।।६३९।।

अद्धाणगदं णवमं दसमं तु सहेदुगं वियाणाहि।
पच्चक्खाणवियप्पा णिरुत्तिजुत्ता जिणमदम्हि।।६४०।।

विणएण तहणुभासा हवदि य अणुपालणा य परिणामे।
एदं पच्चक्खाणं चदुव्विधं होदि णादव्वं।।६४१।।

किदियम्मं उवचारिय विणओ तह णाणदंसणचरित्ते।
पंचविधविणयजुत्तं विणयसुद्धं हवदि तं तु।।६४२।।

अणुभासदि गुरुवयणं अक्खरपदवंजणं कमविसुद्धं।
घोसविसुद्धी सुद्धं एवं अणुभासणा सुद्धं।।६४३।।

आदंके उवसग्गे समे य दुब्भिक्खवुत्ति कंतारे।
जं पालिदं ण भग्गं एवं अणुपालणासुद्धं।।६४४।।

रागेण व दोसेण व मणपरिणामेण ण दूसिदं जं तु।
तं पुण पच्चक्खाणं भावविसुद्धं तु णादव्वं।।६४५।।

असणं खुहप्पसमणं पाणाणमणुग्गहं तहा पाणं।
खादंति खादियं पुण सादंति सादियं भणियं।।६४६।।

सव्वो वि य आहारो असणं सव्वोवि वुच्चदे पाणं।
सव्वो वि खादियं पुण सव्वो वि य सादियं भणियं।।६४७।।

असणं पाणं तह खादियं चउत्थं च सादियं भणियं।
एवं परूविदं दु सद्दहिदुं जे सुही होदि।।६४८।।

पच्चक्खाणणिजुत्ती एसा कहिया मए समासेण।
काओसग्गणिजुत्ती एतो उड्ढं पवक्खामि।।६४६।।

णामट्ठवणा दव्वे खेत्ते काले य होदि भावे य।
एसो काउस्सग्गे णिक्खेओ छव्विहो णेओ।।६५०।।

काउस्सग्गो काउस्सग्गी काउस्सग्गस्स कारणं चेव।
एदेसिं पत्तेयं परूवणा होदि तिण्हंपि।।६५१।।

वोसरिदबाहुजुगलो चदुरंगुलअंतरेण समपादो।
सव्वंगचलणरहिओ काउस्सगो विसुद्धो दु।।६५२।।

मुक्खट्ठी जिदणिद्दो सुत्तत्थविसारदो करणसुद्धो।
आदबलविरियजुत्तो काउस्सग्गो विसुद्धप्पा।।६५३।।

काउस्सग्गं मोक्खपहदेसयं घादिकम्म अदिचारं।
इच्छामि अहिट्ठादुं जिणसेविद देसिदत्तादो।।६५४।।

एगपदमस्सिदस्स वि जो अदिचारो दुरागदोसेहिं।
गुत्तीहिं वदिकमो वा चदुहिं कसाएहिं व वदेहिं।।६५५।।

छज्जीवणिकाएहिं भयमयठाणेहिं बंभ धम्मेहिं।
काउस्सग्गं ठामिय तं कम्मणिघादणट्ठाए।।६५६।।

जे केई उवसग्गा देवमाणुसतिरिक्खचेदणिया।
ते सव्वे अधिआसे काओसग्गे ठिदो संतो।।६५७।।

संवच्छरमुक्कस्सं भिण्णमुहुत्तं जहण्णयं होदि।
सेसा काओसग्गा होंति अणेगेसु ठाणेसु।।६५८।।

अट्ठसदं देवसियं कल्लद्धं पक्खियं च तिण्णि सया।
उस्सासा कायव्वा णियमंते अप्पमत्तेण।।६५९।।

चादुम्मासे चउरो सदाइं संवत्थरे य पंचसदा।
काओसग्गुस्सासा पंचसु ठाणेसु णादव्वा।।६६०।।

पाणिवह मुसावाए अदत्त मेहुण परिग्गहे चेय।
अट्ठसदं उस्सासा काओस्सग्गह्मि कादव्वा।।६६१।।

भत्ते पाणे गामंतरे य अरहंतसमणसेज्जासु।
उच्चारे पस्सवणे पणवीसं होंति उस्सासा।।६६२।।

उद्देसे णिद्देसे सज्झाए वदंणे य पणिधाणे।
सत्तावीसुस्सासा काओसग्गह्मि कादव्वा।।६६३।।

काओसग्गं इरियावहादिचारस्स मोक्खमग्गम्मि।
वोसट्ठचत्तदेहा कंरति दुक्खक्खयट्ठाए।।६६४।।

एवं दिवसियराइय पक्खिय चादुम्मासियवरिस चरिमेसु।
णादूण ठंति धीरा घणिदं दुक्खक्खयट्ठाए।।*।।

मत्ते पाणे गामंत्तरे य चदुमा सियवरिसचरिमेसु।
णाऊण ठंति धीरा घणिदं दुक्खक्खयट्ठाए।।६६५।।

काओसग्गह्मि ठिदो चिंतिदुइरियापवधस्स अदिचारं।
तं सव्वं समाणित्ता धम्मं सुक्कं च चिंतेज्जो।।६६६।।

तह दिवसियरादियपक्खियचादुम्मासिय वरिसचरिमेसु।
तं सव्वं समाणित्ता धम्मं सुक्कं च झायेज्जो।।६६७।।

काओसग्गह्मि कदे जह भिज्जदि अंगुवंगसंधीओ।
तह भिज्जदि कम्मरयं काउस्सग्गस्स करणेण।।६६८।।

बलवीरियमासेज्ज य खेत्तेकाले सरीसंहडणं।
काओसग्गं कुज्जा इमे दु दोसे परिहरंतो।।६६९।।

घोडय लदा य खंभे कुड्डे माले य सवरबधू णिगले।
लंवुत्तरथणदिट्ठी वायसखलिणे जुगकविट्ठे।।६७०।।

सीसपकंपिय मुइयं अंगुलि भूविकार वारुणीपेयी।
काओसग्गेण ठिदो एदे दोसे परिहरेज्जो।।६७१।।

आलोगणं दिसाणं गीवाउण्णामणं पणमणं च।
णिट्ठीवणंगमरिसो काउसग्गह्मि वज्जिज्जो।।६७२।।

णिक्कूडं सविसेसं बलाणुरूवं वयाणुरूवं च।
काओसग्गं धीरा करंति दुक्खक्खयट्ठाए।।६७३।।

जो पुण तीसदिवरिसो सत्तरिवरिसेण पारणाय समो।
विसमो य कूडवादी णिव्विण्णाणी य सो य जडो।।६७४।।

उट्ठिदउट्ठिद उट्ठिदणिविट्ठ उवविट्ठउट्ठिदो चेव।
उवविट्ठणिविट्ठो वि य काओसग्गो चदुट्ठाणो।।६७५।।

धम्मं सुक्कं च दुवे झायदि झाणाणि जो ठिदो संतो।
एसो काओसग्गो इह उट्ठिवउट्ठिदो णाम।।६७६।।

अट्टं रुद्दं च दुवेझायदि झाणाणि जो ठिदो संतो।
एसो काओसग्गो उट्ठिदणिविट्ठिदो णाम।।६७७।।

धम्मं सुक्कं च दवे झायदि झाणाणि जो णिसण्णो दु।
एसो काओसग्गो उवविट्ठउट्ठिदो णाम।।६७८।।

अट्टं रुद्दं च दुवे झायदि झाणाणि जो णिसण्णो दु।
एसो काओसग्गो णिसण्णिदणिसण्णिदो णाम।।६७६।।

दंसणणाणचरित्ते उवओगे संजमे विउस्सग्गे।
पच्चक्खाणे करणे पणिधाणे तह य समिदीसु।।६८०।।

विज्जा चरण महव्वद समाधि गुणबंभचेरछक्काए।
खमणिग्गह अज्जवमद्दवमुत्तीविणए च सद्दहणे।।६८१।।

एवं गुणो महत्थो मणसंकप्पो पसत्थ वीसत्थो।
संकप्पोत्ति वियाणह जिणसासणसम्मदं सव्वं।।६८२।।

परिवारइड्ढि सक्कारपूयणं असणपाणहेऊ वा।
लयण सयणासणं भत्तपाणकामट्ठहेऊ वा।।६८३।।

अज्ञाणिद्देस पमाणकित्तीवण्णण पहावणगुणट्ठं।
झाण मिणमप्पसत्थं मणसंकप्पो दु वीसत्थो।।६८४।।

काउस्सग्गणिजुत्ती एसा कहिया मए समासेण।
संजमतवड्ढियाणं णिग्गंथाणं महरिसीणं।।६८५।।

सव्वा वासणिजुत्तो णियमा सिद्धो त्ति होइ णायव्वो।
अह णिस्सेसं कुणदि ण णियमा आवासया होंति।।६८६।।

आवासयं तु आवासएसु सव्वेसु अपरिहीणेसु।
मणवयणकायगुत्तिंदियस्स आवासया होंति।।६८७।।

तियरणसव्वविसुद्धो दव्वे खेत्ते यथुत्तकालम्मि।
मोणेणव्वाखित्तो कुज्जा आवासया णिच्चं।।६८८।।

जो होदि णिसीदप्पा णिसीहिया तस्स भावदो होदि।
अणिसिद्धस्स णिसीहियसद्दो हवदि केवलं तस्स।।६८६।।

आसाए विप्पमुक्कस्स आसिया होदि भावदो।
आसाए अविप्पमुक्स्स सद्दो हवदि केवलं।।६६०।।

णिज्जुत्ती णिज्जुत्ती एसा कहिदा मए समासेण।
अह वित्थारपसंगोऽणियोगदो होदि णादव्वो।।६६१।।

आवासयणिजुत्ती एवं कधिदा समासओ विहिणा।
जो उवजुंजदि णिच्चं सो सिद्धिं जादि विसुद्धप्पा।।६६२।।

सिद्धे णमंसिदूण य झाणुत्तमखविय दीहसंसारे।
दह दह दो दो य जिणे दह दो अणुपेहणा वुच्छं।।६६३।।

अद्धुवमसरणमेगत्तमण्णसंसारलोगमसुचित्तं।
आसवसंवरणिज्जरधम्मं बोधिं च चिंतेज्जो।।६६४।।

ठाणाणि आसणाणि य देवासुरइड्ढिमणुयसोक्खाइं।
मादुपिदु सयण संवासदा य पीदी वि य अणिच्चा।।६६५।।

सामग्गिंदियरूवं मदिजोवणजीवियं बलं तेजं।
गिहसयणासणभंडादिया अणिच्चेत्ति चिंतेज्जो।।६६६।।

हयगयरहणरबलवाहणाणि मंतोसधाणि विज्जाओ।
मच्चुभयस्स ण सरणं णिगडी णीदी य णीया य।।६६७।।

जम्मजरामरणसमाहिदह्मि सरणं ण विज्जदे लोए।
जरमरणहारिउवारणं तु जिणसासणं मुच्चा।।६६८।।

मरणभयह्मि उवगदे देवा वि सइंदया ण तारंति।
धम्मो त्ताणं सरणं गदित्ति चिंतेहिं सरणत्तं।।६६६।।

सयणस्स परियणस्स य मज्झे एक्को रुवंतओ दुहिदो।
वज्जदि मच्चुवसगदो ण जणो कोइ समं एदि।।७००।।

एक्को करेइ कम्मं एक्को हिंडदि य दीहसंसारे।
एक्को जायदि मरदि य एवं चिंतेहि एयत्तं।।७०१।।

मादुपिदुसयणसंबंधिणो य सव्वे वि अत्तणो अण्णे।
इहलोग बंधवा ते ण य परलोगं समं णेंति।।७०२।।

अण्णो अण्णं सोयदि मदोत्ति मम णाहओ त्ति मण्णंतो।
अत्ताणं ण दु सोयदि संसार महण्णवे बुड्ढं।।७०३।।

अण्णं इमं सरीरादिगं पि जं होज्ज बाहिरं दव्वं।
णाणं दंसणमादात्ति एवं चिंतेहि अण्णत्तं।।७०४।।

मिच्छत्तेणाछण्णो मग्गं जिणदेसिदं अपेक्खंतो।
भमिहदि भीमकुडिल्ले जीवो संसारकंतारे।।७०५।।

दव्वे खेत्ते काले भावे य चदुव्विहो य संसारो।
चदुगदिगमणणिबद्धो बहुप्पयारे हिं णादव्वो।।७०६।।

किं केण कस्स कत्थ केवचिरं कदिविधो य भावो य।
छहिं अणि ओगद्दारे सव्वे भावाणुगंतव्वा।।७०७।।

तत्थ जरामरणभयं दुक्खं पियविप्पओग बहिणयं।
अप्पियसंजोगं वि य रोग महावेदणाओ य। ।७०८।।

जायंतो य मरंतो जलथलखयरेसु तिरियणिरएसु।
माणुस्से देवत्ते दुक्खसहस्साणि पप्पोदि। ।७०६।।

जे भोगा खलु केई देवा माणुस्सिया य अणुभूदा।
दुक्खं च णंतखुत्तो णिरिएतिरिएसु जोणीसु। ।७१०।।

संजोगविप्पओगा लाहालाहं सुहं च दुक्खं च।
संसारे अणुभूदा माणं च तहावमाणं च। ।७११।।

एवं बहुप्पयारं संसार विविहदुक्खथिरसारं।
णाऊण विचिंतिज्जो तहेव लहुमेव णिस्सारं। ।७१२।।

एगविहो खलु लोओ दुविहो तिविहो तहा बहुविहो वा।
दव्वेहिं पज्जएहिं य चिंतिज्जो लोयसब्भावं। ।७१३।।

लोओ अकिट्टिमो खलु अणाइणिहणो सहावणिप्पण्णो।
जीवाजीवेहिं भुडो णिच्चो तालरुक्खसंठाणो। ।७१४।।

धम्माधम्मागासा गदिरागदि जीवपुग्गलाणं च।
जावत्तावल्लोगो आगासमदो परमणंतं। ।७१५।।

हेट्ठा मज्झे उवरिं वेत्तासणझल्लरीमुदंगणिभो।
मज्झिमवित्थारेण दु चोद्दसगुणमायदो लोओ। ।७१६।।

तत्थणुहवंति जीवा सकम्मणिव्वत्तियं सुहं दुक्खं।
जम्मणमरणपुणब्भवमणंतभवसायरे भीमे। ।७१७।।

मादा य होदि धूदा धूदा मादुत्तणं पुण उवेदि।
पुरिसो वि तत्थ इत्थी पुमं अपुमं च होइ जए। ।७१८।।

होऊण तेयसत्ताधिओ दु बलविरियरूवसंपण्णो।
जादो वच्चघरे किमि धिगत्थु संसारवाससस। ।७१६।।

धिग्भवदु लोगधम्मं देवाविय सुरवदीय महड्ढीया।
भोत्तूण सुक्खमतुलं पुणरवि दुक्खावहा होंति।।७२०।।

णाऊण लोगसारं णिस्सारं दीहगमणसंसारं।
लोगग्गसिहरवासं झाहि पयत्तेण सुहवासं।।७२१।।

णिरिएसु असुहमेयंतमेव तिरियेसु बंधरोहादी।
मणुएसु रोगसोगादियं तु दिवि माणसं असुहं।।७२२।।

आयासदुक्खवेरभयसोगकलिरागदोसमोहाणं।
असुहाणमावहो वि य अत्थो मूलं अणत्थाणं।।७२३।।

दुग्गमदुल्लहलाभा भयपउरा अप्पकालिया लहुया।
कामादुक्खविवागा असुहा सेविज्जमाणा वि।।७२४।।

असुइविलिविले गब्भे वसमाणो वत्थिपडलपच्छण्णो।
मादूइसिंभलालाइयं तु तिव्वासुहं पिवदि।।७२५।।

मंसट्ठिसिंभवसरुहिरचम्मपित्तंतमुत्तकुणिपकुडिं।
बहुदुक्खरोगभायण सरीरमसुभं वियाणाहि।।७२६।।

अत्थं कामसरीरादियं पि सव्वमसुभत्ति णादूण।
णिव्विज्जंतो झायसु जह जहसि कलेवरं असुइं।।७२७।।

मोत्तूण जिणक्खादं धम्मं सुहमिह दु णत्थि लोगम्मि।
ससुरासुरेसु तिरिएसु णिरयमणुएसु चिंतेज्जो।।७२८।।

दुक्खभयमीणपउरे संसारमहण्णवे परमघोरे।
जंतू जं तु णिमज्जदि कम्मासवहेदुयं सव्वं।।७२९।।

रागो दोसो मोहो इंदियसण्णा य गारवकसाया।
मणवयणकायसहिदा दु आसवा होंति कम्मस्स।।७३०।।

रंजेदि असुहकुणपे रागो दोसो वि दूसदी णिच्चं।
मोहो वि महारिवु जं णियदं मोहेदि सब्भावं।।७३१।।

धिद्धी मोहस्स सदा जेण हिदत्थेण मोहिदो संतो।
ण विबुज्झदि जिणवयण हिदसिव सुहकारणं मग्गं।।७३२।।

जिणवयण सद्दहाणो वि तिव्वमसुहगदिपाववयं कुणइ।
अभिभूदो जेहिं सदा धित्तेसिं रागदोसाणं।।७३३।।

अणिहुदमणसा एदे इंदियविसया णिगेण्हिदुं दुक्खं।
मंतोसहिहीणेण व दुट्ठा आसीविसा सप्पा।।७३४।।

धित्तेसिमिंदियाणं जेसिं वसेदो दु पावमज्जणिय।
पावदि पावविवागं दुक्खमणंतं भवगदिसु।।७३५।।

सण्णाहिं गारवेहिं य गुरुओ गरुगंतुपावमज्जणिय।
तो कम्मभारगुरुओ गुरुगं दुक्खं समणुभवइ।।७३६।।

कोधो माणो माया लोभो य दुरासया कसायरिऊ।
दोससहस्सावासा दुक्खसहस्साणि पावंति।।७३७।।

हिंसादिएहिं पंचहि आसवदारेहिं आसवदि पावं।
तेहिंतु धुव विणासो सासवणावा जह समुद्दे।।७३८।।

एवं बहुप्पयारं कम्मं आसवदि दुट्ठमट्ठविहं।
णाणावरणादीयं दुक्खविवागंति चिंतेज्जो।।७३९।।

तम्हा कम्मासवकारणाणि सव्वाणि ताणि रुंधेज्जो।
इंदिय कसाय सण्णा गारवरागादिआदीणि।।७४०।।

रुद्धेसु कसायेसु अ मूलादो होंति आसवा रुद्धा।
दुब्भत्तम्हि णिरुद्धे वणम्मि णावा जह ण एदि।।७४१।।

इंदियकसायदोसा णिग्घिप्पंति तवणाणविणएहिं।
रज्जूहि णिघिप्पंति हु उप्पह गामी जहा तुरया।।७४२।।

मणवयणकायगुत्तिंदियस्स समिदीसु अप्पमत्तस्स।
आसवदारणिरोहे णवकम्मरयासवो ण हवे।।७४३।।

मिच्छत्ताविरदीहिं य कसायजोगेहिं जं च आसवदि।
दंसणविरमणणिग्गहणिरोधणेहिं तु णासवदि।।७४४।।

संवरफलं तु णिव्वाणमेत्ति संवरसमाधिसंजुत्तो।
णिच्चुज्जुत्तो भावय संवर इणमो विसुद्धप्पा।।७४५।।

रुद्धासवस्स एवं तवसा जुत्तस्स णिज्जरा होदि।
दुविहा य सा वि भणिया देसादो सव्वदो चेव।।७४६।।

संसारे संसरंतस्स खओवसमगदस्स कम्मस्स।
सव्वस्स वि होदि जगे तवसा पुण णिज्जरा विउला।।७४७।।

जह धादू धम्मंतो सुज्झदि सो अग्गिणा दु संतत्तो।
तवसा तहा विसुज्झदि जीवो कम्मेहिं कणयं व।।७४८।।

आवेसणी सरीरे इंदियभंडो मणो व आगरिओ।
धमिदव्वजीवलोहो वावीसपरीसहग्गीहिं।।*।।

णाणवरमारुदजुदो सीलवरसमाधिसंजमुज्जलिदो।
दहइ तवो भवबीयं तणकट्ठादी जहा अग्गी।।७४९।।

चिरकालमज्जिदं पि य विहुणदि तवसा रयत्ति णाऊण।
दुविहे तवम्मि णिच्चं भावेदव्वो हवदि अप्पा।।७५०।।

णिज्जरियसव्वकम्मो जादिजरामरण बंधण विमुक्को।
पावदि सुक्खमणंतं णिज्जरणं तं मणसि कुज्जा।।७५१।।

सव्वजगस्स हिदकरो धम्मो तित्थंकरेहिं अक्खादो।
धण्णा तं पडिवण्णा विसुद्धमणसा जगे मणुया।।७५२।।

जेणेह पाविदव्वं कल्लाणपरंपरं परमसोक्खं।
सो जिणदेसिदधम्मं भावेणुववज्जदे पुरिसो।।७५३।।

खंतीमद्दव अज्जव लाघव तव संजमो अकिंचणदा।
तह होइ बंभचेरं सच्चं चाओ य दसधम्मा।।७५४।।

उवसम दया य खंती वड्ढइ वेरग्गदा य जह जह से।
तह तह य मोक्खसोक्खं अक्खीणं भावियं होइ।।७५५।।

संसारविसमदुग्गे भवगहणे कह वि मे भमंतेण।
दिट्ठो जिणवरदिट्ठो जेट्ठो धम्मोत्ति चिंतेज्जो।।७५६।।

संसारह्मि अणंते जीवाणं दुल्लहं मणुस्सत्तं।
जुगसमिलासंजोगो लवणसमुद्दे जहा चेव।।७५७।।

देसकुलजन्मरूवं आऊ आरोग्ग वीरियं विणओ।
सवणं गहणं मदि धारणा य एदे वि दुल्लहा लोए।।७५८।।

लद्धेसुवि एदेसु य बोधी जिणसासणह्मि ण हु सुलहा।
कुपहाणमाकुलत्ता जं बलिया रागदोसा य।।७५६।।

सेयं भवभयमहणी बोधी गुणवित्थडा मए लद्धा।
जदि पडिदा ण हु सुलहा तम्हा ण खमो पमादो मे।।७६०।।

दुल्लहलाहं लद्धूण बोधिं जो णरो पमादेज्जो।
सो पुरिसो कापुरिसो सोयदि कुगदिं गदो संतो।।७६१।।

उवसमखयमिस्सं वा बोधिं लद्धूण भविय पुंडरिओ।
तवसंजमसंजुत्तो अक्खयसोक्खं तदो लहदि।।७६२।।

तम्हा अहमवि णिच्चं सद्धासंवेगविरियविणएहिं।
अत्ताणं तह भावे जह सा बोही हवे सुइरं।।७६३।।

बोधीय जीवदव्वादियाइं बुज्झइ हु णव वि तच्चाइं।
गुणसयसहस्सकलियं एवं बोहिं सया झाहि।।७६४।।

दस दो य भावणाओ एवं संखेवदो समुद्दिट्ठा।
जिणवयणे दिट्ठाओ बहुजण वेरग्गजणणीओ।।७६५।।

अणुवेक्खाहिं एवं जो अत्ताणं सदा विभावेदि।
सो विगद सव्व कम्मो विमलो विमलालयं लहदि।।७६६।।

झाणेहिं खवियकम्मा मोक्खग्गलमोडया विगयमोहा।
ते मे तमरयमहणा तारंतु भवाहि लहुमेव।।७६७।।

जह मज्झ तह्मि काले विमला अणुपेहणा भवेजण्हू।
तह सव्वलोगणाहा विमलगदिगदा पसीदन्तु।।७६८।।

वंदित्तु जिणवराणं तिहुयणजयमंगलोववेदाणं।
कंचणपियंगुविद्दुमघणकुंदमुणालवण्णाणं।।७६९।।

णाण ज्जो वयराण लोगा लोगह्मि सव्वदव्वाणं।
खेत्तगुण काल पज्जय विजाणगाणं पणमियाणं।।*।।

अणयारमहरिसीणं णाइंदणरिंदइंदमहिदाणं।
वोच्छामि विविहसारं भावणसुत्तं गुणमहंतं।।७७०।।

लिंगं वदं च सुद्धी वसदिविहारं च भिक्ख णाणं च।
उज्झणसुद्धी य पुणो वक्कं च तवं तधा झाणं।।७७१।।

एदमणयारसुत्तं दसविध पद विणयअत्थसंजुत्तं।
जो पढइ भत्तिजुत्तो तस्स पणस्संति पावाइं।।७७२।।

णिस्सेसदेसिदमिणं सुत्तं धीरजणबहुमदमुदारं।
अणगारभावणमिणं सुसमण परिकित्तणं सुणह।।७७३।।

णिग्गंथमहरिसीणं अणयारचरित्तजुत्तिगुत्ताणं।
णिच्छिदमहातवाणं वोच्छामि गुणे गुणधराणं।।७७४।।

चलचवलजीविदमिणं णाऊण माणुसत्तणमसारं।
णिव्विण्ण कामभोगा धम्मम्मि उवट्ठिदमदीया।।७७५।।

णिम्मालिय सुमिणावि य धण कणय समिद्ध बंधवजणं च।
पयहंति वीरपुरिसा विरत्तकामा गिहावासे।।७७६।।

जम्मणमरणुव्विग्गा भीदा संसार वासमसुभस्स।
रोचन्ति जणवरमदं पावयणं वड्ढमाणस्स।।७७७।।

पवरवरधम्मतित्थं जिणवरवसहस्स वड्ढमाणस्स।
तिविहेण सद्दहंति य णत्थि इदो उत्तरं अण्णं।।७७८।।

उच्छाहणिच्छिदमदी ववसिद ववसाय बद्ध कच्छा य।
भावाणुरायरत्ता जिणपण्णत्तम्मि धम्मम्मि।।७७९।।

धम्ममणुत्तरमिमं कम्ममलपडलपाडयं जिणक्खादं।
संवेग जायसड्ढा गिण्हंति महव्वदा पंच।।७८०।।

सच्चवयणं अहिंसा अदत्तपरिवज्जणं च रोचंति।
तह बंभचेरगुत्ती परिग्गहादो विमुत्तिं च।।७८१।।

पाणिवहमुसावादं अदत्त मेहुण परिग्गहं चेव।
तिविहेण पडिक्कंते जावज्जीवं दिढधिदीया।।७८२।।

ते सव्वगंथमुक्का अममा अपरिग्गहा जहाजादा।
वोसट्ठ चत्तदेहा जिणवरधम्मं समं णेंति।।७८३।।

सव्वारंभणियत्ता जुत्ता जिणदेसिदम्मि धम्मम्मि।
ण य इच्छंति ममत्तिं परिग्गहे बालमित्तम्मि।।७८४।।

अपरिग्गहा अणिच्छा संतुट्ठा सुट्ठिदा चरित्तम्मि।
अवि णीए वि सरीरे ण करेंति मुणी ममत्तिं ते।।७८५।।

ते णिम्ममा सरीरे जत्थत्थमिदा वसंति अणिएदा।
सवणा अप्पडिबद्धा विज्जूजह दिट्ठणट्ठा वा।।७८६।।

गामेयरादिवासी णयरे पंचाहवासिणो धीरा।
सवणा फासुविहारी विवित्तएगंतवासी य।।७८७।।

एगंतं मग्गंता सुसमणा वरगंधहत्थिणो धीरा।
सुक्कज्झाणरदीया मुत्तिसुहं उत्तमं पत्ता।।७८८।।

एयाइणो अविहला वसंति गिरिकंदरेसु सप्पुरिसा।
धीरा अदीणमणसा रममाणा वीरवयणम्मि।।७८९।।

वसधिसु अप्पडिबद्धा ण ते ममतिं करेंति वसधीसु।
सुण्णागारमसाणे वसंति ते वीरवसधीसु।।७६०।।

पब्भारकंदरेसु अकापुरिसभयंकरेसु सप्पुरिसा।
वसधी अभिरोचंति य सावदबहुघोरगंभीरा।।७६१।।

एयंतम्मि वसंता वयवग्घतरच्छअच्छभल्लाणं।
आगुंजियमारसियं सुणंति सद्दं गिरिगुहासु।।७६२।।

रत्तिंचरसउणाणं णाणारुदरसिदभीदसद्दालं।
उण्णावेंति वणंतं जत्थ वसंता समणसीहा।।७६३।।

सीहा इव णरसीहा पव्वयतडकडयकंदरगुहासु।
जिणवयणमणुमणंता अणुविग्गमणा परिवसंति।।७६४।।

सावदसयाणु चरिये परिभय भी मंध यार गंभीरे।
धम्माणुरायरत्ता वसंति रत्तिं गिरिगुहासु।।७६५।।

सज्झायझाणजुत्ता रत्तिं ण सुवंति ते पयामं तु।
सुत्तत्थं चिंतंता णिद्दाय वसं ण गच्छंति।।७६६।।

पलियंकणिसिज्जगदा वीरासणएयपाससाईया।
ठाणुक्कडेहिं मुणिणो खवंति रत्तिं गिरिगुहासु।।७६७।।

उवधिभरविप्पमुक्का वोसट्ठंगा णिरंबरा धीरा।
णिक्किंचणपरिसुद्धा साधू सिद्धिं वि मग्गंति।।७६८।।

मुत्ता णिराववेक्खा सच्छंदविहारिणो जहा वादो।
हिंडंति णिरुव्विग्गा णयरायरमंडियं वसुहं।।७६९।।

वसुधम्मि वि विहरंता पडिं ण करेंति कस्सइ कयाई।
जीवेसु दयावण्णा माया जह पुत्तभंडेसु।।८००।।

जीवाजीवविहत्तिं णाणुज्जोएण सुट्ठु णाऊण।
तो परिहरंति धीरा सावज्जं जेत्तियं किंचि।।८०१।।

सावज्जकरणजोग्गं सव्वं तिविहेण तियरण विसुद्धं।
वज्जंति वज्जभीरू जावज्जीवाय णिग्गंथा।।८०२।।

तणरुक्खहरिदछेदणतयपत्तपवालकंदमूलाइं।
फलपुप्फबीयघादं ण करेंति मुणी ण कारेंति।।८०३।।

पुढवीय समारंभं जलपवणग्गीतसाणमारंभं।
ण करेंति ण कारेंति य कारेंतं णाणुमोदंति।।८०४।।

णिक्खित्तसत्थदंडा समणा समसव्वपाणभूदेसु।
अप्पट्ठं चिंतंता हवंति अव्वावडा साहू।।८०५।।

उवसंता दीणमणा उवक्खसीला हवंति मज्झत्था।
णिहुदा अलोलमसठा अविब्भिया कामभोगेसु।।८०६।।

जिणवयणमणुगणेंता संसार महब्भयंहि चिंतंता।
गब्भवसदीसु भीदा भीदा पुण जम्ममरणेसु।।८०७।।

घोरे णिरयसरिच्छे कुंभीपाए सुपच्चमाणाणं।
रुहिरचलाविलपउरे वसिदव्वं गब्भवसदीसु।।८०८।।

दिट्ठपरमट्ठसारा विण्णाणवियक्खणाय बुद्धीए।
णाणकयदीवियाए अगब्भवसदी विमग्गंति।।८०९।।

भावेंति भावणरदा वइरग्गं वीदरागाणं च।
णाणेण दंसणेण य चरित्तजोएण विरिएण।।८१०।।

देहे णिरावयक्खा अप्पाणं दमरूई दमेमाणा।
धिदिपग्गहपग्गहिदा छिंदंति भवस्स मूलाइं।।८११।।

छट्ठट्ठमभत्तेहिं पारेंति य परघरम्मि भिक्खाए।
जमणट्ठं भुंजंति य ण विय पयामं रसट्ठाय।।८१२।।

णवकोडीपरिसुद्धं दसदोसविवज्जियं मलविसुद्धं।
भुंजंति पाणिपत्ते परेण दत्तं परघरम्मि।।८१३।।

उद्देसिय कीदयडं अण्णादं संकिदं अभिहडं च।
सुत्तप्पडिकूडाणि य पडिसिद्धं तं विवज्जंति।।८१४।।

अण्णादमणुण्णादं भिक्खं णिच्चुच्चमज्झिमकुलेसु।
घरपंतिहिं हिंडंति य मोणेण मुणी समादिंति।।८१५।।

सीदलमसीदलं वा सुक्कं लुक्खं सिणिद्ध सुद्धं वा।
लोणिदमलोणिदं वा भुंजन्ति मुणी अणासादं।।८१६।।

अक्खोमक्खणमेत्तं भुंजंति मुणी पाणधारणणिमित्तं।
पाणं धम्मणिमित्तं धम्मं पि चरंति मोक्खट्ठं।।८१७।।

लद्धे ण होंति तुट्ठा ण वि य अलद्धेण दुम्मणा होंति।
दुक्खे सुहे य मुणिणो मज्झत्थमणाउला होंति।।८१८।।

णवि ते अभित्थुणंति य पिंडत्थं ण वि य किंचि जायंति।
मोणव्वदेण मुणिणो चरंति भिक्खं अभासंता।।८१९।।

देहि त्ति दीणकलुसं भासं णेच्छंति एरिसं वोत्तुं।
अविणीदी अलाभेण ण य मोणं भजदे धीरा।।८२०।।

पयणं व पायणं वा ण करेंति अ णेव ते करावेंति।
पयणारंभणियत्ता संतुट्ठा भिक्खमेत्तेण।।८२१।।

असणं जदि वा पाणं खज्जं भोजं लिज्ज पेज्जं वा।
पडिलेहिऊण सुद्धं भुंजंति पाणिपत्तेसु।।८२२।।

जं होज्ज अविव्वण्णं पासुग पसत्थं तु एसणासुद्धं।
भुंजंति पाणिपत्ते लद्धूण य गोयरग्गम्मि।।८२३।।

जं होज्ज बेहिअं तेहिअं च वेवण्णजंतुसंसिट्ठं।
अप्पासुगं तु णच्चा तं भिक्खं मुणी विवज्जंति।।८२४।।

जं पुप्फिय किण्णइदं दट्ठूणं पूपपप्पडादीणि।
वज्जंति वज्जणिज्जं भिक्खू अप्पासुयं जं तु।।८२५।।

जं सुद्धमसंसत्तं खज्जं भोज्जं च लेज्ज पेज्जं वा।
गिह्णंति मुणी भिक्खं सुत्तेण अणिंदयं जं तु।।८२६।।

फलकंदमूलबीयं अणग्गिपक्कं तु आमयं किंचि।
णच्चा अणेसणीयं ण वि य पडिच्छंति ते धीरा।।८२७।।

जं हवदि अणिव्वीयं णिवट्टिमं फासुयं कयं चेव।
णाऊण एसणीयं तं भिक्खं मुणी पडिच्छंति।।८२८।।

भोत्तूण गोयरग्गे तहेव मुणिणो पुणो वि पडिकंता।
परिमिदएयाहारा खमणेण पुणो वि पारेंति।।८२९।।

ते लद्धणाणचक्खू णाणूज्जोएण दिट्ठपरमट्ठा।
णिस्संकिदणिव्विदिगिंछादबलपरक्कमा साहू।।८३०।।

अणुबद्धतवोकम्मा खवणवसगदा तवेण तणुअंगा।
धीरा गुणगंभीरा अभग्गजोगाय दिढचरित्ता य।।८३१।।

आलीणगंडमंसा पायडभिडडीमुहा अधियदच्छा।
सवणा तवं चरंता उक्किणा धम्मलच्छीए।।८३२।।

आगमकदविण्णाणा अट्ठंगविदू य बुद्धिसंपण्णा।
अंगाणि दस य दोण्णि य चोद्दस य धरंति पुव्वाइं।।८३३।।

धारणगहणसमत्था पदाणुसारी य बीयबुद्धीय।
संभिण्णकोट्ठबुद्धी सुयसायर पारया धीरा।।८३४।।

सुदरयणपुण्णकण्णा हेउणयविसारदा विउलबुद्धी।
णिउणत्थसत्थ कुसला परमपयवियाणया समणा।।८३५।।

अवगदमाणत्थंभा अणुस्सिदा अगव्विदा अचंडा य।
दंता मद्दवजुत्ता समयविदण्हू विणीदा य।।८३६।।

उवलद्धपुण्णपावा जिणसासणगहिद मुणिदपज्जाला।
करचरणसंवुडंगा झाणुवजुत्ता मुणी होंति।।८३७।।

ते छिण्णणेहबंधा णिण्णेहा अप्पणो सरीरम्मि।
ण करंति किं चि साहू परिसंठप्पं सरीरम्मि।।८३८।।

मुहणयणदंतधोवणमुव्वट्टण पादधोयणं चेव।
सवाहण परिमद्दण सरीरसंठावणं सव्वं।।८३६।।

धूवण वमण विरेयण अंजण अब्भंग लेवणं चेव।
णत्थुय वत्थियकम्मं सिरवेज्झं अप्पणो सव्वं।।८४०।।

उप्पण्णम्मि य वाही सिरवेयण कुक्खिवेयणं चेव।
अधियासिंति सुधिदिया कायतिगिंछं ण इच्छंति।।८४१।।

ण य दुम्मणा ण विहला अणाउला होंति चेय सप्पुरिसा।
णिप्पडियम्मसरीरा देंति उरं वाहिरोगाणं।।८४२।।

जिणवयणमोसहमिणं विषयसुहविरेयणं अमिदभूदं।
जरामरण वाहिवेयण खयकरणं सव्वदुक्खाणं।।८४३।।

जिणवयणणिच्छिदमदी अविरमणं अब्भुवेंति सप्पुरिसा।
ण य इच्छंति अकिरियं जिणवयणवदिक्कमं कादुं।।८४४।।

रोगाणं आयदणं वाधिसदसमुच्छिदं सरीरघरं।
धीरा खणमवि रागं ण करेंति मुणी सरीरम्मि।।८४५।।

एदं सरीरमसुई णिच्चं कलिकलुसभायणमचोक्खं।
अंतोछाइद ढिड्ढिढस खिब्भिसभरिदं अमेज्झघरं।।८४६।।

वसमज्जमंससोणियपुप्फसकालेज्जसिंभसीहाणं।
सिरजाल अट्ठिसंकडचम्मे णद्धं सरीरघरं।।८४७।।

बीभच्छं विच्छुइयं थूहायसुसाणवच्चमुत्ताणं।
अंसूयपूयलसियं पयलियलालाउलमचोक्खं।।८४८।।

कायमलमत्थुलिंगं दन्तमलविचिक्कणं गलिदसेदं।
किमिजंतुदोसभरिदं सेंदणियाकद्दमसरिच्छं।।८४६।।

अट्ठिं च चम्मं च तहेव मंसं, पित्तं च सिंभं तह सोणिदं च।
अमेज्झयंघायमिणं सरीरं, पस्संति णिव्वेदगुणाणुपेहि। ।८५०।।

अट्ठिणिछण्णं णालिणिबद्धं कलिमलभरिदं किमिउलपुण्णं।
मंसविलित्तं तयपडिछण्णं सरीरघरं तं सददमचोक्खं। ।८५१।।

एदारिसे सरीरे दुग्गंधे कुणिमपूदियमचोक्खे।
सडणापडणे असारे रागं ण करंति सप्पुरिसा। ।८५२।।

जं वंतं गिहवासे विसयसुहं इंदियत्थ परिभोए।
तं खु ण कदाइ भूदो भुंजंति पुणो वि सप्पुरिसा। ।८५३।।

पुव्वरदिकेलिदाइं जा इट्ठी भोगभोयण विहिं च।
ण वि ते कहंति कस्स वि ण वि ते मणसा विचिंतंति। ।८५४।।

भासं विणयविहूणं धम्मविरोहि विवज्जए वयणं।
पुच्छिदमपुच्छिदं वा ण वि ते भासंति सप्पुरिसा। ।८५५।।

अच्छीहिं य पेच्छंता कण्णेहिं य बहुविहाइं सुणमाणा।
अत्थंति मूयभूया णते करंति हु लोइय कहाओ। ।८५६।।

इत्थिकहा अत्थकहा भत्तकहा खेडकव्वडाणं च।
रायकहा चोरकहा जणवदणयरायरकहाओ। ।८५७।।

णडभडमल्लकहाओ मायाकरजल्लमुट्ठियाणं च।
अज्जउललंघियाणं कहासु ण वि रज्जए धीरा। ।८५८।।

विकहा विसोत्तियाणं खणमवि हिदएण ते ण चिंतंति।
धम्मे लद्धमदीया विकहा तिविहेण वज्जंति। ।८५६।।

कुक्कुय कंदप्पाइय हासं उल्लावणं च खेडं च।
मददप्पहत्थवणिं ण करेंति मुणी ण कारेंति। ।८६०।।

ते होंति णिव्वियारा थिमिदमदी पदिट्ठिदा जहा उदधी।
णियमेसु दढव्वदिणो पारतविमग्गया समणा। ।८६१।।

जिणवयणभासिदत्थं पत्थं च हिदं च धम्मसंजुत्तं।
समओवयारजुत्तं पारत्तहिदं कधं करेंति।।८६२।।

सत्ताधिय सप्पुरिसा मग्गं मण्णंति वीदरागाणं।
अणयारभावणाए भावेंति य णिच्चमप्पाणं।।८६३।।

णिच्चं च अप्पमत्ता संजमसमिदीसु झाणजोगेसु।
तवचरणकरणजुत्ता हवंति सवणा समिदपावा।।८६४।।

हेमंते धिदिमंता सहंति ते हिमरयं परमघोरं।
अंगेसु णिवडमाणं णलिणीवणविणासयं सीयं।।८६५।।

जल्लेण मइलिदंगा गिह्मे उण्णादवेण दड्ढंगा।
चेट्ठंति णिसिट्ठंगा सूरस्स य अहिमुहा सूरा।।८६६।।

धारंधयारगुविलं सहंति ते वादवाद्दलं चंडं।
रत्तिंदियं गलंतं सप्पुरिसा रुक्खमूलेसु।।८६७।।

वादं सीदं उण्हं तण्हं च छुधं च दंसमसयं च।
सव्वं सहंति धीरा कम्माण खयं करेमाणा।।८६८।।

दुज्जणवयण चडयणं सहंति अच्छोड सत्थपहरं च।
ण य कुप्पंति महरिसी खमणगुणवियाणया साहू।।८६९।।

जइ पंचिंदियदमओ होज्ज जणो रूसिदव्वयणियत्तो।
तो कदरेण कयंतो रूसिज्ज जए मणुयाणं।।८७०।।

जदि वि य करेंति पावं एदे जिणवयणबाहिरा पुरिसा।
तं सव्वं सहिदव्वं कम्माण खयं करंतेण।।८७१।।

लद्धूण इमं सुदणिहिं ववसायविरज्जियं तह करेह।
जह सुग्गइचोराणं ण उवेह वसं कसायाणं।।८७२।।

पंचमहव्वयधारी पंचसु समिदीसु संजदा धीरा।
पंचिंदियत्थविरदा पंचमगइमग्गया सवणा।।८७३।।

ते इंदिएसु पंचसु णकयाइ रागं पुणो वि बंधंति।
उण्हेण व ह रिद्दं णस्सदि राओ सुविहिदाणं। ।८७४।।

विसएसु प धावंता चवला चंडा तिदंडगुत्तेहिं।
इंदियचोरा घं ोरा वसम्मि ठविदा बवसिदेहिं। ।८७५।।

जह चंडो व णहत्थी उद्दामो णयरारामग्गम्मि।
तिक्खंकुसेण ध रिदो णरेण दिढसत्तिजुत्तेण। ।८७६।।

तह चंडो मण हत्थी उद्दामो विषयराजमग्गम्मि।
णाणं कुसेण धा रेदो रुद्धो जह मत्तहत्थिव्व। ।८७७।।

ण च एदि विणिस रिदुं मणहत्थी झाणवारिबंधणिदो।
बद्धो तह य पयं ो विरायरज्जूहि धीरेहिं। ।८७८।।

धिदिधणिदणिच्छि दमदी चरित्त पायार गोउरं तुंगं।
खंतीसुकदकवाडं तवणयरं संजमारक्खं। ।८७९।।

रागो दोसो मोहो इंदियचोरा य उज्जदा णिच्चं।
ण च यंति पहंसेदुं सप्पुरिससुरक्खियं णयरं। ।८८०।।

एदे इंदियतुरया पयडीदोसेण चोइया संता।
उम्मग्गं णिंति रहं करेह मणपग्गहं बलियं। ।८८१।।

रागो दोसो मोहो विदीय धीरेहि णिज्जदा सम्मं।
पंचेंदिया य दंता बदोववासप्पहारेहिं। ।८८२।।

दंतेंदिया महरिसी रागं दोसं च ते खवेदूणं।
झाणोवंजोगजुत्ता खवेंति कम्मं खविदमोहा। ।८८३।।

अट्ठविहकम्ममूलं खविदकसाया खमादिजत्तेहिं।
उद्धदमूलो व दुमो ण जाइदव्वं पुणो अत्थि। ।८८४।।

अवहट्ट अट्ठ रुद्दं धम्मं सुक्कं च झाणमोगाढं।
ण च एदि पधंसेदुं अणियट्टी सुक्कलेस्साए। ।८८५।।

जह ण चलइ गिरिराजो अवरुत्तरपुव्वदक्खिणो वाए।
एवमचलिदो जोगी अभिक्खणं झायदे झाणं।।८८६।।

णिट्ठविदकरणचरणा कम्मं णिद्धुद्धदं धुणित्ता य।
जरमरणविप्पमुक्का उवेंति सिद्धिं धुदकिलेसा।।८८७।।

समणोत्ति संजदो त्ति य रिसिमुणि साधुत्ति वीदरागो त्ति।
णामाणि सुविहिदाणं अणगार भदंत दंतो त्ति।।८८८।।

अणयारा भयवंता अपरिमिदगुणा थुदा सुरिंदेहिं।
तिविहेणुत्तिण्णपारे परमगदिगदे पणिवदामि।।८८९।।

एवं चरियविहाणं जो काहदि संजदो ववसिदप्पा।
णाणगुणसंपजुत्तो सो गाहदि उत्तमं ठाणं।।८९०।।

भत्तीए मए कहियं अणयाराण त्थवं समासेण।
जो सुणदि पयदमणसो सो गच्छदि उत्तंम ठाणं।।८९१।।

एवं संजमरासिं जो काहदि संजदो ववसिदप्पा।
दंसणणाणसमग्गो सो गाहदि उत्तमं ठाणं।।८९२।।

एवं मए अभिथुदा अणगारा गारवेहिं उम्मुक्का।
धरणिधरेहिं य महिया देंतु समाधिं च बोधिं च।।८९३।।

उवदो कालह्मि सदा तिगुत्तिगुत्ते पुणो पुरिससीहे।
जो थुणदि य अणुरत्तो सो लहदि लाहं तिरयणस्स।।*।।

एवं संजमरासिं करेंति जे संजदा ववसिदप्पा।
ते णाणदंसणधरा देंतु समाहिं च मे बोहिं।।*।।

अणगारभावनगुणा मए अभित्थुदा महाणुभावा।
अणगारवीदरागा देंतु समाहिं च मे बोहिं।।*।।

वंदित्तु देवदेवं तिहुअणमहिदं च सव्वसिद्धाणं।
वोच्छामि समयसारं सुण संखेवं जहावुत्तं।।८९४।।

दव्वं खेत्तं कालं भावं च पडुच्च संघडणं।
जत्थ हि जददे समणो तत्थ हि सिद्धिं लहुं लहइ।।८६५।।

धीरो वइरग्गपरो थोवं हि य सिक्खिदूण सिज्झदि हु।
ण य सिज्झदि वेरग्गविहीणो पढ़दूण सव्वसत्थाइं।।८६६।।

भिक्खं चर वस रण्णे थोवं जेमेहि मा बहू जंप।
दुखं सहजिण णिद्दा मेत्तिं भावेहि सुट्ठु वेरग्गं।।८६७।।

अव्ववहारी एक्को झाणे एयग्गमणो भव णिरारम्भो।
चत्तकसायपरिग्गह पयत्तचेट्ठो असंगो य।।८६८।।

थोवह्मि सिक्खिदे जिणइ बहुसुदं जो चरित्तसंपुण्णो।
जो पुण चरित्तहीणो किं तस्स सुदेण बहुएण।।८६६।।

णिज्जावगो य णाणं वादो झाणं चरित्त णावा हि।
भवसागरं तु भविया तरंति तिहि सण्णिपायेण।।६००।।

णाणंपयासओ तओ सोधओ संजमो य गुत्तियरो।
तिण्हं पिय संपजोगे होदि हु जिणसासणे मोक्खो।।६०१।।

णाणं करणविहीणं लिंगग्गहणं च संजमविहूणं।
दंसणरहिदो य तवो जो कुणइ णिरत्थयं कुणइ।।६०२।।

तवेण धीरा विधुणंति पावं अज्झप्पजोगेण खवंति मोहं।
संखीणमोहा धुदरागदोसा ते उत्तमा सिद्धिगदिं पयंति।।६०३।।

लेस्सा झाणतवेण य चरिय विसेसेण सुग्गई होइ।
तह्मा इदरा भावे झाणं संभावए धीरो।।६०४।।

सम्मत्तादो णाणं णाणादो सव्वभाव उवलद्धी।
उवलद्धपयत्थो पुण सेयासेयं वियाणादि।।६०५।।

सेयासेयविदण्हू उद्धुददुस्सील सीलवं होदि।
सीलफलेणब्भुदयं तत्तो पुण लहदि णिव्वाणं।।६०६।।

सव्वं पि हु सुदणाणं सुट्ठु सुगुणिदं पि सुट्ठु पढिदं पि।
समणं भट्ठचरित्तं णहु सक्को सुग्गइं णेदुं।।६०७।।

जदि पडदि दीवहत्थो अवडे किं कुणदि तस्स सो दीवो।
जदि सिक्खिऊण अणयं करेदि किं तस्स सिक्खफलं।।६०८।।

पिंडं सेज्जं उवधिं ऊग्गमउप्पायणेसणादीहिं।
चारित्तरक्खणट्ठं सोधणयं होदि सुचरित्तम्।।६०६।।

अच्चेलक्कं लोचो वोसट्ठसरीरदा य पडिलिहणं।
एसो हु लिंगकप्पो चदुव्विधो होदि णायव्वो।।६१०।।

अच्चेलक्कुद्देसियसेज्जाहररायपिंडकिदियम्मं।
वदजेट्ठपडिक्कमणं मासं पज्जो समणकप्पो।।६११।।

रजसेदाणमगहणं मद्दवसुकुमालदा लहुत्तं च।
जत्थेदे पंचगुणा तं पडिलिहणं पसंसंति।।६१२।।

सुहुमाहु संति पाणा दुप्पेक्खा अक्खिणो अगेज्झा हु।
तह्मा जीवदयाए पडिलिहणं धारए भिक्खू।।६१३।।

उच्चारं पस्सवणं णिसि सुत्तो उट्ठिदो हु काऊण।
अप्पडिलिहिय सुवंतो जीववहं कुणदि णियदं तु।।६१४।।

ण य होदि णयणपीडा अच्छिं पि भमाडिदे दु पडिलेहे।
तो सुहुमादि लहुओ पडिलेहो होदि कायव्वो।।६१५।।

ठाणे चंकमणादाणे णिक्खेवे सयणआसणपयत्ते।
पडिलेहणेण पडिलेहिज्जइ लिंगं च होइ सपक्खे।।६१६।।

ठाणणिसिज्जागमणे जीवाणं हंति अप्पणो देहं।
दस कत्तरिठाणगदं णिपिच्छे णत्थि निव्वाणं।।*।।

पोसह उवहोपक्खे तह साहू जो करेदि णावाए।
णावाए कल्लाणं चादुम्मासेण णियमेण।।६१७।।

पिंडोवधि सेज्जाओ अविसोधिय जो य भुंजदे समणो।
मूलट्ठाणं पत्तो भुवणेसु हवे समणपोल्लो।।६१८।।

तस्स ण सुज्झइ चरियं तव संजमणिच्चकालपरिहीणं।
आवासयं ण सुज्झइ चिरपव्वइयो वि जइ होइ।।६१६।।

मूलं छित्ता समणो जो गिण्हादी य बाहिरं जोगं।
बाहिरजोगा सव्वे मूलविहूणस्स किं करिस्संति।।६२०।।

हंतूण य बहुपाणं अप्पाणं जो करेदि सप्पाणं।
अप्पासु असुहकंखी मोक्खं कंखी ण सो समणो।।६२१।।

एक्को वा वि तयो वा सीहो वग्घो मयो व खादिज्जो।
जदि खादेज्ज स णीचो जीवयरासिं णिहंतूण।।६२२।।

आरंभे पाणिवहो पाणिवहे होदि अप्पणो हु वहो।
अप्पा ण हु हंतव्वो पाणिवहो तेण मोत्तव्वो।।६२३।।

जो ठाणमोणवीरासणेहिं अत्थदि चउत्थछट्ठेहिं।
भुंजदि आधाकम्मं सव्वे वि णिरत्थ्या जोगा।।६२४।।

किं काहदि वणवासो सुण्णागारो य रुक्खमूलो वा।
भुंजदि आधाकम्मं सव्वे वि णिरत्थ्या जोगा।।६२५।।

किं तस्स ठाणमोणं किं काहदि अब्भोवगासमादावो।
मेत्तिविहूणो समणो सिज्झदि ण हु सिद्धिकंखो वि।।६२६।।

जह वोसरित्तु कत्तिं विसं ण वोसरदि दारुणो सप्पो।
तह को वि मंदसमणो पंच दु सूणा ण वोसरदि।।६२७।।

कंडणी पीसणी चुल्ली उदकुंभं पमज्जणी।
वीहेदव्वं णिच्चं ताहिं जीवरासीं से मरदि।।६२८।।

जो भुंजदि आधाकम्मं छज्जीवाणंघायणं किच्चा।
अवुहो लोलसजिब्भो ण वि समणो सावओ होज्ज।।६२६।।

पयणं व पायणं वा अणुमणचित्तो ण तत्थ बीहेदि।
जेमंतो वि सघादी ण वि समणो दिट्ठिसंपण्णो।।६३०।।

ण हु तस्स इमो लोओ ण वि परलोओ उत्तमट्ठभट्ठस्स।
लिंगग्गहणं तस्स दु णिरत्थयं संजमेण हीणस्स।।६३१।।

पायच्छित्तं आलोयणं च काऊण गुरुसयासम्मि।
तं चेव पुणो भुंजदि आधाकम्मं असुहकम्मं।।६३२।।

जो जत्थ जहा लद्धं गेण्हदि आहारमुवधिमादीयं।
समणगुणमुक्कजोगी संसार पवड्ढओ होइ।।६३३।।

पयणं पायणमणुमणणं सेवंतो ण विसंजदो होदि।
जेमंतो वि य जह्मा ण वि समणो संजमो णत्थि।।६३४।।

बहुगंपि सुदमधीदं किं काहदि अजाणमाणस्स।
दीवविसेसो अंधे णाणविसेसो वि तह तस्स।।६३५।।

आधाकम्मपरिणदो फासुगदव्वे दि बंधगो भणिदो।
सुद्धं गवेसमाणो आधाकम्मे वि सो सुद्धो।।६३६।।

भावुग्गमो य दुविहो पसत्थपरिणाम अप्पसत्थोत्ति।
सुद्धे असुद्धभावो होंदि उवट्ठावणं पायच्छित्तं।।६३७।।

फासुगदाणं फासुग उवधिं तह दो वि अत्तसोधीए।
जो देदि जो य गिण्हदि दोण्हं पि महप्फलं होई।।६३८।।

जोगेसु मूलजोगं भिक्खाचरियं च वण्णियं सुत्ते।
अण्णे य पुणो जोगा विण्णाणविहीणएहिं कया।।६३९।।

कल्लं कल्लं पिवरं आहारो परिमिदो पसत्थो य।
ण य खमणपारणाओ बहवो बहुसो बहुविधोय।।६४०।।

मरणभयभीरुआणं अभयं जो देदि सव्वजीवाणं।
तं दाणाण विदाणं तं पुण जोगेसु मूलजोगं पि।।६४१।।

सम्मादिट्ठिस्य वि अविरदस्स ण तवो महागुणो होदि।
होदि हु हत्थिण्हाणं चुंदच्छिदकम्म तं तस्स।।६४२।।

वेज्जादुर भेसज्जा परिचारय संपदा जहारोग्गं।
गुरुसिस्सरयणसाहण संपत्तीए तहा मोक्खो।।६४३।।

आइरिओ वि य वेज्जो सिस्सो रोगी दु भेसजं चरिया।
खेत्त बल काल पुरिसं णाऊण सणिं दढं कुज्जा।।६४४।।

भिक्खं सरीरजोग्गं सुभत्तिजुत्तेण फासुयं दिण्णं।
दव्वपमाणं खेत्तं कालं भावं च णादूण।।६४५।।

णवकोडी पडिसुद्धं फासुयसत्थं च एसणासुद्धं।
दस दोसविप्पमुक्कं चोद्दसमलवज्जियं भुंजे।।६४६।।

आहारे दु तवस्सी विगदिंगालं विगदधूमं च।
जत्तासाहण मेत्तं जवणाहारं विगदरागो।।६४७।।

ववहार सोहणाए परमट्ठाए तहा परिहरउ।
दुविहा चावि दुगंछा लोइय लोगुत्तरा चेव।।६४८।।

परमट्ठिठयं विसोहिं सुट्ठु पयत्तेण कुणइ पव्वइओ।
परमट्ठदुगंछा वि य सुट्ठु पयत्तेण परिहरउ।।६४६।।

संजममविराधंतो करेउ ववहार सोधणं भिक्खू।
ववहार दुगंछावि य परिहरउ वदे भभंजंतो।।६५०।।

जत्थ कसायुप्पत्तिर भत्तिंदयदारइत्थि जण बहुलं।
दुक्खमुवसग्गबहुलं भिक्खू खेत्तं विवज्जेज्ज।।६५१।।

गिरिकंदरं मसाणं सुण्णागारं च रुक्खमूलं वा।
ठाणं विरागबहुलं धोरो भिक्खु णिसेवेऊ।।६५२।।

णिवदिविहूणं खेत्तं णिवदी वा जत्थ दुट्ठओ होज्ज।
पव्वज्जा च ण लब्भइ संजमघादो य तं वज्जे।।६५३।।

णो कप्पदि विरदाणं विरदीणमुवासयह्मि चेट्ठेदुं।
तत्थ णिसेज्जउवट्टण सज्झायाहार वोसरणे।।६५४।।

होदिं दुगंछा दुविहा ववहारादो तधा य परमट्ठे।
पयदेण य परमट्ठे ववहारेण य तहा पच्छा।।६५५।।

वड्ढदि बोही संसग्गेण तह पुणो विणस्सेदि।
संसग्गविसेसेण दु उप्पलगंधो जहा कुंभो।।६५६।।

चंडो चवलो मंदो तह साहू पुट्ठिमंसपडिसेवी।
गारवकसायबहुलो दुरासओ होदि सो समणो।।६५७।।

वेज्जावच्चविहूणं विणयविहूणं च दुस्सुदिकुसीलं।
समणं विरागहीणं सुजमो साधू ण सेविज्ज।।६५८।।

दंभं परपरिवादं पिसुणत्तणपावसुत्तपडिसेवं।
चिरपव्वइदं पि मुणी आरंभजुदं ण सेविज्ज।।६५९।।

चिरपव्वइदं पि मुणी अपुट्ठधम्मं असंपुडं णीचं।
लोइय लोगुत्तरियं अयाणमाणं विवज्जेज्ज।।६६०।।

आयरियकुलं मुच्चा विहरदि समणो य जो दु एगागी।
ण य गेण्हदि उवदेसं पावस्समणोत्ति वुच्चदि दु।।६६१।।

आयरियत्तण तुरिओ पुव्वं सिस्सत्तणं अकाऊणं।
हिंडई ढुंढायरिओ णिरंकुसो मत्तहत्थिव्व।।६६२।।

अंबो णिवत्तणं पत्तो दुरासएण जहा तहा।
समणं मंदसंवेगं अपुट्ठधम्मं ण सेविज्ज।।६६३।।

विहेदव्वं णिच्चं दुज्जणवयणापलोट्ट जिब्भस्स।
वरणयरणिग्गमं पिव वयणकयारं वहंतस्स।।६६४।।

आयरियत्तणमुवणायइ जो मुणि आगमं ण याणंतो।
अप्पाणं पि विणासिय अण्णे वि पुणो विणासेई।।६६५।।

घोडयलद्दि समाणस्स बाहिरबगणिहुदकरणचरणस्स।
अब्भंतरम्हि कुहिदस्स तस्स दु किं वज्झजोगेहिं।।६६६।।

मा होह वासगणणा ण तत्थ वासाणि परिगणिज्जंति।
बहवो तिरत्तवुत्थासिद्धा धीरा विरग्गपरा समणा।।६६७।।

जोगणिमित्तं गहणं जोगो मणवयणकायसंभूदो।
भावणिमित्तो बंधो भावो रदिरागदोसमोहजुदो।।६६८।।

जीवपरिणामहेदू कम्मत्तणपोग्गला परिणमंति।
ण दु णाणपरिणदो पुण जीवो कम्मं समादियदि।।६६९।।

णाणविण्णाण संपण्णो झाणज्झणतवे जुदो।
कसायगारवुम्मुमुक्को संसारं तरदे लहुं।।६७०।।

सज्झायं कुव्वंतो पंचिंदिय संपुडो तिगुत्तो य।
हवदि य एयग्गमणो विणएण समाहिओ भिक्खू।।६७१।।

वारसविधह्मि य तवे सब्भंतरबाहिरे कुसलदिट्ठे।
ण वि अत्थि ण वि य होहदि सज्झायसमं तवो कम्मं।।६७२।।

सूई जहा ससुत्ता ण णस्सदि दु पमाददोसेण।
एवं ससुत्तपुरिसो ण वि णस्सदि तहा पमाददोसेण।।६७३।।

णिद्दं जिणेहि णिच्चं णिद्दा खलु णरमचेदणं कुणदि।
वट्टेज्ज हु पसुत्तो समणो सव्वेसु दोसेसु।।६७४।।

जहउसुगारो उसुमुज्जु करई संपिंडियेहिं णयणेहिं।
तह साहू भावेज्जो चित्तंएयग्ग भावेण।।६७५।।

कम्मस्स बंधमोक्खो जीवाजीवे य दव्वपज्जाए।
संसारसरीराणि य भोगविरत्तो सया झाहि।।६७६।।

दव्वे खेत्ते काले भावे य भवे य होंति पंचेव।
परिवट्टणाणि बहुसो अणादि काले य चिंतेज्जो।।६७७।।

मोहग्गिणा महंतेण दज्झमाणे महाजगे धीरा।
समणा विसयविरत्ता झायन्ति अणंतसंसारं।।६७८।।

आरंभं च कसायं च ण सहदि तवो तहा लोए।
अच्छी लवणसमुद्दो य कयारं खलु जहा दिट्ठं।।६७६।।

जह कोइ सट्ठिवरिसो तीसदिवरिसे णराहिवो जाओ।
उभयत्थ जम्मसद्दो वासविभागं विसेसेइ।।६८०।।

एवं तु जीव दव्वं अणाइणिहणं विसेसियं णियमा।
रायसरिसो दु केवलपज्जाओ तस्स दु विसेसो।।६८१।।

जीवो अणाइणिहणो जीवोत्ति य णियमदो ण वत्तव्वो।
जं पुरिसाउगजीवो देवाउगजीविद बिसिट्ठो।।६८२।।

संखेज्जमसंखेज्जमणंतकप्पं च केवलं णाणं।
तह रायदोसमोहा अण्णे वि य जीवपज्जाया।।६८३।।

आदा णाणपमाणं णाणं णेयप्पमाणमुद्दिट्ठं।
णेयं लोयालोयं तह्मा णाणं तु सव्वगदं।।*।।

अकसायं तु चरित्तं कसायवसिओ असंजदो होदि।
उवसमदि जह्मि काले तक्काले संजदो होदि।।६८४।।

वरं गणपवेसादो विवाहस्स पवेसणं।
विवाहे रागउप्पत्ती गणो दोसाणमागरो।।६८५।।

पच्चयभूदा दोसा पच्चयभावेण णत्थि उप्पत्ति।
पच्चयभावे दोसा णस्संति णिरासया जहा वीयं।।६८६।।

हेदू पच्चयभूदा हेदुविणासे विणासमुवयंति।
तह्मा हेदुविणासो कायव्वो सव्वसाहूहिं।।६८७।।

जं जं जे जे जीवा पज्जायं परिणमंति संसारे।
रागस्स य दोसस्सय य मोहस्स वसा मुणेयव्वा।।६८८।।

अत्थस्स जीवियस्स य जिब्भोवत्थाण कारणं जीवो।
मरदि य मारावेदि य अणंतसो सव्वकालं तु।।६८६।।

जिब्भोवत्थणिमित्तं जीवो दुक्खं अणदि संसारे।
पत्तो अणंतसो तो जिब्भोवत्थे जयह दाणिं।।६६०।।

चदुरंगुला ज जिब्भा असुहा चदुरंगुलो उवत्थो वि।
अट्ठंगुलदोसेण दु जीवो दुक्खं खु पप्पोदि।।६६१।।

बीहेदव्वं णिच्चं कट्ठत्थस्स वि तहित्थिरूवस्स।
हवदि य चित्तक्खोभो पच्चयभावेण जीवस्स।।६६२।।

घिदभरिदघडसरित्थो पुरिसो इत्थी बलंत अग्गिसमा।
तो महिलेयं दुक्का णट्ठा पुरिसा सिवं गया इयरे।।६६३।।

मायाए बहिणीए धूआए मूइ बुड्ढ इत्थीए।
बीहेदव्वं णिच्चं इत्थी रूवं णिरावेक्खं।।६६४।।

हत्थपादपरिच्छिण्णं कण्णणासवियप्पियं।
अविवास सदिं णारिं दूरदो परिवज्जए।।६६५।।

मण बंभचेर वचि बंभचेर तह काय बंभचेरं च।
अहवा हु बंभचेरं दव्वं भावं ति दुवियप्पं।।६६६।।

भावविरदो दु विरदो ण दव्वविरदस्स सुग्गई होई।
विसयवणरमणलोलो धरियव्वो तेण मणहत्थी।।६६७।।

पढमं विउलाहारं विदियं कायसोहणं।
तदियं गंधमल्लाइं चउत्थं गीयवाइयं।।६६८।।

तह सयण सोधणं पि य इत्थिसंसग्गं पि य अत्थसंगहणं।
पुव्वरदिसरणमिंदियविसयरदी पणिदरससेवा।।६६६।।

दसविहमब्बंभमिणं संसारमहादुहाणमावाहं।
परिहरइ जो महप्पा णो दढबंभव्वादो होदि।।१०००।।

कोहमदमायलोहेहिं परिग्गहे लयइ संसजइ जीवो।
तेणुभयसंगचाओ कायव्वो सव्वसाहूहिं।।१००१।।

णिस्संगो णिरारंभो भिक्खाचरियाए सुद्धभावो य।
एगागी झाणरदो सव्वगुणड्ढो हवे समणो।।१००२।।

णामेण जहा समणो ठावणिए तह य दव्वभावेण।
णिक्खेवो वीह तहा चदुव्विहो होइ णायव्वो।।१००३।।

भावसमणा हु समणा ण सेससमणाण सुग्गई जम्हा।
जहिऊण दुविहमुवहिं भावेण सुसंजदो होइ।।१००४।।

वदसीलगुणा जम्हा भिक्खाचरिया विसुद्धिए ठंति।
तम्हा भिक्खाचरियं सोहिय साहू सदा विहारिज्ज।।१००५।।

भिक्खं वक्कं हिययं सोधिय जो चरदि णिच्च सो साहू।
एसो सुट्ठिदं साहू भणिओ जिणसासणे भयवं।।१००६।।

दव्वं खेत्तं कालं भावं सत्तिं च सुट्ठुणाऊण।
झाणज्झयणं च तहा साहू चरणं समाचरऊ।।१००७।।

चाओ य होइ दुविहो संगच्चाओ कलत्तचाओ य।
उभयच्चायं किच्चा साहू सिद्धिं लहु लहदि।।१००८।।

पुढवीकादिग जीवा पुढवीए चावि अस्सिदा संति।
तह्मा पुढवीए आरम्भे णिच्चं विराहणा तेसिं।।१००९।।

आउकायिगा जीवा आऊं जे समस्सिदा।
दिट्ठा आउसमारंभे धुवा तेसिं विराधणा।।*।।

तेउकायिगा जीवा तेउं ते समस्सिदा।
दिट्ठा तेउसमारंभे धुवा तेसिं विराधणा।।*।।

वाउकायिगा जीवा वाउं ते समस्सिदा।
दिट्ठा वाउसमारंभे धुवा तेसिं विराधणा।।*।।

वणप्फदिकाइगा जीवा वणप्फदिं जे समस्सिदा।
दिट्ठा वणप्फदिसमारंभे धुवा तेसिं विराधणा।।*।।

जे तसकायिगा जीवा तसं जे समस्सिदा।
दिट्ठा तससमारंभे धुवा तेसिं विराधणा।।*।।

तम्हा पुठविसमारंभो दुविहो तिविहेण वि।
जिणमग्गाणुचारीणं जावज्जीवं ण कप्पदि।।1010।।

तम्हा आउसमारंभो दुविहो तिविहेण वि।
जिणमग्गाणुचारीणं जावज्जीवं ण कप्पदि।।*।।

तम्हा तेउसमारंभो दुविहो तिविहेण वि।
जिणमग्गाणुचारीणं जावज्जीवं ण कप्पदि।।*।।

तम्हा वाउसमारंभो दुविहो तिविहेण वि।
जिणमग्गाणुचारीणं जावज्जीवं ण कप्पदि।।*।।

तम्हा वणप्फदिसमारंभो दुविहो तिविहेण वि।
जिणमग्गाणुचारीणं जावज्जीवं ण कप्पदि।।*।।

तम्हा तससमारंभो दुविहो तिविहेण वि।
जिणमग्गाणुचारीणं जावज्जीवं ण कप्पदि।।*।।

जो पुढविकाइ जीवे णवि सद्दहदि जिणेहिं णिद्दिहे।
दूरत्थो जिणवयणे तस्स उवट्ठावणा णत्थि।।१०११।।

जो आउकाइगे जीवे णवि सद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते।
दूरत्थो जिनवयणे तस्सुववट्ठावणा णत्थि।।*।।

जो तेउकाइगे जीवे णवि सद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते।
दूरत्थो जिणवयणे तस्सु ववट्ठावणा णत्थि।।*।।

जो वाउकाइगे जीवे णवि सद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते
दूरत्थो जिणवयणे तस्सु ववट्ठावणा णत्थि।।*।।

जो वणप्फदिकाइगे जीवे णवि सद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते।
दूरत्थो जिणवयणे तस्सु ववट्ठावणा णत्थि।।*।।

जो तसकाइगे जीवे ण वि सद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते।
दूरत्थो जिणवयणे तस्सु ववट्ठावणा णत्थि।।*।।

जो पुढविकाय जीवे अइ सद्दहदे जिणेहिं पण्णत्ते।
उवलद्धपुण्णपावस्स तस्सुवट्ठावणा अत्थि।।१०१२।।

जो आउकाइगे जीवे अइसद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते।
उवलद्ध पुण्ण पावस्स तस्सु वव ट्ठावणा अत्थि।।*।।

जो तेउकाइगे जीवे अइसद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते।
उवलद्ध पुण्ण पावस्स तस्सु वव ट्ठावणा अत्थि।।*।।

जो वाउकाइगे जीवे अइसद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते।
उवलद्ध पुण्ण पावस्स तस्सु वव ट्ठावणा अत्थि।।*।।

जो वणप्फदिकाइगे जीवे अइसद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते।
उवलद्ध पुण्ण पावस्स तस्सु वव ट्ठावणा अत्थि।।*।।

जो तसकाइगे जीवे अइसद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते।
उवलद्धपुण्णपावस्स तस्सुववट्ठावणा अत्थि।।*।।

ण सद्दहदि जो एदे, जीवे पुढविदं गदे।
स गच्छे दिग्घमद्धाणं लिंगत्थो वि हु दुम्मदी।।१०१३।।

ण सद्दहदि जो एदे, जीवे आउतग्गदे।
स गच्छे दिग्घमद्धाणं लिंगत्थो वि हु दुम्मदी।।*।।

ण सद्दहदि जो एदे, जीवे तेउतग्गदे।
स गच्छे दिग्घमद्धाणं लिंगत्थो वि हु दुम्मदी।।*।।

ण सद्दहदि जो एदे, जीवे वाउतग्गदे।
स गच्छे दिग्घमद्धाणं लिंगत्थो वि हु दुम्मदी।।*।।

ण सद्दहदि जो एदे, जीवे वणप्फदितग्गदे।
स गच्छे दिग्घमद्धाणं लिंगत्थो वि हु दुम्मदी।।*।।

ण सद्दहदि जो एदे, जीवे तसतग्गदे।
स गच्छे दिग्घमद्धाणं लिंगत्थो वि हु दुम्मदी।।*।।

कधं चरे कधं चिट्ठे कधमासे कधं सये।
कधं भुंजेज्ज भासिज्ज कधं पावं ण बज्झदि।।१०१४।।

जदं चरे जदं चिट्ठे जदमासे जदं सये।
जदं भुंजेज्ज भासेज्ज एवं पावं ण बज्झइ।।१०१५।।

जदं तु चरमाणस्य दयापेहुस्स भिक्खुणो।
णवं ण बज्झदे कम्मं पोराणं च विधूयदि।।१०१६।।

जदं तु चिट्ठमाणस्स दयापेक्खिस्स भिक्खुणो।
णवं ण बज्झदे कम्मं पोराणं च विधू यदि।।*।।

जदं तु आसमाणस्स दयापेक्खिस्स भिक्खुणो।
णवं ण बज्झदे कम्मं पोराणं च विधूयदि।।*।।

जदं तु सयमाणस्स दयापेक्खिस्स भिक्खुणो।
णवं ण बज्झदे कम्मं पोराणं च विधूयदि।।*।।

जदं तु भुंजमाणस्स दयापेक्खिस्स भिक्खुणो।
णवं ण बज्झदे कम्मं पोराणं च विधूयदि।।*।।

जदं तु भासमाणस्स दयापेक्खिस्स भिक्खुणो।
णवं ण बज्झदे कम्मं पोराणं च विथूयदि।।*।।

दव्वं खेत्तं कालं भावं च पडुच्च तह य संघडणं।
चरणम्हि जो पवट्टइ कमेण सो णिरवहो होइ।।*।।

एवं विहाण चरियं जाणित्ता आचरिज्ज जो भिक्खू।
णासेऊण दु कम्मं दुविहं पि य लहु लहइ सिद्धिं।।१०१७।।

तित्थयरकहियमत्थं गणधररचियं जदीहिं अणुचरिदं।
णिव्वाणहेदुभूदं सुदमहमखिलं पणिवदामि।।*।।

सीलगुणालयभूदे कल्लाणविसेसपाडिहेरजुदे।
वंदित्ता अरहंते सीलगुणे कित्तइस्सामि।।१०१८।।

जोए करणे सण्णा इंदिय भोम्मादि समणधम्मे य।
अण्णोण्णेहिं अभत्था अट्ठारहसील सहस्साइं।।१०१९।।

तिण्हं सुहसंजोगो जोगो करणं च असुहसंजोगो।
आहारादी सण्णा फासादिय इंदिया णेया।।१०२०।।

पुढविदगागणिमारुदपत्तेयअणंतकायिया चेव।
विगतिगचदुपंचेंदिय भोम्मादि हवंति दस एदे।।१०२१।।

खंती मद्दव अज्जव लाघव तव संजमो अंकिचणदा।
तह होदि बंभचेरं सच्चं चागो य दस धम्मा।।१०२२।।

मणगुत्ते मुणिवसहे मणकरणोम्मुक्कसुद्धभावजुदे
आहारसण्णविरदे फासिंदियसंपुडे चेव।।१०२३।।

पुढवीसंजमजुत्ते खंतिगुणसंजुदे पढमसीलं।
अचलं ठादि विसुद्धे तहेव सेसाणि णेयाणि।।१०२४।।

इगवीस चतुर सदिया दस दस दसगा य आणुपुव्वीय।
हिंसादिक्कमकाया विराहणा लोयणा सोही।।१०२५।।

पाणिवह मुसावादं अदत्त मेहुण परिग्गहं चेव।
कोहमदमायलोहा भय अरदि रदी दुगुंछा य।।१०२६।।

मणवयणकायमंगुल मिच्छादंसण पमादो य।
पिसुणत्तणमण्णाणं अणिग्गहो इंदियाणं च।।१०२७।।

अदिकमणं वदिकमणं अदिचारो तहेव अणाचारो।
एदेहिं चदूहि पुणो सावज्जो होइ गुणियव्वो।।१०२८।।

पुढविदगागणिमारुयपत्तेयअणंतकाइया चेव।
वियतियचदुपंचिंदिय अण्णोण्णवधाय दस गुणिदा।।१०२६।।

इत्थीसंसग्गी पणिदरसभोयण गंधमल्लसंठप्पं।
सयणासणभूसणयं छट्ठं पुण गीयवाइयं चेव।।१०३०।।

अत्थस्स संपओगो कुसीलसंसग्गि रायसेवा य।
रत्ती वि य संयरणं दस सीलविराहणा भणिया।।१०३१।।

आकंपिय अणुमाणिय जं दिट्ठं वादरं च सुहुमं च।
छण्णं सद्दाकुलियं बहुजणमव्वत्त तस्सेवी।।१०३२।।

आलोयण पडिकमणं उभय विवेगो तधा विउस्सग्गो।
तव छेदो मूलं पि य परिहारो चेव सद्दहणा।।१०३३।।

पाणादिवादविरदे, अदिकमणदोसकरणउम्मुक्के।
पुढवीए पुढवीपुण रारंभसुसंजदे धीरे।।१०३४।।

इत्थीसंसग्गविजुदे आकंपियदोसकरणउम्मुक्के।
आलोयणसोधिजुदे आदिगुणो सेसया णेया।।१०३५।।

सीलगुणाणं संखा पत्थारो अक्खसंकमो चेव।
णट्ठं तह उद्दिट्ठं पंच वि वत्थूणि णेयाणि।।१०३६।।

सव्वेपि पुव्वभंगा उवरिमभंगेसु एक्कमेक्केसु।
मेलंतेत्तिय कमसो गुणिदे उप्पज्जदे संखा।।१०३७।।

पढमं सीलपमाणं कमेण णिक्खिविय उवरिमाणं च।
पिंड पडि एक्केक्कं णिक्खित्ते होइ पत्थारो।।१०३८।।

णिक्खित्तु विदियमेत्तं पढमं तस्सुवरि विदियमेक्केक्कं।
पिंडं पडि णिक्खित्ते तहेव सेसावि कादव्वा।।१०३६।।

पढमक्खे अंतगदे आदिगदे संकमेदि विदियक्खो।
दोण्णिवि गंतूणंतं आदिगदे संकमेदि तदियक्खो।।१०४०।।

सगमाणेहिं विहत्ते सेसं लक्खित्तु संखिवे रूवं।
लक्खिज्जंतं सुद्धे एवं सव्वत्थ कायव्वं।।१०४१।।

संठाविऊण रूवं उवरीदो संगुणित्तु सगमाणे।
अवणिज्ज अणंकिदयं कुज्जा पढमंति याचेव।।१०४२।।

एवं सीलगुणाणं सुत्तत्थवियप्पदो विजाणित्ता।
जो पालेदि विसुद्धो सो पावदि सव्वकल्लाणं।।१०४३।।

सो मे तिहुवणमहिदो सिद्धो बुद्धो णिरंजणो णिच्चो।
दिसदु वरणाणलाह चरित्त सुद्धिं समाधिं च।।*।।

काऊण णमोक्कारं सिद्धाणं कम्मचक्कमुक्काणं।
पज्जत्तीसंगहणी वोच्छामि जहाणुपुव्वीयं।।१०४४।।

पज्जत्ती देहो वि य संठाणं कायइंदियाणं च।
जोणी आउपमाणं जोगो वेदो य लेस पविचारो।।१०४५।।

उववादो य उव्वट्टण ठाणं च कुलं च अप्पबहुलो य।
पयडिट्ठिदि अणुभागप्पदेसबंधो य सुत्तपदा।।१०४६।।

आहारे य सरीरे तह इंदिय आणपाणभासाए।
होंति मणो वि य कमसो पज्जत्तीओ जिणक्खादा।१०४७।।

एइंदियसु चत्तारि होंति तह आदिदो य पंच भवे।
वेइंदियादियाणं पज्जत्तीओ असण्णित्ति।।१०४८।।

छप्पि य पज्जत्तीओ बोधव्वा होंति सण्णिकायाणं।
एदाहि अणिव्वत्ता ते दु अपज्जत्तया होंति।।१०४६।।

पज्जत्तीपज्जत्ता भिण्णमुहुत्तेण होंति णायव्वा।
अणुसमयं पज्जत्ती सव्वेसिं चोववादीणं।।१०५०।।

जह्मि विमाणे जादो उववादसिला महारहे सयणे।
अणुसमयं पज्जत्तो देवो दिव्वेण रूवेण।।१०५१।।

देहस्स य णिव्वत्ती भिण्णमुहुत्तेण होइ देवाणं।
सव्वंगभूसणगुणं जोव्वणमवि होदि देहम्मि।।१०५२।।

कणयमिव णिरुवलेवा णिम्मलगत्ता सुयंधणीसासा।
अणादिवरचारुरूवा समचउरंसोरूसंठाणं।।१०५३।।

केसणहमंसुलोमा चम्मवसारुहिरमुत्तपुरिसं वा।
णेवट्ठी णेव सिरा देवाण सरीरसंठाणे।।१०५४।।

वरवण्णगंधरसफासादिव्व बहुपोग्गलेहिं णिम्माणं।
गेण्हदि देवो देहं सुचरिदकम्माणु भावेण।।१०५५।।

वेउव्वियं सरीरं देवाणं माणुसाण संठाणं।
सुहणाम पसत्थगदी सुस्सरवयणं सुरूवं च।।१०५६।।

पढमाए पुढवीए णेरइयाणं तु होइ उस्सेहो।
सत्तधणु तिण्ण रयणी य छच्चेव अंगुला होंति।।१०५७।।

विदियाए पुढवीए णेरइयाणं तु होइ उस्सेहो।
पण्णरस दोणि बारस धणुरदणी अंगुला चेव।।१०५८।।

तदियाए पुढवीए णेरइयाणं तु होइ उस्सेहो।
एकत्तीसं च धणु एगा रदणी मुणेयव्वा।।१०५६।।

चउथीए पुढवीए णेरइयाणं तु होइ उस्सेहो।
बासट्ठी चेव धणू वे रदणी होंति णायव्वा।।१०६०।।

पंचमिय पुढवीए णेरइयाणं तु होइ उस्सेहो।
सदमेगं पणवीसं धणुप्पमाणेण णादव्वं।।१०६१।।

छट्ठीए पुढवीए णेरइयाणं तु होइ उस्सेहो।
दोण्णि सदा पण्णासा धणुप्पमाणेण विण्णेया।।१०६२।।

सत्तमिए पुढवीए णेरइयाणं तु होइ उस्सेहो।
पंचेव धणुसयाइं पमाणदो चेव बोधव्वो।।१०६३।।

पणवीसं असुराणं सेसकुमाराण दसधणू चेव।
विंतरजोइसियाणं दस सत्त धणू मुणेयव्वा।।१०६४।।

छद्धणुसहसुस्सेधं चदु दुगमिच्छंति भोगभूमीसु।
पणवीसं पंचसदा बोधव्वा कम्मभूमीसु।।१०६५।।

सोहम्मीसाणेसु य देवा खलु होंति सत्तरयणीओ।
छच्चेव य रयणीओ सणक्कुमारे हि माहिंदे।।१०६६।।

बंभे य लंतवे वि य कल्पे खलु होति पंच रयणीओ।
चत्तारि य रयणीओ सुक्कसहस्सार कप्पेसु।।१०६७।।

आणदपाणदकप्पे अद्धुद्धाओ हवंति रयणीओ।
तिण्णेव य रयणीओ बोधव्वा आरणच्चुदे चावि।।१०६८।।

हेट्ठिमगेवज्जेसु य अट्ठाइज्जा हवंति रयणीओ।
मज्झिमगेवज्जेसु य बे रयणी होंति उस्सेहो।।१०६९।।

उवरिमगेवज्जेसु य दिवड्ढरयणी हवे य उस्सेहो।
अणुदिसणुत्तरदेवा एया रयणी सरीराणि।।१०७०।।

भागमसंखेज्जदिमं जं देहं अंगुलस्स तं देहं।
एइंदियादिपंचेंदियंतदेहं पमाणेण।।१०७१।।

साहियसहस्समेयं तु जोयणाणं हवेज्ज उक्कस्सं।
एयंदियस्स देहं ते पुण पउमत्ति णादव्वं।।१०७२।।

संखो पुण बारस जोयणाणि गोम्भी भवे तिकोसं तु।
भमरो जोयणमेत्तं मच्छो पुण जोयणसहस्सं।।१०७३।।

जंबूदीवपरिहिओ तिण्णिव लक्खं च सोलहसहस्सं।
बे चेव जोयणसया सत्तावीसा य होंति बोधव्वा।।१०७४।।

तिण्णेव गाउआइं अट्ठावीसं च धणुसयं भणियं।
तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलमेव सविसेसं।।१०७५।।

जंबूदीवो धादइसंडो पुक्खरवरो य तह दीवो।
वारुणिवर खीरवरो य घिदवरो खोदवरदीवो।।१०७६।।

णंदीसरो य अरुणो अरुणब्भासो य कुंडलवरो य।
संखवर रुजगभुजगवर कुसवर कुंचवरदीवो।।१०७७।।

एवं दीवसमुद्दा दुगुणदुगुणवित्थडा असंखेज्जा।
एदे दु तिरियलोए सयंभुरमणोदहिं जाव।।१०७८।।

जावदिया उद्धारा अड्ढाइज्जाण सागरुवमाणं।
तावदिया खलु रोमा हवंति दीवा समुद्दाय।।१०७६।।

जंबूदीवो लवणो धादइसंडे य काल उदधी य।
सेसाणं दीवाणं दोवसरिसणामया उदधी।।१०८०।।

पत्तेयरसा चत्तारि सायरा तिण्णि होंति उदयरसा।
अवसेसा य समुद्दा खोद्दरसा होंति णायव्वा।।१०८१।।

वारुणिवर खीरवरो घदवर लवणो य होंति पत्तेया।
कालो पुक्खर उदधी सयंभुरमणो य उदयरसा।।१०८२।।

लवणे कालसमुद्दे सयंभुरमणे य होंति मच्छा दु।
अवसेसेसु समुद्देसु णत्थि मच्छा य मयरा वा।।१०८३।।

अट्ठारस जोयणिया लवणे णवजोयणा णदिमुहेसु।
छत्तीसगा य कालोदहिम्मि अट्ठारस णदिमुहेसु।।१०८४।।

साहस्सिया दु मच्छा सयंभुरमणह्मि पंचसदिया दु।
देहस्स सव्वहस्सं कुंथुपमाणं जलचरेसु।।१०८५।।

जलथलखगसम्मुच्छिमतिरिय अपज्जत्तया विहत्थी दु।
जलसम्मुच्छिम पज्जत्तयाण तह जोयण सहस्सं।।१०८६।।

जलथलगब्भअपज्जत्त खगथलसंमुच्छिमा य पज्जत्ता।
खगगब्भजा य उभये उक्कस्सेण धणुपुहत्तं।।१०८७।।

जलगब्भजपज्जत्ता उक्कस्सं पंचजोयणसयाणि।
थलगब्भजपज्जत्ता तिगाउदोक्कस्समायामो।।१०८८।।

अंगुलअसंखभाग बादरसुहुमा य सेसया काया।
उक्कसस्सेण दु णियमा मणुगा य तिगाउ उव्विद्धा।।१०८९।।

सुहुमणिगोद अपज्जत्तयस्स जादस्स तदियसमयह्मि।
हवदि दु सव्वजहण्णं सव्वुक्कस्सं जलचराणं।।१०९०।।

मसुरिय कुसग्गविंदू सूइकलावा पडाय संठाणा।
कायाणं संठाणं हरिदतसा णेगसंठाणा।।१०९१।।

समचउरसणग्गोहासादिय खुज्जा य वामणा हुंडा।
पंचेंदिय तिरियणरा देवा चउरस्स णारया हुंडा।।१०९२।।

जवणालिया मसूरी अत्तिमुत्तय चंदए खुरप्पे च।
इंदियसंठाणा खलु फसस्स अणेयसंठाणं।।१०९३।।

चत्तारि धणुसदाइं चउसट्ठी धणुसयं च फस्सरसे।
गंधे य दुगुणदुगुणा असण्णिपंचिंदिया जाव।।१०९४।।

इगुणतीसजोयणसदाइं चउवण्णाय होइ णायव्वा।
चउरिंदियस्स णियमा चक्खुप्फासं वियाणाहि।।१०९५।।

उणसट्ठि जोयणसदा अट्ठेवय होंति तह य णायव्वा।
असण्णिपंचेंदीए चक्खुप्फासं वियणाहि।।१०९६।।

अट्ठेव धणुसहस्सा सोदप्फासं असण्णिणो जाण।
विसयावि य णायव्वा पोग्गलपरिणामजोगेण।।१०९७।।

फासे रसे य गंधे विसया णव जोयणा य णायव्वा।
सोदस्स दु वारसजोयणाणिदो चक्खुसो वोच्छं।।१०९८।।

सत्तेतालसहस्सा वे चेव सदा हवंति तेसट्ठी।
चक्खिंदिअस्स विसओ उक्कस्सो होदि अदिरित्तो।।१०९९।।

अस्सीदिसदं विगुणं दीवविसेसस्स वग्ग दहगुणियं।
मूलं सट्ठिविहत्तं दिणद्धमाणाहतं चक्खू।।११००।।

एइंदिय णेरइया संपुडजोणी हवंति देवा य।
वियलिंदिया य वियडा संपुडवियडा य गब्भेसु।।११०१।।

अच्चित्ता खलु जोणी णेरइयाणं च होइ देवाणं।
मिस्सा य गब्भजम्मा तिविहा जोणी दु सेसाणं।।११०२।।

सीदुण्हा खलु जोणी णेरइयाणं तहेव देवाणं।
तेऊण उसिणजोणी तिविहा जोणी दु सेसाणं।।११०३।।

संखावत्तयजोणी कुम्मुण्णदवंसपत्तजोणी य।
तत्थ य संखावत्ते णियमा दु विवज्जए गब्भो।।११०४।।

कुम्मुण्णदजोणीए तित्थयरा दुविह चक्कवट्टी य।
रामावि य जायंते सेसा सेसेसु जोणीसु।।११०५।।

णिच्चिदर धादु सत्त य तरु दस विगलिंदियेसु छच्चेव।
सुरणरतिरिए चउरो चोद्दस मणुएसु सदसहस्सा।।११०६।।

बारसवाससहस्सा आऊ सुद्धेसु जाण उक्कस्सं।
खरपुढविकायगेसु य वाससहस्साणि बावीसा।।११०७।।

सत्त दु वाससहस्सा आऊ आउस्स होइ उक्कस्सं।
रत्तिंदियाणि तिण्णिदु तेऊणं होइ उक्कस्सं।।११०८।।

तिण्णि दु वाससहस्सा आऊ वाउस्स होइ उक्कस्सं।
दस वाससहस्साणि दु वणप्फदीणं तु उक्कस्सं।।११०९।।

बारस वासा वेइंदियाण मुक्कस्सं भवे आऊ।
राइंदियाणि तेइंदियाण मुगुवण्ण उक्कस्सं।।१११०।।

चउरिंदियाणमाऊ उक्कस्सं खलु हवेज्ज छम्मासं।
पंचेंदियाणमाऊ एत्तो उड्ढं पवक्खामि।।१११११।।

मच्छाण पुव्वकोडी परिसप्पाणं तु णवय पुव्वंगा।
बादाली ससहस्सा उरगाणं होइ उक्कस्सं।।१११२।।

पक्खीणं उक्कस्सं वाससहस्सा बिसत्तरी होंति।
एगा य पुव्वकोडी असण्णीणं तह य कम्मभूमीणं।।१११३।।

हेमवदवंसयाणं तहेव हेरण्णवंसवासीणं।
मणुसेसु य मेच्छाणं हवदि तु पलिदोपमं एक्कं।।१११४।।

हरिरम्मयवंसेसु य हवंति पलिदोवमाणि खलु दोण्णि।
तिरिएसु य सण्णीणं तिण्णि य तह कुरुवगाणं च।।१११५।।

देवेसु णारयेसु य तेत्तीसं होतिं उदधिमाणाणि।
उक्कस्सयं तु आऊ वाससहस्सा दस जहण्णा।।१११६।।

एकं च तिण्णि सत्त य दस सत्तरसेव होंति बावीसा।
तेसीसमुदधिमाणा पुढवीण ठिदीणमुक्कस्सं।।१११७।।

पढमादियमुक्कस्सं विदियादिसु साधियं जहण्णत्तं।
घम्माय भवणविंतर वाससहस्सा दस जहण्णां।।१११८।।

असुरेसु सागरोवम तिपल्ल पल्लं च णाग भोमाणं।
अद्धादिज्ज सुवण्णा दु दीव सेसा दिवड्ढं तु।।१११९।।

पल्लट्ठभाग पल्लं च साधियं जोदिसाण जहण्णिदरं।
हेट्ठिल्लुकस्सठिदी सक्कादीणं जहण्णा सा।।११२०।।

वे सत्त दसय चोद्दस सोलस अट्ठार वीस बावीसा।
एयाधिया य एत्तो सक्कादिसु सागरुवमाणं।।११२१।।

पंचादी वेहिं जुदा सत्तावीसा य पल्ल देवीणं।
तत्तो सुत्तत्तरिया जाव दु अरणप्पयं कप्पं।।११२२।।

पणयं दस सत्तधियं पणवीसं तीसमेव पंचधियं।
चत्तालं पणदालं पण्णाओ पण्णपण्णाओ।।११२३।।

चंदस्स सदसहस्सं सहस्स रविणो सदं च सुक्कस्स।
वासाधिए हि पल्लं लेहिट्ठं वरिसणामस्स।।११२४।।

सेसाणं तु गहाणं पल्लद्धं आउग मुणेयव्वं।
ताराणं च जहण्णं पादद्धं पादमुक्कस्सं।।११२५।।

सव्वेसिं अमणाणं भिण्णमुहुत्तं हवे जहण्णेण।
सोवक्कमाउगाणं सण्णीणं चावि एमेव।।११२६।।

संखेज्जमसंखेज्जं विदियं तदियमणंतयं वियाणाहि।
तत्थ य पढमं तिविहं णवहा णवहा हवे दोण्णि।।११२७।।

पल्लो सायर सूई पदरो य धणंगुलो य जगसेढी।
लोगपदरो य लोगो अट्ठ दु माणा मुणेयव्वा।।११२८।।

वेइंदियादि भासा भासा य मणो य सण्णिकायाणं।
एइंदिया य जीवा अमणा य अभासया होंति।।११२९।।

एइंदिया वियलिंदिय णारय सम्मुच्छिमा य खलु सव्वे।
वेदे णपुंसगा ते णादव्वा होंति णियमादु।।११३०।।

देवा य भोगभूमा असंखवासाउगा मणुय तिरिया।
ते होंति दोसुभेदेसु णत्थि तेसिं तदियवेदो।।११३१।।

पंचेंदिया दु सेसा सण्णि असण्णीय तिरिय मणुसा य।
ते होंति इत्थिपुरिसा णपुंसगा चावि वेदेहिं।।११३२।।

आ ईसाणा कप्पा उववादो होइ देवदेवीणं।
तत्तो परं तु णियमा उववादो होइ देवाणं।।११३३।।

जावदु आरणअच्चुद गमणागमणं च होइ देवीणं।
तत्तो परं तु णियमा देवीणं णत्थि से गमणं।।११३४।।

कंदप्पमाभिजोगा देवीओ चावि आरणचुदोत्ति।
लंतवगादो उवरिं ण संति संमोहखिब्भिसया।।११३५।।

काऊ काऊ तह काउणील णीला य णीलकिण्हा य।
किण्हाय परमकिण्हा लेस्सा रदणादि पुढवीसु।।११३६।।

तेऊ तेऊ तह तेऊ पम्म पम्मा य पम्मसुक्का य।
सुक्का य परमसुक्का लेस्साभेदो मुणेयव्वो।।११३७।।

तिण्हं दोण्हं दोण्हं छण्हं दोण्हं च तेरसण्हं च।
एतो य चोदसण्हं लेस्सा भवणादिदेवाणं।।११३८।।

एइंदियवियलिंदियअसण्णिणो तिण्णि होंति असुहाओ।
संखादीदाऊणं तिण्णि सुहा छप्पि सेसाणं।।११३९।।

कामा दुवे तिओ भोग इंदियत्था विदूहिं पण्णत्ता।
कामो रसो य फासो सेसा भोगेति आहीया।।११४०।।

आईसाणा कप्पा देवा खलु होंति कायपडिचारा।
फासप्पडिचारा पुण सणक्कुमारे य माहिंदे।।११४१।।

बंभे कप्पे बंभुत्तरे य तह लंतवे य कापिट्ठे।
एदेसु य जे देवा बोधव्वा रूवपडिचारा।।११४२।।

सुक्कमहासुक्केसु य सदारकप्पे तहा सहस्सारे।
कप्पे एदेसु सुरा बोधव्वा सद्दपडिचारा।।११४३।।

आणदपाणदकप्पे आरणकप्पे य अच्चुदे य तहा।
मणपडिचारा णियमा एदेसु य होंति जे देवा।।११४४।।

तत्तो परं तु णियमा देवा खलु होंति णिप्पडीचारा।
सप्पडिचारेहिं वि ते अणंतगुणसोक्खसंजुत्ता।।११४५।।

जं च कामसुहं लोए जं च दिव्वमहासुहं।
वीदरागसुहस्सेदे णंतभागंपि णग्घंदि।।११४६।।

जदि सागरोवमाओ तदि वाससहस्सियादु आहारो।
पक्खेहिं दु उस्सासो सागरसमयेहिं चेव भवे।।११४७।।

उक्कस्सेणाहारो वाससहस्साहिएण भवणाणं।
जोदिसियाणं पुण भिण्णमुहुत्तेणेदि सेस उक्कस्सं।।११४८।।

उक्कस्सेणुस्सासो पक्खेणहिएण होइ भवणाणं।
मुहुत्तपुधत्तेण तहा जोइसणागाण भोमाणं।।११४६।।

मोत्तूण मणोहारं आहारो होइ सव्वजीवाणं।
अणुसमयं अणुसमयं पोग्गलमइयो य णादव्वो।।*।।

अमयं दिव्वाहारो मदुजीवणियं च कदसणाहारो।
देवाण भोगभूमाणं चक्कवट्टीणं मणुयाणं।।*।।

सक्कीसाणा पढमं विदियं तु सणक्कुमारममाहिंदा।
बंभालंतव तदियं सुक्कसहस्सारया चउत्थी दु।।११५०।।

पंचमि आणदपाणद छट्ठी आरणच्चुदा य पस्संति।
णवगेवज्जा सत्तमि अणुदिस अणुत्तरा य लोगंतं।।११५१।।

पणवीस जोयणाणं ओही विंतरकुमारवग्गाणं।
संखेज्जजोयणोही जोदिसियाणं जहण्णं तु।।११५२।।

असुराणमसंखेज्जा कोडी जोइसिय सेसाणं।
संखादीदा य खलु उक्कस्सोहीयविसओ दु।।११५३।।

रयणप्पहाए जोयणमेयं ओहीविसओ मुणेयव्वो।
पुढवीदो पुढवीदो गाऊ अद्धद्ध परिहाणी।।११५४।।

पढमं पुढविमसण्णी पढमं विदियं च सरिसवा जंति।
पक्खी जावदु तदियं जाव चउत्थी दु उरसप्पा।।११५५।।

आ पंचमित्ति सीहा इत्थीओ जंति छट्ठिपुढवित्ति।
गच्छंति माघवीत्ति य मच्छा मणुया य ये पावा।।११५६।।

उव्वट्टिदाय संता णेरइया तमतमादु पुढवीदो।
ण लहंति माणुसत्तं तिरिक्खजोणीमुवणयंति।।११५७।।

वालेसु य दाढीसु य पक्खीसु य जलचरेसु उववण्णा।
संखेज्जआउठिदिया पुणेवि णिरयावहा होंति।।११५८।।

छट्ठीदो पुढवीदो उव्वट्टिदा अणंतरभवम्हि।
भज्जा माणुसलंभे संजमलंभेण दु विहीणा।।११५९।।

होज्जदु संजमलाभो पंचमखिदिणिग्गदस्स जीवस्स।
णत्थि पुण अंतकिरिया णियमा भवसंकिलेसेण।।११६०।।

होज्जदु णिव्वुदिगमणं चउत्थिखिदिणिग्गदस्स जीवस्स।
णियमा तित्थयरत्तं णत्थित्ति जिणेहिं पण्णत्तं।।११६१।।

तेण परं पुढवीसु य भजणिज्जा उवरिमा हुणेरइया।
णियमा अणंतरभवे तित्थयरत्तस्स उप्पत्ती।।११६२।।

णिरयेहिं णिग्गदाणं अणंतरभवम्हि णत्थि णियमादो।
बलदेववासुदेवत्तणं च तह चक्कवट्टित्तं।।११६३।।

उववादोवट्टणमा णेरइयाणं समासदो भणिओ।
एत्तो सेसाणं पिय आगदिगदिमो पवक्खामि।।११६४।।

सव्वमपज्जत्ताणं सुहुमकायाण सव्वतेऊणं।
वाऊणमसण्णीणं आगमणं तिरियमणुसेहिं।।११६५।।

तिण्हं खलु कायाणं तहेव विगलिंदियाण सव्वेसिं।
अविरुद्धं संकमणं माणुसतिरिएसु य भवेसु।।११६६।।

सव्वेवि तेउकाया सव्वे तह वाउकाइया जीवा।
ण लहंति माणुसत्तं णियमादु अणंतर भवेहिं।।११६७।।

पत्तेयदेह वणप्फइ वादरपज्जत्त पुढवि आऊय।
माणुसतिरिक्खदेवेहिं चेवआंइति खलु एदे।।११६८।।

अविरुद्धं संकमणं असण्णिपज्जत्तयाण तिरियाणं।
माणुसतिरिक्खसुरणारएसु ण दु सव्वभावेसु।।११६९।।

णिरयेसु पढमणिरये तिरिए मणुएसु कम्मभूमीसु।
हीणेसु य उप्पत्ती अमराणं भवणावेंतरेसु तथा।।*।।

संखादीदाओ खलु माणुसतिरिया दु मणुयतिरियेहिं।
संखिज्जआउगेहिं दु णियमा सण्णीय आयंति।।११७०।।

संखादीदाऊणं संकमणं णियमदो दु देवेसु।
पयडीए तणुकसाया सव्वेसिं तेण बोधव्वा।।११७१।।

माणुस तिरियाय तहा सलागपुरिसा ण होंति खलु णियमा।
तेसिं अणंतर भवे भजणिज्जं णिव्वुदी गमणं।।११७२।।

सण्णि असण्णीणतहा वाणेसु य तह य भवणवासीसु।
उववादो वोधव्वो मिच्छादिट्ठीण णियमादु।।११७३।।

संखादीदाऊणं मणुयतिरिक्खाण मिच्छभावेण।
उववादो जोदिसिए उक्कस्सं तावसाणं दु।।११७४।।

परिवायगाण णियमा उक्कस्सं होदि वंभलोगह्मि।
उक्कस्सं सहस्सार त्ति होदी य आजीवगाण तहा।।११७५।।

तत्तो परं तु णियमा उववादो णत्थि अण्णलिंगीणं।
णिग्गंथसावगाणं उववादो अच्चुदं जाव।।११७६।।

जा उवरिमगेवेज्जं उववादो अभवियाण उक्कस्सो।
उक्कट्ठेण तवेण दु णियमा णिग्गंथलिंगेण।।११७७।।

तत्तो परं तु णियमा तवदंसणणाणचरण जुत्ताणं।
णिग्गंथाणुववादो जावदु सव्वट्ठसिद्धित्ति।।११७८।।

आईसाणा देवा चएतु एइंदिएत्तणे भज्जा।
तिरियत्तमाणुसत्ते भयणिज्जा जाव सहसारा।।११७६।।

तत्तो परं तु णियमा देवावि अणंतरे भवे सव्वे।
उववज्जंति मणुस्से ण तेसिं तिरिएसु उववादो।।११८०।।

आजोदिसं ति देवा सलागपुरिसा ण होंति ते णियमा।
तेसिं अणंतरभवे भजणिज्जं णिव्वुदीगमणं।।११८१।।

तत्तो परं तु गेवेज्जं भजणिज्जा सलागपुरिसा दु।
तेसिं अणंतरभवे भजणिज्जा णिव्वुदीगमणं।।११८२।।

णिव्वुदिगमणे रामत्तणे य तित्थयरचक्कवट्टित्ते।
अणुदिसणुत्तरवासी तदो चुदा होंति भयणिज्जा।।११८३।।

सव्वट्ठादो य चुदा भज्जा तित्थयरचक्कवट्टित्ते।
रामत्तणेण भज्जा णियमा पुण णिव्वुदिं जंति।।११८४।।

सक्को सहग्गमहिसी सलोगपाला य दक्खिणिंदा य।
लोगंतिगा य णियमा चुदा दु खलु णिव्वुदिं जंति।।११८५।।

एवं तु सारसमए भणिदा दु गदागदी मया किंचि।
णियमादु मणुसगदिए णिव्वुदिगमणं अणुण्णादं।।११८६।।

सम्मद्दंसणणाणेहिं भाविदा सयलसंजमगुणेहिं।
णिट्ठवियसव्वकम्मा णिग्गंथा णिव्वुदिं जंति।।११८७।।

ते अजरमरुजममरमसरीरमक्खयमणुवमं सोक्खं।
अव्वाबाधमणंतं अणागदं कालमत्थंति।।११८८।।

एइंदियादि पाणा चोद्दस दु हवंति जीवठाणाणि।
गुणठाणाणि य चोद्दस मग्गणठाणाणिवि तहेव।।११८९।।

गदिआदिमग्गणाओ परूविदाओ य चोद्दसा चेव।
एदेसिं खलु भेदा किंचि समासेण वोच्छामि।।११९०।।

एइंदियादि जीवा पंचविधा भयवदा दु पण्णत्ता।
पुढवीकायादीदा विगला पंचेंदिया चेव।।११९१।।

संखो गोभी भमरादिया दु विगलिंदिया मुणोदव्वा।
पंचेदिया दु जलथलखचरा सुरणारयणरा य।।११९२।।

पंचय इंदियपाणा मणवचकाया दु तिण्णि बलपाणा।
आणप्पाणप्पाणा आउगपाणेण होंति दस पाणा।।११६३।।

इंदिय बल उस्सासा आऊ चदु छक्क सत्त अट्ठेव।
एगिंदिय विगलिंदिय असण्णि सण्णीण णव दस पाणा।।११६४।।

सुहुमा वादरकाया ते खलु पज्जत्तया अपज्जत्ता।
एइंदिया दु जीवा जिणेहिं कहिया चदुवियप्पा।।११६५।।

पज्जत्तापज्जत्ता वि होंति विगलिंदिया दु छब्भेया।
पज्जत्तापज्जत्ता सण्णि असण्णी य सेसा दु।।११६६।।

मिच्छादिट्ठी सासादणो य मिस्सो असंजदो चेव।
देसविरदो पमत्तो अपमत्तो तह य णायव्वो।।११६७।।

एत्तो अपुव्वकरणो अणियट्टी सुहुमसंपराओ य।
उवसंतखीणमोहो सजोगिकेवलिजिणो अजोगी य।।११६८।।

गइ इंदिये च काये जोगे वेदे कसाय णाणे य।
संजम दंसण लेस्सा भविया सम्मत्त सण्णि आहारे।।११६९।।

जीवाणं खलु ठाणणि जाणि गुणसण्णिदाणि ठाणाणि।
एदे मग्गणठाणेसु चेव परिमग्गदव्वाणि।।१२००।।

तिरियगदीए चोद्दस हवंति सेसाणु जाण दो दो दु।
मग्गणठाणस्सेदं णेयाणि समासठाणाणि।।१२०१।।

तिरियगदीए चोदस हंवति सेसासुजाण दो दो दु।।
एइंदिएसुचउरो दो दो विगलिंदिएसु हवे।।*।।

पंचिंदिएसु चत्तारि होंति काये तहा पुढवि आदीसु।
दस तसकाये भणिया मणजोगे जाण एक्केक्कं।।*।।

तिण्हं वचिजोगाणं एक्केक्कं सच्चमोस वाज्जित्ता।
तस्स य पंचम भणिया पज्जत्ता जिणवरिंदेहिं।।*।।

ओरालियस्स सत्त या पज्जता इयर अट्ठ मिस्सस्स।
वेउव्विय मिस्सस्स य पत्तेयं जाण एक्केक्कं।।*।।

आहारदुगस्सेगं कम्मइए अट्ठ अपरिपुण्णा दु।
थीपुरिसेसु य चउरो णवुंसगे चोद्दसा भणिया।।*।।

चोद्दस कसाय मग्गे मदिसुदअवधिम्हि जाण दो दो दु।
मणपज्जयम्हि एक्कं एक्कदुगे केवले णाणे।।*।।

मदिअण्णाणे चोद्दस सुदम्हि तह एक्क बोहिविवरीदो।
सामायियादि एक्कं असंजमे चोदसा होंति।।*।।

चक्खुम्हि दंसणम्हि य तिय छा वा चोद्दसा अचक्खुम्हि।
ओधिम्हि दोण्णि भणिया एक्कं वा दोण्णि केवलगे।।*।।

किण्हादीणं चोद्दस तेउस्य या दोण्णि होंति विण्णेया।
पउमसुक्केसु दो दो चोद्दस भव्वे अभव्वे या।।*।।

उवसमवेदयखइये सम्मत्ते जाण होंति दो दो दु।
सम्मामिच्छत्तम्मि य सण्णी खलु होई पज्जत्तो।।*।।

पज्जात्तापज्जत्ता सासण सम्मम्हि सत्त णायव्वा।।
मिच्छत्ते चोद्दसया दो बारस सण्णि इदरम्हि।।*।।

सुहुमदुगं वज्जित्ता सेसे पज्जत्तगा य छच्चेव।
सण्णीदो पज्जत्तं पि एव सत्तेव सासणे णेया।।*।।

आहारम्हि य चोद्धस इदरम्हि या अट्ट अपरिपुण्णा दु।
जीवसमासा एदे गइयादीमग्गणे भणिया।।*।।

सुरणारयेसु चत्तारि होंति तिरिएसु जाण पंचेव।
मणुसगदीए वि तहा चोद्दसगुणणामधेयाणि।।1202।।

एगविगलिंदियाणं मिच्छादिट्ठिस्स होई गुणठाणं।
आसादणस्य केवि हि भणियं चोद्दस सयलिंदि याणं तु।।*।।

पुढवीकायादीणं पंचसु जाणाहि मिच्छगुणठाणं।
तसकायिएसु चोद्दस भणिया गुणणामधेयाणि।।*।।

सच्चे मणवचिजोगे असच्चमोसे य तह य दोण्हं पि।
मिच्छादिट्ठिप्पहुदी जोगंता तेरसा होंति।।*।।

वेउव्वकायजोगे चत्तारि हवंति तिण्णि मिस्सह्मि।
आहारदुगस्सेगं पमत्तठाणं विजाणाहि।।*।।

कम्मइयस्स य चउरो तिण्हं वेदाण होंति णव चेव।
वेदे व कसायाणं लोभस्स वियाण दस ठाणं।।*।।

तिण्णं अण्णाणाणं मिच्छादिट्ठि य सासणो होदि।
मदि सुद ओहिणाणे चउत्थादो जाव खीणंता।।*।।

मणपज्जवह्मि णियमा सत्तेव य संजदा समुद्दिट्ठा।
केवलिणाणे णियमा जोगि अजोगीय दोण्णि मदे।।*।।

सामायियछेदणदो जाव णियत्तेत्ति परिहारमप्पत्तोत्ति।
सुहुमं सुहुमसरागे उवसंतादी जहाखादं।।*।।

विरदाविरदं एक्कं संजममिस्सस्स होदि गुणठाणं।
हेट्ठिमगा चउरो खलु असंजमे होंति णादव्वा।।*।।

मिच्छादिट्ठिप्पहुदी चक्खुअचक्खुस्स होंति खीणंता।
ओधिस्स अविरदपहुदि केवल तह दंसणे दोण्णि।।*।।

मिच्छादिट्ठिप्पहुदी चउरो सत्तेव तेरसंत्तंत्तं।
तियदुग एक्कस्सेवं किण्हादीहीणलेस्साणं।।*।।

भवसिद्धिगस्स चोद्दस एक्कं इयरस्स मिच्छगुणठाणं।
उवसमसम्मत्तेसु य अविरदपहुदिं च अट्ठेव।।*।।

तह वेदयस्स भणिया चउरो खलु होंति अप्पमत्ताणं।
खाइयसम्मत्तम्हि य एयारस जिणवरुद्दिट्ठा।।*।।

मिस्से सासणसम्मे मिच्छादिट्ठिम्हि होइ एक्केक्कं।
सण्णिस्स बारस खलु हवदि असण्णीसु मिच्छत्तं।।*।।

आहाररस्स य तेरस पंचेव हवंति जाण इयरस्स।
मिच्छासासण अविरद सजोगी अजोगी य बोद्धव्वा।।*।।

एइंदिया य पंचेंदिया य उड्ढमहोतिरियलोएसु।
सयलविगलिंदिया पुण जीवा तिरियम्मि लोयम्मि।।१२०३।।

एइंदियाय जीवा पंचविधा बादरा य सुहुमा य।
देसेहिं बादरा खलु सुहुमेहिं णिरंतरो लोओ।।१२०४।।

अत्थि अणंता जीवा जेहिं ण पत्तो तसाण परिणामो।
भावकलंकसुपउरा णिगोदवासं अमुंचंता।।१२०५।।

एगणिगोदसरीरे जीवा दव्वप्पमाणदो दिट्ठा।
सिद्धेहिं अणंतगुणा सव्वेण वितीदकालेण।।१२०६।।

एइंदिया अणंता वणप्फदीकायिगा णिगोदेसु।
पुढवी आऊ तेऊ वाऊ लोया असंखिज्जा।।१२०७।।

तसकाइया असंखा सेढीओ पदरछेदणिप्पण्णा।
सेसासु मग्गणासु वि णेदव्वा जीवसमासेज्ज।।१२०८।।

वावीस सत्त तिण्णि य सत्त य कुलकोडि सदसहस्साइं।
णेया पुढविदगागणिवाऊकायाण परिसंखा।।१२०९।।

कोडिसदसहस्साइं सत्तट्ठ य णव य अट्ठवीसं च।
वेइंदियतेइंदियचउरिंदियहरिदकायाणं।।१२१०।।

अद्धत्तेरस वारस दसयं कुलकोडिसदसहस्साइं।
जलचर पक्खि चउप्पयउर परिसप्पेसु णव होंति।।१२११।।

छव्वीसं पणवीसं चउदस कुलकोडिसदसहस्साइं।
सुरणेरइयणराणं जहाकमं होइ णायव्वं।।१२१२।।

एया य कोडिकोडी सत्ता णउदी य सदसहस्साइं।
पण्णं कोडि सहस्सा सव्वंगीणं कुलाणं तु।।*।।

मणुसगदीए थोवा तेहिं असंखिज्जसंगुणा णिरए।
तेहिं असंखिज्जगुणा देवगदीए हवे जीवा।।१२१३।।

तेहिंतो णंतगुणा सिद्धगदीए भवंति भवरहिया।
तेहिंतो णंतगुणा तिरयगदीए किलेसंता।।१२१४।।

थोवा दु तमतमाए अणंतराणंतरे दु चरमासु।
होंति असंखिज्जगुणा णारइया छासु पुढवीसु।।१२१५।।

थोवा तिरिया पंचेंदिया दु चउरिंदिया विसेसहिया।
वेइंदिया दु जीवा तत्तो अहिया विसेसेण।।१२१६।।

तत्तो विसेसअहिया जीवा तेइंदिया दुणायव्वा।
तेहिंतो णंतगुणा भवंति वइंदिया जीवा।।१२१७।।

अंतरदीवे मणुया थोवा मणुयेसु होंति णायव्वा।
कुरुवेसु दससु मणुया संखेज्जदुणा तहा होंति।।१२१८।।

तत्तो संखेज्जगुणा मणुया हरिरम्मएसु वस्सेसु।
तत्तो संखिज्जगुणा हेमवदहरिण्णवस्साय।।१२१९।।

भरहेरावदमणुया संखेज्जगुणा हवंति खलु तत्तो।
तत्तो संखिज्ज्गुणा णियमादु विदेहगा मणुया।।१२२०।।

सम्मुच्छिमा य मणुया होंति असंखिज्जगुणा य तत्तो दु।
ते चेव अपज्जत्ता सेसा पज्जत्तया सव्वे।।१२२१।।

थोवा विमाणवासी देवा देवी य होंति सव्वेवि।
तेहिं असंखेज्जगुणा भवणेसु य दसविहा देवा।।१२२२।।

तेहिं असंखेज्जगुणा देवा खलु होंति वाणवेंतरिया।
तेहिं असंखेज्जगुणा देवा सव्वेवि जोदिसिया।।१२२३।।

अणुदिसणुत्तरदेवा सम्मादिट्ठीय होंति बोधव्वा।
तत्तो खलु हेट्ठिमया सम्मामिस्सा य तह सेसा।।१२२४।।

मिच्छादंसणअविरदिकसायजोगा हवंति बंधस्स।
आऊस्सज्झवसाणं हेदवो ते दु णायव्वा।।१२२५।।

जीवो कसायजुत्तो जोगादो कम्मणो दु जे जोग्गा।
गेण्इह पोग्गलदव्वे बंधो सो होदि णायव्वो।।१२२६।।

पयडिट्ठिदिअणुभागप्पदेसबंधो य चदुविहो होइ।
दुविहो य पयडिबंधो मूलो तह उत्तरो चेव।।१२२७।।

णाणस्स दंसणस्य य आवरणं वेदणीय मोहणियं।
आउगणामा गोदं तहंतरायं च मूलाओ।।१२२८।।

पंच णव दोण्णि अट्ठावीसं चदुरो तहेव वादालं।
दोण्णि य पंच य भणिया पयडीओ उत्तरा चेव।।१२२९।।

आभिणिबोहियसुदओहिमणपज्जयकेवलाणं च।
आवरणं णाणाणं णादव्वं सव्वभेदाणं।।१२३०।।

णिद्दाणिद्दा पयलापयला तह थीणगिद्धि णिद्दा य।
पयला चक्खु अचक्खू ओहीणं केवलस्सेदं।।१२३१।।

सादमसादं दुविहं वेदणियं तहेव मोहणीयं च।
दंसणचरित्तमोहं कसाय तह णोकसायं च।।१२३२।।

तिण्णिय दुवेय सोलस णवभेदा जहाकमेण णायव्वा।
मिच्छत्तं सम्मत्तं सम्मामिच्छत्तमिदि तिण्णि।।१२३३।।

कोहो माणो माया लोहोणंताणुबंधिसण्णा य।
अप्पच्चक्खाण तहा पच्चक्खाणो य संजलणो।।१२३४।।

इत्थी पुरिसणउंसयवेदा हास रदि अरदि सोगो य।
भयमेत्तो य दुगंछा णवविह तह णोकसायभेयं तु।।१२३५।।

णिरियाऊ तिरियाऊ माणुसदेवाण होंति आऊणी।
गदिजादिसरीराणि य बंधणसंघादसंठाणा।।१२३६।।

संघडणं गोवंगं वण्णरसगंधफासमणुपुव्वी।
अगुरूलहुगुवघादं परघादमुस्सास णामं च।।१२३७।।

आदावुज्जोदविहायगइ जुयलतस सुहुमणामं च।
पज्जत्तसाहरणजुग थिरसुह सुहगं च आदेज्जं।।१२३८।।

अथिरअसुहदुब्भगयाणादेज्जं दुस्सरं अजसकित्ती।
सुस्सरजसकित्ती विय णिमिणं तित्थयर णाम बादालं।।1१२३६।।

दाणंतराय लाहो भोगुवभोगं च वीरियं चेव।
एवं खु पयडिबद्धं वीसहियसयं वियाणाहि।।*।।

सव्वे मिच्छाइट्ठी बंधइ णाहारदुग य तित्थयरं।
उणवीसं छादालं सासणसम्मो य मिस्सो य।।*।।

उच्चाणिच्चागोदं दाणं लाभंतराय भोगो य।
परिभोगो विरियं चेव अंतरायं च पंचविहं।।१२४०।।

सयअडयालपईणं बंधं गच्छंति वीसअहियसयं।
सव्वे मिच्छादिट्ठी बंधदि नाहारतित्थयरा।।१२४१।।

वज्जिय तेदालीसं तेवण्णं चेव पंचवण्णं च।
बंधइ सम्मादिट्ठि दु सावओ संजदो तहा चेव।।१२४२।।

एगट्ठी बासट्ठी अठणउदी तिण्णिसहिय सयरहियं।
बंधंति अप्पमत्ता पुव्व णियट्ठी य सुहुमो य।।*।।

उवसंतखीणजोगी उणवीससयेहिं रहियपयडीणं।
वीससयं पयडिविणा जोगविहीणा हु बंधंति।।*।।

तिण्हं खलु पढमाणं उक्कस्सं अतंरायस्सेव।
तीसं कोडाकोडी सायरणामाणमेव ठिदि।।१२४३।।

मोहस्स सत्तरिं खलु बीसं णामस्स चेव गोदस्स।
तेतीसमाउगाणं उवमाओ सायराणं तु।।१२४४।।

बारस य वेदणीए णामगोदाणमट्ठय मुहुत्ता।
भिण्णमुहुत्तं तु ठिदी जहण्णयं सेस पंचण्हं।।१२४५।।

कम्माणं जो दु रसो अज्झवसाणजणिद सुह असुहो वा।
बंधो सो अणुभागो पदेसबंधो इमो होइ।।१२४६।।

सुहुमे जोगविसेसेण एगखेत्तावगाढठिदियाणं।
एक्केक्के दु पदेसे कम्मपदेसा अणंता दु।।१२४७।।

मोहस्सावरणाणं खयेण अह अंतरायस्स य एव।
उव्वज्जइ केवलयं पयासयं सव्भावाणं।।१२४८।।

तत्तोरालियदेहो णामा गोदं च केवली युगवं।
आऊण वेदणीयं चदुहिं खिविइत्तु णीरओ होइ।।१२४६।।

एसो मे उवदेसो संखेवेण कहिदो जिणक्खादो।
सम्मं भावेदव्वो दायव्वो सव्वजीवाणं।।*।।

दइदूण सव्वजीवे दमिदूण या इंदियाणि तह पंच।
अट्ठविहकम्मरहिया णिव्वाणमणुत्तरं जाथ।।*।।

इति श्री कुंदकुदाचार्यविरचितं मूलाचारः समाप्त।

श्रीमदमृतचन्द्रसूरिविरचितः

पुरुषार्थसिद्ध्युपायः

तज्जयति परं ज्योतिः समं समस्तैरनन्तपर्यायैः।
दर्पणतल इव सकला प्रतिफलति पदार्थमालिका यत्र।।१।।

परमागमस्य बीजं निषिद्धजात्यन्धसिन्धुरविधानम्।
सकलनविलसितानां विरोधमथनं नमाम्यनेकान्तम्।।२।।

लोकत्रयैकनेत्रं निरूप्य मरमागमं प्रयत्नेन।
अस्माभिरुपोद्धियते विदुषां पुरुषार्थसिद्ध्युपायोऽयम्।।३।।

मुख्योपचारविवरणनिरस्तदुस्तरविनेयदुर्बोधाः।
व्यवहारनिश्चयज्ञाः प्रवर्तयन्ते जगति तीर्थम्।।४।।

निश्चयमिह भूतार्थं व्यवहारं वर्णयन्त्यभूतार्थम्।
भूतार्थबोधविमुखः प्रायः सर्वोऽपि संसारः।।५।।

अबुधस्य बोधनार्थं मुनीश्वरा देशयन्त्यभूतार्थम्।
व्यवहारमेव केवलमवैति यस्तस्य देशना नास्ति।।६।।

माणवक एव सिंहो यथा भवत्यनवगीतसिंहस्य।
व्यवहार एव हि तथा निश्चयतां यात्यनिश्चयज्ञस्य।।७।।

व्यवहारनिश्चयौ यः प्रबुध्य तत्त्वेन भवति मध्यस्थः।
प्राप्नोति देशनायाः स एव फलमविकलं शिष्यः।।८।।

अस्ति पुरुषश्चिदात्मा विवर्जितः स्पर्शगन्धरसवर्णैः।
गुणपर्ययसमवेतः समाहितः समुदयव्ययध्रौव्यैः।।९।।

परिणममाणो नित्यं ज्ञानविवर्तैरनाादिसन्ततया।
परिणामानां स्वेषां स भवति कर्त्ता च भोक्ता च।।१०।।

सर्वविवर्त्तोत्तीर्णं यदा स चैतन्यमचलमाप्नोति।
भवति तदा कृतकृत्यः सम्यक्पुरुषार्थसिद्धिमापन्नः।।११।।

जीवकृतं परिणामं निमित्तमात्रं प्रपद्य पुनरन्ये।
स्वयमेव परिणमन्तेऽत्र पुद्गलाः कर्मभावेन।।१२।।

परिणममानस्य चितश्चिदात्मकैः स्वयमपि स्वकैर्भावैः।
भवति हि निमित्तमात्रं पौद्गलिकं कर्म तस्यापि।।१३।।

एवमयं कर्मकृतैर्भावैरसमाहितोऽपि युक्त इव।
प्रतिभाति बालिशानां प्रतिभासः स खलु भवबीजम्।।१४।।

विपरीताभिनिवेशं निरस्य सम्यग्व्यवस्य निजतत्त्वम्।
यत्तस्मादविचलनं स एव पुरुषार्थसिद्ध्युपायोऽयम्।।१५।।

अनुसरतां पदमेतत्करंबिताचारनित्यनिरभिमुखा।
एकान्तविरतिरूपा भवति मुनीनामलौकिकी वृतिः।।१६।।

बहुशः समस्तविरतिं प्रदर्शितां यो न जातु गृह्णाति।
तस्यैकदेशविरतिः कथनीयानेन बीजेन।।१७।।

यो यतिधर्ममकथयन्नुपदिशति गृहस्थधर्ममल्पमतिः।
तस्य भगवत्प्रवचने प्रदर्शितं निग्रहस्थानम्।।१८।।

अक्रमकथनेन यतः प्रोत्सहमानोऽतिदूरमपि शिष्यः।
अपदेऽपि संप्रतृप्तः प्रतारितो भवति तेन दुर्मतिना।।१९।।

एवं सम्यग्दर्शनबोधचरित्रत्रयात्मको नित्यम्।
तस्यापि मोक्षमार्गो भवति निषेव्यो यथाशक्ति।।२०।।

तत्रादौ सम्यक्त्वं समुपाश्रयणीयमखिलयत्नेन।
तस्मिन्सत्येव यतो भवति ज्ञानं चारित्रं च।।२१।।

जीवाजीवादीनां तत्त्वार्थानां सदैव कर्तव्यम्।
श्रद्धानं विपरीताऽभिनिवेशविविक्तमात्मरूपं तत्।।२२।।

सकलमनेकान्तात्मकमिदमुक्तं वस्तुजातमखिलज्ञैः।
किमु सत्यमसत्यं वा न जातु शंकेति कर्तव्या।।२३।।

इह जन्मनि विभवादीनमुत्र चक्रित्वकेशवत्वादीन्।
एकान्तवाददूषितपरसमयानपि च नाकांक्षेत्।।२४।।

क्षुत्तृष्णाशीतोष्णप्रभृतिषु नानाविधेषु भावेषु।
द्रव्येषु पुरीषादिषु विचिकित्सा नैव करणीया।।२५।।

लोके शास्त्राभासे समयाभासे च देवताभासे।
नित्यमपि तत्त्वरुचिना कर्तव्यममूढ़दृष्टित्वम्।।२६।।

धर्मोऽभिवर्द्धनीयः सदात्मनो मार्दवादिभावनया।
परदोषनिगूहनमपि विधेयमुपबृंहणगुणार्थम्।।२७।।

कामक्रोधमदादिषु चलयितुमुदितेषु वर्त्मनो न्यायात्।
श्रुतमात्मनः परस्य च युक्त्वा स्थितिकरणमपि कार्यम्।।२८।।

अनवरतमहिंसायां शिवसुखलक्ष्मीनिबन्धने धर्मे।
सर्वेष्वषि च सधर्मिषु परमं वात्सल्यमालम्ब्यम्।।२९।।

आत्मा प्रभावनीयो रत्नत्रयतेजसा सततमेव।
दानतपोजिनपूजाविद्याातिशयैश्च जिनधर्मः।।३०।।

इत्याश्रितसम्यक्त्वैः सम्यग्ज्ञानं निरूप्य यत्नेन।
आम्नाययुक्तियोगैः समुपास्यं नित्यमात्महितैः।।३१।।

पृथगाराधनमिष्टं दर्शनसहभाविनोऽपि बोधस्य।
लक्षणभेदेन यतो नानात्वं सम्भवत्यनयोः।।३२।।

सम्यग्ज्ञानं कार्यं सम्यक्त्वं कारणं वदन्ति जिनाः।
ज्ञानाराधनमिष्टं सम्यक्त्वानन्तरं तस्मात्।।३३।।

कारणकार्यविधानं समकालं जायमानयोरपि हि।
दीपप्रकाशयोरिव सम्यक्त्वज्ञानयोः सुघटम्।।३४।।

कर्तव्योऽध्यवसायः सदनेकान्तात्मकेषु तत्त्वेषु।
संशयविपर्ययानध्यवसायविविक्तमात्मरूपं तत्।।३५।।

ग्रंथोर्थोभयपूर्णं काले विनयेन सोपधानं च।
बहुमानेन समन्वितमनिह्नवं ज्ञानमाराध्यम्।।३६।।

विगलितदर्शनमोहैः समंजसज्ञानविदिततत्त्वार्थैः।
नित्यमपि निःप्रकम्पैः सम्यक् चारित्रमालम्ब्यम्।।३७।।

न हि सम्यग्व्यपदेशं चरित्रमज्ञानपूर्वकं लभते।
ज्ञानानन्तरमुक्तं चारित्राराधनं तस्मात्।।३८।।

चारित्रं भवति यतः समस्तसावद्ययोगपरिहरणात्।
सकलकषायविमुक्तं विशदमुदासीनमात्मरूपं तत्।।३९।।

हिंसातोऽनृतवचनात्स्तेयादब्रह्मतः परिग्रहतः।
कात्स्न्यैकदेशविरतेश्चारित्रं जायते द्विविधम्।।४०।।

निरतः कात्स्न्यनिवृत्तौ भवति यतिः समयसार भूतोऽयम्।
या त्वेकदेश-विरतिर्निरतस्तस्यामुपासको भवति।।४१।।

आत्मपरिणामहिंसनहेतुत्वात्सर्वमेव हिंसैतत्।
अनृतवचनादिकेवलमुदाहृतं शिष्यबोधाय।।४२।।

यत्खलु कषाय योगात्प्राणानां द्रव्यभावरूपाणाम्।
व्यपरोपणस्य करणं सुनिश्चिता भवति सा हिंसा।।४३।।

अप्रादुर्भावः खलु रागादीनां भवत्यहिंसेति।
तेषामेवोत्पत्तिर्हिंसेति जिनागमस्य संक्षेपः।।४४।।

युक्ताचरणस्य सतो रागाद्यावेशमन्तरेणापि।
न हि भवति जातु हिंसा प्राणव्यपरोपणादेव।।४५।।

व्युथानावस्थायां रागादीनां वशप्रवृत्तायाम्।
म्रियतां जीवो मा वा धावत्यग्रे ध्रुवं हिंसा।।४६।।

यस्मात्सकषायः सन् हन्त्यात्मा प्रथममात्मनात्मानम्।
पश्चाज्जायेत न वा हिंसा प्राण्यन्तराणं तु।।४७।।

हिंसाया अविरमणं हिंसा परिणमनमपि भवति हिंसा।
तस्मात्प्रमत्तयोगे प्राणव्यपरोपणं नित्यम्।।४८।।

सूक्ष्मापि न खलु हिंसा परवस्तुनिबन्धना भवति पुंसः।
हिंसायतननिवृत्तिः परिणामविशुद्धये तदपि कार्या।।४९।।

निश्चयमबुध्यमानो यो निश्चयतस्तमेव संश्रयते।
नाशयति करणचरणं स बहिः करणालसो बालः।।५०।।

अविधायापि हि हिंसां हिंसाफलभाजनं भवत्येकः।
कृत्वाप्यपरो हिंसां हिंसाफलभाजनं न स्यात्।।५१।।

एकस्याल्पा हिंसा ददाति काले फलमनल्पम्।
अन्यस्य महाहिंसा स्वल्पफला भवति परिपाके।।५२।।

एकस्य सैव तीव्रं दिशति फलं सैव मन्दमन्यस्य।
व्रजति सहकारिणोरपि हिंसा वैचित्र्यमत्र फलकाले।।५३।।

प्रागेव फलति हिंसा क्रियमाणा फलति फलति च कृतापि।
आरभ्य कर्तुमकृताऽपि फलति हिंसानुभावेन।।५४।।

एकः करोति हिंसां भवन्ति फलभागिनो बहवः।
बहवो विदधति हिंसां हिंसाफलभुग्भवत्येकः।।५५।।

कस्यापि दिशति हिंसा हिंसाफलमेकमेव फलकाले।
अन्यस्य सैव हिंसा दिशत्यहिंसाफलं विपुलम्।।५६।।

हिंसाफलमपरस्य तु ददात्यहिंसा तु परिणामे।
इतरस्य पुनर्हिंसा दिशत्यहिंसाफलं नान्यत्।।५७।।

इति विविधभङ्गगहने सुदुस्तरे मार्गमूढदृष्टीनाम्।
गुरवो भवन्ति शरणं प्रबुद्धनयचक्रसञ्चाराः।।५८।।

अत्यन्त निशितधारं दुरासदं जिनवरस्य नयचक्रम्।
खण्डयति धार्यमाणं मूर्धानं झटिति दुर्विदग्धानाम्।।५९।।

अवबुध्य हिंस्यहिंसकहिंसाहिंसाफलानि तत्त्वेन।
नित्यमवगूहमानैर्निजशक्त्या त्यज्यतां हिंसा।।६०।।

मद्यं मांसं क्षौद्रं पञ्चोदुम्बरफलानि यत्नेन।
हिंसाव्युपरतिकामैर्मोक्तव्यानि प्रथममेव।।६१।।

मद्यं मोहयति मनो मोहितचित्तस्तु विस्मरति धर्मम्।
विस्मृतधर्मा जीवो हिंसामविशङ्कमाचरति।।६२।।

रसजानां च बहूनां जीवानां योनिरिष्यते मद्यम्।
मद्यं भजतां तेषां हिंसा संजायतेऽवश्यम्।।६३।।

अभिमानभयजुगुप्साहास्यारतिशोककामकोपाद्याः।
हिंसायाः पर्यायाः सर्वेऽपि च सरकसन्निहिताः।।६४।।

न विना प्राणिविघातान्मांसस्योत्पत्तिरिष्यते यस्मात्।
मांसं भजतस्तस्मात्प्रसरत्यनिवारिता हिंसा।।६५।।

यदपि किल भवति मांसं स्वयमेव मृतस्य महिषवृषभादेः।
तत्रापि भवति हिंसा तदाश्रित निगोदनिर्मथनात्।।६६।।

आमास्वपि पक्वास्वपि विपच्यमानासु मांसपेशीषु।
सातत्येनोत्पादस्तज्जातीनां निगोतानाम्।।६७।।

आमां वा पक्वां वा खादति यः स्पृशति वा पिशितपेशीम्।
स निहन्ति सततनिचितं पिण्डं बहुजीवकोटीनाम्।।६८।।

मधुशकलमपि प्रायो मधुकरहिंसात्मकं भवति लोके।
भजति मधुमूढश्रीको यः स भवति हिंसकोऽत्यन्तम्।।६९।।

स्वयमेव विगलितं यो गृह्णीयाद्वा छलेन मधुगोलात।
तत्रापि भवति हिंसा तदाश्रयप्राणिनां घातात्।।७०।।

मधु मद्यं नवनीतं पिशितं च महाविकृतयस्ताः।
वल्भ्यन्ते न व्रतिना तद्वर्णा जन्तवस्तत्र।।७१।।

योनिरुदुम्बरयग्मं प्लक्षन्यग्रोधपिप्पलफलानि।
त्रसजीवानां तस्मात्तेषां तद्भक्षणे हिंसा।।७२।।

यानि तु पुनर्भवेयुः कालोच्छिन्नत्रसानि शुष्काणि।
भजतस्तान्यपि हिंसा विशिष्टरागादिरूपा स्यात्।।७३।।

अष्टावनिष्टदुस्तरदुरिता यतनान्यमूनि परिवर्ज्य।
जिनधर्म देशनाया भवन्ति पात्राणि शुद्धधियः।।७४।।

धर्ममहिंसारूपं संशृण्वन्तोऽपि ये परित्यक्तुम्।
स्थावरहिंसामसहास्त्रसहिंसां तेऽपि मुञ्चन्तु।।७५।।

कृतकारितानुमननैर्वाक्किायमनोभिरिष्यते नवधा।
औत्सर्गिकी निवृत्तिर्विविचत्ररूपापवादिकी त्वेषा।।७६।।

स्तोकैकेन्द्रियघाताद् गृहिणां सम्पन्नयोग्यविषयाणाम्।
शेषस्थावरमारणविरमणमपि भवति करणीयम्।।७७।।

अमृतत्वहेतुभूतं परममहिंसारसायनं लब्धवा।
अवलोक्य बालिशानामसमञ्जसमाकुलैर्न भवितव्यम्।।७८।।

सूक्ष्मो भगवान् धर्मो धर्मार्थं हिंसने न दोषोऽस्ति।
इति धर्ममुग्धहृदयैर्न जातु भूत्वा शरीरिणो हिंस्या।।७९।।

धर्मो हि देवताभ्यः प्रभवति ताभ्यः प्रदेयमिव सर्वम्।
इति दुर्विवेककलितां धिषणां न प्राप्य देहिनो हिंस्याः।।८०।।

पूज्यनिमित्तं घाते छागादीनां न कोऽपि दोषोऽस्ति।
इति संप्रधार्य कार्यं नाऽतिथये सत्त्वसंज्ञपनम्।।८१।।

बहुसत्त्वघातजनितादशनाद्वरमेकसत्त्वघातोत्थम्।
इत्याकलय्य कार्यं न महासत्त्वस्य हिंसनं जातु।।८२।।

रक्षा भवति बहूनामेकस्यैवास्य जीवहरणेन।
इति मत्वा कर्तव्यं न हिंसनं हिंस्रसत्त्वानाम्।।८३।।

बहुसत्त्व घातिनोऽमी जीवन्त उपार्जयन्ति गुरुपापम्।
इत्यनुकम्पां कृत्वा न हिंसदीया-शरीरिणो हिंस्राः।।८४।।

बहुदुःखाः संज्ञपिताः प्रयान्ति त्वचिरेण दुःखविच्छित्तिम्।
इति वासनाकृपाणीमादाय न दुःखिनोऽपि हन्तव्याः।।८५।।

कृच्छ्रेण सुखावाप्तिर्भवन्ति सुखिनो हताः सुखिन एव।
इति तर्कमण्डलाग्रः सुखिनां घाताय नादेयः।।८६।।

उपलब्धिसुगतिसाधनसमाधिसारस्य भूयसोऽभ्यासात्।
स्वगुरोः शिष्येण शिरो न कर्तनीयं सुधर्ममभिलषता।।८७।।

धनलवपिपासितानां विनेयविश्वासनाय दर्शयताम्।
झटिति घटचटकमोक्षं श्रद्धेयं नैव खारपटिकानाम्।।८८।।

दृष्ट्वा परं पुरस्तादशनाय क्षामकुक्षिमायान्तम्।
निजमांसदानरभसादालभनीयो न चात्मापि।।८९।।

को नाम विशति मोहं नयभङ्गविशारदानुपास्य गुरून्।
विदितजिनमतरहस्यः श्रयन्नहिंसां विशद्धमतिः।।९०।।

यदिदं प्रमादयोगादसदभिधानं विधीयते किमपि।
तदनृतमपि विज्ञेयं तद्भेदाः सन्ति चत्वारः।।९१।।

स्वक्षेत्रकालभावैः सदपि हि यस्मिन्निषिध्यते वस्तु।
तत्प्रथममसत्यं स्यान्नास्ति यथा देवदत्तोऽत्र।।९२।।

असदपि हि वस्तुरूपं यत्र परक्षेत्रकालभावैस्तैः।
उद्भाव्यते द्वितीयं तदनृतमस्मिन्यथास्ति घटः।।९३।।

वस्तु सदपि स्वरूपात्पररूपेणभिधीयते यस्मिन्।
अनृतमिदं च तृतीयं विज्ञेयं गौरिति यथाश्वः।।९४।।

गर्हितमवद्यसंयुतमप्रियमपि भवति वचनरूपं यत्।
सामान्येन त्रेधा मतमिदमनृतं तुरीयं तु।।९५।।

पैशुन्यहासगर्भं कर्कशमसमञ्जसं प्रलपितं च।
अन्यदपि यदुत्सूत्रं तत्सर्वं गर्हितं गदितम्।।६६।।

छेदनभेदनमारणकर्षणवाणिज्यचौर्यवचनादि।
तत्सावद्यं यस्मात्प्राणिवधाद्याः प्रवर्तन्ते।।६७।।

अरतिकरं भीतिकरं खेदकरं वैरशोककलहकरम्।
यदपरमपि तापकरं परस्य तत्सर्वमप्रियं ज्ञेयम्।।६८।।

सर्वस्मिन्नप्यस्मिन् प्रमत्तयोगैकहेतुकथनं यत्।
अनृतवचनेऽपि तस्मान्नियतं हिंसा समवसरति।।६९।।

हेतौ प्रमत्तयोगे निर्दिष्टे सकलवितथवचनानाम्।
हेयानुष्ठानादेरनुवदनं भवति नासत्यम्।।१००।।

भोगोपभोगसाधनमात्रं सावद्यमक्षमा मोक्तुम।
ये तेऽपि शेषमनृतं समस्तमपि नित्यमेव मुञ्चन्तु।।१०१।।

अवितीर्णस्य ग्रहणं परिग्रहस्य प्रमत्तयोगाद्यत्।
तत्प्रत्येयं स्तेयं सैव च हिंसा वधस्य हेतुत्वात्।।१०२।।

अर्था नाम य एते प्राणा एते बहिश्चराः पुंसाम्।
हरति स तस्य प्राणान् यो यस्य जनो हरत्यर्थान्।।१०३।।

हिंसायाः स्तेयस्य च नाव्याप्तिः सुघट एव सा यस्मात्।
ग्रहणे प्रमत्तयोगो द्रव्यस्य स्वीकृतस्यान्यैः।।१०४।।

नातिव्याप्तिश्च तयोः प्रमत्तयोगैककारणविरोधात्।
अपि कर्मानुग्रहणे नीरागाणामविद्यमानत्वात्।।१०५।।

असमर्था ये कर्तुं निपानतोयादिहरणविनिवृत्तिम्।
तैरपि समस्तमपरं नित्यमदत्तं परित्याज्यम्।।१०६।।

यद्वेदरागयोगान्मैथुनमभिधीयते तदब्रह्म।
अवतरति तत्र हिंसा वधस्य सर्वत्र सद्भावात्।।१०७।।

हिंस्यन्ते तिलनाल्यां तप्तायसि विनिहिते तिला यद्वत्।
बहवो जीवा योनौ हिंस्यन्ते मैथुने तद्वत्।।१०८।।

यदपि क्रियते किंचिन्मदनोद्रेकादनङ्गरमणादि।
तत्रापि भवति हिंसा रागाद्युत्पत्ति तन्त्रत्वात्।।१०९।।

ये निज कलत्रमात्रं परिहर्तुं शक्नुवन्ति न हि मोहात्।
निःशेषशेषयोषिन्निषेवणं तैरपि न कार्यम्।।११०।।

या मूर्च्छा नामेयं विज्ञातव्यः परिग्रहो ह्येषः।
मोहोदयादुदीर्णो मूर्च्छा तु ममत्वपरिणामः।।१११।।

मूर्च्छालक्षणकरणात्सुघटा व्याप्तिः परिग्रहत्वस्य।
सग्रन्थो मूर्च्छावान् विनापि किल शेषसंगेभ्यः।।११२।।

यद्येवं भवति तदा परिग्रहो न खलु कोऽपि बहिरङ्गः।
भवति नितरां यतोऽसौ धत्ते मूर्च्छानिमित्तत्वम्।।११३।।

एवमतिव्याप्तिः स्यात्परिग्रहस्येति चेद्भवेन्नैवम्।
यस्मादकषायाणां कर्मग्रहणे न मूर्च्छास्ति।।११४।।

अति संक्षेपाद् द्विविधः स भवेदाभ्यन्तरश्च बाह्यश्च।
प्रथमश्चतुर्दशविधो भवति द्विविधो द्वितीयस्तु।।११५।।

मिथ्यात्ववेदरागास्तथैव हास्यादयश्च षड्दोषाः।
चत्वारश्च कषायाश्चतुर्दशाभ्यन्तरा ग्रन्थाः।।११६।।

अथ निश्चित्तसचित्तौ बाह्यस्य परिग्रहस्य भेदौ द्वौ।
नैषः कदापि सङ्गे सर्वोऽप्यतिवर्तते हिंसा।।११७।।

उभयपरिग्रहवर्जनमाचार्याः सूचयन्त्यहिंसेति।
द्विविधपरिग्रहवहनं हिंसेति जिनप्रवचनज्ञाः।।११८।।

हिंसा पर्यायत्वात्सिद्धा हिंसान्तरङ्गसङ्गेषु।
बहिरङ्गेषु तु नियतं प्रयातु मूर्च्छैव हिंसात्वम्।।११९।।

एवं न विशेषः स्यादुन्दररिपुहरिणशावकादीनाम्।
नैवं भवति विशेषस्तेषां मूर्च्छाविशेषेण।।१२०।।

हरित तृणाङ्कुर चारिणि मन्दा मृगशावके भवति मूर्च्छा।
उन्दरनिकरोन्माथिनि माजरि सैव जायते तीव्रा।।१२१।।

निर्बाधं संसिद्ध्येत्कार्यविशेषो हि कारणविशेषात्।
औषधस्य खण्डयोरिव माधुर्यं प्रीतिभेद इव।।१२२।।

माधुर्यप्रीतिः किल दुग्धे मन्दैव मन्दमाधुर्ये।
सैवोत्कटमाधुर्ये खण्डे व्यपदिश्यते तीव्रा।।१२३।।

तत्वार्थाऽश्रद्धाने निर्युक्तं प्रथममेव मिथ्यात्वम्।
सम्यग्दर्शनचौराः प्रथमकषायाश्च चत्वारः।।१२४।।

प्रविहाय च द्वितीयान् देशचरित्रस्य सम्मुखायाताः।
नियतं ते हि कषाया देशचरित्रं निरुध्यन्ति।।१२५।।

निजशक्त्या शेषाणां सर्वेषामन्तरङ्गसंगानाम्।
कर्तव्यः परिहारो मार्दवशौचादिभावनया।।१२६।।

बहिरङ्गादपि संगाद्यस्मात्प्रभवत्यसंयमोऽनुचितः।
परिवर्जयेदशेषं तमचित्तं वा सचित्तं वा।।१२७।।

योऽपि न शक्तस्त्युक्तुं धनधान्यमनुष्यवास्तुवित्तादि।
सोऽपि तनूकरणीयो निवृत्तिरूपं यतस्तत्वम्।।१२८।।

रात्रौ भुञ्जानानां यस्मादनिवारिता भवति हिंसा।
हिंसाविरतैस्तस्मात्त्यक्तव्या रात्रिभुक्तिरपि।।१२९।।

रागाद्युदयपरत्वादनिवृतिर्नातिवर्तते हिंसाम्।
रात्रिं दिवमाहरतः कथं हि हिंसा न सम्भवति?।।१३०।।

यद्येवं तर्हि दिवा कर्तव्यो भोजनस्य परिहारः।
भोक्तव्यं तु निशायां नेत्थं नित्यं भवति हिंसा।।१३१।।

नैवं वासरभुक्तेर्भवति हि रागोऽधिको रजनिभुक्तौ।
अन्नकवलस्य भुक्तोः भुक्ताविव मांसकवलस्य।।१३२।।

अर्कालोकेन विना भुञ्जामः परिहरेत्कथं हिंसाम्।
अपि बोधितः प्रदीपे भोज्यजुषां सूक्ष्मजन्तूनाम्।।१३३।।

किं वा बहुप्रलपितैरिति सिद्धं यो मनोवचनकायैः।
परिहरति रात्रिभुक्तिं सततमहिंसां स पालयति।।१३४।।

इत्यत्र त्रितयात्मनि मार्गे मोक्षस्य ये स्वहितकामा।
अनुपरतं प्रयतन्ते प्रयान्ति ते मुक्तिमचिरेण।।१३५।।

परिधय इव नगराणि व्रतानि किल पालयन्ति शीलानि।
व्रतपालनाय तस्माच्छीलान्यपि पालनीयानि।।१३६।।

प्रविधाय सुप्रसिद्धैर्मर्यादां सर्वतोऽप्यभिज्ञानैः।
प्राच्यादिभ्यो दिग्भ्यः कर्तव्या विरतिरविचलिता।।१३७।।

इति नियमितदिग्भागे प्रवर्तते यस्ततो बहिस्तस्याः।
सकलासंयमविरहाद्भवत्यहिंसाव्रतं पूर्णम्।।१३८।।

तत्रापि च परिमाणं ग्रामापणभवनपाटकादीनाम्।
प्रविधाय नियतकालं करणीयं विरमणं देशात्।।१३९।।

इति विरतौ बहुदेशात्तदुत्थहिंसाविशेषपरिहारात्।
तत्कालं विमलमतिः श्रयत्यहिंसां विशेषेण।।१४०।।

पापर्द्धिजयपराजयसंगरपरदारगमनचौर्याद्याः।
न कदाचनापि चिन्त्याः पापफलं केवलं यस्मात्।।१४१।।

विद्यावाणिज्यमषीकृषिसेवाशिल्पजीविनां पुंसाम्।
पापोपदेशदानं कदाचिदपि नैव वक्तव्यम्।।१४२।।

भूखननवृक्षमोटनशाड्वलदलनाम्बुसेचनादीनि।
निःकारणं न कुर्याद्दलफलकुसुमोच्चयानपि च।।143।।

असिधेनुविषहुताशनलाङ्गलकरवालकार्मुकादीनाम्।
वितरणमुपकरणानां हिंसायाः परिहरेद्यत्नात्।।१४४।।

रागादिवर्धनानां दुष्टकथानामबोधबहुलानाम्।
न कदाचन कुर्वीत श्रवणार्जनशिक्षणादीनि।।१४५।।

सर्वानर्थप्रथमं मथनं शौचस्य सद्म मायायाः।
दूरात्परिहरणीयं चौर्यासत्यास्पदं द्यूतम्।।१४६।।

एवं विधमपरमपि ज्ञात्वा मुञ्चत्यनर्थदण्डं यः।
तस्यानिशमनवद्यं विजयमहिंसाव्रतं लभते।।१४७।।

रागद्वेषत्यागान्निखिलद्रव्येषु साम्यमवलम्ब्य।
तत्त्वोपलब्धिमूलं बहुशः सामायिकं कार्यम्।।१४८।।

रजनीदिवयोरन्ते तदवश्यं भावनीयमविचलितम्।
इतरत्र पुनः समये न कृतं दोषाय तद्गुणाय कृतम्।।१४९।।

सामायिकश्रितानां समस्तसावद्ययोगपरिहारात्।
भवति महाव्रतमेषामुदयेऽपि चरित्रमोहस्य।।१५०।।

सामयिकसंस्कारं प्रतिदिनमारोपितं स्थिरीकुर्तम्।
पक्षार्धयोर्द्वयोरपि कर्तव्योऽवश्यमुपवासः।।१५१।।

मुक्तसमस्तारम्भः प्रोषधदिनपूर्ववासरस्यार्धे।
उपवासं गृह्णीयान्ममत्वमपहाय देहादौ।।१५२।।

श्रित्वा विविक्तवसतिं समस्तसावद्ययोगमपनीयम्।
सर्वेन्द्रियार्थविरतः कायमनोवचनगुप्तिभिस्तिष्ठेत्।।१५३।।

धर्मध्यानाशक्तो वासरमतिवाह्य विहितसान्ध्यविधिः।
शुचि संस्तरे त्रियामां गमयेत्स्वाध्याय जितनिद्रः।।१५४।।

प्रातः प्रोत्थाय ततः कृत्वा तात्कालिकं क्रियाकल्पम्।
निर्वर्त्तयेद्यथोक्तं जिनपूजां प्रासुकैर्द्रव्यैः।।१५५।।

उक्तेन ततो विधिना नीत्वा दिवसं द्वितीयरात्रिं च।
अतिवाह्येत्प्रयत्नादर्धं च तृतीयदिवसस्य।।१५६।।

इति यः षोडश यामान्गमयति परिमुक्तसकलसावद्यः।
तस्य तदानीं नियतं पूर्णमहिंसाव्रतं भवति।।१५७।।

भोगोपभोगहेतोः स्थावरहिंसा भवेत्किलामीषाम्।
भोगोपभोगविरहाद् भवति न लेशोऽपि हिंसायाः।।१५८।।

वाग्गुप्तेर्नास्त्यनृतं न समस्तादानविरहतः स्तेयम्।
नाब्रह्म मैथुनमुचः सङ्गो नाङ्गेऽप्यमूर्च्छस्य।।१५९।।

इत्यमशेषितहिंसः प्रयाति स महाव्रतित्वमुपचारात्।
उदयति चरित्रमोहे लभते तु न संयमस्थानम्।।१६०।।

भोगोपभोगमूला विरताविरतस्य नान्यतो हिंसा।
अधिगम्य वस्तुतत्त्वं स्वशक्तिमपि तावपि त्याज्यौ:।।१६१।।

एकमपि प्रजिघांसुः निहन्त्यनन्तान्यतस्ततोऽवश्यम्।
करणीयमशेषाणां परिहरणमनन्तकायानाम्।।१६२।।

नवनीतं च त्याज्यं योनिस्थानं प्रभूतजीवानाम्।
यद्वापि पिण्डशुद्धौ विरुद्धमभिधीयते किञ्चित्।।१६३।।

अविरुद्धा अपि भोगा निजशक्तिमवेक्ष्यधीमता त्याज्याः।
अत्याज्येष्वपि सीमा कार्यैकदिवानिशोपभोग्यतया।।१६४।।

पुनरपि पूर्वकृतायां समीक्ष्य तात्कालिकीं निजां शक्तिम्।
सौमन्यन्तरसीमा प्रतिदिवसं भवति कर्त्तव्या।।१६५।।

इति यः परिमितभोगैः सन्तुष्टस्त्यजति बहुतरान् भोगान्।
बहुतरहिंसाविरहात्तस्याऽहिंसा विशिष्टा स्यात्।।१६६।।

विधिना दातृगुणवता द्रव्यविशेषस्य जातरूपायः।
स्वपरानुग्रहहेतोः कर्त्तव्योऽवश्यमतिथये भागः।।१६७।।

संग्रहमुच्चस्थानं पादोदकमर्चनं प्रणामं च।
वाक्कायमनःशुद्धिरेषणशुद्धिश्च विधिमाहुः।।१६८।।

ऐहिकफलानपेक्षा क्षान्तिर्निष्कपटतानसूयत्वम्।
अविषादित्वमुदित्वे निरहङ्कारित्वमिति हि दातृगुणाः।।१६९।।

रागद्वेषाऽसंयममददुःखभयादिकं न यत्कुरुते।
द्रव्य तदेव देयं सुतपःस्वाध्यायवृद्धिकरम्।।१७०।।

पात्रं त्रिभेदमुक्तं संयोगो मोखकारणगुणानाम्।
अविरतसम्यग्दृष्टिर्विरताविरतश्च सकलविरतश्च।।१७१।।

हिंसायाः पर्यायो लोभोऽत्र निरस्यते यतो दाने।
तस्मादतिथिवितरणं हिंसाव्युपरमणमेवेष्टम्।।१७२।।

गृहमागताय गुणिने मधुकरवृत्या परान्नपीडयते।
वितरति यो नाऽतिथये स कथं न हि लोभवान् भवति।।१७३।।

कृतमात्मार्थं मुनये ददाति भक्तिमिति भावितस्त्यागः।
अरतिविषादविमुक्तः शिथिलितलोभो भवत्यहिंसैव।।१७४।।

इयमेकैव समर्था धर्मस्वं मे मया समं नेतुम्।
सततमिति भावनीया पश्चिमसल्लेखना भक्त्या।।१७५।।

मरणान्तेऽवश्यमहं विधिना सल्लेखनां करिष्यामि।
इति भावनापरिणतो नागतमपि पालयेदिदं शीलम्।।१७६।।

मरणेऽवश्यं भाविनि कषायसल्लेखनातनूकरणमात्रे।
रागादिमन्तरेण व्याप्रियमाणस्य नात्मघातोऽस्ति।।१७७।।

यो हि कषायाविष्टः कुम्भकजलधूमकेतुविषशस्त्रैः।
व्यपरोपयति प्राणान् तस्य स्यात्सत्यमात्मवधः।।१७८।।

नीयन्तेऽत्र कषाया हिंसाया हेतवो यतस्तनुताम्।
सल्लेखनामपि ततः प्राहुरहिंसा प्रसिद्ध्यर्थम्।।१७९।।

इति यो व्रतरक्षार्थं सततं पालयति सकलशीलानि।
वरयति पतिं वरेव स्वयमेव तमुत्सुका शिवपदश्रीः।।१८०।।

अतिचाराः सम्यक्त्वे व्रतेषु शीलेषु पञ्चपञ्चेति।
सप्ततिरमी यथोदितशुद्धिप्रतिबन्धिनो हेयाः।।१८१।।

शङ्का तथैव कांक्षा विचिकित्सा संस्तवोऽन्यदृष्टीनाम्।
मनसा च तत्प्रशंसा सम्यग्दृष्टेरतीचाराः।।१८२।।

छेदनताडनबंधा भारस्यारोपणं समधिकस्य।
पानान्नयोश्च रोधः पंचाऽहिंसा व्रतस्येति।।१८३।।

मिथ्योपदेशदानं रहसोऽभ्याख्यानकूटलेखकृती।
न्यासापहारवचनं साकारकमन्त्रभेदश्च।।१८४।।

प्रतिरूपव्यवहारः स्तेननियोगस्तदाहृतादानम्।
राजविरोधातिक्रमहीनाधिकमानकरणे च।।१८५।।

स्मरतीव्राभिनिवेशानङ्गक्रीडान्यपरिणमनकरणम्।
अपरिगृहीतेतरयोर्गमने चेत्वरिकयोः पञ्च।।१८६।।

वास्तु-क्षेत्राष्टापद-हिरण्य-धनधान्य-दासदासीनाम्।
कुप्यस्य भेदयोरपि परिणामातिक्रमाः पञ्च।।१८७।।

ऊर्द्ध्वमधस्तात्तिर्यग्व्यतिक्रमाः क्षेत्रवृद्धिराधानम्।
स्मृत्यन्तरस्य गदिताः पञ्चेति प्रथमशीलस्य।।१८८।।

प्रेष्यस्य संप्रयोजनमानयनं शब्दरूपविनिपातौ।
क्षेपोऽपि पुद्गलानां द्वितीयशीलस्य पञ्चेति।।१८९।।

कन्दर्पः कौत्कुच्यं भोगानर्थक्यमपि च मौखर्य्यम्।
असमीक्षिताधिकरणं तृतीयशीलस्य पञ्चेति।।१९०।।

वचनमनःकायानां दुःप्रणिधानां त्वनादरश्चैव।
स्मृत्यनुपस्थानयुताः पञ्चेति चतुर्थशीलस्य।।१९१।।

अनवेक्षिताप्रमार्जितमादानं संस्तरस्तथोत्सर्गः।
स्मृत्यनुपस्थानमनादरश्च पञ्चोपवासस्य।।१६२।।

आहारो हि सचित्तः सचित्तमिश्रः सचित्तसम्बन्धः।
दुःपक्वोऽभिषवोऽपि च पञ्चामी षष्टशीलस्य।।१६३।।

परदातृव्यपदेशः सचित्तनिक्षेपतत्पिधाने च।
कालस्यातिक्रमणं मात्सर्यं चेत्यतिथिदाने।।१६४।।

जीवितमरणाशंसे सुहृदनुरागः सुखानुबन्धश्च।
सनिदानः पञ्चैते भवन्ति सल्लेखनाकाले।।१६५।।

इत्येतानतिचारानपरानपि संप्रत्क्र्य परिवर्ज्य।
सम्यक्त्वव्रतशीलैरमलैः पुरुषार्थसिद्धिमेत्यचिरात्।।१६६।।

चारित्रान्तर्भावात् तपोऽपि मोक्षाङ्गमागमे गदितम्।
अनिगूहित निजवीर्यैस्तदपि निषेव्यं समाहितस्वान्तैः।।१६७।।

अनशनमवमौदर्यं विविक्तशय्यासनं रसत्यागः।
कायक्लेशो वृत्तेः संख्या च निषेव्यमिति तपो बाह्यम्।।१६८।।

विनयो वैयावृत्त्यं प्रायश्चित्तं तथैव चोत्सर्गः।
स्वाध्यायोऽथ ध्यानं भवति निषेव्यं तपोऽन्तरङ्गमिति।।१६९।।

जिनपुङ्गवप्रवचने मुनीश्वराणां यदुक्तमाचरणम्।
सुनिरूप्य निजां पदवीं शक्तिं च निषेव्यमेतदपि।।२००।।

इदमावश्यकषट्कं समतास्तववन्दनाप्रतिक्रमणम्।
प्रत्याख्यानं वपुषो व्युत्सर्गश्चेति कर्तव्यम्।।२०१।।

सम्यग्दण्डो वपुषः सम्यग्दण्डस्तथा च वचनस्य।
मनसः सम्यग्दण्डो गुप्तित्रितयं समनुगम्यम्।।२०२।।

सम्यग्गमनागमनं सम्यग्भाषा तथैषणा सम्यक्।
सम्यग्ग्रहनिक्षेपौ व्युत्सर्गः सम्यगिति समितिः।।२०३।।

धर्मः सेव्यः क्षान्तिः मृदुत्वमृजुता च शौचमथ सत्यम्।
आकिञ्चन्यं ब्रह्म त्यागश्च तपश्च संयमश्चेति।।२०४।।

अध्रुवमशरणमेकत्वमन्यताशौचमास्रवो जन्म।
लोकवृषबोधिसंवरनिर्जराः सततमनुप्रेक्ष्याः।।२०५।।

क्षुत्तृष्णा हिममुष्णं नग्नत्वं याचनारतिरलाभः।
दंशो मशकादीनामाक्रोशो व्याधिदुःखमङ्गलम्।।२०६।।

स्पर्शश्च तृणादीनामज्ञानमदर्शनं तथा प्रज्ञा।
सत्कारपुरस्कारः शय्या चर्या वधो निषद्या स्त्री।।२०७।।

द्वाविंशतिरप्येते परिषोढव्याः परीषहाः सततम्।
संक्लेशमुक्तमनसा संक्लेशनिमित्तभीतेन।।२०८।।

इति रत्नत्रयमेतत्प्रतिसमयं विकलमपि गृहस्थेन।
परिपालनीयमनिशं निरत्ययां मुक्तिमभिलषता।।२०९।।

बद्धोद्यमेन नित्यं लब्ध्वा समयं च बोधिलाभस्य।
पदमवलम्ब्य मुनीनां कर्तव्यं सपदि परिपूर्णम्।।२१०।।

असमग्रं भावयतो रत्नत्रयमस्ति कर्मबन्धो यः।
सविपक्षकृतोऽवश्यं मोक्षोपायो न बन्धनोपायः।।२११।।

येनांशेन सुदृष्टिस्तेनांशेनास्य बंधनं नास्ति।
येनांशेन तु रागस्तेनांशेनास्य बंधनं भवति।।२१२।।

येनांशेन ज्ञानं तेनांशेनास्य बंधनं नास्ति।
येनांशेन तु रागस्तेनांशेनास्य बंधनं भवति।।२१३।।

येनांशेन चरित्रं तेनांशेनास्य बंधनं नास्ति।
येनांशेन तु रागस्तेनांशेनास्य बंधनं भवति।।२१४।।

योगात्प्रदेशबंधः स्थितिबन्धो भवति चः कषायात्तु।
दर्शनबोधचरित्रं न योगरूपं कषायरूपं च।।२१५।।

दर्शनमात्मविनिश्चितिरात्मपरिज्ञानमिष्यते बोधः।
स्थितिरात्मनि चारित्रं कुत एतेभ्यो भवति बंधः।।२१६।।

सम्यक्त्वचरित्राभ्यां तीर्थंकराहारकर्मणो बंधः।
योऽप्युपदिष्टः समये न नयविदां सोऽपि दोषाय।।२१७।।

सति सम्यक्त्वचरित्रे तीर्थंकराहारबन्धकौ भवतः।
योगकषायौ नासति तत्पुनरस्मिन्नुदासीनम्।।२१८।।

ननु कथमेवं सिद्ध्यतु देवायुःप्रभृतिसत्प्रकृतिबंधः।
सकलजनसुप्रसिद्धो रत्नत्रयधारिणां मुनिवराणाम्।।२१९।।

रत्नत्रयमिह हेतुर्निर्वाणस्यैव भवति नान्यस्य।
आस्रवति यत्तु पुण्यं शुभोपयोगोऽयमपराधः।।२२०।।

एकस्मिन्समवायादत्यन्तविरुद्धकार्ययोरपि हि।
इह दहति घृतमिति यथा व्यवहारस्तादृशोऽपि रूढिमितः।।२२१।।

सम्यक्त्वचरित्रबोधलक्षणो मोक्षमार्ग इत्येषः।
मुख्योपचाररूपः प्रापयति परं पदं पुरुषम्।।२२२।।

नित्यमपि निरुपलेपः स्वरूपसमवस्थितो निरुपघातः।
गगनमिव परमपुरुषः परमपदे स्फुरति विशदतमः।।२२३।।

कृतकृत्यः परमपदे परमात्मा सकलविषयविषयात्मा।
परमानन्दनिमग्नो ज्ञानमयो नन्दति सदैव।।२२४।।

एकेनाकर्षन्ती श्लथयन्ती वस्तुतत्वमितरेण।
अन्तेन जयति जैनीनीतिर्मन्थाननेत्रमिव गोपी।।२२५।।

वर्णैः कृतानि चित्रैः पदानि तु पदैः कृतानि वाक्यानि।
वाक्यैः कृतं पवित्रं शास्त्रमिदं न पुनरस्माभिः।।२२६।।

।। इति श्रीमदमृतचन्द्रसूरीणां कृतिः पुरुषार्थसिद्ध्युपायोऽपरनाम
जिनप्रवचनरहस्यकोशः समाप्तः।।

श्रीमदमृतचन्द्रसूरिविरचितम्

अध्यात्म-अमृत-कलशम्

रंगभूमिका

नमः समयसाराय स्वानुभूत्या चकासते।
चित्स्वभावाय भावाय सर्वभावान्तरच्छिदे।।१।।

अनन्तधर्मणस्तत्त्वं पश्यन्ती प्रत्यगात्मनः।
अनेकान्तमयी मूर्तिर्नित्यमेव प्रकाशताम्।।२।।

परपरिणतिहेतोर्मोहनाम्नोऽनुभावा-
दविरतमनुभाव्यव्याप्तिकल्माषितायाः।
मम परमविशुद्धिः शुद्धचिन्मात्रमूर्त्ते-
र्भवतु समयसारव्याख्ययैवानुभूतेः।।३।।

उभयनयविरोधध्वंसिनि स्यात्पदाङ्के,
जिनवचसि रमन्ते ये स्वयं वान्तमोहाः।
सपदि समयसारं ते परं ज्योतिरुच्चै-
रनवमनयपक्षाक्षुण्णमीक्षन्त एव।।४।।

व्यवहरणनयः स्यात्-यद्यपि प्राक्पदव्याम्-
इह निहितपदानां हन्त हस्तावलम्बः।
तदपि परममर्थं चिच्चमत्कारमात्रं,
परविरहितमन्तः पश्यतां नैष किञ्चित्।।५।।

एकत्वे नियतस्य शुद्धनयतो व्याप्तुर्यदस्यात्मनः,
पूर्णज्ञानघनस्य दर्शनमिह द्रव्यान्तरेभ्यः पृथक्।
सम्यग्दर्शनमेतदेवनियमादात्मा च तावानयम्,
तन्मुक्त्वानवतत्त्वसन्ततिमिमामात्मायमेकोऽस्तु नः।।६।।

अतः शुद्धनयायत्तं प्रत्यग्ज्योतिश्चकास्ति तत्।
नवतत्त्वगतत्वेऽपि यदेकत्वं न मुञ्चति।।७।।

चिरमिति नवतत्त्वच्छन्नमुन्नीयमानं,
कनकमिव निमग्नं वर्णमालाकलापे।
अथ सततविविक्तं दृश्यतामेकरूपं,
प्रतिपदमिदमात्मज्योतिरुद्योतमानम्।।८।।

उदयति न नयश्रीरस्तमेति प्रमाणं,
क्वचिदपि च न विद्यो याति निक्षेपचक्रम्।
किमपरमभिदध्मो धाम्नि सर्वंकषेऽस्मिन्-
अनुभवमुपयाते भाति न द्वैतमेव।।९।।

आत्मस्वभावं परभावभिन्नमापूर्णमाद्यन्तविमुक्तमेकम्।
विलीनसङ्कल्पविकल्पजालं प्रकाशयन् शुद्धनयोऽभ्युदेति।।१०।।

न हि विदधति बद्धस्पृष्टभावादयोऽमी,
स्फुटमुपरितरन्तोऽप्येत्य यत्र प्रतिष्ठाम्।
अनुभवतु तमेव द्योतमानं समंतात्,
जगदपगतमोहीभूय सम्यक्स्वभावम्।।११।।

भूतं भान्तमभूतमेव रभसान्निर्भिद्य बंधं सुधीः-
र्यद्यन्तः किल कोऽप्यहो कलयति व्याहत्य मोहं हठात्।
आंत्मात्मानुभवैकगम्यमहिमा व्यक्तोऽयमास्ते ध्रुवं,
नित्यं कर्मकलङ्कपङ्कविकलो देवः स्वयं शाश्वतः।।१२।।

आत्मानुभूतिरिति शुद्धनयात्मिका या,
ज्ञानानुभूतिरियमेव किलेति बुद्ध्वा।
आत्मानमात्मनि निवेश्य सुनिष्प्रकम्प-
मेकोऽस्ति नित्यमवबोधघनः समन्तात्।।१३।।

अखण्डितमनाकुलं ज्वलदनन्तमन्तर्बहि-
र्महः परममस्तु नः सहजमुद्विलासं सदा।
चिदुच्छलननिर्भरं सकलकालमालम्बते,
यदेकरसमुल्लसल्लवणखिल्यलीलायितम्।।१४।।

एष ज्ञानघनो नित्यमात्मा सिद्धिमभीप्सुभिः।
साध्यसाधकभावेन द्विधैकः समुपास्यताम्।।१५।।

दर्शनज्ञानचारित्रैस्त्रित्वादेकत्वतः स्वयम्।
मेचकोऽमेचकश्चापि सममात्मा प्रमाणतः।।१६।।

दर्शनज्ञानचारित्रैस्त्रिभिः परिणतत्वतः।
एकोऽपि त्रिस्वभावत्वाद्व्यवहारेण मेचकः।।१७।।

परमार्थेन तु व्यक्तज्ञातृत्वज्योतिषैककः।
सर्वभावान्तरध्वंसिस्वभावत्वादमेचकः।।१८।।

आत्मनश्चिन्तयैवालं मेचकामेचकत्वयोः।
दर्शनज्ञानचारित्रैः साध्यसिद्धिर्न चान्यथा।।१९।।

कथमपि समुपात्तत्रित्वमप्येकताया,
अपतितमिदमात्मज्योतिरुद्गच्छदच्छम्।
सततमनुभवामोऽनन्तचैतन्यचिह्नं,
न खलु न खलु यस्मादन्यथा साध्यसिद्धिः।।२०।।

कथमपि हि लभन्ते भेदविज्ञानमूला-
मचलितमनुभूतिं ये स्वतो वान्यतो वा।
प्रतिफलननिमग्नानन्तभावस्वभावै-
र्मुकुरवदविकाराः सन्ततं स्युस्त एव।।२१।।

त्यजतु जगदिदानीं मोहमाजन्मलीढं,
रसयतु रसिकानां रोचनं ज्ञानमुद्यत्।
इह कथमपि नात्माऽनात्मना साकमेकः
किल कलयति काले क्वापि तादात्म्यवृत्तिम्।।२२।।

अयि! कथमपि मृत्वा तत्त्वकौतूहली सन्-
अनुभव भव मूर्त्तेः पार्श्ववर्त्ती मुहूर्तम्।
पृथगथ विलसन्तं स्व समालोक्य येन,
त्यजसि झगिति मूर्त्या साकमेकत्वमोहम्।।२३।।

कान्त्यैव स्नपयन्ति ये दशदिशो धाम्ना निरुन्धन्ति ये,
धामोद्दाममहस्विनां जनमनो मुष्णन्ति रूपेण ये।
दिव्येन ध्वनिना सुख श्रवणयोः साक्षात्क्षरन्तोऽमृत्म्,
वन्द्यास्तेऽष्टसहस्रलक्षणधरास्तीर्थेश्वराः सूरयः।।२४।।

प्राकारकवलिताम्बरमुपवनराजीनिगीर्णभूमितलम्।
पिबतीव हि नगरमिदं परिखावलयेन पातालम्।।२५।।

नित्यमविकारसुस्थितसर्वांगमपूर्वसहजलावण्यम्।
अक्षोभमिव समुद्रं जिनेन्द्ररूपं परं जयति।।२६।।

एकत्वं व्यवहारतो न तु पुनः कायात्मनोर्निश्चया-
न्नुः स्तोत्रं व्यवहारतोऽस्ति वपुषः स्तुत्या न तत्तत्त्वतः।
स्तोत्रं निश्चयतश्चितो भवति चित्स्तुत्यैव सैवं भवे-
न्नातस्तीर्थकरस्तवोत्तरबलादेकत्वमात्मांङ्गयोः।।२७।।

इति परिचिततत्त्वैरात्मकायैकतायां,
नयविभजनयुक्त्यात्यन्तमुच्छादितायाम्।
अवतरति न बोधो बोधमेवाद्य कस्य,
स्वरसरभसकृष्टः प्रस्फुटन्नेक एव।।२८।।

अवतरति न यावद् वृत्तिमत्यन्तवेगा-
दनवमपरभावत्यागदृष्टान्तदृष्टिः।
झटिति सकलभावैरन्यदीयैर्विमुक्ता,
स्वयमियमनुभूतिस्तावदाविर्बभूव।।२९।।

सर्वतः स्वरसनिर्भरभावं चेतये स्वयमहं स्वमिहैकम्।
नास्ति नास्ति मम कश्चन मोहः शुद्धचिद्घनमहोनिधिरस्मि।।३०।।

इति सति सह सर्वैरन्यभावैर्विवेके,
स्वयमयमुपयोगो बिभ्रदात्मानमेकम्।
प्रकटितपरमार्थैर्दर्शनज्ञानवृत्तैः,
कृतपरिणतिरात्माराम एव प्रवृत्तः।।३१।।

मज्जन्तु निर्भरममी सममेव लोका,
आलोकमुच्छलति शान्तरसे समस्ताः।
आप्लाव्य विभ्रमतिरस्करिणीं भरेण,
प्रोन्मग्न एष भगवानवबोधसिन्धुः।।३२।।

इति रंगभूमिका।।१।।

जीव-अजीव-अधिकार

जीवाजीवविवेकपुष्कलदृशा प्रत्यावयत्पार्षदा-
नासंसारनिबद्धबन्धनविधिध्वंसाद्विशुद्धं स्फुटत्।
आत्माराममनन्तधाममहसाध्यक्षेण नित्योदितं,
धीरोदात्तमनाकुलं विलसति ज्ञानं मनो ह्लादयत्।।१।।

विरम किमपरेणाकार्यकोलाहलेन,
स्वयमपि निभृतः सन् पश्य षण्मासमेकम्।
हृदयसरसि पुंसः पुद्गलाद्भिन्नधाम्नो,
ननु किमनुपलब्धिर्भाति किं चोपलब्धिः।।२।।

सकलमपि विहायाहाय चिच्छक्तिरिक्तं,
स्फुटतरमवगाह्य स्वं च चिच्छक्तिमात्रम्।
इममुपरि तरन्तं चारु विश्वस्य साक्षात्,
कलयतु परमात्मात्मानमात्मन्यनन्तम्।।३।।

चिच्छक्तिव्याप्तसर्वस्वसारो जी इयानयम्।
अतोऽतिरिक्ताः सर्वेऽपि भावाः पौद्गलिका अमी।।४।।

वर्णाद्या वा रागमोहादयो वा भिन्ना भावाः सर्व एवास्य पुंसः।
तनैवान्तस्तत्त्वतः पश्यतोऽमी नो दृष्टाः स्युर्दृष्टमेकं परं स्यात्।।५।।

निर्वर्त्यते येन यदत्र किंचित् तदेव तत्स्यान्न कथंचनान्यत्।
रुक्मेण निवृत्तमिहासिकोशं पश्यन्ति रुक्मं न कथंचनासिम्।।६।।

वर्णादिसामग्र्यमिदं विदन्तु निर्माणमेकस्य हि पुद्गलस्य।
ततोऽस्त्विदं पुद्गल एव नात्मा यतः स विज्ञानघनस्ततोऽन्यः।।७।।

घृतकुम्भाभिधानेऽपि कुम्भो घृतमयो न चेत्।
जीवो वर्णादिमज्जीवो जल्पनेऽपि न तन्मयः।।८।।

अनाद्यनन्तमचलं स्वसंवेद्यमबाधितम्।
जीवः स्वयं तु चैतन्यमुच्चैश्चकचकायते।।९।।

वर्णाद्यैः सहितस्तथा विरहितो द्वेधास्त्यजीवो यतो,
नामूर्त्तत्वमुपास्य पश्यति जगज्जीवस्य तत्त्वं ततः।
इत्यालोच्य विवेचकैः समुचितं नाव्याप्यतिव्यापि वा,
व्यक्तं व्यञ्जितजीवतत्त्वमचलं चेतन्यमालम्बयताम्।।१०।।

जीवादजीवमिति लक्षणतो विभिन्नं,
ज्ञानी जनोऽनुभवति स्वयमुल्लसन्तम्।
अज्ञानिनो निरवधिप्रविजृम्भितोऽयं,
मोहस्तु तत्कथमहो वत नानटीति।।११।।

अस्मिन्ननादिनि महत्यविवेकनाट्ये,
वर्णादिमान्नटति पुद्गल एव नान्यः।
रागादिपुद्गलविकारविरुद्धशुद्ध-
चैतन्यधातुमयमूर्तिरयं च जीवः।।१२।।

इत्थं ज्ञानक्रकचकलनापाटनं नाटयित्वा,
जीवाजीवौ स्फुटविघटनं नैव यावत्प्रयातः।
विश्वं व्याप्य प्रसभविकसद्व्यक्तचिन्मात्रशक्त्या,
ज्ञातृद्रव्यं स्वयमतिरसात्तावदुच्चैश्चकाशे।।१३।।

इति जीवाजीवाधिकारः।।२।।

एकः कर्त्ता चिदहमिह मे कर्म कोपादयोऽमी,
इत्यज्ञानां शमयदभितः कर्त्तृकर्मप्रवृत्तिम्।
ज्ञानज्योतिः स्फुरति परमोदात्तमत्यन्तधीरं,
साक्षात्कुर्वन्निरुपधिपृथग्द्रव्यनिर्भासि विश्वम्।।१।।

परपरिणतिमुज्झत् खंडयद्भेदवादा-
निदमुदितमखण्डं ज्ञानमुच्चण्डमुच्चैः।
ननु कथमवकाशः कर्त्तृकर्मप्रवृत्ते-
रिह भवति कथं वा पौद्गलः कर्मबन्धः।।२।।

इत्येवं विरचय्य संप्रति परद्रव्यान्निवृत्तिं परां,
स्वं विज्ञानघनस्वभावमभयादास्तिघ्नुवानः परम्।
अज्ञानोत्थितकर्त्तृकर्मकलनात् क्लेशान्निवृत्तः स्वयं,
ज्ञानीभूत इतश्चकास्ति जगतः साक्षी पुराणः पुमान्।।३।।

व्याप्यव्यापकता तदात्मनि भवेन्नैवातदात्मन्यपि,
व्याप्यव्यापकभावसम्भवमृते का कर्तृकर्मस्थितिः।
इत्युद्दामविवेकघस्मरमहो भारेण भिन्दंस्तमो,
ज्ञानीभूय तदा स एव लसितः कर्तृत्वशून्यः पुमान्।।४।।

ज्ञानी जानन्नपीमां स्वपरपरिणतिं पुद्गलश्चाप्यजानन्,
व्याप्तृव्याप्यत्वमन्तः कलयितुमसहौ नित्यमत्यन्तभेदात्।
अज्ञानात्कर्तृकर्मभ्रममतिरनयोर्भाति तावन्न याव-
द्विज्ञानार्च्चिश्चकास्ति क्रकचवददयं भेदमुत्पाद्य सद्यः।।५।।

यः परिणमति स कर्ता यः परिणामो भवेत्तु तत्कर्म।
या परिणतिः क्रिया सा त्रयमपि भिन्नं न वस्तुतया।।६।।

एकः परिणमति सदा परिणामो जायते सदैकस्य।
एकस्य परिणतिः स्यादनेकमप्येकमेव यतः।।७।।

नोभौ परिणमतः खलु परिणामो नोभयोः प्रजायेत।
उभयोर्न परिणतिः स्याद्यदनेकमनेकमेव सदा।।८।।

नैकस्य हि कर्तारौ द्वौ स्तो द्वे कर्मणी न चैकस्य।
नैकस्य च क्रिये द्वे एकमनेकं यतो न स्यात्।।९।।

आसंसारत एव धावति परं कुर्वेऽहमित्युच्चकै-
र्दुर्वारं ननु मोहिनामिह महाहङ्काररूपं तमः।
तद्भूतार्थपरिग्रहेण विलयं यद्येकवारं व्रजेत्
तत्किं ज्ञानघनस्य बन्धनमहो भूयो भवेदात्मनः।।१०।।

आत्मभावान्करोत्यात्मा परभावान्सदा परः।
आत्मैव ह्यात्मनो भावाः परस्य पर एव ते।।११।।

अज्ञानतस्तु सतृणाभ्यवहारकारी,
ज्ञानं स्वयं किल भवन्नपि रज्यते यः।
पीत्वा दधीक्षुमधुराम्लरसातिगृद्ध्या,
गां दोग्धि दुग्धमिव नूनमसौ रसालम्।।१२।।

अज्ञानान्मृगतृष्णिकां जलधिया धावन्ति पातुं मृगा,
अज्ञानात्तमसि द्रवन्ति भुजगाध्यासेन रज्जौ जनाः।
अज्ञानाच्च विकल्पचक्रकरणाद्वातोत्तरङ्गाब्धिवत्
शुद्धज्ञानमया अपि स्वयमयी कर्त्रीभवन्त्याकुलाः।।१३।।

ज्ञानाद्विवेचकतया तु परात्मनोर्यो;
जानाति हंस इव वाःपयसोर्विशेषम्।
चैतन्यधातुमचलं स सदाधिरूढो
जानीत एव हि करोति न किञ्चनापि।।१४।।

ज्ञानादेव ज्वलनपयसोरौष्ण्यशैत्यव्यवस्था,
ज्ञानादेवोल्लसति लवणस्वादभेदव्युदासः।
ज्ञानादेव स्वरसविकसन्नित्यचैतन्यधातोः,
क्रोधादेश्च प्रभवति भिदा भिन्दती कर्तृभावम्।।१५।।

अज्ञानं ज्ञानमप्येवं कुर्वन्नात्मानमञ्जसा।
स्यात्कर्त्तात्मात्मभावस्य परभावस्य न क्वचित्।।१६।।

आत्मा ज्ञानं स्वयं ज्ञानं ज्ञानादन्यत्करोति किम्।
परभावस्य कर्त्तात्मा मोहोऽयं व्यवहारिणाम्।।१७।।

जीवः करोति यदि पुद्गलकर्म नैव,
कस्तर्हि तत्कुरुत इत्यभिशङ्क्यैव।
एतर्हि तीव्ररयमोहनिबर्हणाय,
संकीर्त्यते शृणुत पुद्गलकर्मकर्तृ।।१८।।

स्थितेत्यविघ्ना खलु पुद्गलस्य स्वभावभूता परिणामशक्तिः।
तस्यां स्थितायां स करोति भावं यमात्मनस्तस्य स एव कर्त्ता।।१९।।

स्थितेति जीवस्य निरन्तराया स्वभावभूता परिणामशक्तिः।
तस्यां स्थितायां स करोति भावं यं स्वस्य तस्यैव भवेत्स कर्ता।।२०।।

ज्ञानमय एव भावः कुतो भवेद् ज्ञानिनो न पुनरन्यः।
अज्ञानमयः सर्वः कुतोऽयमज्ञानिनो नान्यः।।२१।।

ज्ञानिनो ज्ञाननिर्वृत्ताः सर्वे भावा भवन्ति हि।
सर्वेऽप्यज्ञाननिर्वृत्ता भवन्त्यज्ञानिनस्तु ते।।२२।।

अज्ञानमयभावानामज्ञानी व्याप्य भूमिकाम्।
द्रव्यकर्मनिमित्तानां भावानामेति हेतुताम्।।२३।।

य एव मुक्त्वा नयपक्षपातं स्वरूपगुप्ता निवसन्ति नित्यम्।
विकल्पजालच्युतशान्तचित्तास्त एव साक्षादमृतं पिबन्ति।।२४।।

एकस्य बद्धो न तथा परस्य चिति द्वयोर्द्धाविति पक्षपातौ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव।।२५।।

एकस्य मूढो न तथा परस्य चिति द्वयोर्द्धाविति पक्षपातौ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव।।२६।।

एकस्य रक्तो न तथा परस्य चिति द्वयोर्द्धाविति पक्षपातौ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव।।२७।।

एकस्य दुष्टो न तथा परस्य चिति द्वयोर्द्वावितिपक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव । ।२८ । ।

एकस्य कर्त्ता न तथा परस्य चिति द्वयोर्द्वावितिपक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव । ।२९ । ।

एकस्य भोक्ता न तथा परस्य चिति द्वयोर्द्वावितिपक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव । ।३० । ।

एकस्य जीवो न तथा परस्य चिति द्वयोर्द्वावितिपक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव । ।३१ । ।

एकस्य सूक्ष्मो न तथा परस्य चिति द्वयोर्द्वावितिपक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव । ।३२ । ।

एकस्य हेतुर्न तथा परस्य चिति द्वयोर्द्वावितिपक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव । ।३३ । ।

एकस्य कार्यं न तथा परस्य चिति द्वयोर्द्वावितिपक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव । ।३४ । ।

एकस्य चैको न तथा परस्य चिति द्वयोर्द्वावितिपक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव । ।३५ । ।

एकस्य भावो न तथा परस्य चिति द्वयोर्द्वावितिपक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव । ।३६ । ।

एकस्य शान्तो न तथा परस्य चिति द्वयोर्द्वावितिपक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव । ।३७ । ।

एकस्य नित्यो न तथा परस्य चिति द्वयोर्द्वावितिपक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव । ।३८ । ।

एकस्य वाच्यो न तथा परस्य चिति द्वयोर्द्वावितिपक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव । ।३९ । ।

एकस्य नाना न तथा परस्य चिति द्वयोर्द्वावितिपक्षपातौ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव।।४०।।

एकस्य चेत्यो न तथा परस्य चिति द्वयोर्द्वावितिपक्षपातौ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव।।४१।।

एकस्य दृश्यो न तथा परस्य चिति द्वयोर्द्वावितिपक्षपातौ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव।।४२।।

एकस्य वेद्यो न तथा परस्य चिति द्वयोर्द्वावितिपक्षपातौ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव।।४३।।

एकस्य भातो न तथा परस्य चिति द्वयोर्द्वावितिपक्षपातौ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव।।४४।।

स्वेच्छासमुच्छलदनल्पविकल्पजाला-
मेवं व्यतीत्य महतीं नयपक्षकक्षाम्।
अन्तर्बहिस्समरकैकरसस्वभावं,
स्वं भावमेकमुपयात्यनुभूतिमात्रम्।।४५।।

इन्द्रजालमिदमेवमुच्छलत्-पुष्कलोच्चलविकल्पवीचिभिः।
यस्य विस्फुरणमेव तत्क्षणं कृत्स्नमस्यति तदस्मि चिन्महः।।४६।।

चित्स्वभावभरभावितभावाऽभावभावपरमार्थतयैकम्।
बन्धपद्धतिमपास्य समस्तां चेतये समयसारमपारम्।।४७।।

आक्रामन्नविकल्पभावमचलं पक्षैर्नयानां विना
सारो यः समयस्य भाति निभृतैरास्वाद्यमानः स्वयम्।
विज्ञानैकरसः स एष भगवान् पुण्यः पुराणः पुमान्
ज्ञानं दर्शनमप्ययं किमथवा यत्किंचनैकोऽप्ययम्।।४८।।

दूरं भूरिविकल्पजालगहने भ्राम्यन्निजौघाच्च्युतो,
दूरादेव विवेकनिम्नगमनान्नीतो निजौघं बलात्।
विज्ञानैकरसस्तदेकरसिनामात्मानमात्माहर-
न्नात्मन्येव सदा गतानुगततामायात्ययं तोयवत्।।४९।।

विकल्पकः परं कर्ता विकल्पः कर्म केवलम्।
न जातु कर्तृकर्मत्वं सविकल्पस्य नश्यति।।५०।।

यः करोति स करोति केवलं यस्तु वेत्ति स तु वेत्ति केवलम्।
यः करोति न हि वेत्ति स क्वचित् यस्तु वेत्ति न करोति स क्वचित्।।५१।।

ज्ञप्तिः करोतौ न हि भासतेऽन्त- र्ज्ञप्तौ करोतिश्च न भासतेऽन्तः।
ज्ञप्ति करोतिश्च ततो विभिन्ने ज्ञाता न कर्तेति ततः स्थितं च।।५२।।

कर्त्ता कर्मणि नास्ति नास्ति नियतं कर्मापि तत्कर्त्तरि,
द्वन्द्वं विप्रतिषिध्यते यदि तदा का कर्तृकर्मस्थितिः।
ज्ञाता ज्ञातरि कर्म कर्मणि सदा व्यक्तेति वस्तुस्थिति-
र्नेपथ्ये बत नानटीति रभसान्मोहस्तथाप्येष किम्।।५३।।

कर्त्ता कर्त्ता भवति न यथा कर्म कर्मापि नैव,
ज्ञानं ज्ञानं भवति च यथा पुद्गलः पुद्गलोऽपि।
ज्ञानज्योतिर्ज्वलितमचलं व्यक्तमन्तस्तथोच्चै-
श्चिच्छक्तीनां निकरभरतोऽत्यन्तगभ्भीरमेतत्।।५४।।

इति कर्तृकर्माधिकार।।3।।

पुण्य-पाप-अधिकार

तदथ कर्म शुभाशुभभेदतो द्वितयतां गतमैक्यमुपानयन्।
ग्लपितनिर्भरमोहरजः अयं स्वयमुदेत्यवबोधसुधाप्लवः।।१।।

एको दूरात्त्यजति मदिरां ब्राह्मणत्वाभिमानात्-
दन्यः शूद्रः स्वयमहमिति स्नाति नित्यं तयैव।
द्वावप्येतौ युगपदुरान्निर्गतौ शूद्रिकायाः,
शूद्रौ साक्षाअपि तच चरतो जातिभेदभ्रमेण।।२।।

हेतुस्वभावानुभवाश्रयाणां सदाप्यभेदान्न हि कर्मभेदः।
तद्बन्धमार्गाश्रितमेकमिष्टं स्वयं समस्तं खलु बन्धहेतुः।।३।।

कर्म सर्वमपि सर्वविदो यद् बन्धसाधनमुशन्त्यविशेषात्।
तेन सर्वमपि तत्प्रतिषिद्धं ज्ञानमेव विहितं शिवहेतुः।।४।।

निषिद्धे सर्वस्मिन् सुकृतदुरिते कर्मणि किल,
प्रवृत्ते नैष्कर्म्ये न खलु मुनयः सन्त्यशरणाः।
तदा ज्ञाने ज्ञानं प्रतिचरितमेषां हि शरणं,
स्वयं विन्दन्त्येते परममृतं तत्र निरताः।।५।।

यदेतद् ज्ञानात्मा ध्रुवमचलमाभाति भवनं,
शिवस्यायं हेतुः स्वयमपि यतस्तच्छिव इति।
अतोऽन्यद्बन्धस्य स्वयमपि यतो बंध इति तत्,
ततो ज्ञानात्मत्वं भवनमनुभूतिर्हि विहितम्।।६।।

वृत्तं ज्ञानस्वभावेन ज्ञानस्य भवनं सदा।
एकद्रव्यस्वभावत्वान्मोक्षहेतुस्तदेव तत्।।७।।

वृत्तं कर्मस्वभावेन ज्ञानस्य भवनं न हि।
द्रव्यान्तरस्वभावत्वान्मोक्षहेतुर्न कर्म तत्।।८।।

मोक्षहेतुतिरोधानात् बन्धत्वात्स्वयमेव च।
मोक्षहेतुतिरोधायिभावत्वात्तन्निषिध्यते।।९।।

संन्यस्तव्यमिदं समस्तमपि तत्कर्मैव मोक्षार्थिना,
संन्यस्ते सति तत्र का मिल कथा पुण्यस्य पापस्य च।
सम्यक्त्वादिनिजस्वभावभवनान्मोक्षस्य हेतुर्भवन्-
नैष्कर्मप्रतिबद्धमुद्धतरसं ज्ञानं स्वयं धावति।।१०।।

यावत्पाकमुपैति कर्म विरतिर्ज्ञानस्य सम्यङ्न सा,
कर्मज्ञानसमुच्चयोऽपि विहितस्तावन्न काचित्क्षतिः।
किन्त्वत्रापि समुल्लसत्यवसतो यत्कर्म बन्धाय तत्,
मोक्षाय स्थितमेकमेव परमं ज्ञानं विमुक्तं स्वतः।।११।।

मग्नाः कर्मनयावलम्बनपरा ज्ञानं न जानन्ति ये,
मग्ना ज्ञाननयैषिणोऽपि यदतिस्वच्छन्दमन्दोद्यमाः।
विश्वस्योपरि ते तरन्ति सततं ज्ञानं भवन्तः स्वयं,
ये कुर्वन्ति न कर्म जातु न वशं यान्ति प्रमादस्य च।।१२।।

भेदोन्मादं भ्रमरसभरान्नाटयत्वीतमोहं
मूलोन्मूलं सकलमपि तत्कर्म कृत्वा बलेन।
हेलोन्मीलत् परमकलया सार्धमारब्धकेलि-
ज्ञानज्योतिः कवलिततमः प्रोज्जजृम्भेभरेण।।१३।।

आस्रव अधिकार

अथ महामदनिर्भरमन्थरं समररङ्गपरागतमास्रवम्।
अयमुदारगभीरमहोदयो जयति दुर्ज्जयबोधधनुर्द्धरः।।१।।

भावो रागद्वेषमोहैर्विना यो जीवस्य स्यात् ज्ञाननिर्वृत्त एव।
रुन्धन्सर्वान् द्रव्यकर्मास्रवौघानेषो भावः सर्वभावास्रवाणाम्।।२।।

भावास्रवाभावमयं प्रपन्नो द्रव्यास्रवेभ्यः स्वत एव भिन्नः।
ज्ञानी सदा ज्ञानमयैकभावो निरास्रवो ज्ञायक एक एव।।३।।

सन्न्यस्यन्निजबुद्धिपूर्वमनिशं रागं समग्रं स्वयं,
बारंबारमबुद्धिपूर्वमपि तं जेतुं स्वशक्तिं स्पृशन्।
उच्छिन्दन् परवृत्तिमेव सकलां ज्ञानस्य पूर्णो भवन्,
आत्मा नित्यनिरास्रवो भवति हि ज्ञानी यदा स्यात्तदा।।४।।

सर्वस्यामेव जीवन्त्यान्द्रव्यप्रत्ययसंततौ।
कुतो निरास्रवो ज्ञानी नित्यमेवेति चेन्मतिः।।५।।

विजहति न हि सत्तां प्रत्ययाः पूर्वबद्धाः,
समयमनुसरन्तो यद्यपि द्रव्यरूपाः।
तदपि सकल-राग-द्वेष-मोह-व्युदासा-
दवतरति न जातु ज्ञानिनः कर्मबन्धः।।६।।

रागद्वेषविमोहानां ज्ञानिनो यदसंभवः।
तत एव न बन्धोऽस्य ते हि बन्धस्य कारणम्।।७।।

अध्यास्य शुद्धनयमुद्धतबोधचिह्न-
मेकाग्र्यमेव कलयन्ति सदैव ये ते।
रागादिमुक्तमनसः सततं भवन्तः,
पश्यन्ति बन्धविधुरं समयस्य सारम्।।८।।

प्रच्युत्य शुद्धनयतः पुनरेव ये तु
रागादियोगमुपयान्ति विमुक्तबोधाः।
ते कर्मबन्धमिह बिभ्रति पूर्वबद्ध-
द्रव्यास्रवैः कृतविचित्रविकल्पजालम्।।९।।

आसवदि जेण कम्मं परिणामेणप्पणो स विण्णेयो।
भावासवो जिणुत्तो-कम्मासवणं परो होदि।।९-१।।

इदमेवात्र तात्पर्यं हेयः शुद्धनयो न हि।
नास्ति बन्धस्तदत्यागात्तत्त्यागाद्बन्ध एव हि।।१०।।

धीरोदारमहिम्न्यनादिनिधने बोधे निबध्नन्धृतिं।
त्याज्यः शुद्धनयो न जातु कृतिभिः सर्वंकषः कर्मणाम्।।
तत्रस्थाः स्वमरीचिचक्रमचिरात्संहृत्य निर्यद्बहिः।
पूर्ण-ज्ञानघनौघमेकमचलं पश्यन्ति शान्तं महः।।११।।

रागादीनां झगिति विगमात्सर्वतोऽप्यास्रवाणां,
नित्योद्योतं किमपि परमं वस्तु सम्पश्यतोऽन्तः।
स्फारस्फारैः स्वरसविसरैः प्लावयत्सर्वभावान्-
आलोकान्तादचलमतुलं ज्ञानमुन्मग्नमेतत्।।१२।।

इत्यास्रवो निष्क्रान्तः।।५।।

आसंसारविरोधिसंवरजयैकान्तावलिप्तास्रव-
न्यक्काराव्रतिलब्धनित्यविजयं सम्पादयत्संवरम्।
व्यावृत्तं पररूपतो नियमितं सम्यक् स्वरूपे स्फुरत्-
ज्योतिश्चिन्मयमुज्ज्वलं निजरसप्राग्भारमुज्जृम्भते।।१।।

चैद्रूप्यं जडरूपतां च दधतोः कृत्वा विभागं द्वयो-
रन्तर्दारुणदारणेन परितो ज्ञानस्य रागस्य च।
भेदज्ञानमुदेति निर्मलमिदं मोदध्वमध्यासिताः
शुद्धज्ञानघनौघमेकमधुना सन्तो द्वितीयच्युताः।।२।।

यदि कथमपि धारावाहिना बोधनेन,
ध्रुवमुपलभमानः शुद्धमात्मानमास्ते।
तदयमुदयदात्मारामरामात्मानमात्मा,
परपरिणतिरोधाच्छुद्धमेवाभ्युपैति।।३।।

निजमहिमरतानां भेदविज्ञानशक्त्या,
भवति नियतमेषां शुद्धतत्त्वोपलम्भः।
अचलितमखिलान्यद्रव्यदूरेस्थितानां,
भवति सति च तस्मिन्नक्षयः कर्ममोक्षः।।४।।

सम्पद्यते संवर एष साक्षाच्छुद्धात्मतत्त्वस्य किलोपलम्भात्।
स भेदविज्ञानत एव तस्मात्तद्भेदविज्ञानमतीव भाव्यम्।।५।।

भावयेद्भेदविज्ञानमिदमच्छिन्नधारया।
तावद्यावत्पराच्युतत्वा ज्ञानं ज्ञाने प्रतिष्ठते।।६।।

भेदविज्ञानतः सिद्धाः सिद्धा ये किल केचन।
तस्यैवाभावतो बद्धा बद्धा ये किल केचन।।७।।

भेदज्ञानोच्छलनकलनाच्छुद्धतत्त्वोपलम्भा-
द्रागग्रामप्रलयकरणात्कर्म्मणां संवरेण।
विभ्रत्तोषं परममलालोकमम्लानमेकं,
ज्ञानं ज्ञाने नियतमुदितं शाश्वतोद्योतमेतत्।।8।

इति संवरो निष्क्रान्तः।।6।।

रागाद्यास्रवरोधतो निजधुरान्धृत्वा परः संवरः,
कर्म्मागामि समस्तमेव भरतो दूरान्निरुन्धन् स्थितः।
प्राग्बद्धं तु तदेव दग्धमधुना व्याजृम्भते निर्जरा,
ज्ञानज्योतिरपावृतं न हि यतो रागादिभिर्मूच्छति।।१।।

तज्ज्ञानस्यैव सामर्थ्यं विरागस्यैव वा किल।
यत्कोऽपि कर्मभिः कर्म्म भुञ्जानोऽपि न बध्यते।।२।।

नाश्नुते विषयसेवनेऽपि यत् स्वयं फलं विषयसेवनस्य ना।
ज्ञानवैभवविरागताबलात्सेवकोऽपि तदसावसेवकः।।३।।

सम्यग्दृष्टेर्भवति नियतं ज्ञानवैराग्यशक्तिः,
स्वं वस्तुत्वं कलयितुमयं स्वान्यरूपाप्तिमुक्त्या।
यस्माद् ज्ञात्वा व्यतिकरमिदं तत्त्वतः स्वं परं च,
स्वस्मिन्नास्ते विरमति परात्सर्वतो रागयोगात्।।४।।

सम्यग्दृष्टिः स्वयमयमहं जातु बन्धो न मे स्या-
दित्युत्तानोत्पुलकवदना रागिणोऽप्याचरन्तु।
आलम्बन्तां समितिपरतां ते यतोऽद्यापि पापाः
आत्मानात्मावगमविहात्सन्ति सम्यक्त्वरिक्ताः।।५।।

आसंसारात्प्रतिपदममी रागिणो नित्यमत्ताः,
सुप्ता यस्मिन्नपदमपदं तद्विबुद्ध्यध्वमन्धाः।
एतैतेतः पदमिदमिदं यत्र चैतन्यधातुः,
शुद्धः शुद्धः स्वरसभरतः स्थायिभावत्वमेति।।६।।

एकमेव हि तत्स्वाद्यं विपदामपदं पदम्।
अपदान्येव भासन्ते पदान्यन्यानि यत्पुराः।।७।।

एकं ज्ञायकभावनिर्भरमहास्वादं समासादयन्,
स्वादन्द्वन्द्वमयं विधातुमसहः स्वां वस्तुवृत्तिं विदन्।
आत्मात्मानुभवानुभावविवशो भ्रश्यद्विशेषोदयं,
सामान्यं कलयत्किलैष सकलं ज्ञानं नयत्येकताम्।।८।।

अच्छाच्छाः स्वयमुच्छलन्ति यदिमाः संवेदनव्यक्तयः,
निष्पीताखिलभावमण्डलरसप्राग्भारमत्ता इव।
यस्याभिन्नरसः स एष भगवानेकोऽप्यनेकीभवन्,
वल्गत्युत्कलिकाभिरद्भुतनिधिश्चैतन्यरत्नाकरः।।६।।

क्लिश्यन्तां स्वयमेव दुष्करतरैर्मोक्षोन्मुखैः कर्मभिः,
क्लिश्यन्तां च परे महाव्रततपोभारेण भग्नाश्चिरम्।
साक्षान्मोक्ष इदं निरामयपदं संवेद्यमानं स्वयं,
ज्ञानं ज्ञानगुणं विना कथमपि प्राप्तुं क्षमन्ते न हि।।१०।।

पदमिदं ननु कर्मदुरासदं सहजबोधकलासुलभं किल।
तत इदं निजबोधकलाबलात्कलयितुं यततां सततं जगत्।।११।।

अचिन्त्यशक्तिः स्वयमेव देवश्चिन्मात्रचिन्तामणिरेष यस्मात्।
सर्वार्थसिद्धात्मतया विधत्ते ज्ञानी किमन्यस्य परिग्रहेण।।१२।।

इत्थं परिग्रहमपास्य समस्तमेव सामान्यतः स्वपरयोरविवेकहेतुम्।
अज्ञानमुज्झितुमना अधुना विशेषाद्भूयस्तमेव परिहर्तुमयं प्रवृत्तः।।१३।।

पूर्वबद्धनिजकर्मविपाकाद् ज्ञानिनो यदि भवत्युपभोगः।
तद्भवत्वथ च रागवियोगान्नूनमेति न परिग्रहभावम्।।१४।।

वेद्यवेदकविभावचलत्वाद्वेद्यते न खलु कांक्षितमेव।
तेन काङ्क्षति न किञ्चन विद्वान् सर्वतोऽप्यतिविरक्तिमुपैति।।१५।।

ज्ञानिनो न हि परिग्रहभावं कर्मरागरसरिक्ततयैति।
रङ्गयुक्तिरकषायितवस्त्रे स्वीकृतैव हि बहिर्लुठतीह।।१६।।

ज्ञानवान् स्वरसतोऽपि यतः स्यात्सर्वरागरसवर्ज्जनशीलः।
लिप्यते सकलकर्मभिरेषः कर्ममध्यपतितोऽपि ततो न।।१७।।

यादृक् तादृगिहास्ति तस्य वशतो यस्य स्वभावो हि यः,
कर्तुं नैव कथंचनापि हि परैरन्यादृशः शक्यते।
अज्ञानं न कदाचनापि हि भवेत् ज्ञानं भवेत्सन्ततम्,
ज्ञानिन् भुङ्क्ष्व परापराधजनितो नास्तीह बन्धस्तव।।१८।।

ज्ञानिन् कर्म्म न जातु कर्तुमुचितं किञ्चित्तथाप्युच्यते,
भुङ्क्षे हन्त न जातु मे यदि परं दुर्भुक्त एवासि भोः।
बन्धः स्यादुपभोगतो यदि न तत्किं कामचारोऽस्ति ते,
ज्ञानं सन् बस बन्धमेष्यपरथा स्वस्यापराधाद्ध्रुवम्।।१६।।

कर्तारं स्वफलेन यत्किल बलात्कर्मैव नो योजयेत्,
कुर्वाणः फललिप्सुरेव हि फलं प्राप्नोति यत्कर्मणः।
ज्ञानं संस्तदपास्तरागरचनो नो बध्यते कर्मणा,
कुर्वाणोऽपि हि कर्म तत्फलपरित्यागैकशीलो मुनिः।।२०।।

त्यक्तुं येन फलं स कर्म कुरुते नेति प्रतीमो वयं,
किन्त्वस्यापि कुतोऽपि किञ्चिदपि तत्कर्मावशेनापतेत्।
तस्मिन्नापतिते त्वकम्पपरमज्ञानस्वभावे स्थितो,
ज्ञानी किं कुरुतेऽथ किं न कुरुते कर्म्मेति जानाति कः।।२१।।

सम्यग्दृष्टय एव साहसमिदं कर्तुं क्षमन्ते परं,
यद्वज्रेऽपि पतत्यमी भयचलत्त्रैलोक्यमुक्ताध्वनि।
सर्वामेव निसर्गनिर्भयतया शंका विहाय स्वयं,
जानन्तः स्वमवध्यबोधवपुषं बोधाच्च्यवन्ते न हि।।२२।।

लोकः शाश्वत एक एष सकलव्यक्तो विविक्तात्मन-
श्चिल्लोकं स्वयमेव केवलमयं यल्लोकयत्येककः।
लोकोऽयं न तवापरस्तदपरस्तस्यास्ति तद्भीः कुतो,
निःशङ्कः सततं स्वयं स सहजं ज्ञानं सदा विन्दति।।२३।।

एषैकैव हि वेदना यदचलं ज्ञानं स्वयं वेद्यते,
निर्भेदोदितवेद्यवेदकबलादेकं सदानाकुलैः।
नैवान्यागतवेदनैव हि भवेत्तद्भीः कुतो ज्ञानिनो,
निःशङ्कः सततं स्वयं स सहजं ज्ञानं सदा विन्दति।।२४।।

यत्सन्नाशमुपैति तन्न नियतं व्यक्तेति वस्तुस्थिति-
र्ज्ञानं सत्स्वयमेव तत्किल ततस्त्रातं किमस्यापरैः।
अस्यात्राणमतो न किञ्चन भवेत्तद्भीः कुतो ज्ञानिनो,
निःशङ्कः सततं स्वयं स सहजं ज्ञानं सदा विन्दति।।२५।।

स्वं रूपं किल वस्तुनोऽस्ति परमा गुप्तिः स्वरूपेण य-
च्छक्तः कोऽपि परः प्रवेष्टुमकृतं ज्ञानं स्वरूपं च नुः।
अस्यागुप्तिरतो न काचन भवेत्तद्भीः कुतो ज्ञानिनो,
निःशङ्कः सततं स्वयं स सहजं ज्ञानं सदा विन्दति।।२६।।

प्राणोच्छेदमुदाहरन्ति मरणं प्राणाः किलास्यात्मनो,
ज्ञानं तत्स्वयमेव शाश्वततया नोच्छिद्यते जातुचित्।
तस्यातो मरणं न किञ्चन भवेत्तद्भीः कुतो ज्ञानिनो,
निःशङ्कः सततं स्वयं स सहजं ज्ञानं सदा विन्दति।।२७।।

एकं ज्ञानमनाद्यनन्तमचलं सिद्धं किलैतत्स्वतो,
यावत्तावदिदं सदैव हि भवेन्नात्र द्वितीयोदयः।
तन्नाकस्मिकमत्र किञ्चन भवेत्तद्भीः कुतो ज्ञानिनो,
निःशङ्कः सततं स्वयं स सहजं ज्ञानं सदा विन्दति।।२८।।

टंकोत्कीर्णस्वरसनिचितज्ञानसर्वस्वभाजः,
सम्यग्दृष्टेर्यदिह सकलं घ्नन्ति लक्ष्माणि कर्म।
तत्तस्यास्मिन्पुनरपि मनाक् कर्म्मणो नास्ति बंधः,
पूर्वोपात्तं तदनुभवतो निश्चितं निर्जरैव।।२९।।
रुन्धन्बन्धं नवमिति निजैः सङ्गतोऽष्टाभिरङ्गैः,
प्राग्बद्धं तु क्षयमुपनयन्निर्ज्जरोजृम्भणेन।
सम्यग्दृष्टिः स्वयमतिरसादादिमध्यान्तमुक्तं,
ज्ञानं भूत्वा नटति गगनाभोगरङ्गं विगाह्य।।३०।।

इति निर्ज्जरा निष्क्रान्ता।।7।।

बन्ध अधिकार

रागोद्गारमहारसेन सकलं कृत्वा प्रमत्तं जगत्,
क्रीडन्तं रसभावनिर्भरमहानाट्येन बंधं धुनत्।
आनन्दामृतनित्यभोजिसहजावस्थां स्फुटन्नाटयत्-
धीरोदारमनाकुलं निरुपधि ज्ञानं समुन्मज्जति।।१।।

न कर्मबहुलं जगन्न चलनात्मकं कर्म वा,
न नैककरणानि वा न चिदचिद्वधो बन्धकृत्।
यदैक्यमुपयोगभूः समुपयाति रागादिभिः,
स एव किल केवलं भवति बन्धहेतुर्नृणाम्।।२।।

लोकाः कर्म ततोऽस्तु सोऽस्तु च परिपस्पन्दात्मकं कर्मतत्-
तान्यस्मिन् करणानि सन्तु चिदचिद्व्यापादनं चास्तु तत्।
रागादीनपयोगभूमिमनयद् ज्ञानं भवेत् केवलं,
बंधं नैव कुतोऽप्युपैत्ययमहो सम्यग्दृगात्मा ध्रुवं।।३।।

तथापि न निरर्गलं चरितुमिष्यते ज्ञानिनां,
तदायतनमेव सा किल निर्गला व्यावृतिः।
अकामकृतकर्म तन्मतमकरणं ज्ञानिनां,
द्वयं न हि विरुद्ध्यते किमु करोति जानाति च।।४।।

जानाति यः स न करोति करोति यस्तु,
जानात्ययं न खलु तत्किल कर्मरागः।
रागं त्वबोधमयमध्यवसायमाहु-
र्मिथ्यादृशः स नियतं स च बन्धहेतुः।।५।।

सर्वं सदैव नियतं भवति स्वकीय-
कर्मोदयान्मरणजीवितदुःखसौख्यम्।
अज्ञानमेतदिह यत्तु परः परस्य,
कुर्यात्पुमान् मरणजीवितदुःखसौख्यम्।।६।।

अज्ञानमेतदधिगम्य परात्परस्य,
पश्यन्ति ये मरणजीवितदुःखसौख्यम्।
कर्म्माण्यहंकृतिरसेन चिकीर्षवस्ते,
मिथ्यादृशो नियतमात्महनो भवन्ति।।७।।

मिथ्यादृष्टेः स एवास्य बन्धहेतुर्विपर्ययात्।
य एवाध्यवसाओऽयमज्ञानात्माऽस्य दृश्यते।।८।।

अनेनाध्यवसायेन निःफलेन विमोहितः।
तत्किञ्चनापि नैवाऽस्ति नात्मात्मानं करोति यत्।।६।।

विश्वाद्विभक्तोऽपि हि यत्प्रभावादात्मानमात्मा विदधाति विश्वम्।
मोहैककन्दोऽध्यवसाय एष नास्तीह येषां यतयस्त एव।।१०।।

सर्वत्राध्यवसानमेवमखिलं त्याज्यं यदुक्तं जिनै-
स्तन्मन्ये व्यवहार एव निखिलोऽप्यन्याश्रयस्त्याजितः।
सम्यङ्निश्चयमेकमेव तदमी निःकम्पमाक्रम्य किं,
शुद्धज्ञानघने महिम्नि न निजे बध्नन्ति संतो धृतिम्।।११।।

रागादयो बन्धनिदानमुक्तास्ते शुद्धचिन्मात्रमहोऽतिरिक्ताः।
आत्मा परो वा किमु तन्निमित्तमिति प्रणुन्नाः पुनरेवमाहुः।।१२।।

न जातुरागादिनिमित्तभावमात्मात्मनो याति यथार्ककान्तः।
तस्मिन्निमित्तं परसङ्ग एव वस्तुस्वभावोऽयमुदेति तावत्।।१३।।

इति वस्तुस्वभावं स्वं ज्ञानी जानाति तेन सः।
रागादीन्नात्मनः कुर्यान्नातो भवति कारकः।।१४।।

इति वस्तुस्वभावं स्वं नाज्ञानी वेत्ति तेन सः।
रागादीनात्मनः कुर्यादतो भवति कारकः।।१५।।

इत्यालोच्य विवेच्य तत्किल परद्रव्यं समग्रं बलात्,
तन्मूलां बहुभावसन्ततिमिमामुद्धर्तुकामः समम्।
आत्मानं समुपैति निर्भरवहत्पूर्णैकसंविद्युतम्,
येनोन्मूलितबन्ध एष भगवानात्माऽऽत्मनि स्फूर्जति।।१६।।

रागादीनामुदयमदयं दारयत्कारणानां,
कार्यं बंधं विविधमधुना सद्य एव प्रणुद्य।
ज्ञानज्योतिः क्षपिततिमिरं साधु सन्नद्धमेत-
त्तद्वद्यद्वत्प्रसरमपरः कोऽपि नास्यावृणोति।।१७।।

इति बन्धो निष्क्रान्तः।।8।।

द्विधाकृत्य प्रज्ञाक्रकचदलनाद्बन्धपुरुषौ
नयन्मोक्षं साक्षात्पुरुषमुपलम्भैकनियतम्।
इदानीमुन्मज्जत्सहजपरमानन्दसरसं
परं पूर्णं ज्ञानं कृतसकलकृत्यं विजयते।।१।।

प्रज्ञा छेत्री शितेयं कथमपि निपुणैः पातिता सावधानैः,
सूक्ष्मेऽन्तःसन्धिबन्धे निपतति रभसादात्मकर्मोभयस्य।
आत्मानं मग्नमन्तःस्थिरविशदलसद्धाम्नि चैतन्यपूरे,
बन्धं चाज्ञानभावे नियमितमभितः कुर्वती भिन्न-भिन्नौ।।२।।

भित्त्वा सर्वमपि स्वलक्षणबलाद्धेत्तुं हि यच्छक्यते,
चिन्मुद्राङ्कितनिर्विभागमहिमा शुद्धश्चिदेवास्म्यहम्।
भिद्यन्ते यदि कारकाणि यदि वा धर्मा गुणा वा यदि,
भिद्यन्तां न भिदाऽस्ति काचन विभौ भावे विशुद्धे चिति।।३।।

अद्वैताऽपि हि चेतना जगति चेद् दृग्ज्ञप्तिरूपं त्यजेत्-
तत्सामान्यविशेषरूपविरहात्साऽस्तित्वमेव त्यजेत्।
तत्त्यागे जडता चितोऽपि भवति व्याप्यो विना व्यापका-
दात्माचान्तमुपैति तेन नियतं दृग्ज्ञप्तिरूपास्तु चित्।।४।।

एकश्चितश्चिन्मय एव भावो भावाः परे ये किल ते परेषाम्।
ग्राह्यस्ततश्चिन्मय एव भावो भावाः परे सर्वत एव हेयाः।।५।।

सिद्धान्तोऽयमुदात्तचित्तचरितैर्मोक्षार्थिभिः सेव्यतां,
शुद्धं चिन्मयमेकमेव परमं ज्योतिः सदैवास्म्यहम्।
एते ये तु समुल्लसन्ति विबुधा भावाः पृथग्लक्षणा-
स्तेऽहं नाऽस्मि यतोऽत्र ते मम परद्रव्यं समग्रा अपि।।६।।

परद्रव्यग्रहं कुर्वन् बद्ध्येतैवापराधवान्।
बद्ध्येतानपराधो न स्वद्रव्ये संवृतो मुनिः।।७।।

अनवरतमनन्तैर्बध्यते सापराधः स्पृशति निरपराधो बन्धनं नैव जातु।
नियतमयमशुद्धं स्वं भजन्सापराधो भवति निरपराधः साधुशुद्धात्मसेवी।।८।।

अतो हताः प्रमादिनो गताः सुखासीनतां प्रलीनं चापलमुन्मूलितमालम्बनम्-
आत्मन्येवालानितं चित्त-मासंपूर्णविज्ञानघनोपलब्धेः।।९।।

यत्र प्रतिक्रमणमेव विषं प्रणीतम् तत्राप्रतिक्रमणमेव सुधा कुतःस्यात्।
तत्किं प्रमाद्यति जनः प्रपतन्नधोऽधः किं नोर्ध्वमूर्ध्वमधिरोहति निःप्रमादः।।१०।।

प्रमादकलितः कथं भवति शुद्धभावोऽलसः
कषायभरगौरवादलसता प्रमादो यतः।
अतः स्वरसनिर्भरे नियमितः स्वभावे भवन्
मुनिः परमशुद्धतां व्रजति मुच्यतेः चाचिरात्।।११।।

त्यक्त्वाऽशुद्धिविधायि तत्किल परद्रव्यं समग्रं स्वयं,
स्वद्रव्ये रतिमेति यः स नियतं सर्वापराधच्युतः।
बन्धध्वंसमुपेत्य नित्यमुदितः स्वज्योतिरच्छोच्छल-
च्चैतन्यामृतपूरपूर्णमहिमा शुद्धो भवन्मुच्यते।।१२।।

बन्धच्छेदात्कलयदतुलं मोक्षमक्षय्यमेत-
न्नित्योद्योतस्फुटितसहजावस्थमेकान्तशुद्धम्।
एकाकारस्वरसभरतोऽत्यन्तगम्भीरधीरं,
पूर्णं ज्ञानं ज्वलितमचले स्वस्य लीनं महिम्नि।।१३।।

इति मोक्षो निष्क्रान्तः।।9।।

सर्व-विशुद्ध-अधिकार

नीत्वा सम्यक् प्रलयमखिलान्कर्तृभोक्त्रादिभावान्,
दूरीभूतः प्रतिपदमयं बन्धमोक्षप्रक्लृप्तेः।
शुद्धः शुद्ध स्वरसविसरापूर्णपुण्याचलार्चि-
ष्टङ्कोत्कीर्णप्रकटमहिमा स्फूर्जति ज्ञानपुञ्जः।।१।।

कर्त्तृव्यं न स्वभावोऽस्य चितो वेदयितृत्ववत्।
अज्ञानादेव कर्त्ताऽयं तदभावादकारकः।।२।।

अकर्त्ता जीवोऽयं स्थित इति विशुद्धः स्वरसतः,
स्फुरच्चिज्ज्योतिर्भिश्छुरितभुवनाभोगभवनः।
तथाप्यस्यासौ स्याद्यदिह किल बंधः प्रकृतिभिः,
स खल्वज्ञानस्य स्फुरति महिमा कोऽवि गहनः।।३।।

भोक्तृत्वं न स्वभावोऽस्य स्मृतः कर्त्तृत्ववच्चितः।
अज्ञानादेव भोक्ताऽयं तदभावादवेदकः।।४।।

अज्ञानी प्रकृतिस्वभावनिरतो नित्यं भवेद्वेदको,
ज्ञानी तु प्रकृतिस्वभावविरतो नो जातुचिद्वेदकः।
इत्येवं नियमं निरूप्य निपुणैरज्ञानिता त्यज्यतां,
शुद्धैकात्ममये महस्यचलितैरासेव्यतां ज्ञानिता।।५।।

ज्ञानी करोति न न वेदयते च कर्म जानाति केवलमयं किल तत्स्वभावं।
जानन्परं करणवेदनयोरभावात्- शुद्धस्वभावनियतः स हि मुक्त एव।।६।।

ये तु कर्त्तारमात्मानं पश्यन्ति तमसा ततः।
सामान्यजनवत्तेषां न मोक्षोऽपि मुमुक्षताम्।।७।।

नास्ति सर्वोऽपि सम्बंधः परद्रव्यात्मतत्त्वयोः।
कर्त्तृकर्म्मत्वसम्बन्धाभावे तत्कर्त्तृता कुतः।।८।।

एकस्य वस्तुन इहान्तरेण सार्द्धं,
सम्बन्ध एव सकलोऽपि यतो निषिद्धः।
तत्कर्त्तृकर्म्मघटनाऽस्ति न वस्तुभेदे,
पश्यन्त्वकर्तृमुनयश्च जनाश्च तत्त्वम्।।९।।

ये तु स्वभावनियमं कलयन्ति नेम-
मज्ञानमग्नमहसो वत ते वराकाः।
कुर्वन्ति कर्म तत एव हि भावकर्म-
कर्त्ता स्वयं भवति चेतन एव नान्यः।।१०।।

कार्यत्वादकृतं न कर्म न च तज्जीवप्रकृत्योर्द्वयो-
रज्ञायाः प्रकृते स्वकार्यफलभुग्भावानुषंगात्कृतिः।
नैकस्याः प्रकृतेरचित्त्वलसनाज्जीवोऽस्य कर्त्ता ततो,
जीवस्यैव च कर्म तच्चिदनुगं ज्ञाता न यत्पुद्गलः।।११।।

कर्मैव प्रवितर्क्य कर्तृहतकैः क्षिप्त्वात्मनः कर्तृतां,
कर्त्तात्मैष कथंचिदित्यचलिता कैश्चित्स्थितिः कोपिता।
तेषामुद्धतमोहमुद्रितधियां बोधस्य संशुद्धये,
स्याद्वादप्रतिबन्धलब्धविजया वस्तुस्थितिः स्तूयते।।१२।।

माऽकर्त्तारममी स्पृशन्तु पुरुषं सांख्या इवाप्यार्हताः,
कर्त्तारं कलयन्तु तं किल सदा भेदावबोधादधः।
ऊर्ध्वं तूद्धतबोधधामनियतं प्रत्यक्षमेनं स्वयं,
पश्यन्तु च्युतकर्तृभावमचलं ज्ञातारमेकं परम्।।१३।।

क्षणिकमिदमिहैकः कल्पयित्वात्मतत्त्वं,
निजमनसि विधत्ते कर्तृभोक्त्रेर्विभेदम्।
अपहरति विमोहं तस्य नित्यामृतोघैः,
स्वयमयमभिषिञ्चंश्चिच्चमत्कार एव।।१४।।

वृत्यंशभेदतोऽत्यन्तं वृत्तिमन्नाशकल्पनात्।
अन्यः करोति भुङ्क्तेऽन्य इत्येकान्तश्चकास्तु मा।।१५।।

आत्मानं परिशुद्धमीप्सुभिरतिव्याप्तिं प्रपद्यान्धकैः,
कालोपाधिबलादशुद्धिमधिकां तत्रापि मत्वा परैः।
चैतन्यं क्षणिकं प्रकल्प्य पृथुकैः शुद्धर्जुसूत्रेरितै-
रात्मा व्युज्झित एष हारवदहो निःसूत्रमुक्तेक्षिभिः।।१६।।

कर्तुर्वेदयितुश्च युक्तिवशतो भेदोऽस्त्वभेदोऽपि वा,
कर्त्ता वेदयिता च मा भवतु वा वस्त्वेव सञ्चिन्त्यताम्।
प्रोता सूत्र इवात्मनीह निपुणैर्भेत्तुं न शक्या क्वचित्,
चिच्चिन्तामणिमालिकेयमभितोऽप्येका चकास्त्येव नः।।१७।।

व्यावहारिकदृशैव केवलं कर्तृकर्म च विभिन्नमिष्यते।
निश्चयेन यदि वस्तु चिन्त्यते कर्तृकर्म च सदैकमिष्यते।।१८।।

ननु परिणाम एव किल कर्म विनिश्चयतः,
स भवति नापरस्य परिणामिन एव भवेत्।
न भवति कर्तृशून्यमिह कर्म न चैकतया,
स्थितिरिह वस्तुनो भवतु कर्तृ तदेव ततः।।१९।।

बहिर्लुठति यद्यपि स्फुटदनन्तशक्तिः स्वयं,
तथाप्यपरवस्तुनो विशति नान्यवस्त्वन्तरम्।
स्वभावनियतं यतः सकलमेव वस्त्विष्यते,
स्वभावचलनाकुलः किमिह मोहितःक्लिश्यते।।२०।।

वस्तु चैकमिह नान्यवस्तुनो येन तेन खलु वस्तु वस्तु तत्।
निश्चयोऽयमपरोऽपरस्य कः किं करोति हि बहिर्लुठन्नपि।।२१।।

यत्तु वस्तु कुरुतेऽन्यवस्तुनः किञ्चनापि परिणामिनः स्वयम्।
व्यावहारिकदृशैव तन्मतं नान्यदस्ति किमपीह निश्चयात्।।२२।।

शुद्धद्रव्यनिरूपणार्पितमतेस्तत्त्वं समुत्पश्यतो,
नैकद्रव्यगतं चकास्ति किमपि द्रव्यान्तरं जातुचित्।
ज्ञानं ज्ञेयमवैति यत्तु तदयं शुद्धस्वभावोदयः,
किं द्रव्यान्तरचुबम्नाकुलधियस्तत्त्वाच्च्यवन्ते जनाः।।२३।।

शुद्धद्रव्यस्वरसभवनात्किं स्वभावस्य शेष-
मन्यद्द्रव्यं भवति यदि वा तस्य किं स्यात्स्वभावः।
ज्योत्स्नारूपं स्नपयति भुवं नैव तस्यास्ति भूमि,
र्ज्ञानं ज्ञेयं कलयति सदा ज्ञेयमस्यास्ति नैव।।२४।।

रागद्वेषद्वयमुदयते तावदेतन्न यावत्
ज्ञानं ज्ञानं भवति न पुनर्बोध्यतां याति बोध्यम्।
ज्ञानं ज्ञानं भवतु तदिदं न्यक्कृताज्ञानभावं
भावाभावौ भवति तिरयन्येन पूर्वस्वभावः।।२५।।

रागद्वेषाविह हि भवति ज्ञानमज्ञानभावा-
त्तौ वस्तुत्वप्रणिहितदृशा दृश्यमानौ न किञ्चित्।
सम्यग्दृष्टिः क्षपयतु ततस्तत्त्वदृष्ट्या स्फुटन्तौ
ज्ञानज्योतिर्ज्वलति सहजं येन पूर्णाचलार्चिः।।२६।।

रागद्वेषोत्पादकं तत्त्वदृष्ट्या नान्यद्द्रव्यं वीक्ष्यते किञ्चनापि।
सर्वद्रव्योत्पत्तिरन्तश्चकास्ति व्यक्ताऽत्यन्तं स्वस्वभावेन यस्मात्।।२७।।

यदिह भवति रागद्वेषदोषप्रसूतिः,
कतरदपि परेषां दूषणं नास्ति तत्र।
स्वयमयमपराधी तत्र सर्पत्यबोधो,
भवतु विदितमस्तं यात्वबोधोऽस्मि बोधः।।२८।।

रागजन्मनि निमित्ततां परद्रव्यमेव कलयन्ति ये तु ते।
उत्तरंति न हि मोहवाहिनीं शुद्धबोधविधुरान्धबुद्धयः।।२९।।

पूर्णैकाच्युतशुद्धबोधमहिमा बोधो न बोध्यादयं,
यायात्कामपि विक्रियां तत इतो दीपः प्रकाशादिव।
तद्वस्तुस्थितिबोधबन्ध्यधिषणा एते किमज्ञानिनो,
रागद्वेषमयीभवन्ति सहजां मुञ्चन्त्युदासीनताम्।।३०।।

रागद्वेषविभावमुक्तमहसो नित्यं स्वभावस्पृशः
पूर्वागामिसमस्तकर्मविकला भिन्नास्तदात्वोदयात्
दूरारूढचरित्रवैभवबलाच्चञ्चच्चिदर्चिस्त्यीं
विन्दन्ति स्वरसा भषिक्तभुवनां ज्ञानस्य संचेतनाम्।।३१।।

ज्ञानस्य संचेतनयैव नित्यं प्रकाशते ज्ञानमतीव शुद्धम्।
अज्ञानसंचेतनया तु धावन् बोधस्य शुद्धिं निरुणद्धि बन्धः।।३२।।

कृतकारितानुमननैस्त्रिकालविषयं मनोवचनकायैः।
परिहृत्य कर्म सर्वं परमं नैष्कर्म्यमवलम्बे।।३३।।

मोहाद्यदहमकार्षं समस्तमपि कर्म तत्प्रतिक्रम्य।
आत्मनि चैतन्यात्मनि निःकर्मणि नित्यमात्मना वर्त्ते।।३४।।

मोहविलासविजृम्भितमिदमुदयत्कर्म सकलमालोच्य।
आत्मनि चैतन्यात्मनि निष कर्मणि नित्यमात्मना वर्त्ते।।३५।।

प्रत्याख्यायभविष्यत्कर्म समस्तं निरस्तसम्मोहः।
आत्मनि चैतन्यात्मनि निःकर्मणि नित्यमात्मना वर्त्ते।।३६।।

समस्तमित्येवमपास्य कर्म त्रैकालिकं शुद्धनयावलम्बी।
विलीनमोहो रहितं विकारैश्चिन्मात्रमात्मानमथाऽवलम्बे।।३७।।

विगलन्तु कर्मविषतरुफलानि मम भुक्तिमन्तरेणैव।
सञ्चेतयेऽहमचलं चैतन्यात्मानमात्मानम्।।३८।।

निःशेषकर्मफलसंन्यसनात्मनैवं सर्वक्रियान्तरविहारनिवृत्तवृत्तेः।
चैतन्यलक्ष्म भजतो भृशमात्मतत्त्वं कालावलीयमचलस्य वहत्वनन्ता।।३९।।

यः पूर्वभावकृतकर्म्मविषद्रुमाणां,
भुङ्क्ते फलानि न खलु स्वत एव तृप्तः।
आपातकालरमणीयमुदर्करम्यं,
निःकर्मशर्ममयमेति दशान्तरं सः।।४०।।

अत्यन्तं भावयित्वा विरतमविरतं कर्मणस्तत्फलाच्च,
प्रस्पष्टं नाटयित्वा प्रलयनमखिलाऽज्ञानसंचेतनायाः।
पूर्णं कृत्वा स्वभावं स्वरसपरिगतं ज्ञानसंचेतनां स्वां,
सानन्दं नाटयन्तः प्रशमरसमितः सर्वकालं पिबन्तु।।४१।।

इतः पदार्थप्रथनावगुण्ठनाद्विना कृतेरेकमनाकुलं ज्वलत्।
समस्तवस्तुव्यतिरेकनिश्चयाद्विवेचितं ज्ञानमिहावतिष्ठते।।४२।।

अन्येभ्यो व्यतिरिक्तमात्मनियतं विभ्रत् पृथक वस्तुता-
मादानोज्झनशून्यमेतदमलं ज्ञानं तथावस्थितम्।
मध्याद्यन्तविभागमुक्तसहजस्फारप्रभाभासुरः
शुद्धज्ञानघनो यथास्य महिमा नित्योदितस्तिष्ठति।।४३।।

उन्मुक्तमुन्मोच्यमशेषतस्तत्तथात्तमादेयमशेषतस्तत्।
यदात्मनःसंहृतसर्वशक्तेः पूर्णस्य सन्धारणमात्मनीह।।४४।।

व्यतिरिक्तं परद्रव्यादेवं ज्ञानमवस्थितम्।
कथमाहारकं तस्याद्येन देहोऽस्य शंक्यते।।४५।।

एवं ज्ञानस्य शुद्धस्य देह एव न विद्यते।
ततो देहमयं ज्ञातुर्न लिङ्गं मोक्षकारणम्।।४६।।

दर्शनज्ञानचारित्रत्रयात्मा तत्त्वमात्मनः।
एक एव सदा सेव्यो मोक्षमार्गो मुमुक्षुणा।।४७।।

एको मोक्षपथो य एष नियतो दृग्ज्ञप्तिवृत्त्यात्मक-
स्तत्रैव स्थितिमेति यस्तमनिशं ध्यायेच्च तं चेतति।
तस्मिन्नेव निरन्तरं विहरति द्रव्यान्तराण्यस्पृशन्,
सोऽवश्यं समयस्य सारमचिरान्नित्योदयं विन्दति।।४८।।

ये त्वेनं परिहृत्य संवृतिपथप्रस्थापितेनात्मना,
लिङ्गेद्रव्यमये वहन्ति ममतां तत्त्वावबोधच्युताः।
नित्योद्योतमखण्डमेकमतुलालोकं स्वभावप्रभा-
प्राग्भारं समयस्य सारममलं नाद्यापि पश्यन्ति ते।।४९।।

व्यवहारविमूढदृष्टयः परमार्थं कलयन्ति नो जनः।
तुषबोधविमुग्धबुद्धयः कलयन्तीह तुषं न तन्दुलम्।।५०।।

द्रव्यलिङ्गममकामीलितैर्दृश्यते समयसार एव न।
द्रव्यलिङ्गमिह यत्किलान्यतो ज्ञानमेकमिदमेव हि स्वतः।।५१।।

अलमलमतिजल्पैर्दुर्विकल्पैरनल्पै-
रयमिह परमार्थश्चेत्यतां नित्यमेकः।
स्वरसविसरपूर्णज्ञानविस्फूर्तिमात्रा-
न्न खलु समयसारादुत्तरं किञ्चिदस्ति।।५२।।

इदमेकं जगच्चक्षुरक्षयं याति पूर्णताम्।
विज्ञानघनमानन्दमयमध्यक्षतां नयत्।।५३।।

इतीदमात्मनस्तत्त्वं ज्ञानमात्रमवस्थितम्।
अखण्डमेकमचलं स्वसंवेद्यमबाधितम्।।५४।।

इति सर्वविशुद्धिज्ञानाधिकारः।।१०।।

स्याद्वाद-अधिकार

अत्र स्याद्वादशुद्ध्यर्थं वस्तुतत्त्वव्यवस्थितिः।
उपायोपेयभावश्च मनाग्भूयोऽपि चिन्त्यते।।१।।

बाह्यार्थैः परिपीतमुज्झितनिजप्रव्यक्तरिक्तीभव-
द्विश्रान्तं पररूप एव परितो ज्ञानं पशोः सीदति।
यत्तत्तत्तदिह स्वरूपत इति स्याद्वादिनस्तत्पुन-
र्दूरोन्मग्नघनस्वभावभरतः पूर्णं समुन्मज्जति।।२।।

विश्वं ज्ञानमिति प्रतर्क्य सकलं दृष्ट्वा स्वतत्त्वाशया
भूत्वा विश्वमयः पशुः पशुरिव स्वच्छन्दमाचेष्टते।
यत्तत्तत्पररूपतो न तदिति स्याद्वाददर्शी पुनः-
र्विश्वाद्विभ्रमविश्वविश्वघटितं तस्य स्वतत्त्वं स्पृशेत्।।३।।

बाह्यार्थग्रहणस्वभावभरतो विखग्विचित्रोल्लसद्
ज्ञेयाकारविशीर्णशक्तिरभितस्त्रुट्यन्पशुर्नश्यति।
एकद्रव्यतया सदाप्युदितया भेदभ्रमं ध्वंसयन्
एकं ज्ञानमबाधितानुभवनं पश्यत्यनेकान्तवित्।।४।।

ज्ञेयाकारकलङ्कमेचकचिति प्रक्षालनं कल्पय-
न्नेकाकारचिकीर्षया स्फुटमपि ज्ञानं पशुर्नेच्छति।
वैचित्र्येऽप्यविचित्रतामुपगतं ज्ञानं स्वतः क्षालितं
पर्यायैस्तदनेकतां परिमृशन्पश्यत्यनेकान्तवित्।।५।।

प्रत्यक्षालिखितस्फुटस्थिरपरद्रव्यास्तितावञ्चितः
स्वद्रव्यानवलोकनेन परितः शून्यः पशुर्नश्यति।
स्वद्रव्यास्तितया निरूप्य निपुणं सद्यः समुन्मज्जता
स्याद्वादी तु विशुद्धबोधमहसा पूर्णो भवन् जीवति।।६।।

सर्वद्रव्यमयं प्रपद्य पुरुषं दुर्वासनावासितः
स्वद्रव्यभ्रमतः पशुः किल परद्रव्येषु विश्राम्यति।
स्याद्वादी तु समस्तवस्तुषु परद्रव्यात्मना नास्तिनां
जानन्निर्मलशुद्धबोधमहिमा स्वद्रव्यमेवाश्रयेत्।।७।।

भिन्नक्षेत्रनिषण्णबोध्यनियतव्यापारनिष्ठः सदा
सीदत्येव बहिः पतन्तमभितः पश्यन्पुमांसं पशुः।
स्वक्षेत्रास्तितया निरुद्धरभसः स्याद्वादवेदी पुन-
स्तिष्ठत्यात्मनिखातबोध्यनियतव्यापारशक्तिर्भवन्।।८।।

स्वक्षेत्रस्थितये पृथग्विधिपरक्षेत्रस्थितार्थोज्झनात्-
तुच्छीभूय पशुः प्रणश्यति चिदाकारान्सहार्थैर्वमन्।
स्याद्वादी तु वसन् स्वधामनि परक्षेत्रे विदन्नास्तितां
त्यक्तार्थोऽपि न तुच्छतामनुभवत्याकारकर्षी परान्।।९।।

पूर्वालम्बितबोध्यनाशसमये ज्ञानस्य नाशं विदन्
सीदत्येव न किञ्चनापि कलयन्नत्यन्ततुच्छः पशुः।
अस्तित्वं निजकालतोऽस्य कलयन् स्याद्वादवेदी पुनः
पूर्णस्तिष्ठति बाह्यवस्तुषु मुहुर्भूत्वा विनश्यत्स्वपि।।१०।।

अर्थालम्बनकाल एव कलयन् ज्ञानस्य सत्त्वं बहि-
र्ज्ञेयालम्बनलालसेन मनसा भ्राम्यन्पशुर्नश्यति।
नास्तित्वं परकालतोऽस्य कलयन् स्याद्वादवेदी पुन-
स्तिष्ठत्यात्मनिखातनित्यसहजज्ञानैकपुञ्जीभवन्।।११।।

विश्रान्तः परभावभावकलनान्नित्यं बहिर्वस्तुषु
नश्यत्येव पशुः स्वभावमहिमन्येकान्तनिश्चेतनः।
सर्वस्मान्नियतस्वभावमभवन् ज्ञानाद्विभक्तो भवन्
स्याद्वादी तु न नाशमेति सहजस्पष्टीकृतप्रत्ययः।।१२।।

अध्यास्यात्मनि सर्वभावभवनं शुद्धस्वभावच्युतः
सर्वत्राऽप्यनिवारितो गतभयः स्वैरं पशुः क्रीडति।
स्याद्वादी तु विशुद्ध एव लसति स्वस्य स्वभावं भरा-
दारूढः परभावभावविरहव्यालोकनिष्कम्पितः।।१३।।

प्रादुर्भावविराममुद्रितवहज् ज्ञानांशनानात्मना
निर्ज्ञानात् क्षणभङ्गसङ्गपतितः प्रायः पशुर्नश्यति।
स्याद्वादी तु चिदात्मना परिमृशंश्चिद्वस्तु नित्योदितं
टङ्कोत्कीर्णघनस्वभावमहिमज्ञानं भवन् जीवति।।१४।।

टङ्कोत्कीर्णविशुद्धबोधविसराकारात्मतत्त्वाशया
वाञ्छत्युच्छलदच्छचित्परिणतेर्भिन्नं पशुः किञ्चन।
ज्ञानं नित्यमनित्यतापरिगमेऽप्यासादयत्युज्वलं
स्याद्वादी तदनित्यतां परिमृशंश्चिद्वस्तु वृत्तिक्रमात्।।१५।।

इत्यज्ञानविमूढानां ज्ञानमात्रं प्रसाधयन्।
आत्मतत्त्वमनेकान्तः स्वयमेवानुभूयते।।१६।।

एवं तत्त्वव्यवस्थित्या स्वं व्यवस्थापयन्स्वयम्।
अलङ्घ्यं शासनं जैनमनेकान्तो व्यवस्थितः।।१७।।

इत्याद्यनेकनिजशक्तिसुनिर्भरोऽपि
यो ज्ञानमात्रमयतां न जहाति भावः।
एवं क्रमाक्रमविवर्तिविवर्तचित्रं
तद्द्रव्यपर्य्ययमयं चिदिहास्ति वस्तु।।१८।।

नैकान्तसंगतदृशा स्वयमेव वस्तु-
तत्त्वव्यवस्थितिमिति प्रविलोकयन्तः।
स्याद्वादशुद्धिमधिकामधिगम्य सन्तो
ज्ञानीभवन्ति जिननीतिमलंघयन्तः।।१६।।

ये ज्ञानमात्रनिजभावमयीमकम्पां
भूमिं श्रयन्ति कथमप्यपनीतमोहाः।
ते साधकत्वमधिगम्य भवन्ति सिद्धाः
मूढ़ास्त्वमूमनुपलभ्य परिभ्रमन्ति।।२०।।

स्याद्वादकौशलसुनिश्चलसंयमाभ्यां
यो भावयत्यहरहः स्वमिहोपयुक्तः।
ज्ञानक्रियानयपरस्परतीव्रमैत्री-
पात्रीकृतः श्रयति भूमिमिमां स एकः।।२१।।

चितिपिण्डचण्डिमविलासिविकासहासः-
शुद्धः प्रकाशभरनिर्भरसुप्रभातः।
आनन्दसुस्थितसदास्खलितैकरूप-
स्तस्यैव चायमुदयत्यचलार्चिरात्मा।।२२।।

स्याद्वाददीपितलसन्महिस प्रकाशे
शुद्धस्वभावमहिमन्युदिते मयीति।
किं बन्धमोक्षपथपातिभिरन्यभावै-
र्नित्योदयः परमयं स्फुरतु स्वभावः।।२३।।

चित्रात्मशक्तिसमुदायमयोऽयमात्मा
सद्यः प्रणश्यति नयेक्षणखण्ड्यमानः।
तस्मादखण्डमनिराकृतखण्डमेक-
मेकान्तशान्तमचलं चिदहं महोऽस्मि।।२४।।

योऽयं भावो ज्ञानमात्रोऽहमस्मि ज्ञेयो ज्ञेयज्ञानमात्रः स नैव।
ज्ञेयो ज्ञेयज्ञानकल्लोलवल्गद् ज्ञानज्ञेयज्ञातृवद्वस्तुमात्रः।।२५।।

क्वचिल्लसति मेचकं क्वचिदमेचकामेचकं
क्वचित्पुनरमेचकं सहजमेव तत्त्वं मम।
तथापि न विमोहयत्यमलमेधसां तन्मनः
परस्परसुसंहृतप्रकटशक्तिचक्रं स्फुरत्।।26।।

इतो गतमनेकतां दधदितः सदाप्येकता-
मितः क्षणविभङ्गुरं ध्रुवमितः सदैवोदयात्।
इतः परमविस्तृतं धृतमितः प्रदेशैर्निजै-
रहो सहजमात्मनस्तदिदमद्भुतं वैभवम्।।27।।

कषायकलिरेकतः स्खलति शान्तिरस्त्येकतो
भवोपहतिरेकतः स्पृशति मुक्तिरप्येकतः।
जगत्त्रितमेकतः स्फुरति चिच्चकास्त्येकतः
स्वभावमहिताऽऽत्मनो विजयतेऽद्भुतादद्भुतः।।28।।

जयति सहजतेजःपुञ्जमज्जत्त्रिलोकी-
स्खलदखिलविकल्पोऽप्येक एव स्वरूपः।
स्वरसविसरपूर्णाच्छिन्नतत्त्वोपलम्भः
प्रसभनियमितार्च्चिश्चिच्चमत्कार एषः।।29।।

अविचलितचिदात्मन्यात्मनात्मानमात्म-
न्यनवरतनिमग्नं धारयद् ध्वस्तमोहम्।
उदितममृतचन्द्रज्योतिरेतत्समन्ता-
ज्ज्वलतु विमलपूर्णं निःसपत्नस्वभावम्।।30।।

यस्माद्द्वैतमभूत्पुरा स्वपरयोर्भूतं यतोऽत्रान्तरं
रागद्वेषपरिग्रहे सति यतो जातं क्रियाकारकैः।
भुञ्जाना चयतोऽनुभूतिरखिलं खिन्ना क्रियायाः फलं
तद्विज्ञानघनौघमग्नमधुना किञ्चित्न किञ्चित्किल।।31।।

स्वशक्तिसंसूचितवस्तुतत्त्वैर्व्याख्या कृतेयं समयस्य शब्दैः।
स्वरूपगुप्तस्य न किञ्चिदस्ति कर्त्तव्यमेवामृतचन्द्रसूरेः।।32।।

इति अध्यात्माऽमृतकलशाः समाप्ताः।।

श्रीगुणभद्राचार्यविरचितम्

आत्मानुशासनम्

मङ्गलाचरणम्

लक्ष्मीनिवासनिलयं विलीनविलयं निधाय हृदि वीरम्।
आत्मानुशासनमहं वक्ष्ये मोक्षाय भव्यानाम्।।१।।

दुःखाद्विभेषि नितरामभिवाञ्छसि सुखमतोऽहमप्यात्मन्।
दुःखापहारि सुखकरमनुशास्मि तवानुमतमेव।।२।।

यद्यपि कदाचिदस्मिन् विपाकमधुरं तदात्वकटु किंचित्।
त्वं तस्मान्मा भैषीर्यथातुरो भेषजादुग्रात्।।३।।

जना घनाश्च वाचालाः सुलभाः स्युर्वृथोत्थिताः।
दुर्लभा ह्यन्तरार्द्रास्ते जगदभ्युज्जिहीर्षवः।।४।।

प्राज्ञः प्राप्तसमस्तशास्त्रहृदयः प्रव्यक्तलोकस्थितिः,
प्रास्ताशः प्रतिभापरः प्रशमवान् प्रागेव दृष्टोत्तरः।
प्रायः प्रश्नसहः प्रभुः परमनोहारी परानिन्दया,
ब्रूयाद्धर्मकथां गणी गुणनिधिः प्रस्पष्टमिष्टाक्षर।।५।।

श्रुतमविकलं शुद्धा वृत्तिः परप्रतिबोधने,
परिणतिरुरूद्योगो मार्गप्रवर्त्तनसद्विधौ।
बुधनुतिरनुत्सेको लोकज्ञता मृदुताऽस्पृहा,
यतिपतिगुणा यस्मिन्नन्ये च सोऽस्तु गुरुः सताम्।।६।।

भव्यः किं कुशलं ममेति विमृशन् दुःखाद् भृशं भीतिमान्,
सौख्येषी श्रवणादिबुद्धिविभवः श्रुत्वा विचार्य स्फुटम्।
धर्मं शर्मकरं दयागुणमयं युक्त्यागमाभ्यां स्थितं,
गृह्णन् धर्मकथां श्रुतावधिकृतः शास्यो निरस्ताग्रहः।।७।।

पापाद् दुःखं धर्मात्सुखमिति सर्वजनसुप्रसिद्धमिदम्।
तस्माद्विहाय पापं चरतु सुखार्थी सदा धर्मम्।।८।।

सर्वः प्रेप्सति सत्सुखाप्तिमचिरात् सा सर्वकर्मक्षयात्,
सद्वृत्तात्स च तच्च बोधनियतं सोऽप्यागमात् स श्रुतेः।
सा चाप्तात् स च सर्वदोषरहितो रागादयस्तेऽप्यतः,
तं युक्त्या सुविचार्य सर्वसुखदं सन्तः श्रयन्तु श्रियै।।९।।

श्रद्धानं द्विविधं त्रिधा दशविधं मौढ्याद्यपोढं सदा,
संवेगादिविवर्धितं भवहरं त्र्यज्ञानशुद्धिप्रदम्।
निश्चिन्वन् नव-सप्त-तत्वमचलप्रसादमारोहतां,
सोपानं प्रथमं विनेयविदुषामाद्येयमाराधना।।१०।।

आज्ञामार्गसमुद्भवमुपदेशात्सूत्रबीजसंक्षेपात्।
विस्तारार्थाभ्यां भवमवपरमावादिगाढे च।।११।।

आज्ञासम्यक्त्वमुक्तं यदुत विरुचितं वीतरागाज्ञयैव,
त्यक्तग्रन्थप्रपञ्चं शिवममृतपथं श्रद्दधन्मोहशान्तेः।
मार्गश्रद्धानमाहुः पुरुषवरपुराणोपदेशोपजाता,
या संज्ञानागमाब्धिप्रसृतिभिरुपदेशादिरादेशिदृष्टिः।।१२।।

आकर्ण्याचारसूत्रं मुनिचरणविधेः सूचनं श्रद्दधानः,
सूक्तासौ सूत्रदृष्टिर्दुरधिगमगतेरर्थसार्थस्य बीजैः।
कैश्चिज्जातोपलब्धेरसमशमवशाद्बीजदृष्टिः पदार्थान्,
संक्षेपेणैव बुद्धवा रुचिमुपगतवान् साधुसंक्षेपदृष्टिः।।१३।।

यः श्रुत्वा द्वादशाङ्गी कृतरुचिरथ तं विद्धि विस्तारदृष्टिं,
संजातार्थात्कुतश्चित् प्रवचनवचनान्यन्तरेणार्थदृष्टिः।
दृष्टिः साङ्गाङ्गबाह्यप्रवचनमवगाहोत्थिता यावगाढ़ा,
कैवल्यालोकितार्थे रुचिरिह परमावादिगाढेतिरुढा।।१४।।

शमबोधवृत्ततपसां पाषाणस्येव गौरवं पुंसः।
पूज्यं महामणेरिव तदेव सम्यक्त्वसंयुक्तम्।।१५।।

मिथ्यात्वाऽऽतङ्कवतो हिताहितप्राप्त्यनाप्तिमुग्धस्य।
बालस्येव तवेयं सुकुमारैव क्रिया क्रियते।।१६।।

विषयविषप्राशानोत्थितमोहज्वरजनिततीव्रतृष्णस्य।
निःशक्तिकस्य भवतः प्रायः पेयाद्युपक्रमः श्रेयान्।।१७।।

सुखितस्य दुःखितस्य च संसारे धर्म एव तव कार्यः।
सुखितस्य तदभिवृद्धयै दुःखभुजस्तदुपघाताय।।१८।।

धर्मारामतरूणां फलानि सर्वेन्द्रियार्थसौख्यानि।
संरक्ष्य तांस्ततस्तान्युच्चिनुयैस्तैरुपायैस्त्वम्।।१६।।

धर्मः सुखस्यहेतुर्हेतुर्न विरोधकः स्वकार्यस्य।
तस्मात्सुखभङ्गभिया माभूर्धर्मस्य विमुखस्त्वम्।।२०।।

धर्मादवाप्तविभवो धर्मं प्रतिपाल्य भोगमनुभवतु।
बीजादवाप्तधान्यः कृषीवलस्तस्य बीजमिव।।२१।।

संकल्प्यं कल्पवृक्षस्य चिन्त्यं चिन्तामणेरपि।
असंकल्प्यमसंचिन्त्यं फलं धर्मादवाप्यते।।२२।।

परिणाममेव कारणमाहुः खलु पुण्यपापयोः प्राज्ञाः।
तस्मात् पापापचयः पुण्योपचयश्च सुविधेयः।।२३।।

कृत्वा धर्मविघातं विषयसुखान्यनुभवन्ति ये मोहात्।
आच्छिद्य तरुन् मूलात् फलानि गृह्णन्ति ते पापाः।।२४।।

कर्तृत्वहेतुकर्तृत्वानुमतैः स्मरणचरणवचननेषु।
यः सर्वथाभिगम्यः स कथं धर्मो न संग्राह्यः।।२५।।

धर्मो वसेन्मनसि यावदलं स तावत्-
हन्ता न हन्तुरपि पश्य गतेऽथ तस्मिन्।
दृष्टा परस्परहतिर्जनकात्मजानां,
रक्षा ततोऽस्य जगतः खलु धर्म एव।।२६।।

न सुखानुभवात् पापं पापं तद्धेतुघातकारम्भात्।
नाजीर्णं मिष्टान्नान्नु तन्मात्राद्यतिक्रमणात्।।२७।।

अप्येतन्मृगयादिकं यदि तव प्रत्यक्षदुःखास्पदं,
पापैराचरितं पुरातिभयदं सौख्याय संकल्पतः।
संकल्पं तमनुज्झितेन्द्रियसुखैरासेविते धीधनैः,
धर्म्ये कर्मणि किं करोति न भवाँल्लोकद्वयश्रेयसि।।२८।।

भीतमूर्तीर्गतत्राणा निर्दोषा देहवित्तिकाः।
दन्तलग्नतृणा घ्नन्ति मृगीरन्येषु का कथा।।२९।।

पैशुन्यदैन्यदम्भस्तेयानृतपातकादिपरिहारात्।
लोकद्वयहितमर्जय धर्मार्थयशःसुखाऽऽर्यार्थम्।।३०।।

पुण्यं कुरुष्व कृतपुण्यमनीदृशोऽपि,
नोपद्रवोऽभिभवति प्रभवेच्च भूत्यै।
संतापयन् जगदशेषमशीतरश्मिः,
पद्मेषु पश्य विदधाति विकाशलक्ष्मीम्।।३१।।

नेता यत्र वृहस्पतिः प्रहरणं वज्रं सुराः सैनिकाः,
स्वर्गो दुर्गमनुग्रहः खलु हरेरैरावणो वारणः।
इत्याश्चर्यबलान्वितोऽपि बलिभिद्भग्नः परैः सङ्गरे,
तद्वयक्तं ननु दैवमेव शरणं धिग्धिग्वृथा पौरुषम्।।३२।।

भर्तारः कुलपर्वता इव भुवो मोहं विहाय स्वयं,
रत्नानां निधयं पयोधय इव व्यावृत्तवित्तस्पृहाः।
स्पृष्टाः कैरपि नो नभो विभुतया विश्वस्य विश्रान्तये,
सन्त्यद्यापि चिरन्तनान्तिकचराः सन्तः कियन्तोऽप्यमी।।३३।।

पिता पुत्रं पुत्रः पितरमभिसंधाय बहुधा,
विमोहादीहेते सुखलवमवाप्तुं नृपपदम्।
अहो मुग्धो लोको मृतिजननदंष्ट्रान्तरगतो,
न पश्यत्यश्रान्तं तनुमपहरन्तं यममुम्।।३४।।

अन्धादयं महानन्धो विषयान्धीकृतेक्षणः।
चक्षुषान्धो न जानाति विषयान्धो न केनचित्।।३५।।

आशागर्तः प्रतिप्राणि यस्मिन् विश्वमणूपमम्।
कस्य किं कियदायाति वृथा वो विषयैषिता।।३६।।

आयुःश्रीवपुरादिकं यदि भवेत्पुण्यं पुरोपार्जितं,
स्यात् सर्वं न भवेन्न तच्च नितरामायासितेऽप्यात्मनि।
इत्यार्याः सुविचार्य कार्यकुशलाः कार्येऽत्र मन्दोद्यमाः,
द्रागागामिभवार्थमेव सततं प्रीत्या यतन्तेतराम्।।३७।।

कः स्वादो विषयेष्वसौ कटुविषप्रख्येष्वलं दुःखिना,
यानन्वेष्टुमिव त्वयाऽशुचिकृतं येनाभिमानामृतम्।
आःज्ञातं करणैर्मनः प्रणिधिभिः पित्तज्वराविष्टवत्,
कष्टं रागरसैः सुधीस्त्वमपि सन् व्यत्यासितास्वादनः।।३८।।

अनिवृत्तेर्जगत्सर्वं मुखादवशिनष्टि यत्।
तत्तस्याऽशक्तितो भोक्तुं वितनोर्भानुसोमवत्।।३९।।

साम्राज्यं कथमप्यवाप्य सुचिरात्संसारसारं पुनः,
तत्त्यक्त्वैव यदि क्षितीश्वरवराः प्राप्ताः श्रियं शाश्वतीम्।
त्वं प्रागेवपरिग्रहान् परिहर त्याज्यान् गृहीत्वापि ते,
मा भूर्भौतिकमोदकव्यतिकरं संपाद्य हास्यास्पदम्।।४०।।

सर्वं धर्ममयं क्वचित्क्वचिदपि प्रायेण पापात्मकं,
क्वाप्येतद् द्वयवत्करोति चरितं प्रज्ञाधनानामपि।
तस्मादेष तदन्धरज्जुवलनं स्नानं गजस्याथवा,
मत्तोन्मत्तविचेष्टितं न हि हितो गेहाश्रमः सर्वथा।।४१।।

कृष्ट्वोप्त्वा नृपतीन्निषेव्य बहुशो भ्रांत्वा वनेम्भोनिधौ,
किं क्लिश्नासि सुखार्थमत्र सुचिरं हा कष्टमज्ञानतः।
तैलं त्वं सिकतासु यन्मृगयसे वाञ्छेद्विषाज्जीवितुं,
नन्वाशाग्रहनिग्रहात्तव सुखं न ज्ञातमेतत् त्वया।।४२।।

आशाहुताशनग्रस्तवस्तूच्चैर्वंशजां जनाः।
हा किलैत्य सुखच्छायां दुःखघर्मापनोदिनः।।४३।।

खातेऽभ्यासजलाशयाऽजनि शिला प्रारब्धनिर्वाहिणा,
भूयोऽभेदि रसातलावधि ततः कृच्छ्रात्सुतुच्छं किल।
क्षारं वार्युदगात्तदप्युपहतं पूतिकृमिश्रेणिभिः,
शुष्कं तच्च पिपासितोस्य सहसा कष्टं विधेश्चेष्टितम्।।४४।।

शुद्धैर्धनैर्विवर्धेन्ते सतामपि न संपदः।
न हि स्वच्छाम्बुभिः पूर्णाः कदाचिदपि सिन्धवः।।४५।।

स धर्मो यत्र नाऽधर्मस्तत्सुखं यत्र नाऽसुखम्।
तज्ज्ञानं यत्र नाऽज्ञानं सा गतिर्यत्र नाऽऽगतिः।।४६।।

वार्तादिभिर्विषयलोलविचारशून्यः,
क्लिश्नासि यन्मुहुरिहार्थपरिग्रहार्थम्।
तच्चेष्टितं यदि सकृत्परलोकबुद्ध्या,
न प्राप्यते ननु पुनर्जननादिदुःखम्।।४७।।

संकल्प्येदमनिष्टमिष्टमिदमित्यज्ञातयाथात्म्यको,
बाह्ये वस्तुनि किं वृथैव गमयस्यासज्य कालं मुहुः।
अन्तः शान्तिमुपैहि याववदयप्राप्तान्तकप्रस्फुर-
ज्ज्वालाभीषणजाठरानलमुखे भस्मीभवेन्नो भवान्।।४८।।

आयातोऽस्यतिदूरमङ्ग! परवानाशासरित्प्रेरितः,
किं नावैषि ननु त्वमेव नितरामेनां तरीतुं क्षमः।
स्वातन्त्र्यं व्रज यासि तीरमचिरान्नो चेद् दुरन्तान्तक-
ग्राहव्याप्तमभीरवक्त्रविषमे मध्ये भवाब्धेर्भविः।।४९।।

आस्वाद्याद्य यदुज्झितं विषयिभिर्व्यावृत्तकौतूहलै-
स्तद् भूयोऽप्यविकुत्सयन्नभिलषत्यप्राप्तपूर्वं यथा।
जन्तो किं तव शान्तिरस्ति न भवान् यावद् दुराशामिमा-
मंहः संहतिवीरवैरिपृतनाश्रीवैजयन्तीं हरेत्।।५०।।

भङ्क्त्वा भाविभवांश्च भोगिविषमान्भोगान्बुभुक्षुर्भृशं,
मृत्वापि स्वयमस्तभीतिकरुणः सर्वाञ्जिघांसुर्मुधा।
यद्यत्साधुविगर्हितं हतमतिस्तस्यैव धिक् कामुकः,
कामक्रोधमहाग्रहाहितमनाः किं किं न कुर्याज्जनः।।५१।।

श्वो यस्याजनि यः स एव दिवसो ह्यस्तस्य संपद्यते,
स्थैर्यं नाम न कस्यचिज्जगदिदं कालानिलोन्मूलितम्।
भ्रातर्भ्रान्तिमपास्य पश्यसितरां प्रत्यक्षमक्ष्णोर्न किं,
येनात्रैव मुहुर्मुहुर्बहुतरं बद्धस्पृहो भ्राम्यसि।।५२।।

संसारे नरकादिषु स्मृतिपथेप्युद्वेगकारिण्यलं,
दुःखानि प्रतिसेवितानि भवता तान्येवमेवासताम्।
तत्तावत् स्मरसि स्मरस्मितशितापाङ्गैरनङ्गायुधैः,
वामानां हिमदग्धमुग्धतरुवद्यत्प्राप्तवान्निर्धनः।।५३।।

उत्पन्नोऽस्यतिदोषधातुमलवद्देहोऽसि कोपादिमान्,
साधिव्याधिरसि प्रहीणचरितोऽस्य स्यात्मनो वञ्चकः।
मृत्युव्यात्तमुखान्तरोऽसि जरसा ग्रस्तोऽसि जन्मिन् वृथा,
किं मत्तोऽस्यसि किं हितारिरहिते किं वासिबद्धस्पृहः।।५४।।

उग्रग्रीष्मकठोरघर्मकिरणस्फूर्जद्गभस्तिप्रभैः,
संतप्तः सकलेन्द्रियैरयमहो संवृद्धतृष्णो जनः।
अप्राप्याभिमतं विवेकविमुखः पापप्रयासा कुल-
स्तोयोपान्तदुरन्तकर्दमगतक्षीणोक्षवत् क्लिश्यते।।५५।।

लब्धेन्धनो ज्वलत्यग्निः प्रशाम्यति निरिन्धनः।
ज्वलत्युभयथाप्युच्चैरहो मोहाग्निरुत्कटः।।५६।।

किं मर्माण्यभिदन्न भीकरतरो दुःकर्म गर्मुद्गणः,
किं दुःखज्वलनावलीविलसितैर्नालेढि देहश्चिरम्।
किं गर्ज्जद्यमतूरभैरवरवान्नाकर्णयन्निर्णयन्,
येनायं न जहाति मोहविहितां निद्रामभद्रां जनः।।५७।।

तादात्म्यं तनुभिः सदानुभवनं पाकस्य दुःकर्मणो,
व्यापारः समयं प्रति प्रकृतिभिर्गाढं स्वयं बन्धनम्।
निद्रा विश्रमणं मृतेः प्रतिभयं शश्वन्मृतिश्च ध्रुवं,
जन्मिन् जन्मनि ते तथापि रमसे तत्रैव चित्रं महत्।।५८।।

अस्थिस्थूलतुलाकलापघटितं नद्धं शिरास्नायुभि-
श्चर्माच्छादितमस्त्रसान्द्र पिशितैलिप्तं सुगुप्तं खलैः।
कर्मारातिभिरायुरुच्चनिगलालग्नं शरीरालयं,
कारागारमवेहि ते हतमते प्रीतिं वृथा मा कृथाः।।५६।।

शरणमशरणं वो बन्धवो बन्धमूलं,
चिरपरिचितदारा द्वारमापद्गृहाणाम्।
विपरिमृशत पुत्राः शत्रवः सर्वमेतत्,
त्यजत भजत धर्मं निर्मलं शर्मकामाः।।६०।।

तत्कृत्यं किमिहेन्धनैरिव धनैराशाग्निसंधुक्षणैः,
संबन्धेन किमङ्ग शश्वदशुभैः संबन्धिभिर्बन्धुभिः।
किं मोहाहिमहाबिलेन सदृशा देहेन गेहेन वा,
देहिन् याहि सुखाय ते सममुं मा गाः प्रमादं मुधा।।६१।।

आदावेव महाबलैरविचलं पट्टेन बद्धा स्वयं,
रक्षाध्यक्षभुजासि पंचजरवृता सामन्तसंरक्षिता।
लक्ष्मीर्दीपशिखोपमा क्षितिमतां हा पश्यतां नश्यति,
प्रायः पातितचामरानिलहतेवान्यत्र काऽऽशा नृणाम्।।६२।।

दीप्तोभयाग्रवातारिदारुदरगकीटवत्।
जन्ममृत्युसमाश्लिष्टे शरीरे वत सीदसि।।६३।।

नेत्रादीश्वरचोदितः सकलुषो रूपादिविश्वाय किं,
प्रेष्यः सीदति कुत्सितव्यतिकरैरंहांस्यलं बृंहयन्।
नीत्वा तानि भुजिष्यतामकलुषो विश्वं विसृज्यात्मवा-
नात्मानं धिनु सत्सुखी धुतरजाः सद्वृत्तिभिर्निर्वृतः।।६४।।

अर्थिनो धनमप्राप्य धनिनोऽप्यवितृप्तिः।
कष्टं सर्वेऽपि सीदन्ति परमेको मुनिः सुखी।।६५।।

परायत्तात् सुखाद् दुःखं स्वायत्तं केवलं वरम्।
अन्यथा सुखिनामानः कथमासंस्तपस्विनः।।६६।।

यदेतत्स्वच्छन्दं विहरणमकार्पण्यमशनं,
सहार्य्यैः संवासः श्रुतमुपशमैकश्रमफलम् ।
मनो मन्दस्यन्दं बहिरपि चिरायाति विमृशन्,
न जाने कस्येयं परिणतिरुदारस्य तपसः । ।६७ । ।

विरतिरतुला शास्त्रे चिन्ता तथा करुणापरा,
मतिरपि सदैकान्तध्वान्तप्रपञ्चविभेदिनी ।
अनशनतपश्चर्या चान्ते यथोक्तविधानतो,
भवति महतां नाल्पस्येदं फलं तपसो विधेः । ।६८ । ।

उपायकोटिदूरक्षे स्वतस्तत इतोऽन्यतः ।
सर्वतः पतन-प्राये काये कोऽयं तवाग्रहः । ।६९ । ।

अवश्यं नश्वरैरेभिरायुःकायादिभिर्यदि ।
शाश्वतं पदमायाति मुधा यातमवेहि ते । ।७० । ।

गन्तुमुच्छ्वासनिःश्वासैरभ्यस्यत्येष संततम् ।
लोकः पृथग (गि) -न्तो वाञ्छत्यात्मानमजरामरम् । ।७१ । ।

गलत्यायुः प्रायः प्रकटितघटीयन्त्रसलिलं,
खलः कायोऽप्यायुर्गतिमनुपतत्येष सततम् ।
किमस्यान्यैरन्यैर्द्वयमयमिदं जीवितमिह,
स्थितो भ्रान्त्या नावि स्वमिव मनुते स्थास्नुमपधीः । ।७२ । ।

उच्छ्वासः खेदजन्यत्वाद् दुःखमेषोऽत्र जीवितम् ।
तद्विरामो भवेन्मृत्युर्नृणां भण कुतः सुखम् । ।७३ । ।

जन्मतालद्रुमाज्जन्तु फलानि प्रच्युतान्यधः ।
अप्राप्य मृत्युभूभागमन्तरे स्यु कियच्चिरम् । ।७४ । ।

क्षितिजलधिभिः संख्यातीतैर्बहिः पवनैस्त्रिभिः,
परिवृतमतः खे नाधस्तात्खलासुरनारकान् ।
उपरि दिविजान् मध्ये कृत्वा नरान् विधिमन्त्रिणा,
पतिरपि नृणां त्राता नैको ह्यलङ्घ्यतमोऽन्तकः । ।७५ । ।

अविज्ञातस्थानो व्यपगततनुः पापमलिनः,
खलो राहुर्भास्वद्दशशतकराक्रान्तभुवनम्।
स्फुरन्तं भास्वन्तं किल गिलति हा कष्टमपरः,
परिप्राप्ते काले विलसति विधौ को हि बलवान्।।७६।।

उत्पाद्य मोहमद विह्वलमेव विश्वं,
वेधाः स्वयं गतघृणष्टकवद्यथेष्टम्।
संसारभीकरमहागहनान्तराले,
हन्ता निवारयितुमत्र हि कः समर्थः।।७७।।

कदा कथं कुतः कस्मिन्नित्यतर्क्यः खलोऽन्तकः।
प्राप्नोत्येव किमित्याध्वं यतध्वं श्रेयसे बुधाः।।७८।।

असामवायिकं मृत्योरेकमालोक्य कंचन।
देशं कालं विधिं हेतुं निश्चिन्ताः सन्तु जन्तवः।।७९।।

अपिहितमहाघोरद्वारं न किं नरकापदा-
मुपकृतवतो भूयः किं तेन चेदमपाकरोत्।
कुशलविलयज्वालाजाले कलत्रकलेवरे,
कथमिव भवानत्र प्रीतः पृथग्जनदुर्लभे।।८०।।

व्यापत्पर्वमयं विरामविरसं मूलेऽप्यभोग्योचितं,
विष्वक्क्षुत्क्षतपातकुष्टकुथिताद्युग्रामयैश्छिद्रितम्।
मानुष्यं घुणभक्षितेक्षुसदृशं नाम्नैकरम्यं पुनः,
निःसारं परलोकबीजमचिरात्कृत्वेह सारी कुरु।।८१।।

प्रसुप्तो मरणाशङ्कां प्रबुद्धो जीवितोत्सवम्।
प्रत्यहं जनयन्नेष तिष्ठेत् काये कियच्चिरम्।।८२।।

सत्यं वदात्र यदि जन्मनि बन्धुकृत्य-
माप्तं त्वया किमपि बन्धुजनाद्धितार्थम्।
एतावदेव परमस्ति मृत्स्य पश्चात्,
संभूयकायमहितं तव भस्मयन्ति।।८३।।

जन्मसंतानसंपादि विवाहादिविधायिनः।
स्वाः परेऽस्य सकृत्प्राणहारिणो न परे परे।।८४।।

धनेरेन्धनसंभारं प्रक्षिप्याशाहुताशने।
ज्वलन्तं मन्यते भ्रान्तः शान्तं संधुक्षणे क्षणे।।८५।।

पलितच्छलेन देहान्निर्गच्छतिशुद्धिरेव तव बुद्धेः।
कथमिव परलोकार्थं जरी वराकस्तदा स्मरति।।८६।।

इष्टार्थोद्यदनाशितं भवसुखक्षाराम्भसि प्रस्फुरन्-
नानामानसदुःखवाडवशिखा संदीपिताभ्यन्तरे।
मृत्यूत्पत्तिजरातरङ्गचपले संसारघोरार्णवे,
मोहग्राहविदारितास्य विवराद्दूरेचरादुर्लभाः।।८७।।

अव्युच्छिन्नैः सुखपरिकरैर्लालिता लोलरम्यैः
श्यामाङ्गीनां नयनकमलैरर्चिता यौवनान्तम्।
धन्योऽसि त्वं यदि तनुरियं लब्धबोधेर्मृगीभि-
र्दग्धारण्ये स्थलकमलिनी शङ्क्यालोक्यते ते।।८८।।

बाल्ये वेत्सि न किंचिदप्य परिपूर्णाङ्गो हितं वाहितं,
कामान्धः खलु कामिनीद्रुमघने भ्राम्यन् वने यौवने।
मध्ये वृद्धतृषार्जितुं वसुपशुः क्लिश्नासि कृष्यादिभि-
र्वृद्धो वाद्ऱ्धमृतः क्व जन्मफलिते धर्मो भवेन्निर्मलः।।८९।।

बाल्येऽस्मिन् यदनेन ते विरचितं स्मर्तुं च तन्नोचितं,
मध्ये चापि धनार्जनव्यतिकरैस्तन्नास्तियन्नापितः।
वार्द्धिक्येऽप्यभिभूत दन्तदलनाद्याचेष्टितं निष्ठुरं,
पश्याद्यापि विधेर्वशेन चलितुं वाञ्छस्यहो दुर्मते।।९०।।

अश्रोत्रीव तिरस्कृतापरतिरस्कारश्रुतीनां श्रुतिः,
चक्षुर्वीक्षितुमक्षमं तव दशां दृष्यामिवान्ध्यं गतम्।
भीत्येवाभिमुखान्तकादतितरां कायोऽप्ययं कम्पते,
निष्कम्पस्त्वमहो प्रदीप्तभवनेऽप्यासे (स्से) जराजर्जरे।।९१।।

अतिपरिचतेष्ववज्ञा नवे भवेत् प्रीतिरिति हि जनवादः।
तं किमिति मृषा कुरुषे दोषासक्तो गुणेष्वरतः।।६२।।

हंसैर्न भुक्तमतिकर्कशमम्भसापि नो संगतं दिनविकासि सरोजमित्यम्।
नालोकितं मधुकरेण मृतं वृथैव प्रायः कुतो व्यसनिनो स्वहिते विवेकः।।६३।।

पृज्ञैव दुर्लभा सुष्ठु दुर्लभा सान्यजन्मनि।
तां प्राप्य ये प्रमाद्यन्ते ते शोच्याः खलु धीमताम्।।६४।।

लोकाधिपाः क्षितिभुजो भुवि येन जाताः,
तस्मिन् विधौ सति हि सर्वजनप्रसिद्धे।
शोच्यं तदेव यदमी स्पृहणीय वीर्या-
स्तेषां बुधाश्च वत किंकरतां प्रयान्ति।।६५।।

यस्मिन्नस्ति स भूभृतो धृतमहावंशाः प्रदेशः परः,
प्रज्ञापारमिताधृतोन्नतिघनाः मूर्ध्ना ध्रियन्ते श्रियै।
भूयांस्तस्य भुजङ्गदुर्गमतमो मार्गो निराशस्ततो,
व्यक्तं वक्तुमयुक्तमार्यमहतां सर्वार्यसाक्षात्कृतः।।६६।।

शरीरेऽस्मिन् सर्वाशुचिनि बहुदुःखेऽपि निवसन्,
व्यरंसीन्नो नैव प्रथयति जनः प्रीतिमधिकाम्।
इदम् दृष्ट्वाप्यस्माद्विरमयितुमेनं च यतते,
यतिर्याताख्यानैः परहितरतिं पश्य महतः।।६७।।

इत्थं तथेति बहुना किमुदीरितेन भूयस्त्वयैव ननु जन्मनि भुक्तमुक्तम्।
एतावदेव कथितं तव संकलय्य सर्वापदां पदमिदं जननं जनानाम्।।६८।।

अन्तर्वान्तं वदनविवरे क्षुत्तृषार्त्तः प्रतीच्छन्,
कर्मायत्तः सुचिरमुदरावस्करे वृद्धगृद्ध्या।
निष्पन्दात्मा कृमिसहचरो जन्मनि क्लेशभीतो,
मन्ये जन्मिन्नपि च मरणात्तन्निमित्ताद्विभेषि।।६९।।

अजाकृपाणीयमनुष्ठितं त्वया विकल्पमुग्धेन भवादितः पुरा।
यदत्रकिंचित्सुखरूपमाप्यते तदार्य विद्ध्यन्धकवर्तकीयमकम्।।१००।।

हा कष्टमिष्टवनिताभिरकाण्ड एव,
चण्डो विखण्डयति पण्डितमानिनोऽपि।
पश्चाद्भुतं तदपि घोरतया सहन्ते,
दग्धुं तपोऽग्निभिरमुं न समुत्सहन्ते।।१०१।।

अर्थिभ्यस्तृणवद्विचिन्त्य विषयान् कश्चिच्छ्रियं दत्तवान्,
पापां तामवितर्पिणीं विगणयन्नादात् परस्त्यक्तवान्।
प्रागेवाकुशलां विमृश्य सुभगोऽप्यन्यो न पर्य्यग्रहीत्,
एते ते विदितोत्तरोत्तरवराः सर्वोत्तमास्त्यागिनः।।१०२।।

विरज्य संपदः सन्तस्त्यजन्ति किमिहाद्भुतम्।
मा वमीत् किं जुगुप्सावान् सुभुक्तमपि भोजनम्।।१०३।।

श्रियं त्यजन् जडः शोकं विस्मयं सात्त्विकं सताम्।
करोति तत्त्वविच्चित्रं न शोकं न च विस्मयम्।।१०४।।

विमृश्योच्चैर्गर्भात् प्रभृति मृतिपर्यन्तमखिलं,
मुधाप्येतत्कलेशाशुचिभयनिकाराघबहुलम्।
बुधैस्त्याज्यं त्यागाद्यदि भवति मुक्तिश्च जडधीः,
स कस्त्यक्तुं नालं खलजनसमायोगसदृशम्।।१०५।।

कुबोध रागादि विचेष्टितैः फलं त्वयापि भूयो जनानादिलक्षणम्।
प्रतीहि भव्यप्रतिलोमवर्त्तिभिः ध्रुवं फलं प्राप्स्यसि तद्विलक्षणम्।।१०६।।

दयादमत्यागसमाधिसंततेः पथि प्रयाहि प्रगुणं प्रयत्नवान्।
नयत्यवश्यं वचसामगोचरं विकल्पदूरं परमं किमप्यसौ।।१०७।।

विज्ञाननिहतमोहं कुटौ प्रवेशो विशुद्धकायमिव।
त्यागः परिग्रहाणामवश्यमजरामरं कुरुते।।१०८।।

अभुक्त्वापि परित्यागात् स्वोच्छिष्टं विश्वमासितम्।
येन चित्रं नमस्तस्मै कौमारब्रह्मचारिणे।।१०६।।

अकिंचनोऽहमित्यास्स्व त्रैलोक्याधिपतिर्भवेः।
योगिगम्यं तव प्रोक्तं रहस्यं परमात्मनः।।११०।।

दुर्लभमशुद्धमपसुखमविदितमृतिसमयमल्पपरमायुः
मानुष्यमिहैवतपोमुक्तिस्तपसैव तत्तपः कार्यम्।।१११।।

आराध्यो भगवान् जगत्त्रयगुरुर्वृत्तिः सतां सम्मता,
क्लेशस्तच्चरणस्मृतिः क्षतिरपि प्रप्रक्षयः कर्मणाम्।
साध्यं सिद्धिसुखं कियान् परिमितः कालो मनः साधनं,
सम्यक चेतसि चिन्तयन्तु विधुरं किंवा समाधौ बुधाः।।११२।।

द्रविणपवनप्राध्मातानां सुखं किमिहेक्ष्यते,
किमपि किमयं कामव्याधः खलीकुरुते खलः।
चरणमपि किं स्पृष्टुं शक्ताः पराभवपांसवो,
वदत तपसोऽप्यन्यन्मान्यं समीहितसाधनम्।।११३।।

इहैव सहजान् रिपून् विजयते प्रकोपादिकान्,
गुणाः परिणमन्ति यानसुभिरप्ययं वाञ्छति।
पुरश्च पुरुषार्थसिद्धिरचिरात्स्वयं यायिनी,
नरो न रमते कथं तपसि तापसंहारिणी।।११४।।

तपोवल्यां देहः समुपचितपुण्यार्जितफलः,
शृलाट्वग्रे यस्य प्रसव इव कालेन गलितः।
व्यशुष्यच्चायुष्यं सलिलमिव संरक्षितपयः,
स धन्यः संन्यासाहुतभुजि समाधानचरमम्।।११५।।

अमी प्ररूढवैराग्यास्तनुमप्यनुपाल्य यत्
तपस्यन्ति चिरं तद्धि ज्ञातं ज्ञानस्य वैभवम्।।११६।।

क्षणार्धमपि देहेन साहचर्यं सहेत कः।
यदि प्रकोष्ठमादाय न स्याद्बोधो निरोधकः।।११७।।

समस्तं साम्राज्यं तृणमिव परित्यज्य भगवान्,
तपस्यन् निर्म्माणः क्षुधित इव दीनः परगृहान्।
किलाटेद्भिक्षार्थी स्वयमलभमानोऽपि सुचिरं,
न सोढव्यं किं वा परमिह परैः कार्यवशतः।।११८।।

पुरा गर्भादिन्द्रो मुकुलितकरः किंकर इव,
स्वयं स्रष्टा सृष्टेः पतिरथ निधीनां निजसुतः।
क्षुधित्वा षण्मासान् स किल पुरुरप्याट जगती-
महो केनाप्यस्मिन् विलसितमलङ्घ्यं हतविधेः।।११६।।

प्राक् प्रकाशप्रधानः स्यात् प्रदीप इव संयमी।
पश्चात्तापप्रकाशाभ्यां भास्वानिव हि भासताम्।।१२०।।

भूत्वा दीपोपमो धीमान् ज्ञानचारित्रभास्वरः।
स्वमन्यं भासयत्येष प्रोद्वमत्कर्म (न कर्म) कज्जलम्।।१२१।।

अशुभाच्छभमायातः शुद्धः स्यादयमागमात्।
रवेरप्राप्तसंध्यस्य तमसो न समुद्गमः।।१२२।।

विधूततमसो रागस्तपःश्रुतनिबन्धनः।
संध्याराग इवार्कस्य जन्तोरभ्युदयाय सः।।१२३।।

विहाय व्याप्तमालोकं पुरस्कृस्य पुनस्तमः।
रविवद्रागमागच्छन् पातालतलमृच्छति।।१२४।।

ज्ञानं यत्र पुरःसरं सहचारी लज्जा तपः सम्बलं,
चारित्रं शिविका निवेशनभुवः स्वर्गो गुणा रक्षकाः।
पन्थाश्च प्रगुणं शमाम्बुबहुलश्छाया दयाभावना,
यानं तं मुनिमापयेदभिमतं स्थानं विना विप्लवैः।।१२५।।

मिथ्यादृष्टिविषान् वदन्ति फणिनो दृष्टं तदा सुस्फुटं,
यासामर्धविलोकनैरपि जगद्दंदह्यते सर्वतः।
तास्त्वय्येव विलोमवर्तिनि भृशं भ्राम्यन्ति बद्धक्रुधः,
स्त्रीरूपेण विषं हि केवलमतस्तद्गोचरं मा स्म गाः।।१२६।।

क्रुद्धाः प्राणहरा भवन्ति भुजगा दंष्ट्रैव काले क्वचित्,
तेषामौषधयश्च सन्ति बहवः सद्यो विषव्युच्छिदः।
हन्युः स्त्रीभुजगाः पुरेह च मुहुः क्रुद्धाः प्रसन्नास्तथा,
योगीन्द्रानपि तान् निरौषधविषा दृष्टाश्च दृष्ट्वापि च।।१२७।।

एतामुत्तमनायिकामभिजनावर्ज्यां जगत्प्रेयसीं,
मुक्तिश्रीललनां गुणप्रणयिनीं गन्तुं तवेच्छा यदि।
तां त्वं संस्कुरु वर्ज्जयान्यवनितावार्तामपि प्रस्फुटं,
तस्यामेव रतिं तनुष्व नितरां प्रायेण सेर्ष्याः स्त्रियः।।१२८।।

वचनसलिलै र्हा सस्वच्छै स्तरङ्गसुखो दरैः,
वदनकमलैर्बाह्ये रम्याः स्त्रियः सरसीसमाः।
इह हि बहवः प्रास्तप्रज्ञास्तटेऽपि पिपासवो,
विषयविषमग्राहग्रस्ताः पुनर्न समुद्गताः।।१२९।।

पापिष्ठैर्जगतीविधीतमभितः प्रज्वाल्य रागानलं,
क्रुद्धैरिन्द्रिय लुब्धकैर्भयपदैः संत्रासिताः सर्वतः।
हन्तैते शरणैषिणो जनमृगाः स्त्रीछद्मना निर्मितं,
घातस्थानमुपाश्रयन्ति मदनव्याधाधिपस्याकुलाः।।१३०।।

अपत्रप तपोऽग्निना भय जुगुप्सयोरास्पदं,
शरीरमिदमर्धदग्धशववन्न किं पश्यसि।
वृथा व्रजसि किं रतिं ननु न भीषयस्यातुरो,
निसर्गतरलाः स्त्रियस्तदिह ताः स्फुटं विभ्यति।।१३१।।

उत्तुङ्गसंगतकुचाचलदुर्गदूर-
माराद्बलित्रयसरिद्विषमावतारम्।
रोमावलीकुसृतिमार्गमनङ्गमूढाः,
कान्ताकटीविवरमेत्य न केऽत्र खिन्ना।।१३२।।

वर्चोगृहं विषयिणां मदनायुधस्य,
नाडीव्रणं विषमनिर्वृतिपर्वतस्य।
प्रच्छन्नपादुकमनङ्गमहाहिरन्ध्र-
माहुर्बुधाः जघनरध्रंमदः सुदत्याः।।१३३।।

अध्यास्यापि तपोवनं वत परे नारीकटीकोटरे,
व्याकृष्टा विषयैः पतन्ति करिणः कूटावपाते यथा।
प्रोचे प्रीतिकरीं जनस्य जननीं प्राग्जन्मभूमिं च यो,
व्यक्तं तस्य दुरात्मनो दुरुदितैर्मन्ये जगद्वञ्चितम्।।१३४।।

कण्ठस्थः कालकूटोऽपि शम्भोः किमपि नाकरोत्
सोपि दन्दह्यते स्त्रीभिः स्त्रियो हि विषमं विषम्।।१३५।।

तव युवतिशरीरे सर्वदोषैकापात्रं,
रतिरमृतमयूखाद्यर्थसाधर्म्यतश्चेत्।
ननु शुचिषु शुभेषु प्रीतिरेष्वेव साध्वी,
मदनमधुममदान्धे प्रायशः को विवेकः।।१३६।।

प्रियामनुभवत्स्वयं भवति कातरं केवलं,
परेष्वनुभवत्सु तां विषयिषु स्फुटं ह्लादते।
मनो ननु नपुंसकं त्विति न शब्दताश्चार्थतः,
सुधी कथमनेन सन्नुभयथा पुमान् जीयते।।१३७।।

राज्यं सौजन्ययुक्तं श्रुतवदुरुतपः पूज्यमत्रापि यस्मात्,
त्यक्त्वा राज्यं तपस्यन्नलघुरतिलघुः स्यात्तपः प्रोह्यराज्यम्।
राज्यात्तस्मात्प्रपूज्यं तप इति मनसालोच्य धीमानुदग्रं,
कुर्य्यादार्य्यः समग्रं प्रभवभयहरं सत्तपः पापभीरुः।।१३८।।

पुरः शिरसि धार्यन्ते पुष्पाणि विबुधैरपि।
पश्चात्पादोपि नाघ्राक्षीत् किं न कुर्य्याद् गुणक्षतिः।।१३९।।

हे चन्द्रमः किमिति लाञ्छनवानभूस्त्वं,
तद्वान् भवेः किमिति तन्मय एव नाभूः।
किं ज्योत्स्नया मलमलं तव घोषयन्त्या,
स्वर्भानुवन्ननु तथा सति नासि लक्ष्यः।।१४०।।

विकाशयन्ति भव्यस्य मनोमुकुलमंशवः।
रवेरिवारविन्दस्य कठोराश्च गुरूक्तयः।।१४१।।

दोषान् कांश्चन तान्प्रवर्त्तकतया प्रच्छाद्य गच्छत्ययं,
सार्द्धतैः सहसा म्रियेद्यदि गुरुः पश्चात् करोत्येष किम्।
तस्मान्मे न गुरुर्गुरुर्गुरुतरान् कृत्वा लघूश्च स्फुटम्,
ब्रूते यः सततं समीक्ष्य निपुणं सोऽयं खलः सद्गुरुः।।१४२।।

लोकद्वयहितं वक्तुं श्रोतुञ्च सुलभाः पुरा।
दुर्लभाः कर्तुमद्यत्वे वक्तुं श्रोतुं च दुर्लभाः।।१४३।।

गुणागुणविवेकिभिर्विहितमप्यलं दूषणं,
भ्वेत्सदुपदेशवन्मतिमतामतिप्रीतये।
कृतं किमपि धाष्ट्र्यतः स्तवनमप्यतीर्थोषितैः,
न तोषयति तन्मनांसि खलु कष्टमज्ञानता।।१४४।।

त्यक्तहेत्वन्तरापेक्षौ गुणदोषनिबन्धनौ।
यस्यादानपरित्यागौ स एव विदुषां वरः।।१४५।।

हितं हित्वाऽहिते स्थित्वा दुर्धीर्दुःखायसे भृशम्।
विपर्य्यये तयोरेधि त्वं सुखायिष्यसे सुधीः।।१४६।।

इमे दोषास्तेषां प्रभवनममीभ्यो नियमितो,
गुणाश्चैते तेषामपि भवनमेतेभ्य इति यः।
त्यजंस्त्याज्यान् हेतून् झटिति हितहेतून् प्रतिभजन्,
स विद्वान् सद्वृत्तः स हि स हि निधिः सौख्ययशसोः।।१४७।।

साधारणौ सकलजन्तुषु वृद्धिनाशौ,
जन्मान्तरार्जितशुभाशुभकर्मयोगात्।
धीमान्स यः सुगतिसाधनवृद्धिनाश-
स्तद्व्यत्ययाद्विगतधीरपरोऽभ्यधायि।।१४८।।

कलौ दण्डो नीतिः स च नृपतिभिस्ते नृपतयो,
नयन्त्यार्थार्थं तं न च धनमदोऽस्त्याश्रमवताम्।
नतानामाचार्या न हि नतिरताः साधुचरिता-
स्तपस्येषु श्रीमन्मणय इव जाताः प्रविरलाः।।१४९।।

एते ते मुनिमानिनः कवलिताः कान्तकटाक्षेक्षणै-
रङ्गालग्नशरावसन्नहरिणप्रख्या भ्रमन्त्याकुलाः।
सन्धर्त्तुं विषयाटवीस्थलतले स्वान्क्वाप्यहोन क्षमा,
मा व्राजीन्मरुदाहताभ्रचपलैः संसर्गमेभिर्भवान्।।१५०।।

गेहं गुहा परिदधासि दिशो विहाय,
संयानमिष्टमशनं तपसोऽभिवृद्धिः।
प्राप्तागमार्थ तव सन्ति गुणाः कलत्र-
मप्रार्थ्यवृत्तिरसि याति वृथैव याञ्चाम्।।१५१।।

परमाणोः परं नाल्पं नभसो न महत्परम्।
इति ब्रुवन् किमद्राक्षीन्निमौ दीनाभिमानिनौ।।१५२।।

याचितुर्गौरवं दातुर्मन्ये संक्रान्तमन्यथा।
तदवस्थौ कथं स्यातामेतौ गुरुलघू तदा।।१५३।।

अधो जिघृक्षवो यान्ति यान्त्यूर्ध्वमजिघृक्षवः।
इति स्पष्टं वदन्तौ वा नामोन्नामौ तुलान्तयोः।।१५४।।

सस्वमाशासते सर्वे न स्वं तत्सर्वतर्पि यत्।
अर्थिवैमुख्यसंपादिसस्वत्वान्निःस्वता वरम्।।१५५।।

आशाखनिरतीवाभूदगाधा निधिभिश्च या।
सापि येन समीभूता तत्ते मानधनं धनम्।।१५६।।

आशाखनिरगाधेयमधः कृतजगत्त्रया।
उत्सर्प्योत्सर्प्य तत्रस्थानहो सद्भिः समीकृता।।१५७।।

विहितविधिना देहस्थित्यै तपांस्युपबृंहय-
न्नशनमपरैर्भक्त्या दत्तं क्वचित् कियदिच्छति।
तदपि नितरां लज्जाहेतुः किलास्य महात्मनः
कथमयमहो गृह्णात्यन्यान्परिग्रहदुर्ग्रहान्।।१५८।।

दातारो गृहचारिणः किल धनं देयं तदत्राशनं,
गृह्णन्तः स्वशरीरतोऽपि विरताः सर्वोपकारेच्छया।
लज्जैषैव मनस्विनां ननु पुनः कृत्वा कथं तत्फलं
रागद्वेषवशीभवन्ति तदिदं चक्रेश्वरत्वं कलेः।।१५९।।

आमृष्टं सहजं तव त्रिजगतीबोधाधिपत्यं तथा,
सौख्यं चात्मसमुद्भवं विनिहतं निर्मूलतः कर्मणा।
दैन्यात्तद्विहितैस्त्वमिन्द्रियसुखैः सन्तृप्यसे निस्त्रपः,
स त्वं यश्चिरयातनाकदशनैर्बद्धस्थितिस्तुष्यसि।।१६०।।

तृष्णा भोगेषु चेद्भिन्नो सहस्वाल्पं स्वरेव ते।
प्रतीक्ष्य पाकं किं पीत्वा पेया भुक्तिं विनाशयेः।।१६१।।

निर्धनत्वं धनं येषां मृत्युरेव हि जीवितम्।
किं करोति विधिस्तेषां सतां ज्ञानैकचक्षुषाम्।।१६२।।

जीविताशा धनाशा च येषां तेषां विधिर्विधिः।
किं करोति विधिस्तेषां येषामाशा निराशता।।१६३।।

परां कोटिं समारूढौ द्वावेव स्तुतिनिन्दयोः।
यस्त्यजेत्तपसे चक्रं यस्तपोविषयाशया।।१६४।।

त्यजतु तपसे चक्रं चक्री यतस्तपसः फलं
सुखमनुपमं स्वोप्तं (त्यं) नित्यं ततो न तदद्भुतम्।
इदमिह महच्चित्रं यत्तद्विषं विषयात्कं
पुनरपि सुधीस्त्यक्तं भोक्तुं जहाति महत्तपः।।१६५।।

शय्यातलादपि तु कोऽपि भयं प्रपाता-
त्तुंगात्ततः खलु विलोक्य किलात्मपीड़ाम्।
चित्रं त्रिलोकशिखरादपि दूरतुङ्गा-
द्धीमान्स्वयं न तपसः पतनाद्विभेति।।१६६।।

विशुद्ध्यति दुराचारः सर्वोऽपि तपसा ध्रुवम्।
करोति मलिनं तच्च किल सर्वाधरोऽपरः।।१६७।।

सन्त्येव कौतुकशतानि जगत्सु किन्तु,
विस्मापकं तदलमेतदिह द्वयं नः।
पीत्वामृतं यदि वमन्ति विसृष्टपुण्याः,
संप्राप्य संयमनिधिं यदि च त्यजन्ति।।१६८।।

इह विनिहितबह्वारम्भवाह्योरुशत्रो-
रुपचितनिजशक्तेर्नापरः कोप्यपायः।
अशनशयनयानस्थानदत्तावधानः,
कुरुतव परिरक्षामान्तरान्हन्तुकामः।।१६९।।

अनेकान्तात्मार्थप्रसवफलभारातिविनते,
वचः पर्णाकीर्णे विपुलनयशाखाशतयुते।
समुत्तुङ्गे सम्यक् प्रततमतिमूले प्रतिदिनं,
श्रुतस्कन्धे धीमान् रमयतु मनोमर्कटममुम्।।१७०।।

तदेव तदतद्रूपं प्राप्नुवन्न विरंस्यति।
इति विश्मनाद्यन्तं चिन्तयेद्विश्ववित्सदा।।१७१।।

एकमेकक्षणे सिद्धं ध्रौव्योत्पत्तिव्ययात्मकम्।
अबाधितान्येतत्प्रत्ययान्यथानुपपत्तितः।।१७२।।

न स्यास्तु न क्षणविनाशि न बोधमात्रं,
नाभावमप्रतिहतप्रतिभासरोधात्।
तत्त्वं प्रतिक्षणभवत्तदतत्स्वरूप-
माद्यन्तहीनमखिलं च तथा यथैकम्।।१७३।।

ज्ञानस्वभावः स्यादात्मा स्वभावावाप्तिरच्युतिः।
तस्मादच्युतिमाकांक्षन् भावयेज् ज्ञानभावनाम्।।१७४।।

ज्ञानमेव फलं ज्ञाने ननु श्लाघ्यमनश्वरम्।
अहो मोहस्य माहात्म्यमन्यदप्यत्र मृग्यते।।१७५।।

शास्त्राग्नौ मणिवद्भव्यो विशुद्धो भाति निर्वृतः।
अङ्गारवत् खलो दीप्तो मली वा भस्म वा भवेत्।।१७६।।

मुहुः प्रसार्य्य सज्ज्ञानं पश्यन् भावान् यथास्थितान्।
प्रीत्यप्रीति निराकृत्य ध्यायेदध्यात्मविन्मुनिः।।१७७।।

वेष्टनोद्वेष्टने यावत् तावद् भ्रान्तिर्भवाणवि।
आवृत्तिपरिवृत्ताभ्यां जन्तोर्मन्थानुकारिणः।।१७८।।

मुच्यमानेन पाशेन भ्रान्तिर्बन्धश्च मन्थवत्।
जन्तोस्तथासौ मोक्तव्यो येनाभ्रान्तिरबन्धनम्।।१७९।।

रागद्वेषकृताभ्यां जन्तोर्बन्धः प्रवृत्त्यवृत्तिभ्याम्।
तत्त्वज्ञानकृताभ्यां ताभ्यामेवेक्ष्यते मोक्षः।।१८०।।

द्वेषानुरागबुद्धिर्गुणदोषकृता करोति खलु पापम् ।
तद्विपरीता पुण्यं तदुभयरहिता तयोर्मोक्षम् । ।१८१ । ।

मोहबीजाद्रतिद्वेषौ बीजान् मूलाङ्कुराविव ।
तस्माज्ज्ञानाग्निना दाह्यं तदेतौ निर्दिधिक्षुणा । ।१८२ । ।

पुराणो ग्रहदोषोत्थो गम्भीरः सगतिः सरुक् ।
त्यागजात्यादिना मोहव्रणः शुद्ध्यति रोहति । ।१८३ । ।

सुहृदः सुखयन्तः स्युर्दुखयन्तो यदि द्विषः ।
सुहृदोऽपि कथं शोच्या द्विषो दुःखयितुंमृताः । ।१८४३ । ।

अपरमरणे मत्वात्मीयानलङ्घ्यतमे रुदन् ।
विलपतितरां स्वस्मिन् मृत्यौ तथास्य जडात्मनः । ।
विभयमरणे भूयः साध्यं यशः परजन्म वा ।
कथमिति सुधीः शोकं कुर्य्यान्मृतेऽपि न केनचित् । ।१८५ । ।

हानेः शोकस्ततो दुःखं लाभाद्रागस्ततः सुखम् ।
तेन हानावशोकः सन् सुखी स्यात् सर्वदा सुधीः । ।१८६ । ।

सुखी सुखमिहान्यत्र दुःखी दुःखं समश्नुते ।
सुखं सकलसंन्यासो दुःखं तस्य विपर्य्ययः । ।१८७ । ।

मृत्योर्मृत्व्यन्तरप्राप्तिरुत्पत्तिरिह देहिनाम् ।
तव प्रमुदितान्मन्ये पाश्चात्ये पक्षपातिनः । ।१८८ । ।

अधीत्य सकलं श्रुतं चिरमुपास्य घोरं तपो,
यदीच्छसि फलं तयोरिह हि लाभपूजादिकम् ।
छिनत्सि सुतपस्तरोः प्रसवमेव शून्याशयः,
कथं समुपलप्स्यसे सुरसमस्य पक्वं फलम् । ।१८९ । ।

तथा श्रुतमधीत्य शश्वदिहलोकपंक्तिं विना,
शरीरमपि शोषय प्रथितकायसंक्लेशनैः ।
कषायविषयद्विषो विजयसे यथा दुर्जयान्,
शमं हि फलमामनन्ति मुनयस्तपः शास्त्रयोः । ।१९० । ।

दृष्ट्वा जनं व्रजसि किं विषयाभिलाषं,
स्वल्पोप्यसौ तव महज्जनयत्यनर्थम्।
स्नेहाद्युपक्रमजुषो हि यथातुरस्य,
दोषो निषिद्धचरणं न तथेतरस्य।।१६१।।

अहितविहितप्रीतिः प्रीतं कलत्रमपि स्वयं,
सकृदपकृतं श्रुत्वा सद्यो जहाति जनोप्ययम्।
स्वहितनिरतः साक्षाद्दोषं समीक्ष्य भवे भवे,
विषयविषवद्ग्रासाभ्यासं कथं कुरुते बुधः।।१६२।।

आत्मन्नात्मविलोपनात्मचरितैरासीद्दुरात्मा चिरं,
स्वात्मास्याः सकलात्मनीनचरितैरात्मीकृतैरात्मनः।
आत्मेत्या परमात्मतां प्रतिपतन्प्रत्यात्मविद्यात्मकः,
स्वात्मोऽत्यात्मसुखो निषीदसि लसन्नध्यात्ममध्यात्मना।।१६३।।

अनेन सुचिरं पुरा त्वमिह दासवद्धाहित-
स्ततोऽन्शनसामिभक्तरसवर्जनादिक्रमैः।
क्रमेण विलयावधिस्थिरतपोविशेषैरिदं,
कदर्थय शरीरकं रिपुमिवाद्य हस्तागतम्।।१६४।।

आदौ तनोर्जननमत्र हतेन्द्रियाणि,
काङ्क्षन्ति तानि विषयान् विषयाश्च मानः।
हानिप्रयासभयपापकुयोनिदाः स्यु-
र्मूलं ततस्तनुरनर्थपरम्पराणाम्।।१६५।।

शरीरमपि पुष्णन्ति सेवन्ते विषयानपि।
नास्त्यहो दुष्करं नृणां विषाद्वाञ्छन्ति जीवितम्।।१६६।।

इतस्ततश्च त्रस्यन्तो विभाव्यां यथा मृगाः।
वनाद्विशन्त्युपग्रामं कलौ कष्टं तपस्विनः।।१६७।।

वरं गार्हस्थ्यमेवाद्य तपसो भाविजन्मनः।
सुस्त्रीकटाक्षलुण्टाकैः लुप्तवैराग्यसंपदः।।१६८।।

स्वार्थभ्रंशं त्वमविगणयंस्त्यक्तलज्जाभिमानः,
संप्राप्तोऽस्मिन् परिभवशतैर्दुःखमेतत्कलत्रम्।
नान्चेति त्वां पदमपि पदाद्विप्रलुब्धाऽसि भूयः,
सख्यं साधो यदि मतिमान्माग्रहीर्विग्रहेण।।१६६।।

न कोऽप्यन्योऽन्येन व्रजति समवायं गुणवता,
गुणीकेनापि त्वं समुपगतवान् रूपिभिरसौ।
न ते रूपं ते यानुपव्रजसि तेषां गतमति-
स्ततश्छेद्यो भेद्यो भवसि भवदुःखे भववने।।२००।।

माता जातिः पिता मृत्युराधिव्याधी सहोद्गतौ।
प्रान्ते जन्तोर्जरा मित्रं तथाप्याशा शरीरके।।२०१।।

शुद्धोऽप्यशेषविषयावगमोऽप्यमूर्तोऽ-
प्यात्मन् त्वमप्यतितरामशुचीकृतोऽसि।
मूर्तं सदाऽशुचि विचेतनमन्यदत्र,
किं वा न दूषयति धिग्धिगिदं शरीरम्।।२०२।।

हा हतोऽसितरां जन्तो येनास्मिंस्तव सांप्रतम्।
ज्ञानं कायाऽशुचिज्ञानं तत्त्यागः किल साहसम्।।२०३।।

अपि रोगादिभिर्वृद्धैर्न मुनिः खेदमृच्छति।
उडुपस्थस्य कः क्षोभः प्रवृद्धेऽपि नदीजले।।२०४।।

जातामयः प्रतिविधाय तनौ वसेद्वा,
नो चेत्तनुं त्यजतु वा द्वितयी गतिः स्यात्।
लग्नाग्निमावसति वह्निमपोह्य गेहं,
निर्हाय वा व्रजति तत्र सुधीः किमास्ते।।२०५।।

शिरस्थं भारमुत्तार्य्य स्कन्धे कृत्वा सुयत्नतः।
शरीरस्थेन भारेण अज्ञानी मन्यते सुखम्।।२०६।।

यावदस्ति प्रतीकारस्तावत्कुर्यात् प्रतिक्रियाम्।
तथाप्यनुपशान्तानामनुद्वेगः प्रतिक्रिया।।२०७।।

यदा यदा भवेज्जन्मी त्यक्त्वा मुक्तो भविष्यति।
शरीरमेव तत्त्याज्यं किं शेषैः क्षुद्रकल्पनैः।।२०८।।

नयत्सर्वाशुचिप्रायं शरीरमपि पुज्यताम्।
सोऽप्यात्मा येन न स्पृश्यो दुश्चरित्रं धिगस्तु तत्।।२०९।।

रसादिराद्यो भागः स्यात् ज्ञानावृत्यादिरन्वितः।
ज्ञानादयस्तृतीयस्तु संसार्येवं त्रयात्मकः।।२१०।।

भागत्रयमिदं नित्यामात्मानं बन्धवर्त्तिनम्।
भागद्वयात् पृथक्कर्त्तुं यो जानाति स तत्त्ववित्।।२११।।

करोतु त चिरं घारं तपः क्लेशासहो भवान्।
चित्तसाध्यान् कषायारीन्न जयेद्यत्तदज्ञता।।२१२।।

हृदयसरसि यावन्निर्मलेऽप्यत्यगाधे
वसति खलु कषायग्राहचक्रं समन्तात्।
श्रयति गुणगणोऽयं तन्न तावद्विशङ्कं
समदमयमशेषौस्तान् विजेतुं यतस्व।।२१३।।

हित्वा हेतुफले किलात्र सुधियस्तां सिद्धिमामुत्रिकीं,
वाञ्छन्तः स्वयमेव साधनतया शंसन्ति शान्तं मनः।
तेषामाखुविडालिकेति तदिदं धिग्धिक्कलेः प्राभवं,
येनैतेऽपि फलद्वयप्रलयानाद्दूरं विपर्य्यासिताः।।२१४।।

उद्युक्तस्त्वं तपस्यस्यधिकमभिभवंस्त्वामगच्छन्कषायाः,
प्राभूद्बोधोऽप्यगाधो जलमिव जलधौ किन्तु दुर्लक्ष्यमन्यैः।
निर्व्यूढेऽपि प्रवाहे सलिलमिव मनाग्निम्नदेशेष्वश्यं,
मात्सर्य्यन्ते तुल्यैर्भवति परवशाद्दुर्जयं तज्जहीहि।।२१५।।

चित्तस्थमप्यनवबुध्य हरेण जाड्या,
क्रूद्ध्वा बहिः किमपि दग्धमनङ्गबुद्ध्या।
घोरामवाप स हि तेन कृतामवस्थां,
क्रोधोदयाद्भवति कस्य न कार्य्यहानिः।।२१६।।

चक्रं विहाय निजदक्षिणवाहुसंस्थं,
यत्प्राव्रजन्ननु तदैव स तेन मुक्तः।
क्लेशं तमाप किल बाहुबली चिराय,
मानो मनागपि हतिं महतीं करोति।।२१७।।

सत्यं वाचि मतौ श्रुतं हृदि दया शोर्य्यं भुजे विक्रमो,
लक्ष्मीर्दानमनूनमर्थिनिचये मार्गे गतिर्निर्वृते।
येषां प्रागजनीह तेऽपि निरहङ्काराः श्रुतेर्गोचरा-
श्चित्रं संप्रति लेशतोऽपि न गुणास्तेषां तथाप्युद्धताः।।२१८।।

वसति भुवि समस्तं सापि संधारितान्तै-
रुदरमुपनिविष्टा सा च ते चापरस्य।
तदपि किल परेषां ज्ञानकोणे निलीनं,
वहति कथमहिन्यो गर्वमात्माधिकेषु।।२१९।।

यशो मारीचीयं कनकमृगमायामलिनितं,
हतोऽश्वत्थामोक्त्या प्रणयिलघुरासीद्यमसुतः।
सकृष्णः कृष्णोऽभूत्कपटबटुवेषेणनितरा-
मपिच्छद्माल्यं तद्विषमिव हि दुग्धस्य महतः।।२२०।।

भेयं मायामहागर्तान्मिथ्याघनतमोमयात्।
यस्मिन् लीना न लक्ष्यन्ते क्रोधादिविषमाहयः।।२२१।।

प्रच्छन्नकर्म मम कोऽपि न वेत्ति धीमान्,
ध्वंसं गुणस्य महतोऽपि हि मेति मंस्थाः।
कामं गिलन् धवलदीधितिधौतदाहो,
गूढोऽप्यबोधि न विधुः सविधुन्तुदः कैः।।२२२।।

वनचरभयाद्धावन् देवाल्यताकुलबालधिः,
किल जडतया लोलो बालव्रजे विचलं स्थितः।
बत स चमरस्तेन प्राणैरपि प्रवियोजितः,
परिणततृषां प्रायेणैवंविधा हि विपत्तयः।।२२३।।

विषयविरतिः संगत्यागः कषायविनिग्रहः,
शमयमदमास्तत्त्वाभ्यासस्तपश्चरणोद्यमः।
नियमितमनोवृत्तिर्भक्तिर्जिनेषु दयालुता,
भवति कृतिनः संसाराब्धेस्तटे निकटे सति।।२२४।।

यमनियमनितान्तः शान्तबाह्यान्तरात्मा,
परिणमितसमाधिः सर्वसत्त्वानुकम्पी।
विहितहितमिताशी क्लेशजालं समूलं,
दहति निहतनिद्रो निश्चिताध्यात्मसारः।।२२५।।

समधिगतसमस्ताः सर्वसावद्यदूराः,
स्वहितनिहितचित्ताः शान्तसर्वप्रचाराः।
स्वपरसफलजल्पाः सर्वसंकल्पमुक्ताः,
कथमिह न विमुक्तेर्भाजनं ते विमुक्ताः।।२२६।।

दासत्वं विषयप्रभोर्गतवतामात्मापि येषां पर-
स्तेषां भो गुणदोषशून्यमनसां किं तत्पुनर्नश्यति।
भेत्तव्यं भवतैव यस्य भुवनप्रद्योति रत्नत्रयं,
भ्राम्यन्तीन्द्रियतस्कराश्च परितस्त्वं नन्मुहुर्जागृहि।।२२७।।

रम्येषु वस्तुवनितादिषु वीतमोहो,
मुह्येद्वृथा किमिति संयमसाधनेषु।
धीमान् किमामयभयात्परिहृत्य भुक्तिं,
पीत्वौषधं व्रजति जातुचिदप्यजीर्णम्।।२२८।।

तपः श्रुतमिति द्वयं बहिरुदीर्य्य रूढं यथा,
कृषीफलमिवालये समुपनीयते स्वात्मनि।
कृषीवल इवोज्झितं करणचोरव्याधादिभि-
स्तदा हि मनुते यतिः स्वकृतकृत्यतां धीरधीः।।२२९।।

दृष्टार्थस्य न मे किमप्ययमिति ज्ञानावलेपादमुं,
नोपेक्षस्व जगत्त्रयैकडमरं निःशेषयाशाविषम्।
पश्याम्भोनिधिमप्यगाधसलिलं चावाद्यते वाडवः,
क्रोडीभूतविपक्षकस्य जगति प्रायेण शान्तिः कुतः।।२३०।।

स्नेहानुबद्धहृदयो ज्ञानचरित्रान्वितोऽपि न श्लाघ्यः।
दीप इवापादयिता कज्जलमलिनस्य कार्य्यस्य।।२३१।।

रतेररतिमायातः पुनारतिमुपागतः।
तृतीयं पदमप्राप्य बालिशो वत सीदसि।।२३२।।

तावद्दुःखाग्नितप्तात्माऽयःपिण्ड इव सीदसि।
निर्वासिनिर्वृताम्भोधौ यावत्त्वं न निमज्जसि।।२३३।।

मंक्षुमोक्षं सुसम्यक्त्वं सत्यंकारस्वसात्कृतम्।
ज्ञानचारित्रसाकल्यमूलेन स्वकरे कुरु।।२३४।।

अशेषमद्वैतमभोग्यभोग्यं निर्वृत्तिवृत्त्योः परमार्थकोट्याम्।
अभोग्यभोग्यात्मविकल्पबुद्ध्या निवृत्तिमभ्यस्यतु मोक्षकांक्षी।।२३५।।

निवृत्तिं भावयेद्यावन्निवर्त्त्यं तदभावतः।
न वृत्तिर्न निवृत्तिश्च तदेवपदमव्ययम्।।२३६।।

रागद्वेषौ प्रवृत्तिः स्यान्निवृत्तिस्तन्निषेधनम्।
तौ च बाह्यार्थसम्बद्धौ तस्मात्तांश्च परित्यजेत्।।२३७।।

भावयामि भवाऽऽवर्त्तेभावनाः प्रागभाविताः।
भावये भाविता नेति भवाभावाय भावनाः।।२३८।।

शुभाशुभे पुण्यपापे सुखदुःखे च षट्त्रयं।
हितमाद्यमनुष्ठेयं शेषत्रयमथाहितम्।।२३९।।

तत्राप्याद्यं परित्याज्यं शेषौ न स्तः स्वतः स्वयम्।
शुभं च शुद्धे त्यक्त्वान्ते प्राप्नोति परमं पदम्।।२४०।।

अस्त्यात्मास्तमितादिबन्धनगतस्तद्बन्धनान्यास्रवै-
स्ते क्रोधादिकृताः प्रमादजनिताः क्रोधादयस्तेऽव्रतात्।
मिथ्यात्वोपचितात् स एव समलः कालादिलब्धौ क्वचित्,
सम्यक्त्वव्रतदक्षताऽकलुषतायोगैः क्रमान्मुच्यते।।२४१।।

ममेदमहमस्येति प्रीतिरीतिरिवोत्थिता।
क्षेत्रे क्षेत्रीयते यावत्तावत् काशा तपःफले।।२४२।।

मामन्यमन्यं मां मत्वा भ्रान्तो भ्रान्तौ भवार्णवि।
नान्योऽहमहमेवाहमन्योऽन्योऽन्योऽहमस्मि न।।२४३।।

बन्धो जन्मनि येन येन निबिडं निष्पादितो वस्तुना,
बाह्यार्थैकरतेः पुरा परिणतप्रज्ञात्मनः साम्प्रतम्।
तत्तत्तन्निधनाय साधनमभूद्वैराग्यकाष्ठास्पृशो,
दुर्बोधं हि तदन्यदेव विदुषामप्राकृतं कौशलम्।।२४४।।

अधिकः क्वचिदाश्लेषः क्वचिद्धीनः क्वचित्समः।
क्वचिद्विश्लेष एवायं बन्धमोक्षक्रमो मतः।।२४५।।

यस्य पुण्यं च पापं च निष्फलं गलति स्वयम्।
स योगी तस्य निर्वाणं न तस्य पुनरास्रवः।।२४६।।

महातपस्तडागस्य संभृतस्य गुणाम्भसा।
मर्य्यादापालिबन्धेऽल्पामप्युपेक्षिष्ट मा क्षतिम्।।२४७।।

दृढगुप्तिकपाटसंवृतिर्धृतिभित्तिर्मतिपादसंभृतिः।
यतिरल्पमपि प्रपद्य रन्ध्रं कुटिलैर्विक्रियते गृहाकृतिः।।२४८।।

स्वान्दोषान्हन्तुमुद्युक्तः तपोभिरतिदुर्द्धरैः।
तानेव पोषयत्यज्ञः परदोषकथाशनैः।।२४९।।

दोषः सर्वगुणाकरस्य महतो दैवानुरोधात्क्वचि-
द्यातो यद्यपि चन्द्रलाञ्छनसमस्तं द्रष्टुमन्धोऽप्यलम्।
दृष्टाप्नोति न तावदस्य पदवीमिन्दोः कलङ्क जग-
द्विश्वं पश्यति तत्प्रभाप्रकटितं किं कोऽप्यगात्तत्पदम्।।२५०।।

यद्यदाचरितं पूर्वं तत्तदज्ञानचेष्टितम्।
उत्तरोत्तरविज्ञानाद्योगिनः प्रतिभासते।।२५१।।

अपि सुतपसामाशावल्लीशिखा तरुणायते,
भवति हि मनोमूले यावन्ममत्वजलार्द्रता।
इति कृतधियः कृच्छ्रारम्भैश्चरन्ति निरन्तरं,
चिरपरिचिते देहेऽप्यस्मिन्नतीव गतस्पृहाः।।२५२।।

क्षीरनीरवदभेदरूपतस्तिष्ठतोरपि च देहदेहिनोः।
भेद एव यदि भेदवत्स्वलं बाह्यवस्तुषु वदात्र का कथा।।२५३।।

तप्तोऽहं देहसंयोगाज्जलं वाऽनलसंगमात्।
इह देहं परित्यज्य शीतीभूताः शिवैषिणः।।२५४।।

अनादिचयसंबद्धो महामोहो हृदि स्थितः।
सम्यग्योगेन यैर्वान्तस्तेषामूर्ध्वं विशुद्धयति।।२५५।।

एकैश्वर्य्यमिहैकतामभिमतावाप्तिं शरीरच्युतिं,
दुःखं दृष्कृतनिष्कृतिं सुखमलं संसारसौख्योज्झनम्।
सर्वत्यागमहोत्सवव्यतिकरं प्राणव्ययं पश्यताम्,
किं तद्यत्र सुखाय तेन सुखिनः सत्यं सदा साधवः।।२५६।।

आकृष्योग्रतपोबलैरुदयगो (गं) पुच्छं यदानीयते,
तत्कर्म स्वयमागतं यदि विदः को नाम खेदस्ततः।
यातव्यो विजिगीषुणा यदि भवेदारम्भकोऽरिः स्वयं,
वृद्धिः प्रत्युत नेतुरप्रतिहता तद्विग्रहे कः क्षयः।।२५७।।

एकाकित्वप्रतिज्ञाः सकलमपि समुत्सृज्य सर्व सहत्वात्
भ्रान्त्याचिन्त्याः सहायं तनुमिव सहसालोच्य किंचित्सलज्जाः।
सज्जीभूताः स्वकार्य्ये तदपगमविधिं बद्धपल्यङ्कबन्धा
ध्यायन्ति ध्वस्तमोहा गिरिगहनगुहागुह्यगेहे नृसिंहाः।।२५८।।

येषां भूषणमङ्गसंगतरजः स्थानं शिलायास्तलम्,
शय्या शर्करिला मही सुविहितं गेहं गुहा द्वीपिनम्।
आत्मात्मीयविकल्पवीतमतयस्त्रुट्यत्तमोग्रन्थय-
स्ते नो ज्ञानधना मनांसि पुनतां मुक्तिस्पृहा निस्पृहाः।।२५९।।

दूरारूढतपोऽनुभावजनितज्योतिः समुत्सर्पणै-
रन्तस्तत्त्वमदः कथं मथमपि प्राप्य प्रसादं गताः।
विश्रब्धं हरिणी विलोलनयनैरापीयमाना वने,
धन्यास्ते गमयन्त्यचिन्त्यचरितैर्धीराश्चिरं वासरान्।।२६०।।

येषां बुद्धिरलक्ष्यमाणभिदयोराशात्मनोरन्तरं,
गत्वोच्चैरविधाय भेदमनयोरारात्र विश्राम्यति।
यैरन्तर्विनिवेशिताः शमधनैर्बाढं बहिर्व्याप्तयः,
तेषां नोऽत्र पवित्रयन्तु परमाः पादोत्थिताः पांशवः।।२६१।।

यत्प्राग्जन्मनि संचितं तनुभृता कर्माशुभं वा शुभं,
तद्दैवं तदुदीरणादनुभवन् दुःखं सुखं वागतम्।
कुर्य्याद्यः शुभमेव सोऽप्यभिमतो यस्तूभयोच्छित्तये,
सर्वारम्भपरिग्रहपरित्यागी स वन्द्यः सताम्।।२६२।।

सुखं दुःखं वा स्यादिह विहितकर्मोदयवशात्,
कुतः प्रीतिस्तापः कुत इति विकल्पाद्यदि भवेत्।
उदासीनस्तस्य प्रगलितपुराणं न हि नवं,
समास्कन्दत्येषः स्फुरति सुविदग्धो मणिरिव।।२६३।।

सकलविमलबोधो देहगेहे विनिर्यन्,
ज्वलन इव स काष्ठं निष्ठुरं भस्मयित्वा।
पुनरपि तदभावे प्रज्वलत्युज्वलः सन्,
भवति हि यतिवृत्तं सर्वथश्चर्यभूमिः।।२६४।।

गुणी गुणमयस्तस्य नाशस्तन्नाश इष्यते।
अतएव हि निर्वाणं शून्यमन्यैर्विकल्पितम्।।२६५।।

अजातोऽनश्वरोऽमूर्त्तः कर्ता भोक्ता सुखी बुधः।
देहमात्रो मलैर्मुक्तो गत्वोर्ध्वमचलः प्रभुः।।२६६।।

स्वाधीन्याद्दुःखमप्यासीत्सुखं यदि तपस्विनाम्।
स्वाधीनसुखसम्पन्ना न सिद्धाः सुखिनः कथम्।।२६७।।

इति कतिपयवाचां गोचरीकृत्य कृत्यं,
चरितमुचितमुच्चैश्चेतसां चित्तरम्यम्।
इदमविकलमन्तः सन्ततं चिन्तयन्तः,
सपदि विपदपेतामाश्रयन्तु श्रियं ते।।२६८।।

जिनसेनाचार्य्यपादस्मरणाधीनचेतसाम्।
गुणभद्रभदन्तानां कृतिरात्मानुशासनम्।।२६६।।
ऋषभो नाभिसूनुर्यो भूयात्स भविकाय वः।
यज्ज्ञानसरसि विश्वं सरोजमिव भासते।।२७०।।

इति श्रीगुणभद्रभदन्तकृतमात्मानुशासनम्

यह सही है कि धर्म के बिना जी नहीं सकता।
अमृत के नाम बिना कोई जहर की घूँट पी नहीं सकता।।
स्वर्ग-मोक्ष के नाम पर मूर्खों को गुमराह करने वालों,
फरिश्ता हर्गिज इन्सान की बराबरी कर नहीं सकता।।

श्रीविद्यानन्दिस्वामिविरचिता

आप्तपरीक्षा

प्रबुद्धाशेषतत्त्वार्थ-बोधदीधितिमालिने।
नमः श्रीजिनचन्द्राय मोहध्वान्तप्रभेदिने।।१।।

श्रेयोमार्गस्य संसिद्धिः प्रसादात्परमेष्ठिनः।
इत्याहुस्तद्गुणस्तोत्रं शास्त्रादौ मुनिपुङ्गवाः।।२।।

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्म्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये।।३।।

इत्यसाधारणं प्रोक्तं विशेषणमशेषतः।
परसङ्कल्पिताप्तानां व्यवच्छेदप्रसिद्धये।।४।।

अन्ययोगव्यच्छेदान्निश्चिते हि महात्मनि।
तस्यापदेशसामर्थ्यादनुष्ठानं प्रतिष्ठितम्।।५।।

तत्रासिद्धं मुनीन्द्रस्य भेत्तृत्वं कर्मभूभृताम्।
ये वदन्ति विपर्यासात्तान्प्रत्येवं प्रचक्ष्महे।।६।।

प्रसिद्धः सर्वतत्त्वज्ञस्तेषां तावत्प्रमाणतः।
सदा विध्वस्त-निःशेषबाधकात्स्वसुखादिवत्।।७।।

ज्ञाता यो विश्वतत्त्वानां स भेत्ता कर्मभूभृताम्।
भवत्येवान्यथा तस्य विश्वतत्त्वज्ञता कुतः।।८।।

नास्पृष्टः कर्म्मभिः शश्वद्विश्वदृश्वास्ति कश्चन।
तस्यानुपायसिद्धस्य सर्वथानुपपत्तितः।।९।।

प्रणीतिर्मोक्षमार्गस्य न विनाऽनादिसिद्धतः।
सर्वज्ञादिति तत्सिद्धिर्न परीक्षासहा स हि।।१०।।

प्रणेता मोक्षमार्गस्य नाऽशरीरोऽन्यमुक्तवत्।
सशरीरस्तु नाकर्म्मा सम्भवत्यज्ञजन्तुवत्।।११।।

न चेच्छाशक्तिरीशस्य कर्म्माभावेऽपि युज्यते।
तदिच्छा वाऽनभिव्यक्ता क्रियाहेतुः कुतोऽज्ञवत्।।१२।।

ज्ञानशक्त्यैव निःशेषकार्योत्पत्तौ प्रभुः किल।
सदेश्वर इति ख्यानेऽनुमानमनिदर्शनम्।।१३।।

समीहामन्तरेणापि यथा वक्तिः जिनेश्वरः।
तथेश्वरोऽपि कार्य्याणि कुर्य्यादित्यप्यपेशलम्।।१४।।

सति धर्म्मविशेषे हि तीर्थंकृत्त्वसमाह्वये।
ब्रूयाज्जिनेश्वरो मार्गं न ज्ञानादेव केवलात्।।१५।।

सिद्धस्यापास्तनिःशेषकर्म्मणो वागसम्भवात्।
विना तीर्थकरत्वेन नाम्ना नार्थोपदेशिता।।१६।।

तथा धर्म्मविशेषोऽस्य योगश्च यदि शाश्वतः।
तदेश्वरस्य देहोऽस्तु योग्यन्तरवदुत्तमः।।१७।।

निग्रहानुग्रहौ देहं स्वं निर्म्मायान्यदेहिनाम्।
करोतीश्वर इत्येतन्न परीक्षाक्षमं वचः।।१८।।

देहान्तराद्विना तावत्स्वदेहं जनयेद्यदि।
तदा प्रकृतकार्य्येऽपि देहाधानमनर्थकम्।।१९।।

देहान्तरात्स्वदेहस्य विधाने चानवस्थितिः।
तथा च प्रकृतं कार्य्यं कुर्य्यादीशो न जातुचित्।।२०।।

स्वयं देहाविधाने तु तेनैव व्यभिचारिता।
कार्य्यत्वादेः प्रयुक्तस्य हेतोरीश्वरसाधने।।२१।।

यथानीशाः स्वदेहस्य कर्त्ता देहान्तरान्मतः।
पूर्वस्मादित्यनादित्वान्नानवस्था प्रसज्यते।।२२।।

तथेशस्यापि पूर्वास्माद्देहाद्देहान्तरोद्भवात्।
नानवस्थेति यो ब्रूयात्तस्यानीशत्वमीशितुः।।२३।।

अनीशः कर्म्मदेहेनाऽनादिसन्तानवर्तिना।
यथैव हि सकर्म्मानस्तद्वन्न कथमीश्वरः।।२४।।

ततो नेशस्य देहोऽस्ति प्रोक्तदोषानुषङ्गतः।
नापि धर्म्मविशेषोऽस्य देहाभावे विरोधतः।।२५।।

येनेच्छामन्तरेणापि तस्यकार्ये प्रवर्तनम्।
जिनेन्द्रवद् घटेतेति नोदाहरणसम्भवः।।२६।।

ज्ञानमीशस्य नित्यं चेदशरीरस्य न क्रमः।
कार्य्याणामक्रमाद्धेतोः कार्यक्रमविरोधतः।।२७।।

तदबोधस्य प्रमाणत्वे फलाभावः प्रसज्यते।
ततः फलावबोधस्याऽनित्यस्येष्टौ मतिक्षतिः।।२८।।

फलत्वे तस्य नित्यत्वं न स्यान्मानात्समुद्भवात्।
ततोऽनुद्भवने तस्य फलत्वं प्रतिहन्यते।।२९।।

अनित्यत्वे तु तज्ज्ञानस्यानेन व्यभिचारिता।
कार्यत्वादेर्महेशेनाकरणेऽस्य स्वबुद्धितः।।३०।।

बुद्ध्यन्तरेण तद्बुद्धेः करणे चानवस्थितिः।
नाऽनादिसन्तुतिर्युक्ता कर्म्मसन्तानतो विना।।३१।।

अव्यापि च यदि ज्ञानमीश्वरस्य तदा कथम्।
सकृत्सर्वत्र कार्य्याणामुत्पत्तिर्घटते ततः।।३२।।

यद्येकत्र स्थितं देशे ज्ञानं सर्वत्र कार्यकृत्।
तदा सर्वत्र कार्याणां सकृत्किन्न समुद्भवः।।३३।।

कारणान्तरवैकल्यात् तथानुत्पत्तिरित्यपि।
कार्याणामीश्वरज्ञानाऽहेतुकत्वं प्रसाधयेत्।।३४।।

सर्वत्र सर्वदा तस्य व्यतिरेकाऽप्रसिद्धितः।
अन्वयस्यापि सन्देहात्कार्यं तद्धेतुकं कथम्।।३५।।

एतैनैवेश्वरज्ञानं व्यापि नित्यमपाकृतम्।
तस्येशवत्सदा कार्य्यक्रमहेतुत्वहानितः।।३६।।

अस्वसंविदितं ज्ञानमीश्वरस्य यदीष्यते।
तदा सर्वज्ञता न स्यात् स्वज्ञानस्याप्रवेदनात्।।३७।।

ज्ञानान्तरेण तद्वित्तौ तस्याप्यन्येन वेदनम्।
वेदनेन भवेदेवमनवस्था महीयसी।।३८।।

गत्वा सुदूरमप्येवं स्वसंविदितवेदने।
इष्यमाणे महेशस्य प्रथमं तादृगस्तु वः।।३९।।

तत्स्वार्थव्यवसायात्मज्ञानं भिन्नं महेश्वरात्।
कथं तस्येति निर्देश्यमाकाशादि वदञ्जसा।।४०।।

समवायेन तस्यापि तद्भिन्नस्य कुतो गतिः।
इदेदमिति विज्ञानादबाध्याद्व्यभिचारितम्।।४१।।

इह कुण्डे दधीत्यादि विज्ञानेनास्तविद्विषा।
साध्ये सम्बन्धमात्रे तु परेषां सिद्धसाधनम्।।४२।।

सत्यामयुतसिद्धौ चेन्नेदं साधु विशेषणम्।
शास्त्रीयायुतसिद्धत्वविरहात् समवायिनोः।।४३।।

द्रव्यं स्वावयवाधारं गुणो द्रव्याश्रयो मतः।
लोकिक्ययुतसिद्धिस्तु भवेद् दुग्धाम्भसोरपि।।४४।।

पृथगाश्रयवृत्तित्वं युतसिद्धिर्न चानयोः।
सास्तीशस्य विभुत्वेन परद्रव्याश्रितिच्युतेः।।४५।।

ज्ञानस्यापीश्वरादन्यद्रव्यवृत्तित्वहानितः।
इति येऽपि समादध्युस्तांश्च पर्य्यनुयुंज्महे।।४६।।

विभुद्रव्यविशेषाणामन्याश्रयविवेकतः।
युतसिद्धिः कथं नु स्यादेकद्रव्यगुणादिषु।।४७।।

समवायः प्रसज्येताऽयुतसिद्धौ परस्परम्।
तेषां तद्द्वितयासत्त्वे स्याद्व्याघातो दुरुत्तरः।।४८।।

युतप्रत्ययहेतुत्वाद्युतसिद्धिरितीरणे।
विभुद्रव्यगुणादीनां युतसिद्धिः समागता।।४९।।

ततो नायुतसिद्धिः स्यादित्यसिद्धं विशेषणम्।
हेतोर्विपक्षतस्तावद्व्यवच्छेदं न साधयेत्।।५०।।

सिद्धेऽपि समवायस्य समवायिषु दर्शनात्।
इहेदमिति संवित्तेः साधनं व्यभिचारि तत्।।५१।।

समवायान्तराद्वृत्तौ समवायस्य तत्त्वतः।
समवायिषु तस्यापि परस्मादित्यनिष्ठितिः।।५२।।

तद्बाधास्तीत्यवाधत्वं नाम नेह विशेषणम्।
हेतोः सिद्धमनेकान्तो यतोऽनेनेति ये विदुः।।५३।।

तेषामिहेति विज्ञानाद्विशेषण-विशेष्यता।
समवायस्य तद्वत्सु तत् एव न सिद्धयति।।५४।।

विशेषण-विशेष्यत्वसम्बन्धोऽप्यन्यतो यदि।
स्वसम्बन्धिषु वर्तेत तदा बाधानवस्थितिः।।५५।।

विशेषण-विशेष्यत्वप्रत्ययादवगम्यते।
विशेषण-विशेष्यत्वमित्यप्येतेन दूषितम्।।५६।।

तस्यानन्त्यात्प्रपत्तृणामाकांक्षाक्षयतोऽपि वा।
न दोष इति चेदेवं समवायादिनापि किम्।।५७।।

गुणादिद्रव्ययोर्भिन्नद्रव्ययोश्च परस्परम्।
विशेषण-विशेष्यत्वसम्बन्धोऽस्तु निरंकुशः।।५८।।

संयोगः समवायो वा तद्विशेषोऽस्त्वनेकधा।
स्वातन्त्र्ये समवायस्य सर्वथैक्ये च दोषतः।।५९।।

स्वतन्त्रस्य कथं तावदाश्रितत्वं स्वयं मतम्।
तस्याश्रितत्ववचने स्वातन्त्रयं प्रतिहन्यते।।६०।।

समवायिषु सत्स्वेव समवायस्य वेदनात्।
आश्रितत्वे दिगादीनां मूर्त्तद्रव्याश्रितिर्न किम्।।६१।।

कथं चानाश्रितः सिद्धयेत्सम्बन्धः सर्वथा क्वचित्।
स्वसम्बन्धिषु येनातः सम्भवेन्नियमस्थितिः।।६२।।

एक एव च सर्वत्र समवायो यदीष्यते।
तदा महेश्वरे ज्ञानं समवैति न खे कथम्।।६३।।

इहेति प्रत्ययोऽप्येष शङ्करे न तु खादिषु।
इति भेदः कथं सिद्धयेन्नियामकमपश्यतः।।६४।।

न चाचेतनता तत्र सम्भाव्येत नियामिका।
शम्भावपि तदास्थानात्खादेस्तदविशेषतः।।६५।।

नेशो ज्ञाता न चाज्ञाता स्वयं ज्ञानस्य केवलम्।
समवायात्सदा ज्ञाता यद्यात्मैव स किं स्वतः।।६६।।

नायमात्मा न चानात्मा स्वात्मत्वसमवायतः।
सदात्मैवेति चेदेवं द्रव्यमेव स्वतोऽसिधत्।।६७।।

नेशो द्रव्यं न चाद्रव्यं द्रव्यत्वसमवायतः।
सर्वदा द्रव्यमेवेति यदि सन्नेव स स्वतः।।६८।।

न स्वतः सदसन्नापि सत्त्वेन समवायतः।
सन्नेव शश्वदित्युक्तौ व्याघातः केन वार्यते।।६९।।

स्वरूपेणासतः सत्त्वसमवाये च खाम्बुजे।
स स्यात्किन्न विशेषस्याभावात्तस्य ततोऽञ्जसा।।७०।।

स्वरूपेणासतः सत्त्वसमवायेऽपि सर्वदा।
सामान्यादौ भवेत्सत्त्वसमवायोऽविशेषतः।।७१।।

स्वतः सतो यथा सत्त्वसमवायस्तथास्तु सः।
द्रव्यत्वात्मत्वबोद्धृत्व समवायोऽपि तत्त्वतः।।७२।।

द्रव्यस्यैवात्मनो बोद्धुः स्वयं सिद्धस्य सर्वदा।
न हि स्वतोऽतथाभूतस्तथात्वसमवायभाक्।।७३।।

स्वयं ज्ञत्वे च सिद्धेऽस्य महेशस्य निरर्थकम्।
ज्ञानस्य समवायेन ज्ञत्वस्य परिकल्पनम्।।७४।।

तत्स्वार्थव्यवसायात्मज्ञानतादात्म्यमृच्छतः।
कथंचिदीश्वरस्यास्ति जिनेशत्वमसंशयम्।।७५।।

स एव मोक्षमार्गस्य प्रणेता व्यवतिष्ठते।
सदेहः सर्वविन्नष्टमोहो धर्म्मविशेषभाक्।।७६।।

ज्ञानादन्यस्तु निर्देहः सदेहो वा न युज्यते।
शिवः कर्त्तोपदेशस्य सोऽभेत्ता कर्म्मभृताम्।।७७।।

एतेनैव प्रतिव्यूढः कपिलोऽप्युपदेशकः।
ज्ञानादर्थान्तरत्वस्याविशेषात्सर्वथा स्वतः।।७८।।

ज्ञानसंसर्गतो ज्ञत्वमज्ञस्यापि न तत्त्वतः।
व्योमवच्चेतनस्यापि नोपपद्येत मुक्तवत्।।७९।।

प्रधानं ज्ञत्वतो मोक्षमार्गस्यास्तूपदेशकम्।
तस्यैव विश्ववेदित्वाद्भेत्तृत्वात्कर्म्मभूभृताम्।।८०।।

इत्यसम्भाव्यमेवास्याऽचेतनत्वात्परादिवत्।
तदसम्भवतो नूनमन्यथा निष्फलः पुमान्।।८१।।

भोक्तात्मा चेत्स एवास्तु कर्त्ता तदविरोधतः।
विरोधे तु तयोर्भोक्तुः स्याद्भृजौ कर्तृता कथम्।।८२।।

प्रधानं मोक्षमार्गस्य प्रणेतृ स्तूयते पुमान्।
मुमुक्षुभिरिति ब्रूयात्कोऽन्योऽकिंचित्करात्मनः।।८३।।

सुगतोऽपि न निर्वाणमार्गस्य प्रतिपादकः।
विश्वतत्त्वज्ञताऽपायात्तत्त्वतः कपिलादिवत्।।८४।।

संवृत्या विश्वतत्त्वज्ञः श्रेयोमार्गोपदेश्यपि।
बुद्धो वन्द्यो न तु स्वप्नस्तादृगित्यज्ञचेष्टितम्।।८५।।

यत्तु संवेदनाद्वैतं पुरुषाद्वैतवन्न तत्।
सिद्धयेत्स्वतोऽन्यतो वापि प्रमाणात्स्वेष्टहानितः।।८६।।

सौऽर्हन्नेव मुनीन्द्राणा वन्द्यः समवतिष्ठते।
तत्सद्भावे प्रमाणस्य निर्बाध्यस्य विनिश्चयात्।।८७।।

ततोऽन्तरिततत्त्वानि प्रत्यक्षाण्यर्हतोऽञ्जसा।
प्रमेयत्वाद्यथास्मादृक् प्रत्यक्षार्थाः सुनिश्चिताः।।८८।।

हेतोर्न व्यभिचारोऽत्र दूरार्थैमन्दरादिभिः।
सूक्ष्मैर्वा परमाण्वाद्यैस्तेषां पक्षीकृतत्वतः।।८९।।

तत्त्वान्यन्तरितानीह देशकालस्वभावतः।
धर्म्मादीनि हि साध्यन्ते प्रत्यक्षाणि जिनेशिनः।।९०।।

न चास्मादृक्समक्षाणामेवमर्हत्समक्षता।
न सिद्ध्येदिति मन्तव्यमविवादाद्द्वयोरपि।।९१।।

न चासिद्धं प्रमेयत्वं कात्स्न्र्यतो भागतोऽपि वा।
सर्वथाप्यप्रमेयस्य पदार्थस्याव्यवस्थितेः।।९२।।

यदि षड्भिः प्रमाणैः स्यात्सर्वज्ञः केन वार्यते।
इति ब्रुवन्नशेषार्थप्रमेयत्वमिहेच्छति।।९३।।

चोदनातश्च निःशेषपदार्थज्ञानसम्भवे।
सिद्धमन्तरितार्थानां प्रमेयत्वं समक्षवत्।।९४।।

यन्नार्हतः समक्षं तन्न प्रमेयं बहिर्गतः।
मिथ्यैकान्तो यथेत्येवं व्यतिरेकोऽपि निश्चितः।।९५।।

सुनिश्चितान्वयाद्धेतोः प्रसिद्धव्यतिरेकतः।
ज्ञाताऽर्हन् विश्वतत्त्वानामेवं सिद्ध्येदबाधितः।।९६।।

प्रत्यक्षमपरिच्छिन्दत्त्रिकालं भुवनत्रयम्।
रहितं विश्वतत्त्वज्ञैर्न हि तद्बाधकं भवेत्।।९७।।

नाऽनुमानोपमानाऽर्थापत्त्याऽऽगमबलादपि।
विश्वज्ञाभावसंसिद्धिस्तेषां सद्विषयत्वतः।।९८।।

नार्हन्निःशेषतत्त्वज्ञो वक्तृत्व-पुरुषत्वतः।
ब्रह्मादिवदिति प्रोक्तमनुमानं न बाधकम्।।९९।।

हेतोरस्य विपक्षेण विरोधाभावनिश्चयात्।
वक्तृत्वादेः प्रकर्षेऽपि ज्ञानानिर्हाससिद्धितः।।१००।।

नोपमानमशेषाणां नृणामनुपलम्भतः।
उपमानोपमेयानां तद्बाधकमसम्भवात्।।१०१।।

नार्थापत्तिरसर्वज्ञं जगत्साधयितुं क्षमा।
क्षीणत्वादन्यथाभावाऽभावात्तत्तदबाधिका।।१०२।।

नागमोऽपौरुषेयोऽस्ति सर्वज्ञाभाव साधनः।
तस्य कार्ये प्रमाणत्वादन्यथानिष्टसिद्धितः।।१०३।।

पौरुषेयोऽप्यसर्वज्ञप्रणीतो नास्य बाधकः।
तत्र तस्याऽप्रमाणत्वाद्धर्मादाविव तत्त्वतः।।१०४।।

अभावोऽपि प्रमाणं ते निषेध्याधारवेदने।
निषेध्यस्मरणे च स्यान्नास्तिताज्ञानमञ्जसा।।१०५।।

न चाशेषजगज्ज्ञानं कुतश्चिदुपपद्यते।
नापि सर्वज्ञसंवित्तिः पूर्वं तत्स्मरणं कुतः।।१०६।।

येनाऽशेषजगत्यस्य सर्वज्ञस्य निषेधनम्।
परोपगमतस्तस्य निषेधे स्वेष्टबाधनम्।।१०७।।

मिथ्यैकान्तनिषेधस्तु युक्तोऽनेकान्तसिद्धितः।
नाऽसर्वज्ञजगत्सिद्धेः सर्वज्ञप्रतिषेधनम्।।१०८।।

एवं सिद्धः सुनिर्णीतोऽसम्भवद्बाधकत्वतः।
सुखवद्विश्वतत्त्वज्ञः सोऽर्हन्नेव भवानिह।।१०९।।

स कर्म्मभूभृतां भेत्ता तद्विपक्षप्रकर्षतः।
यथा शीतस्य भेत्तेह कश्चिदुष्णप्रकर्षतः।।११०।।

तेषामागमिनां तावद्विपक्षः संवरो मतः।
तपसा सञ्चितानान्तु निर्ज्जरा कर्म्मभूभृताम्।।१११।।

तत्प्रकर्षः पुनः सिद्धः परमः परमात्मनि।
तारतम्यविशेषस्य सिद्धेरुष्णप्रकर्षवत्।।११२।।

कर्म्माणि द्विविधान्यत्र द्रव्यभावविकल्पतः।
द्रव्यकर्म्माणि जीवस्य पुद्गलात्मान्यनेकधा।।११३।।

भावकर्म्माणि चैतन्यविवर्त्तात्मानि भान्ति नुः।
क्रोधादीनि स्ववेद्यानि कथंचिच्चिदभेदतः।।११४।।

तत्स्कन्धराशयः प्रोक्ता भूभृतोऽत्र समाधितः।
जीवाद्विश्लेषणं भेदः सन्तानात्यन्तसंक्षयः।।११५।।

स्वात्मलाभस्ततो मोक्षः कृत्स्नकर्म्मक्षयान्मतः।
निर्ज्जरासंवराभ्यां तु सर्वसद्वादिनामिह।।११६।।

नास्तिकानान्तु नैवास्ति प्रमाणं तन्निराकृतौ।
प्रलापमात्रकं तेषां नावधेयं महात्मनाम्।।११७।।

मार्गोमोक्षस्य वै सम्यग्दर्शनादित्रयात्मकः।
विशेषेण प्रपत्तव्यो नान्यथा तद्विरोधतः।।११८।।

प्रणेता मोक्षमार्गस्याऽवाध्यमानस्य सर्वथा।
साक्षाद्य एव स ज्ञेयो विश्वतत्त्वज्ञताश्रयः।।११९।।

वीतनिःशेषदोषोऽतः प्रवन्द्योऽर्हन् गुणाम्बुधिः।
तद्गुणप्राप्तये सद्भिरिति संक्षेपतोऽन्वयः।।१२०।।

मोहाक्रान्तान्न भवति गुरो मोक्षमार्गप्रणीति-
र्नर्ते तस्याः सकलकलुषध्वंसजा स्वात्मलब्धिः।
तस्मै वन्द्यः परमगुरुरिह क्षीणमोहस्त्वमर्हन्
साक्षात्कुर्वन्नमलकमिवाशेषतत्त्वानि नाथ।।१२१।।

न्यक्षेणाप्तपरीक्षा प्रतिपक्षं क्षपयितुं क्षमा साक्षात्।
प्रेक्षावतामभीक्ष्णं विमोक्षलक्ष्मीः क्षणाय संलक्ष्या।।१२२।।

श्रीमत्तत्वार्थशास्त्राद्भुत्सलिलनिधेरिद्धरत्नोद्भवस्य
प्रोत्थानारम्भकाले सकलमलभिदे शास्त्रकारैः कृतं यत्।
स्तोत्रं तीर्थोपमानं प्रथितपृथुपथं स्वामिमीमांसितं तद्।
विद्यानन्दैः स्वशक्त्या कथमपि कथितं सत्यवाक्यार्थसिद्धये।।१२३।।

इति तत्वार्थशास्त्रादौ मुनीन्द्रस्तोत्रगोचरा।
प्रणीताप्तपरीक्षेयं कुविवादनिवृत्तये।।१२४।।

इत्याप्तपरीक्षा समाप्ता

अन्धे से सूर्य का प्रकाश मत पूछो।
बहरों से गीत की लय ताल मत पूछो।।
कैसे बनती है आत्मा-परमात्मा?
भोगियों से उसकी बात मत पूछो।।

श्रीसमन्तभद्रस्वामिविरचिता

आप्तमीमांसा

देवागमन-भोयान-चामरादि-विभूतयः ।
मायाविष्वपि दृश्यन्ते नातस्त्वमसि नो महान् । ।१ । ।

अध्यात्मं बहिरप्येष विग्रहादिमहोदयः ।
दिव्यः सत्यो दिवौकस्स्वप्यस्ति रागादिमत्सु सः । ।२ । ।

तीर्थकृत्समयानां च परस्परविरोधतः ।
सर्वेषामाप्तता नास्ति कश्चिदेव भवेद् गुरुः । ।३ । ।

दोषावरणयोर्हानिर्निःशेषाऽस्त्यतिशायनात् ।
क्वचिद्यथा स्वहेतुभ्यो बहिरन्तर्मलक्षयः । ।४ । ।

सूक्ष्मान्तरितदूरार्थः प्रत्यक्षाः कस्य चिद्यथा ।
अनुमेयत्वतोऽग्न्यादिरिति सर्वज्ञसंस्थितिः । ।५ । ।

स त्वमेवासि निर्दोषो युक्तिशास्त्राऽविरोधिवाक् ।
अविरोधो यदिष्टं ते प्रसिद्धेन न बाध्यते । ।६ । ।

त्वन्मतामृतबाह्यानां सर्वथैकान्तवादिनाम् ।
आप्ताभिमानदग्धानां स्वेष्टं दृष्टेन बाध्यते । ।७ । ।

कुशलाकुशलं कर्म परलोकश्च न क्वचित् ।
एकान्तग्रहरक्तेषु नाथ! स्वपरवैरिषु । ।८ । ।

भावैकान्ते पदार्थानामभावनामपह्नवात् ।
सर्वात्मकमनाद्यन्तमस्वरूपमतावकम् । ।९ । ।

कार्यद्रव्यमनादि स्यात्प्रागभावस्य निह्नवे ।
प्रध्वंसस्य च धर्मस्य प्रच्यवेऽनन्ततां व्रजेत् । ।१० । ।

सर्वात्मकं तदेकं स्यादन्यापोहव्यतिक्रमे ।
अन्यत्र समवायेन व्यपदिश्येत सर्वथा । ।११ । ।

अभावैकान्तपक्षेऽपि भावापह्नववादिनाम्।
बोधवाक्यं प्रमाणं न केन साधनदूषणम्।।१२।।

विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम्।
अवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नाऽवाच्यमिति युज्यते।।१३।।

कथञ्चित्ते सदेवेष्टं कथञ्चिदसदेव तत्।
तथोभयमवाच्यं च नययोगान्न सर्वथा।।१४।।

सदेव सर्वं को नेच्छेत् स्वरूपादिचतुष्टयात्।
असदेव विपर्यासान्न चेन्न व्यतिष्ठते।।१५।।

क्रमार्पितद्वयाद् द्वैतं सहावाच्यमशक्तितः।
अवक्तव्योत्तराः शेषास्त्रयो भङ्गाः स्वहेतुतः।।१६।।

अस्तित्वं प्रतिषेध्येनाऽविनाभाव्येकधर्मिणि।
विशेषणत्वात्साधर्म्यं यथा भेदविवक्षया।।१७।।

नास्तित्वं प्रतिषेध्येनाऽविनाभाव्येकधर्मिणि।
विशेषणत्वाद्वैधर्म्यं यथाऽभेदविवक्षया।।१८।।

विधेयप्रतिषेध्यात्मा विशेष्यः शब्दगोचरः।
साध्यधर्मो यथा हेतुरहेतुश्चाप्यपेक्षया।।१९।।

शेषभङ्गाश्च नेतव्या यथोक्तनययोगतः।
न च कश्चिद्विरोधोऽस्ति मुनीन्द्र तव शासने।।२०।।

एवं विधिनिषेधाभ्यामनवस्थितमर्थकृत्।
नेति चेन्न यथाकार्यं बहिरन्तरुपाधिभिः।।२१।।

धर्मे धर्मेऽन्य एवार्थो धर्मिणोऽनन्तधर्मणः।
अङ्गित्वेऽन्यतमान्तस्य शेषान्तानां तदङ्गता।।२२।।

एकानेकविकल्पादावुतरत्राऽपि योजयेत्।
प्रक्रियां भङ्गिनीमेनां नयैर्नयविशारदः।।२३।।

अद्वैतैकान्तपक्षेऽपि दृष्टो भेदो विरुध्यते।
कारकाणां क्रियायाश्च नैकं स्वस्माट्प्रजायते।।२४।।

कर्मद्वैतं फलद्वैतं लोकद्वैतं च नो भवेत्।
विद्याऽविद्याद्वयं न स्यात् बन्धमोक्षद्वयं तथा।।२५।।

हेतोरद्वैतसिद्धिश्चेद् द्वैतं स्याद्धेतु साध्ययोः।
हेतुना चेद्विना सिद्धिर्द्वैतं वाङ्मात्रतो न किम्।।२६।।

अद्वैतं न विना द्वैतादहेतुरिव हेतुना।
सञ्ज्ञिनः प्रतिषेधो न प्रतिषेध्यादृते क्वचित्।२७।।

पृथक्त्वैकान्तपक्षेऽपि पृथक्त्वादपृथक्कृतौ।
पृथक्त्वे न पृथक्त्वं स्यादनेकस्थो ह्यसौ गुणः।।२८।।

सन्तानः समुदायश्च साधर्म्यं च निरङ्कुशः।
प्रेत्यभावश्च तत्सर्वं न स्यादेकत्वनिह्नवे।।२९।।

सदात्मना च भिन्नं चेत् ज्ञानं ज्ञेयाद् द्विधाऽप्यसत्।
ज्ञानाभावे कथं ज्ञेयं बहिरन्तश्च ते द्विषाम्।।३०।।

सामान्यार्था गिरोऽन्येषां विशेषो नाभिलप्यते।
सामान्याभावतस्तेषां मृषैव सकला गिरः।।३१।।

विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम्।
अवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते।।३२।।

अनपेक्षे पृथक्त्वैक्ये ह्यवस्तुद्वयहेतुतः।
तदैक्यं पृथक्त्वं च स्वभेदैः साधनं यथा।।३३।।

सत्सामान्यात्तु सर्वैक्यं पृथक् द्रव्यादिभेदतः।
भेदाभेदविवक्षायामसाधारणहेतुवत्।।३४।।

विवक्षा चाऽविवक्षा च विशेष्येऽनन्तधर्मिणि।
सतो विशेषणस्यात्र नासतस्तैस्तदर्थिभिः।।३५।।

प्रमाणगोचरौ सन्तौ भेदाभेदौ न संवृती।
तावेकत्राविरुद्धौ ते गुणमुख्यविवक्षया।।३६।।

नित्यत्वैकान्तपक्षेऽपि विक्रिया नोपपद्यते।
प्रागेव कारकाभावः क्व प्रमाणं तत्फलम्।।३७।।

प्रमाणकारकैर्व्यक्तं व्यक्तं चेदिन्द्रियार्थवत्।
ते च नित्ये विकार्यं किं साधोस्ते शासनाद्बहिः।।३८।।

यदि सत्सर्वथा कार्यं पुंवन्नोत्पत्तुमर्हति।
परिणामप्रक्लृप्तिश्च नित्यत्वैकान्तबाधिनी।।३९।।

पुण्यपापक्रिया न स्यात् प्रेत्यभावः फलं कुतः।
बन्धमोक्षौ च तेषां न येषां त्वं नासि नायकः।।४०।।

क्षणिकैकान्तपक्षेऽपि प्रेत्यभावाद्यसम्भवः।
प्रत्यभिज्ञाद्यभावान्न कार्यारम्भः कुतः फलम्।।४१।।

यद्यसत्सर्वथा कार्यं तन्माजनि खपुष्पवत्।
मोपादाननियामोभून्माऽऽश्वासः कार्यजन्मनि।।४२।।

न हेतुफलभावादिरन्यभावादनन्वयात्।
सन्तानान्तरवन्नैकः सन्तानस्तद्वतः पृथक्।।४३।।

अन्येष्वनन्यशब्दोऽयं संवृतिर्न मृषा कथम्।
मुख्यार्थः संवृतिर्नास्ति विना मुख्यान्न संवृत्तिः।।४४।।

चतुष्कोटेर्विकल्पस्य सर्वान्तेषूक्तयोगतः।
तत्त्वान्यत्वमवाच्यं च तयोः सन्तानतद्वतोः।।४५।।

अवक्तव्यचतुष्कोटिविकल्पोऽपि न कथ्यताम्।
असर्वान्तमवस्तु स्यादविशेष्यविशेषणम्।।४६।।

द्रव्याद्यन्तरभावेन निषेधः सञ्ज्ञिनः सतः।
असद्भेदो न भावस्तु स्थानं विधिनिषेधयोः।।४७।।

अवस्त्वनभिलाप्यं स्यात् सर्वान्तैः परिवर्जितम्।
वस्त्वेवावस्तुतां याति प्रक्रियाया विपर्ययात्।।४८।।

सर्वान्ताश्चेदवक्तव्यास्तेषां किं वचनं पुनः।
संवृतिश्चेन्मृषैवैषा परमार्थविपर्ययात्।।४९।।

अशक्यत्वादवाच्यं किमभावात्किमबोधतः।
आद्यन्तोक्तिद्वयं न स्यात् किं व्याजेनोच्यतां स्फुटम्।।५०।।

हिनस्त्यनभिसन्धातृ न हिनस्त्यभिसन्धिमत्।
बद्ध्यते तद्द्व्यापेतं चित्तं बद्धं न मुच्यते।।५१।।

अहेतुकत्वान्नाशस्य हिंसाहेतुर्न हिंसकः।
चित्तसन्ततिनाशश्च मोक्षो नाष्टाङ्गहेतुकः।।५२।।

विरूपकार्यारम्भाय यदि हेतुसमागमः।
आश्रयिभ्यामनन्योऽसावविशेषादयुक्तवत्।।५३।।

स्कन्धाः सन्ततयश्चैव संवृतित्वादसंस्कृताः।
स्थित्युत्पत्तिव्ययास्तेषां न स्युः खरविषाणवत्।।५४।।

विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम्।
अवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते।।५५।।

नित्यं तत् प्रत्यभिज्ञानान्नाकस्मात्तदविच्छिदा।
क्षणिकं कालभेदात्ते बुद्ध्यसञ्चरदोषतः।।५६।।

न सामान्यात्मनोदेति न व्येति व्यक्तमन्वयात्।
व्येत्युदेति विशेषात्ते सहैकत्रोदयादि सत्।।५७।।

कार्योत्पादः क्षयो हेतोर्नियमाल्लक्षणात्पृथक्।
न तौ जात्याद्यवस्थानादनपेक्षाः खपुष्पवत्।।५८।।

घटमौलिसुवर्णार्थी नाशोत्पादस्थितिष्वयम्।
शोकप्रमोदमाध्यस्थ्यं जनो याति सहेतुकम्।।५९।।

पयोव्रतो न दध्यत्ति न पयोऽत्ति दधिव्रतः।
अगोरसव्रतो नोभे तस्मात्तत्त्वं त्रयात्मकम्।।६०।।

कार्यकारणनानात्वं गुणगुण्यन्यताऽपि च।
सामान्यतद्वदन्यत्वं चैकान्तेन यदीष्यते।।६१।।

एकस्यानेकवृत्तिर्न भागाभावाद बहूनि वा।
भागित्वाद्वाऽस्य नैकत्वं दोषो वृत्तेरनार्हते।।६२।।

देशकालविशेषेऽपि स्याद् वृत्तिर्युतसिद्धवत्।
समानदेशता न स्यात् मूर्तकारणकार्ययोः।।६३।।

आश्रयाश्रयिभावान्न स्वातन्त्र्यं समवायिनाम्।
इत्ययुक्तः स सम्बन्धो न युक्तः समवायिभिः।।६४।।

सामान्यं समवायश्चाप्येकैकत्र समाप्तितः।
अन्तरेणाश्रयं न स्यान्नाशोत्पादिषु को विधिः।।६५।।

सर्वथाऽनभिसम्बन्धः सामान्यसमवाययोः।
ताभ्यामर्थो न सम्बद्धस्तानि त्रीणि खपुष्पवत्।।६६।।

अनन्यतैकान्तेऽणूनां सङ्घातेऽपि विभागवत्।
असंहतत्वं स्याद्भूतचतुष्कं भ्रान्तिरेव सा।।६७।।

कार्यभ्रान्तेरणुभ्रान्तिः कार्यलिङ्गं हि कारणम्।
उभयाभावतस्तत्स्थं गुणजातीतरच्च न।।६८।।

एकत्वेऽन्यतराभावः शेषाभावोऽविनाभुवः।
द्वित्वसंख्याविरोधश्च संवृत्तिश्चेन्मृषैव सा।।६९।।

विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम्।
अवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते।।७०।।

द्रव्यपर्याययोरैक्यं तयोरव्यतिरेकतः।
परिणामविशेषाच्च शक्तिमच्छक्तिभावतः।।७१।।

संज्ञासंख्याविशेषाच्च स्वलक्षणविशेषतः।
प्रयोजनादिभेदाच्च तन्नानात्वं न सर्वथा।।७२।।

यद्यापेक्षिकसिद्धिः स्यान्न द्वयं व्यवतिष्ठते।
अनापेक्षिकसिद्धौ च न सामान्यविशेषता।।७३।।

विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम्।
अवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते।।७४।।

धर्मधर्म्यविनाभावः सिद्ध्यत्यन्योऽन्यवीक्षया।
न स्वरूपं स्वतो ह्येतत् कारकज्ञापकाङ्गवत्।।७५।।

सिद्धं चेद्धेतुतः सर्वं न प्रत्यक्षादितो गतिः।
सिद्धं चेदागमात्सर्वं विरुद्धार्थमतान्यपि।।७६।।

विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम्।
आवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते।।७७।।

वक्तर्यसनाप्ते यद्धेतोः साध्यं तद्धेतुसाधितम्।
आप्ते वक्तरि तद्वाक्यात् साध्यमागमसाधितम्।।७८।।

अन्तरङ्गार्थतैकान्ते बुद्धिवाक्यं मृषाऽखिलम्।
प्रमाणाभासमेवातस्तत्प्रमाणादृते कथम्।।७९।।

साध्यसाधनविज्ञप्तेर्यदि विज्ञप्तिमात्रता।
न साध्यं न च हेतुश्च प्रतिज्ञाहेतुदोषतः।।८०।।

बहिरङ्गार्थतैकान्ते प्रमाणाभासनिह्नवात्।
सर्वेषां कार्यसिद्धिः स्याद्विरुद्धार्थाभिधायिनाम्।।८१।।

विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम्।
अवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते।।८२।।

भावप्रमेयापेक्षायां प्रमाणाभासनिह्नवः।
बहिः प्रमेयापेक्षायां प्रमाणं तन्निभं च ते।।८३।।

जीवशब्दः सबाह्यार्थः संज्ञात्वाद्धेतुशब्दवत्।
मायादिभ्रान्तिसंज्ञाश्च मायाद्यैः स्वैः प्रमोक्तिवत्।।८४।।

बुद्धिशब्दार्थसंज्ञास्तास्तिस्रो बुद्ध्यादिवाचिकाः।
तुल्या बुद्ध्यादिबोधाश्च त्रयस्तत्प्रतिविम्बकाः।।८५।।

वक्तृश्रोतृप्रमातृणां वाक्यबोधप्रमाः पृथक्।
भ्रान्तावेव प्रमाभ्रान्तौ बाह्यार्थौ तादृशेतरौ।।८६।।

बुद्धिशब्दप्रमाणत्वं वाक्यबोधप्रमाः पृथक्।
सत्यानृतव्यवस्थैवं युज्यतेऽर्थाप्त्यनाप्तिषु।।८७।।

दैवादेवार्थसिद्धिश्चेद्दैवं पौरुषतः कथम्।
दैवतश्चेद्निर्मोक्षः पौरुषं निष्फलं भवेत्।।८८।।

पौरुषादेव सिद्धिश्चेत् पौरुषं दैवतः कथम्।
पौरुषाच्चेद्मोक्षं स्यात् सर्वप्राणिषु पौरुषम्।।८९।।

विरोधान्नौभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम्।
अवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते।।९०।।

अबुद्धिपूर्वापेक्षायामिष्टानिष्टं स्वदैवतः।
बुद्धिपूर्वव्यपेक्षायामिष्टानिष्टं स्वपौरुषात्।।९१।।

पापं ध्रुवं परे दुःखात् पुण्यं च सुखतो यदि।
अचेतनाकषायौ च बध्येयातां निमित्ततः।।९२।।

पुण्यं ध्रुवं स्वतो दुःखात्पापं च सुखतो यदि।
वीतरागो मुनिर्विद्वांस्ताभ्यां युञ्ज्यन्निमित्ततः।।९३।।

विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम्।
अवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते।।९४।।

विशुद्धिसंक्लेशाङ्गं चेत् स्वपरस्थं सुखासुखम्।
पुण्यपापास्रवौ युक्तौ न चेद्व्यर्थस्तवार्हतः।।९५।।

अज्ञानाच्चेद्ध्रुवो बन्धो ज्ञेयानन्त्यान्न केवली।
ज्ञानस्तोकाद्विमोक्षश्चेदज्ञानाद् बहुतोऽन्यथा।।६६।।

विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम्।
अवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते।।६७।।

अज्ञानान्मोहतो बन्धो नाज्ञानाद्वीतमोहतः।
ज्ञानस्तोकाच्च मोक्षः स्यादमोहान्मोहितोऽन्यथा।।६८।।

कामादिप्रभवश्चित्रः कर्मबन्धानुरूपतः।
तच्च कर्म स्वहेतुभ्यो जीवास्ते शुद्ध्यशुद्धितः।।६९।।

शुद्ध्यशुद्धीपुनःशक्ति ते पाक्यापाक्यशक्तिवत्।
साद्यनादी तयोर्व्यक्ती स्वभावोऽतर्कगोचरः।।१००।।

तत्त्वज्ञानं प्रमाणं ते युगपत्सर्वभासनम्।
क्रमभावि च यज्ज्ञान स्याद्वादनयसंस्कृतम्।।१०१।।

उपेक्षा फलमाद्यस्य शेषस्यादानहानधीः।
पूर्वं वाऽज्ञाननाशो वा सर्वस्यास्य स्वगोचरे।।१०२।।

वाक्येष्वनेकान्तद्योती गम्यम्प्रतिविशेषकः।
स्यान्निपातोऽर्थयोगित्वात्तव केवलिनामपि।।१०३।।

स्याद्वादः सर्वथैकान्तत्यागात्किंवृत्त चिद्विधिः।
सप्तभङ्गनयापेक्षो हेयादेयविशेषकः।।१०४।।

स्याद्वादकेवलज्ञाने सर्वतत्त्वप्रकाशने।
भेदः साक्षादसाक्षाच्च ह्यवस्त्वन्यतमं भवेत्।।१०५।।

सधर्मणैव साध्यस्य साधर्म्यादविरोधतः।
स्याद्वादप्रविभक्तार्थविशेषव्यञ्जको नयः।।१०६।।

नयोपनयैकान्तानां त्रिकालानां समुच्चयः।
अविभ्राट् भावसम्बन्धो द्रव्यमेकमनेकधा।।१०७।।

मिथ्यासमूहो मिथ्या चेन्न मिथ्यैकान्ततास्ति नः।
निरपेक्षा नया मिथ्या सापेक्षा वस्तु तेऽर्थकृत।।१०८।।

नियम्यतेऽर्थो वाक्येन विधिना वारणेन वा।
तथाऽन्यथा च सोऽवश्यमविशेष्यत्वमन्यथा।।१०९।।

तदतद्वस्तु वागेषा तदेवेत्यनुशासति।
न सत्या स्यान्मृषावाक्यैः कथं तत्त्वार्थदेशना।।११०।।

वाक्स्वभावोऽन्यवागर्थप्रतिषेधनिरङ्कुशः।
आह च स्वार्थसामान्यं तादृग्वाच्यं खपुष्पवत्।।१११।।

सामान्यवाग्विशेषे चेन्न शब्दार्थो मृषा हि सा।
अभिप्रेतविशेषाप्तेः स्यात्कारः सत्यलाञ्छनः।।११२।।

विधेयमीप्सितार्थाङ्गं प्रतिषेध्याविरोधि यत्।
तथैवादेयहेयत्वमिति स्याद्वादसंस्थितिः।।११३।।

इतीयमाप्तमीमांसा विहिता हितमिच्छता।
सम्यङ्-मिथ्योपदेशार्थविशेषप्रतिपत्तये।।११४।।

जयति जगति क्लेशावेशप्रपञ्च हिमांशुमान्
विहतविषमैकान्तध्वान्तप्रमाणनयांशुमान्।
यतिपतिरजो यस्याधृष्टान्मताम्बुनिधेर्लवान्।
स्वमतमतयस्तीर्थ्या नाना परे समुपासते।।११५।।

इति श्री आप्तमीमांसा समाप्ता।।

अथ समन्तभद्र स्वामिविरचितं

युक्त्यनुशासनम्

कीर्त्या महत्या भुवि वर्द्धमानं त्वां वर्द्धमानं स्तुतिगोचरत्वम् ।
निनीषवः स्मो वयमद्य वीरं विशीर्णदोषाशयपाशबन्धम् ।।१।।

याथात्म्यमुल्लंङ्घ्य गुणोदयाख्या लोके स्तुतिर्भूरिगुणोदधेस्ते ।
अणिष्ठमप्यंशमशक्नुवन्तो वक्तुं जिन त्वां किमिव स्तुयाम ।।२।।

तथापि वैयात्यमुपेत्य भक्त्या स्तोताऽस्मि ते शक्त्यनुरूपवाक्यः ।
इष्टे प्रमेयेऽपि यथास्वशक्ति किन्नोत्सहन्ते पुरुषाः क्रियाभिः ।।३।।

त्वं शुद्धि शक्त्योरुदयस्य काष्ठां तुलाव्यतीतां जिन शान्तिरूपाम् ।
अवापिथ ब्रह्मपथस्य नेता महानितीयत्प्रतिवक्तुमीशाः ।।४।।

कालः कलिर्वा कलुषाशयो वा श्रोतुः प्रवक्तुर्वचनानयो वा ।
त्वच्छासनैकाधिपतित्वलक्ष्मीप्रभुत्वशक्तेरपवादहेतुः ।।५।।

दयादमत्यागसमाधिनिष्ठं नयप्रमाणप्रकृताञ्जसार्थम् ।
अधृष्यमन्यैरखिलैः प्रावादैर्जिन त्वदीयं मतमद्वितीयम् ।।६।।

अभेदभेदात्मकमर्थतत्त्वं तव स्वतन्त्रान्यतरत् खपुष्पम् ।
अवृत्तिमत्त्वात्समवायवृत्तैः संसर्गहानेः सकलार्थहानिः ।।७।।

भावेषु नित्येषु विकारहानेर्न कारकव्यापृतकार्ययुक्तिः ।
न बन्धभोगौ न च तद्विमोक्षः समन्तदोषं मतमन्यदीयम् ।।८।।

अहेतुकत्वं प्रथितः स्वभावस्तस्मिन् क्रियाकारकविभ्रमः स्यात् ।
आवालसिद्धेर्विविधार्थसिद्धिर्वादान्तरं किं तदसूयतां ते ।।९।।

येषामवक्तव्यमिहात्मतत्त्वं देहादनन्यत्वपृथक्त्वक्लृप्तेः ।
तेषां ज्ञतत्त्वेऽनवधार्यतत्त्वे का बन्धमोक्षस्थितिरप्रमेये ।।१०।।

हेतुर्न दृष्टोऽत्रन वाऽप्यदृष्टो योऽयं प्रवादः क्षणिकात्मवादः ।
न ध्वस्तमन्यत्र भवेद्द्वितीये संतानभित्रे नहि वासनाऽस्ति ।।११।।

तथा न तत्कारणकार्यभावा निरन्वयाः केन समानरूपाः ।
असत् खपुष्पं नहि हेत्वपेक्षं दृष्टं न सिद्ध्यत्युभयोरसिद्धम् । ।१२ । ।

नैवास्ति हेतुः क्षणिकात्मवादे न सन्नसन्वा विभवादकस्मात् ।
नाशोदयैकक्षणता च दुष्टा सन्तानभिन्नक्षणयोरभावात् । ।१३ । ।

कृत प्रणाशाकृतकर्मभोगौ स्यातामसंचेतितकर्म च स्यात् ।
आकस्मिकेऽर्थे प्रलयस्वभावो मार्गो न युक्तो वधकश्च न स्यात् । ।१४ । ।

न बन्धमोक्षै क्षणिकैकसंस्थौ न संवृतिः साऽपि मृषास्वभावा ।
मुख्यादृते गौणविधिर्नदृष्टो विभ्रान्तदृष्टिस्तवः दृष्टितोऽन्या । ।१५ । ।

प्रतिक्षणं भङ्गिषु तत्पृथक्त्वान्न मातृघाती स्वपतिः स्वजाया ।
दत्तग्रहो नाधिगतस्मृतिर्न न क्त्वार्थसत्यं न कुलं न जातिः । ।१६ । ।

न शास्तृशिष्यादिविधिव्यवस्था विकल्पबुद्धिर्वितथाऽखिलाचेत् ।
अतत्त्वतत्त्वादिविकल्पमोहे निमज्जतां वीतविकल्पधीः का । ।१७ । ।

अनर्थिका साधनसाध्यधीश्चेद्विज्ञानमात्रस्य न हेतुसिद्धिः ।
अथार्थवत्त्वं व्यभिचारदोषो न योगिगम्यं परवादि सिद्धम् । ।१८ । ।

तत्वं विशुद्धं सकलैर्विकल्पैर्विश्वाभिलाषास्पदतामतीतम् ।
न स्वस्य वेद्यं न च तन्निगद्यं सुषुप्त्यवस्थं भवदुक्तिबाह्यम् । ।१९ । ।

मूकात्म संवेद्यवयात्मवेद्यं तन्म्लिष्टभाषाप्रतिमप्रलापम् ।
अनङ्गसंज्ञं तदवेद्यमन्यैः स्यात्त्वद्-द्विषां वाच्यमवाच्यतत्त्वम् । ।२० । ।

अशासदज्जांसि वचांसि शास्ता शिष्याश्च शिष्टा वचनैर्नतेतैः ।
अहो इदं दुर्गतमं तमोऽन्यत् त्वया विना श्रायसमार्य किंतत् । ।२१ । ।

प्रत्यक्षबुद्धिः क्रमते न यत्र तल्लिङ्गगम्यं न तदर्थलिंगम् ।
वाचो न वा तद्विषयेण योगः का तद्गतिः कृष्टमशृण्वतां ते । ।२२ । ।

रागाद्यविद्याऽनलदीपनं च विमोक्षविद्यामृतशासनं च ।
न भिद्यते संवृतिवादिवाक्यं भवत्प्रतीपं परमार्थशून्यम् । ।२३ । ।

विद्याप्रसूत्यै किल शील्यमाना भवत्यविद्या गुरुणोपदिष्टा।
अहो त्वदीयोत्तयनभिज्ञमोहो यज्जन्मने यत्तदजन्मने तत्। ।२४।।

अभावमात्रं परमार्थवृत्तेः सा संवृत्तिः सर्वविशेषशून्या।
तस्या विशेषौ किल बन्धमोक्षोहेत्वात्मनेति त्वदनाथवाक्यं। ।२५।।

व्यतीतसामान्यविशेषभावाद्विश्वाभिलापार्थविकल्पशून्यम्।
खपुष्पवत् स्यादसदेव तत्त्वं प्रबुद्धतत्त्वाद्भवतः परेषाम्। ।२६।।

अतत्स्वभावेऽप्यनयोरुपायाद् गतिर्भवेत्तौ वचनीयगम्यौ।
सम्बन्धिनौ चेन्न विरोधि दृष्टं वाच्यं यथार्थं न च दूषणं तत्। ।२७।।

उपेयतत्त्वानभिलाप्य तावदुपायतत्त्वानभिलाप्यता स्यात्।
अशेषतत्त्वानभिलाप्यतायां द्विषां भवद्युक्त्यभिलाप्यतायाः। ।२८।।

अवाच्यमित्यत्र च वाच्यभावादवाच्यमेवेत्यययाप्रतिज्ञम्।
स्वरूपतश्चेत्पररूपवाचि स्वरूपवाचीति वचो विरुद्धम्। ।२९।।

सत्यानृतं वाप्यनृतानृतं वाप्यस्तीह किं वस्त्वतिशायनेन।
युक्तां प्रतिद्वंद्व्यनुवन्धिमिश्रं न वस्तु तादृक्त्वदृते जिनेदृक्। ।३०।।

सहक्रमाद्वा विषयाल्पभूरिभेदेऽनृतं भेदि न चात्मभेदात्।
आत्मान्तरं स्याद्विदुरं समं च स्याच्चानृतात्मानभिलाप्यतां च। ।३१।।

न सच्च नासच्च न दृष्टमेकमात्मान्तरं सर्वनिषेधगम्यम्।।
दृष्टं विमिश्रं तदुपाधिभेदात् स्वप्नेऽपि नैतत्त्वदृषेः परेषाम्। ।३२।।

प्रत्यक्षनिर्देशवदप्यसिद्धमकल्पकं ज्ञापयितुं ह्यशक्यम्।
दिना च सिद्धेर्न्नच लक्ष्णार्योन तावकद्वेषिणि वीर सत्यम्। ।३३।।

कालान्तरस्थे क्षणिके ध्रुवे वाऽप्रथक्पृथक्त्वावचनीयतायां।
विकारहानेर्न च कर्तृकार्ये वृथा श्रमोऽयं जिन विद्विषां ते। ।३४।।

मद्याङ्गवद्भूतसमागमे ज्ञः शक्त्यन्तरव्यक्तिरदैवसृष्टिः।
इत्यात्मशिश्नोदरपुष्टितुष्टैर्निर्ह्रीभयैर्हा मृदवः प्रलब्धाः। ।३५।।

दृष्टेऽविशिष्टे जननादिहेतौ विशिष्टता का प्रतिसत्वमेषाम्।
स्वभावतः किं न परस्य सिद्धिरतावकानामपि हा प्रपातः।।३६।।

स्वच्छन्दवृत्तेर्जगतः स्वभावादुच्चैरनाचारपथेष्वदोषम्।
निर्घुष्य दीक्षासममुक्तिमानास्त्वद्दृष्टिबाह्य वत विभ्रमन्ति।।३७।।

प्रवृत्तिरक्तैः शमतुष्टिरिक्तैरुपेत्य हिंसाऽभ्युदयाङ्गनिष्ठा।
प्रवृत्तितः शान्तिरपि प्ररूढं तमः परेषां तव सुप्रभातम्।।३८।।

शीर्षोपहारादिभिरात्मदुःखैर्देवान्किलाराध्य सुखाभिगृद्धाः।
सिद्ध्यन्ति दोषापचयानपेक्षा युक्तं च तेषां त्वमृषिर्न येषाम्।।३९।।

स्तोत्रे युक्त्यनुशासने जिनपतेर्वीरस्य निःशेषतः
संप्राप्तस्य विशुद्धिशक्तिपदवीं काष्ठां परामाश्रितम्।
निर्णीतं मतमद्वितीयममलं संक्षेपतोऽपाकृतं
तद्बाह्यं वितथं मतं च सकलं सद्धीधनैर्बुध्यताम्।।४०।।

सामान्यनिष्ठा विविधा विशेषा पदं विशेषान्तरपक्षपाति।
अन्तर्विशेषान्तरवृत्तितोऽन्यत् सामान्यभावं नयते विशेषम्।।४१।।

यदेवकारोपहितं पदं तदस्वार्थतः स्वार्थमवच्छिनत्ति।
पर्यायसामान्यविशेषसर्वं पदार्थहानिश्च विरोधिवत्स्यात्।।४२।।

अनुक्तुल्यं यदनेवकारं व्यावृत्त्यभावान्नियमद्वयेऽपि।
पर्यायभावेऽन्यतराप्रयोगस्तत्सर्वमन्यच्युतमात्महीनम्।।४३।।

विरोधि चाऽभेद्यविशेषभावात् तद्द्योतनः स्याद्गुणतो निपातः।
विपाद्यसन्धिश्च तथाङ्गभावात् अवाच्यताश्रायसलोपहेतुः।।४४।।

तथा प्रतिज्ञाशयतो प्रयोगः सामर्थ्यतो वा प्रतिषेधयुक्तिः।
इति त्वदीया जिन नागदृष्टिः पराप्रधृष्या परधर्षिणी च।।४५।।

विधिर्निषेधोऽनभिलाप्यता च त्रिरेकशस्त्रिद्विश एक एव।
त्रयो विकल्पास्तव सप्तधामी स्याच्छब्दनेयाः सकलेऽर्थभेदे।।४६।।

स्यादित्यपि स्याद्गुणमुख्यकल्पैकान्तो यथोपाधिविशेषवीक्ष्यः।
तत्त्वं त्वनेकान्तमशेषरूपं द्विधाभवार्थं व्यवहारवत्त्वात्।।४७।।

न द्रव्यपर्य्यायपृथग्व्यवस्था द्वैयात्म्यमेकार्पणया विरुद्धम्।
धर्मश्च धर्मी च मिथस्त्रिधेमौ न सर्वथा तेऽभिमतौ विरुद्धौ।।४८।।

दृष्टागमाभ्यामविरुद्धमर्थप्ररूपणं युक्त्यनुशासनं ते।
प्रतिक्षणं स्थित्युदयव्ययात्मतत्त्वव्यवस्थं सदिहार्थरूपम्।।४९।।

नानात्मताम प्रजहत्तदेकमेकात्मतामप्रजहच्च नाना।
अङ्गाङ्गिभावात्तव वस्तु तद्यत् क्रमेण वाग्वाच्यमनन्तरूपम्।।५०।।

मिथोऽनपेक्षाः पुरुषार्थहेतुर्नांशा न चांशी पृथगस्ति तेभ्यः।
परस्परेक्षाः पुरुषार्थहेतुर्दृष्टा नयास्तद्वदसि क्रियायां।।५१।।

एकान्तधर्माभिनिवेशमूला रागादयोऽहंकृतिजा जनानाम्।
एकान्तहानाच्च स यत्तदेव स्वाभाविकत्वाच्च समं मनस्ते।।५२।।

प्रमुच्यते च प्रतिपक्षदूषी जिन त्वदीयैः पटुसिंहनादैः।
एकस्य नानात्मतयाऽज्ञवृत्तेस्तौ बन्धमोक्षौ स्वमताद्बाह्यौ।।५३।।

आत्मान्तराभावसमानता न वागास्पदं स्वाश्रयभेदहीना।
भावस्य सामान्यविशेषवत्त्वादैक्ये तयोरन्यतरन्निरात्म।।५४।।

अमेयमाश्लिष्टममेयमेव भेदेऽपि तदृत्त्यपवृत्तिभावात्।
वृत्तिश्च कृत्स्नांशविकल्पतो न मानं च नानन्तसमाश्रयस्य।।५५।।

नानासदेकात्मसमाश्रयं चेदन्यत्वमद्विष्टमनात्मनोः क्व।
विकल्पशून्यत्वमवस्तुनश्चेत्तस्मिन्नमेये क्व खलु प्रमाणम्।।५६।।

व्यावृत्तिहीनान्वयतो न सिद्ध्येत् विपर्ययेऽप्यद्वितयेऽपि साध्यम्।
अतद्व्युदासाभिनिवेशवादः पुराभ्युपेतार्थविरोधवादः।।५७।।

अनात्मनानात्मगतेरयुक्तिर्वस्तुन्ययुक्तेर्यदि पक्षसिद्धिः।
अवस्तुयुक्तेः प्रतिपक्षसिद्धिर्न च स्वयं साधनरिक्तसिद्धिः।।५८।।

निशापितस्तैः परशुः परघ्नः स्वमूर्ध्नि निर्भेदभयानभिज्ञैः।
वैतण्डिकैर्यैः कुसृतिः प्रणीता मुने भवच्छासनदृक्प्रमूढैः।।५९।।

भवत्यभावोऽपि च वस्तुधर्मो भावान्तरं भाववदर्हतस्ते।
प्रमीयते च व्यपदिश्यते च वस्तु व्यवस्थाङ्गममेयमन्यत्।।६०।।

विशेषसामान्यविषक्तभेदविधिव्यवच्छेदविधायि वाक्यम्।
अभेदबुद्धेरविशिष्टता स्याद्व्यावृत्तिबुद्धेश्च विशिष्टता ते।।६१।।

सर्वान्तवत्तद्गुणमुख्यकल्पं सर्वान्तशून्यं च मिथोऽनपेक्षम्।
सर्वापदामन्तकरं निरन्तं सर्वोदयं तीथमिदं तवैव।।६२।।

कामं द्विषन्नप्युपपत्तिचक्षुः समीक्षतां ते समदृष्टिरिष्टम्।
त्वयि ध्रुवं खण्डितमानशृङ्गो भवत्यभद्रोऽपि समन्तभद्रः।।६३।।

न रागान्नः स्तोत्रं भवति भवपाशच्छिदि मुनौ
न चान्येषु द्वेषादपगुणकथाभ्यासखलता।
किमु न्यायान्यायप्रकृतगुणदोषज्ञमनसां
हितान्वेषोपायस्तव गुणकथासङ्गगदितः।।६४।।

इति स्तुत्यः स्तुत्यैस्त्रिदशमुनिमुख्यैः प्रणिहितैः
स्तुतः शक्त्या श्रेयः पदमधिगतस्तं जिन मया।
महावीरो वीरो दुरितपरसेनाभिविजये
विधेया मे भक्तिः पथि भवता एवाप्रतिनिधौः।।६५।।

स्थेयाज्जातजयध्वजाप्रतिनिधिः प्रोद्भूतभूरिप्रभुः
प्रध्वस्ताखिलदुर्नयद्विषदिभः सन्नीतिसामर्थ्यतः।
सन्मार्गस्त्रिविधः कुमार्गमथनोऽर्हन्वीरनाथः श्रिये
शश्वत्संस्तुतिगोचरोऽनघाधियां श्रीसत्यवाक्याधिपः।।१।।

श्रीमद्वीरजिनेश्वरामलगुणस्तोत्रं परीक्षेक्षणैः
साक्षात्स्वामिसमन्तभद्रगुरुभिस्तत्वँ समीक्ष्याखिलं।
प्रोक्तँ युक्त्यनुशासनं विजयिभिः स्याद्वादमार्गानुगै-
र्विद्यानन्दबुधैरलंकृतमिदं श्रीसत्यवाक्याधिपैः।।२।।

इति श्रीसमन्तभद्रस्वामीविरचितं युक्त्यनुशासनं समाप्तम्।

नयविवरणम्

सूत्रे नामादिनिक्षिप्ततत्त्वार्थाधिगमः स्थितः।
कात्स्न्र्यतो देशतो वापि सप्रमाणनयैरिह।।१।।

प्रमाणं च नयाश्चेति द्वन्द्वे पूर्वनिपातनम्।
कृतं प्रमाणशब्दस्याभ्यर्हितत्वेन बह्वचः।।२।।

प्रमाणं सकलादेशि नयादभ्यर्हितं मतम्।
विकलादेशिनस्तस्य वाचकोऽपि तथोच्यते।।३।।

स्वार्थनिश्चायकत्वेन प्रमाणं नय इत्यसत्।
स्वार्थैकदेशनिर्णीतिलक्षणो हि नयः स्मृतः।।४।।

स्वार्थांशस्यापि वस्तुत्वे तत्परिच्छेदको नयः।
प्रमाणमन्यथा मिथ्याज्ञानं प्राप्तः स इत्यसत्।।५।।

नायं वस्तु न चावस्तु वस्त्वंशः कथ्यते यतः।
नासमुद्रः समुद्रो वा समुद्रांशो यथोच्यते।।६।।

तन्मात्रस्य समुद्रत्वे शेषांशस्यासमुद्रता।
समुद्रबहुता वा स्यात्तत्वे क्वास्तु समुद्रवित्।।७।।

तत्रांशिन्यपि निःशेषधर्माणां गुणता गतौ।
द्रव्यार्थिकनयस्यैव व्यापारान्मुख्यरूपतः।।८।।

धर्मिधर्मसमूहस्य प्राधान्यार्पणया विदः।
प्रमाणत्वेन निर्णीतेः प्रमाणादपरो नयः।।९।।

नाप्रमाणं प्रमाणं वा नयो ज्ञानात्मको मतः।
स्यात्प्रमाणैकदेशस्तु सर्वथाप्यविरोधतः।।१०।।

प्रमाणेन गृहीतस्य वस्तुनोंऽशेऽविजानतः।
संप्रत्ययनिमित्तत्त्वात्प्रमाणाच्चेन्नयोर्जि (चि) तः।।११।।

नाशेषवस्तुनिर्णीतेः प्रमाणादेव कस्यचित्।
तादृक्सामर्थ्यशून्यत्वात्सन्नयस्यास्ति सर्वथा।।१२।।

मतेरवधितो वापि मनःपर्ययतोऽपि वा।
ज्ञातस्यार्थस्य नांशेऽस्ति नयानां वर्त्तनं ननु।।१३।।

निःशेषदेशकालार्था गोचरत्वविनिश्चयात्।
तस्येति भाषितं कैश्चिद्युक्तमेव तथेष्टितः।।१४।।

त्रिकालगोचराशेषपदार्थांशेषु वृत्तितः।
केवलज्ञानमूलत्वमपि तेषां न युज्यते।।१५।।

परोक्षपरतावृत्तेः स्पष्टत्वात्केवलस्य तु।
श्रुतमूला नयाः सिद्धाः वक्ष्यमाणाः प्रमाणवत्।।१६।।

निर्दिश्याधिगमोपायं प्रमाणमधुना नयान्।
व्याख्यातुं नैगमेत्यादि प्राह संक्षेपतोऽखिलान्।।१७।।

सामान्यादेशतस्तावदेक एव नयः स्थितः।
स्याद्वादप्रविभक्तार्थविशेषव्यञ्जकात्मकः।।१८।।

संक्षेपाद् द्वौ विशेषेण द्रव्यपर्यायगोचरौ।
द्रव्यार्थो व्यवहारान्तः पर्यायार्थस्ततोऽपरः।।१९।।

विस्तरेण तु सप्तैते विज्ञेया नैगमादयः।
तथातिविस्तरेणैतद्भेदाः संख्यातविग्रहाः।।२०।।

नयो नयौ नयाश्चेति वाक्यभेदेन योजिताः।
नैगमादय इत्येवं सर्वसंख्याभिसूचनात्।।२१।।

निरुक्त्या लक्षणं लक्ष्यं तत्सामान्यविशेषतः।
नीयते गम्यते येन श्रुतार्थांशः स नो नयः।।२२।।

तदंशौ द्रव्यपर्यायलक्षणौ सव्यपेक्षणौ।
नीयते तुर्यकाभ्यां तु तौ नयाविति निश्चितौ।।२३।।

गुणः पर्यय एवात्र सहभावी विभावितः।
इति तद्गोचरो नान्यस्तृतीयोऽस्ति गुणार्थकः।।२४।।

प्रमाणगोचरार्थांशा नीयन्ते यैरनेकधा।
ते नया इति विख्याता ज्ञाता मूलनयद्वयात्।।२५।।

द्रव्यपर्यायसामान्यविशेषपरिबोधकाः।
न मूलं नैगमादीनां नयाश्चत्वार एव तु।।२६।।

सामान्यस्य पृथक्त्वेन द्रव्यादनुपपत्तितः।
सादृश्यपरिणामस्य तथा वयञ्जनपर्ययात्।।२७।।

वैसादृश्यविवर्त्तस्य विशेषस्य च पर्यये।
अन्तर्भावाद्विभाव्येते द्वौ तन्मूलनयाविति।।२८।।

नामादयोऽपि चत्वारस्तन्मूलं नेत्यतो गतम्।
द्रव्यक्षेत्रादयस्तेषां द्रव्यपर्यायगत्वतः।।२९।।

भवान्विता न पञ्चैते स्कन्धा वा परिकीर्तिताः।
रूपादयो त एवेह तेऽपि हि द्रव्यपर्ययौ।।३०।।

तथा द्रव्यगुणादीनां षोढात्वं न व्यवस्थितम्।
षट् स्युर्मूलनया येन द्रव्यपर्यायगा हि ते।।३१।।

ये प्रमाणादयो भावाः प्रधानादय एव वा।
ते नैगमादिभेदानामर्थानां परनीतयः।।३२।।

तत्र संकल्पमात्रस्य ग्राहको नैगमो नयः।
सोपाधिरित्यशुद्धस्य द्रव्यार्थस्याभिधानतः।।३३।।

संकल्पो नैगमस्तत्र भवोऽयं तत्प्रयोजनः।
यथा प्रस्थादिसंकल्पस्तदभिप्राय इष्यते।।३४।।

नन्वयं भाविनीं संज्ञां समाश्रित्योपचर्य्यते।
अप्रस्थादिषु तद्भावस्तन्ह्लेष्वोदनादिवत्।।३५।।

इत्यसद् बहिरर्थेषु तथानध्यवसानतः।
स्ववेद्यमानसंकल्पे सत्येवास्य प्रवृत्तितः।।३६।।

यद्वा नैकं गमो योऽत्र स सतां नैगमो मतः।
धर्मयोर्धर्मिणोर्वापि विवक्षा धर्मधर्मिणोः।।३७।।

प्रमाणात्मक एवायमुभयग्राहकत्वतः।
इत्ययुक्तमिह ज्ञप्तेः प्रधानगुणभावतः।।३८।।

प्राधान्येनोभयात्मानमर्थे गृह्णद्धि वेदनम्।
प्रमाणं नान्यदित्येतत्प्रपञ्चेन निवेदितम्।।३९।।

संग्रहे व्यवहारे वा नान्तर्भावनमीक्ष्यते।
नैगमस्य तयोरेकवस्त्वंशप्रवणत्वतः।।४०।।

नर्जुसूत्रादिषु प्रोक्तहेतोरेवेति षण्णयाः।
संग्रहादय एवेह न वाच्याः प्रपरीक्षकैः।।४१।।

सप्तैवैते तु युज्यन्ते नैगमस्य नयत्वतः।
तस्य त्रिभेदताख्यानात्कैश्चिदुक्ता नया नव।।४२।।

तत्र पर्यायगस्त्रेधा नैगमो द्रव्यगो द्विधा।
द्रव्यपर्य्यायगः प्रोक्तश्चतुर्भेदो ध्रुवं बुधैः।।४३।।

अर्थपर्याययोस्तावद् गुणमुख्यस्वभावतः।
क्वचिद्वस्तुन्यभिप्रायः प्रतिपत्तुः प्रजायते।।४४।।

यथा प्रतिक्षणध्वंसिसुखसंविच्छरीरिणि।
इति सत्तार्थपर्यायो विशेषणतया गुणाः।।४५।।

संवेदनार्थपर्यायो विशेष्यत्वेन मुख्यताम्।
प्रतिगच्छन्नभिप्रेतो नान्यथैवं वचो गतिः।।४६।।

सर्वथा सुखसंवित्त्योर्नानात्वेऽभिमतिः पुनः।
स्वाश्रयाच्चार्थपर्यायनैगमाभोऽप्रतीतितः।।४७।।

कश्चिद्व्यञ्जनपर्यायौ विषयीकुरुतेऽञ्जसा।
गुणप्रधानभावेन धर्मिण्येकत्र नैगमः।।४८।।

सच्चैतन्यं न रीत्येवं सत्त्वस्य गुणभावतः।
प्रधानभावतश्चापि चैतन्यस्याभिसन्धितः।।४९।।

तयोरत्यन्तभेदोक्तिरन्योऽन्यं स्वाश्रयादपि।
ज्ञेयो व्यञ्जनपर्यायनैगमाभोऽविरोधतः।।५०।।

अर्थव्यञ्जनपर्य्यायौ गोचरीकुरुते परः।
धार्मिके सुखजीवत्वमित्येवमनुरोधतः।।५१।।

भिन्ने तु सुखजीवत्वे योऽभिमन्येत सर्वथा।
सोऽर्थव्यञ्जनपर्यायनैगमाभास एव नः।।५२।।

शुद्धं द्रव्यमशुद्धं च तथाभिप्रैति यो नयः।
स तन्नैगम एवेह संग्रहव्यवहारजः।।५३।।

स द्रव्यं सकलं वस्तु तथान्वयविनिश्चयात्।
इत्येवमवगन्तव्यस्तद्भेदोक्तिस्तु दुर्नयः।।५४।।

यस्तु पर्यायवद्द्रव्य गुणवद्वेति निर्णयः।
व्यवहारनयाज्जातः सोऽशुद्धद्रव्यनैगमः।।५५।।

तद्भेदैकान्तवादस्तु तदाभासोऽनुमन्यते।
तथोक्तेर्बहिरन्तश्च प्रत्यक्षादिविरोधतः।।५६।।

शुद्धद्रव्यार्थपर्यायनैगमोऽस्ति परो यथा।
सत्सुखं क्षणिकं सिद्धं संसारेऽस्मिन्नितीरणम्।।५७।।

सत्त्वं सुखार्थपर्यायाद्भिन्नमेवेति सन्मतिः।
दुर्नीतिः स्यात्सबाधत्वादिति नीतिविदो विदुः।।५८।।

क्षणमेकं सुखी जीवो विषयीति विनिश्चयः।
विनिर्दिष्टोऽर्थपर्यायाशुद्धद्रव्यगनैगमः।।५९।।

सुखजीवभिदोक्तिस्तु सर्वथा मानबाधिता।
दुर्नीतिरेव बोद्धव्या शुद्धबोधैरसंशयम्।।६०।।

गोचरीकुरुते शुद्धद्रव्यव्यञ्जनपर्ययौ।
नैगमोऽन्यो यथासद्वित्सामान्यमिति निर्णयः।।६१।।

विद्यते चापरोऽशुद्धद्रव्यव्यञ्जनपर्ययौ।
अर्थीकरोति यः सोऽत्र नागुणीति निगद्यते।।६२।।

भेदाभिसन्धिरत्यन्तं प्रतीतेरपलापकः।
पूर्ववन्नैगमाभासः प्रत्येतव्यो तयोरपि।।६३।।

नवधा नैगमस्यैव ख्याते पञ्चदशोदिताः।
नया प्रतीतिमारूढाः संग्रहादिनयैः सह।।६४।।

एकत्वेन विशेषाणां ग्रहणं संग्रहो नयः।
सजातेरविरोधेन दृष्टेष्टाभ्यां कथंचन।।६५।।

समेकीभावसम्यक्त्वे वर्तमानो हि गृह्यते।
निरुक्त्या लक्षणं तस्य तथा सति विभाव्यते।।६६।।

शुद्धद्रव्यमभिप्रेति सम्मात्रं संग्रहः परः।
स चाशेषविशेषेषु सदौदासीन्यभागिह।।६७।।

निराकृतविशेषस्तु सत्ताद्वैतपरायणः।
तदाभासः समाख्यातः सद्भिर्दृष्टेष्टबाधनात्।।६८।।

अभिन्नं व्यक्तभेदेभ्यः सर्वथा बहुधानकम्।
महासामान्यमित्युक्तिः केषांचिद् दुर्नयस्तथा।।६९।।

शब्दब्रह्मेति चान्येषां पुरुषाद्वैतमित्यपि।
संवेदनाद्वयं वेति प्रायशोऽन्यत्र दर्शितम्।।७०।।

द्रव्यत्वं सकलद्रव्यव्याप्यभिप्रेति चापरः।
पर्यायत्वं च निःशेषपर्यायव्यापि संग्रहः।।७१।।

तथैवावान्तरान्भेदान्संगृह्यैकत्वतो बहुः।
वर्त्ततेऽयं नयः सम्यक् प्रतिपक्षा निराकृतिः।।७२।।

स्वव्यक्त्यात्मकतैकान्तस्तदाभासोऽप्यनेकधा।
प्रतीतिबाधितो बोध्यो निःशेषोऽप्यनया दिशा।।७३।।

संग्रहेण गृहीतानामर्थानां विधिपूर्वकम्।
योऽवहारो विभागः स्याद् व्यवहारनयः स नः।।७४।।

स चानेकप्रकारः स्यादुत्तरः परसंग्रहात्।
यत्सत्तद्द्रव्यपर्य्यायाविति प्रागृजुसूत्रतः।।७५।।

कल्पनारोपितद्रव्यपर्यायप्रविभागभाक्।
प्रमाणबाधितोऽन्यस्तु तदाभासोऽवसीयताम्।।७६।।

ऋजुसूत्रः क्षणध्वंसि वस्तु सत्सूत्रयेदृजुः।
प्राधान्येन गुणीभावाद्द्रव्यस्यानर्पणात्सतः।।७७।।

निराकरोति यो द्रव्यं व्यवहारश्च सर्वथा।
तदाभासोऽभिमन्तव्यः प्रतीतेरपलापतः।।७८।।

कार्यकारणता नास्ति ग्राह्यग्राहकतापि वा।
वाच्यवाचकता चेति क्वार्थसाधनदूषणम्।।७९।।

लोकसंवृत्तिसत्यं च सत्यं च परमार्थता।
क्वैवं सिद्धयेद्यदाश्रित्य बौद्धानां धर्मदेशना।।८०।।

सामानाधिकरण्यं च विशेषणविशेष्यता।
साध्यसाधनभावो वा क्वाधराधेयतापि च।।८१।।

संयोगो विप्रयोगो वा क्रियाकारकसंस्थितिः।
सादृश्यं वैसादृश्यं वा स्वसन्तानेतरस्थितिः।।८२।।

समुदायः क्व प्रेत्यभावादिर्द्रव्यस्य निह्नवे।
बन्धमोक्षव्यवस्था वा सर्वदेष्टा प्रसिद्धितः।।८३।।

कालादिभेदतोऽर्थस्य भेदं यः प्रतिपादयेत्।
सोऽत्र शब्दनयः शब्दप्रधानत्वादुदाहृतः।।८४।।

विश्वदृश्वास्य भविता सूनुरित्येकमादृता।
पदार्थं कालभेदेऽपि व्यहारानुरोधतः।।८५।।

करोति क्रियते पुष्यस्तारकापोऽम्भ इत्यपि।
कारकव्यक्तिसंख्यानां भेदोऽपि च परे जनाः।।८६।।

एहि मन्ये रथेनेत्यादिकसाधनभिद्यपि।
संतिष्ठेत प्रतिष्ठेतेत्याद्युपग्रहभेदने।।८७।।

तत्र श्रेयः परीक्षायामिति शब्दः प्रकाशयेत्।
कालादिभेदनेऽप्यर्थाभेदनेऽतिप्रसङ्गतः।।८८।।

तथा कालादिनानात्वकल्पनं निष्प्रयोजनम्।
सिद्धेः कालादिनैकेन कार्यस्येष्टस्य तत्त्वतः।।८९।।

कालाद्यन्यतमस्यैव कल्पनं तैर्विधीयताम्।
येषां कालादिभेदेऽपि पदार्थैकत्वनिश्चयः।।९०।।

शब्दः कालादिर्भिभिन्नोऽभिन्नार्थप्रतिपादकः।
कालादिभिन्नशब्दत्वात्तादृक् सिद्धान्यशब्दवत्।।९१।।

पर्यायशब्दभेदेन भिन्नार्थस्याभिरोहणात्।
नयः समभिरूढः स्यात्पूर्ववच्चास्य निर्णयः।।९२।।

इन्द्रः पुरन्दरः शक्र इत्याद्याा भिन्नगोचराः।
शब्दा विभिन्नशब्दत्वाद्वाजिवारणशब्दवत्।।९३।।

तत्क्रियापरिणामोऽर्थस्तथैवेति विनिश्चयात्।
एवंभूतेन नीयेत क्रियान्तरपराङ्मुखः।।९४।।

यो यत्क्रियार्थमाचष्टे नासावन्यत्क्रियां ध्वनिः।
पठतीत्यादिशब्दानां पाठाद्यर्थप्रसंजनम्।।९५।।

इत्यन्योऽन्यमपेक्षायां सन्तः शब्दादयो नयाः।
निरपेक्षाः पुनस्ते स्युस्तदाभासा विरोधतः।।९६।।

तत्रर्जुसूखपर्यन्ताश्चत्वारोऽर्थनया मताः।
त्रयः शब्दनयाः शेषाः शब्दवाच्यार्थगोचराः।।६७।।

पूर्वः पूर्वनयो भूमविषयः कारणात्मकः।
परः परः पुनः सूक्ष्मगोचरो हेतुमानिह।।६८।।

सन्मात्रविषयत्वेन संग्रहस्य न युज्यते।
महाविषयता भावा-भावार्थान्नैगमान्नयात्।।६६।।

यथाहि सति संकल्पस्तथैवासति विद्यते।
तत्र प्रवर्त्तमानस्य नैगमस्य महार्थता।।१००।।

सङ्ग्रहाद्वयवहारोऽपि स्याद्विशेषावबोधकः।
न भूमविषयोऽशेषसत्समूहोपदर्शिनः।।१०१।।

नर्जुसूत्रः प्रभूतार्थो वर्तमानार्थगोचरः।
कालत्रितयवृत्यर्थगोचराद् व्यवहारतः।।१०२।।

कालादिभेदतोऽप्यर्थमभिन्नमुपगच्छतः।
नर्जुसूत्रान्महार्थोऽत्र शब्दस्तद्विपरीतवित्।।१०३।।

शब्दात्पर्यायभेदेनाभिन्नमर्थमभीच्छतः।
न स्यात्समभिरूढोऽपि महार्थस्तद्विपर्ययः।।१०४।।

क्रियाभेदेऽपि चाभिन्नमर्थमभ्युपगच्छतः।
नैवंभूतः प्रभूतार्थनयः समभिरूढतः।।१०५।।

नैगमप्रातिकूल्येन सङ्ग्रहः संप्रवर्तते।
ताभ्यां वाचामिहाभीष्टा सप्तभङ्गी विभागतः।।१०६।।

नैगमव्यवहाराभ्यां विरूद्धाभ्यां तथैव सा।
स्यान्नैगमर्जुसूत्राभ्यां तादृग्भ्यामविगानतः।।१०७।।

सशब्दान्नैगमादन्यायुक्तात्समभिरूढतः।
सैवंभूताच्च सा ज्ञेया विधानप्रतिषेधगा।।१०८।।

सङ्ग्रहादेश्च शेषेण प्रतिपक्षेण गम्यताम्।
तथैव व्यापिनी सप्तभङ्गी नयविदां मता।।१०६।।

विशेषैरुत्तरैः सर्वैर्नयानामुदितात्मनाम्।
परस्परविरुद्धार्थैः द्वन्द्ववृत्तिर्यथायथम्।।११०।।

प्रत्येया प्रतिपर्यायमविरुद्धा तथैव सा।
प्रमाणसप्तीभङ्गी च ता विना नाभिवागतिः।।१११।।

सर्वे शब्दनयास्तेन परार्थप्रतिपादने।
स्वार्थप्रकाशने मातुरिमे ज्ञाननयाः स्थिताः।।११२।।

तैर्नीयमानवस्त्वंशाः कथ्यन्तेऽर्थनयाश्च ते।
त्रिधैव व्यवतिष्ठन्ते प्रधानगुणभावतः।।११३।।

यत्र प्रवर्त्ततेऽर्थांशे नियमादुत्तरो नयः।
पूर्वः पूर्वो नयस्तत्र वर्तमानो न वार्यते।।११४।।

सहस्रेऽष्टशती यद्वत्तस्यां पञ्चशती मता।
पूर्वसंख्योत्तरत्र स्यात्संख्यायामविरोधतः।।११५।।

पूर्वत्र नोत्तरा संख्या यथा जातु प्रवर्त्तते।
तथोत्तरनयः पूर्वनयार्थे सकले सदा।।११६।।

नयार्थेषु प्रमाणस्य वृत्तिः सकलदेशिनः।
भवेन्न तु प्रमाणार्थे नयानामखिलेऽञ्जसा।।११७।।

संक्षेपेण नयास्तावद् व्याख्याताः सूत्रसूचिताः।
तद्विशेषाः प्रपञ्चेन सञ्चिन्त्या नयचक्रतः।।११८।।

शार्दूलविक्रीडितम्

बालानां हितकामिनामतिमहापापैः पुरोपार्जितै-
र्माहात्म्यात्तमसः स्वयं कलिबलात्प्रायो गुणद्वेषिभिः।
न्यायोऽयं मलिनीकृतः कथमपि प्रक्षाल्यते नीयते
सम्यग्ज्ञानजलैर्वचोभिमलं तत्रानुकम्पापरैः।।११९।।

इति नयविवरणं समाप्तम्।।

गोम्मटसारः
जीवकाण्डम्

सिद्धं सुद्धं पणमिय जिणिंदवरणेमिचंदमकलंकं।
गुणरयणभूसणुदयं जीवस्स परूवणं वोच्छं॥१॥

गुणजीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणाओ य।
उवओगो वि य कमसो वीसं तु परूवणा भणिदा॥२॥

संखेओ ओघो त्ति य गुणसण्णा सा च मोहजोगभवा।
वित्थारादेसो त्ति य मग्गणसण्णा सकम्मभवा॥३॥

आदेसे संलीणा जीवा पज्जत्तिपाणसण्णाओ।
उवओगो वि य भेदे वीसं तु परूवणा भणिदा॥४॥

इंदियकाये लीणा जीवा पज्जत्तिआणभासमणो।
जोगे काओ णाणे अक्खा गदिमग्गणे आऊ॥५॥

मायालोहे रदिपुव्वाहारं कोहमाणगम्मि भयं।
वेदे मेहुणसण्णा लोहम्मि परिग्गहे सण्णा॥६॥

सागारो उवओगो णाणे मग्गम्मि दंसणे मग्गे।
अणगारो उवओगो लीणो त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठो॥७॥

जेहिं दु लक्खिज्जंते उदयादिसु संभवेहिं भावेहिं।
जीवा ते गुणसण्णा णिद्दिट्ठा सव्वदरसीहिं॥८॥

मिच्छो सासण मिस्सो अविरदसम्मो य देसविरदो य।
विरदा पमत्त इदरो अपुव्व अणियट्टि सुहमो य॥६॥
उवसंत खीणमोहो सजोगकेवलिजिणो अजोगि य।
चाद्दस जीवसमासा कमेण सिद्धा य णादव्वा॥१०॥

मिच्छे खलु ओदइओ विदिए पुण पारिणामिओ भावो।
मिस्से खओवसमिओ अविरदसम्मम्मि तिण्णेव॥११॥

एदे भावा णियमा दंसणमोहं पडुच्च भणिदा हु।
चारित्तं णत्थि जदो अविरद अंतेसु ठाणेसु ॥१२॥

देसविरदे पमत्ते इदरे य खओवसमियभावो दु।
सो खलु चरित्तमोहं पडुच्च भणियं तहा उवरिं॥१३॥

तत्तो उवरिं उवसमभावो उवसामगेसु खवगेसु।
खइओ भावो णियमा अजोगिचरिमो त्ति सिद्धे य॥१४॥

मिच्छोदयेण मिच्छत्तमसद्दहणं तु तच्चअत्थाणं।
एयंतं विवरीयं विणयं संसइदमण्णाणं॥१५॥

एयंत बुद्धदरिसी विवरीओ बह्म तावसो विणओ।
इंदो वि य संसइयो मक्कडिओ चेव अण्णाणी ॥१६॥

मिच्छंतं वेदंतो जीवो विवरीयदंसणो होदि।
ण य धम्मं रोचेदि हु महुरं खु रसं जहा जरिदो॥१७॥

मिच्छाइट्ठी जीवो उवइट्ठं पवयणं ण सद्दहदि।
सद्दहदि असब्भावं उवइट्ठं वा अणुवइट्ठं॥१८॥

आदिमसम्मत्तद्धासमयादो छावलि त्ति वा सेसे।
अणअण्णदरुदयादो णासियसम्मोत्ति सासणक्खो सो॥१९॥

सम्मत्तरयणपव्वयसिहरादो मिच्छभूमिसमभिमुहो।
णासियसम्मत्तो सो सासणणामो मुणेयव्वो॥२०॥

सम्मामिच्छुदयेण जत्तंतरसव्वघादिकज्जेण।
णय सम्मं मिच्छं पि य सम्मिस्सो होदि परिणामो॥२१॥

दहिगुडमिव वामिस्सं पुहभावं णेव कारिदुं सक्कं।
एवं मिस्सयभावो सम्मामिच्छो त्ति णादव्वो॥२२॥

सो संजमं ण गिण्हदि देसजमं वा ण बंधदे आउं।
सम्मं वा मिच्छं वा पडिवज्जिय मरदि णियमेण॥२३॥

सम्मत्तमिच्छपरिणामेसु जहिं आउगं पुरा बद्धं।
तहिं मरणं मरणंतसमुग्घादो वि य ण मिस्सम्मि॥२४॥

सम्मत्तदेसघादिस्सुदयादो वेदगं हवे सम्मं।
चलमलिनमगाढं तं णिच्चं कम्मक्खवणहेदू॥२५॥

सत्तण्हं उवसमदो उवसमसम्मो खयादु खइयो य।
बिदियकसायुदयादो असंजदो होदि सम्मो य॥२६॥

सम्माइट्ठी जीवो उवइट्ठं पवयणं तु सद्दहदि।
सद्दहदि असब्भावं अजाणमाणो गुरुणियोगा॥२७॥

सुत्तादो तं सम्मं दरिसिज्जंतं जदा ण सद्दहदि।
सो चेव हवइ मिच्छाइट्ठी जीवो तदो पहुदी॥२८॥

णो इंदिएसु विरदो णो जीवे थावरे तसे वापि।
जो सद्दहदि जिणुत्तं सम्माइट्ठी अविरदो सो॥२९॥

पच्चक्खाणुदयादो संजमभावो ण होदि णवरिं तु।
थोववदो होदि तदो देसवदो होदि पंचमओ॥३०॥

जो तसबहाउ विरदो अविरदओ तह य थावरबहादो।
एक्कसमयम्हि जीवो विरदाविरदो जिणेक्कमई॥३१॥

संजलणणोकसायाणुदयादो संजमो हवे जम्हा।
मलजणणपमादोवि य तम्हा हु पमत्तविरदो सो॥३२॥

वत्तावत्तपमादे जो वसइ पमत्तसंजदो होइ।
सयलगुणसीलकलिओ महव्वई चित्तलायरणो॥३३॥

विकहा तहा कसाया इंदियणिद्दा तहेव पणयो य।
चदु चदु पणमेगेगं होंति पमादा हु पण्णरसा॥३४॥

संखा तह पत्थारो परियट्टण णट्ठ तह समुद्दिट्ठं।
एदे पंच पयारा पमदसमुक्कित्तणे णेया॥३५॥

सव्वेवि पुव्वभंगा उवरिमभंगेसु एक्कमेक्केसु।
मेलंति त्ति य कमसो गुणिदे उप्पज्जदे संखा॥३६॥

पढमं पमदपमाणं कमेण णिक्खिविय उवरिमाणं च।
पिंडं पडि एक्केकं णिक्खित्ते होदि पत्थारो॥३७॥

णिक्खित्तु विदियमेत्तं पढमं तस्सुवरि विदियमेक्केक्कं।
पिंडं पडि णिक्खेओ एवं सव्वत्थ कायव्वो॥३८॥

तदियक्खो अन्तगदो आदिगदे संकमेदि विदियक्खो।
दोण्णिवि गंतूणंतं आदिगदे संकमेदि पढमक्खो॥३९॥

पढमक्खो अन्तगदो आदिगदे संकमेदि विदियक्खो।
दोण्णिवि गंतूणंतं आदिगदे संकमेदि तदियक्खो॥४०॥

सगमाणेहिं विहत्ते सेसं लक्खित्तु जाण अक्खपदं।
लद्धे रूवं पक्खिव सुद्धे अन्ते ण रूवपक्खेओ॥४१॥

संठाविदूण रूवं उवरीदो संगुणित्तु सगमाणे।
अवणिज्ज अणंकिदयं कुज्जा एमेव सव्वत्थ॥४२॥

इगिबितिचपणखपणदसपण्णरसं खबीसतालसट्ठी य।
संठविय पमदठाणे णट्ठुद्दिट्ठं च जाण तिट्ठाणे॥४३॥

इगिबितिचखचडवारं खसोलरागट्ठदालचउसट्ठिं।
संठविय पमदठाणे णट्ठुद्दिट्ठं च जाण तिट्ठाणे॥४४॥

संजलणणोकसायाणुदयो मंदो जदा तदा होदि।
अपमत्तगुणो तेण य अपमत्तो संजदो होदि॥४५॥

णट्ठासेसपमादो वयगुणसीलोलिमंडिओ णाणी।
अणुबसमओ अखवओ झाणणिलीणोहु अपमत्तो॥४६॥

इगवीस-मोहखवणुबसमण-णिमित्ताणि तिकरणाणि तहिं।
पढमं अधापवत्तं करणं तु करेदि अपमत्तो॥४७॥

जह्मा उवरिमभावा हेट्ठिमभावेहिं सरिसगा होंति।
तह्मा पढमं करणं अधापवत्तोत्ति णिद्दिट्ठं॥४८॥

अंतो मुहुत्तमेत्तो तक्कालो होदि तत्थ परिणामा।
लोगाणमसंखमिदा उवरुवरिं सरिसवड्ढिगया॥४९॥

अंतोमुहुत्तकालं गमिऊण अधापवत्तकरणं तं।
पडिसमयं सुज्झंतो अपुव्वकरणं समल्लियइ॥५०॥

एदह्मि गुणट्ठाणे विसरिससमयट्ठियेहिं जीवेहिं।
पुव्वमपत्ता जह्मा होंति अपुव्वा हु परिणामा॥५१॥

भिण्णसमयट्ठियेहिं दु जीवेहिं ण होदि सव्वदा सरिसो।
करणेहिं एक्कसमयट्ठियेहिं सरिसो विसरिसो वा॥५२॥

अंतोमुहुत्तमेत्ते पडिसमयमसंखलोगपरिणामा।
कमउड्ढापुव्वगुणे अणुकट्टी णत्थि णियमेण॥५३॥

तारिसपरिणामट्ठियजीवा हु जिणेहिं गलियतिमिरेहिं।
मोहस्सपुव्वकरणा खवणुवसमणुज्जया भणिया॥५४॥

णिद्दापयले णट्ठे सदि आऊ उवसमंति उवसमया।
खवयं ढुक्के खवया णियमेण खवंति मोहं तु॥५५॥

एक्कम्हि कालसमए संठाणादीहि जह णियट्टंति।
ण णिवट्टंति तह चिय परिणामेहि मिहो जेहु॥५६॥

होंति अणियट्टिणो ते पडिसमयं जेस्सिमेक्कपरिणामा।
विमलयर-झाणहुयवह सिहाहिं णिद्दड्ढ-कम्मवणा॥५७॥

पुव्वापुव्वप्फड्डय-बादरसुहुमगयकिट्टिअणुभागा।
हीणकमाणंतगुणेणवरादु वरं च हेट्ठस्स॥५८॥

धुदकोसुंभयवत्थं होदि जहा सुहमरायसंजुत्तं।
एवं सुहमकसाओ सुहमसरागो त्ति णादव्वो॥५९॥

अणुलोहं वेदंतो जीवो उवसामगो व खवगो वा।
सो सुहम संपराओ जहखादे णूणओ किंचि॥६०॥

कदकफलजुदजलं वा सरए सरवाणियं व णिम्मलयं।
सयलोवसंतमोहो उवसंतकसायओ होदि॥६१॥

णिस्सेसखीणमोहो फलिहामल भायणुदयसमचित्तो।
खीणकसाओ भण्णदि णिग्गंथो वीयरायेहिं॥६२॥

केवलणाणदिवायर-किरणकलावप्पणासिअण्णाणो।
णवकेवललद्धुग्गम-सुजणिय-परमप्प-ववएसो॥६३॥

असहायणाण-दंसणसहिओ इदि केवली हु जोएण।
जुत्तो ति सजोग जिणो अणाइणिहणारिसे उत्तो॥६४॥

सीलेसिं संपत्तो णिरुद्धणिस्सेसआसवो जीवो।
कम्मरयविप्पमुक्को गयजोगो केवली होदि॥६५॥

सम्मत्तुप्पत्तीये सावयविरदे अणंतकम्मंसे।
दंसणमोहक्खवगे कसायउवसामगे य उवसंते॥६६॥

खवगे य खीणमोहे जिणेसु दव्वा असंखगुणिदकमा।
तव्विवरीया काला संखेज्जगुणक्कमा होंति॥६७॥

अट्ठविहकम्मवियला सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठमुणा किदकिच्चा लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥६८॥

सदासिव संखो मक्कडि बुद्धो णेयाइयो य वेसेसी।
ईसरमंडलिदंसण-विदूसणट्ठं कयं एदं॥६६॥

जेहिं अणेया जीवा णज्जंते बहु विहा वि तज्जादी।
ते पुण संगहिदत्था जीवसमासा त्ति विण्णेया॥७०॥

तस चदुजुगाणमज्झे अविरुद्धेहिं जुदजादि कम्मुदये।
जीवसमासा होंति हु तब्भवसारिच्छ सामण्णा॥७१॥

बादरसुहमेइंदिय वितिचउरिंदिय असण्णिसण्णी य।
पज्जत्तापज्जत्ता एवं ते चोद्दसा होंति॥७२॥

भूआउ तेउवाऊ णिच्च-चदुग्गदि-णिगोद-थूलिदरा।
पत्तेय-पदिट्ठिदरा तसपण पुण्णा अपुण्णदुगा॥७३॥

ठाणेहिं वि जोणीहिं वि देहोग्गाहणकुलाणभेदेहिं।
जीवसमासा सव्वे परूविदव्वा जहाकमसो॥७४॥

सामण्णजीव तसथावरेसु इगिविगल-सयलचरिमदुगे।
इंदियकाये चरिमस्स य दुति-चदुरपणग-भेदजुदे॥७५॥

पणजुगले तससहिये तसस्स दुतिचदुरपणग-भेदजुदे।
छद्दुगपत्तेयह्मि य तसस्स तियचदुर-पणगभेद जुदे॥७६॥

सगजुगलह्मि तसस्स य पणभंगजुदेसु होंति उणवीसा।
एयादुणवीसो त्ति य इगिबिति गुणिदे हवे ठाणा॥७७॥

सामण्णेण तिपंती पढमा विदिया अपुण्णगे इदरे।
पज्जत्ते लद्धिअपज्जत्तेऽपढमा हवे पंती॥७८॥

इगिवण्णं इगिविगले असण्णि-सण्णि-गय-जलथल-खगाणं।
गब्भभवे सम्मुच्छे दुतिगं भोगथलखेचरे दोदो॥७९॥

अज्जव मलेच्छ मणुए तिदुभोग भूमिजे दोदो।
सुरणिरये दो दो इदि जीवसमासा हु अडणउदी॥८०॥

संखावत्तयजोणी कुम्मुण्णय-वंसपत्तजोणी य।
तत्थय संखावत्ते णियमा दु विवज्जदे गब्भो॥८१॥

कुम्मुण्णयजोणीए तित्थयरा दुविहचक्कवट्टी य।
रामावि य जायंते सेसाए सेसगजणो य॥८२॥

जम्मं खलु संमुच्छणगब्भुववादा दु होदि तज्जोणी।
सच्चित्त-सीद-सउंड-सेदर-मिस्सा य पत्तेयं॥८३॥

पोतजरायुजअंडजजीवाणं गब्भ देवणिरयाणं।
उववादं सेसाणं सम्मुच्छणयं तु णिद्दिट्ठं॥८४॥

उववादे अच्चित्तं गब्भे मिस्सं तु होदि सम्मुच्छे।
सच्चित्तं अच्चित्तं मिस्सं च य होदि जोणी हु॥८५॥

उववादे सीदुसणं सेसे सीदुसणमिस्सयं होदि।
उववादेयक्खेसु य संउड वियलेसु विउलं तु॥८६॥

गब्भजजीवाणं पुण मिस्सं णियमेण होदि जोणी हु।
सम्मुच्छणपंचक्खे वियलं वा विउलजोणी हु॥८७॥

सामण्णेण य एवं णव जोणीओ हवंति वित्थारे।
लक्खाण चदुरसीदी जोणीओ होंति णियमेण॥८८॥

णिच्चिदरधादुसत्तय तरुदस वियलिंदियेसु छच्चेव।
सुरणिरयतिरियचउरो चोद्दस मणुएसु सदसहस्सा॥८९॥

उववादा सुरणिरया गब्भज सम्मुच्छिमा हु णरतिरिया।
सम्मुच्छिमा मणुस्साऽपज्जत्ता एयवियलक्खा॥९०॥

पंचक्ख तिरिक्खाओ गब्भजसम्मुच्छिमातिरिक्खाणं।
भोगभुमा गब्भभवा णरपुण्णा गब्भजा चेव॥९१॥

उववादगब्भजेसु च लद्धि अपज्जत्तगा ण णियमेण।
णरसम्मुच्छिमजीवा लद्धि अपज्जत्तगा चेव॥९२॥

णेरइया खलु संढा णर तिरिये तिण्णि होंति सम्मुच्छा।
संढा सुरभोगभुमा पुरिसित्थी वेदगा चेव॥९३॥

सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स जादस्स तदियसमयम्हि।
अंगुलअसंखभागं जहण्णमुक्कस्सयं मच्छे॥९४॥

साहिय सहस्समेकं बारं कोसूण मेक मेक्कं च।
जोयण सहस्सदीहं पम्मे वियले महामच्छे॥९५॥

बितिचप पुण्णजहण्णं अणुन्धरी कुन्थुकाण मच्छीसु।
सिच्छयमच्छे विंदंगुल संख संख गुणिदकमा॥६६॥

सुहमणिवाते आभूवाते आपुणि पदिट्ठिदं इदरं।
बिति च पमादिल्लाणं एयाराणं तिसेढीय॥६७॥

अपदिट्ठिदपत्तेयं बिति च पति चबिअपदिट्ठिदं सयलं।
तिचबिअपदिट्ठिदं च य सयलं बादाल गुणिदकमा॥६८॥

अवरमपुण्णं पढमं सोलं पुणपढम बिदियत दियोली।
पुण्णिदर पुण्णयाणं जहण्णमुक्कस्समुक्कस्स॥६६॥

पुण्ण जहण्णं तत्तो वरं अपुण्णस्स पुण्णउक्कस्सं।
वीपुण्णजहण्णोत्ति असंखं संखं गुणंतत्तो॥१००॥

सुहमेदर गुणगारो आवलि पल्ला असंखभागो भागोदु।
सट्ठाणे सेढिगया अहिया तत्थेकपडिभागो॥१०१॥

अवरुवरि इगिपदेसे जुदे असंखेज्जभागवड्ढीए।
आदी णिरंतरमदो एगेगपदेसपरिवड्ढी॥१०२॥

अवरोग्गाहणमाणे जहण्णपरिमिदअसंखरासिहिदे।
अवरस्सुवरिं उढ्ढे जेट्ठमसंखेज्जभागस्स॥१०३॥

तस्सुवरि इगिपदेसे जुदे अवत्तव्वभागपारंभो।
वरसंखमवहिदवरे रूऊणे अवरउवरि जुदे॥१०४॥

तव्वड्डीए चरिमो तस्सुवरिं रूवसंजुदे पढमा।
संखेज्जभागउड्ढी उवरिमदो रूवपरिवड्ढी॥१०५॥

अवरद्धे अवरुवरिं उड्ढे तव्वड्ढिपरिसमत्ती हु।
रूवे तदुवरि उड्ढे होदि अवत्तव्वपढमपदं॥१०६॥

रूऊणवरे अवरस्सुवरिं संवड्ढिदे तदुक्कस्सं।
तलि(तह्मि) पदेसे उढ्ढे पढमा संखेज्जगुणवढ्ढी॥१०७॥

अवरे वरसंखगुणे तच्चरिमो तम्हि रूवसंजुत्ते।
उग्गाहणम्हि पढमा होदि अवत्तव्वगुणवड्ढी॥१०८॥

अवरपरित्तासंखेणवरं संगुणिय रूवपरिहीणे।
तच्चरिमो रूवजुदे तह्मि असंखेज्जगुणपढमं॥१०९॥

रूबुत्तरेण तत्तो आवलियासंखभागगुणगारे।
तप्पाउग्गे जादे वाउस्सोग्गाहणं कमसो॥११०॥

एवं उवरि विणेओ पदेसवड्ढिढक्कमो जहाजोग्गं।
सव्वत्थेक्केकम्हिय जीवसमासाण विच्चाले॥१११॥

हेट्ठा जेसिं जहण्णं उवरिं उक्कस्सयं हवे जत्थ।
तत्थंतरगा सव्वे तेसिं उग्गाहणविअप्पा॥११२॥

बावीस सत्त तिण्णि य सत्त य कुलकोडिसयसहस्साइं।
णेया पुढविदगागणिवाउक्कायाण परिसंखा॥११३॥

कोडिसयसहस्साइं सत्तट्ठ णव य अट्ठवीसाइं।
बेइंदियतेइंदियचउरिंदियहरिदकायाणं॥११४॥

अद्धत्तेरस बारस दसयं कुलकोडिसदसहस्साइं।
जलचरपक्खिचउप्पयउरपरिसप्पेसु णव होंति॥११५॥

छप्पं चाधियवीसं बारस कुलकोडिसदसहस्साइं।
सुरणेरइयणराणं जहाकमं होंति णेयाणि॥११६॥

एया य कोडिकोडी सत्ताणउदी य सदसहस्साइं।
पण्णं कोडिसहस्सा सव्वंगीणं कुलाणं य॥११७॥

जह पुण्णापुण्णाइं गिहघडवत्थादियाइं दव्वाइं।
तह पुण्णिदरा जीवा पज्जत्तिदरा मुणेयव्वा॥११८॥

आहारसरीरिंदियपज्जत्ती आणपाणभासमणो।
चत्तारि पंच छप्पि य एइंदियवियलसण्णीणं॥११९॥

पज्जत्तीपट्ठवणं जुगवं तु कमेण होदि णिट्ठवणं।
अंतोमुहुत्तकालेणहियकमा तत्तियालावा॥१२०॥

पज्जत्तस्स य उदये णियणियपज्जत्तिणिट्ठिदो होदि।
जाव सरीरमपुण्णं णिव्वत्तिअपुण्णगो ताव॥१२१॥

उदये दु अपुण्णस्स य सगसगपज्जत्तियं ण णिट्ठवदि।
अंतोमुहुत्तमरणं लद्धिअपज्जत्तगो सो दु॥१२२॥

तिण्णिसया छत्तीसा छावट्ठिसहस्सगाणि मरणाणि।
अन्तोमुहुत्तकाले तावदिया चेव खुद्दभवा॥१२३॥

सीदी सट्ठी तालं वियले चउवीस होंति पंचक्खे।
छावट्ठिं च सहस्सा सयं च बत्तीसमेयक्खे॥१२४॥

पुढविदगागणिमारुदसाहारणथूलसुहमपत्तेया।
एदेसु अपुण्णेसु य एक्केक्के वार खं छक्कं॥१२५॥

पज्जत्तसरीरस्स य पज्जत्तुदयस्स कायजोगस्स।
जोगिस्स अपुण्णत्तं अपुण्णजोगो त्ति णिदिट्ठं॥१२६॥

लद्धिअपुण्णं मिच्छे तत्थवि विदिये चउत्थछट्ठे य।
णिव्वत्तिअपज्जत्ती तत्थवि सेसेसु पज्जत्ती॥१२७॥

हेट्ठिमछप्पुढवीणं जोइसिवणभवणसव्वइत्थीणं।
पुण्णिदरे ण हि सम्मो ण सासणो णारयापुण्णे॥१२८॥

बाहिरपाणेहिं जहा तहेव अब्भंतरेहिं पाणेहिं।
पाणंति जेहिं जीवा पाणा ते होंति णिद्दिट्ठा॥१२९॥

पंचवि इंदियपाणा मणवचकायेसु तिण्णि बलपाणा।
आणापाणप्पाणा आउगपाणेण होंति दस पाणा॥१३०॥

वीरियजुदमदिखउवसमुत्था णोइंदियेंदियेसु बला।
देहुदये कायाणा वचीबला आउ आउदये॥१३१॥

इंदियकायाऊणि य पुण्णापुण्णेसु पुण्णगे आणा।
बीइंदियादिपुण्णे वचीमणोसण्णिपुण्णेव॥१३२॥

दस सण्णीणं पाणा सेसेऽगूणंतिमस्स बेऊणा।
पज्जत्तेसिदरेसु य सत्तदुगे सेसगेगूणा॥१३३॥

इह जाहि बाहियावि य जीवा पावंति दारुणं दुक्खं।
सेवंतावि य उभये ताओ चत्तारि सण्णाओ॥१३४॥

आहारदंसणेण य तस्सुबजोगेण ओमकोठाए।
सादिदरुदीरणाए हवदि हु आहारसण्णा हु॥१३५॥

अइभीमदंसणेण य तस्सुवजोगेण ओमसत्तीए।
भयकम्मुदीरणाए भयसण्णा जायदे चदुहिं॥१३६॥

पणिदरसभोयणेण य तस्सुवजोगेण कुसीलसेवाए।
वेदस्सुदीरणाए मेहुणसण्णा हवदि एवं॥१३७॥

उवयरणदंसणेण च तस्सुवजोगेण मुच्छिदाए य।
लोहस्सुदीरणाए परिग्गहे जायदे सण्णा॥१३८॥

णट्ठपमाए पढमा सण्णा ण हि तत्थ कारणाभावा।
सेसा कम्मत्थित्तेणुबयारेणत्थि ण हि कज्जे॥१३९॥

धम्मगुणमग्गणाहयमोहारिबलं जिणं णमंसित्ता।
मग्गणमहाहियारं विविहहियारं भणिस्सामो॥१४०॥

जाहि व जासु व जीवा मग्गिज्जंते जहा तहा दिट्ठा।
ताओ चोद्दस जाणे सुयणाणे मग्गणा होंति॥१४१॥

गइइंदियेसु काये जोगे वेदे कसायणाणे य।
संजमदंसणलेस्सा भवियासम्मत्तसण्णिआहारे॥१४२॥

उवसमसुहुमाहारे वेगुव्वियमिस्सणरअपज्जत्ते।
सासणसम्मे मिस्से सान्तरगा मग्गणा अट्ठ॥१४३॥

सत्तदिणा छम्मासा वासपुधत्तं च बारसमुहुत्ता।
पल्लासंखं तिण्हं वरमवरं एगसमयो दु॥१४४॥

पढमुवसमसहिदाए विरदाविरदीए चोद्दसा दिवसा।
विरदीए पण्णरसा विरहिदकालो दु बोद्धव्वो॥१४५॥

गइउदयजपज्जाया चउगइगमणस्स हेउ वा हु गई।
णारयतिरिक्खमाणुसदेवगइत्ति य हवेचदुधा॥१४६॥

णरमंति जदो णिच्चं दव्वे खेत्ते य कालभावे य।
अण्णोण्णेहिं य जह्मा तह्मा ते णारया भणिया॥१४७॥

तिरियंतिकुडिलभावं सुविउलसण्णा णिगिट्ठमण्णाणा।
अच्चंतपावबहुला तह्मा तेरिच्छया भणिया॥१४८॥

मण्णंति जदो णिच्चं मणेण णिउणा मणुक्कडा जम्हा।
मण्णुब्भवा य सव्वे तम्हा ते माणुसा भणिदा॥१४९॥

सामण्णा पंचिंदी पज्जत्ता जोणिणी अपज्जत्ता।
तिरिया णरा तहावि य पंचिदिय भंगदो हीणा॥१५०॥

दीव्वंति जदो णिच्चं गुणेहिं अट्ठेहिं दिव्वभावेहिं।
भासंतदिव्वकाया तह्मा ते वण्णिया देवा॥१५१॥

जाइ जरामरणभया संजोगविजोगदुक्खसण्णाओ।
रोगादिगा य जिस्से ण संति सा होदि सिद्धगई॥१५२॥

सामण्णा णेरइया घणअंगुल बिदियमूलगुणसेढी।
बिदियादि बारदसअड छत्तिदुणिजपदहिदा सेढी॥१५३॥

हेट्ठिमछप्पुढवीणं रासिविहीणो दु सव्वरासी दु।
पढमावणिह्मि रासी णेरइयाणं तु णिद्दिट्ठो॥१५४॥

संसारी पंचक्खा तप्पुण्णा तिगदिहीणया कमसो।
सामण्णा पंचिंदी पंचिंदियपुण्णतेरिक्खा॥१५५॥

छस्सयजोयणकदिहिदजगपदरं जोणिणीण परिमाणं।
पुण्णूणा पंचक्खा तिरियअपज्जत्तपरिसंखा॥१५६॥

सेढी सूई अंगुलआदिमतदियपदभाजिदेगूणा।
सामण्णमणुसरासी पंचमकदिघणसमा पुण्णा॥१५७॥

तललीनमधुगविमलं धूमसिलागाविचोरभयमेरू।
तटहरिखझसा होंति हु माणुसपज्जत्तसंखंका॥१५८॥

पज्जत्तमणुस्साणं तिचउत्थो माणुसीण परिमाणं।
सामण्णा पुण्णूणा मणुव अपज्जत्तगा होंति॥१५६॥

तिण्णिसय जोयण्याणं वेसदछप्पण्ण अंगुलाणं च।
कदिहिदपदरं वेंतरजोइसियाणं च परिमाणं॥१६०॥

घणअंगुलपढमपदं तदियपदं सेढिसंगुणं कमसो।
भवणे सोहम्मदुगे देवाणं होदि परिमाणं॥१६१॥

तत्तो एगारणवसगपण चउणियमूलभाजिदा सेढी।
पल्लासंखेज्जदिमा पत्तेयं आणदादिसुरा॥१६२॥

तिगुणा सत्तगुणा वा सव्वट्ठा माणुसीपमाणादो।
सामण्णदेवरासी जोइसियादो विसेसहिया॥१६३॥

अहमिंदा जह देवा अविसेसं अहमहंति मण्णंता।
ईसंति एक्कमेक्कं इंदा इव इंदिये जाण॥१६४॥

मदिआवरणखओबसमुत्थविसुद्धी हु तज्जबोहो वा।
भाविंदियं तु दव्वं देहुदयजदेहचिण्हं तु॥१६५॥

फासरसगंधरूवे सद्दे णाणं च चिण्हयं जेसिं।
इगिबितिचदुपंचिंदियजीवा णियभेयभिण्णाओ॥१६६॥

एइंदियस्स फुसणं एक्कंबि य होदि सेसजीवाणं।
होंति कमउड्ढियाइं जिब्भाघाणच्छिसोत्ताइं॥१६७॥

धणुवीसडदसयकदी जोयणछादालहीणतिसहस्सा।
अट्ठसहस्स धणूणं विसया दुगुणा असण्णित्ति॥१६८॥

सण्णिस्स वार सोदे तिण्हं णव जोयणाणि चक्खुस्स।
सत्तेतालसहस्सा बेसदतेसट्ठिमदिरेया॥१६९॥

तिण्णिसयसट्ठिविरहिदलक्खं दसमूलताडिदे मूलं।
णवगुणिदे सट्ठिहिदे चक्खप्फासस्स अद्धाणं॥१७०॥

चक्खू सोदं घाणं जिब्भायारं मसूरजवणाली।
अतिमुत्तखुरप्पसमं फासं तु अणेयसंठाणं॥१७१॥

अंगुलअसंखभागं संखेज्जगुणं तदो विसेसहिय।
तत्तो असंखगुणिदं अंगुलसंखेज्जयं तत्तु॥१७२॥

सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स जादस्स तदियसमयह्मि।
अङ्गुलअसंखभागं जहण्णमुक्कसयं मच्छे॥१७३॥

णवि इंदियकरणजुदा अवग्गहादीहिं गाहया अत्थे।
णेव य इंदियसोक्खा अणिंदियाणंतणाणसुहा॥१७४॥

थावरसंखपिपीलियभमरमणुस्सादिगा सभेदा जे।
जुगवारमसंखेज्जाणंताणंता णिगोदभवा॥१७५॥

तसहीणो संसारी एयक्खा ताण संखगा भागा।
पुण्णाणं परिमाणं संखेज्जदिमं अपुण्णाणं॥१७६॥

बादरसुहमा तेसिं पुण्णापुण्णेत्ति छव्विहाणंपि।
तक्कायमग्गणाये भणिज्जमाणक्कमो णेयो॥१७७॥

बितिचपमाणमसंखेणवहिदपदरंगुलेण हिदपदरं।
हीणकमं पडिभागो आवलियासंखभागे दु॥१७८॥

बहुभागो समभागो चउण्णमेदेसिमेक्कभागह्मि।
उत्तकमो तत्थबि बहुभागो बहुगस्स देओ दु॥१७९॥

तिबिपचपुण्णपमाणं पदरंगुलसंखभागहिदपदरं।
हीणकमं पुण्णूणा वितिचपजीवा अपज्जत्ता॥१८०॥

जाई अविणाभावीतसथावरउदयजो हवे काओ।
सो जिणमदम्हि भणिओ पुढवीकायादिछब्भेयो॥१८१॥

पुढवीआऊतेऊवाऊकम्मोदयेण तत्थेव।
णियवण्णचउक्कजुदो ताणं देहो हवे णियमा॥१८२॥

बादरसुहुमुदयेण य बादरसुहुमा हवंति तद्देहा।
घादसरीरं थूलं अघाददेहं हवे सुहुमं॥१८३॥

तद्देहमंगुलस्स असंखभागस्स बिंदमाणं तु।
आधारे थूलाओ सव्वत्थ णिरंतरा सुहुमा॥१८४॥

उदये दु वणप्फदिकम्मस्स य जीवा वणप्फदि होंति।
पत्तेयं सामण्णं पदिट्ठिदिदरेत्ति पत्तेयं॥१८५॥

मूलग्गपोरबीजा खंदा तह खंदबीजबीजरुहा।
सम्मुच्छिमा य भणिया पत्तेयाणंतकाया य॥१८६॥

बीजे जोणीभूदे जीवो चंकमदि सो व अण्णो वा।
जेवि य मूलादीया ते पत्तेया पढमदाए॥१८७॥

गूढसिरसंधिपव्वं सगभंगमहीरुहं च छिण्णरुहं।
साहारणं सरीरं तव्विवरीयं च पत्तेयं॥१८८॥

मूले कंदे छल्लीपवालसालदलकुसुमफलबीजे।
समभंगे सदि णंता असमे सदि होंति पत्तेया॥१८६॥

कंदस्स व मूलस्स व सालखंदस्स वावि बहुलतरी।
छल्ली साणंतजिया पत्तेयजिया तु तणुकदरी॥१६०॥

साहारणोदयेण णिगोदसरीरा हवंति सामण्णा।
ते पुण दुविहा जीवा बादरसुहुमात्ति विण्णेया॥१६१॥

साहारणमाहारो साहारणमाणपाणगहणं च।
साहारणजीवाणं साहारणलक्खणं भणियं॥१६२॥

जत्थेक्कु मरइ जीवो तत्थ दु मरणं हवे अणंताणं।
वक्कमइ जत्थ एक्को बक्कमणं तत्थणंताणं॥१६३॥

खंधा असंखलोगा अंडरआवासपुलविदेहावि।
हेट्ठिल्लजोणिगाओ असंखलोगेण गुणिदकमा॥१६४॥

जंबूदीवं भरहो कोसलसागेदतग्घराइं वा।
खंधंडरआवासा पुलविशरीराणि दिट्ठंता॥१६५॥

एगणिगोदशरीरे जीवा दव्वप्पमाणदो दिट्ठा।
सिद्धेहिं अणंतगुणा सव्वेण वितीदकालेण॥१६६॥

अत्थि अणंता जीवा जेहिं ण पत्तो तसाण परिणामो।
भावकलंकसुपउरा णिगोदवासं ण मुंचंति॥१६७॥

बिहि तिहि चहुहिं पंचहिं सहिया जे इंदिएहिं लोयम्हि।
ते तसकाया जीवा णेया वीरोबदेसेण॥१६८॥

उबबादमारणंतियपरिणदतसमुज्झिऊण सेसतसा।
तसणालिबाहिरम्हि य णत्थित्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥१६९॥

पुढवीआदिचउण्हं केवलिआहारदेवणिरयंगा।
अपदिट्ठिदा णिगोदेहिं पदिट्ठिदंगा हवे सेसा॥२००॥

मसुरंबुबिंदुसूईकलाबधयसण्णिहो हवे देहो।
पुढवीआदिचउण्हं तरुतसकाया अणेयविहा॥२०१॥

जह भारवहो पुरिसो वहइ भरं गेहिऊण कावलियं।
एमेव वहइ जीवो कम्मभरं कायकावलियं॥२०२॥

जह कंचणमग्गिगयं मुंचइ किट्टेण कालियाए य।
तह कायबंधमुक्का अकाइया झाणजोगेण॥२०३॥

आउड्ढरासिवारं लोगे अण्णोण्णसंगुणे तेऊ।
भूजलवाऊ अहिया पडिभागोऽसंखलोगो दु॥२०४॥

अपदिट्ठिदपत्तेया असंखलोगप्पमाणया होंति।
तत्तो पदिट्ठिदा पुण असंखलोगेण संगुणिदा॥२०५॥

तसरासिपुढविआदीचउक्कपत्तेयहीणसंसारी।
साहारणजीवाणं परिमाणं होदि जिणदिट्ठं॥२०६॥

सगसगअसंखभागो बादरकायाण होदि परिमाणं।
सेसा सुहुमपमाणं पडिभागो पुव्वणिद्दिट्ठो॥२०७॥

सुहमेसु संखभागं संखाभागा अपुण्णगा इदरा।
जस्सि अपुण्णद्धादो पुण्णद्धा संखगुणिदकमा॥२०८॥

पल्लासंखेज्जवहिदपदरंगुलभाजिदे जगप्पदरे।
जलभूणिपवादरया पुण्णा आवलिअसंखभजिदकमा॥२०९॥

विंदावलिलोगाणमसंखं संखं च तेउवाऊणं।
पज्जत्ताण पमाणं तेहिं विहीणा अपज्जत्ता॥२१०॥

साहारणबादरेसु असंखं भागं असंखगा भागा।
पुण्णाणमपुण्णाणं परिमाणं होदि अणुकमसो॥२११॥

आवलिअसंखसंखेणवहिदपदरंगुलेण हिदपदरं।
कमसो तसतप्पुण्णा पुण्णूणतसा अपुण्णा हु॥२१२॥

आवलिअसंखभागेणवहिदपल्लूणसायरद्धछिदा।
बादरतेपणिभूजलवादाणं चरिम सायरं पुण्णं॥२१३॥

तेवि विसेसेणहिया पल्लासंखेज्जभागमेत्तेण।
तम्हा ते रासीओ असंखलोगेण गुणिदकमा॥२१४॥

दिण्णच्छेदेणवहिदड्ढच्छेदेहिं पयदविरलणं भजिदे।
लद्धमिदइट्ठरासीणण्णोण्णहदीए होदि पयदधणं॥२१५॥

पुग्गलविवाइदेहोदयेण मणवयणकायजुत्तस्स।
जीवस्स जा हु सत्ती कम्मागमकारणं जोगो॥२१६॥

मणवयणाण पउत्ती सच्चा सच्चुभयअणुभयत्थेसु।
तण्णामं होदि तदा तेहिं दु जोगा हु तज्जोगा॥२१७॥

सब्भावो सच्चमणो जो जोगो तेण सच्चमणजोगो।
तव्विवरोदो मोसो जाणुभयं सच्चमोसं ति॥२१८॥

ण य सच्चमोसजुत्ते जो दु मणो सो असच्चमोसमणो।
जो जोगो तेण हवे असच्चमोसो दु मणजोगो॥२१९॥

दसविहसच्चे वयणे जो जोगो सो दु सच्चवचिजोगो।
तव्विवरीओ मोसो जाणुभयं सच्चमोसोत्ति॥२२०॥

जो णेव सच्चमोसो सो जाण असच्चमोसवचिजोगो।
अमणाणं जा भासा सण्णीणमंतणीआदी॥२२१॥

जणवदसम्मदिठवणाणामे रूवे पडुच्चववहारे।
संभावणे य भावे उवमाए दसविहं सच्चं॥२२२॥

भत्तं देवी चंदप्पहपडिमा तह य होदि जिणदत्तो।
सेदो दिग्घो रज्झदि कूरोत्ति य जं हवे वयणं॥२२३॥

सक्को जंबूदीवं पल्लट्टदि पाववज्जवयणं च।
पल्लोवमं च कमसो जणपदसच्चादिदिट्ठंता॥२२४॥

आमंतणि आणवणी याचणियापुच्छणी य पण्णवणी।
पच्चक्खाणी संसयवयणी इच्छाणुलोमा य॥२२५॥

णवमी अणक्खरगदा असच्चमोसा हवंति भासाओ।
सोदाराणं जम्हा वत्तावत्तंससंजणया॥२२६॥

मणवयणाणं मूलणिमित्तं खलु पुण्णदेहउदओ दु।
मोसुभयाणं मूलणिमित्तं खलु होदि आवरणं॥२२७॥

मणसहियाणं वयणं दिट्ठं तप्पुव्वमिदि सजोगह्मि।
उत्तो मणोवयारेणिंदियणाणेण हीणम्मि॥२२८॥

अंगोवंगुदयादो दव्वमणट्ठं जिणिंदचंदह्मि।
मणवग्गणखंधाणं आगमणादो दु मणजोगो॥२२९॥

पुरु महदुदारुरालं एयट्ठो संविजाण तह्मि भवं।
औरालियं तमुच्चइ औरालियकायजोगो सो॥२३०॥

ओरालिय उत्तत्थं विजाण मिस्सं तु अपरिपुण्णं तं।
जो तेण संपजोगो ओरालियमिस्सजोगो सो॥२३१॥

विविहगुणइड्ढिजुत्तं विक्किरियं वा हु होदि वेगुव्वं।
तिस्से भवं च णेयं वेगुव्वियकायजोगो सो॥२३२॥

वेगुव्विय उत्तत्थं विजाण मिस्सं तु अपरिपुण्णं तं।
जो तेण संपजोगो वेगुव्वियमिस्सजोगो सो॥२३३॥

बादरतेऊवाऊपंचिंदियपुण्णगा विगुव्वंति।
ओरालियं सरीरं विगुव्वणप्पं हवे जेसिं॥२३४॥

आहारस्सुदयेण य पमत्तविरदस्स होदि आहारं।
असंजमपरिहरणट्ठं संदेहविणासणट्ठं च॥२३५॥

णियसेत्ते केवलिदुगविरहे णिक्कमणपहुदिकल्लाणे।
परखेत्त संवित्ते जिणजिणघरवंदणट्ठं च॥२३६॥

उत्तमअंगम्हि हवे धादुविहीणं सुहं असंहणणं।
सुहसंठाणं धवलं हत्थपमाणं पसत्थुदयं॥२३७॥

अव्वाघादी अंतोमुहुत्तकालट्ठिदी जहण्णिदरे।
पज्जत्तीसंपुण्णे मरणंपि कदाचि संभवई॥२३८॥

आहरदि अणेण मुणी सुहमे अत्थे सयस्स सदेहे।
गत्ता केवलिपासं तम्हा आहारगो जोगो॥२३९॥

आहारयमुत्तत्थं विजाण मिस्सं तु अपरिपुण्णं तं।
जो तेण संपजोगो आहारयमिस्सजोगो सो॥२४०॥

कम्मेव य कम्मभवं कम्मइयं जो दु तेण संजोगो।
कम्मइयकायजोगो इगिविगतिगसमयकालेसु॥२४१॥

वेगुव्वियआहारयकिरिया ण समं पमत्तविरदम्हि।
जोगोवि एक्ककाले एक्केव य होदि णियमेण॥२४२॥

जेसिं ण संति जोगा सुहासुहा पुण्णपावसंजणया।
ते होंति अजोगिजिणा अणोवमाणंतबलकलिया॥२४३॥

ओरालियवेगुव्वियआहारयतेजणामकम्मुदये।
चउणोकम्मसरीरा कम्मेव य होदि कम्मइयं॥२४४॥

परमाणूहिं अणंतहिं वग्गणसण्णा हु होदि एक्काहु।
ताहिं अणंतहिं णियमा समयपबद्धो हवे एक्को॥२४५॥

ताणं समयपबद्धा सेढिअसंखेज्जभागगुणिदकमा।
णंतेण य तेजदुगा परं परं होदि सुहुमं खु॥२४६॥

ओगाहणाणि ताणं समयपबद्धाण वग्गणाणं च।
अंगुलअसंखभागा उवरुवरिमसंखगुणहीणा॥२४७॥

तस्समयबद्धवग्गणओगाहो सूइअंगुलासंख-
भागहिदविंदअंगुलमुवरुवरिं तेण भजिदकमा॥२४८॥

जीवादोणंतगुणा पडिपरमाणुम्हि विस्ससोवचया।
जीवेण य समवेदा एक्केक्कं पडि समाणा हु॥२४९॥

उक्कस्सट्ठिदिचरिमे सगसगउक्कस्ससंचओ होदि।
पणदेहाणं वरजोगादिससामग्गिसहियाणं॥२५०॥

आवासया हु भवअद्धाउस्सं जोगसंकिलेसो य।
ओकट्टुक्कट्टणया छच्चेदे गुणिदकम्मंसे॥२५१॥

पल्लतियं उवहीणं तेत्तीसांतेमुहुत्त उवहीणं।
छावट्ठी कम्मट्ठिदि बंधुक्कस्सट्ठिदी ताणं॥२५२॥

अंतोमुहुत्तमेत्तं गुणहाणी होदि आदिमतिगाणं।
पल्लासंखेज्जदिमं गुणहाणी तेजकम्माणं॥२५३॥

एक्कं समयपबद्धं बंधदि एक्कं उदेदि चरिमम्मि।
गुणहाणीण दिवड्ढं समयपबद्धं हवे सत्तं॥२५४॥

णवरि य दुसरीराणं गलिदवसेसाउमेत्तठिदिबंधो।
गुणहाणीण दिवड्ढं संचयमुदयं च चरिमम्हि॥२५५॥

ओरालियवरसंचं देवुत्तरकुरुवजादजीवस्स।
तिरियमणुस्सस्स हवे चरिमदुचरिमे तिपल्लठिदिगस्स॥२५६॥

वेगुव्वियवरसंचं बावीससमुद्द आरणदुगम्हि।
जह्मा वरजोगस्स य वारा अण्णत्थ णहि बहुगा॥२५७॥

तेजासरीरजेट्ठं सत्तमचरिमम्हि बिदियवारस्स।
कम्मस्स वि तत्थेव य णिरये बहवारभमिदस्स॥२५८॥

बादरपुण्णा तेऊ सगरासीए असंखभागमिदा।
विक्किरियसत्तिजुत्ता पल्लासंखेज्जया बाऊ॥२५९॥

पल्लासंखेज्जाहयविंदंगुलगुणिदसेढिमेत्ता हु।
वेगुव्वियपंचक्खा भोगभुमा पुह विगुव्वंति॥२६०॥

देवेहिं सादिरेया तिजोगिणो तेहिं हीण तसपुण्णा।
वियजोगिणो तदूणा संसारी एक्कजोगा हु॥२६१॥

अंतोमुहुत्तमेता चउमणजोगा कमेण संखगुणा।
तज्जोगो सामण्णं चउवचिजोगा तदो दु संखगुणा॥२६२॥

तज्जोगो सामण्णं काओ संखाहदो तिजोगमिदं।
सव्वसमास विभजिदं सगसग गुणसंगुणे दु सगरासी॥२६३॥

कम्मोरालियमिस्सयओरालद्धासु संचिदअणंता।
कम्मोरालियमिस्सयओरालियजोगिणो जीवा॥२६४॥

समयत्तयसंखावलिसंखगुणावलिसमासहिदरासी।
सगगुणगुणिदे थोवो असंखसंखाहदो कमसो॥२६५॥

सोवक्कमाणुवक्कमकालो संखेज्जवासठिदि वाणे।
आवलिअसंखभागो संखेज्जावलिपमा कमसो॥२६६॥

तहिं सव्वे सुद्धसला सोवक्कमकालदो दु संखगुणा।
तत्तो संखगुणूणा अपुण्णकालम्हि सुद्धसला॥२६७॥

तंसुद्धसलागाहिदणियरासिमपुण्णकाललद्धाहिं।
सुद्धसलागाहिं गुणे वेंतरवेंगुव्वमिस्सा हू॥२६८॥

तहिं सेसदेवणारयमिस्सजुदे सव्वमिस्सवेगुव्वं।
सुरणिरयकायजोगा वेगुव्वियकायजोगा हु॥२६९॥

आहारकायजोगा चउवण्णं होंति एकसमयम्हि।
आहारमिस्सजोगा सत्तावीसा दु उक्कस्सं॥२७०॥

पुरुसिच्छिसंढवेदोदयेण पुरिसिच्छिसंढओ भावे।
णामोदयेण दव्वे पाएण समा कहिं विसमा॥२७१॥

वेदस्सुदीरणाए परिणामस्स य हवेज्ज संमोहो।
संमोहेण ण जाणदि जीवो हि गुणं व दोषं वा॥२७२॥

पुरुगुणभोगे सेदे करेदि लोयम्मि पुरुगुणं कम्मं।
पुरुउत्तमो य जह्मा तह्मा सो वण्णिओ पुरिसो॥२७३॥

छादयदि सयं दोसे णयदो छाददि परंवि दोसेण।
छादणसीला जह्मा तह्मा सा वण्णिया इत्थी॥२७४॥

णेवित्थी णेव पुमं णउंसओ उहयलिङ्गविदिरित्तो।
इट्ठावग्गिसमाणगवेदणगरुओ कलुसचित्तो॥२७५॥

तिणकारिसिट्ठपागग्गिसरिसपरिणामवेयणुम्मुक्का।
अवगयवेदा जीवा सगसंभवणंतवरसोक्खा॥२७६॥

जोइसियवाणजोणिणितिरिक्खपुरुसा य सण्णिणो जीवा।
तत्तेउपम्मलेस्सा संखगुणूणा कमेणेदे॥२७७॥

इगिपुरिसे बत्तीसं देवी तज्जोगभजिददेवोघे।
सगगुणगारेण गुणे पुरूषा महिला य देवेसु॥२७८॥

देवेहिं सादिरेया पुरिसा देवीहिं साहिया इत्थी।
तेहिं विहीण सवेदो रासी संठाण परिमाणं॥२७६॥

गब्भणपुइत्थिसण्णी सम्मुच्छणसण्णिपुण्णगा इदरा।
वुरुजा असण्णिगब्भजणपुइत्थीवाणजोइसिया॥२८०॥

थोवा तिसु संखगुणा तत्तो आवलिअसंखभागगुणा।
पल्लासंखेज्जगुणा तत्तो सव्वत्थ संखगुणा॥२८१॥

सुहदुक्खसुबहुसस्सं कम्मक्खेत्तं कसेदि जीवस्स।
संसारदूरमेरं तेण कसाओत्ति णं वेंति॥२८२॥

सम्मत्तदेससयलचरित्तजहक्खादचरणपरिणामे।
घादंति वा कषाया चउसोलअसंखलोगमिदा॥२८३॥

सिलपुढविभेदधूलीजलराइसमाणओ हवे कोहो।
णारयतिरियणरामरगईसु उप्पायओ कमसो॥२८४॥

सेलट्ठिकट्ठवेत्ते णियभेएणणुहरंतओ माणो।
णारयतिरियणरामरगईसु उप्पायओ कमसो॥२८५॥

वेणुवमूलोरब्भयसिंगे गोमुत्तए य खोरप्पे।
सरिसीमाया णारयतिरियणरामरगईसु खिवदि जियं॥२८६॥

किमिरायचक्कतणुमलहरिद्दराएण सरिसओ लोहो।
णारयतिरिक्खमाणुसदेवेसुप्पायओ कमसो॥२८७॥

णारयतिरिक्खिणरसुरगईसु उप्पण्णपढमकालम्हि।
कोहो माया माणो लोहुदओ अणियमो वापि॥२८८॥

अप्पपरोभयबाधणबंधासंजमणिमित्तकोहादी।
जेसिं णत्थि कसाया अमला अकसाइणो जीवा॥२८९॥

कोहादिकसायाणं चउचउदसवीस होंति पदसंखा।
सत्तीलेस्साआउगबंधाबंधगदभेदेहिं॥२९०॥

सिलसेलवेणुमूलक्किमिरायादी कमेण चत्तारि।
कोहादिकसायाणं सत्तिं पडि होंति णियमेण॥२९१॥

किण्हं सिलासमाणे किण्हादी छक्कमेण भूमिम्हि।
छक्कादी सुक्कोत्ति य धूलिम्मि जलम्मि सुक्केक्का॥२९२॥

सेलगकिण्हे सुण्णं णिरयं च य भूगएगबिट्ठाणे।
णिरयं इगिबितिआऊ तिट्ठाणे चारि सेसपदे॥२९३॥

धूलिगछक्कट्ठाणे चउराऊ तिगदुगं च उवरिल्लं।
पणचदुठाणे देवं देवं सुण्णं च तिट्ठाणे॥२९४॥

सुण्णं दुगइगिठाणे जलम्हि सुण्णं असंखभजिदकमा।
चउचोदसबीसपदा असंखलोगा हु पत्तेयं॥२९५॥

पुह पुह कसायकालो णिरये अंतोमुहुत्तपरिमाणो।
लोहादी संखगुणो देवेसु ये कोहपहुदीदो॥२९६॥

सव्वसमासेणवहिदसगसगरासी पुणोवि संगुणिदे।
सगसगगुणगारेहिं य सगसगरासीण परिमाणं॥२९७॥

णरतिरिय लोहमायाकोहो माणो विइंदियादिव्व।
आवलिअसंखभज्जा सगकालं वा समासेज्ज॥२९८॥

जाणइ तिकालविसए दव्वगुणे पज्जए य बहुभेदे।
पच्चक्खं च परोक्खं अणेण णाणेत्ति णं बेंति॥२९९॥

पंचेव होंति णाणा मदिसुदओहीमणं च केवलयं।
खयउवसमिया चउरो केवलणाणं हवे खइयं॥३००॥

अण्णाणतियं होदि हु सण्णाणतियं खु मिच्छअणउदये।
णवरि विभंगं णाणं पंचिंदियसण्णिपुण्णेव॥३०१॥

मिस्सुदये सम्मिस्सं अण्णाणतियेण णाणतियमेव।
संजमविसेससहिए मणपज्जवणाणमुद्दिट्ठं॥३०२॥

विसजंतकूडपंजरबंधादिसु विणुवदेसकरणेण।
जा खलु पवत्तइ मदी अण्णाणंति णं बेंति॥३०३॥

आभीयमासुरक्खं भारहरामायणादिउवएसा।
तुच्छा असाहणीया सुयअण्णाणंति णं बेंति॥३०४॥

विवरीयमोहिणाणं खओवसमियं च कम्मबीजं च।
वेभंगोत्ति पउच्चइ समत्तणाणीण समयम्हि॥३०५॥

अहिमुहणियमियबोहणमाभिणिबोहियमणिंदिइंदियजम्।
अवगहईहावायाधारणगा होंत्ति पत्तेयं॥३०६॥

विसयाणं विसईणं संजोगाणंतरं हवे णियमा।
अवगहणाणं गहिदे विसेसकंखा हवे ईहा॥३०७॥

वेंजणअत्थअवग्गहभेदा हु हवंति पत्तपत्तत्थे।
कमसो ते वावरिदा पढमं ण हि चक्खुमणसाणं॥३०८॥

ईहणकरणेण जदा सुणिण्णओ होदि सो अवाओ दु।
कालांतरेवि णिणिणदवत्थुसमरणस्स कारणं तुरियं॥३०६॥

बहु बहुविहं च खिप्पाणिस्सिदणुत्तं धुवं च इदरं च।
तत्थेक्केक्के जादे छत्तीसं तिसयभेदं तु॥३१०॥

एक्कचउक्कं चउवीसट्ठावीसं च तिप्पडिं किच्चा।
इगिछव्वारसगुणिदे मदिणाणे होंति ठाणाणि॥३११॥

बहुवत्तिजादिगहणे बहुबहुविहमियरमियरगहणम्हि।
सगणामादो सिद्धा खिप्पादी सेदरा य तहा॥३१२॥

वत्थुस्स पदेसादो वत्थुग्गहणं तु वत्थुदेसं वा।
सकलं वा अवलंबिय अणिस्सिदं अण्णवत्थुगई॥३१३॥

पुक्खरगहणे काले हत्थिस्स य वदणगवयगहणे वा।
वत्थंतरचंदस्स य धेणुस्स य बोहणं च हवे॥३१४॥

अत्थादो अत्थंतरमुवलंभ तं भणंति सुदणाणं।
आभिणिबोहियपुव्वं णियमेणिह सद्दजं पमुहं॥३१५॥

लोगाणमसंखमिदा अणक्खरप्पे हवंति छट्ठाणा।
वेरूवछट्ठवग्गपमाणं रुऊणमक्खारगं॥३१६॥

पज्जायक्खरपदसंघादं पडिवत्तियाणिजोगं च।
दुगवारपाहुडं च य पाहुडयं वत्थु पुव्वं च॥३१७॥

तेसिं च समासेहि य वीसविहं वा हु होदि सुदणाणं।
आवरणस्सवि भेदा तत्तियमेत्ता हवंतित्ति॥३१८॥

सुहमणिगोदअपज्जत्तयस्स जादस्स पढमसमयम्हि।
हवदि हु सव्वजहण्णं णिच्चुग्घाडं णिरावरणं॥३१९॥

सुहमणिगोदअपज्जत्तगेसु सगसंभवेसु भमिऊण।
चरिमापुण्णतिवक्काणादिमवक्कट्ठियेव हवे॥३२०॥

सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स जादस्स पढमसमयम्हि।
फासिंदियमदिपुव्वं सुदणाणं लद्धिअक्खरयं॥३२१॥

णवरि विसेसं जाणे सुहुमजहण्णं तु पज्जयं णाणं।
पज्जायावरणं पुण तदणंतरणाणभेदम्हि॥३२२॥

अवरुवरिम्मि अणंतमसंखं संखं च भागवड्ढीए।
संखमसंखमणंतं गुणवड्ढी होंति हु कमेण॥३२३॥

जीवाणं च य रासी असंखलोगा वरं खु संखेज्जं।
भागगुणम्हि य कमसो अवट्ठिदा होंति छट्ठाणा॥३२४॥

उव्वंकं चउरंकं पणछस्सत्तंक अट्ठअंकं च।
छव्वड्ढीणं सण्णा कमसो संदिट्ठिकरणट्ठं॥३२५॥

अंगुलअसंखभागे पुव्वगवड्ढीगदे दु परवड्ढी।
एक्कं वारं होदि हु पुणो पुणो चरिमउड्ढित्ती॥३२६॥

आदिमछट्ठाणम्हि य पंचय वड्ढी हवंति सेसेसु।
छव्वड्ढीओ होंति हु सरिसा सव्वत्थ पदसंखा॥३२७॥

छट्ठाणाणं आदी अट्ठंकं होदि चरिममुव्वंकं।
जम्हा जहण्णणाणं अट्ठंकं होदि जिणदिट्ठं॥३२८॥

एक्कं खलु अट्ठंकं सत्तंकं कंडयं तदो हेट्ठा।
रूवहियकंडएण य गुणिदकमा जावमुव्वंकं॥३२९॥

सव्वसमासो णियमा रुवाहियकंडयस्स वग्गस्स।
बिंदस्स य संवग्गो होदित्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥३३०॥

उक्कस्ससंखमेत्तं तत्तिचउत्थेक्कदालछप्पण्णं।
सत्तदसमं च भागं गंतूण य लद्धिअक्खरं दुगुणं॥३३१॥

एवं असंखलोगा अणक्खरप्पे हवंति छाट्ठणा।
ते पज्जायसमासा अक्खरगं उवरि वोच्छामि॥३३२॥

चरिमुव्वंकेणवहिदअत्थक्खरगुणिदचरिममुव्वंकं।
अत्थक्खरं तु णाणं होदित्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥३३३॥

पण्णवणिज्जा भावा अणंतभागो दु अणभिलप्पाणं।
पण्णवणिज्जाणं पुण अणंतभागो सुदणिबद्धो॥३३४॥

एयक्खरादु उवरिं एगेगेणक्खरेण वड्ढंतो।
संखेज्जे खलु उड्ढे पदणामं होदि सुदणाणं॥३३५॥

सोलससयचउतीसा कोडी तियसीदिलक्खयं चेव।
सत्तसहस्साट्ठसया अट्ठासीदी य पदवण्णा॥३३६॥

एयपदादो उवरिं एगेगेणक्खरेण वड्ढंतो।
संखेज्जसहस्सपदे उड्ढे संघादणाम सुदं॥३३७॥

एक्कदरगदिणिरूवयसंघादसुदादु उवरि पुव्वं वा।
वण्णे संखेज्जे संघादे उड्ढम्हि पडिवत्ती॥३३८॥

चउगइसरूवरूवयपडिवत्तीदो दु उवरि पुव्वं वा।
वण्णे संखेज्जे पडिवत्ती उड्ढम्हि अणियोगं॥३३९॥

चोद्दसमग्गणसंजुदअणियोगादुवरि वड्ढिदे वण्णे।
चउरादीअणियोगे दुगवारं पाहुडं होदि॥३४०॥

अहियारो पाहुडयं एयट्ठो पाहुडस्स अहियारो।
पाहुडपाहुडणामं होदित्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥३४१॥

दुगवारपाहुडादो उवरिं वण्णे कमेण चउवीसे।
दुगवारपाहुडे संउड्ढे खलु होदि पाहुडयं॥३४२॥

वीसं वीसं पाहुडअहियारे एक्क वत्थुअहियारो।
एक्केक्कवण्णउड्ढी कमेण सव्वत्थ णायव्वा॥३४३॥

दस चोदसट्ठ अट्ठारसयं बारं च बार सोलं च।
वीसं तीसं पण्णारसं च दस चदुसु वत्थूणं॥३४४॥

उप्पायपुव्वगाणियविरियपवादत्थिणत्थियपवादे।
णाणासच्चपवादे आदाकम्मप्पवादे य॥३४५॥

पच्चक्खाणे विज्जाणुवादकल्लाणपाणवादे य।
किरियाविसालपुव्वे कमसोथ तिलोयविंदुसारे य॥३४६॥

पण णउदिसया वत्थू पाहुडया तियसहस्सणवयसया।
एदेसु चोद्दसेसु वि पुव्वेसु हवंति मिलिदाणि॥३४७॥

अत्थक्खरं च पदसंघातं पडिवत्तियाणिजोगं च।
दुगवारपाहुडं च य पाहुडयं वत्थुपुव्वं च॥३४८॥

कमवण्णुत्तरवड्ढिय ताण समासा य अक्खरगदाणि।
णाणवियप्पे वीसं गंथे बारस य चोद्दसयं॥३४९॥

बारुत्तरसयकोडी तेसीदी तह य होंति लक्खाणं।
अट्ठावण्णसहस्सा पंचेव पदाणि अंगाणं॥३५०॥

अडकोडिएयलक्खा अट्ठसहस्सा य एयसदिगं च।
पण्णत्तरि वण्णाओ पइण्णयाणं पमाणं तु॥३५१॥

तेत्तीस बेंजणाइं सत्तावीसा सरा तहा भणिया।
चत्तारि य जोगवहा चउसट्ठी मूलवण्णाओ॥३५२॥

चउसट्ठिपदं विरलिय दुगं च दाउण संगुणं किच्चा।
रूऊणंच कए पुण सुदणाणस्सक्खरा होंति॥३५३॥

एकट्ठचच य छस्सत्तयं चच य सुण्णसत्ततियसत्ता।
सुण्णं ण्व पण पंच य एक्कं छक्केक्कगो य पणगं च॥३५४॥

मज्झिमपदक्खरवहिदवण्णा ते अंगपुव्वगपदाणि।
सेसक्खरसंखा ओ पइण्णयाणं पमाणं तु॥३५५॥

आयारे सुद्दयडे ठाणे समवायणामगे अंगे।
तत्तो विक्खापण्णत्तीए णाहस्स धम्मकहा॥३५६॥

तो वासयअज्झयणे अंतयडे णुत्तरोववाददसे।
पण्हाणं वायरणे विवायसुत्ते य पदसंखा॥३५७॥

अट्ठारस छत्तीसं बादालं अडकडी अडवि छप्पण्णं।
सत्तरि अट्ठावीसं चउदालं सोलस सहस्सा॥३५८॥

इगिदुगपंचेयारं तिवीसदुतिणउदिलक्ख तुरियादी।
चुलसीदिलक्खमेया कोडी य विवागसुत्तम्हि॥३५९॥

वापणनरनोनानं एयारंगे जुदी हु वादम्हि।
कनजतजमताननमं जनकनजयसीम बाहिरे वण्णा॥३६०॥

चंदरविजंबुदीवयदीवसमुद्दयवियाहपण्णत्ती।
परियम्मं पंचविहं सुत्तं पढमाणि जोगमदो॥३६१॥

पुव्वं जलथलमाया आगासयरूवगयमिमा पंच।
भेदा हु चूलियाए तेसु पमाणं इणं कमसो॥३६२॥

गतनम मनगं गोरम मरगत जवगातनोननं जजलक्खा।
मननन धममननोननननामं रनधजधरानन जलादी॥३६३॥

याजकनामेनाननमेदाणि पदाणि होंति परिकम्मे।
कानवधिवाचनाननमेसो पुण चूलियाजोगो॥३६४॥

पण्णट्ठदाल पणतीस तीस पण्णास पण्ण तेरसदं।
णउदी दुहाल पुव्वे पणवण्णा तेरससयाइं॥३६५॥

छस्सयपण्णासाइं चउसयपण्णास छसयपणुवीसा।
विहि लक्खेहि दु गुणिया पंचम रूऊण छज्जुदा छट्ठे॥३६६॥

सामाइयचउवीसत्थयं तदो बंदणा पडिक्कमणं।
वेणइयं किदियम्मं दसवेयालं च उत्तरज्झयणं॥३६७॥

कप्पववहारकप्पाकप्पियमहकप्पियं च पुंडरियं।
महपुंडरीयणिसिहियमिदि चोद्दसमंगबाहिरयं॥३६८॥

सुदकेवलं च णाणं दोण्णिवि सरिसाणि होंति बोहादो।
सुदणाणं तु परोक्खं पच्चक्खं केवलं णाणं॥३६९॥

अवहीयदित्ति ओही सीमाणाणेत्ति वण्णियं समये।
भवगुणपच्चयविहियं जमोहिणाणेत्ति णं बेंत्ति॥३७०॥

भवपच्चइगो सुरणिरयाणं तित्थेवि सव्वअंगुत्थो।
गुणपच्चइगो णरतिरियाणं संखादिचिह्नभवो॥३७१॥

गुणपच्चइगो छद्धा अणुगावट्ठिदपवड्ढमाणिदरा।
देसोही परमोही सव्वोहित्ति य तिधा ओही॥३७२॥

भवपच्चइगो ओही देसोही होदि परमसव्वोही।
गुणपच्चइगो णियमा देसोही वि य गुणे होदि॥३७३॥

देसोहिस्स य अवरं णरतिरिये होदि संजदम्हि वरं।
परमोही सव्वोही चरमसरीरस्स विरदस्स॥३७४॥

पडिवादी देसोही अप्पडिवादी हवंति सेसा ओ।
मिच्छत्तं अविरमणं ण य पडिवज्जंति चरमदुगे॥३७५॥

दव्वं खेत्तं कालं भावं पडिरूवि जाणदे ओही।
अवरादुक्कस्सोत्ति य वियप्परहिदो दु सव्वोही॥३७६॥

णोकम्मुरालसंचं मज्झिमजोगज्जियं सविस्सचयं।
लोयविभत्तं जाणदि अवरोही दव्वदो णियमा॥३७७॥

सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स जादस्स तदियसमयम्हि।
अवरोगाहणमाणं जहण्णयं ओहिखेत्तं तु॥३७८॥

अवरोहिखेत्तदीहं वित्थारूस्सेहयं ण जाणामो।
अण्णं पुण समकरणे अवरोगाहणपमाणं तु॥३७९॥

अवरोगाहणमाणं उस्सेहंगुलअसंखभागस्स।
सूइस्स य घणपदरं होदि हु तक्खेत्तसमकरणे॥३८०॥

अवरं तु ओहिखेत्तं उस्सेहं अंगुलं हवे जम्हा।
सुहमोगाहणमाणं उवरि पमाणं तु अंगुलयं॥३८१॥

अवरोहिखेत्तमज्झे अवरोही अवरदव्वमवगमइ।
तद्दव्वस्सवगाहो उस्सेहासंखघणपदरो॥३८२॥

आवलियअसंखभागं तीदभविस्सं च कालदो अवरं।
ओही जाणदि भावे कालअसंखेज्जभागं तु॥३८३॥

अवरद्दव्वादुवरिमदव्ववियप्पाय होदि धुवहारो।
सिद्धाणंतिमभागो अभव्वसिद्धादणंतगुणो॥३८४॥

धुवहारकम्मवग्गणगुणगारं कम्मवग्गणं गुणिदे।
समयपबद्धपमाणं जाणिज्जो ओहिविसयम्हि॥३८५॥

मणदव्ववग्गणाण वियप्पाणंतिमसमं खु धुवहारो।
अवरुक्कस्सविसेसा रूवहिया तव्वियप्पा हु॥३८६॥

अवरं होदि अणंतं अणंतभागेण अहियमुक्कस्सं।
इदि मणभेदाणंतिमभागो दव्वम्मि धुवहारो॥३८७॥

धुवहारस्स पमाणं सिद्धाणंतिमपमाणमेत्तं पि।
समयपबद्धणिमित्तं कम्मणवग्गणगुणादो दु॥३८८॥

होदि अणंतिमभागो तग्गुणगारो वि देसओहिस्स।
दो ऊणदव्वभेदपमाणद्धुवहारसंवग्गो॥३८९॥

अंगुलअसंखगुणिदा खेत्तवियप्पा य दव्वभेदा हु।
खेत्तवियप्पा अवरुक्कस्सविसेसं हवे एत्थ॥३९०॥

अंगुल असंखभागं अवरं उक्कस्सयं हवे लोगो।
इदिवग्गण गुणगारो असंखधुवहार संवग्गो॥३९१॥

वग्गणरासिपमाणं सिद्धाणंतिमपमाणमेत्तंपि।
दुगसहियपरमभेदपमाणवहाराण संवग्गो॥३९२॥

परमावहिस्स भेदा सगओगाहणवियप्पहदतेऊ।
इदि धुवहारं वग्गणगुणगारं वग्गणं जाणे॥३९३॥

देसोहिअवरदव्वं धुवहारेणवहिदे हवे विदियं।
तदियादिवियप्पेसु वि असंखवारोत्ति एस कमो॥३९४॥

देसोहिमज्झभेदे सविस्ससोवचयतेजकम्मंगं।
तेजोभासमणाणं वग्गणयं केवलं जत्थ॥३९५॥

पस्सदि ओहे तत्थ असंखेज्जाओ हवंति दीउवही।
वासाणि असंखेज्जा होंति असंखेज्जगुणिदकमा॥३६६॥

तत्तो कम्मइयस्सिगिसमयपबद्धं विविस्ससोवचयं।
धुवहारस्स विभज्जं सव्वोही जाव ताव हवे॥३६७॥

एदम्हि विभज्जंते दुचरिमदेसावहिम्मि वग्गणयं।
चरिमे कम्मइयस्सिगिवग्गणमिगिवारभजिदं तु॥३६८॥

अंगुलअसंखभागे दव्वियप्पे गदे दु खेत्तम्हि।
एगागासपदेसो वड्ढदि संपुण्णलोगोत्ति॥३६६॥

आवलिअसंखभागो जहण्णकालो कमेण समयेण।
वड्ढदि देसोहिवरं पल्लं समऊणयं जाव॥४००॥

अंगुलअसंखभागं धुवरूवेण य असंखवारं तु।
असंखसंखं भागं असंखवारं तु अद्धुवगे॥४०१॥

धुवअद्धुवरूवेण य अवरे खेत्तम्हि वड्ढिदे खेत्ते।
अवरे कालम्हि पुणो एक्केक्कं वड्ढिदे समयं॥४०२॥

संखातीदा समया पढमे पव्वम्मि उभयदो वड्ढी।
संखा कालं अस्सिय पढमादी कंडये वोच्छं॥४०३॥

अंगुलमावलियाए भागमसंखेज्जदोवि संखेज्जो।
अंगुलमावलियंतो आवलियं चांगुलपुधत्तं॥४०४॥

आवलियपुधत्तं घणहत्थो तह गाउअं मुहूत्तंतो।
जोयण भिण्णमुहुत्तं दिवसंतो पण्णुवीसं तु॥४०५॥

भरहम्मि अद्धमासं साहियमासं च जंबुदीवम्मि।
वासं च मणुअलोए वासपुधत्तं च रुचगम्मि॥४०६॥

संखेज्जपमे काले दीवसमुद्दा हवंति संखेज्जा।
कालम्मि असंखेज्जे दीवसमुद्दा असंखेज्जा॥४०७॥

कालविसेसेणवहिदखेत्तविसेसो धुवा हवे वड्ढी।
अद्धुववड्ढीवि पुणो अविरुद्धं इट्ठकंडम्मि॥४०८॥

अंगुलअसंखभागं संखं वा अंगुलं च तस्सेव।
संखमसंखं एवं सेढीपदरस्स अद्धुवगे॥४०९॥

कम्मइयवग्गणं धुवहारेणिगिवारभाजिदे दव्वं।
उक्कस्सं खेत्तं पुण लोगो संपुण्णओ होदि॥४१०॥

पल्ल समऊण काले भावेण असंखलोगमेत्ता हु।
दव्वस्स य पज्जाया वरदेसोहिस्स विसया हु॥४११॥

काले चदुण्ण वुड्ढी कालो भजिदव्वो खेत्तवुड्ढी य।
वुड्ढीए दव्वपज्जय भजिदव्वा खेत्तकाला हु॥४१२॥

देसावहिवरदव्वं धुवहारेणवहिदे हवे णियमा।
परमावहिस्स अवरं दव्वपमाणं तु जिणदिट्ठं॥४१३॥

परमावहिस्स भेदा सगउग्गाहणवियप्पहदतेऊ।
चरमे हारपमाणं जेट्ठस्स य होदि दव्वं तु॥४१४॥

सव्वावहिस्स एक्को परमाणू होदि णिव्वियप्पो सो।
गंगामहाणइस्स पवाहोव्व धुवो हवे हारो॥४१५॥

परमोहिदव्वभेदा जेत्तियमेत्ता हु तेत्तिया होंति।
तस्सेव खेत्तकालवियप्पा विसया असंखगुणिदकमा॥४१६॥

आवलिमसंखभागा इच्छिदगच्छधणमाणमेत्ताओ।
देसावहिस्स खेत्ते कालेवि य होंति संवग्गे॥४१७॥

गच्छसमा तक्कालियतीदे रूऊणगच्छधणमेत्ता।
उभयेवि य गच्छस्स य धणमेत्ता होंति गुणगारा॥४१८॥

परमावहिवरखेत्तेणवहिदउक्कस्सओहिखेत्तं तु।
सव्वावहिगुणगारो कालेवि अंसखलोगो दु॥४१९॥

इच्छिदरासिच्छेदं दिण्णच्छेदेहिं भाजिदे तत्थ।
लद्धमिददिण्णरासीणब्भासे इच्छिदो रासी॥४२०॥

दिण्णच्छेदेणवहिदलोगच्छेदेण पदधणे भजिदे।
लद्धमिदलोगगुणणं परमावहिचरिमगुणगारो॥४२१॥

आवलिअसंखभागा जहण्णदव्वस्स होंति पज्जाया।
कालस्स जहण्णादो असंखगुणहीणमेत्ता हु॥४२२॥

सव्वोहित्तियकमसो आवलिअसंखभागगुणिदकमा।
दव्वाणं भावाणं पदसंखा सरिसगा होंति॥४२३॥

सत्तमखिदिम्मि कोसं कोसस्सद्धं पवड्ढदे ताव।
जाव य पढये णिरये जोयणमेक्कं हवे पुण्णं॥४२४॥

तिरिये अवरं ओघो तेजोयंते य होदि उक्कस्सं।
मणुए ओघं देवे जहाकमं सुणह वोच्छामि॥४२५॥

पणुवीसजोयणाइं दिवसंतं च य कुमारभोम्माणं।
संखेज्जगुणं खेत्तं बहुगं कालं तु जोइसिगे॥४२६॥

असुराणमसंखेज्जा कोडीओ सेसजोइसंताणं।
संखातीदसहस्सा उक्कस्सोहीण विसओ दु॥४२७॥

असुराणमसंखेज्जा वस्सा पुण सेसजोइसंताणं
तस्संखेज्जदिभागं कालेण य होदि णियमेण॥४२८॥

भवणतियाणमधोधो थोवं तिरियेण होदि बहुगं तु।
उड्ढेण भवणवासी सुरगिरिसिहरोत्ति पस्संति॥४२९॥

सक्कीसाणा पढमं बिदियं तु सणक्कुमारमाहिंदा।
तदियं तु बम्हलांतव सुक्कसहस्सारया तुरियं॥४३०॥

आणदपाणदवासी आरण तह अच्चुदा य पस्संति।
पंचमखिदिपेरंतं छट्ठिं गेवेज्जगा देवा॥४३१॥

सव्वं च लोयणालिं पस्संति अणुत्तरेसु जे देवा।
सक्खेत्ते य सकम्मे रूवगदमणंतभागं च॥४३२॥

कप्पसुराणं सगसगओहीखेत्तं विविस्ससोवचयं।
ओहीदव्वपमाणं संठाविय धुवहरेण हरे॥४३३॥

सगसगखेत्तपदेससलायपमाणं समप्पदे जाव।
तत्थतणचरिमखंडं तत्थतणोहिस्स दव्वं तु॥४३४॥

सोहम्मीसाणाणमसंखेज्जाओ हु वस्सकोडीओ।
उवरिमकप्पचउक्के पल्लासंखेज्जभागो दु॥४३५॥

तत्तो लांतवकप्पप्पहुदी सव्वत्थसिद्धिपेरंतं।
किंचूणपल्लमेत्तं कालपमाणं जहाजोग्गम्॥४३६॥

जोइसियंताणोहीखेत्ता उत्ता ण होंति घणपदरा।
कप्पसुराणं च पुणो विसरित्थं आयदं होदि॥४३७॥

चिंतियमचिंतियं वा अद्धं चिंतियमणेयभेयगयं।
मणपज्जवंति उच्चइ जं जाणइ तं खु णरलोए॥४३८॥

मणपज्जवं च दुविहं उजुविउलमदित्तिउजुमदीतिविहा।
उजुमणवयणे काए गदत्थविसयात्ति णियमेण॥४३९॥

विउलमदीवि य छद्धा उजुगाणुजुवयणकायचित्तगयं।
अत्थं जाणदि जम्हा सद्दत्थगया हु ताणत्था॥४४०॥

तियकालविसयरूविं चितंतं वट्टमाणजीवेण।
उजुमदिणाणं जाणदि भूदभविस्सं च विउलमदी॥४४१॥

सव्वंगअंगसंभवचिण्हादुप्पज्जदे जहा ओही।
मणपज्जवं च दव्वमणादो उप्पज्जदे णियमा॥४४२॥

हिदि होदि हु दव्वमणं वियसियअट्ठच्छदारविंदं वा।
अङ्गोबंगुदयादो मणवग्गणखंधदो णियमा॥४४३॥

णोइंदियत्ति सण्णा तस्स हवे सेसइंदियाणं वा।
वत्तत्ताभावादो मणमणपज्जं च तत्थ हवे॥४४४॥

मणपज्जवं च णाणं सत्तसु विरदेसु सत्तइड्ढीणं।
एगादिजुदेसु हवे वड्ढंतविसिट्ठचरणेसु॥४४५॥

इदियणोइंदियजोगादिं पेक्खित्तु उजुमदी होदि।
णिरवेक्खिय विउलमदी ओहिं वा होदि णियमेण॥४४६॥

पडिवादी पुण पढमा अप्पडिवादी हु होदि बिदिया हु।
सुद्धो पढमो बोहो सुद्धतरो विदियबोहो दु॥४४७॥

परमणसिट्ठियमट्ठं ईहामदिणा उजुट्ठियं लहिय।
पच्छा पच्चक्खेण य उजुमदिणा जाणदे णियमा॥४४८॥

चिंतियमचिंतियं वा अद्धं चिंतियमणेयभेयगयं।
ओहिं वा विउलमदी लहिऊण विजाणए पच्छा॥४४९॥

दव्वं खेत्तं कालं भावं पडि जीवलक्खियं रूविं।
उजुविउलमदी जाणदि अवरवरं मज्झिमं च तहा॥४५०॥

अवरं दव्वमुदालियसरीरणिज्जिण्णसमयबद्धं तु।
चक्खिदियणिज्जण्णं उक्कस्सं उजुमदिस्स हवे॥४५१॥

मणदव्ववग्गणाणमणंतिमभागेण उजुगउक्कस्सं।
खंडिदमेत्तं होदि हु विउलमदिस्सावरं दव्वं॥४५२॥

अट्ठण्हं कम्माणं समयपवद्धं विविस्ससोवचयं।
धुवहारेणिगिवारं भजिदे विदियं हवे दव्वं॥४५३॥

तव्विदियं कप्पाणमसंखेज्जाणं च समयसंखसमं।
धुवहारेणवहरिदे होदि हु उक्कस्सयं दव्वं॥४५४॥

गाउयपुधत्तमवरं उक्कस्सं होदि जोयणपुधत्तं।
विउलमदिस्सय अवरं तस्स पुधत्तं वरं खु णरलोयं॥४५५॥

णरलोएत्ति य वयणं विक्खंभणियामयं ण वट्टस्स।
जम्हा तग्घणपदरं मणपज्जवखेत्तमुद्दिट्ठं॥४५६॥

दुगतिगभवा हु अवरं सत्तट्ठभवा हवंति उक्कस्सं।
अडणवभवा हु अवरमसंखेज्जं विउलउक्कस्सं॥४५७॥

आवलिअसंखभागं अवरं च वरं च वरमसंखगुणं।
तत्तो असंखगुणिदं असंखलोगं तु विउलमदी॥४५८॥

मज्झिमदव्वं खेत्तं कालं भावं च मज्झिमं णाणं।
जाणदि इदि मणपज्जवणाणं कहिदं समासेण॥४५९॥

संपुण्णं तु समग्गं केवलमसवत्त सव्वभावगयं।
लोयालोयवितिमिरं केवलणाणं मुणेदव्वं॥४६०॥

चदुगदिमदिसुदबोहा पल्लासंखेज्जया हु मणपज्जा।
संखेज्जा केवलिणो सिद्धादो होंति अदिरित्ता॥४६१॥

ओहिरहिदा तिरिक्खा मदिणाणिअसंखभागगा मणुगा।
संखेज्जा हु तदूणा मदिणाणी ओहिपरिमाणं॥४६२॥

पल्लासंखघणंगुलहदसेढितिरिक्खगदिविभङ्गजुदा।
णरसहिदा किंचूणा चदुगदिवेभङ्गपरिमाणं॥४६३॥

सण्णाणरासिपंचयपरिहीणो सव्वजीवरासी हु।
मदिसुदअण्णाणीणं पत्तेयं होदि परिमाणं॥४६४॥

वदसमिदिकसायाणं दंडाणं तहिंदियाण पंचण्हं।
धारणपालणणिग्गहचागजओ संजमो भणिओ॥४६५॥

बादरसंजलणुदये सुहुमुदये समखये य मोहस्स।
संजमभावो णियमा होदित्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥४६६॥

बादरसंजलणुदये बादरसंजमतियं खु परिहारो।
पमदिदरे सुहुमुदये सुहुमो संजमगुणो होदि॥४६७॥

जहखादसंजमो पुण उवसमदो होदि मोहणीयस्स।
खयदोवि य सो णियमा होदित्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥४६८॥

तदियकसायुदयेण य विरदाविरदो गुणो हवे जुगवं।
विदियकसायुदयेण य असंजमो होदि णियमेण॥४६९॥

संगहिय सयलसंजममेयजममणुत्तरं दुरवगम्मं।
जीवो समुव्वहंतो सामाइयसंजमो होदि॥४७०॥

छेत्तूण य परियायं पोराणं जो ठवेइ अप्पाणं।
पंचजमे धम्मे सो छेदोवट्ठावगो जीवो॥४७१॥

पंचसमिदो तिगुत्तो परिहरइ सदावि जो हु सावज्जं।
पंचेक्कजमो पुरिसो परिहारयसंजदो सो हु॥४७२॥

तीसं वासो जम्मे वासपुधत्तं खु तित्थयरमूले।
पच्चक्खाणं पढिदो संझूणदुगाउयविहारो॥४७३॥

अणुलोहं वेदंतो जीवो उवसामगो व खवगो वा।
सो सुहुमसांपराओ जहखादेणूणओ किंचि॥४७४॥

उवसंते खीणे वा असुहे कम्मम्मि मोहणीयम्मि।
छदुमट्ठो व जिणो वा जहखादो संजदो सो दु॥४७५॥

पंचतिहिचहुविहेहिं य अणुगुणसिक्खावएहिं संजुत्ता।
उच्चंति देसविरया सम्माइट्ठी झलियकम्मा॥४७६॥

दंसणवयसामाइय पोसहसचित्तरायभत्ते य।
बह्मारंभपरिग्गह अणुमणमुद्दिट्ठ देसविरदेदे॥४७७॥

जीवा चोद्दसभेया इंदियविसया तहट्ठवीसं तु।
जे तेसु णेव विरया असंजदा ते मुणेदव्वा॥४७८॥

पंचरसपंचवण्णा दो गंधा अट्ठफाससत्तसरा।
मणसहिदट्ठावीसा इंदियविसया मुणेदव्वा॥४७९॥

पमदादिचउण्ह जुदी सामयियदुगं कमेण सेसतियं।
सत्तसहस्सा णवसय णवलक्खा तीहिं परिहीणा॥४८०॥

पल्लासंखेज्जदिमं विरदाविरदाण दव्वपरिमाणं।
पुव्वुत्तरासिहीणा संसारी अविरदाण पमा॥४८१॥

जं सामण्णं गहणं भावाणं णेव कट्टुमायारं।
अविसेसदूण अट्ठे दंसणमिदि भण्णदे समये॥४८२॥

भावाणं सामण्णविसेसयाणं सरूवमेत्तं जं।
वण्णणहीणग्गहणं जीवेण य दंसणं होदि॥४८३॥

चक्खूण जं पयासइ दिस्सइ तं चक्खुदंसणं वेंति।
सेसिंदियप्पयासो णायव्वो सो अचक्खूत्ति॥४८४॥

परमाणुआदियाइं अंतिमखंधत्ति मुत्तिदव्वाइं।
तं ओहिदंसणं पुण जं पस्सइ ताइं पच्चक्खं॥४८५॥

बहुविहबहुप्पयारा उज्जोवा परिमियम्मि खेत्तम्मि।
लोगालोगवितिमिरो जो केवलदंसणुज्जोओ॥४८६॥

जोगे चउरक्खाणं पंचक्खाणं च खीणचरिमाणं।
चक्खूणमोहिकेवलपरिमाणं ताण णाणं व॥४८७॥

एइंदियपहुदीणं खीणकसायंतणंतरासीणं।
जोगो अचक्खुदंसणजीवाणं होदि परिमाणं॥४८८॥

लिंपइ अप्पीकीरइ एदीए णियअपुण्णपुण्णं च।
जीवोत्ति होदि लेस्सा लेस्सागुणजाणयक्खादा॥४८६॥

जोगपउत्ती लेस्सा कसायउदयाणुरंजिया होइ।
तत्ते दोण्णं कज्जं बंधचउक्कं समुद्दिट्ठं॥४६०॥

णिद्देसवण्णपरिणामसंकमो कम्मलक्खणगदी य।
सामी साहणसंखा खेतं फासं तदो कालो॥४६१॥

अंतरभावप्पबहु अहियारा सोलसा हवंतित्ति।
लेस्साणसाहणट्ठं जहाकमं तेहिं वोच्छामि॥४६२॥

किण्हा णीला काऊ तेऊ पम्मा य सुक्कलेस्सा य।
लेस्साणं णिद्देसा छच्चेव हवंति णियमेण॥४६३॥

वण्णोदयेण जणिदो सरीरवण्णो दु दव्वदो लेस्सा।
सा सोढा किण्हादी अणेयभेया सभेयेण॥४६४॥

छप्पयणीलकवोदसुहेमंबुजसंखसण्णिहा वण्णे।
संखेज्जासंखेज्जाणंतवियप्पा य पत्तेयं॥४६५॥

णिरया किण्हा कप्पा भावाणुगया हु तिसुरणरतिरिये।
उत्तरदेहे छक्कं भोगे रविचंदहरिदंगा॥४६६॥

बादरआऊतेऊ सुक्कातेऊ य वाउकायाणं।
गोमुत्तमुग्गवण्णा कमसो अव्वतवण्णो य॥४६७॥

सव्वेसिं सुहुमाणं कावोदा सव्व विग्गहे सुक्का।
सव्वो मिस्सो देहो कवोदवण्णो हवे णियमा॥४६८॥

लोगाणमसंखेज्जा उदयट्ठाणा कसायगा होंति।
तत्थ किलिट्ठा असुहा सुहा विसुद्धा तदालाबा॥४६६॥

तिव्वतमा तिव्वतरा तिव्वा असुहा सुहा तहा मंदा।
मंदतरा मंदतमा छट्ठाणगया हु पत्तेयं॥५००॥

असुहाणं वरमज्झिमअवरंसे किण्हणीलकाउतिए।
परिणमदि कमेणप्पा परिहाणीदो किलेसस्स॥५०१॥

काऊणीलं किण्हं परिणमदि किलेसवड्ढिदो अप्पा।
एवं किलेसहाणीवड्ढीदो होदि असुहतियं॥५०२॥

तेऊ पडमे सुक्के सुहाणमवरादिअंसगे अप्पा।
सुद्धिस्स य वड्ढीदो हाणीदो अण्णदा होदि॥५०३॥

संकमणं सट्ठाणपरट्ठाणं होदि किण्हसुक्काणं।
वड्ढीसु हि सट्ठाणं उभयं हाणिम्मि सेस उभयेवि॥५०४॥

लेस्साणुक्कस्सादो वरहाणी अवरगादवरवड्ढी।
सट्ठाणे अवरादो हाणी णियमा परट्ठाणे॥५०५॥

संकमणे छट्ठाणा हाणिसु वड्ढीसु होंति तण्णामा।
परिमाणं च य पुव्वं उत्तकमं होदि सुदणाणे॥५०६॥

पहिया जे छप्पुरिसा परिभट्टारण्णमज्झदेसम्हि।
फलभरियरुक्खमेगं पेक्खित्ता ते विचिंतंति॥५०७॥

णिम्मूलखंधसाहुवसाहं छित्तु चिणित्तु पडिदाइं।
खाउं फलाइं इदि जं मणेण वयणं हवे कम्मं॥५०८॥

चंडो ण मुचइ वेरं भंडणसीलो य धम्मदयरहिओ।
दुट्ठो ण य एदि वसं लक्खणमेयं तु किण्हस्स॥५०९॥

मंदो बुद्धिविहीणो णिव्विणाणी य विसयलोलो य।
माणी मायी य तहा आलस्सो चेव भेज्जो य॥५१०॥

णिद्दावंचणबहुलो धणधण्णे होदि तिव्वसण्णा य।
लक्खणमेयं भणियं समासदो णीललेस्सस्स॥५११॥

रूसइ णिंदइ अण्णे दूसइ बहुसो य सोयभयबहुलो।
असुयइ परिभवइ परं पसंसये अप्पयं बहुसो॥५१२॥

ण य पत्तियइ परं सो अप्पाणं यिव परंपि मण्णंतो।
थूसइ अभित्थुवंतो ण य जाणइ हाणिवड्ढिं वा॥५१३॥

मरणं पत्थेइ रणे देइ सुबहुगंपि थुव्वंमाणो दु।
ण गणइ कज्जाकज्जं लक्खणमेयं तु काउस्स॥५१४॥

जाणइ कज्जाकज्जं सेयमसेयं च सव्वसमपासी।
दयदाणरदो य मिदू लक्खणमेयं तु तेउस्स॥५१५॥

चागी भद्दो चोक्खो उज्जवकम्मो य खमदि बहुगंपि।
साहुगुरुपूजणरदो लक्खणमेयं तु पम्मस्स॥५१६॥

णय कुणइ पक्खवायं णवि य णिदाणं समो य सव्वेसिं।
णत्थि य रायद्दोसा णेहोवि य सुक्कलेस्सस्स॥५१७॥

लेस्साणं खलु अंसा छव्वीसा होंति तत्थ मज्झिमया।
आउगबंधणजोगा अट्ठट्ठवगरिसकालभवा॥५१८॥

सेसट्ठारसअंसा चउगइगमणस्स कारणा होंति।
सुक्कुक्कस्संसमुदा सव्वट्ठं जांति खलु जीवा॥५१६॥

अवरंसमुदा होंति सदारदुगे मज्झिमंसगेण मुदा।
आणदकप्पादुवरिं सवट्ठाइल्लगे होंति॥५२०॥

पम्मुक्कस्संसमुदा जीवा उवजांति खलु सहस्सारं।
अवरंसमुदा जीवा सणक्कुमारं च माहिंदं॥५२१॥

मज्झिमअंशेण मुदा तम्मज्झं जांति तेउजेट्ठमुदा।
साणक्कुमारमाहिंदंतिमचक्किंदसेढिम्मि॥५२२॥

अवरंसमुदा सोहम्मीसाणादिमउडम्मि सेढिम्मि।
मज्झिमअंसेण मुदा विमलविमाणादिबलभद्दे॥५२३॥

किण्हवरंसेण मुदा अवधिट्ठाणम्मि अवरअंसमुदा।
पंचमचरिमतिमिस्से मज्झे मज्झेण जायन्ते॥५२४॥

नीलुक्कस्संसमुदा पंचमअंधिंदयम्मि अवरमुदा।
वालुकसंपज्जलिदे मज्झे मज्झेण जायन्ते॥५२५॥

वरकाओदंसमुदा संजलिदं जांति तदियणिरयस्स।
सेमंतं अवरमुदा मज्झे मज्झेण जायन्ते॥५२६॥

किण्हचउक्काणं पुण मज्झंसमुदा हु भवणगादितिये।
पुढवीआउवणप्फदिजीवेसु हवंति खलु जीवा॥५२७॥

किण्हतियाणं मज्जिमअंसमुदा तेउवाउवियलेसु।
सुरणिरया सगलेस्सहिं णरतिरियं जांति सगजोग्गं॥५२८॥

काऊ काऊ काऊ णीला णीला य णीलकिण्हा य।
किण्हा य परमकिण्हा लेस्सा पढमादिपुढवीणं॥५२९॥

णरतिरियाणं ओघो इगिविगले तिण्णि चउ असण्णिस्स।
सण्णिअपुण्णगमिच्छे सासणसम्मेवि असुहतियं॥५३०॥

भोगापुण्णगस्सम्मे काउस्स जहण्णियं हवे णियमा।
सम्मे वा मिच्छे वा पज्जत्ते तिण्णि सुहलेस्सा॥५३१॥

अयदोत्तिछलेस्साओसुहतियलेस्सा हु देस विरदतिये।
तत्तो सुक्का लेस्सा अजोगिठाणं अलेस्सं तु॥५३२॥

णट्ठकसाये लेस्सा उच्चदि सा भूदपुव्वगदिणाया।
अहवा जोगपउत्ती मुक्खोत्ति तहिं हवे लेस्सा॥५३३॥

तिण्हं दोण्हं दोण्हं छण्हं दोण्हं च तेरसण्हं च।
एत्तो य चोद्दसण्हं लेस्सा भवणादिदेवाणं॥५३४॥

तेऊ तेऊ तेऊ पम्मापम्मा य पम्मसुक्का य।
सुक्काय परमसुक्का भवणतिया पुण्णगे असुहा॥५३५॥

वण्णोदयसंपादितसरीरवण्णो दु दव्वदो लेस्सा।
मोहुदयखओवसमोवसमखयजजीवफंदणंभावो॥५३६॥

किण्हादिरासिमावलि असंखभागेण भजिय पविभत्ते।
हीणकमा कालं वा अस्सिय दव्वा दु भजिदव्वा॥५३७॥

खेत्तादो असुहतिया अणंतलोगा कमेण परिहीणा।
कालादोतीदादो अणंतगुणिदा कमा हीणा॥५३८॥

केवलणाणाणंतिमभागा भावादु किण्हतियजीवा।
तेउतियासंखेजा संखासंखेज्जभागकमा॥५३९॥

जोइसियादो अहिया तिरिक्खसण्णिस्स संखभागोदु।
सूइस्स अंगुलस्स य असंखभागं तु तेउतियं॥५८०॥

बेसदछप्पण्णंगुलकदिहिदपदरं तु जोइसियमाणं।
तस्स य संखेज्जदिमं तिरिक्खसण्णीण परिमाणं॥५४१॥

तेउदु असंखकप्पा पल्लासंखेज्जभागया सुक्का।
ओहिअसंखेज्जदिमा तेउतिया भावदो होंति॥५४२॥

सट्ठाणसमुग्घादे उववादे सव्वलोयमसुहाणं।
लोयस्सासंखेज्जदिभागं खेत्तं तु तेउतिये॥५४३॥

मरदि असंखेज्जदिमं तस्सासंखा य विग्गहे होंति।
तस्सासंखं दूरे उववादे तस्स खु असंखं॥५४४॥

सुक्कस्स समुग्घादे असंखलोगा य सव्वलोगो य।
फासं सव्वं लोयं तिट्ठाणे असुहलेस्साणं॥५४५॥

तेउस्स य सट्ठाणे लोगस्स असंखभागमेत्तं तु।
अड चोद्दस भागा वा देसूणा होंति णियमेण॥५४६॥

एवं तु समुग्घादे णव चोद्दसभागयं च किंचूणं।
उववादे पढमपदं दिवड्ढचोद्दस य किंचूणं॥५४७॥

पम्मस्स य सट्ठाणसमुग्घाददुगेसु होदि पढमपदं।
अड चोद्दस भागा वा देसूणा होंति णियमेण॥५४८॥

उववादे पढमपदं पणचोद्दसभागयं च देसूणं।
सुक्कस्स य तिट्ठाणे पढमो छच्चोदसा हीणा॥५४९॥

णवरि समुग्घादम्मि य संखातीदा हवंति भागा वा।
सव्वो वा खलु लोगो फासो होदित्ति णिद्दिट्ठो॥५५०॥

कालो छल्लेस्साणं णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा।
अंतोमुहुत्तमवरं एगं जीवं पडुच्च हवे॥५५१॥

उवहीणं तेत्तीसं सत्तर सत्तेव होंति दो चेव।
अट्ठारस तेत्तीसा उक्कस्सा होंति अदिरेया॥५५२॥

अंतरमवरुक्कस्सं किण्हतियाणं मुहुत्तअंतं तु।
उवहीणं तेत्तीसं अहियं होदित्ति णिद्दिट्ठं॥५५३॥

तेउतियाणं एवं णवरि य उक्कस्सविरहकालो दु।
पोग्गलवरिवट्टा हु असंखेज्जा होंति णियमेण॥५५४॥

भावादो छल्लेस्सा ओदयिया होंति अप्पबहुगं तु।
दव्वपमाणे सिद्धं इदि लेस्सा वण्णिदा होंति॥५५५॥

किण्हादिलेस्सरहिया संसारविणिग्गया अणंतसुहा।
सिद्धिपुरं संपत्ता अलेस्सिया ते मुणेयव्वा॥५५६॥

भविया सिद्धी जेसिं जीवाणं ते हवंति भवसिद्धा।
तव्विवरीयाऽभव्वा संसारादो ण सिज्झंति॥५५७॥

भव्वत्तणस्स जोग्गा जे जीवा ते हवंति भवसिद्धा।
ण हु मलविगमे णियमा ताणं कणगोवलाणमिव॥५५८॥

ण य जे भव्वाभव्वा मुत्तिसुहातीदणंतसंसारा।
ते जीवा णायव्वा णेव य भव्वा अभव्वा य॥५५९॥

अवरो जुत्ताणंतो अभव्वरासिस्स होदि परिमाणं।
तेण विहीणो सव्वो संसारी भव्वरासिस्स॥५६०-१॥

छप्पंचणवविहाणं अत्थाणं जिणवरोवइट्ठाणं।
आणाए अहिगमेण य सद्दहणं होइ सम्मत्तं॥५६१॥

छद्दव्वेसु य णामं उवलक्खणुवाय अत्थणेकालो।
अत्थणखेत्तं संखा ठाणसरूवं फलं च हवे॥५६२॥

जीवाजीवं दव्वं रूवारूवित्ति होदि पत्तेयं।
संसारत्था रूवा कम्मविमुक्का अरूवगया॥५६३॥

अज्जीवेसु य रूबी पुग्गलदव्वाणि धम्म इदरोवि।
आगासं कालोवि य चत्तारि अरूविणो होंति॥५६४॥

उवजोगो वण्णचऊ लक्खणमिह जीवपोग्गलाणं तु।
गदिठाणोग्गहवत्तणकिरियुवयारो दु धम्मचऊ॥५६५॥

गदिठाणोग्गहकिरिया जीवाणं पुग्गलाणमेव हवे।
धम्मतिये ण हि किरिया मुक्खा पुण साधका होंति॥५६६॥

जत्तस्स पहं ठत्तस्स आसणं णिवसगस्स वसदी वा।
गदिठाणोग्गहकरणे धम्मतियं साधगं होदि॥५६७॥

वत्तणहेदू कालो वत्तणगुणमविय दव्वणिचयेसु।
कालाधारेणेव य वट्टंति हु सव्वदव्वाणि॥५६८॥

धम्माधम्मादीणं अगुरुगलहुगं तु छहिं वि वड्ढीहिं।
हाणीहिं वि वड्ढंतो हायंतो वट्टदे जह्मा॥५६९॥

ण य परिणमदि सयं सो ण य परिणामेइ अण्णमण्णेहिं।
विविहपरिणामियाणं हवदि हु कालो सयं हेदू॥५७०॥

कालं अस्सिय दव्वं सगसगपज्जायपरिणदं होदि।
पज्जायावट्ठाणं सुद्धणये होदि खणमेत्त॥५७१॥

ववहारो य वियप्पो भेदो तह पज्जओत्ति एयट्ठो।
ववहारअवट्ठाणट्ठिदी हु ववहारकालो दु॥५७२॥

अवरा पज्जायठिदी खणमेत्तं होदि तं च समओत्ति।
दोण्हमणूणमदिक्कमकालपमाणं हवे सो दु॥५७३॥

आवलिअसंखसमया संखेज्जावलिसमूहमुस्सासो।
सत्तुस्सासा थोवो सत्तत्थोवा लवो भणियो।।।५७४।।

अट्ठत्तीसद्धलवा नाली वेनालिया मुहुत्तं तु।
एगसमयेण हीणं भिण्णमुहुत्तं तदो सेसं।।५७५।।

दिवसो पक्खो मासो उडु अयणं वस्समेवमादी हु।
संखेज्जा संखेज्जा णंताओ होदि ववहारो।।५७६।।

ववहारो पुण कालो माणुसखेत्तम्हि जाणिदव्वो दु।
जोइसियाणं चारे ववहारो खलु समाणोत्ति॥५७७॥

ववहारो पुण तिविहो तीदो वट्टंतगो भविस्सो दु।
तीदो संखेज्जावलिहदसिद्धाणं पमाणं दु॥५७८॥

समओ हु वट्टमाणो जीवादो सव्वपुग्गलादो वि।
भावो अणंतगुणिदो इदि ववहारो हवे कालो॥५७६॥

कालोवि य ववएसो सब्भावपरूवओ हवदि णिच्चो।
उप्पण्णप्पद्धंसी अवरो दीहंतरट्ठाई॥५८०॥

छद्दव्वावट्ठाणं सरिसं तियकालअत्थपज्जाये।
वेंजणपज्जाये वा मिलिदे ताणं ठिदित्तादो॥५८१॥

एयदवियम्मि जे अत्थपज्जया वियणपज्जया चावि।
तीदाणागदभूदा तावदियं तं हवदि दव्वं॥५८२॥

आगासं वज्जित्ता सव्वे लोगम्मि चेव णत्थि वहिं।
वावी धम्माधम्मा अवट्ठिदा अचलिदा णिच्चा॥५८३॥

लोगस्स असंखेज्जदिभागप्पहुदिं तु सव्वलोगोत्ति।
अप्पपदेसविसप्पणसंहारे वावडो जीवो॥५८४॥

पोग्गलदव्वाणं पुण एयपदेसादि होंति भजणिज्जा।
एक्केक्को दु पदेसे कालाणूणं धुवो होदि॥५८५॥

संखेज्जासंखेज्जाणंता वा होंति पोग्गलपदेसा।
लोगागासेव ठिदी एगपदेसो अणुस्स हवे॥५८६॥

लोगागासपदेसा छद्दव्वेहिं फुडा सदा होंति।
सव्वमलोगागासं अण्णेहिं विवज्जियं होदि॥५८७॥

जीवा अणंतसंखाणंतगुणा पुग्गला हु तत्तो दु।
धम्मतियं एक्केक्कं लोगपदेसप्पमा कालो॥५८८॥

लोगागासपदेसे एक्केक्के जेट्ठिया हु एक्केक्का।
रयणाणं रासी इव ते कालाणू मुणेयव्वा॥५८६॥

ववहारो पुण कालो पोग्गलदव्वादणंतगुणमेत्तो।
तत्तो अणंतगुणिदा आगासपदेसपरिसंखा॥५६०॥

लोगागासपदेसा धम्माधम्मेगजीवगपदेसा।
सरिसा हु पदेसो पुण परमाणुअवट्ठिदं खेत्तं॥५६१॥

सव्वमरूवी दव्वं अवट्ठिदं अचलिआ पदेसावि।
रूवी जीवा चलिया तिवियप्पा होंति हु पदेसा॥५६२॥

पोगलदव्वम्हि अणू संखेज्जादी हवंति चलिदा हु।
चरिममहक्खंधम्मि य चलाचला होंति हु पदेसा॥५६३॥

अणुसंखासंखेज्जाणंता य अगेज्जगेहि अंतरिया।
आहारतेजभासामणकम्मइया धुवक्खंधा॥५६४॥

सांतरणिरंतरेण य सुण्णा पत्तेयदेहधुवसुण्णा।
बादरणिगोदसुण्णा सुहुमणिगोदा णभो महक्खंधा॥५६५॥

परमाणुवग्गणम्मि ण अवरुक्कस्सं च सेसगे अत्थि।
गेज्झमहक्खंधाणं वरमहियं सेसगं गुणियं॥५६६॥

सिद्धाणंतिमभागो पडिभागो गेज्झगाण जेट्ठट्ठं।
पल्लासंखेज्जदियं अंत्तिमखंधस्स जेट्ठट्ठं॥५६७॥

संखेज्जासंखेज्जे गुणगारो सो दु होदि हु अणंते।
चत्तारि अगेज्जेसुवि सिद्धाणमणंतिमो भागो॥५६८॥

जीवादोणंतगुणो धुवादितिण्हं मसंखभागो दु।
पल्लस्स तदो तत्तो असंखलोगवहिदो मिच्छो॥५६६॥

सेढीसूईपल्लाजगपदरासंखभागगुणगारा।
अप्पप्पणअवरादो उक्कस्से होंति णियमेण॥६००॥

हेट्ठिमउक्कस्सं पुण रूवहियं उवरिमं जहण्णं खु।
इदि तेवीसवियप्पा पुग्गलदव्वा हु जिणदिट्ठा॥६०१॥

पुढवी जलं च छाया चउरिंदियविषयकम्मपरमाणू।
छव्विहभेयं भणियं पोग्गलदव्वं जिणवरेहिं॥६०२॥

बादरबादर बादर बादरसुहुमं च सुहमथूलं च॥
सुहमं च सुहमसुहमं धरादियं होदि छब्भेयं॥६०३॥

खंधं सयलसमत्थं तस्स य अद्धं भणंति देसोत्ति।
अद्धद्धं च पदेसो अविभागी चेव परमाणू॥६०४॥

गदिठाणोग्गहकिरियासाधणभूदं खु होदि धम्मतियं।
वत्तणकिरियासाहणभूदो णियमेण कालो दु॥६०५॥

अण्णोण्णुवयारेण य जीवा वट्टंति पुग्गलाणि पुणो।
देहादीणिव्वत्तणकारणभूदा हु णियमेण॥६०६॥

आहारवग्गणादो तिण्णि सरीराणि होंति उस्सासो।
णिस्सासोवि य तेजोवग्गणखंधादु तेजंगं॥६०७॥

भासमणवग्गणादो कमेण भासा मणं च कम्मादो।
अट्ठविहकम्मदव्वं होदित्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥६०८॥

णिद्धतं लुक्खत्तं बंधस्स य कारणं तु एयादी।
संखेज्जासंखेज्जाणंतविहा णिद्धणुक्खगुणा॥६०९॥

एगगुणं तु जहण्णं णिद्धत्तं विगुणतिगुणसंखेज्जाऽ।
संखेज्जाणंतगुण होदि तहा रुक्खभावं च॥६१०॥

एवं गुणसंजुत्ता परमाणू आदिवग्गणम्मि ठिया।
जोग्गदुगाणं बंधे दोण्हं बंधो हवे णियमा॥६११॥

णिद्धणिद्धा ण बज्झंति रुक्खरुक्खा य पोग्गला।
णिद्धलुक्खा य बज्झंति रूवारूवी य पोग्गला॥६१२॥

णिद्धिदरोलीमज्झे विसरिसजादिस्स समगुणं एक्कं।
रूवित्ति होदि सण्णा सेसाणं ता अरूवित्ति॥६१३॥

दोगुणणिद्धाणुस्स य दोगुणलुक्खाणुगं हवे रूवी।
इगितिगुणादि अरूवी रुक्खस्सवि तं व इदि जाणे॥६१४॥

णिद्धस्स णिद्धेण दुराहिएण लुक्खस्स लुक्खेण दुराहिएण।
णिद्धस्सलुक्खेणहवेज्जबंधो जहण्णवज्जेविसमेसमेवा॥६१५॥

णिद्धिदरे समविसमा दोत्तिगआदीदुउत्तरा होंति।
उभयेवि य समविसमा सरिसिदरा होंति पत्तेयं॥६१६॥

दोत्तिगपभवदुउत्तरगदेसणंतरदुगाण बंधो दु।
णिद्धे लुक्खेवि तहा वि जहण्णुभयेवि सव्वत्थ॥६१७॥

णिद्धिदरवरगुणाणू सपरट्ठाणेवि णेदि बंधट्ठं।
बहिरंतरंगहेदुहि गुणंतरं संगदे एदि॥६१८॥

णिद्धिदरगुणा अहिया हीणं परिणामयंति बंधम्मि।
संखेज्जासंखेज्जाणंतपदेसाण खंधाणं॥६१६॥

दव्वं छक्कमकालं पंचत्थीकायसण्णिदं होदि।
काले पदेसपचयो जम्हा णत्थित्ति णिद्दिट्ठं॥६२०॥

णव य पदत्था जीवाजीवा ताणं च पुण्णपावदुगं।
आसवसंवरणिज्जरबंधा मोक्खो य होंतित्ति॥६२१॥

जीवदुगं उत्तट्ठं जीवा पुण्णा हु सम्मगुणसहिदा।
वदसहिदावि य पावा तव्विवरीया हवंतित्ति॥६२२॥

मिच्छाइट्ठी पावाणंताणंता य सासणगुणावि।
पल्लासंखेज्जदिमा अणअण्णदरुदयमिच्छगुणा॥६२३॥

मिच्छा सावयसासणमिस्सा विरदा दुवारणंता य।
पल्लासंखेज्जदिममसंखगुणं संखसंखगुणं॥६२४॥

तिरधियसयणवणउदी छण्णउदी अप्पमत्त वे कोडी।
पंचेव य तेणउदी णवट्ठविसयच्छउत्तरं पमदे॥६२५॥

तिसयं भणंति केई चउरुत्तरमत्थपंचयं केई।
उवसामगपरिमाणं खवगाणं जाण तद्दुगुणं॥६२६॥

सोलसयं चउवीसं तीसं छत्तीस तह य बादालं।
अडदालं चउवण्णं चउवण्णं होंति उवसमगे॥६२७॥

वत्तीसं अडदालं सट्ठी वावत्तरी य चुलसीदी।
छण्णउदी अट्ठुत्तरसयमट्ठुत्तरसयं च खवगेसु॥६२८॥

अट्ठेव सयसहस्सा अट्ठाणउदी तहा सहस्साणं।
संखा जोगिजिणाणं पंचसयविउत्तरं वंदे॥६२९॥

होंति खवा इगिसमये बोहियबुद्धा य पुरिसवेदा य।
उक्कस्सेणट्ठुत्तरसयप्पमा सग्गदो य चुदा॥६३०॥

पत्तेयबुद्धतित्थयरत्थिणउंसयमणोहिणाणजुदा।
दसछक्कवीसदसवीसट्ठासंवीसं जहाकमसो॥६३१॥

जेट्ठावरबहुमज्झिमओगाहणगा दु चारि अट्ठेव।
जुगवं हवंति खवगा उवसमगा अद्धमेदेसिं॥६३२॥

सत्तादी अट्ठंता छण्णवमज्झा य संजदा सव्वे।
अंजलिमौलियहत्थो तियरणसुद्धे णमंसामि॥६३३॥

ओघासंजदमिस्सयसासणसम्माण भागहारा जे।
रूऊणावलियासंखेज्जेणिह भजिय तत्थ णिक्खित्ते॥६३४॥

देवाणं अवहारा होंति असंखेण ताणि अवहरिय।
तत्थेव य पक्खित्ते सोहम्मीसाणअवहारा॥६३५॥

सोहम्मसाणहारमसंखेण य संखरूवसंगुणिदे।
उवरि असंजदमिस्सयसासणसम्माण अवहारा॥६३६॥

सोहम्मादासारं जोइसिवणभवणतिरियपुढवीसु।
अविरदमिस्सेसंखं संखासखंगुण सासणे देसे॥६३७॥

चरमधरासाणहरा आणदसम्माण आरणप्पहुदिं।
अंतिमगेवेच्चंतं सम्माणमसंखसंखगुणहारा॥६३८॥

तत्तो ताणुत्ताणं वामाणमणुद्दिसाण विजयादी।
सम्माणं संखगुणो आणदमिस्से असंखगुणो॥६३६॥

तत्तो संखेज्जगुणो सासणसम्माण होदि संखगुणो।
उत्तट्ठाणे कमसो पणछस्सत्तट्ठचदुरसंदिट्ठी॥६४०॥

सगसगअवहारेहिं पल्ले भजिदे हवंति सगरासी।
सगसगगुणपडिवण्णे सगसगरासीसुअवणिदेवामा॥६४१॥

तेरसकोडी देसे बावण्णं सासणे मुणेदव्वा।
मिस्सेवि य तद्दुगुणा असंजदा सत्तकोडिसयं॥६४२॥

जीविदरे कम्मचये पुण्णं पावोत्ति होहि पुण्णं तु।
सुहपयडीणं दव्वं पावं असुहाण दव्वं तु॥६४३॥

आसवसंवरदव्वं समयपबद्धं तु णिज्जरादव्वं।
तत्तो असंखगुणिदं उक्कस्सं होदि णियमेण॥६४४॥

बंधो समयपबद्धो किंचूणदिवड्ढमेत्तगुणहाणी।
मोक्खो य होदि एवं सद्दहिदव्वा दु तच्चट्ठा॥६४५॥

खीणे दंसणमोहे जं सद्दहणं सुणिम्मलं होई।
तं खाइयसम्मत्तं णिच्चं कम्मक्खवणहेदू॥६४६॥

वयणेहिं वि हेदूहिं वि इंदियभयआणएहिं रूवेहिं।
वीभच्छजुगुच्छाहिं य तेलोक्केणवि ण चालेज्जो॥६४७॥

दंसणमोहखक्वणापट्ठवगो कम्मभूमिजादो हु।
मणुसो केवलिमूले णिट्ठवगो होदि सव्वत्थ॥६४८॥

दंसणमोहुदयादो उप्पज्जइ जं पयत्थसद्दहणं।
चलमलिणमगाढं तं वेदयसम्मत्तमिदि जाणे॥६४६॥

दंसणमोहुवसमदो उप्पज्जइ जं पयत्थसद्दहणं।
उवसमसम्मत्तमिणं पसण्णमलपंकतोयसमं॥६५०॥

खयउवसमियविसोही देसणपाउग्गकरणलद्धी य।
चत्तारि वि सामण्णा करणं पुण होदि सम्मत्ते॥६५१॥

चदुगदिभव्वो सण्णी पज्जत्तो सुज्झगो य सागारो।
जागारो सल्लेसो सलद्धिगो सम्ममुवगमई॥६५२॥

चत्तारिविं खेत्ताइं आउगबंधेण होदि सम्मत्तं।
अणुवदमहव्वदाइं ण लहइ देवाउगं मोत्तुं॥६५३॥

णय मिच्छत्तं पत्तो सम्मत्तादो य जो य परिवडिदो।
सो सासणोत्ति णेयो पंचमभावेण संजुत्तो॥६५४॥

सद्दहणासद्दहणं जस्स य जीवस्स होइ तच्चेसु।
विरयाविरयेण समो सम्मामिच्छोत्ति णायव्वो॥६५५॥

मिच्छाइट्ठी जीवो उवइट्ठं पवयणं ण सद्दहदि।
सद्दहदि असब्भावं उवइट्ठं वा अणुवइट्ठं॥६५६॥

वासपुधत्ते खइया संखेज्जा जइ हवंति सोहम्मे।
तो संखपल्लठिदिये केवदिया एवमणुपादे॥६५७॥

संखावलिहिदपल्ला खइया तत्तो य वेदमुवसमगा।
आवलिअसंखगुणिदा असंखगुणहीणया कमसो॥६५८॥

पल्लासंखेज्जदिमा सासणमिच्छा य संखगुणिदा हु।
मिस्सा तेहिं विहीणो संसारी वामपरिमाणं॥६५६॥

णोइंदियआवरणखओवसमं तज्जवोहणं सण्णा।
सा जस्स सो दु सण्णी इदरो सेसिंदिअवबोहो॥६६०॥

सिक्खाकिरियुवदेसालावग्गाही मणोवलंबेण।
जो जीवो सो सण्णी तव्विवरीओ असण्णी दु॥६६१॥

मीमंसदि जो पुव्वं कज्जमकज्जं च तच्चमिदरं च।
सिक्खदि णामेणेदि य समणो अमणो य विवरीदो॥६६२॥

देवेहिं सादिरेगो रासी सण्णीण होदि परिमाणं।
तेणूणो संसारी सव्वेसिमसण्णिजीवाणं॥६६३॥

उदयावण्णसरीरोदयेण तद्देहवयणचित्ताणं।
णोकम्मवग्गणाणं गहणं आहारयं णाम॥६६४॥

आहरदि सरीराणं तिण्हं एयदरवग्गणाओ य।
भासमणाणं णियदं तम्हा आहारयो भणियो॥६६५॥

विग्गहगदिमावण्णा केवलिणो समुग्घदो अजोगी य।
सिद्धा य अणाहारा सेसा आहारया जीवा॥६६६॥

मूलसरीरमछंडिय उत्तरदेहस्स जीवपिंडस्स।
णिग्गमणं देहादो होदि समुग्घादणामं तु॥६६७॥

वेयणकसायवेगुव्वियो य मरणंतियो समुग्घादो।
तेजाहारो छट्ठो सत्तमओ केवलीणं तु॥६६८॥

आहारमारणंतियदुगंपि णियमेण एगदिसिगं तु।
दसदिसि गदा हु सेसा पंच समुग्घादया होंति॥६६९॥

अंगुलअसंखभागो कालो आहारयस्स उक्कस्सो।
कम्मम्मि अणाहारो उक्कस्सं तिण्णि समया हु॥६७०॥

कम्मइयकायजोगी होदि अणाहारयाण परिमाणं।
तव्विरहिदसंसारो सव्वो आहारपरिमाणं॥६७१॥

वत्थुणिमित्तं भावो जादो जीवस्स जो दु उवजोगो।
सो दुविहो णायव्वो सायारो चेव णायारो॥६७२॥

णाणं पंचविहंपि य अण्णाणतियं च सागरुवजोगो।
चदुदंसणमणगारो सव्वे तल्लक्खणा जीवा॥६७३॥

मदिसुदओहिमणेहिं य सगसगविसये विसेसविण्णाणं।
अंतोमुहुत्तकालो उवजोगो सी दु सायारो॥६७४॥

इंदियमणोहिणा वा अत्थे अविसेसिदूण जं गहणं।
अंतोमुहुत्तकालो उवजोगो सो अणायारो॥६७५॥

णाणुवजोगजुदाणं परिमाणं णाणमग्गणं व हवे।
दंसणुवजोगियाणं दंसणमग्गण व उत्तकमो॥६७६॥

गुणजीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणुवजोगो।
जोग्गा परूविदव्वा ओघादेसेसु पत्तेयं॥६७७॥

चउ पण चोद्दस चउरो णिरयादिसु चोद्दसं तु पंचक्खे।
तसकाये सेसिंदियकाये मिच्छं गुणट्ठाणं॥६७८॥

मज्झिमचउमणवयणे सण्णिप्पहुदिं दु जाव खीणोत्ति।
सेसाणं जोगित्ति य अणुभयवयणं तु वियलादो॥६७९॥

ओरालं पज्जत्ते थावरकायादि जाव जोगित्ति।
तम्मिस्समपज्जत्ते चदुगुणठाणेसु णियमेण॥६८०॥

मिच्छे सासणसम्मे पुंवेदयदे कवाडजोगिम्मि।
णरतिरियेवि य दोण्णिवि होंतित्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥६८१॥

वेगुव्वं पज्जत्ते इदरे खलु होदि तस्स मिस्सं तु।
सुरणिरयचउट्ठाणे मिस्सेण हि मिस्सजोगो हु॥६८२॥

आहारो पज्जत्ते इदरे खलु होदि तस्स मिस्सो दु।
अंतोमुहुत्तकाले छट्ठगुणे होदि आहारो॥६८३॥

ओरालियमिस्सं वा चउगुणठाणेसु होदि कम्मइयं।
चदुगदिविग्गहकाले जोगिस्स य पदरलोगपूरणगे॥६८४॥

थावरकायप्पहुदी संढो सेसा असण्णिआदी य।
अणियट्टिस्स य पढमो भागोत्ति जिणेहिं णिदिट्ठं॥६८५॥

थावरकायप्पहुदी अणियट्टीबितिचउत्थभागोत्ति।
कोहतियं लोहो पुण सुहमसुरागोत्ति विण्णेयो॥६८६॥

थावरकायप्पहुदी मदिसुदअण्णाणयं विभंगो दु।
सण्णीपुण्णप्पहुदी सासणसम्मोत्ति णायव्वो॥६८७॥

सण्णाणतिगं अविरदसम्मादी छट्ठगादि मणपज्जो।
खीणकसायं जाव दु केवलणाणं जिणे सिद्धे॥६८८॥

अयदोत्ति हु अविरमणं देसे देसो पमत्तइदरे य।
परिहारो सामाइयछेदो छट्ठादि थूलोत्ति॥६८९॥

सुहमो सुहमकसाये संते खीणे जिणे जहक्खादं।
संजममग्गणभेदा सिद्धे णत्थित्ति णिद्दिट्ठं॥६९०॥

चउरक्खथावरविरदसम्माइट्ठी दु खीणमोहोत्ति।
चक्खुअचक्खूओही जिणसिद्धे केवलं होदि॥६९१॥

थावरकायप्पहुदी अविरदसम्मोत्ति असुहतियलेस्सा।
सण्णीदो अपमत्तो जाव दु सुहतिण्णिलेस्साओ॥६९२॥

णवरि य सुक्का लेस्सा सजोगिचरिमोत्ति होदि णियमेण।
गयजोगिम्मि वि सिद्धे लेस्सा णत्थित्ति णिद्दिट्ठं॥६९३॥

थावरकायप्पहुदी अजोगिचरिमोत्ति होंति भवसिद्धा।
मिच्छाइट्ठिट्ठाणे अभव्वसिद्धा हवंतित्ति॥६९४॥

मिच्छो सासणमिस्सो सगसगठाणम्मि होदि अयदादो।
पढमुवसमवेदगसम्मत्तदुगं अप्पमत्तोत्ति॥६९५॥

विदियुवसमसम्मत्तं अविरदसम्मादि संतमोहोति।
खइगं सम्मं च तहा सिद्धोत्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥६६६॥

सण्णी सण्णिप्पहुदी खीणकसाओत्ति होदि णियमेण।
थावरकायप्पहुदी असण्णित्ति हवे असण्णी हु॥६६७॥

थावरकायप्पहुदी सजोगिचरिमोत्ति होदि आहारी।
कम्मइय अणाहारी अजोगिसिद्धेविणायव्वो॥६६८॥

मिच्छे चोद्दस जीवा सासणअयदे पमत्तविरदे य।
सण्णिदुगं सेसगुणे सण्णीपुण्णो दु खीणोत्ति॥६६६॥

तिरियगदीए चोद्दस हवंति सेसेसु जाण दो द्दो दु।
मग्गणठाणस्सेवं णेयाणि समासठाणाणि॥७००॥

पज्जत्ती पाणावि य सुगमा भाविंदियं ण जोगिम्हि।
तहिं वाचुस्सासाउगकायत्तिगदुगमजोगिणो आऊ॥७०१॥

छट्ठोत्ति पढमसण्णा सकज्ज सेसा य कारणावेक्खा।
पुव्वो पढमणियट्टी सुहुमोत्ति कमेण सेसाओ॥७०२॥

मग्गण उवजोगावि य सुगमा पुब्बं परूविदत्तादो।
गदिआदिसु मिच्छादी परूविदे रूविदा होंति॥७०३॥

तिसु तेरं दस मिस्से सत्तसु णव छट्ठयम्मि एयारा।
जोगिम्मि सत्त जोगा अजोगिठाणं हवे सुण्णं॥७०४॥

दोण्हं पंच य छच्चेव दोसु मिस्सम्मि होंति वामिस्सा।
सत्तुवजोगा सत्तसु दो चेव जिणे य सिद्धे य॥७०५॥

गोयमथेरं पणमिय ओघादेसेसु बीसभेदाणं।
जोजणिकाणालावं वोच्छामि जहाकमं सुणह॥७०६॥

ओघे चोद्दसठाणे सिद्धेबीसदिविहाणमालावा।
वेदकसायविभिण्णे अणियट्टीपंचभागे य॥७०७॥

ओघे मिच्छदुगेवि य अयदपमत्ते सजोगिठाणम्मि।
तिण्णेव य आलावा ससेसिक्को हवे णियमा॥७०८॥

सामण्णं पज्जत्तमपज्जत्तं चेदि तिण्णि आलावा।
दुवियप्पमपज्जत्तं लद्धी णिव्वत्तगं चेदि॥७०९॥

दुविहंपि अपज्जत्तं ओघे मिच्छेव होदि णियमेण।
सासण अयद पमत्ते णिव्वत्तिअपुण्णगो होदि॥७१०॥

जोगं पडि जोगिजिणे होदि हु णियमा अपुण्णगत्तं तु।
अवसेसणवट्ठाणे पज्जत्तालावगो एक्को॥७११॥

सत्तण्हं पुढवीणं ओघे मिच्छे य तिण्णि आलावा।
पढमाविरदेवि तहा सेसाणं पुण्णगालावो॥७१२॥

तिरियचउक्काणोघे मिच्छदुगे अविरदे य तिण्णेव।
णवरि य जोणिणिअयदे पुण्णो सेसेवि पुण्णो दु॥७१३॥

तेरिच्छियलद्धियपज्जत्ते एक्को अपुण्ण आलावो।
मूलोघं मणुसतिए मणुसिणिअयदम्हि पज्जत्तो॥७१४॥

मणुसिणि पमत्तविरदे आहारदुगं तु णत्थि णियमेण।
अवगदवेदे मणुसिणि सण्णा भूदगदिमासेज्ज॥७१५॥

णरलद्धिअपज्जत्ते एक्को दु अपुण्णगो दु आलावो।
लेस्साभेदविभिण्णा सत्तवियप्पा सुरट्ठाणा॥७१६॥

सव्वसुराणं ओघे मिच्छदुगे अविरदे य तिण्णेव।
णवरि य भवणतिकप्पित्थीणं च य अविरदे पुण्णो॥७१७॥

मिस्से पुण्णालावो अणुद्दिसाणुत्तरा हु ते सम्मा।
अविरद तिण्णालावा अणुद्दिसाणुत्तरे होंति॥७१८॥

बादरसुहमेइंदियबितिचउरिंदियअसण्णिजीवाणं।
ओघे पुण्णे तिण्णि य अपुण्णगे पुण अपुण्णो दु॥७१९॥

सण्णीओघे मिच्छे गुणपडिवण्णे य मूलआलावा।
लद्धियपुण्णे एक्कोऽपज्जत्तो होदि आलाओ॥७२०॥

भूआउतेउवाऊणिच्चचदुग्गदिणिगोदगे तिण्णि।
ताणं थूलेदरसु वि पत्तेगे तद्भेदेवि॥७२१॥

तसजीवाणं ओघे मिच्छादिगुणेवि ओघ आलाओ।
लद्धिअपुण्णे एक्कोऽपज्जत्तो होदि आलाओ॥७२२॥

एक्कारसजोगाणं पुण्णगदाणं सपुण्णआलाओ।
मिस्सचउक्कस्स पुणो सगएक्कअपुण्णआलाओ॥७२३॥

वेदादाहारोत्ति य सगुणट्ठाणाणमोघ आलाओ।
णवरि य संढित्थीणं णत्थि हु आहारगाण दुगं॥७२४॥

गुणजीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा गइंदिया काया।
जोगा वेदकसाया णाणजमा दंसणा लेस्सा॥७२५॥

भव्वा सम्मत्तावि य सण्णी आहारगा य उवजोगा।
जोग्गा परूविदव्वा ओघादेसेसु समुदायं॥७२६॥

ओघे आदेसे वा सण्णीपज्जंतगा हवे जत्थ।
तत्थ य उणवीसंता इगिविंतिगुणिदा हवे ठाणा॥७२७॥

वीरमुहकमलणिग्गयसयलसुग्गहणपयउणसमत्थं।
णमिऊण गोयममहं सिद्धंतालावमणुबोच्छं॥७२८॥

मणपज्जवपरिहारो पढमुवसम्मत्त दोण्णि आहारा।
एदेसु एक्कपगदे णत्थित्ति असेसयं जाणे॥७२६॥

बिदियुवसमसम्मत्तं सेढीदोदिण्णि अविरदादीसु।
सगसगलेस्सामरिदे देवअपज्जत्तगेव हवे।।७३०।।

सिद्धाणं सिद्धगई केवलणाणं च दंसणं खयियं।
सम्मत्तमणाहारं उवजोगाणक्कमपउत्ती।।७३१।।

गुणजीवठाणरहियासण्णापज्जत्तिपाणपरिहीणा।
सेसणवमग्गणूणा सिद्धा सुद्धा सदा होंति।।७३२।।

णिक्खेवे एयत्थे णयप्पमाणे णिरूत्तिअणियोगे।
मग्गइ वीसं भेयं सो जाणइ अप्पसब्भावं।।७३३।।

अज्जज्जसेणगुणगणसमूहसंधारिअजियसेणगुरू।
भुवणगुरू जस्स गुरू सो राओ गोम्मटो जयउ।।७३४।।

विश्वास के बिना कोई निर्माण नहीं होता।
नींव के बिना कोई मकान नहीं होता।।
बाहरी उपाधि को धारण करने वालों,
अनुभव के बिना कोई विद्वान नहीं होता।।

गोम्मटसारः

कर्मकाण्डम्

पणमिय सिरसा णेमिं गुणरयणविभूसणं महावीरं।
सम्मत्तरयणणिलयं पयडिसमुक्कित्तणं वोच्छं॥१॥

पयडी सील सहाओ जीवंगाणं अणाइसंबंधो।
कणयोवले मलं वा ताणत्थित्तं सयं सिद्धं॥२॥

देहोदयेण सहिओ जीवो आहरदि कम्म णोकम्मं।
पडिसमयं सव्वंगं तत्तायसपिंडओव्व जलं॥३॥

सिद्धाणंतिमभागं अभव्वसिद्धादणंतगुणमेव।
समयपबद्धं बंधदि जोगवसादो दु विसरित्थं॥४॥

जीरदि समयपबद्धं पओगदोऽणेगसमयबद्धं वा।
गुणहाणीण दिवड्ढं समयपबद्धं हवे सत्तं॥५॥

कम्मत्तणेण एक्कं दव्वं भावोत्ति होदि दुविहं तु।
पोग्गलपिंडो दव्वं तस्सत्ती भावकम्मं तु॥६॥

तं पुण अट्ठविहं वा अडदालसयं असंखलोगं वा।
ताण पुड घादित्ति अघादित्ति य होंति सण्णाओ ॥७॥

णाणस्स दंसणस्स य आवरणं वेयणीयमोहणियं।
आउगणामं गोदंतरायमिदि अट्ठ पयडीओ॥८॥

आवरणमोहविग्घं घादी जीवगुणघादणत्तादो।
आउणणाम गोदं वेयणियं तह अघादित्ति॥९॥

केवलणाणं दंसणमणंतविरियं च खयियसम्मं च।
खयियगुणे मदिआदी खओवसमिये य घादी दु॥१०॥

कम्मकयमोहवड्ढियसंसारम्मि य अणादिजुत्तम्मि।
जीवस्स अवट्ठाणं करेदि आऊ हलिव्व णरं॥११॥

गदियादि जीवभेदं देहादी पोग्गलाण भेदं च।
गदियंतरपरिणमणं करेदि णामं अणेयविहं॥१२॥

संताणकमेणागयजीवायरणस्स गोदमिदि सण्णा।
उच्चं णीचं चरणं उच्चं णीचं हवे गोदं॥१३॥

अक्खाणं अणुभवणं वेयणियं सुहसरूवयं सादं।
दुक्खसरूवमसादं तं वेदयदीदि वेदणियं॥१४॥

अट्ठं देक्खिय जाणदि पच्छा सद्दहदि सत्तभंगीहिं।
इदि दंसणं च णाणं सम्मत्तं होंति जीवगुणा॥१५॥

अब्भरिहिदादु पुव्वं णाणं तत्तो हि दंसणं होदि।
सम्मत्तमदो विरियं जीवाजीवगदमिदि चरिमे॥१६॥

घादीवि अघादिं वा णिस्सेसं घादणे असक्कादो।
णामतियणिमित्तादो विग्घं पढिदं अघादिचरिमम्मि॥१७॥

आउबलेण अवट्ठिदि भवस्स इदि णाममाउपुव्वं तु।
भवमस्सिय णीचुच्चं इदि गोदं णामपुव्वं तु॥१८॥

घादिंव वेयणीयं मोहस्स बलेण घाददे जीवं।
इदि घादीणं मज्झे मोहस्सादिम्मि पढिदं तु॥१९॥

णाणस्स दंसणस्स य आवरणं वेयणीयमोहणियं।
आउगणामं गोदंतरायमिदि पढिदमिदि सिद्धं॥२०॥

पडपडिहारसिमज्जाहलिचित्तकुलालभंडयारीणं।
जह एदेसिं भावा तहवि य कम्मा मुणेयव्वा॥२१॥

पंच णव दोण्णि अट्ठावीसं चउरो कमेण तेणउदी।
तेउत्तरं सयं वा दुगपणगं उत्तरा होंति॥२२॥

थीणुदयेणुट्ठविदे सोवदि कम्मं करेदि जप्पदि य।
णिद्दाणिद्दुदयेण य ण दिट्ठिमुग्घाडिदुं सक्को॥२३॥

पयलापयलुदयेण य वहेदि लाला चलंति अंगाइं।
णिद्दुदये गच्छंतो ठाइ पुणो बवयिसइ पडेइ॥२४॥

पयलुदयेण य जीवो ईसुम्मीलिय सुवेइ सुत्तोवि।
ईसं ईसं जाणदि मुहुं मुहुं सोवदे मंदं॥२५॥

जंतेण कोद्दवं वा पढमुवसमसम्मभावजंतेण।
मिच्छं दव्वं तु तिहा असंखगुणहीणदव्वकमा॥२६॥

तेजाकम्मेहि तिए तेजा कम्मेण कम्मणा कम्मं।
कयसंजोगे चदुचदुचदुदुग एक्कं च पयडीओ॥२७॥

णलया बाहू य तहा णियंबपुट्ठी उरो य सीसो य।
अट्ठेव दु अगाइं देहे सेसा उवंगाइं॥२८॥

सेवट्टेण य गम्मइ आदीदो चदुसु कप्पजुगलोत्ति।
तत्तो दुजुगलजुगले खीलियणारायणद्धोत्ति॥२९॥

णवगेवेज्जाणुद्दिसणुत्तरवासीसु जांति ते णियमा।
तिदुगेगे संघडणे णारायणमादिगे कमसो॥३०॥

सण्णी छस्संघडणो वज्जदि मेघं तदो परं चावि।
सेवट्टादीरहिदो पण पणचदुरेगसंघडणो॥३१॥

अंतिमतिगसंघडणस्सुदओ पुण कम्मभूमिमहिलाणं।
आदिमतिगसंघडणं णत्थित्ति जिणेहि णिद्दिट्ठं॥३२॥

मूलुण्हपहा अग्गी आदाओ होदि उण्हसहियपहा।
आइच्चे तेरिच्छे उण्हूणपहा हु उज्जोवो॥३३॥

देहे अविणाभावी बंधणसंघाद इदि अबंधुदया।
वण्णचउक्केऽभिण्णे गहिदे चत्तारि बंधुदये॥३४॥

पंच णव दोण्णि छव्वीसमवि य चउरो कमेण सत्तट्ठी।
दोण्णि य पंच य भणिया एदाओ बंधपयडीओ॥३५॥

पंच णव दोण्णि अट्ठावीसं चउरो कमेण सत्तट्ठी।
दोण्णि य पंच य भणिदा एदाओ उदयपयडीओ॥३६॥

भेदे छादालसयं इदरे बंधे हवंति वीससयं।
भेदे सव्वे उदये बावीससयं अभेदम्मि॥३७॥

पंच णव दोण्णि अट्ठावीसं चउरो कमेण तेणउदी।
दोण्णि य पंच य भणिदा एदाओ सत्तपयडीओ॥३८॥

केवलणाणावरणं दंसणछक्कं कसायबारसयं।
मिच्छं च सव्वघादी सम्मामिच्छं अबंधम्मि॥३६॥

णाणावरणचउक्कं तिदंसणं सम्मगं च संजलणं।
णव णोकसाय विग्घं छव्वीसा देसघादीओ॥४०॥

सादं तिण्णेवाऊ उच्चं णरसुरदुगं च पंचिंदी।
देहा बंधणसंघादंगोवगाइ वण्णचऊ॥४१॥

समचउरवज्जरिसहं उवघादूणगुरुछक्क सग्गमणं।
तसबारसट्ठसट्ठी बादालमभेददो सत्था॥४२॥

घादी णीचमसादं णिरयाऊ णिरयतिरियदुग जादी-
संठाणसंहदीणं चदुपणपणगं च वण्णचऊ॥४३॥

उवघादमसग्गमणं थावरदसयं च अप्पसत्था हु।
बंधुदयं पडि भेदे अडणडदि सयं दुचदुरसीदिदरे॥४४॥

पढमादिया कसाया सम्मत्तं देससयलचारित्तं।
जहखादं घादंति य गुणणामा होंति सेसावि॥४५॥

अंतोमुहुत्त पक्खं छम्मासं संखसंखणंतभवं।
संजलणमादियाणं वासणकालो दु णियमेण॥४६॥

देहादी फस्संता पण्णासा णिमिणतावजुगलं च।
थिरसुहपत्तेयदुगं अगुरुतियं पोग्गलविवाई॥४७॥

आऊणि भवविवाई खेत्तविवाई य आणुपुव्वीओ।
अट्ठत्तरि अवसेसा जीवविवाई मुणेयव्वा॥४८॥

वेदणियगोदघादीणेक्कावण्णं तुणामपयडीणं।
सत्तावीसं चेदे अट्ठत्तरि जीववाई (ओ)॥४६॥

तित्थयरं उस्सासं बादरपज्जत्तसुस्सरादेज्जं।
जसतसविहायसुभगदु चउगइ पणजाइ सगवीसं॥५०॥

गदि जादी उस्सासं विहायगदि तसतियाण जुगलं च।
सुभगादीचउजुगलं तित्थयरं चेदि सगवीसं॥५१॥

णाम ट्ठवणा दवियं भावं ति चउव्विहं हवे कम्मं।
पयडी पावं कम्मं मलंति सण्णा हु णाममलं॥५२॥

सरिसासरिसं दव्वे मदिणा जीवट्ठियं खु जं कम्मं।
तं एदंति पदिट्ठा ठवणा तं ठावणाकम्मं॥५३॥

दव्वे कम्मं दुविहं आगमणोआगमंति तप्पढमं।
कम्मागमपरिजाणगजीवो उवजोगपरिहीणो॥५४॥

जाणुगसरीर भवियं तव्वदिरित्तं तु होदि जं बिदियं।
तत्थ सरीरं तिविहं तियकालगयंति दो सुगमा॥५५॥

भूदं तु चुदं चयिदं चत्तंति तिधा चुदं सपाकेण।
पडिदं कदलीघादपरिच्चागेणूणयं होदि॥५६॥

विसवेयणरत्तक्खयभयसत्थग्गहणसंकिलेसेहिं।
उस्सासाहाराणं णिरोहदो छिज्जदे आऊ॥५७॥

कदलीघादसमेदं चागविहीणं तु चइदमिदि होदि।
घादेण अघादेण व पडिदं चागेण चत्तमिदि॥०॥

भत्तपइण्णाइंगिणिपाओग्गविहीहि चत्तमिदि तिविहं।
भत्तपइण्णा तिविहा जहण्णमज्झिमवरा य तहा॥५६॥

भत्तपइण्णायविही जहण्णमंतो मुहुत्तयं होदि।
बारसवरिसा जेट्ठा तम्मज्झे होदि मज्झिमया॥६०॥

अप्पोवयारवेक्खं परोवयारूणमिंगिणीमरणं।
सपरोवयारहीणं मरणं पाओवगमणमिदि॥६१॥

भवियंति भवियकाले कम्मागमजाणगो स जो जीवो।
जाणुगसरीरभवियं एवं होदित्ति णिद्दिट्ठं॥६२॥

तव्वदिरित्तं दुविहं कम्मं णोकम्ममिदि तहिं कम्मं।
कम्मसरूवेणागय कम्मं दव्वं हवे णियमा॥६३॥

कम्मद्दव्वादण्णं दव्वं णोकम्मदव्वमिदि होदि।
भावे कम्मं दुविहं आगमणोआगमंति हवे॥६४॥

कम्मागमपरिजाणगजीवो कम्मागमम्मि उवजुत्तो।
भावागमकम्मोत्ति य तस्स य सण्णा हवे णियमा ॥६५॥

णोआगमभाओ पुण कम्मफलं भुंजमाणगो जीवो।
इदि सामण्णं कम्मं चउव्विहं होदि णियमेण॥६६॥

मूलुत्तरपयडीणं णामादी एवमेव णवरिं तु।
सगणामेण य णामं ठवणा दवियं हवे भावो॥६७॥

मूलुत्तरपयडीणं णामादि चउव्विहं हवे सुगमं।
वज्जित्ता णोकम्मं णोआगमभावकम्मं च॥६८॥

पडपडिहारसिमज्जा आहारं देह उच्चणीचंगं।
भंडारी मूलाणं णोकम्मं दवियकम्मं तु॥६६॥

पडविसयपहुडि दव्वं मदिसुदवाघादकरणसंजुत्तं।
मदिसुदबोहाणं पुण णोकम्मं दवियकम्मं तु॥७०॥

ओहिमणपज्जवाणं पडिघादणिमित्तसंकिलेसयरं।
जं वज्झट्ठं तं खलु णोकम्मं केवले णत्थि॥७१॥

पंचण्हं णिद्दाणं माहिसदहिपहुडि होदि णोकम्मं।
वाघादकरपडादी चक्खुअचक्खूण णोकम्मं॥७२॥

ओहीकेवलदंसणणोकम्मं ताण णाणभंगो व्व।
सादेदरणोकम्मं इट्ठाणिट्ठण्णपाणादि॥७३॥

आयदणाणायदणं सम्मे मिच्छे य हवदि णोकम्मं।
उभयं सम्मामिच्छे णोकम्मं होदि णियमेण॥७४॥

अणणोकम्मं मिच्छत्तायदणादी हु होदि सेसाणं।
सगसगजोग्गं सत्थं सहायपहुदी हवे णियमा॥७५॥

थीपुंसंढसरीरं ताणं णोकम्म दव्वकम्मं तु।
वेलंबको सुपुत्तो हस्सरदीणं च णोकम्मं॥७६॥

इट्ठाणिट्ठवियोगं-जोगं अरदिस्स मुदसुपुत्तादी।
सोगस्स य सिंहादी णिंदिददव्वं च भयजुगले॥७७॥

णिरयाउस्स अणिट्ठाहारो सेसाणमिट्ठमण्णादी।
गदिणोकम्मं दव्वं चउग्गदीणं हवे खेत्तं॥७८॥

णिरयादीण गदीणं णिरयादी खेत्तयं हवे णियमा।
जाईए णोकम्मं दव्विंदियपोग्गलं होदि॥७९॥

एइंदियमादीणं सगसगदव्विंदियाणि णोकम्मं।
देहस्स य णोकम्मं देहुदयजदेहखंदाणि॥८०॥

ओरालियवेगुव्वियआहारयतेजकम्मणोकम्मं।
ताणुदयजचउदेहा कम्मे विस्संचयं णियमा॥८१॥

बंधणपहुदिसमण्णियसेसाणं देहमेव णोकम्मं।
णवरि विसेसं जाणे सगखेत्तं आणुपुव्वीणं॥८२॥

थिरजुम्मस्स थिराथिररसरुधिरादीणि सुहजुगस्स सुहं।
असुहं देहावयवं सरपरिणदपोग्गलाणि सरे॥८३॥

उच्चस्सुच्चं देहं णीचं णीचस्स होदि णोकम्मं।
दाणादिचउक्काणं विरघगणगपुरिसपहुदी हु॥८४॥

वीरियस्स य णोकम्मं रुक्खाहारादि बलहरं दव्वं।
इदि उत्तरपयडीणं णोकम्मं दव्वकम्मं तु॥८५॥

णोआगमभाओ पुण सगसगकम्मफलसंजुदो जीवो।
पोग्गलविवायियाणं णत्थि खु णोआगमो भावो॥८६॥

णमिऊण णेमिचंदं असहायपरक्कमं महावीरं।
बंधुदयसत्तजुत्तं ओघादेसे थवं वोच्छं॥८७॥

सयलंगेक्कंगेक्कंगहियार सवित्थरं ससंखेवं।
वण्णणसत्थं थयथुइधम्मकहा होइ णियमेण॥८८॥

पयडिट्ठिदिअणुभागप्पदेसबंधोत्ति चदुविहो बंधो।
उक्कस्समणुक्कस्सं जहण्णमजहण्णगंत्ति पुधं॥८९॥

सादिअणादी धुव अद्धुवो य बंधो दु जेट्ठमादीसु।
णाणेगं जीवं पडि ओघादेसे जहाजोग्गं॥९०॥

ठिदिअणुभागपदेसा गुणपडिवण्णेसु जेसिमुक्कस्सा।
तेसिमणुक्कस्सो चउव्विहोऽजहण्णोवि एमेव॥९१॥

सम्मेव तित्थबंधो आहारदुगं पमादरहिदेसु।
मिस्सूणे आउस्स य मिच्छादिसु सेसबंधो दु॥९२॥

पढमुवसमिये सम्मे सेसतिये अविरदादिचत्तारि।
तित्थयरबंधपारंभया णरा केवलिदुगंते॥९३॥

सोलस पणवीस णभं दस चउ छक्केक्क बंधवोच्छिण्णा।
दुग तीस चदुरपुव्वे पण सोलस जोगिणो एक्को॥९४॥

मिच्छत्तहुंडसंढासंपत्तेयक्खथावरादावं।
सुहुमतियं वियलिंदी णिरयदुणिरयाउगं मिच्छे॥९५॥

बिदियगुणे अणथीणतिदुभगतिसंठाणसंहदिचउक्कं।
दुग्गमणित्थीणीचं तिरियदुगुज्जोवतिरिआऊ॥६६॥

अयदे बिदियकसाया वज्जं ओरालमणुदुमणुवाऊ।
देसे तदियकसाया णियमेणिह बंधवोच्छिण्णा॥६७॥

छट्ठे अथिरं असुहं असादमनसं च अरदिसोगं च।
अपमत्ते देवाऊणिट्ठवणं चेव अत्थित्ति॥६८॥

मरणूणम्मि णियट्टीपढमे णिद्दा तहेव पयला य।
छट्ठे भागे तित्थं णिबिणं सग्गमणपंचिंदी॥६९॥

तेजदुहारदुसमचउसुरवण्ण गुरुगचउक्कतसणवयं।
चरिमे हस्सं च रदी भयं जुगुच्छा य वोच्छिण्णा ॥१००॥

पुरिसं चदुसंजलणं कमेण अणियट्टिपंचभागेसु।
पढमं विग्घं दंसणचउजसउच्चं च सुहुमंते॥१०१॥

उवसंतखीणमोहे जोगिम्मि य समइयट्ठिदी सादं।
णायव्वो पयडीणं बंधस्संतो अणंतो य॥१०२॥

सत्तरसेक्कग्गसयं चउसत्तत्तरि सगट्ठि तेवट्ठी।
बंधा णवट्ठवण्णा दुवीस सत्तारसेक्कोघे॥१०३॥

तिय उणवीसं छत्तियतालं तेवण्ण सत्तवण्णं च।
इगिदुगसट्ठी बिरहियतिय सय उणवीससय तिवीससयं॥१०४॥

ओघे वा ओदेसे णारयमिच्छम्मि चारि बोच्छिण्णा।
उवरिम बारस सुरचउ सुराउ आहारयमबंधा॥१०५॥

घम्मे तित्थं बंधदि वंसामेघाण पुण्णगो चेव।
छट्ठोत्ति य मणुवाऊ चरिमे मिच्छेव तिरियाऊ॥१०६॥

मिस्साविरदे उच्चं मणुवदुगं सत्तमे हवे बंधो।
मिच्छा सासणसम्मा मणुवदुगुच्चं ण बंधंति॥१०७॥

तिरिए ओघो तित्थाहारूणो अविरदे छिदी चउरो।
उवरिमछण्णं च छिदि सासणसम्मे हवे णियमा॥१०८॥

सामण्णतिरियपंचिंदियपुण्णगजोणिणीसु एमेव।
सुरणिरयाउ अपुण्णे वेगुव्वियछक्कमवि णत्थि॥१०९॥

तिरियेव णरे णवरि हु तित्थाहारं च अत्थि एमेव।
सामण्णपुण्णमणुसिणिणरे अपुण्णे अपुण्णेव॥११०॥

णिरयेव होदि देवे आईसाणोत्ति सत्त वाम छिदी।
सोलस चेव अबंधो भवणतिए णत्थि तित्थयरं॥१११॥

कप्पित्थीसु ण तित्थं सदरसहस्सारगोत्ति तिरियदुगं।
तिरियाऊ उज्जोवो अत्थि तदो णत्थि सदरचऊ॥११२॥

पुण्णिदरं इगिविगले तत्थुप्पण्णो हु सासणो देहे।
पज्जतिं णवि पावदि इदि णरतिरियाउगं णत्थि॥११३॥

पंचिदिएसु ओघं एयक्खे वा वणप्पडीयंते।
मणुवदुगं मणुवाऊ उच्चं ण हि तेउवाउम्मि॥११४॥

ण हि सासणो अपुण्णे साहारणसुहुमगे य तेउदुगे।
ओघं तस मणवयणे ओराले मणुवगइभंगो॥११५॥

ओराले वा मिस्से णहि सुरणिरयाउहारणिरयदुगं।
मिच्छदुगे देवचऊ तित्थं ण हि अविरदे अत्थि॥११६॥

पण्णारसमुगुतीसं मिच्छदुगे अविरदे छिदी चउरो।
उवरिमपणसट्ठीवि य एक्कं सादं सजोगिम्मि॥११७॥

देवे वा वेगुव्वे मिस्से णरतिरियआउगं णत्थि।
छट्ठगुणं वाहारे तम्मिस्से णत्थि देवाऊ॥११८॥

कम्मे उरालमिस्सं वा णाउदुगंपि णव छिदी अयदे।
वेदादाहारोत्ति य सगुणट्ठाणाणमोघं तु॥११९॥

णवरि य सव्वुवसम्मे णरसुरआऊणि णत्थि णियमेण।
मिच्छस्संतिम णवयं बारं ण हि तेउपम्मेसु॥१२०॥

सुक्के सदरचउक्कं वामंतिमबारसं च ण च अत्थि।
कम्मेव अणाहारे बंधस्संतो अणंतो य॥१२१॥

सादि अणादी धुव अद्धुवो य बंधो दु कम्मछक्कस्स।
तदियो सादियसेसो अणादिधुवसेसगो आऊ॥१२२॥

सादी अबंधबंधे सेढिअणारूढगे अणादी दु।
अब्भवसिद्धम्मि धुवो भवसिद्धे अद्धुवो बंधो॥१२३॥

घादितिमिच्छकसाया भयतेजगुरुदुगणिमिणवण्णचऊ।
सत्तेतालधुवाणं चदुधा सेसाणयं तु दुधा॥१२४॥

सेसे तित्थाहारं परघादचउक्क सव्वआऊणि।
अप्पडिवक्खा सेसा सप्पडिवक्खा हु बासट्ठा॥१२५॥

अवरो भिण्णमुहुत्तो तित्थाहाराण सव्वआऊणं।
समओ छावट्ठीणं बंधो तम्हा दुधा सेसा॥१२६॥

तीसं कोडाकोडी तिघादितदिएसु वीस णामदुगे।
सत्तरि मोहे सुद्धं उवही आउस्स तेतीसं॥१२७॥

दुक्खतिघादीणोघं सादित्थीमणुदुगे तदद्धं तु।
सत्तरि दंसणमोहे चरित्तमोहे य चत्तालं॥१२८॥

संठाणसंहदीणं चरिमस्सोघं दुहीणमादित्ति।
अट्ठरसकोडकोडी वियलाणं सुहुमतिण्हं च॥१२९॥

अरदीसोगे संढे तिरिक्खभयणिरयतेजुरालदुगे।
वेगुव्वादावदुगे णीचे तसवण्णअगुरुति चउक्के॥१३०॥

इगिपंचिंदियथावरणिमिणासग्गमणअथिरछक्काणं।
वीसं कोडाकोडीसागर णामाणमुक्कस्सं॥१३१॥

हस्सरदिउच्चपुरिसे थिरछक्के सत्थगमणदेवदुगे।
तस्सद्धमंतकोडाकोडी आहारतित्थयरे॥१३२॥

सुरणिरयाऊणोघं णरतिरियाऊण तिण्णि पल्लाणि।
उक्कस्सट्ठिदिबंधो सण्णीपज्जत्तगे जोग्गे॥१३३॥

सव्वट्ठिदीणमुक्कस्सओ दु उक्कस्ससंकिलेस्सेण।
विवरीदेण जहण्णो आउगतियवज्जियाणं तु॥१३४॥

सव्वुक्कस्सठिदीणं मिच्छाइट्ठी दु बंधगो भणिदो।
आहारं तित्थयरं देवाउं चा विमोत्तूणं॥१३५॥

देवाउगं पमत्तो आहारयमप्पमत्तविरदो दु।
तित्थयरं च मणुस्सो अविरदसम्मो समज्जेइ॥१३६॥

णरतिरिया सेसाउं वेगुव्वियछक्कवियलसुहुमतियं।
सुरणिरया ओरालियतिरियदुगुज्जोवसंपत्तं॥१३७॥

देवा पुण एइंदियआदावं थावरं च सेसाणं।
उक्कस्ससंकिलिष्टा चदुगदिया ईसिमज्झिमया॥१३८॥

बारस य वेयणीये णामागोदे य अट्ठ य मुहुत्ता।
भिण्णमुहुत्तं तु ठिदी जहण्णयं सेसपंचण्हं॥१३९॥

लोहस्स सुहुमसत्तरसाणं ओघं दुगेक्कदलमासं।
कोहतिये पुरिसस्स य अट्ठ य वस्सा जहण्णठिदी॥१४०॥

तित्थाहाराणंतोकोडाकोडी जहण्णठिदिबंधो।
खवगे सगसगबंधणछेदणकाले हवे णियमा॥१४१॥

भिण्णमुहुत्तो णरतिरिआऊणं वासदससहस्साणि।
सुरणिरयआउगाणं जहण्णओ होदि ठिदिबंधो॥१४२॥

सेसाणं पज्जत्तो बादरएइंदियो विसुद्धो य।
बंधदि सव्वजहण्णं सगसगउक्कस्सपडिभागे॥१४३॥

एयं पणकदि पण्णं सयं सहस्सं च मिच्छवरबंधो।
इगिविगलाणं अवरं पल्लासंखूणसंखूणं॥१४४॥

जदि सत्तरिस्स एत्तियमेत्तं किं होदि तीसियादीणं।
इदि संपादे सेसाणं इगिविगलेसु उभयठिदी॥१४५॥

सण्णि असण्णिचउक्के एगे अंतोमुहुत्तमाबाहा।
जेट्ठे संखेज्जगुणा आवलिसंखं असंखभागहियं॥१४६॥

जेट्ठाबाहोवट्टियजेट्ठं आबाहकंडयं तेण।
आबाहवियप्पहदेणेगूणेणूणजेट्ठमवरठिदी॥१४७॥

बासूप-बासूअ-वरट्ठिदीओ सूबाअ-सूबाप-जहण्णकालो।
बीबीवरो बीविजहण्णकालो सेसाणमेवं वयणीयमेदं॥१४८॥

मज्झे थोवसलागा हेट्ठा उवरिं च संखगुणिदकमा।
सव्वजुदी संखगुणा हेट्ठुवरिं संखगुणमसण्णित्ति॥१४९॥

सण्णिस्स हु हेट्ठादो ठिदिठाणं संखगुणिदमुवरुवरिं।
ठिदिआयामोवि तहा सगठिदिठाणं व आबाहा॥१५०॥

सत्तरसपंचतित्थाहाराणं सुहुमबादरोऽपुव्वो।
छव्वेगुव्वमसण्णी जहण्णमाऊण सण्णी वा॥१५१॥

अजहण्णट्ठिदिबंधो चउव्विहो सत्तमूलपयडीणं।
सेसतिये दुवियप्पो आउचउक्केवि दुवियप्पो॥१५२॥

संजलणसुहुमचोद्दस-घादीणं चदुविधो दु अजहण्णो।
सेसतिया पुण दुविहा सेसाणं चदुविधावि दुधा॥१५३॥

सव्वाओ दु ठिदीओ सुहासुहाणंपि होंति असुहाओ।
माणुसतिरिक्खदेवाउगं च मोत्तूण सेसाणं॥१५४॥

कम्मसरूवेणागयदव्वं ण य एदि उदयरूवेण।
रूवेणुदीरणस्स व आबाहा जाव ताव हवे॥१५५॥

उदयं पडि सत्तण्हं आबाहा कोडकोडि उवहीणं।
वाससयं तप्पडिभागेण य सेसट्ठिदीणं च॥१५६॥

अंतोकोडाकोडिट्ठिदिस्स अंतोमुहुत्तमाबाहा।
संखेज्जगुणविहीणं सव्वजहण्णट्ठिदिस्स हवे॥१५७॥

पुव्वाणं कोडितिभा-गादासंखेप अद्ध ओत्ति हवे।
आउस्स य आबाहा ण ट्ठिदिपडिभागमाउस्स॥१५८॥

आवलियं आबाहो दीरणमासेज्ज सत्तकम्माणं।
परभवियआउगस्स य उदीरणा णत्थि णियमेण॥१५९॥

आबाहूणियकम्मट्ठिदी णिसेगो दु सत्तकम्माणं।
आउस्स णिसेगो पुण सगट्ठिदी होदि णियमेण॥१६०॥

आबाहं वोलाविय पढमणिसेगम्मि देइ बहुगं तु।
तत्तो विसेसहीणं बिदियस्सादिमणिसिगोत्ति॥१६१॥

बिदिये बिदियणिसेगे हाणी पुव्विल्लहाणिअद्धं तु।
एवं गुणहाणि पडि हाणी अद्धद्धयं होदि॥१६२॥

सुहपयडीण विसोही तिव्वो असुहाण संकिलेसेण।
विवरीदेण जहण्णो अणुभागो सव्वपयडीणं॥१६३॥

बादालं तु पसत्था विसोहिगुणमुक्कडस्स तिव्वाओ।
बासीदि अप्पसत्था मिच्छुक्कडसंकिलिट्ठस्स॥१६४॥

आदाओ उज्जोओ मणुवतिरिक्खाउगं पसत्थासु।
मिच्छस्स होंति तिब्बा सम्माइट्ठिस्स सेसाओ॥१६५॥

णणुओरालदुवज्जं विशुद्धसुरणिरयअविरदे तिब्बा।
देवाउ अप्पमत्ते खवगे अवसेसबत्तीसा॥१६६॥

उबघादहीणतीसे अपुव्वकरणस्स उच्चजससादे।
सम्मेलिदे हवंति हु खवगस्सवसेसबत्तीसा॥१६७॥

मिच्छस्संतिमणवयं णरतिरियाऊणि वामणरतिरिए।
एइंदियआदावं थावरणामं च सुरमिच्छे॥१६८॥

उज्जोओ तमतमगे सुरणारयमिच्छगे असंपत्तं।
तिरियदुगं सेसा पुण चदुगदिमिच्छे किलिट्ठे य॥१६९॥

वण्णचउक्कमसत्थं उवघादो खवगघादि पणुवीसं।
तीसाणमवरबंधो सगसगवोच्छेदठाणम्मि॥१७०॥

अणथीणतियं मिच्छं मिच्छे अयदे हु बिदियकोहादी।
देसे तदियकसाया संजमगुणपत्थिदे सोलं॥१७१॥

आहारमप्पमत्ते पमत्तसुद्धे व अरदिसोगाणं।
णरतिरिये सुहुमतियं वियलं वेगुव्वछक्काऊ॥१७२॥

सुरणिरये उज्जोवोरालदुगं तमतमम्मि तिरियदुगं।
णीचं च तिगदिमज्झिमपरिणामे थावरेयक्खं॥१७३॥

सोहम्मोत्ति य तावं तित्थयरं अविरदे मणुस्सम्मि।
चदुगतिवामकिलिट्ठे पण्णरस दुवे विसोहीये॥१७४॥

परघाददुगं तेजदु तसवण्णचउक्क णिमिणपंचेंदी।
अगुरुलहुं च किलिट्ठे इत्थिणउंसं विसोहीये॥१७५॥

सम्मो वा मिच्छो वा अट्ठ अपरियट्टमज्झिमो य जदि।
परिवट्टमाणमज्झिममिच्छाइट्ठी दु तेवीसं॥१७६॥

थिरसुहजससाददुगं उभये मिच्छेव उच्चसंठाणं।
संहदिगमणं णरसुरसुभगादेज्जाण जुम्मं च॥१७७॥

घादीणं अजहण्णोणुक्कस्सो वेयणीयणामाणं।
अजहण्णमणुक्कस्सो गोदे चदुधा दुधा सेसा॥१७८॥

सत्थाणं धुवियाणमणुक्कस्समसत्थगाण दुवियाणं।
अजहण्णं च य चदुधा सेसा सेसाणयं च दुधा॥१७९॥

सत्ती य लदादारूअट्ठीसेलोवमाहु घादीणं।
दारुअणंतिमभागोत्ति देसघादी तदो सव्वं॥१८०॥

देसोत्ति हवे सम्मं तत्तो दारूअणंतिमे मिस्सं।
सेसा अणंतभागा अत्थिसिलाफड्ढया मिच्छे॥१८१॥

आवरणदेसघादंतरायसंजलणपुरिससत्तरसं।
चदुविधभावपरिणदा तिविहा भावा हु सेसाणं॥१८२॥

अवसेसा पयडीओ अघादिया घादियाण पडिभागा।
ता एव पुण्णपावा सेसा पावा मुणेयव्वा॥१८३॥

गुडखंडसक्करामियसरिसा सत्था हु णिंबकंजीरा।
विसहालाहलसरिसाऽसत्था हु अघादिपडिभागा॥१८४॥

एयक्खेत्तोगाढं सव्वपदेसेहिं कम्मणो जोग्गं।
बंधदि सगहेदूहिं य अणादियं सादियं उभयं॥१८५॥

एयसरीरोगाहियमेयक्खेत्तं अणेयखेत्तं तु।
अवसेसलोयखेत्तं खेत्तणुसारिट्ठियं रूवी॥१८६॥

एयाणेयखेत्तट्ठियरूविअणंतिमं हवे जोग्गं।
अवसेसं तु अजोग्गं सादि अणादी हवे तत्थ॥१८७॥

जेट्ठे समयपबद्धे अदीदकाला हदेण सव्वेण।
जीवेण हदे सव्वं सादी होदित्ति णिद्दिट्ठं॥१८८॥

सगसगखेत्तगयस्स य अणंतिमं जोग्गदव्वगयसादी।
सेसं अजोग्गसंगयसादी होदित्ति णिद्दिट्ठं॥१८६॥

सगसगसादिविहीणे जोग्गाजोग्गे य होदि णियमेण।
जोग्गाजोग्गाणं पुण अणादिदव्वाण परिमाणं॥१६०॥

सयलरसरूवगंधेहिं परिणदं चरमचदुहिं फासेहिं।
सिद्धादोअभव्वादोणंतिमभागं गुणं दव्वं॥१६१॥

आउगभागो थोवो णामागोदे समो तदो अहियो।
घादितियेवि य तत्तो मोहे तत्तो तदो तदिए॥१६२॥

सुहदुक्खणिमित्तादो बहुणिज्जरगोत्ति वेयणीयस्स।
सव्वेहिंतो बहुगं दव्वं होदित्ति णिद्दिट्ठं॥१६३॥

सेसाणं पयडीणं ठिदिअणुभागेण होदि दव्वं तु।
आवलिअसंखभागो पडिभागो होदि णियमेण॥१६४॥

बहुभागे समभागो अट्ठण्हं होदि एक्कभागम्हि।
उत्तकमो तत्थवि बहुभागो बहुगस्स देयो दु॥१६५॥

उत्तरपयडीसु पुणो मोहावरणा हवंति हीणकमा।
अहियकमा पुण णामाविग्घा य ण भंजणं सेसे॥१६६॥

सव्वावरणं दव्वं अणंतभागो दु मूलपयडीणं।
सेस अणंताभागा देसावरणे हवे दव्वं॥१६७॥

देसावरणण्णोण्णब्भत्थं तु अणंतसंखमेत्तं खु।
सव्वावरणधणट्ठं पडिभागो होदि घादीणं॥१६८॥

सव्वावरणं दव्वं विभज्जणिज्जं तु उभयपयडीसु।
देसावरणं दव्वं देसावरणेसु णेविदरे॥१६९॥

बहुभागे समभागो बंधाणं होदि एक्कभागह्मि।
उत्तकमो तत्थवि बहुभागो बहुगस्स देओ दु॥२००॥

घादितियाणं सगसगसव्वावरणीयसव्वदव्वं तु।
उत्तकमेण य देयं विवरीयं णामविग्घाणं॥२०१॥

मोहे मिच्छत्तादीसत्तरसण्हं तु दिज्जदे हीणं।
संजलणाणं भागेव होहि पणणोकसायाणं॥२०२॥

संजलणभागबहुभागद्धं अकसायसंगयं दव्वं।
इगिभागसहियबहुभागद्धं संजलणपडिबद्धं॥२०३॥

तण्णोकषायभागो संबधपणणोकसायपयडीसु।
हीणकमो होदि तहा देसे देसावरणदव्वं॥२०४॥

पुंबंधद्धा अंतोमुहुत्त इत्थिम्मि हस्सजुगले य।
अरदिजुगे संखगुणा णउंसगद्धा विसेसहिया॥२०५॥

पणविग्घे विवरीयं सबंधपिंडिदरणामठाणेवि।
पिंडं दव्वं च पुणो सबंधसगपिंडपयडीसु॥२०६॥

छण्हंपि अणुक्कस्सो पदेसबंधो दु चदुवियप्पो दु।
सेसतिये दुवियप्पो मोहाऊणं च दुवियप्पो॥२०७॥

तीसण्हमणुक्कस्सो उत्तरपयडीसु चउविहो बंधो।
सेसतिये दुवियप्पो सेसचउक्केवि दुवियप्पो॥२०८॥

णाणंतरायदसयं दंसणछक्कं च मोहचोद्दसयं।
तीसण्हमणुक्कस्सो पदेसबंधो चदुवियप्पो॥२०६॥

उक्कडजोगो सण्णी पज्जत्तो पयडिबंधमप्पदरो।
कुणदि पदेसुक्कस्सं जहण्णये जाण विवरीयं॥२१०॥

आउक्कस्स पदेसं छत्तुं मोहस्य णव दु ठाणाणि।
सेसाणं तणुकसाओ बंधदि उक्कस्सजोगेण॥२११॥

सत्तर सुहुमसरागे पंचणियट्टिम्मि देसगे तदियं।
अयदे बिदियकसायं होदि हु उक्कस्सदव्वं तु॥२१२॥

छण्णोकसायणिद्दापयलातित्थं च सम्मगो य जदी।
सम्मो वामो तेरं णरसुरआऊ असादं तु॥२१३॥

देवचउक्कं वज्जं समचउरं सत्थगमणसुभगतियं।
आहारमप्पमत्तो सेसपदेसुक्कडो मिच्छो॥२१४॥

सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्य पढमे जहण्णए जोगे।
सत्तण्हं तु जहण्णं आउगबंधेवि आउस्स॥२१५॥

घोडणजोगोऽसण्णीणिरयदुसुरणिरयआउगजहण्णं।
अपमत्तो आहारं अयदो तित्थं च देवचऊ॥२१६॥

चरिमअपुण्णभवत्थो तिविग्गहे पढमविग्गहम्मि ठियो।
सुहुमणिगोदो बंधदि सेसाणं अवरबंधं तु॥२१७॥

जोगट्ठाणा तिविहा उववादेयंतवड्ढिपरिणामा।
भेदा एक्केक्कंपि य चोद्दसभेदा पुणो तिविहा॥२१८॥

उववादजोगठाणा भवादिसमयट्ठियस्स अवरवरा।
विग्गहउजुगइगमणे जीवसमासेसु णायव्वा॥२१९॥

परिणामजोगठाण सरीरपज्जत्तगादु चरिमोत्ति।
लद्धियपज्जत्ताणं चरिमतिभागम्हि बोद्धव्वा॥२२०॥

सगपज्जत्तीपुण्णे उवरिं सव्वत्थ जोगमुक्कस्सं।
सव्वत्थ होदि अवरं लद्धिअपुण्णस्स जेट्ठंपि॥२२१॥

एयंतवड्ढिट्ठाणा उभयट्ठाणाणमंतरे होंति।
अवरवरट्ठाणाओ सगकालादिम्मि अंतम्हि॥२२२॥

अविभागपडिच्छेदो वग्गो पुण वग्गणा य फड्डयगं।
गुणहाणीवि य जाणे ठाणं पडि होदि णियमेण॥२२३॥

पल्लासंखेज्जदिमा गुणहाणिसला हवंति इगिठाणे।
गुणहाणिफड्डयाओ असंखभागं तु सेडीए॥२२४॥

फड्डयगे एक्केक्के वग्गणसंखा हु तत्तियालावा।
एक्केक्कवग्गणाए असंखपदरा हु वग्गाओ॥२२५॥

एक्केक्के पुण वग्गे असंखलोगा हवंति अविभागा।
अविभागस्स पमाणं जहण्णउड्ढी पदेसाणं॥२२६॥

इगिठाणफड्डयाओ वग्गणसंखा पदेसगुणहाणी।
सेडिअसंखेज्जदिमा असंखलोगा हु अविभागा॥२२७॥

सव्वे जीवपदेसे दिक्कगुणहाणिभाजिदे पढमा।
उवरिं उत्तरहीणं गुणहाणिं पडि तदद्धकमं॥२२८॥

फड्डयसंखाहि गुणं जहण्णवग्गं तु तत्थ तत्थादी।
बिदियादिवग्गणाणं वग्गा अविभागअहियकमा॥२२९॥

अंगुलअसंखभागप्पमाणमेत्तवरफड्डयाउड्ढी।
अंतरछक्कं मुच्चा अवरट्ठाणादु उक्कस्सं॥२३०॥

सरिसायामेणुवरिं सेढियसंखेज्जभागठाणाणि।
चडिदेक्केक्कमपुव्वं पड्डयमिह जायदे चयदो॥२३१॥

एदेसिं ठाणाणं जीवसमासाण अवरवरविषयं।
चउरासीदिपदेहिं अप्पाबहुगं परूवेमो॥२३२॥

सुहुमगलद्धिजहण्णं तण्णिव्वत्तीजहण्णयं तत्तो।
लद्धियपुण्णुक्कस्सं बादरलद्धिस्स अवरमदो॥२३३॥

णिव्वत्तिसुहुमजेट्ठं बादरणिव्वत्तियस्स अवरं तु।
बादरलद्धिस्स वरं बीइंदियलद्धिगजहण्णं॥२३४॥

बादरणिव्वत्तिवरं णिव्वत्तिबियिंदियस्स अवरमदो।
एवंबितिबितितिचतिचचउविमणो होदि चउविमणो॥२३५॥

तह य असण्णीसण्णी असण्णिसण्णिस्स सण्णिउववादं।
सुहुमेइंदियलद्धिगअवरं एयंतवड्ढिस्स॥२३६॥

सण्णिस्सुववादवरं णिव्वत्तिगदस्स सुहुमजीवस्स।
एयंतवड्ढिअवरं लद्धिदरे थूलथूले य॥२३७॥

तह सुहुमसहुमजेट्ठं तो बादरबादरे वरं होदि।
अंतरमवरं लद्धिगसुहुमिदरवरंपि परिणामे॥२३८॥

अंतरमुवरीवि पुणो तप्पुण्णाणं च उवरि अंतरियं।
एयंतवड्ढिठाणा तसपणलद्धिस्स अवरवरा॥२३९॥

लद्धीणिव्वत्तीणं परिणामेयंतवड्ढिठाणाओ।
परिणामट्ठाणाओ अंतरियंतरिय उवरुवरिं॥२४०॥

एदेसिं ठाणाओ पल्लासंखेज्जभागगुणिदकमा।
हेट्ठिमगुणहाणिसला अण्णोण्णब्भत्थमेत्तं तु॥२४१॥

अवरुक्कस्सेण हवे उववादेयंतवड्ढिठाणाणं।
एक्कसमयं हवे पुण इदरेसिं जाव अट्ठोत्ति॥२४२॥

अट्ठसमयस्स थोवा उभयदिसासुवि असंखसंगुणिदा।
चउसमयोत्ति तहेव य उवरिं तिदुसमयजोग्गाओ॥२४३॥

मध्ये जीवा बहुगा उभयत्थ विसेसहीणकमजुत्ता।
हेट्ठिमगुणहाणिसलागादुवरि सलागा विसेसहिया॥२४४॥

दव्वतियं वरिमदलवारा दुगुणमुभयमण्णोण्णं।
जीवजवे चोद्दससयबावीसं होदि बत्तीसं॥२४५॥

चत्तारि तिण्णि कमसो पण अड अट्ठं तदो य बत्तीसं।
किंचूणतिगुणहाणिविभजिदे दव्वे दु जव मज्झं॥२४६॥

पुण्णतसजोगठाणं छेदासंखस्ससंखबहुभागे।
दलमिगिभागं च दलं दव्वदुगं उभयदलवारा॥२४७॥

णाणागुणहाणिसला छेदासंखेज्जभागमेत्ताओ।
गुणहाणीणद्धाणं सव्वत्थवि होदि सरिसं तु॥२४८॥

अण्णोण्णगुणिदरासी पल्लासंखेज्जभागमेत्तं तु।
हेट्ठिमरासीदो पुण उवरिल्लमसंखसंगुणिदं॥२४९॥

इगिठाणफड्ढयाओ समयपबद्धं च जोगवड्ढी च।
समयपबद्धचयट्ठं एदे हु पमाणफलइच्छा॥२५०॥

बीयिंदियपज्जत्तजहण्णट्ठाणादु सण्णिपुण्णस्स।
उक्कस्सट्ठाणोत्ति य जोगट्ठाणा कमे उट्ठा॥२५१॥

सेढियसंखेज्जदिमा तस्स जहण्णस्स फड्डया होंति।
अंगुलअसंखभागा ठाणं पडि फड्डया उड्ढा॥२५२॥

धुववड्ढीड्ढंतो दुगुणं दुगुणं कमेण जायंतो।
चरिमे पल्लच्छेदाऽसंखेज्जदिमो गुणो होदि॥२५३॥

आदी अंते सुद्धे वड्ढिहिदे रूवसंजुदे ठाणा।
सेढिअसंखेज्जदिमा जोगट्ठाणा णिरंतरगा॥२५४॥

अंतरगा तदसंखेज्जदिमा सेढी यसंखभागा हु।
सांतरणिरंतराणिवि सव्वाणिवि जोगठाणाणि॥२५५॥

सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स पढमे जहण्णओ जोगो।
पज्जत्तसण्णिपंचिंदियस्स उक्कस्सओ होदि॥२५६॥

जोगा पयडिपदेसा ठिदियणुभागा कसायदो होंति।
अपरिणदुच्छिण्णेसु य बंधट्ठिदिकारणं णत्थि॥२५७॥

सेढियसंखेज्जदिमा जोगट्ठाणाणि होंति सव्वाणि।
तेहि असंखेज्जगुणो पयडीणं संगहो सव्वो॥२५८॥

तेहि असंखेज्जगुणा ठिदिअवसेसा हवंति पयडीणं।
ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणा तत्तो असंखगुणा॥२५६॥

अणुभागाणं बंधज्झवसाणमसंखलोगगुणिदमदो।
एत्तो अणंतगुणिदा कम्मपदेसा मुणेदव्वा॥२६०॥

आहारं तु पमत्ते तित्थं केवलिणि मिस्सयं मिस्से।
सम्मं वेदगसम्मे मिच्छदुगयदेव आणुदओ॥२६१॥

णिरयं सासणसम्मो ण गच्छदित्ति य ण तस्स णिरयाणू।
मिच्छादिसु सेसुदओ सगसगचरिमोत्ति णायव्वो॥२६२॥

दस चउरिगि सत्तरसं अट्ठ य तह पंच चेव चउरो य।
छच्छक्कएक्कदुगदुगचोद्दस उगुतीस तेरसुदयविही॥२६३॥

पण णवइगि सत्तरसं अड पंच च चउर छक्क छच्चेव।
इगिदुग सोलस तीसं बारस उदये अजोगंता॥२६४॥

मिच्छे मिच्छादावं सुहुमतियं सासणे अणेइंदी।
थावरवियलं मिस्से मिस्सं च य उदयवोच्छिण्णा॥२६५॥

अयदे बिदियकसाया वेगुव्वियछक्क णिरयदेवाऊ।
मणुवतिरियाणुपुव्वी दुब्भगणादेज्ज अज्जसयं॥२६६॥

देसे तदियकसाया तिरियाउज्जोवणीचतिरियगदी।
छट्ठे आहारदुगं थीणतियं उदयवोच्छिण्णा॥२६७॥

अप्रमत्ते सम्मत्तं अंतिमतियसंहदी अपुव्वम्मि।
छच्चेव णोकसाया अणियट्टीभागभागेसु॥२६८॥

वेदतिय कोहमाणं मायासंजलणमेवसुहुमंते।
सुहुमो लोहो संते वज्जं णारायणारायं॥२६९॥

खीणकसायदुचरिमे णिद्दा पयला य उदयबोच्छिण्णा।
णाणंतरायदसयं दंसणचत्तारि चरिमम्मि॥२७०॥

तदियेक्कवज्जणिमिणं थिरसुहसरगदिउरालतेजदुगं।
संठाणं वण्णागुरुचउक्क पत्तेय जोगम्मि॥२७१॥

तदिएक्कं मणुवगदी पंचिंदियसुभगतसतिगादेज्जं।
जसतित्थं मणुवाऊ उच्चं च अजोगिचरिमम्मि॥२७२॥

णट्ठा य रायदोसा इंदियणाणं च केवलिम्मि जदो।
तेण दु सातासातजसुहदुक्खं णत्थि इंदियजं॥२७३॥

समयट्ठिदिगो बंधो सादस्सुदयप्पिगो जदो तस्स।
तेण असादस्सुदओ सादसरूवेण परिणमदि॥२७४॥

एदेण कारणेण दु सादस्सेव दु णिरंतरो उदओ।
तेणासादणिमित्ता परीसहा जिणवरे णत्थि॥२७५॥

सत्तरसेक्कारखचदुसहियसयं सगिगिसीदि छदुसदरी।
छावट्ठि सट्ठि णवसगवण्णास दुदालबारुदया॥२७६॥

पंचेक्कारसबावीसट्ठारसपंचतीस इगिछादालं।
पण्णं छप्पण्णं बितिपणसट्ठि असीदि दुगुणपणवण्णं॥२७७॥

उदयस्सुदीरणस्स य सामित्तादो ण विज्जदि विसेसो।
मोत्तूण तिण्णिठाणं पमत्त जोगी अजोगी य॥२७८॥

तीसं बारस उदयच्छेदं केवलिणमेगदं किच्चा।
सादमसादं च तहिं मणुवाउगमवणिदं किच्चा॥२७९॥

अवणिदतिप्पयडीणं पमत्तविरदे उदीरणा होदि।
णत्थित्ति अजोगिजिणे उदीरणा उदयपयडीणं॥२८०॥

पण णव इगि सत्तरसं अट्ठट्ठ य चदुर छक्क छच्चेव।
इगि दुग सोलुगुदालं उदीरणा होंति जोगंता॥२८१॥

सत्तरसेक्कारखचदुसहियसयं सगिगिसीदि तियसदरी।
णवतिण्णिसट्ठि सगछक्कवण्ण चउवण्णमुगुदालं॥२८२॥

पंचेक्कारसबाबीसट्ठारस पंचतीस इगिणवदालं।
तेवण्णेक्कुणसट्ठी पणछक्कडसट्ठि तेसीदी॥२८३॥

गदियादिसु जोग्गाणं पयडिप्पहुडीणमोघसिद्धाणं।
सामित्तं णेदव्वं कमसो उदयं समासेज्ज॥२८४॥

गदिआणुआउउदओ सपदे भूपुण्णबादरे ताओ।
उच्चुदओ णरदेवे थीणतिगुदओ णरे तिरिये॥२८५॥

संखाउगणरतिरिये इंदियपज्जत्तगादु थीणतियं।
जोग्गमुदेदुं वज्जिय आहारविगुव्वणुट्ठवगे॥२८६॥

अयदापुण्णे ण हि थी संढोवि य धम्मणारयं मुच्चा।
थीसंढयदे कमसो णाणुचऊ चरिमतिण्णाणू॥२८७॥

इगिविगलथावरचऊ तिरिये अपुण्णो णरेवि संघडणं।
ओरालदु णरतिरिए वेगुव्वदु देवणेरइये॥२८८॥

तेउतिगूणतिरिक्खेसुज्जोवो बादरेसु पुण्णेसु।
सेसाणं पयडीणं ओघं वा होदि उदओ दु॥२८९॥

थीणतिथीपुरिसूणा घादी णिरयाउणीचवेयणियं।
णामे सगवचिठाणं णिरयाणू णारयेसुदया॥२९०॥

वेगुव्वतेजथिरसुहदुग दुग्गदिहुंडणिमिणपंचिंदी।
णिरयगदि दुब्भगागुरुतसवण्णचऊ य वचिठाणं॥२९१॥

मिच्छमणंतं मिस्सं मिच्छादिदिए कमा छिदी अयदे।
बिदियकसाया दुब्भगणादेज्जदुगाउणिरयचऊ॥२९२॥

बिदियादिसु छसु पुढविसु एवं णवरि य असंजदट्ठाणे।
णत्थि णिरयाणुपुव्वी तिस्से मिच्छेव वोच्छेदो॥२९३॥

तिरिए ओघो सुरणिरणिरयाऊउच्च मणुदुहारदुगं।
वेगुव्छवकतित्थं णत्थि हु येमेव सामण्णे॥२९४॥

थावरदुगसाहारणतावितिगविगलूण ताणि पंचक्खे।
इत्थिअपज्जत्तूणा ते पुण्णे उदयपयडीओ॥२९५॥

पुंसंढूणित्थिजुदा जोणिणिए अविरदे ण तिरियाणू।
पुण्णिदरे थी थीणति परघाददु पुण्णउज्जोवं॥२९६॥

सरगद्विदु जसादेज्जं आदीसंठाणसंहदीपणगं।
सुभगं सम्मं मिस्सं हीणा तेपुण्णसंढजुदा॥२९७॥

मणुवे ओघो थावरतिरियादावदुगएयवियलिंदी।
साहरणिदरावुतियं वेगुव्वियछक्क परिहीणो॥२९८॥

मिच्छमपुण्णं छेदो अणमिस्सं मिच्छगादितिसु अयदे।
बिदियकसायणराणू दुब्भगणादेज्जअज्जसयं॥२९९॥

देसे तदियकसाया णीचं एमेव मणुससामण्णे।
पज्जत्तेवि य यित्थीवेदापज्जत्तपरिहीणो॥३००॥

मणुसिणिएत्थीसहिदा तित्थयराहारपुरिससंढूणा।
पुण्णिदरेव अपुण्णे सगाणुगदिआउगं णेयं॥३०१॥

मणुसोघं वा भोगे दुब्भगचउणीचसंढथीणतियं।
दुग्गदितित्थमपुण्णं संहदिसंठाणचरिमपणं॥३०२॥

हारदुहीणा एवं तिरिये मणुदुच्चगोदमणुवाउं।
अवणिय पक्खिव णीचं तिरियदुतिरियाउउज्जोवं॥३०३॥

भोगं व सुरे णरचउणराउवज्जूण सुरचउसुराउं।
खिवं देवे णेवित्थी इत्थिम्मि ण पुरिसवेदो य॥३०४॥

अविरदठाणं एक्कं अणुद्दिसादिसु सुरोघमेव हवे।
भवणतिकप्पित्थीणं असंजदे णत्थि देवाणू॥३०५॥

तिरियअपुण्णं वेगे परघादचउक्कपुण्णसाहरणं।
एइंदियजसथीणतिथावरजुगलं च मिलिदव्वं॥३०६॥

ऋणमंगोवंगतसं संहदिपंचक्खमेवमिह वियले।
अवणिय थावरजुगलं साहरणेयक्खमादावं॥३०७॥

खिव तसदुग्गदिदुस्सरमंगोवंगं सजादिसेवट्टं।
ओघं सयले साहरणिगिविगलादावथावरदुगूणं॥३०८॥

एयं वा पणकाए ण हि साहारणमिणं च आदावं।
दुसु तद्दुगमुज्जोवं कमेण चरिमम्मि आदावं॥३०६॥

ओघं तसे ण थावरदुगसाहरणेयतावमथ ओघं।
मणवयणसत्तगे ण हि ताविगिविगलं च थावराणुचऊ॥३१०॥

अणुभयवचि वियलजुदा ओघमुराले ण हारदेवाऊ।
वेगुव्वछक्कणरतिरियाणु अपज्जत्तणिरयाऊ॥३११॥

तम्मिस्सेऽ पुण्णजुदा ण मिस्सथीणतियसरविहायदुगं।
परघादचउ अयदे णादेज्जदुदूभगं ण संढित्थी॥३१२॥

साणे तेसिं छेदो वामे चत्तारि चोद्दसा साणे।
चउदालं वोच्छेदो अयदे जोगिम्मि छत्तीसं॥३१३॥

देवोघं वेगुव्वे ण सुराणू पक्खिवेज्ज णिरयाऊ।
णिरयगदिहुंडसंढं दुग्गदि दुब्भगचउ ण्णीचं॥३१४॥

वेगुव्वं वा मिस्से ण मिस्स परघादसरविहायदुगं।
साणे ण हुंडसंढं दुब्भगणादेज्ज अज्जसयं॥३१५॥

णिरयगदिआउणीचं ते खित्तयदेऽवणिज्ज थीवेदं।
छट्ठगुणं वाहारे ण थीणतियसंढथीवेदं॥३१६॥

दुग्गदिदुस्सरसंहदि ओरालदु चरिमपंचसंठाणं।
ते तम्मिस्से सुस्सर परघाददुसत्थगदि हीणा॥३१७॥

ओघं कम्मे सरगदिपत्तेयाहारुरालदुग मिस्सं।
उवघादपणविगुव्वदुथीणतिसंठाणसंहदी णत्थि॥३१८॥

साणे थीवेदछिदी णिरयदुणिरयाउगं ण तियदसयं।
इगिवण्णं पणवीसं मिच्छादिसु चउसु बोच्छेदो॥३१९॥

मूलोघं पुंवेदे थावरचउणिरयजुगलतित्थयरं।
इगिविगलं थीसंढं तावं णिरयाउगं णत्थि॥३२०॥

इत्थीवेदेवि तहा हारदुपुरिसूणमित्थिसंजुत्तं।
ओघं संढे ण हि सुरहारदुथीपुंसुराउतित्थयरं॥३२१॥

तित्थयरमाणमायालोहचउक्कूणमोघमिह कोहे।
अणरहिदे णिगिविगलं तावणकोहाणुथावरचउक्कं॥३२२॥

एवं माणादितिये मदिसुदअण्णाणगे दु सगुणोघं।
वेभंगेवि ण ताविगिविगलिंदी थावराणुचऊ॥३२३॥

सण्णाणपंचयादी दंसणमग्गणपदोत्ति सगुणोघं।
मणपज्जवपरिहारे णवरि ण संढित्थि हारदुगं॥३२४॥

चक्खुम्मि ण साहारणताविगिबितिजाइ थावरं सुहुमं।
किण्णदुगे सुगुणोघं मिच्छे णिरयाणुबोच्छेदो॥३२५॥

साणे सुराउसुरगदिदेवतिरिक्खाणुबोच्छिदी एवं।
काओदे अयदगुणे णिरयतिरिक्खाणुबोच्छेदो॥३२६॥

तेउतिए सगुणोघं णादाविगिविगलथावरचउक्कं।
णिरयदुतदाउतिरियाणुगं णराणू ण मिच्छदुगे॥३२७॥

भव्विदरुवसमवेदगखइए सगुणोघमुवसमे खइए।
ण हि सम्ममुवसमे पुण णादितियाणू य हारदुगं॥३२८॥

मिस्साहारस्सय खवगा चडमाणपढमपुव्वा य।
पढमुवसम्मा तमतमगुणपडिवण्णा य ण मरंति॥३२८-१॥

अणसंजोजिद मिच्छे मुहुत्तअंतोत्ति णत्थि मरणुंतु।
कदकरणिज्जं जाव दु सव्वपरट्ठाण अट्ठपदा।।३२८-२।।

खाइयसम्मो देसो णर एव तदो तहिं ण तिरियाऊ।
उज्जोवं तिरियगदी तेहिं अयदम्मि बोच्छेदो॥३२९॥

सेसाणं सगुणोघं सण्णिस्सवि णत्थि तावसाहरणं।
थावरसुहुमिगिविगलं असण्णिणोवि य ण मणुदुच्चं॥३३०॥

वेगुव्वछ पणसंहदिसंठाण सुगमण सुभगआउतियं।
आहारे सगुणोघं णवरि ण सव्वाणुपुव्वीओ॥३३१॥

कम्मे वा णाहारे पयडीणं उदयमेवमादेसे।
कहियमिणं बलमाहवचंदच्चियणेमिचंदेण॥३३२॥

तित्थाहारा जुगवं सव्वं तित्थं ण मिच्छगादितिये।
तस्सत्तकम्मियाणं तग्गुणठाणं ण संभवइ॥३३३॥

चत्तारिवि खेत्ताइं आउगबंधेण होइ सम्मत्तं।
अणुवदमहव्वदाइं ण लहइ देवाउगं मोत्तुं॥३३४॥

णिरयतिरिक्खसुराउगसत्ते ण हि देससयलदिखवगा।
अयदचउक्कं तु अणं अणियट्टीकरणचरिमम्मि॥३३५॥

जुगवं संजोगित्ता पुणोवि अणियट्टिकरणबहुभागं।
बोलिय कमसो मिच्छं मिस्सं सम्मं खवेइ कमे॥३३६॥

सोलट्ठेक्किगिछक्कं चदुसेक्कं बादरे अदो एक्कं।
खीणे सोलमजोगे बावत्तरि तेरुवंत्तंते॥३३७॥

णिरयतिरिक्खदु वियलंथीणतिगुज्जोवतावएइंदी।
साहरणसुहुमथावर सोलं मज्झिमकसायट्ठं॥३३८॥

संढित्थि छक्कसाया पुरिसो कोहो य माण मायं च।
थूले सुहुमे लोहो उदयं वा होदि खीणम्हि॥३३९॥

देहादीफस्संता थिरसुहसरसुरविहायदुग दुभगं।
णिमिणंजसणादेज्जं पत्तेयापुण्ण अगुरुचऊ॥३४०॥

अणुदयतदियं णीचमजोगिदुचरिमम्मि सत्तवोच्छिण्णा।
उदयगबार णराणू तेरस चरिमम्मि वोच्छिण्णा॥३४१॥

णभतिगिणभइगि दोद्दो दस दससोलट्ठगादिहीणेसु।
सत्ता हवंति एवं असहायपरक्कमुद्दिट्ठं॥३४२॥

खवणं वा उबसमणे णवरि य संजलणपुरिसमज्झम्मि।
मज्झिमदोद्दो कोहादीया कमसोवसंता हु॥३४३॥

णिरयादिसु पयडिट्ठिदिअणुभागपदेसभेदभिण्णस्स।
सत्तस्स य सामित्तं णेदव्वमदो जहाजोग्गं॥३४४॥

तिरिये ण तित्थसत्तं णिरयादिसु तिय चउक्क चउ तिण्णि।
आऊणि होंति सत्ता सेसं ओघादु जाणेज्जो॥३४५॥

ओघं वा णेरइए ण सुराऊ तित्थमत्थि तदियोत्ति।
छट्ठित्ति मणुस्साऊ तिरिए ओघं ण तित्थयरं॥३४६॥

एवं पंचतिरिक्खे पुण्णिदरे णत्थि णिरयदेवाऊ।
ओघं मणुसतिएसुवि अपुण्णगे पुण अपुण्णेव॥३४७॥

ओघं देवे ण हि णिरयाऊ सारोत्ति होदि तिरियाऊ।
भवणतियक्कप्पवासियइत्थीसु ण तित्थयरसत्तं॥३४८॥

ओघं पंचक्खतसे सेसिंदियकायगे अपुण्णं वा।
तेउदुगे ण णराऊ सव्वत्थुव्वेल्लणावि हवे॥३४६॥

हारदु सम्मं मिस्सं सुरदुग णारयचउक्कमणुकमसो।
उच्चागोदं मणुदुगमुव्वेल्लिज्जंति जीवेहिं॥३५०॥

चदुगदिमिच्छे चउरो इगिविगले छप्पि तिण्णि तेउदुगे।
सिय अत्थि णत्थि सत्तं सपदे उप्पण्णठाणेवि॥३५१॥

पुण्णेक्कारसजोगे साहारयमिस्सगेवि सगुणोघं।
वेगुव्वियमिस्सेवि य णवरि ण माणुसतिरिक्खाऊ॥३५२॥

ओरालमिस्सजोगे ओघं सुरणिरयआउगं णत्थि।
तम्मिस्सवामगे ण हि तित्थं कम्मेवि सगुणोघं॥३५३॥

वेदादाहारोत्ति य सगुणोघं णवरि संढथीखवगे।
किण्हदुगसुहतिलेस्सियवामेवि ण तित्थयरसत्तं॥३५४॥

अभव्वसिद्धे णत्थि हु सत्तं तित्थयरसम्ममिस्साणं।
आहारचउक्कस्सवि असण्णिजीवे ण तित्थयरं॥३५५॥

कम्मेवाणाहारे पयडीणं सत्तमेवमादेसे।
कहियमिणं बलमाहवचंदच्चियणेमिचंदेण॥३५६॥

सो मे तिहुवणमहिओ सिद्धो बुद्धो णिरंजणो णिच्चो।
दिसदु वरणाणलाहं बुहजणपरिपत्थणं परमसुद्धं॥३५७॥

णमियूण वड्माणं कणयणिहं देवरायपरिपुज्जं।
पयडीण सत्तठाणं ओघे भंगे समं वोच्छं॥३५८॥

आउगबंधाबंधणभेदमकाऊण वण्णणं पढमं।
भेदेण य भंगसमं परूवणं होदि बिदियम्मि॥३५९॥

सव्वं तिगेग सव्वं चेगं छसु दोणि चउसु छद्दस य दुगे।
छस्सगदालं दोसु तिसट्ठी परिहीण पयडि सत्तं जाणे॥३६०॥

सासणमिस्से देसे संजमदुग सामगेसु णत्थी य।
तित्थाहारं तित्थं णिरयाऊ णिरयतिरियआउअणं॥३६१॥

बिगुणणव चारि अट्ठं मिच्छतिये अयदचउसु चालीसं।
तिय उवसमगे संते चउवीसा होंति पत्तेयं॥३६२॥

चउछक्कदि चउअट्ठं चउछक्क य होंति सत्तठाणाणि।
आउगबंधाबंधे अजोगिअंते तदो भंगं॥३६३-१॥

तित्थससे णिथिमिच्छेवद्धाउसि माणुसीगदि राग।
मणुवणिरयाऊ भुगुघज्जत्ते भज्जमाण णिरयाऊ।।३६३-२।।

पण्णास बार छक्कदि वीससयं अट्ठदाल दुसु तालं।
अडवीसा बासट्ठी अडचउवीसा य अट्ठ चउ अट्ठा॥३६४॥

दुतिछस्सत्तट्ठणवेक्करसं सत्तरसमूणवीसमिगिवीसं।
हीणा सव्वे सत्ता मिच्छे बद्धाउगिदरमेगूणं॥३६५॥

तिरियाउगदेवाउगमण्णदराउगदुगं तहा तित्थं।
देवतिरियाउसहिया हारचउक्कं तु छच्चेदे॥३६६॥

आउदुगहारतित्थं सम्मं मिस्सं च तह य देवदुगं।
णारयछक्कं च तहा णराउउच्चं च मणुवदुगं॥३६७॥

उव्वेल्लिददेवदुगे बिदियपदे चारि भंगया एवं।
सपदे पढमो बिदियो सो चेव णरेसु उप्पण्णे॥३६८॥

वेगुव्वट्ठयरहिदे पंचिंदियतिरियजादि सुववण्णे।
सुरछब्बंधे तदियो णरेसु तब्बंधणे तुरियो॥३६६॥

नारकछक्कुव्वेल्ले आउगबंधुज्झिदे दुभंगा हु।
इगिविगलेसिगिभंगो तम्मि णरे बिदियमुप्पण्णे॥३७०॥

बिदिये तुरिये पणगे छट्ठे पंचेव सेसगे एक्कं।
बिदिचउपणछस्सत्तयठाणे चत्तारि अट्ठगे दोण्णि॥३७१॥

सत्ततिगं आसाणे मिस्से तिगसत्तसत्तएयारा।
परिहीण सव्वसत्तं बद्धस्सियरस्स एगूणं॥३७२॥

तित्थाहारचउक्कं अण्णदराउगदुगं च सत्तेदे।
हारचउक्कं वज्जिय तिण्णि य केइं समुद्दिट्ठं॥३७३॥

तित्थण्णदराउदुगं तिण्णिवि अणसहिय तह य सत्तं च।
हारचउक्के सहिया ते चेव य होंति एयारा ॥३७४॥

साणे पण इगि भंगा बद्धस्सियरस्स चारि दो चेव।
मिस्से पणपण भंगा बद्धस्सियरस्स चउ चऊ णेया॥३७५॥

दुग छक्क सत्त अट्ठं णवरहियं तह य चउपडिं किच्चा।
णभमिगि चउ पण हीणं बद्धस्सियरस्स एगूणं॥३७६॥

तित्थाहारे सहियं तित्थूणं अह य हारचउहीणं।
तित्थाहारचउक्केणूणं इति चउपडिट्ठाणं॥३७७॥

अण्णदरआउसहिया तिरियाऊ ते च तह य अणसहिया।
मिच्छं मिस्सं सम्मं कमेण खविदे हवे ठाणा॥३७८॥

आदिमपंचट्ठाणे दुगदुगभंगा हवंति बद्धस्स।
इयरस्सवि णादव्वा तिगतिगइगि तिण्णितिण्णेव॥३७६॥

विदियस्सवि पणठाणे पण पण तिग तिण्णि चारि बद्धस्स।
इयरस्स होंति णेया चउचउइगिचारि चत्तारि॥३८०॥

आदिल्लदससु सरिसा भंगेण य तदियदसयठाणाणि।
बिदियस्स चउत्थस्स य दसठाणाणि य समा होंति॥३८१॥

देसतिएसुवि एवं भंगा एक्केक्क देसगस्स पुणो।
पडिरासि बिदियतुरियस्सादीबिदियम्मि दो भंगा॥३८२॥

दुगच्छक्कतिण्णिवग्गेणूणाऽपुव्वस्स चउपडिं किच्चा।
णभमिगिचउपणहीणं बद्धस्सियरस्स एगूणं॥३८३॥

णिरयतिरियाउ दोण्णिवि पढमकसायाणि दंसणतियाणि।
हीणा एदे णेया भंगा एक्केक्कगा होंति॥३८४॥

एवं तिसु उवसमगे खवगापुव्वम्मि दसहि परिहीणं।
सव्वं चउपडि किच्चा णभमेक्कं चारि पण हीणं॥३८५॥

एदे सत्तट्ठाणा अणियट्टिस्सवि पुणोबि खविदेवि।
सोलस अट्ठेक्केक्कं छक्केक्कं एक्कमेक्क तहा॥३८६॥

भंगा एक्केक्का पुण णउंसयक्खविदचउसु ठाणेसु।
बिदियतुरियेसु दो दो भंगा तित्थयरहीणेसु॥३८७॥

थीपुरिसोदयचडिदे पुव्वं संढं खवेदि थी यत्थि।
संढस्सुदये पुव्वं थीखविदं संढमत्थित्ति॥३८८॥

अणियट्टिचरिमठाणा चत्तारिवि एक्कहीण सुहुमस्स।
ते इगिदोण्णिविहीणं खीणस्सवि होंति ठाणाणि॥३८९॥

ते चोद्दसपरिहीणा जोगिस्स अजोगिचरिमगेवि पुणो।
बावत्तरिमडसट्ठिं दुसु दुसु हीणेसु दुगदुगा भंगा ॥३९०॥

णत्थि अणं उवसमगे खवगापुव्वं खवित्तु अट्ठा य।
पच्छा सोलादीणं खवणं इदि केइ णिद्दिट्ठं॥३९१॥

अणियट्टिगुणट्ठाणे मायारहिदं च ठाणमिच्छंति।
ठाणा भंगपमाणा केइं एवं परूवेंति॥३९२॥

अट्ठारह चउ अट्ठं मिच्छतिये उवरि चाल चउठाणे।
तिसु उवसमगे संते सोलस सोलस हवे ठाणा॥३६३॥

पण्णेक्कारं छक्कदि वीससयं अट्ठदाल दुसु तालं।
वीसडवण्णं वीसं सोलट्ठ य चारि अट्ठेव॥३६४॥

एवं सत्तट्ठाणं सवित्थरं वण्णियं मए सम्मं।
जो पढइ सुणइ भावइ सो पावइ णिब्बुदिं सोक्खं॥३६५॥

वरइंदणंदिगुरुणो पासे सोऊण सयलसिद्धंतं।
सिरिकणयणंदिगुरुणा सत्तट्ठाणं समुद्दिट्ठं॥३६६॥

जह चक्केण य चक्की छक्खंडं साहियं अविग्घेण।
तह मइचक्केण मया छक्खंडं साहियं सम्मं॥३६७॥

उसहाइजिणवरिंदे, असहायपरक्कमे महावीरे।
पणमिय सिरसा बोच्छं, तिचुलियं सुणुह एयमणो।।३६८।।

किं बंधो उदयादो, पुव्वं पच्छा समं विणस्सदि सो।
सपरोभयोदयो वा, निरंतरो सांतरो उभयो।।३६९।।

देवचउक्काहारदुगज्जस देवाउगाण सो पच्छा।
मिच्छत्तादावाणं, णराणुथावरचउक्काणं।।४००।।

पण्णरकषायभयदुगहस्सदुचउजाइपुरिसवेदाणं।
सममेक्कत्तीसाणं, सेसिगिसीदाण पुव्वं तु।।४०१।।

सुरणिरयाऊ तित्थं, वेगुव्विय छक्कहारमिदि एसिं।
परउदयेण य बंधो, मिच्छं सुहुमस्स घादीओ।।४०२।।

तेजदुगं वण्णचऊ, थिरसुहजुगल गुरुणिमिणधुवउदया।
सोदयबंधा सेसा, बासीदा उभयबंधीओ।।४०३।।

सत्तेताल ध्रुवावि य, तित्थाहाराउगा णिरंतरगा।
णिरयदुजाइचउक्कं, संहदिसंठाणपणपणगं।।४०४।।

दुग्गमणादावदुगं, थावरदसगं असादसंडित्थी।
अरदीसोगं चेदे, सांतरगा होंति चोत्तीसा।।४०५।।

सुरणरतिरियोरालिय वेगुव्वियदुगपसत्थगदि वज्जं।
परघाददुसमचउरं, पंचेंदिय तसदसं सादं।।४०६।।

हस्सरदिपुरिसगोददु, सप्पडिवक्खम्मि सांतरा होंति।
णट्ठे पुण पडिवक्खे णिरंतरा होंति बत्तीसा।।४०७।।

जत्थ वरणेमिचंदो, महणेण विणा सुणिम्मलो जादो।
सो अभयणंदि णिम्मलसुओवही हरउ पावमलं।।४०८।।

उब्बेल्लणविज्झादो, अद्धापवत्तो गुणो य सव्वो य।
संकमदि जेहि कम्मं, परिणामवसेण जीवाणं।।४०९।।

बंधे संकामिज्जदि, णोबंधे णत्थि मूलपयडीणं।
दंसणचरित्तमोहे, आउचउक्के ण संकमणं।।४१०।।

सम्मं मिच्छं मिस्सं, सगुणट्ठाणम्मि णेव संकमदि।
सासणमिस्से णियमा, दंसणतियसंकमो णत्थि।।४११।।

मिच्छे सम्मिस्साणं, अधापवत्तो मुहत्तअंतोत्ति।
उव्वेल्लणं तु तत्तो, दुचरिमकंडोत्ति णियमेण।।४१२।।

उव्वेल्लणपयडीणं गुणं तु चरिमम्मि कंडये णियमा।
चरिमे फालिम्मि पुणो सव्वं च य होदि संकमणं।।४१३।।

तिरियदुजाइचउक्कं, आदावुज्जोवथावरं सुहुमं।
साहारणं च एदे, तिरियेयारं मुणेदवा।।४१४।।

आहारदुगं सम्मं, मिस्सं देवदुगणारयचउक्कं।
उच्चं मणुदुगमेदे, तेरस मुब्बेलणा पयडी।।४१५।।

बंधे अधापवत्तो, विज्झादस्सत्तमोत्ति हु अबंधे।
एत्तो गुणो अबंधे-पयडीणं अप्पसत्थाणं।।४१६।।

तिरिएयारुव्वेल्लणपयडी संजलण लोहसम्ममिस्सूणा।
मोहा थीणतिगं च य, बावण्णे सव्वसंकमणं।।४१७।।

उगुदालतीससत्तयवीसे एक्केक्कबारतिचउक्के।
इगिचदुदुगतिगतिगचदुपण दुग दुगतिण्णि संकमणा।।४१८।।

सुहुमस्स बंधघादी, सादं संजलणलोहपंचिंदी।
तेजदुसमवण्णचऊ, अगुरुगपरघादउस्सासं।।४१६।।

सत्थगदी तसदसयं, णिमिणुगुदाले अधापवत्तो दु।
थीणतिबारकसाया संढित्थी अरदि सोगो य।।४२०।।

तिरिएयारं तीसे, उव्वेल्लणहीणचारि संकमणा।
णिद्दा पयला असुहं वण्णचउक्कं च उवघादे।।४२१।।

सत्तण्हं गुणसंकममधापवत्तो य दुक्खमसुहगदी।
संहदि संठाणदसं णीचापुण्णथिरछक्कं च।।४२२।।

वीसण्हं विज्झादं, अधापवत्तो गुणो य मिच्छत्ते।
बिज्झादगुणं सव्वं, सम्मे विज्झादपरिहीणा।।४२३।।

सम्मविहीणुव्वेल्ले पंचेव य तत्थ होंति संकमणा।
संजलणतिए पुरिसे अधापवत्तो य सव्वो य।।४२४।।

ओरालदुगे वज्जे तित्थे विज्झादधापवत्तो य।
हस्सरदिभयजुगुच्छे अधापवत्तो गुणो सव्वो।।४२५।।

सम्मतूणुव्वेल्लणथीणतितीसं च दुक्खवीसं च।
वज्जोरालदुतित्थं मिच्छं विज्झादसत्तट्ठी।।४२६।।

मिच्छूणिगिवीससयं, अधापवत्तस्स होंति पयडीओ।
सुहुमस्स बंधघादिं पहुडी उगुदालदुगतित्थं।।४२७।।

बज्जं पुं संजलण त्तिऊणगुण संकमस्स पयडीओ।
पणहत्तरिसंखाओ पयडीणियमं विजाणाहि।।४२८।।

ठिदि यणुभागाणं पुण, बंधो सुहुमोत्ति होदि णियमेण।
बंधपदेसाणं पुण, संकमणं सुहुमरागोत्ति।।४२६।।

सव्वस्सेकं रूवं, असंखभागो दु पल्लछेदाणं।
गुणसंकमो दु हारो, ओकड्डुक्कड्डणं तत्तो।।४३०।।

हारं अधापवत्तं, तत्तो जोगंमि जो दु गुणगारो।
णाणागुणहाणिसला, असंखगुणिदक्कमा होंति।।४३१।।

तत्तो पल्लसलायच्छेदहिया पल्लछेदणा होंति।
पल्लस्स पढममूलं, गुणहाणीवि य असंखगुणिदकमा।।४३२।।

अण्णोण्णब्भत्थं पुण, पल्लमसंखेज्जरूवगुणिदकमा।
संखेज्जरूवगुणिदं, कम्मुक्कस्सठिदी होदि।।४३३।।

अंगुलअसंखभागं, विज्झादुव्वेल्लणं असंखगुणं।
अणुभागस्स य णाणागुणहाणिसला अणंताओ।।४३४।।

गुणहाणि अणंतगुणं, तस्स दिवड्ढं णिसेयहारो य।
अहियकमाअण्णोणब्भत्थो रासी अणंतगुणो।।४३५।।

जस्स य पायपसाएणणंतसंसारजलहिमुत्तिण्णो।
वीरिंदणंदिवच्छो, णमामि तं अभयणंदि गुरुं।।४३६।।

बंधुक्कड्डण करणं, संकममोकड्डुदीरणा सत्तं।
उदयुवसामणिधत्ती, णिकाचणा होंति पडिपयडी।।४३७।।

कम्माणं संबंधो, बंधो उक्कड्डणं हवे वड्ढी।
संकममण्णत्थगदी, हाणी ओकड्डणं णाम।।४३८।।

अण्णत्थठियस्सुदये, संछुहणमुदीरणा हु अत्थित्तं।
सत्तं सकालपत्तं, उदओ होदित्ति णिद्दिट्ठो।।४३९।।

उदये संकमुदये, चउसुवि दादुं कमेण णो सक्कं।
उवसंतं च णिधत्ती णिकाचिदं होदि जं कम्मं।।४४०।।

संकमणाकरणूणा, णवकरणा होंति सव्वआऊणं।
सेसाणं दसकरणा, अपुव्वकरणोत्ति दसकरणा।।४४१।।

आदिमसत्तेव तदो, सुहुमकसाओत्ति संकमेण विणा।
छच्च सजोगित्ति तदो, सत्तं उदयं अजोगित्ति।।४४२।।

णवरि विसेसं जाणे, संकममवि होदि संतमोहम्मि।
मिच्छस्स य मिस्सस्स य सेसाणं णत्थि संकमणं।।४४३।।

बंधुक्कड्ढणकरणं, सगसगबंधोत्ति होदि णियमेण।
संकमणं करणं पुण, सगसगजादीण बंधोत्ति।।४४४।।

ओकड्ढणकरणं पुण, अजोगिसत्ताण जोगिचरिमोत्ति।
खीणं सुहुमंताणं, खयदेस स्सावलीयसमयोत्ति।।४४५।।

उवसंतोत्ति सुराऊ, मिच्छत्तिय खवगसोलसाणं च।
खयदेसोत्ति य खवगे, अट्ठकसायादि वीसाणं।।४४६।।

मिच्छत्तिय सोलसाणं, उवसमसेडिम्मि संतमोहोत्ति।
अट्ठकसायादीणं, उवसमियट्ठाणगोत्ति हवे।।४४७।।

पढमकसायाणं च विसंजोजक ओत्ति अयददेसोत्ति।
णिरयतिरिआउगाणमुदीरणसत्तोदया सिद्धा।।४४८।।

मिच्छस्स य मिच्छोत्ति य उदीरणा उवसमाहि मुहियस्स।
समयाहियावलित्ति य सुहुमे सुहुमस्स लोहस्स।।४४९।।

उदये संकमुदये, चउसुवि दादुं कमेण णो सक्कं।
उवसंतं च णिधत्ति, णिकाचिदं तं अपुव्वोत्ति।।४५०।।

णमियूण णेमिणाहं, सच्चजुइट्ठिरणमंसियंघिजुगं।
बंधुदयसत्तजुत्तं, ठाणसमुक्कित्तणं वोच्छं।।४५१।।

छसु सगविहमट्ठविहं, कम्मं बंधंति तिसु य सत्तविहं।
छव्विहमेक्कट्ठाणे, तिसु येक्कमबंधगो एक्को।।४५२।।

चत्तारि तिण्णि तिय चउ, पयडिट्ठाणाणि मूलपयडीणं।
भुजगारप्पदराणि य, अवट्ठिदाणिवि कमे होंति।।४५३।।

अट्ठुदयो सुहुमोत्ति य, मोहेण विणा हु संतखीणेसु।
घादिदठाण चउक्कस्सुदओ केवलिदुगे णियमा।।४५४।।

घादीणं छदुमट्ठा उदीरगा रागिणो य मोहस्स।
तदिआऊण पमत्ता जोगंता होंति दोण्हंपि।।४५५।।

मिस्सूण पमत्तंते, आउस्सद्धा हु सुहुमखीणणाणं।
आवलिसिट्ठे कमसो, सग पण दो च्चेउदीरणा होंति।।४५६।।

संतोत्ति अट्ठ सत्ता, खीणे सत्तेव होंति सत्ताणि।
जोगिम्मि अजोगिम्मि य, चत्तारि हवंति सत्ताइं।।४५७।।

तिण्णि दस अट्ठ ठाणाणि दंसणावरणमोहणामाणं।
एत्थेव य भुजगारा, सेससेयं हवे ठाणं।।४५८।।

णव छक्क चउक्कं च य, विदियावरणस्स बंधठाणाणि।
भुजगारप्पदराणि य, अवट्ठिदाणिवि य जाणाहि।।४५९।।

णव सासणोत्ति बंधो छच्चेव अपुव्वपढमभागोत्ति।
चत्तारि होंति तत्तो सुहुमकसायस्स चरिमोत्ति।।४६०।।

खीणोत्ति चारि उदया पंचसु णिद्दासु दोसु णिद्दासु।
एक्के उदयं पत्ते खीणदुचरिमोत्ति पंचुदया।।४६१।।

मिच्छादुवसंतोत्ति य अणियट्टीखवगपढम भागोत्ति।
णवसत्ता खीणस्स दुचरिमोत्ति य छच्चदूचरिमे।।४६२।।

बावीसमेक्कवीसं सत्तारस तेरसेव णव पंच।
चदुतियदुगं च एक्कं बंधट्ठाणाणि मोहस्स।।४६३।।

बावीसमेक्कवीसं सत्तर सत्तार तेर तिसु णवयं।
थूले पणचदुतियदुगमेक्कं मोहस्स ठाणाणि।।४६४।।

उगुवीसं अट्ठारस चोद्दस चोद्दस च दस य तिसु छक्कं।
थूले चदुतिदुगेक्कं मोहस्स य होंति धुवबंधी।।४६५।।

सगसंभवधुवबंधे वेदेक्के दोजुगाणमेक्के य।
ठाणा वेद जुगाणं भंगहदे होंति तब्भंगा।।४६६।।

छब्बावीसे चदु इगिवीसे दो दो हवंति छट्ठोत्ति।
एक्केक्कमदो भंगो बंधट्ठाणेसु मोहस्स।।४६७।।

दसवीसं एक्कारस तित्तीसं मोहबंधठाणाणि।
भुजगारप्पदराणि य अवट्ठिदाणिवि य सामण्णे।।४६८।।

अप्पं बंधंतो बहुबंधे बहुगादु अप्पबंधेवि।
उभ्यत्थ समे बंधे भुजकारादी कमे होंति।।४६९।।

सामण्णअवत्तव्वो ओदरमाणम्मि एक्कयं मरणे।
एक्कं च होदि एत्थवि दो चेव अवट्ठिदा भंगा।।४७०।।

सत्तावीसहियसयं पणदालं पंचहत्तरहियसयं।
भुजगारप्पदराणि य अवट्ठिदाणिवि विसेसेण।।४७१।।

णभ चउवीसं बारस वीसं चउरट्ठवीस दो दो य।
थूले पणगादीणं तियतिय मिच्छादि भुजगारा।।४७२।।

अप्पदरा पुण तीसं णभ णभछ दोण्णि णभ एक्कं।
थूले पणगादीणं एक्केक्कं अंतिमे सुण्णं।।४७३।।

भेदेण अवत्तव्वा ओदरमाणम्मि एक्कयं मरणे।
दो चेव होंति एत्थवि तिण्णेव अवट्ठिदा भंगा।।४७४।।

दस णव अट्ठ य सत्तय छप्पण चत्तारि दोण्णि एक्कं च।
उदयट्ठाणा मोहे णव चेव य होंति णियमेण।।४७५।।

मिच्छं मिस्सं सगुणे वेदगसम्मेव होदि सम्मत्तं।
एक्का कसायजादी वेददुजुगलाणमेक्कं च।।४७६।।

भयसहियं च जुगुञ्छासहियं दोहिवि जुदं च ठाणाणि।
मिच्छादिअपुव्वंते चत्तारि हवंति णियमेण।।४७७।।

अणसंजोजिदसम्मे मिच्छं पत्ते ण आवलित्तिअणं।
उवसमखयिए सम्मं ण हि तत्थवि चारि ठाणाणि।।४७८।।

पुव्विल्लेसुवि मिलिदे अड चउ चत्तारि चदुसु अट्ठेव।
चत्तारि दोण्णि एक्कं ठाणा मिच्छादिसुहुमंते।।४७९।।

दसणवणवादि चउतियतिट्ठाण णवट्ठसगसगादि चऊ।
ठाणा छादि तियं च य चदुवीसगदा अपुव्वोत्ति।।४८०।।

एक्क य छक्केयारं एयारेयारसेव णव तिण्णि।
एदे चदुवीसगदा चदुवीसेयार दुगठाणे।।४८१।।

उदयट्ठाणं दोण्हं पणबंधे होदि दोण्हमेक्कस्स।
चदुविहबंधट्ठाणे सेसेसेयं हवे ठाणं।।४८२।।

अणियट्टिकरणपढमा संढित्थीणं च सरिस उदयद्धा।
तत्तो मुहुत्तअंते कमसो पुरिसादिउदयद्धा।।४८३।।

पुरिसोदयेण चडिदे बंधुदयाणं च जुगवदुच्छित्ती।
सेसोदयेण चडिदे उदयदुचरिमम्मि पुरिसबंधछिदी।।४८४।।

पणबंधगम्मि बारस भंगा दो चेव उदयपयडीओ।
दोउदये चदुबंधे बारेव हवंति भंगा हु।।४८५।।

कोहस्स य माणस्स य मायालोहाणियट्टिभागम्मि।
चदुतिदुगेक्कंभंगा सुहुमे एक्को हवे भंगो।।४८६।।

बारससयतेसीदीठाणवियप्पेहिं मोहिदा जीवा।
पणसीदिसदसगेहिं पयडिवियप्पेहिं ओघम्मि।।४८७।।

एक्क य छक्केयारं दससगचदुरेक्कयं अपुणरुत्ता।
एदे चदुवीसगदा बार दुगे पंच एक्कम्मि।।४८८।।

णवसयसत्तत्तरिहि ठाणवियप्पेहि मोहिदा जीवा।
इगिदालूणत्तरिसयपयडिवियप्पेहि णायव्वा।।४८६।।

उदयट्ठाणं पयडिं सगसगउवजोगजोगआदीहिं।
गुणयित्ता मेलविदे पदसंखा पयडिसंखा च।।४६०।।

मिच्छदुगे मिस्सतिये पमत्तसत्ते जिणे य सिद्धे य।
पण छस्सत्तदुगं च य उवजोगा होंति दो च्चेव।।४६१।।

णवणऊदिसगसयाहियसत्तसहस्सप्पमाणमुदयस्स।
ठाणवियप्पे जाणसु उवजोगे मोहणीयस्स।।४६२।।

एक्कावण्णसहस्सं तेसीदिसमण्णियं वियाणाहि।
पयडीणं परिमाणं उवजोगे मोहणीयस्स।।४६३।।

तिसु तेरं दस मिस्से णव सत्तसु छट्ठयम्मि एक्कारा।
जोगिम्मि सत्त जोगा अजोगिठाणं हवे सुण्णं।।४६४।।

मिच्छे सासण अयदे पमत्तविरदे अपुण्णजोगगदं।
पुण्णगदं च य सेसे पुण्णगदे मेलिदं होदि।।४६५।।

सासणअयदपमत्ते वेगुव्वियमिस्स तच्च कम्मइयं।
ओरालमिस्स हारे अडसोलडवग्ग अट्ठवीससयं।।४६६।।

णत्थि णउंसयवेदो इत्थीवेदो णउंसइत्थिदुगे।
पुव्वुत्तपुण्णजोगगचउसुट्ठाणेसु जाणेज्जो।।४६७।।

तेवण्णणवसयाहियबारसहस्सप्पमाणमुदयस्स।
ठाणवियप्पे जाणसु जोगं पडि मोहणीयस्स।।४६८।।

बिदिये बिगिपणगयदे खदुणवएक्कं खअट्ठचउरो य।
छट्ठे चउसुण्णसगं पयडिवियप्पा अपुण्णम्मि।।४६६।।

पणदालछस्सयाहिय अट्ठासीदी सहस्समुदयस्स।
पयडीणं परिसंखा जोगं पडि मोहणीयस्स।।५००।।

तेरस सयाणि सत्तरिसत्तेव य मेलिदे हवंतित्ति।
ठाणवियप्पे जाणसु संजमलंबेण मोहस्स।।५०१।।

तेवण्णतिसदसमहिय सत्तसहस्सप्पमाणमुदयस्स।
पयडिवियप्पे जाणसु संजमलंबेण मोहस्स।।५०२।।

मिच्छचउक्के छक्कं देसतिये तिण्णि होंति सुहलेस्सा।
जोगित्ति सुक्कलेस्सा अजोगिठाणं अलेस्सं तु।।५०३।।

पंचसहस्सा बेसयसत्ताणउदी हवंति उदयस्स।
ठाणवियप्पे जाणसु लेस्सं पडि मोहणीयस्स।।५०४।।

अट्ठत्तीससहस्सा बेण्णिसया होंति सत्ततीसा य।
पयडीणं परिमाणं लेस्सं पडि मोहणीयस्स।।५०५।।

अट्ठत्तरीहि सहिया तेरसयसया हवंति उदयस्स।
ठाणवियप्पे जाणसु सम्मत्तगुणेण मोहस्स।।५०६।।

अट्ठेव सहस्साइं छव्वीसा तह य होंति णादव्वा।
पयडीणं परिमाणं सम्मत्तगुणेण मोहस्स।।५०७।।

अट्ठय सत्त यछक्क य चदुतिदुगेगाधिगाणि वीसाणि।
तेरस बारेयारं पणादि एगूणयं सत्तं।।५०८।।

तिण्णेगे एगेगं दो मिस्से चदुसु पण णियट्टीए।
तिण्णि य थूलेक्कारं सुहुमे चत्तारि तिण्णि उवसंते।।५०९।।

पढमतियं च य पढमं पढम च्चवुवीसयं च मिस्सम्मि।
पढमं चउवीसचऊ अविरददेसे पमत्तिदरे।।५१०।।

अडचउरेक्कावीसं उवसमसेढिम्मि खवगसेढिम्मि।
एक्कावीसं सत्ता अट्ठकसायाणियट्टित्ति।।५११।।

तेरस बारेयारं तेरस बारं च तेरसं कमसो।
पुरिसित्थिसढंवेदोदयेण गदपणगबंधम्मि।।५१२।।

पुरिसोदयेण चडिदे अंतिमखंडंतिमोत्ति पुरिसुदओ।
तप्पणिधिम्मिदराणं अवगदवेदोदयं होदि।।५१३।।

तट्ठाणे एक्कारस सत्ता तिण्होदयेण चडिदाणं।
सत्तण्हं समगं छिदी पुरिसे छण्हं च णवगमत्थित्ति।।५१४।।

इदि चदुबंधंखवगे तेरस बारस एगार चउसत्ता।
तिदुइगिबंधे तिदुइगि णवगुच्छिट्ठाणवविवक्खा।।५१५।।

तिण्णेव दु बावीसे इगिवीसे अट्ठवीस कम्मंसा।
सत्तरतेरेणवबंधगेसु पंचेव ठाणाणि।।५१६।।

पंचविधचदुविधेसु य छ सत्त सेसेसु जाण चत्तारि।
उच्छिट्ठावलिनवकं अविवक्खिय सत्तठाणाणि।।५१७।।

दसणवपण्णरसाइं बंधोदयसत्तपयडिठाणाणि।
भणिदाणि मोहणिज्जे एत्तो णामं परं वोच्छं।।५१८।।

णिरया पुण्णा पण्हं बादरसुहुमा तहेव पत्तेया।
वियलासण्णी सण्णी मणुवा पुण्णा अपुण्णा य।।५१९।।

सामण्णतित्थकेवलि उहयसमुग्घादगा य आहारा।
देवावि य पज्जत्ता इदि जीवपदा हु इगिदाला।।५२०।।

तेवीसं पणुवीसं छव्वीसं अट्ठवीसमुगुतीसं।
तीसेक्कतीसमेवं एक्को बंधो दुसेढिम्मि।।५२१।।

ठाणमपुण्णेण जुदं पुण्णेण य उवरि पुण्णगेणेव।
तावदुगाणण्णदरेणण्णदरेणमरणिरयाणं।।५२२।।

णिरयेण विणा तिण्हं एक्कदरेणेवमेव सुरगइणा।
बंधंति विणा गइणा जीवा तज्जोग्गपरिणामा।।५२३।।

भूबादरपज्जत्तेणादावं बंधजोग्गमुज्जोवं।
तेउतिगूणतिरिक्खपसत्थाणं एगदरगेण।।५२४।।

णरगइणामरगइणा तित्थं देवेण हारमुभयं च।
संजदबंधट्ठाणं इदराहि गईहि णत्थित्ति।।५२५।।

णामस्स णव धुवाणि य सरूणतसजुम्मगाणमेक्कदरं।
गइ जाइ देहसंठाणाणूणेक्कं च सामण्णा।।५२६।।

तसबंधेण य संहदि अंगोवंगाणमेग दरगं तु।
तप्पुण्णेण य सरगमणाणं पुण एगदरगं तु।।५२७।।

पुण्णेण समं सव्वेणुस्सासो णियमसा दु परघादो।
जोग्गट्ठाणे तावं उज्जोवं तित्थमाहारं।।५२८।।

तित्थेणाहारदुगं एक्कसराहेण बंधमेदीदी।
पक्खित्ते ठाणाणं पयडीणं होदि परिसंखा।।५२९।।

एयक्खअपज्जत्तं इगिपज्जत्तबितिचपणराऽपज्जत्तं।
एइंदियपज्जत्तं सुरणिरयगईहि संजुत्तं।।५३०।।

पज्जत्तगबिदिचप मणुस्सदेवगदिसंजुदाणि दोण्णि पुणो।
सुरगइजुदमगइजुदं बंधट्ठाणाणि णामस्स।।५३१।।

संठाणे संघडणे विहायजुम्मे य चरिमछज्जुम्मे।
अविरुद्धेक्कदरादो बंधट्ठाणेसु भंगा हु।।५३२।।

तत्थासत्थो णारयसव्वापुण्णेण होदि बंधो दु।
एक्कदराभावादो तत्थेक्को चेव भंगो दु।।५३३।।

तत्थासत्थं एदि हु साहारणथूलसव्वसुहुमाणं।
पज्जतेण य थिरसुहजुम्मेक्कदरं तु चदुभंगा।।५३४।।

पुढवीआऊतेऊवाऊपत्तेयवियल सण्णीणं।
सत्तेण असत्थं थिरसुहजसजुम्मट्ठभंगा हु।।५३५।।

सण्णिस्स मणुस्सस्स य ओघेक्कदरं तु मिच्छभंगा हु।
छादालसयं अट्ठ य बिदिये बत्तीससयभंगा।।५३६।।

मिस्साविरदमणुस्सट्ठाणे मिच्छादिदेवजुदठाणे।
सत्थं तु पमत्तंते थिरसुहजसजुम्मगट्ठभंगा हु।।५३७।।

णेरइयाणं गमणं सण्णीपज्जत्तकम्मतिरियणरे।
चरिमचऊतित्थूणे तेरिच्छे चेव सत्तमिया।।५३८।।

तत्थतणऽविरदसम्मो मिस्सा मणुवदुगमुच्चयं णियमा।
बंधदि गुणपडिवण्णा मरंति मिच्छेव तत्थ भवा।।५३९।।

तेउदुगं तेरिच्छे सेसेगअपुण्णवियलगा य तहा।
तित्थूणणरेवि तहाऽसण्णी धम्मेय देवदुगे।।५४०।।

सण्णीवि तहा सेसे णिरये भोगेवि अच्चुदंतेवि।
मणुवा जांति चउग्गदिपरियंतं सिद्धिठाणं च।।५४१।।

आहारगा दु देवे देवाणं होदिकम्मतिरियणरे।
पत्तेयपुढविआऊबादरपज्जत्तगे गमणं।।५४२।।

भवणतियाणं एवं तित्थूणणरेसु चेव उप्पत्ती।
ईसाणंताएगे सदरदुगंताहु सण्णीसु।।५४३।।

णामस्स बंधठाणा णिरयादिसु णवयवीस तीसमदो।
आदिमछक्कं सव्वं पणछण्णववीस तीसं च।।५४४।।

पंचक्खतसे सव्वं अडवीसूणादिछक्कयं सेसे।
चदुमणवयणोराले सड देवं वा विगुव्वदुगे।।५४५।।

अडवीसदु हारदुगे सेसदुजोगेसु छक्कमादिल्लं।
वेदकसाये सव्वं पढमिल्लं छक्कमण्णाणे।।५४६।।

सण्णाणे चरिमपणं केवलजहखादसंजमे सुण्णं।
सुदमिव संजमतिदए परिहारे णत्थि चरिमपदं।।५४७।।

अंतिमठाणं सुहुमे देसाविरदीसु हारकम्मं वा।
चक्खूजुगले सव्वं सगसगणाणं व ओहिदुगे।।५४८।।

कम्मं वा किण्हतिये पणवीसाछक्कमट्ठवीसचऊ।
कमसो तेऊजुगले सुक्काए ओहिणाण व्वा।।५४६।।

भव्वे सव्वमभव्वे किण्हं वा उवसमम्मि खइए य।
सुक्कं वा पम्मं वा वेदगसम्मत्तठाणाणि।।५५०।।

अडवीसतिय दु साणे मिस्से मिच्छे दु किण्हुलेस्सं वा।
सण्णी आहारिदरे सव्वं तेवीसछक्कं तु।।५५१।।

णिरयादि जुदट्ठाणे भंगेणप्पप्पणम्मि ठाणम्मि।
ठविदूण मिच्छभंगे सासण भंगा हु अत्थित्ति।।५५२।।

अविरदभंगे मिस्सयदेस पमत्ताण सव्वभंगा हु।
अत्थित्ति ते दु अवणिय मिच्छाविरदा पमादेसु।।५५३।।

भुजगारा अप्पदरा अवट्ठिदावि य सभंगसंजुत्ता।
सव्वपरट्ठाणेण य णेदव्वा ठाणबंधम्मि।।५५४।।

अप्पपरोभयठाणे बंधट्ठाणाण जो दु बंधस्स।
सट्ठाण परट्ठाणं सव्वपरट्ठाणमिदि सण्णा।।५५५।।

चदुरेक्कदुपण पंच य छत्तिगठाणाणि अप्पमत्तंता।
तिसु उवसमगे संते ति य तियतिय दोण्णि गच्छंति।।५५६।।

सासणपमत्तवज्जं अपमत्तंतं समल्लियइ मिच्छो।
मिच्छत्तं विदियगुणो मिस्सो पढमं चउत्थं च।।५५७।।

अविरदसम्मो देसो पमत्तपरिहीणमप्पमत्तं तं।
छट्ठाणाणि पमत्तो छट्ठगुणं अप्पमत्तो दु।।५५८।।

उवसामगा दु सेढिं आरोहंति य पडंति य कमेण।
उवसामगेसु मरिदो देवतमत्तं समल्लियइ।।५५६।।

मिस्सा आहारस्स य खवगा चडमाणपढमपुव्वा य।
पढमुवसम्मा तमतमगुणपडिवण्णा य ण मरंति।।५६०।।

अणसंजोजिदमिच्छे मुहुत्तअंतोत्ति णत्थि मरणं तु।
कदकरणिज्जं जाव दु सव्वपरट्ठाण अत्थपदा।।५६१।।

देवेसु देवमणुवे सुरणरतिरिये चउग्गईसुं पि।
कदकरणिज्जुप्पत्ती कमसो अंतोमुहुत्तेण।।५६२।।

तिविहो दु ठाणबंधो भुजगारप्पदरवट्ठिदो पढमो।
अप्पं बंधंतो बहुबंधे विदियो दु विवरीयो।।५६३।।

तदियो सणामसिद्धो सव्वे अविरूद्धठाणबंधभवा।
ताणुप्पत्तिं कमसो भंगेण समं तु वोच्छामि।।५६४।।

भूबादरतेवीसं बंधंतो सव्वमेव पणुवीसं।
बंधदि मिच्छाइट्ठी एवं सेसाणमाणेज्जो।।५६५।।

तेवीसट्ठाणादो मिच्छत्तीसोत्ति बंधगो मिच्छो।
णवरि हु अट्ठावीसं पंचिंदियपुण्णगो चेव।।५६६।।

भोगे सुरट्ठवीसं सम्मो मिच्छो य मिच्छगअपुण्णो।
तिरिऊगतीसं तीसं णरउगुतीसं च बंधदि हु।।५६७।।

मिच्छस्स ठाणभंगा एयारं सदरि दुगुणसोल णवं।
अडदालं बाणउदी सदाल छादाल चत्तधियं।।५६८।।

विवरीयेणप्पदरा होंति हु तेरासिएण भंगा हु।
पुव्वपरट्ठाणाणं भंगा इच्छा फलं कमसो।।५६९।।

लहुकरणं इच्छंतो एयारादीहि उवरिमं जोग्गं।
संगुणिदे भुजगारा उवरीदो होंति अप्पदरा।।५७०।।

भुजगारप्पदराणं भंगसमासो समो हु मिच्छस्स।
पणतीसं चउणवदी सट्ठी चोदालमंककमे।।५७१।।

देवट्ठवीस णरदेउगुतीस मणुस्सतीस बंधयदे।
तिछणवणवदुगभंगा तित्थविहीणा हु पुणरुत्ता।।५७२।।

देवट्ठवीसबंधे देउगुतीसम्मि भंग चउसट्ठी।
देउगुतीसे बंधे मणुवत्तीसेवि चउसट्ठी।।५७३।।

तित्थयरसत्तणारयमिच्छ णरऊणतीसबंधो जो।
सम्मम्मि तीसबंधो तियछक्कडछक्कचउभंगा।।५७४।।

बावत्तरि अप्पदरा देउगुतीसा दु णिरय अडवीसं।
बंधंत मिच्छभंगेणवगयतित्था हु पुणरुत्ता।।५७५।।

देवजुदेक्क ट्ठाणे णरतीसे अप्पमत्त भुजगारा।
पणदालिगिहारुभये भंगा पुणरुत्तगा होंति।।५७६।।

इगि अड अट्ठिगि अट्ठिगिभेदड अट्ठड दुणव य वीस तीसेक्के।
अडिगिगि अडिगिगि विह उणखिगि खिगि इगितीस देवचउ कमसो।।५७७।।

इगिविहिगिगिखखतीसे दस णव णवडधियवीसमट्ठविहं।
देवचउक्केक्केक्कं अपमत्तप्पदरछत्तीसा।।५७८।।

सव्वपरट्ठाणेण य अयदपमत्तिदरसव्वभंगा हु।
मिच्छस्स भङ्गमज्झे मिलिदे सव्वे हवे भंगा।।५७९।।

भुजगारा अप्पदरा हवंति पुव्ववरठाणसंताणे।
पयडिसमोऽसंताणोऽपुणरुत्तेत्ति य समुद्दिट्ठो।।५८०।।

भुजगारे अप्पदरेऽवत्तव्वे ठाइदूण समबंधे।
होदि अवट्ठिदबंधो तब्भंगा तस्स भंगा हु।।५८१।।

पडिय मरिएक्कमेक्कूणतीस तीसं च बंधगुवसंते।
बंधो दु अवत्तव्वो अवट्ठिदो बिदियसमयादी।।५८२।।

विग्गहकम्मसरीरे सरीरमिस्से सरीरपज्जत्ते।
आणावचिपज्जत्ते कमेण पंचोदये काला।।५८३।।

एक्कं व दो व तिण्णि व समया अंतोमुहुत्तयं तिसुवि।
हेट्ठिम कालूणाओ चरिमस्स य उदयकालो दु।।५८४।।

सव्वापज्जत्ताणं दोण्णिवि काला चउक्कमेयक्खे।
पंचवि होंति तसाणं आहारस्सुवरिमचउक्कं।।५८५।।

कम्मोरालिय मिस्सं ओरालुस्सासभास इदि कमसो।
काला हु समुग्घादे उवसंहरमाणगे पंच।।५८६।।

ओरालं दंडदुगे कवाडजुगले य तस्स मीसं तु।
पदरे य लोगपूरे कम्मे व य होदि णायव्वो।।५८७।।

णामधुओदयबारस गइजाईणं च तसतिजुम्माणं।
सुभगादेज्जजसाणं जुम्मेक्कं विग्गहे वाणू।।५८८।।

मिस्सम्मि तिअंगाणं संठाणाणं च एगदरगं तु।
पत्तेयदुगाणेक्को उवघादो होदि उदयगदो।।५८६।।

तसमिस्से ताणि पुणो अंगोवंगाणमेगदरगं तु।
छण्हं संहडणाणं एगदरो उदयगो होदि।।५६०।।

परघादमंगपुण्णे आदावदुगं विहायमविरुद्धे।
सासवची तप्पुण्णे कमेण तित्थं च केवलिणी।।५६१।।

वीसं इगिचउवीसं तत्तो इगितीसओत्ति एयधियं।
उदयट्ठाणा एवं णव अट्ठ य होंति णामस्स।।५६२।।

चदुगदिया एइंदी विसेसमणुदेवणिरयएइंदी।
इगिवितिचपसामण्णा विसेससुरणारगेइंदी।।५६३।।

सामण्णसयलवियल बिसेसमणुस्ससुरणारया दोण्हं।
सयलवियलसामण्णा सजोगपंच्चक्खवियलया सामी।।५६४।।

एगे इगिवीसपणं इगिछव्वीसट्ठवीसतिण्णि णरे।
सयले वियलेवि तहा इगितीसं चावि वचिठाणे।।५६५।।

सुरणिरयविसेसणरे इगिपणसगवीसतिण्णि समुधादे।
मणुसं वा इगिवीसे वीसं रूवाहियं तित्थं।।५६६।।

वीसदु चउवीसचऊ पणछव्वीसादिपंचयं दोसु।
उगुतीस तिपणकाले गयजोगे होंति णव अट्ठ।।५६७।।

गयजोगस्स य बारे तदियाउगगोद इदि विहीणेसु।
णामस्स य णव उदया अट्ठेव य तित्थहीणेसु।।५६८।।

संठाणे संहडणे विहायजुम्मे व चरिमचदुजुम्मे।
अविरुद्धेक्कदरादो उदयट्ठाणेसु भंगा हु।।५६६।।

तत्थासत्था णारयसाहारणसुहुमगे अपुण्णे य।
सेसेगविगलऽसण्णि जुदठाणे जसजुगे भंगा।।६००।।

सण्णिम्मि मणुस्सम्मि य ओघेक्कदरं तु केवले वज्जं।
सुभगादेज्ज जसाणि य तित्थजुदे सत्थमेदीदि।।६०१।।

देवाहारे सत्थं कालवियप्पेसु भंगमाणेज्जो।
वोच्छिण्णं जाणित्ता गुणपडिवण्णेसु सव्वेसु।।६०२।।

वीसादीणं भंगा इगिदालपदेसु संभवा कमसो।
एक्कं सट्ठीं चेव य सत्तावीसं च उगुवीसं।।६०३।।

वीसुत्तरछच्चसया बारस पण्णत्तरीहिं संजुत्ता।
एक्कारससयसंखा सत्तरससयाहिया सट्ठी।।६०४।।

ऊणतीससयाहियएक्कावीसा तदोवि एकट्ठी।
एक्कारससयसहिया एक्केक्क विसरिसगा भंगा।।६०५।।

सामण्णकेवलिस्स समुग्घादगदस्स तस्सवचि भंगा।
तित्थस्सवि सगभंगा समेदि तत्थेक्कमवणिज्जो।।६०६।।

णारयसण्णि मणुस्ससुराणं उवरिमगुणाण भंगा जे।
पुणरुत्ता इदि अवणिय भणिया मिच्छस्स भंगेसु।।६०७।।

अडवण्णा सत्तसया सत्तसहस्सा य होंति पिंडेण।
उदयट्ठाणे भंगा असहायपरक्क मुद्दिट्ठा।।६०८।।

तिदुइगिणउदी णउदी अडचउदोअहियसीदि सीदी य।
ऊणासीदट्ठत्तरि सत्तत्तरि दस य णव सत्ता।।६०६।।

सव्वं तित्थाहारुभऊणं सुरणिरयणरदुचारिदुगे।
उव्वेल्लिदे हदे चउ तेरेऽजोगिस्स दसणवयं।।६१०।।

गयजोगस्स दु तेरे तदियाउगगोदइदि विहीणेसु।
दस णामस्स स सत्ता णव चेव य तित्थहीणेसु।।६११।।

गुणसंजादंपयडिं मिच्छे बंधुदयगंधहीणण्मि।
सेसुव्वेल्लणपयडिं णियमेणुव्वेल्लदे जीवो।।६१२।।

सत्थत्तादाहारं पुव्वं उव्वेल्लदे तदो सम्मं।
सम्मामिच्छं तु तदो एगो विगलो य सयलो य।।६१३।।

वेदगजोग्गे काले आहारं उवसमस्स सम्मत्तं।
सम्ममिच्छं चेगे वियले वेगुव्वछक्कं तु।।६१४।।

उदधिपुधत्तं तु तसे पल्लासंखूणमेगमेयक्खे।
जाव य सम्मं मिस्सं वेदगजोग्गो य उवसमस्स तदो।।६१५।।

तेउदुगे मणुवदुगं उच्चं उव्वेल्लदे जहण्णिदरं।
पल्लासंखेज्जदिमं उव्वेल्लणकालपरिमाणं।।६१६।।

पल्लासंखेज्जदिमं ठिदिमुव्वेल्लदि मुहुत्तअंतेण।
संखेज्जसायरठिदिं पल्लासंखेज्जकालेण।।६१७।।

सम्मत्तं देसजमं अणसंजोजणविहिं च उक्कस्सं।
पल्लासंखेज्जदिमं वारं पडिवज्जदे जीवो।।६१८।।

चत्तारि वारमुवसमसेढिं समरुहदि खविदकम्मंसो।
बत्तीसं वाराइं संजममुवलहिय णिव्वादि।।६१९-१।।

तित्था हाराणुभयं सव्वं तित्थं ण मिच्छगादितिये।
तस्सत्तकम्मियाणं तग्गुणठाणं ण संभवइ।।६१९-२।।

सुरणरसम्मे पढमो सासणहीणेसु होदि बाणउदी।
सुरसम्मे णरणारयसम्मे मिच्छे य इगिणउदी।।६२०।।

णउदी चदुग्गदिम्मि य तेरसखवगोत्ति तिरियणरमिच्छे।
अडचउसीदी सत्ता तिरिक्खमिच्छम्मि बासीदी।।६२१।।

सीदादिचउट्ठाणा तेरसखवगादु अणुवसमगेसु।
गयजोगस्स दुचरिमं जाव य चरिमम्मि दसणवयं।।६२२।।

णिरए बाइगिणउदी णउदी भूवादि सव्वतिरिएसु।
बाणउदी णउदि अडचउवासीदी य होंति सत्ताणि।।६२३।।

बासीदिं वज्जित्ता बारसठाणाणि होंति मणुएसु।
सीदादिचउट्ठाणा छट्ठाणा केवलिदुगेसु।।६२४।।

समविसमट्ठाणाणि य कमेण तित्थिदरकेवलीसु हवे।
तिदुणउदी आहारे देवे आदिमचउक्कं तु।।६२५।।

बाणउदि णउदिसत्ता भवणतियाणं च भोगभूमीणं।
हेट्ठिमपुढवि चउक्कभवाणं च य सासणे णउदी।।६२६।।

मूलुत्तरपयडीणं बंधोदयसत्तठाण भंगा हु।
भणिदा हु तिसंजोगे एत्तो भंगे परूवेमो।।६२७।।

अट्ठबिहसत्तछब्बंधगेसु अट्ठेव उदयकम्मंसा।
एयविहे तिवियप्पो एयवियप्पो अबंधम्मि।।६२८।।

मिस्से अपुव्वजुगले बिदियं अपमत्तवोत्ति पढमजुगं।
सुहुमादिसु तदियादी बंधेदयसत्तभंगेसु।।६२९।।

बन्धोदयकम्मंसा णाणावरणंतराइये पंच।
बन्धोवरमेवि तहा उदयंसा होंति पंचेव।।६३०।।

विदियावरणे णवबंधगेसु चदुपंचउदय णवसत्ता।
छब्बंधगेसु एवं तह चदुबंधे छडंसा य।।६३१।।

उवरदबंधे चदुपंचउदय णव छच्च सत्त चदु जुगलं।
तदियं गोदं आउं विभज्ज मोहं परं बोच्छं।।६३२।।

सादासादेक्कदरं बंधुदया होंति संभवट्ठाणे।
दोसत्ता जोगित्तिय चरिमे उदयागदं सत्तं।।६३३।।

छट्ठोत्ति चारि भंगा दो भंगा होंति जाव जोगिजिणे।
चउभंगाऽजोगिजिणे ठाणं पडि वेयणीयस्स।।६३४।।

णीचुच्चाणे क्कदरं बंधुदया होंति संभवट्ठाणे।
दोसत्ताऽजोगित्ति य चरिमे उच्चं हवे सत्तं।।६३५।।

उच्चुव्वेल्लिदतेऊ वाऊम्मि य णीचमेव सत्तं तु।
सेसिगिवियले सयले णीचं च दुगं च सत्तं तु।।६३६।।

उच्चुव्वेल्लिदतेऊ वाउसेसे य वियलसयलेसु।
उप्पण्णपढमकाले णीचं एयं हवे सत्तं।।६३७।।

मिच्छादिगोद भंगा पण चदु तिसु दोण्णि अट्ठठाणेसु।
एक्केक्का जोगिजिणे दो भंगा होंति णियमेण।।६३८।।

सुरणिरया णरतिरियं छम्मासवसिट्ठगे सगाउस्स।
णरतिरिया सव्वाउं तिभागसेसम्मि उक्कस्सा।।६३९।।

भोगभुमा देवाउं छम्मासवट्ठिगे प बद्धंति।
इगिविगला णरतिरियं तेउदुगा सत्तमा तिरियं।।६४०।।

सगसगगदीणमाऊ उदेदि बंधे उदिण्णगेण समं।
दो सत्ता हु अबंधे एक्कं उदयागदं सत्तं।।६४१।।

एक्के एक्कं आऊ एक्कभवे बंधमेदि जोग्गपदे।
अडवारं वा तत्थवि तिभागसेसे व सव्वत्थ।।६४२।।

इगिवारं वज्जित्ता वड्ढी हाणी अवट्ठिदं होदि।
ओवट्टण घादो पुण परिणामवसेण जीवाणं।।६४३।।

एवमबंधे बंधे उवरदबंधेवि होंति भंगा हु।
एक्कस्सेक्कम्हि भवे एक्काउं पडितये णियमा।।६४४।।

एक्काउस्स तिभंगा संभवआऊहि ताडिदे णाणा।
जीवे इगिभवभंगारूऊणगुणूणमसरिच्छे।।६४५।।

पण णव णव पण भंगा आउचउक्केसु होंति मिच्छम्मि।
णिरयाउबंधभंगेणूणा ते चेव बिदियगुणे।।६४६।।

सव्वाउबंधभंगेणूणा मिस्सम्मि अयदसुरणिरये।
णरतिरिये तिरियाऊ तिण्हाउगबंधभंगूणा।।६४७।।

देस णरे तिरिये तियतिय भंगा होंति छट्ठसत्तमगे।
तियभंगा उवसमगे दो दो खवगेसु एक्केक्को।।६४८।।

अडछब्बीसं सोलस वीसं छत्तिगतिगं च चदुसु दुगं।
असरिसभंगा तत्तो अजोगिअंतेसु एक्केक्को।।६४९।।

बादालं पणुवीसं सोलसअहियं सयं च वेयणिये।
गोदे आउम्मि हवे मिच्छादिअजोगिणो भंगा।।६५०।।

वेयणिये अडभंगा गोदे सत्तेव होंति भंगा हु।
पणणव णव पण भंगा आउचउक्केसु विसरिच्छा।।६५१।।

मोहस्स य बंधोदयसत्तट्ठाणाण सव्वभंगा हु।
पत्तेउत्तं व हवे तियसंजोगेवि सव्वत्थ।।६५२।।

अट्ठसु एक्को बंधो उदया चदु ति दुसु चउसु चत्तारि।
तिण्णिय कमसो सत्तं तिण्णेगदु चउसु पणग तियं।।६५३।।

अणियट्टी बंधतियं पणदुगएक्कारसुहुमउदयंसा।
इगि चत्तारि य संते सत्तं तिण्णेव मोहस्स।।६५४।।

बावीसं दसय चउ अडवीसतियं च मिच्छबंधादी।
इगिवीसं णवयतियं अट्ठावीसे च बिदियगुणे।।६५५।।

सत्तरसं णवयतियं अडचउवीसं पुणोवि सत्तरसं।
णवचउ अडचउवीस य तिवीसतियमंसयं चउसु।।६५६।।

तेरट्ठचऊ देसे पमदिदरे णव सगादि चत्तारि।
तो णवगं छादितियं अडचउरि गिवीसयं च बंधतियं।।६५७।।

पंचादिपंचबंधो णवमगुणे दोण्णि एक्कमुदयो दु।
अट्ठचदुरेक्कवीसं तेरादीअट्ठयं सत्तं।।६५८।।

लोहेक्कुदओ सुहुमे अडचउरिगिवीसमेक्कयं सत्तं।
अडचउरिगिवीसंसा संते मोहस्स गुणठाणे।।६५९।।

बंधपदे उदयंसा उदयट्ठाणेवि बंध सत्तं च।
सत्ते बंधुदयपदं इगिअधिकरणे दुगादेज्जं।।६६०।।

बावीसयादिबंधे सुदयंसा चदुतितिगिचऊपंच।
तिसु इगि छद्दो अट्ठ य एक्कं पंचेव तिट्ठाणे।।६६१।।

दसयचऊ पढमतियं णवतियमडवीसयं णवादिचऊ।
अडचउतिदुइगिवीसं अडचउ पुव्वं व सत्तं तु।।६६२।।

सगचउ पुव्वं वंसा दुगमडचउरेक्कवीस तेरतियं।
दुगमेक्कं च य सत्तं पुव्वं वा अत्थि पणगदुगं।।६६३।।

तिसु एक्केक्कं उदओ अडचउरिगिवीससत्तसंजुत्तं।
चदुतिदयं तिदयदुगं दो एक्कं मोहणीयस्स।।६६४।।

दसयादिसु बंधंसा इगितिय तियछक्क चारिसत्तं च।
पण पण तियपण दुगपण मिगितिग दुगछच्चऊणवयं।।६६५।।

पढमं पढमतिचउपणसत्तरतिग चदुसु बंधयं कमसो।
पढमतिछस्सगमडचउतिदुइगिबीसस्सयं दोसु।।६६६।।

तेरदु पुव्वं वंसा णवमडचउरेक्कवीससत्तमदो।
पणदुगमडचउरेक्कावीसं तेरसतियं सत्तं।।६६७।।

चरिमे चदुतिदुरेक्कं अट्ठयचदुरेक्कसंजुदं वीसं।
एक्कारादी सव्वं कमेण ते मोहणीयस्स।।६६८।।

सत्तपदे बंधुदया दसणव इगिति दुसु अडड तिपण दुसु।
अडसग दुगि दुसु बिबिगिगि दुगि तिसु इगिसुण्णमेक्कं च।।६६९।।

सव्वं सयलं पढमं दसतिय दुसु सत्तरादियं सव्वं।
णवयप्पहुडीसयलं सत्तरति णवादिपण दुपदे।।६७०।।

सत्तरसादि अडादीसव्वं पण चारि दोणि दुसु तत्तो।
पंचचउक्क दुगेक्कं चदुरिगि चदुतिण्णि एक्कं च।।६७१।।

त्तत्तो तियदुगमेक्कं दुप्पयडी एक्कमेक्कठाणं च।
इगिणभबंधो चरिमे एक्कुदओ मोहणीयस्स।।६७२।।

बंधुदये सत्तपदं बंधंसे णेयमुदयठाणं च।
उदयंसे बंधपदं दुट्ठाणाधारमेक्कमाधेज्जं।।६७३।।

बावीसेण णिरुद्धे दसचउरुदये दसादिठाणतिये।
अट्ठावीसति सत्तं सत्तुदये अट्ठवीसेव।।६७४।।

इगिवीसेण णिरुद्धे णवयतिये सत्तमट्ठवीसेव।
सत्तरसे णवचदुरे अडचउतिदुगेक्कवीसंसा।।६७५।।

इगिवीसं ण हि पढमे चरिमे तिदुवीसयं ण तेरणवे।
अडचउसगचउरुदये सत्तं सत्तरसयं व हवे।।६७६।।

णवरि य अपुव्वणवगे छादितियुदयेवि णत्थि तिदुवीसा।
पणबंधे दोउदये अडचउरि गिवीसतेरसादितियं।।६७७।।

चदुबंधे दो उदये सत्तं पुव्वं व तेण एक्कुदये।
अडचउरेक्कावीसा एयारतिगं च सत्ताणि।।६७८।।

तिदुइगिबंधेक्कुदये चदुतियठाणेण तिदुगठाणेण।
दुगिठाणेण य सहिदा अडचउरि गिवीसया सत्ता।।६७९।।

बावीसे अडवीसे दसचउरुदओ अणे ण सगवीसे।
छव्वीसे दसयतियं इगिअडवीसे दु णवयतियं।।६८०।।

सत्तरसे अडचउरिगिवीसे णवयचदुरुदयमिगिवीसे।
णो पढमुदओ एवं तिदुवीसे णांतिमस्सुदओ।।६८१।।

तेरणवे पुव्वंसे अडादिचउसगचउण्ह मुदयाणं।
सत्तरसं व वियारो पणगुवसंतं सगेसु दो उदया।।६८२।।

तेणेवं तेरतिये चदुबंधे पुव्वसत्तगेसु तहा।
तेणुवसंतं सेयारतिये एक्को हवे उदओ।।६८३।।

तिदुइगिबंधे अडचउरि गिवीसे चदुतियेण ति दुगेण।
दुगिसत्तेण य सहिदे कमेण एक्को हवे उदओ।।६८४।।

दसगुदयेअडवीसतिसत्ते बावीसबंध णवअट्ठे।
अडवीसे बावीसतिचउबंधो सत्तवीसदुगे।।६८५।।

बावीसबंध चदुतिदुवीसंसे सत्तरसयद्दुगबंधो।
अट्ठुदये इगिवीसे सत्तरबंधं विसेसं तु।।६८६।।

सत्तुदये अडवीसे बंधो बावीसपंचयं तेण।
चउवीसतिगे अयदतिबंधो इगिवीसगयद्दुगबंधो।।६८७।।

छप्पणउदये उवसंतंसे अयदतिगदेसदुगबंधो।
तेण तिदोवीसंसे देसदुणवबंधयं होदि।।६८८।।

चउरुदयुवसंतंसे णवबंधो दोण्णिउदयपुव्वंसे।
तेरसतियसत्ते वि य पण चउ ठाणाणि बंधस्स।।६८६।।

एक्कुदयुवसंतंसे बंधो चदुरादिचारि तेणेव।
एयारदु चदुबंधो चदुरंसे चदुतियं बंधो।।६६०।।

तेण तिये तिदुबंधो दुगसत्ते दोण्णि एक्कयं बंधो।
एक्कंसे इगिबंधो गयणं वा मोहणीयस्स।।६६१।।

णासस्स य बंधोदयसत्तट्ठाणाणं सव्वभंगा हु।
पत्तेउत्तं व हवे तियसंजोगेवि सव्वत्थ।।६६२।।

छण्णवच्छत्तियसगइगि दुगतिगदुग तिण्णिअट्ठचत्तारि।
दुगदुगचदु दुगपणचदु चदुरेयचदू पणेयचदू।।६६३।।

एगेगमट्ठ एगेगमट्ठ छदुमठ्ठ केवलिजिणाणं।
एगचदुरेगचदुरो दोचदु दोछक्क उदयंसा।।६६४।।

णामस्स य बंधोदयसत्ताणि गुणं पडुच्च उत्ताणि।
पत्तेयादो सव्वं भणिदव्वं अत्थजुत्तीए।।६६५।।

तेवीसादी बंधा इगिवीसादीणि उदयठाणाणि।
बाणउदादी सत्तं बंधा पुण अट्ठवीसतियं।।६६६।।

इगिवीसादीएक्कत्तीसंता सत्तअट्ठवीसूणा।
उदया सत्तं णउदी बंधा पुण अट्ठवीसदुगं।।६६७।।

एगुणतीसंतिदयं उदयं बाणउदिणउदियं सत्तं।
अयदे बंधट्ठाणं अट्ठावीसत्तियं होदि।।६६८।।

उदया चउवीसूणा इगिवीसप्पहुडि एक्कतीसंता।
सत्तं पढमचउक्कं अपुव्वकरणोत्ति णायव्वं।।६६९।।

अडवीसदुगं बंधो देसे पमदे य तीसदुगुमुदओ।
पणुवीस सत्तवीसप्पहुडीचत्तारि ठाणाणि।।७००।।

अपमत्ते य अपुव्वे अडवीसादीण बंधमुदओ दु।
तीसमणियट्टिसुहुमे जसकित्ती एक्कयं बंधो।।७०१।।

उदओ तीसं सत्तं पढमचउक्कं च सीदिचउ संते।
खीणे उदओ तीसं पढमचउ सीदिचउ सत्तं।।७०२।।

जोगिम्मि अजोगिम्मि य तीसिगितीसं णवट्ठयं उदओ।
सीदादिचऊछक्कं कमसो सत्तं समुद्दिट्ठं।।७०३।।

पणदोपणगं पणचदुपणगं बंधुदयसत्त पणगं च।
पणछक्कपणगछच्छक्कपणगमट्ठट्ठमेयारं। ।७०४।।

सत्तेव अपज्जत्ता सामी सुहुमो य बादरो चेव।
वियलिंदिया य तिविहा होंति असण्णी कमा सण्णी। ।७०५।।

बंधा तियपणछण्णववीसं त्तीसं अपुण्णगे उदओ।
इगिचउवीसं इगिछव्वीसं थावरतसे कमसो। ।७०६।।

बाणउदीणउदिचऊ सत्तं एमेव बंधयं अंसा।
सुहुमिदरे वियलतिये उदया इगिवीसयादि चउपणयं। ।७०७।।

इगिछक्कडणववीसं तीसिगितीसं च वियलठाणं वा।
बंधतियं सण्णिदरे भेदो बंधदि हु अडवीसं। ।७०८।।

सण्णिम्मि सव्ववंधो इगिवीसप्पहुडिएक्कतीसंता।
चउवीसूणा उदओ दसणवपरिहीण सव्वयं सत्तं। ।७०९।।

दोछक्कट्ठचउक्कं णिरयादिसु णामबंधठाणाणि।
पणणवएगारपणयं तिपंचबारस चउक्कं च। ।७१०।।

एगे वियले सयले पण पण अड पंच छक्केगार पणं।
पणतेरं बंधादी सेसादेसेवि इदि णेयं। ।७११।।

णिरयादिणामबंधा उगुतीसं तीसमादिमं छक्कं।
सव्वंपणछक्कुत्तरवीसुगतीसं दुगं होदि। ।७१२।।

उदयाइगिपणसगअडणववीसं एक्कवीसपहुडिणवं।
चउवीसहीणसव्वं इगिपणसगअट्ठणववीसं। ।७१३।।

सत्ता बाणउदितियं बाणउदीणउदिअट्ठसीदितियं।
बासीदिहीणसव्वं तेणउदि चउक्कयं होदि। ।७१४।।

इगिविगल वंधठाणं अडवीसूणं तिवीसछक्कं तु।
सयलं सयले उदया एगे इगिवीस पंचयं वियले। ।७१५।।

इगिछक्कडणववीसं तीसदु चउवीसहीण सव्वुदया।
णउदि चऊ बाणउदी एगे वियले य सव्वयं सयले।।७१६।।

पुढवीयादी पंचसु तसे कमा बंधउदयसत्ताणि।
एयं वा सयलं वा तेउदुगे णत्थि सगवीसं।।७१७।।

मणवचि बंधुदयंसा सव्वं णववीसतीसइगितीसं।
दसणवदुसीदिवज्जिदसव्वं ओरालतम्मिस्से।।७१८।।

सव्वंतिवीसछक्कं पणुवीसादेक्कतीसपेरंतं।
चउछक्कसत्तवीसं दुसुसव्वंदसयणवहीणं।।७१६।।

वेगुव्वे तम्मिस्से बंधंसा सुरगदीव उदयो दु।
सगवीसतियं पणजुदवीसं आहारतम्मिस्से।।७२०।।

वंधतियं अडवीसदु वेगुव्वं वा तिणउदिबाणउदी।
कम्मे वीसदुगुदओ ओरालियमिस्सयं व बंधंसाः।।७२१।।

वेदकसाये सव्वं इगिवीसणवं तिणउदि एक्कारं।
थीपुरिसे चउवीसं सीदडसदरी ण थीसंढे।।७२२।।

अण्णाणदुगे वंधो आदीछ णउंसयं व उदओ दु।
सत्तं दुणउदि छक्कं विभंगबंधा हु कुमदिं व।।७२३।।

उदया उणतीसतियं सत्ता णिरयं व मदिसुदोहीए।
अडवीसपंच बंधा उदया पुरिस व्व अट्ठेव।।७२४।।

पढमचऊ सीदिचऊ सत्तं मणपज्जवम्हि बंधंसा।
ओहि व्व तीसमुदयं ण हि बंधो केवलेणाणे।।७२५।।

उदओ सव्वं चदुपणवीसूणं सीदिछक्कयं सत्तं।
सुदमिव सामायियदुगे उदओ पणवीससत्तवीसचऊ।।७२६।।

परिहारे वंधतियं अडवीसचउ ग तीसमादिचऊ।
सुहुमे एक्को बंधो मणं व उदयंसठाणाणि।।७२७।।

जहखादे बंधतियं केवलयं वा तिणउदि चउ अत्थि।
देसे अडवीसदुगं तीसदु तेणउदि चारि बंधतियं।।७२८।।

अविरमणे बंधुदया कुमदिं व तिणउदि सत्तयं सत्तं।
पुरिसं वा चक्खिदरे अत्थि अचक्खुम्मि चउवीसं।।७२९।।

ओहिदुगे बंधतियं तण्णाणं वा किलिट्ठलेस्सतिये।
अविरमणं वा सुहजुगलुदओ पुंवेदयं व हवे।।७३०।।

अडवीसचऊ बंधा पणछब्बीसं च अत्थि तेउम्मि।
पढमचउक्कं सत्तं सुक्के ओहिं व वीसयं चुदओ।।७३१।।

भव्वे सव्वमभव्वे बंधुदया अविरदिव्व सत्तं तु।
णउदिचउ हारबंधणदुगहीणं सुदमिदुवसमे बंधो।।७३२।।

उदया इगिपणवीसं णववीसतियं च पढमचउ सत्तं।
उवसम इव बधंसा वेदगसम्मे ण इगिबंधो।।७३३।।

उदयामदि व्व खयिये बंधादी सुदमिवत्थि चरिमदुगं।
उदयंसे वीसं च य साणे अडवीसतियबंधो।।७३४।।

उदया इगिवीसचऊ णववीसतियं च णउदियं सत्तं।
मिस्से अडवीसदुगं णववीसतिय च बंधुदया।।७३५।।

बाणउदिणउदिसत्तं मिच्छे कुमदिव्व होदि बंधतियं।
पुरिसं वा सण्णीये इदरे कुमदिव्व णत्थि इगिणउदि।।७३६।।

आहारे बंधुदया संढं वा णवरि णत्थि इगिवीसं।
पुरिसं वा कम्मंसा इदरे कम्मं व बंधतियं।।७३७।।

अत्थि णवट्ठ प दुदओ दसणवसत्तं च विज्जदे एत्थ।
इदि बंधुदयप्पहुडी सुदणामे सारमादेसे।।७३८।।

चारु सुदस्सणधरणे कुवलयसंतोसणे समत्थेण।
माधवचदेण महावीरेणत्थेण वित्थरिदो।।७३९।।

णवपंचोदयसत्ता तेवीसे पण्णुवीस छब्बीसे।
अट्ठचदुरट्ठवीसे णवसत्तुगुतीसतीसम्मि।।७४०।।

एगेगं इगितीसे एगे एगुदयमट्ठसत्ताणि।
उवरदबंधे दस दस उदयंसा होंति णियमेण।।७४१।।

तियपणछवीसबंधे इगिवीसादेक्कतीसचरिमुदया।
बाणउदी णउदिचऊ सत्तं अडवीसगे उदया।।७४२।।

पुव्वं व ण चउवीसं बाणउदि चउक्कसत्तमुगुतीसे।
तीसे पुव्वं उदया पढमिल्लं सत्तयं सत्तं।।७४३।।

इगितीसे तीसुदओ तेणऊदीसत्तयं हवे एगे।
तीसुदओ पढमचऊ सीदादि चउक्कमदि सत्तं।।७४४।।

उवरदबंधेसुदया चउपणवीसूण सव्वयं होदि।
सत्तं पढमचउक्कं सीदादीछक्कमवि होदि।।७४५।।

वीसादिसु बंधंसा णभदु छण्णव पणपणं च छस्सत्तं।
छण्णव छड दुसु छद्दस अट्ठदसं छक्कछक्क णभति दुसु।।७४६।।

वीसुदये बंधो ण हि उणसीदीसत्तसत्तरी सत्त।
इगिवीसे तेवीसं पहुडीतीसं तया बंधा।।७४७।।

सत्तं तिणउदिपहुडी सीदंता अट्ठसत्तरी य हवे।
चउवीसे पढमतियं णववीसं तीसयं बंधो।।७४८।।

बाणउदी णउदिचऊसत्तंपणछस्सगट्ठणवबीसं।
बंधा आदिमछक्कं पढमिल्लं सत्तयं सत्तं।।७४९।।

ते णवसगसदरिजुदा आदिमछस्सीदि अट्ठसदरीहिं।
णवसत्तसत्तरीहिं सीदि चउक्केहिं सहिदाणि।।७५०।।

तीसे अट्ठवि बंधो एउणतीसं व होदि सत्तं तु।
इगितीसे तेवीसप्पहुडीतीसं तयं बंधो।।७५१।।

सत्तं दुणउदिणउदीतिय सीदडहत्तरी य णवगट्ठे।
बंधो ण सीदिपहुडीसुसमविसमं सत्तमुद्दिट्ठं। ।७५२।।

सत्ते बंधुदया चदुसग सगणव चदुसगं च सगणवयं।
छण्णव पणणव पणचदुचदुसिगिछक्कं ण भेक सुण्णेगं। ।७५३।।

तेण उदीये बंधा उगुतीसादीचउक्कमुदओ दु।
इगिपणछस्सगअट्ठयणववीसं तीसयं णेयं। ।७५४।।

बाणउदीए बंधा इगितीसूणाणि अट्ठठाणाणि।
इगिवीसादीएक्कत्तीसं ता उदयठाणाणि। ।७५५।।

इगिणउदीए बंधा अडवीसं तिदयमेक्कयं चुदओ।
तेणउदिं वा णउदीबंधा बाणउदीयं व हवे। ।७५६।।

चरिमदुवीसूणुदओ तिसु दुसु बंधा छ तुरियहीणं च।
बासीदी बंधुदया पुव्वं विगिवीसचत्तारि। ।७५७।।

सीदादिचउसु बंधा जसकित्ती समपदे हवे उदओ।
इगिसगणवधियवीसं तीसेक्कं तीसणवगं च। ।७५८।।

वीसं छडणववीसं तीसं छट्ठं च विसमठाणुदया।
दसणवगे ण हि बंधो कमेण णवअट्ठयं उदओ। ।७५६।।

तेवीस बंधगे इगिवीसणवुदयेसु आदिमचउक्के।
बाणउदिणउदि अडचउबासीदी सत्तठाणाणि। ।७६०।।

तेणुवरिम पंचुदये ते चेवंसा विवज्ज बासीदिं।
एवं पणछव्वीसे अडवीसे एक्कवीसुदये। ।७६१।।

बाणउदिणउदि सत्तं एवं पणुवीसयादि पंचुदये।
पणसगवीसे णउदी विगुव्वणे अत्थिणाहारे। ।७६२।।

तेण णभिगितीसुदये बाणउदि चउक्कमेक्कतीसुदये।
णवरि ण इगिणउदिपदं णववीसिगिवीसबंधुदये। ।७६३।।

तेणउदि सत्तसत्तं एवं पणछक्कवीसठाणुदये।
चउव्वीसे वाणउदी णउदिचउक्कं च सत्तपदं। ।७६४।।

सगवीस चउक्कुदये तेणउदीछक्कमेवमिगितीसे।
तिगिणउदी ण हि तीसे इगिपणसगअट्ठणवयवीसुदये। ।७६५।।

तेणउदि छक्कसत्तं इगिपणवीसेसु अत्थि बासीदि।
तेण छचउवीसुदये बाणउदी णउदिचउसत्तं। ।७६६।।

एवं खिगितीसे ण हि बासीदीएक्कतीसबंधेण।
तीसुदये तेणउदी सत्तपदं एक्कमेव हवे। ।७६७।।

इगिबंधट्ठाणेण दु तीसट्ठाणोदये णिरुद्धम्मि।
पढमचउसीदिचऊ सत्तट्ठाणाणि णामस्स। ।७६८।।

तेवीसबंधठाणे दुखणउदड चदुरसीदि सत्तपदे।
इगिवीसादीणउदओ बासीदे एक्कवीसचऊ। ।७६९।।

एवं पणछव्वीसे अडवीसे बंधगे दुणउदंसे।
इगिवीसादिणबुदया चउवीसट्ठाणपरिहीणा। ।७७०।।

इगिणउदीए तीसं उदओ णउदीए तिरियसण्णिं वा।
अडसीदीए तीसदुणववीसे बंधगे तिणउदीए। ।७७१।।

इगिवीसादट्ठुदओ चडवीसूणो दुणउदिणउदितिये।
इगिवीसणविगिणउदे णिरयं व छवीसतीसधिया। ।७७२।।

बासीदे इगिचउपणछव्वीसा तीसबंधतिगिणउदे।
सुरमिव दुणउदीणउदी चउसुदओ ऊणतीसं वा। ।७७३।।

इगितीस बंधठाणे तेणउदे तीसमेव उदयपदं।
इगिबंध तिणउदिचऊ सीदिचउक्केवितीसुदओ। ।७७४।।

इगिवीसट्ठाणुदये तिगिणउदे णवयवीसदुगबंधो।
तेण दुखणउदी सत्ते आदिमछक्कं हवे बंधो। ।७७५।।

एवमडसीदितिदये ण हि अडवीसं पुणो वि चउवीसे।
दुखणउदडसीदितिये सत्ते पुव्वं व बंधपदं। ।७७६।।

पणवीसे तिगिणउदे एगुणतीसं दुगं दुणउदीए।
आदिमछक्कं बंधो णउदिचउक्केवि णडवीसं। ।७७७।।

छव्वीसे तिगिणउदे उणतीसं बंध दुगखणउदीए।
आदिमछक्कं एवं अडसीदितिए ण अडवीसं। ।७७८।।

सगवीसे तिगिणउदे णववीसदुबंधयं दुणउदीए।
आदिमछण्णउदितिए एवं अडवीसयं णत्थि। ।७७६।।

अडवीसे तिगिणउदे उणतीसदु दुजुदणउदिणउदितिए।
बंधो सगवीसं वा णउदीए अत्थि णडवीसं। ।७८०।।

अडवीसमिवुणतीसे तीसे तेणउदिसत्तगे बंधो।
णववीसेक्कत्तीसं इगिणउदे अट्ठवीसदुगं। ।७८१।।

तेण दुणउदे णउ दे अडसीदे बंधमादिमं छक्कं।
चुलसीदेवि य एवं णवरि ण अडवीसबंधपदं। ।७८२।।

तीसुदयं विगितीसे सजोगबाणउदिणउदितिय सत्ते।
उवसंतचउक्कुदये सत्ते बंधस्स ण वियारो। ।७८३।।

णामस्स य बंधादिसु दुतिसंजोगा परूविदा एवं।
सुदवणवसंतगुणगणसायरचंदेण सम्मदिणा। ।७८४।।

णमियूण अभयणंदिं सुदसायरपारगिदंणंदिगुरुं।
वरवीरणंदिणाहं पयडीणं पच्चयं बोच्छं। ।७८५।।

मिच्छत्तं अविरमणं कसायजोगा य आसवा होंति।
पण बारस पणुवीसं पण्णरसा होंति तब्भेया। ।७८६।।

चदुपच्चइगो बंधो पढमेऽ णंतरतिगे तिपच्चइगो।
मिस्सगबिदियं उवरिमदुगं च देसेक्कदेसम्मि। ।७८७।।

उवरिल्लपंचये पुण दुपच्चया जोगपच्चओ तिण्हं।
सामण्णपच्चया खलु अट्ठण्णं होंति कम्माणं। ।७८८।।

पणवण्णा पण्णासा तिदाल छादाल सत्ततीसा य।
चदुवीसा बावीसा बावीसमपुव्वकरणोत्ति। ।७८९।।

थूलेसोलसपहुडी एगूणं जाव होदि दसठाणं।
सुहुमादि सु दस णवयं णवयं जोगिम्मि सत्तेव। ।७६०-१।।

पण चदु सुण्णं णवयं पण्णारस दोण्णि सुण्णछक्कं च।
एक्केक्कं दस जावय एक्कं सुण्णं च चारि सग सुण्णं। ।७६०-२।।

दोण्णि य सत्तय चोद्दसऽणुदएवि येगार वीस तेत्तीसं।
पणतीस दुसिगिदालं सत्तेतालट्ठदाल दुसु पण्णं। ।७६०-३।।

मिच्छे पणमिच्छत्तं पढमकसायं तु साणणे मिस्से।
सुण्णं अविरद सम्मे विदियकसायं विगुव्व दुग कम्मं। ।७६०-४।।

ओराल मिस्स तसवह ण वयं देसम्मि अविरदेक्कारा।
तदिय कसायं पण्णर पमत्तविरदम्मि हारदुगछेदो। ।७६०-५।।

सुण्णं पमादरहिदेऽ पुव्वे छण्णो कसाय वोच्छेदो।
अणियट्टिम्मि य कमसो एक्केक्कं वेदतिय कसायतियं। ।७६०-६।।

सुहुमे सुहुमो लोहो सुण्णं उवसंतगेसु खीणेसु।
अलीयुभयवयणमणचऊ जोगिम्मि य सुणह बोच्छामि। ।७६०-७।।

सच्चाणुभयं वयणं मणं च ओरालकायजोगं च।
ओरालमिस्स कम्मं उवयारेणेव सब्भाओ। ।७६०-८।।

अवरादीणं ठाणं ठाणपयारा पयार कूडा य।
कूडुच्चारणभंगा पंचविहा होंति इगिसमये। ।७६१।।

दस अट्ठारस दसयं सत्तर णव सोलसं च दोण्हंपि।
अट्ठ य चोद्दस पणयं सत्ततिये दुति दुगेगमेगमदो। ।७६२।।

एवमडसीदितिदये ण हि अडवीसं पुणो वि चउवीसे।
दुखणउदडसीदितिये सत्ते पुव्वं व बंधपदं। ।७७६।।

पणवीसे तिगिणउदे एगुणतीसं दुगं दुणउदीए।
आदिमछक्कं बंधो णउदिचउक्केवि णडवीसं। ।७७७।।

छव्वीसे तिगिणउदे उणतीसं बंध दुगखणउदीए।
आदिमछक्कं एवं अडसीदितिए ण अडवीसं। ।७७८।।

सगवीसे तिगिणउदे णववीसदुबंधयं दुणउदीए।
आदिमछण्णउदितिए एवं अडवीसयं णत्थि। ।७७६।।

अडवीसे तिगिणउदे उणतीसदु दुजुदणउदिणउदितिए।
बंधो सगवीसं वा णउदीए अत्थि णडवीसं। ।७८०।।

अडवीसमिवुणतीसे तीसे तेणउदिसत्तगे बंधो।
णववीसेक्कत्तीसं इगिणउदे अट्ठवीसदुगं। ।७८१।।

तेण दुणउदे णउ दे अडसीदे बंधमादिमं छक्कं।
चुलसीदेवि य एवं णवरि ण अडवीसबंधपदं। ।७८२।।

तीसुदयं विगितीसे सजोगबाणउदिणउदितिय सत्ते।
उवसंतचउक्कुदये सत्ते बंधस्स ण वियारो। ।७८३।।

णामस्स य बंधादिसु दुतिसंजोगा परूविदा एवं।
सुदवणवसंतगुणगणसायरचंदेण सम्मदिणा। ।७८४।।

णमियूण अभयणंदिं सुदसायरपारगिदंणंदिगुरुं।
वरवीरणंदिणाहं पयडीणं पच्चयं बोच्छं। ।७८५।।

मिच्छत्तं अविरमणं कसायजोगा य आसवा होंति।
पण बारस पणुवीसं पण्णरसा होंति तब्भेया। ।७८६।।

चदुपच्चइगो बंधो पढमेऽ णंतरतिगे तिपच्चइगो।
मिस्सगविदियं उवरिमदुगं च देसेक्कदेसम्मि। ।७८७।।

उवरिल्लपंचये पुण दुपच्चया जोगपच्चओ तिण्हं।
सामण्णपच्चया खलु अट्ठण्णं होंति कम्माणं। ।७८८।।

पणवण्णा पण्णासा तिदाल छादाल सत्ततीसा य।
चदुवीसा बावीसा बावीसमपुव्वकरणोत्ति। ।७८९।।

थूलेसोलसपहुडी एगूणं जाव होदि दसठाणं।
सुहुमादि सु दस णवयं णवयं जोगिम्मि सत्तेव। ।७६०-१।।

पण चदु सुण्णं णवयं पण्णारस दोण्णि सुण्णछक्कं च।
एक्केक्कं दस जावय एक्कं सुण्णं च चारि सग सुण्णं। ।७६०-२।।

दोण्णि य सत्तय चोद्दसऽणुदएवि येगार वीस तेत्तीसं।
पणतीस दुसिगिदालं सत्तेतालट्ठदाल दुसु पण्णं। ।७६०-३।।

मिच्छे पणमिच्छत्तं पढमकसायं तु साणणे मिस्से।
सुण्णं अविरद सम्मे विदियकसायं विगुव्व दुग कम्मं। ।७६०-४।।

ओराल मिस्स तसवह ण वयं देसम्मि अविरदेक्कारा।
तदिय कसायं पण्णर पमत्तविरदम्मि हारदुगछेदो। ।७६०-५।।

सुण्णं पमादरहिदेऽ पुव्वे छण्णो कसाय वोच्छेदो।
अणियट्टिम्मि य कमसो एक्केक्कं वेदतिय कसायतियं। ।७६०-६।।

सुहुमे सुहुमो लोहो सुण्णं उवसंतगेसु खीणेसु।
अलीयुभयवयणमणचऊ जोगिम्मि य सुणह बोच्छामि। ।७६०-७।।

सच्चाणुभयं वयणं मणं च ओरालकायजोगं च।
ओरालमिस्स कम्मं उवयारेणेव सब्भाओ। ।७६०-८।।

अवरादीणं ठाणं ठाणपयारा पयार कूडा य।
कूडुच्चारणभंगा पंचविहा होंति इगिसमये। ।७६१।।

दस अट्ठारस दसयं सत्तर णव सोलसं च दोण्हंपि।
अट्ठ य चोद्दस पणयं सत्ततिये दुति दुगेगमेगमदो। ।७६२।।

एवमडसीदितिदये ण हि अडवीसं पुणो वि चउवीसे।
दुखणउदडसीदितिये सत्ते पुव्वं व बंधपदं। ।७७६।।

पणवीसे तिगिणउदे एगुणतीसं दुगं दुणउदीए।
आदिमछक्कं बंधो णउदिचउक्केवि णडवीसं। ।७७७।।

छव्वीसे तिगिणउदे उणतीसं बंध दुगखणउदीए।
आदिमछक्कं एवं अडसीदितिए ण अडवीसं। ।७७८।।

सगवीसे तिगिणउदे णववीसदुबंधयं दुणउदीए।
आदिमछण्णउदितिए एवं अडवीसयं णत्थि। ।७७६।।

अडवीसे तिगिणउदे उणतीसदु दुजुदणउदिणउदितिए।
बंधो सगवीसं वा णउदीए अत्थि णडवीसं। ।७८०।।

अडवीसमिवुणतीसे तीसे तेणउदिसत्तगे बंधो।
णववीसेक्कत्तीसं इगिणउदे अट्ठवीसदुगं। ।७८१।।

तेण दुणउदे णउ दे अडसीदे बंधमादिमं छक्कं।
चुलसीदेवि य एवं णवरि ण अडवीसबंधपदं। ।७८२।।

तीसुदयं विगितीसे सजोगबाणउदिणउदितिय सत्ते।
उवसंतचउक्कुदये सत्ते बंधस्स ण वियारो। ।७८३।।

णामस्स य बंधादिसु दुतिसंजोगा परूविदा एवं।
सुदवणवसंतगुणगणसायरचंदेण सम्मदिणा। ।७८४।।

णमियूण अभयणंदिं सुदसायरपारगिदंणंदिगुरुं।
वरवीरणंदिणाहं पयडीणं पच्चयं बोच्छं। ।७८५।।

मिच्छत्तं अविरमणं कसायजोगा य आसवा होंति।
पण बारस पणुवीसं पण्णरसा होंति तब्भेया। ।७८६।।

चदुपच्चइगो बंधो पढमेऽ णंतरतिगे तिपच्चइगो।
मिस्सगबिदियं उवरिमदुगं च देसेक्कदेसम्मि। ।७८७।।

उवरिल्लपंचये पुण दुपच्चया जोगपच्चओ तिण्हं।
सामण्णपच्चया खलु अट्ठण्णं होंति कम्माणं। ।७८८।।

पणवण्णा पण्णासा तिदाल छादाल सत्ततीसा य।
चदुवीसा बावीसा बावीसमपुव्वकरणोत्ति। ।७८९।।

थूलेसोलसपहुडी एगूणं जाव होदि दसठाणं।
सुहुमादि सु दस णवयं णवयं जोगिम्मि सत्तेव। ।७९०-१।।

पण चदु सुण्णं णवयं पण्णारस दोण्णि सुण्णछक्कं च।
एक्केक्कं दस जावय एक्कं सुण्णं च चारि सग सुण्णं। ।७९०-२।।

दोण्णि य सत्तय चोद्दसऽणुदएवि येगार वीस तेत्तीसं।
पणतीस दुसिगिदालं सत्तेतालट्ठदाल दुसु पण्णं। ।७९०-३।।

मिच्छे पणमिच्छत्तं पढमकसायं तु साणणे मिस्से।
सुण्णं अविरद सम्मे विदियकसायं विगुव्व दुग कम्मं। ।७९०-४।।

ओराल मिस्स तसवह ण वयं देसम्मि अविरदेक्कारा।
तदिय कसायं पण्णर पमत्तविरदम्मि हारदुगछेदो। ।७९०-५।।

सुण्णं पमादरहिदेऽ पुव्वे छण्णो कसाय वोच्छेदो।
अणियट्टिम्मि य कमसो एक्केक्कं वेदतिय कसायतियं। ।७९०-६।।

सुहुमे सुहुमो लोहो सुण्णं उवसंतगेसु खीणेसु।
अलीयुभयवयणमणचऊ जोगिम्मि य सुणह बोच्छामि। ।७९०-७।।

सच्चाणुभयं वयणं मणं च ओरालकायजोगं च।
ओरालमिस्स कम्मं उवयारेणेव सब्भाओ। ।७९०-८।।

अवरादीणं ठाणं ठाणपयारा पयार कूडा य।
कूडुच्चारणभंगा पंचविहा होंति इगिसमये। ।७९१।।

दस अट्ठारस दसयं सत्तर णव सोलसं च दोण्हंपि।
अट्ठ य चोद्दस पणयं सत्ततिये दुति दुगेगमेगमदो। ।७९२।।

एक्कं च तिण्णि पंच य हेट्ठुवरीदो दु मज्झिमे छक्कं।
मिच्छेठाणपयारा इगिदुगमिदरेसु तिण्णि देसोत्ति।।७६३।।

भयदुगरहियं पढमं एक्कदरजुदं दुसहियमिदि तिण्णि।
सामण्णातियकूडा मिच्छा अणहीणतिण्णिवि य।।७६४।।

मिच्छत्ताणण्णदरं एक्केणक्खेण एक्ककायादी।
तत्तो कसायवेददुजुगलाणेक्कं च जोगाणं।।७६५।।

अणरहिदसहिदकूडे बावत्तरिसय सयाण तेणउदी।
सट्ठी धुवा हु मिच्छे भयदुगसंजोगजा अधुवा।।७६६।।

चउवीसट्ठारसयं तालं चोद्दस यसीदि सोलसयं।
छण्णउदी बारसयं बत्तीसं बिसद सोल बिसदं च।।७६७।।

सोलस बिसदं कमसो धुवगुणगारा अपुव्वकरणोत्ति।
अद्धुवगुणिदे भंगा धुवभंगाणं ण भेदादो।।७६८।।

छप्पंचादेयंतं रूउत्तरभाजिदे कमेण हदे।
लद्धं मिच्छ चउक्के देसे संजोगगुणगारा।।७६६।।

पडिणीगमंतराए उवघादे तप्पदोसणिण्हवणे।
आवरणदुगं भूयो बंधदि अच्चासणाएवि।।८००।।

भूदाणुकंपवदजोगजुज्जिदो खंतिदाणगुरुभत्तो।
बन्धदि भूयो सादं विवरीयो बंधदे इदरं।।८०१।।

अरहंतसिद्धचेदियतवसुदगुरुधम्मसंघपडिणीगो।
बंधदि दंसणमोहं अणंतसंसारिओ जेण।।८०२।।

तिव्वकसायो बहुमोहपरिणदो रागदोससंसत्तो।
बंधदि चरित्तमोहं दुविहंपि चरित्तगुणघादी।।८०३।।

मिच्छो हु महारंम्भो णिस्सीलो तिव्वलोहसंजुत्तो।
णिरयाउवं णिबद्धइ पावमई रुद्दपरिणामो।।८०४।।

उम्मग्गदेसगो मग्गणासगो गूढहियथ माइल्लो।
सठसीलो य ससल्लो तिरियाउं बंधदे जीवो।।८०५।।

पयडीए तणुकसाओ दाणरदी सीलसंजमविहीणो।
मज्झिम गुणेहि जुत्तो मणुवाऊं बंधदे जीवो।।८०६।।

अणुवदमहव्वदेहि य बालतवाकामणिज्जराये य।
देवाउवं णिबद्धइ सम्माइट्ठी य जो जीवो।।८०७।।

मणवयणकायवक्को मायिल्लो गारवेहि पडिबद्धो।
असुहं बंधदि णामं तप्पडिवक्खेहि सुहणामं।।८०८।।

अरहंतादिसु भत्तो सुत्तरुची पढणुमाणगुणपेही।
बंधदि उच्चागोदं विवरीयो बंधदे इदरं।।८०६।।

पाणवधादीसु रदो जिणपूजामोक्खमग्गविग्घयरो।
अज्जेइ अंतरायं ण लहइ जं इच्छियं जेण।।८१०।।

गोम्मटजिणिदचंदं पणमिय गोम्मटपयत्थसंजुत्तं।
गोम्मटसंगहविसयं भावगयं चूलियं बोच्छं।।८११।।

जेहि दु लक्खिज्जंते उवसमआदीसु जणिद भावेहिं।
जीवा ते गुणसण्णा णिद्दिट्ठा सव्वदरसीहिं।।८१२।।

उवसमखइयो मिस्सो ओदइयो पारिणामियो भाओ।
भेदा दुगु णव तत्तो दुगणिगिवीसं तियं कमसो।।८१३।।

कम्मुवसमम्मि उवसमभाओ खीणम्मि खयियभावो दु।
उदओ जीवस्स गुणो खओवसमिओ हवे भाओ।।८१४।।

कम्मुदयजकम्मिगुणो ओदइयो तत्थ होदि भावो दु।
कारणणिरवेक्खभवो सभावियो होदि परिणामो।।८१५।।

उवसमभावो उवसम-सम्मं चरणं च तारिसं खयिओ।
खायिय णाणं दंसण सम्मंचरित्तं च दाणादी।।८१६।।

खाओवसमियभावो चउणाण तिदंसणं तिअण्णाणं।
दाणादि पंच वेदगसरागचारित्तदसंजमं।।८१७।।

ओदयिया पुण भावा गदिलिंगकसाय तह य मिच्छत्तं।
लेस्सासिद्धासंजमअण्णाणं होंति इगिवीसं।।८१८।।

जीवत्तं भव्वत्तमभव्वत्तादी भवंति परिणामा।
इदि मूलुत्तरभावा भंगवियप्पे बहूं जाणे।।८१६।।

ओघादेसे संभवभावं मूलुत्तरं ठवेदूण।
पत्तेये अविरुद्धे परसजोगेवि भंगा हु।।८२०।।

मिच्छतिये तिचउक्के दोसुवि सिद्धे वि मूलभावा हु।
तिग पण पणगं चउरो तिग दोण्णि य संभवा होंति।।८२१।।

तत्थेव मूलभंगा दस छव्वीसं कमेण पणतीसं।
उगवीसं दस पणगं ठाणं पडि उत्तरं बोच्छं।।८२२।।

उत्तरभंगा दुविहा ठाणगया पदगयात्ति पढमम्मि।
सगजोगेण य भंगाणयणं णत्थित्ति णिद्दिट्ठं।।८२३।।

मिच्छदुगे मिस्सतिये पमत्तसत्तेय मिस्सठाणाणि।
तिग दुग चउरो एक्कं ठाणं सव्वत्थ ओदइयं।।८२४।।

तत्थावरणज भावा पणछस्सत्तेव दाणपंचेव।
अयदचउक्के वेदगसम्मं देसम्मि देसजयं।।८२५।।

राग जमं तु पमत्ते इदरे मिच्छादिजेट्ठठाणाणि।
वेभंगेण विहीणं चक्खुविहीणं च मिच्छदुगे।।८२६।।

अवधिदुगेण विहीणं मिस्सतिये होहि अण्णठाणं तु।
मणणाणेणवधिदुगेणुभयेणूणं तदो अण्णे।।८२७।।

लिंगकसाया लेस्सा संगुणिदा चदुगदीसु अविरुद्धा।
बारस बावत्तरियं तत्तियमेत्तं च अडदालं।।८२८।।

णवरि विसेसं जाणे सुर मिस्से अविरदे य सुहलेस्सा।
चउवीस तत्थ भंगा असहायपरक्कमुद्दिट्ठा।।८२६।।

चक्खूण मिच्छसासणसम्मा तेरिच्छगा हवंति सदा।
चारिकसायतिलेस्साणब्भासे तत्थ भंगा हु।।८३०।।

खाइयअविरदसम्मे चदु सोल विहत्तरी य बारं च।
तद्देसो मणुसेव य छत्तीसा तब्भवा भंगा।।८३१।।

परिणामो दुट्ठाणो मिच्छे सेसेसु एक्कठाणो दु।
सम्मे अण्णं सम्मं चारित्ते णत्थि चारित्तं।।८३२।।

मिच्छदुगयदचउक्के अट्ठट्ठाणेण खइयठाणेण।
जुद परजोगजभंगा पुध आणिय मेलिदव्वा हु।।८३३।।

उदयेणक्खे चडिदे गुणगारा एव होंति सव्वत्थ।
अवसेसभावठाणेणक्खे संचारिदे खेवा।।८३४।।

दुसु दुसु देसे दोसुवि चउरुत्तरदुसदमसीदिसहिदसदं।
बावत्तरिछत्तीसा बारमपुव्वे गुणिज्जपमा।।८३५।।

बारचउतिदुगमेक्कं थूले तो इगि हवे अजोगित्ति।
पुण बार बार सुण्णं चउसद छत्तीस देसोत्ति।।८३६।।

वामे दुसु दुसु दुसु तिसु खीणे दोसुवि कमेण गुणगारा।
णव छब्बारस तीसं वीसं वीसं चउक्कं च।।८३७।।

पुणरवि देसोत्ति गुणो तिदुणभछच्छक्कयं पुणो खेवा।
पुव्वपदे सड पंचयमेगारसुगतीसमुगुवीसं।।८३८।।

उगुवीस तियं तत्तो तिदुणभछच्छक्कयं च देसोत्ति।
चउसुवसमगेसु गुणा तालं रूऊणया खेवा।।८३९।।

मिच्छादिठाणभंगा अट्ठारसया हवंति तेसीदा।
बारसया पणुवण्णा सहस्ससहिया हु पणसीदा।।८४०।।

रूवहियडवीससया सगणउदा दससया णवेणहिया।
एक्कारसया दोण्हं खवगेसु जहाकमं वोच्छं।।८४१।।

पुव्वे पंचणियट्टीसुहुमे खीणे दहाण छव्वीसा।
तत्तीयमेत्ता दसअडछच्चदुचदुचदुय एगूणं।।८४२।।

उवसामगेसु दुगुणं रूवहियं होदि सत्त जोगिम्मि।
सत्तेव अजोगिम्मि य सिद्धे तिण्णेव भंगा हु।।८४३।।

दुविहा पुण पदभंगा जादिगपदसव्वपद भवात्ति हवे।
जातिपदखयिगमिस्से पिंडेव य होदि सगजोगो।।८४४।।

अयदुवसमग चउक्के एक्कं दो उवसमस्स जातिपदो।
खइयपदं तत्थेक्कं खवगे जिणसिद्धगेसु दु पण चदू।।८४५।।

मिच्छतिये मिस्सपदा तिण्णिं य अयदम्मि होंति चत्तारि।
देशतिये पंचपदा तत्तो खीणोत्ति तिण्णिपदा।।८४६।।

मिच्छे अट्ठुदयपदा ते तिसु सत्तेव तो सवेदोत्ति।
छिस्सुहुमोत्ति य पणगं खीणोत्ति जिणेसु चदुतिदुगं।।८४७।।

मिच्छे परिणामपदा दोणि य सेसेसु होदि एक्कं तु।
जाति पदं पडि बोच्छं मिच्छादिसु भंगपिंडं तु।।८४८।।

अट्ठ गुणिज्जा वामे तिसु सग छच्चउसु छक्क पणगं च।
थूले सुहुमे पणगं दुसु चउतियदुगुमदो सुण्णं।।८४९।।

बारट्ठट्ठछव्वीसं तिसु तिसु बत्तीसयं च चउवीसं।
तो तालं चउवीसं गुणगारा बार बार णभं।।८५०।।

वामे चउदस दुसु दस अडवीसं तिसु हवंति चोत्तीसं।
तिसु छव्वीस दुदालं खेवा छव्वीस बार बार णवं।।८५१।।

एक्कारं दसगुणियं दुसु छावट्ठि दसाहियं विसयं।
तिसु छव्वीसं विसयं वेदुवसामोत्ति दुसय बासीदी।।८५२।।

बादालं बिण्णिसया तत्तो सुहुमोत्ति दुसय दोसहियं।
उवसंतम्मि य भंगा खवगेसु जहाकमं बोच्छं।।८५३।।

सत्तरसं दसगुणिदं वेदित्ति सयाहियं तु छादालं।
सुहुमोत्ति खीणमोहे बावीससयं हवे भंगा।।८५४।।

अडदालं छत्तीसं जिणेसु सिद्धेसु होंति णव भंगा।
एत्तो सव्वपदं पडि मिच्छादिसु सुणुह बोच्छामि।।८५५।।

भव्विदराणण्णदरं गदीण लिंगाण कोहपहुडीणं।
इगिसमये लेस्साणं सम्मत्ताणं च णियमेण।।८५६।।

पत्तेयपदा मिच्छे पण्णरसा पंच चेव उपजोगा।
दाणादी ओदयिये चत्तारि य जीवभावो य।।८५७।।

पिंडपदा पंचेव य भव्विदरदुगं गदी य लिंगं च।
कोहादी लेस्सा वि य इदि वीस पदा हु उड्ढेण।।८५८।।

पत्तेयाणं उवरिं भव्विदरदुगस्स होदि गदि लिंगे।
कोहादि लेस्ससम्मत्ताणं रयणा तिरिच्छेण।।८५६।।

एक्कादी दुगुणकमा एक्केक्कं रुंधियूण हेट्ठम्मि।
पदसंजोगे भंगा गच्छं पडि होंति उवरुवरिं।।८६०।।

इट्ठ पदे रूऊणे दुगसंवग्गम्मि होदि इट्ठधणं।
असरिच्छाणंतधणं दुगुणेगूणे सगीयसव्वधणं।।८६१।।

तेरिच्छा हु सरिच्छा अविरददेसाण खयियसम्मत्तं।
मोत्तूण संभवं पडि खयिगस्सवि आणए भंगे।।८६२।।

उड्ढतिरिच्छपदाणं सव्वसमासेण होदि सव्वधणं।
सव्वपदाणं भंगे मिच्छादिगुणेसु णियमेण।।८६३।।

मिच्छादीणं दुति दुसु अपुव्वअणियट्टिखवगसमगेसु।
सुहुमुवसमगे संते सेसेपत्तेयपदसंखा।।८६४।।

पण्णरसोलट्ठारस वीसुगुवीसं च वीसमुगुवीसं।
इगिवीसवीसचोद्दसतेरसपणगं जहाकमसो।।८६५।।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडिं खीणकसाओत्ति सव्वपद भंगा।
पण्णट्ठिं च सहस्सा पंचसया होंति छत्तीसा।।८६६।।

तग्गुणगारा कमसो पणणउदेयत्तरीसयाण दलं।
ऊणट्ठारसयाणं दलं तु सत्तहियसोलसयं।।८६७।।

तेवत्तरिं सयाइं सत्तावट्ठी य अविरदे सम्मे।
सोलस चेव सयाइं चउसट्ठी खइयसम्मस्स।।८६८।।

ऊणत्तीससयाइं एक्काणउदी य देसविरदम्मि।
छावत्तरि पंचसया खइयणरे णत्थि तिरियम्मि।।८६९।।

इगिदालं च सयाइं चउदालं च य पमत्त इदरे य।
पुव्वुवसमगे वेदाणियट्टि भागे सहस्समट्ठूणं।।८७०।।

अडसट्ठी एक्कसयं कसायभागम्मि सुहुमगे संते।
अडदालं चउवीसं खवगेसु जहाकमं बोच्छं।।८७१।।

अडदालं चारिसयाअपुव्व अणियट्टिवेदभागे य।
सीदी कसायभागे तत्तो बत्तीस सोलं तु।।८७२।।

जोगिम्मि अजोगिम्मि य बेसदछप्पणयाण गुणगारा।
चउसट्ठी बत्तीसा गुणगुणिदेक्कूणया सव्वे।।८७३।।

सिद्धेसु सुद्धभंगा एक्कत्तीसा हवंति णियमेण।
सव्वपदं पडि भंगा असहायपरक्कमुद्दिट्ठा।।८७४।।

आदेसेवि य एवं संभवभावेहि ठाणभंगाणि।
पदभंगाणि य कमसो अव्वामोहेण आणेज्जो।।८७५।।

असिदिसदं किरियाणं अक्किरियाणं च आहु चुलसीदी।
सत्तट्ठण्णाणीणं वेणयियाणं तु बत्तीसं।।८७६।।

अत्थि सदो परदोवि य णिच्चाणिच्च त्तणेण य णवत्था।
कालीसरप्पणियदिसहावेहि य ते हि भंगा हु।।८७७।।

अत्थि सदो परदोवि य णिच्चाणिच्चत्तणेण य णवत्था।
एसिं अत्था सुगमा कालादीणं तु बोच्छामि।।८७८।।

कालो सव्वं जणयदि कालो सव्वं विणस्सदे भूदं।
जागत्ति हि सुत्तेसुवि ण सक्कदे वंचिदुं कालो।।८७९।।

अण्णाणी हु अणीसो अप्पा तस्स य सुहं च दुक्खं च।
सग्गं णिरयं गमणं सव्वं इसरकयं होदि।।८८०।।

एक्को चेव महप्पा पुरिसो देवो य सव्ववावी य।
सव्वंगणिगूढोवि य सचेयणो णिग्गुणो परमो।।८८१।।

जत्तु जदा जेण जहा जस्स य णियमेण होदि तत्तु तदा।
तेण तहा तस्स हवे इदि वादो णियदिवादो दु।।८८२।।

को करइ कंटयाणं तिक्खत्तं मियविहंगमादीणं।
विविहत्तं तु सहाओ इदि सव्वंपि यसहाओत्ति।।८८३।।

णत्थि सदो परदोवि य सत्तपयत्था य पुण्णपाऊणा।
कालादियादिभंगा सत्तरि चदुपंतिसंजादा।।८८४।।

णत्थि य सत्तपदत्था णियदीदो कालदो तिपंतिभवा।
चोद्दस इदि णत्थित्ते अक्किरियाणं च चुलसीदी।।८८५।।

को जाणइ णवभावे सत्तमसत्तं दयं अवच्चमिदि।
अवयणजुद सत्ततयं इदि भंगा होंति तेसट्ठी।।८८६।।

को जाणइ सत्तचऊ भावं सुद्धं खु दोण्णिपंतिभवा।
चत्तारि होंति एवं अण्णाणीणं तु सत्तट्ठी।।८८७।।

मणवयणकायदाणगविणवो सुरणिवइणाणिजदिबुड्ढे।
बाले मादुपिदुम्मि च कायव्वो चेदि अट्ठचऊ।।८८८।।

सच्छंददिट्ठिहि वियप्पियाणी तेसट्ठिजुत्ताणि सयाणि तिण्णि।
पासंडिणं वाउलकारणाणि अण्णाणिचित्ताणिहरंति ताणि।।८८६।।

आलस्सड्ढो णिरुत्थाहो फलं किंचि ण्ण भुंजदे।
थणंखीरादि पाणं व पउरुसेण विणा ण हि।।८६०।।

दइवमेव परं मण्णे धिप्पउरुसमण्णत्थयं।
एसो सालसमुत्तुंगो कण्णो हण्णइ संगरे।।८६१।।

संजोगमेवेत्ति वदंति तण्णा णेवेक्कचक्केण रहो पयादि।
अंधो य पंगू य वण प्पविट्ठा ते संपजुत्ता णयरं पविट्ठा।।८६२।।

सइउट्ठिया पसिद्धी दुव्वारा मेलिदेहि वि सुरेहिं।
मज्झिमपंडवखित्ता माला पञ्चसुवि खित्तेव।।८६३।।

जावदिया वयणवहा तावदिया चैव होंति णयवादा।
जावदिया णयवादा तावदिया चेव होंति परसमया।।८६४।।

परसमयाणं वयणं मिच्छं खलु होइ सव्वहा वयणा।
जइणाणं पुण वयणं सम्मं खु कहंचिवयणादो।।८६५।।

णमह गुणरयणभूसण सिद्धंतामियमहद्धि भवभावं।
वरवीरणंदिचंदं णिम्मलगुणमिंदणंदि गुरुं।।८६६।।

इगिवीसमोहखवणुवसमणणिमित्ताणि तिकरणाणि तहिं।
पढमं अधापवत्तं करणं तु करेदि अपमत्तो।।८६७।।

जम्हा उवरिमभावा हेट्ठिमभावेहि सरिसगा होंति।
तम्हा पढमं करणं अधापवत्तोति णिद्दिट्ठं।।८६८।।

अंतोमुहुत्तमेत्तो तक्कालो होदि तत्थ परिणामा।
लोगाणमसंखपमा उवरुवरिं सरिसवड्ढिगया।।८६६।।

बावत्तरितिसहस्सा सोलस चउ चारि एक्कयं चेव।
धणअद्धाणविसेसे तियसंखा होदि संखेज्जे।।६००।।

आदिधणादो सव्वं पचयधणं संखभाग परिमाणं।
करणे अधापवत्ते होदित्ति जिणेहि णिद्दिट्ठं।।६०१।।

उभयधणे संमिलिदे पदकदिगुणसंखरूवहदपचयं।
सव्वधणं तं तम्हा पदकदिसंखेण भाजिदे पचयं।।६०२।।

चयधणहीणं दव्वं पदभजिदे होदि आदि परिमाणं।
आदिम्मि चये उड्ढे पडिसमयधणं तु भावाणं।।६०३।।

पचयधणस्साणयणे पचय प्पभवं तु पचयमेव हवे।
रूऊणपदं तु पदं सव्वत्थवि होइ णियमेण।।६०४।।

पडिसमयधणेवि पदं पचयं पभवं च होदि तेरिच्छे।
अणुकड्ढिपदं सव्वद्धाणस्स य संखभागो दु।।६०५।।

अणुकड्ढिपदेण हिदे पचये पचयो दु होइ तेरिच्छे।
पचयधणूणं दव्वं सगपदभजिदं हवे आदी।।६०६।।

आदिम्मि कमे वड्ढदि अणुकड्ढिस्स य चयं तु तेरिच्छे।
इदिउड्ढतिरियरयणा अधापवत्तम्मि करणम्मि।।६०७।।

अंतोमुहुत्तकालं गमियूण अधापवत्तकरणं तं।
पढिसमयं सुज्झंतो अपुव्वकरणं समल्लियइ।।६०८।।

छण्णउदिचउसहस्सा अट्ठ य सोलस धणं तदद्धाणं।
परिणाम विसेसोवि य चउ संखापुव्वकरणम्मि।।६०६।।

अंतोमुहुत्तमेत्ते पडिसमयमसंखलोगपरिणामा।
कम उड्ढापुव्वगुणे अणुकड्ढी णत्थि णियमेण।।६१०।।

एक्कम्मि कालसमये संठाणादीहि जह णिवट्टंति।
णणिवट्टंति तहंवि य परिणामेहिं मिहो जे हु।।६११।।

होंति अणियट्टिणो ते पडिसमयं जस्सिएक्कपरिणामा।
विमलयरझाणहुदवहसिहाहि णिद्दड्ढकम्मवणा।।६१२।।

सिद्धे विसुद्धनिलये पणट्ठकम्मे विणट्ठसंसारे।
पणमिय सिरसा वोच्छं कम्मट्ठिदिरयणसब्भावं।।६१३।।

कम्मसरूवेणागय दव्वं ण य एदि उदयरूवेण।
रूवेणुदीरणस्स य आबाहा जाव ताव हवे।।६१४।।

उदयं पडि सत्तण्हं आबाहा कोडिकोडि उवहीणं।
बाससयं तप्पडिभागेण य सेसट्ठिदीणं च।।६१५।।

अंतो कोडाकोडिट्ठिदिस्स अंतोमुहुत्तमाबाहा।
संखेज्जगुणविहीणं सव्वजहण्णट्ठिदिस्स हवे।।६१६।।

पुव्वाणं कोटितिभागादासंखेपअद्धओत्ति हवे।
आउस्स य आबाहा णट्ठिदिपडिभागमाउस्स।।६१७।।

आवलियं आबाहा उदीरणमासेज्ज सत्तकम्माणं।
परभविय आउगस्स य उदीरणा णत्थि णियमेण।।६१८।।

आबाहूणियकम्मट्ठिदीणिसेगो दु सत्तकम्माणं।
आउस्स णिसेगो पुण सगट्ठिदी होदि णियमेण।।६१९।।

आबाहं बोलाविय पढमणिसेगम्मि देइ बहुगं तु।
तत्तो विसेसहीणं बिदियस्सादिमणिसेओत्ति।।६२०।।

बिदिये बिदियणिसेये हाणी पुव्विल्लहाणि अद्धं तु।
एवं गुणहाणिं पडिं हाणी अद्धद्धयं होदि।।६२१।।

दव्व ट्ठिदिगुणहाणीणद्धाणं दलसला णिसेयछिदी।
अण्णोण्णगुणसलावि य जाणेज्जो सव्वठिदिरयणे।।६२२।।

तेवट्ठिं च सयाइं अडदाला अट्ठ छक्क सोलसयं।
चउसट्ठिं च विजाणे दव्वादीणं च संदिट्ठी।।६२३।।

दव्वं समयपबद्धं उत्तपमाणं तु होदि तस्सेव।
जीवसहत्थणकालो ठिदि अद्धा संखपल्लमिदा।।६२४।।

मिच्छे वग्गसलायप्पहुडिं पल्लस्स पढममूलोत्ति।
वग्गहदी चरिमो त्तच्छिदिसंकलिदं चउत्थो य।।६२५।।

वग्गसलागेणवहिदपल्लं अण्णोण्णगुणिदरासी हु।
णाणागुणहाणिसला वग्गसलच्छेदणूणपल्लछिदी।।६२६।।

सव्वसलायाणं जदि पयदणिसेये लहेज्ज एक्कस्स।
किं होदित्ति णिसेये सलाहिदे होइ गुणहाणी।।६२७।।

दो गुणहाणि पमाणं णिसेयहारो दु होइ तेण हिदे।
इट्ठे पढमणिसेये विसेसमागच्छदे तत्थ।।६२८।।

रूऊणण्णोण्णब्भवहिददव्वं च चरिमगुणदव्वं।
होदि तदो दुगुणकमो आदिमगुणहाणि दव्वोत्ति।।६२९।।

रूऊणद्धाणद्धेणूणेण णिसेयभागहारेण।
हदगुणहाणि विभजिदे सगसगदव्वे विसेसा हु।।६३०।।

पचयस्स य संकलणं सगसगगुणहाणिदव्वमज्झम्मि।
अवणिय गुणहाणिहिदे आदिपमाणं तु सव्वत्थ।।६३१।।

सव्वासिं पयडीणं णिसेयहारो य एयगुणहाणी।
सरिसा हवंति णाणागुणहाणिसलाओ वोच्छामि।।६३२।।

मिच्छस्सत्त य उत्ता उवरीदो तिण्णि तिण्णि संमिलिदा।
अट्ठगुणेणूणकमा सत्तसु रयिदा तिरिच्छेण।।६३३।।

तत्थंतिमं छिदिस्स य अट्ठम भागो सलायछिदा हु।
आदि मराशि पमाणं दस कोडाकोडिपडिबद्धे।।६३४।।

इगिपंतिगदं पुध पुध अप्पिट्ठेण य हदे हवे णियमा।
अप्पिट्ठस्स य पंति णाणागुणहाणिपडिबद्धा।।६३५।।

अप्पिट्ठपंति चरमो जेत्तियमेत्ताणि वग्गमूलाणं।
छिदणिवहोत्ति णिहाणिय सेसं च य मेलिदे इट्ठा।।६३६।।

इट्ठसलायपमाणे दुगसंवग्गे कदे दु इट्ठस्स।
पयडिस्स य अण्णोण्ण ब्भत्थपमाणं हवे णियमा।।६३७।।

आवरणवेदणीये विग्घे पल्लस्स विदियतदियपदं।
णामागोदे बिदियं संखातीदं हवंतित्ति।।६३८।।

आउस्स य संखेज्जा तप्पडिभागा हवंति णियमेण।
इदि अत्थपदं जाणिय इट्ठठिदिस्साणए मदिमं।।६३९।।

उक्कस्सट्ठिदिबंधे सयलाबाहा हु सव्वठिदिरयणा।
तक्काले दीसदि तो दो दो बंधट्ठिदीणं च।।६४०।।

आबाधाणं बिदियो तदियो कमसो हि चरमसमयो दु।
पढमो बिदियो तदियो कमसो चरिमो णिसेओ दु।।६४१।।

समयपबद्धपमाणं होदि तिरिच्छेण वट्टमाणम्मि।
पडिसमयं बंधुदओ एक्को समयप्पबद्धो दु।।६४२।।

सत्तं समयपबद्धं दिवड्ढगुणहाणि ताडियं ऊणं।
तियकोणसरूवट्ठिददव्वे मिलिदे हवे णियमा।।६४३।।

उवरिमगुणहाणिणं धणमंतिमहीणपढमदलमेत्तं।
पढमे समयपबद्धं ऊणकमेणट्ठिया तिरिये।।६४४।।

अंतोकोडाकोडिट्ठिदित्ति सव्वे णिरंतरट्ठाणा।
उक्कस्सट्ठाणादो सण्णिस्स य होंति णियमेण।।६४५।।

संखेज्जसहस्साणिवि सेढीरूढम्हि सांतरा होंति।
सगसगअवरोत्ति हवे उक्कसादोदु सेसाणं।।६४६।।

आउट्ठिदिबंधज्झवसाणठाणा असंखलोगमिदा।
णामागोदे सरिसं आवरण दु तदियविग्घे य।।६४७।।

सव्वुवरि मोहणीये असंखगुणिदक्कमा हु गुणगारो।
पल्लासंखेज्जदिमो पयडिसमाहार मासेज्ज।।६४८।।

अवरट्ठिदि बंधज्झवसाणट्ठाणा असंखलोगमिदा।
अहियकमा उक्कस्सट्ठिदि परिणामोत्ति णियमेण।।६४६।।

अहियागमणणिमित्तं गुणहाणी होदि भागहारो दु।
दुगुणं दुगुणं वड्ढी गुणहाणिं पडि कमेण हवे।।६५०।।

ठिदि गुणहाणिपमाणं अज्झवसाणम्मि होदि गुणहाणि।
णाणागुणहाणिसला असंखभागो ठिदिस्स हवे।।६५१।।

लोगाणमसंखपमा जहण्णउड्ढिम्मि तम्हि छट्ठाणा।
ठिदि बंधज्झवसाणट्ठाणाणं होंति सत्तण्हं।।६५२।।

आउस्स जहण्णट्ठिदि बंधणजोग्गा असंखलोगमिदा।
आवलियसंखभागेणुवरुवरिं होंति गुणिदकमा।।६५३।।

पल्लासंखेज्जदिमा अणुकड्ढी तत्तियाणि खंडाणि।
अधियकमाणि तिरिच्छे चरिमं खंडं च अहियं तु।।६५४।।

लोगाणमसंखमिदा अहियषमाणा हवंति पत्तेय।
समुदायेण वि तच्चिय ण हि अणुकड्ढिम्मि गुणहाणी।।६५५।।

पढमं पढमं खंडं अण्णोण्णं पेक्खिऊण विसरिच्छं।
हेट्ठिल्लुक्कस्सादोणंतगुणादुवरिमजहण्णं।।६५६।।

विदियं विदियं खंडं अण्णोण्णं पेक्खिऊण विसरिच्छं।
हेट्ठिल्लुक्कस्सादोणंतगुणादुवरिमजहण्णं।।६५७।।

चरिमं चरिमं खंडं अण्णोण्णं पेक्खिऊण विसरिच्छं।
हेट्ठिल्लुक्कस्सादोणंतगुणादुवरिमजहण्णं।।६५८।।

हेट्ठिमखंडुक्कस्सं उव्वंकं होदि उवरिमजहण्णं।
अट्ठंकं होदि तदोणंतगुणं उवरिम जहण्णं।।६५६।।

अवरुक्कस्सठिदीणं जहण्णमुक्कस्सयं च णिव्वग्गं।
सेसा सव्वे खंडा सरिसा खलु होंति उड्ढेण।।६६०।।

अट्ठण्हंपि य एवं आउजहण्णट्ठिदिस्स वरखंडं।
जावय तावय खंडा अणुकट्ठिपदे विसेसहिया।।६६१।।

तत्तो उवरिमखंडा सगसगउक्कस्सगोत्ति सेसाणं।
सव्वे ठिदीणखंडाऽसंखेज्जगुणक्कमा तिरिये।।६६२।।

रसबंधज्झवसाणट्ठाणाणि असंखलोगमेत्ताणि।
अवरट्ठिदिस्स अवरट्ठिदि परिणाममि थोवाणि।।६६३।।

तत्तो कमेण वड्ढदि पडिभागेण य असंखलोगेण।
अवरट्ठिदिस्स जेट्ठट्ठिदि परिणामोत्ति णियमेण।।६६४।।

गोम्मटसंगहसुत्तं गोम्मटदेवेण गोम्मटं रइयं।
कम्माणणिज्जरट्ठं तच्चट्ठवधारणट्ठं च।।६६५।।

जम्हि गुणा विस्संता गणहरदेवादिइड्ढिपत्ताणं।
सो अजियसेणणाहो जस्स गुरू जयउ सो राओ।।६६६।।

सिद्धंतुदयतडुग्गयणिम्मलवरणेमिचंदकरकलिया।
गुणरयणभूसणंबुहिमइवेलाभरउभुवणयलं।।६६७।।

गोम्मटसंगहसुत्तं गोम्मट सिहरुवरि गोम्मट जिणो य।
गोम्मटरायविणिम्मियदक्खिण कुक्कुड जिणो जयउ।।६६८।।

जेण विणिम्मिय पडिमावयणं सव्वट्ठसिद्धि देवेहिं।
सव्वपरमोहि जोगिहि दिट्ठं सो गोम्मटो जयऊ।।६६९।।

वज्जयलं जिणभवणं ईसिपभारं सुवण्णकलसं तु।
तिहुवण पडिमाणेक्कं जेण कयं जयउ सो राओ।।६७०।।

जेणुब्भियथंभुवरिमजक्खतिरीटग्गकिरणजलधोया।
सिद्धाण सुद्धपाया सो राओ गोम्मटो जयउ।।६७१।।

गोम्मटसुत्तंलिहणे गोम्मटरायेण जा कया देसी।
सो राओ चिरकालं णामेण य वीरमत्तंडी।।६७२।।

इति गोम्मटसारः (कर्मकाण्डम्)

समाधिशतकम्

येनात्माऽबुद्ध्यतात्मैव, परत्वेनैव चापरम्।
अक्षयानन्त बोधाय, तस्मै सिद्धात्मने नमः।।१।।

जयन्ति यस्यावदतोऽपि भारती, विभूतयस्तीर्थकृतोप्यनीहितुः।
शिवाय धात्रे सुगताय विष्णवे, जिनाय तस्मै सकलात्मने नमः।।२।।

श्रुतेन लिङ्गेन यथात्मशक्ति, समाहितान्तः करणेन सम्यक्।
समीक्ष्य कैवल्यसुखस्पृहाणां, विविक्तमात्मानमथाभिधास्ये।।३।।

बहिरन्तः परश्चेति, त्रिधात्मा सर्वदेहिषु।
उपेयात्तत्र परमं, मध्योपायाद्बहिस्त्यजेत्।।४।।

बहिरात्मा शरीरादौ, जातात्मभ्रान्तिरान्तरः।
चित्तदोषात्मविभ्रान्तिः, परमात्माऽतिनिर्मलः।।५।।

निर्मलः केवलः सिद्धो, विविक्तः प्रभुरक्षयः।
परमेष्ठी परात्मेति, परमात्मेश्वरो जिनः।।६।।

बहिरात्मेन्द्रिय द्वारै रात्मज्ञान पराङ्मुखः।
स्फुरितः स्वात्मनो देहमात्मत्वेनाध्यवश्यति।।७।।

नरदेहस्थमात्मान-मविद्वान् मन्यते नरम्।
तिर्यंचं तिर्यगङ्गस्थं, सुरागस्थं सुरं तथा।।८।।

नारकं नारकाङ्गस्थं, न स्वयं तत्त्वतस्तथा।
अनंतानंतधीशक्तिः, स्वसंवेद्योऽचलस्थितिः।।९।।

स्वदेहसदृशं दृष्ट्वा, परदेहमचेतनम्।
परात्माधिष्ठितं मूढः, परत्वेनाध्यवस्यति।।१०।।

स्वपराध्यवसायेन, देहेष्वविदितात्मनाम्।
वर्तते विभ्रमः पुंसां, पुत्रभार्यादिगोचरः।।११।।

अविद्यासंज्ञितस्तस्मात्, संस्कारो जायते दृढः।
येन लोकोऽङ्गमेव स्वं, पुनरप्यभिमन्यते।।१२।।

देहे स्वबुद्धिरात्मानं, युनक्त्येतेन निश्चयात्।
स्वात्म येवात्मधीस्तस्मा-द्वियोजयति देहिनं।।१३।।

देहेष्वात्मधिया जाताः, पुत्रभार्यादिकल्पनाः।
सम्पत्तिमात्मनस्ताभि, र्मन्यते हा हतं! जगत।।१४।।

मूलं संसारदुःखस्य, देह एवात्मधीस्ततः।
त्यक्त्वैनां प्रविशेदन्त, र्बहिरव्यावृतेन्द्रियः।।१५।।

मत्तश्च्युत्वेन्द्रियद्वारैः, पतितो विषयेष्वहम्।
तान् प्रपद्याऽहमिति मां, पुरा वेद न तत्त्वतः।।१६।।

एवं त्यक्त्वा बहिर्वाचं, त्यजेदन्तरशेषतः।
एष योगः समासेन, प्रदीपः परमात्मनः।।१७।।

यन्मया दृश्यते रूपं, तन्न जानाति सर्वथा।
जानन्न दृश्यते रूपं, ततः केन ब्रवीम्यहम्।।१८।।

यत्परैः प्रतिपाद्योऽहं, यत्परान् प्रतिपादये।
उन्मत्तचेष्टितं तन्मे, यदहं निर्विकल्पकः।।१९।।

यदग्राह्यं न गृह्णाति, गृहीतं नैव मुंचति।
जानाति सर्वथा सर्वं, तत्स्वसंवेद्यमस्म्यहम्।।२०।।

उत्पन्नपुरुषभ्रान्तेः स्थाणौ, यद्वद्विचेष्टितम्।
तद्वन्मे चेष्टितं पूर्वं, देहादिष्वात्मविभ्रमात्।।२१।।

यथाऽसौ चेष्टते स्थाणौ, निवृत्ते पुरुषाग्रहे।
तथाचेष्टोऽस्मि देहादौ, विनिवृत्तात्मविभ्रमः।।२२।।

येनात्मनाऽनुभूयेऽहमात्मनैवात्मनाऽऽत्मनि।
सोऽहं न तन्न सा नासौ, नैको न द्वौ न वा बहुः।।२३।।

यदभावे सुषुप्तोऽहं, यद्भावे व्युत्थितः पुनः।
अतीन्द्रियमनिर्देश्यं, तत्स्वसंवेद्यमस्म्यहम्।।२४।।

क्षीयन्तेऽत्रैव रागाद्या, स्तत्त्वतो मां प्रपश्यतः।
बोधात्मानं ततः कश्चिन्न मे शत्रुर्न च प्रियः।।२५।।

मामपश्यन्नयं लोको, न मे शत्रुर्न च प्रियः।
मां प्रपश्यन्नयं लोको, न मे शत्रुर्न च प्रियः।।२६।।

त्यक्त्वैवं बहिरात्मान-मन्तरात्मव्यवस्थितः।
भावयेत्परमात्मानं, सर्वसङ्कल्पवर्जितम्।।२७।।

सोऽहमित्यात्तसंस्कार, स्तस्मिन् भावनया पुनः।
तत्रैव दृढ़संस्कारल्लभते ह्यात्मनि स्थितिम्।।२८।।

मूढ़ात्मा यत्र विश्वस्त, स्ततो नान्यद्भयास्पदम्।
यतो भीतस्ततो नान्य-दभयस्थानमात्मनः।।२९।।

सर्वेन्द्रियाणि संयम्य, स्तिमितेनान्तरात्मना।
यत्क्षणं पश्यतो भाति, तत्तत्त्वं परमात्मनः।।३०।।

यः परात्मा स एवाऽहं, योऽहं स परमस्ततः।
अहमेव मयोपास्यो, नान्यः कश्चिदिति स्थितिः।।३१।।

प्रच्याव्य विषयेभ्योऽहं, मां मयैव मयि स्थितम्।
बोधात्मानं प्रपन्नोऽस्मि, परमानन्दनिर्वृतिम्।।३२।।

यो न वेत्ति परं देहा, देवमात्मानमव्ययम्।
लभते स न निर्वाणं, तप्तवाऽपि परमं तपः।।३३।।

आत्मदेहान्तरज्ञान, जनिताह्लावदनिर्वृतः।
तपसा दुष्कृतं घोरं, भुञ्जानोऽपि न खिद्यते।।३४।।

रागद्वेषादिकल्लोलै, रलोलं यन्मनो जलम्।
प्रपश्यात्यात्मनस्तत्त्वं, तत्तत्त्वं नेतरो जनः।।३५।।

अविक्षिप्तं मनस्तत्त्वं, विक्षिप्तं भ्रान्तिरात्मनः।
धारयेत्तदविक्षिप्तं, विक्षिप्तं नाश्रयेत्ततः।।३६।।

अविद्याभ्याससंस्काररै वशं क्षिप्यते मनः।
तदेव ज्ञानसंस्कारैः, स्वतस्तत्त्वेऽवतिष्ठते।।३७।।

अपमानादयस्तस्य, विक्षेपो यस्य चेतसः।
नापमानादयस्तस्य, न क्षेपो यस्य चेतसः।।३८।।

यदा मोहात्प्रजायेते, रागद्वेषौ तपस्विनः।
तदैव भावयेत्स्वस्थ-मात्मानं शाम्यतः क्षणात्।।३९।।

यत्र काये मुनेः प्रेम, ततः प्रच्याव्य देहिनम्।
बुद्ध्या तदुत्तमे काये, योजयेत्प्रेम नश्यति।।४०।।

आत्मविभ्रमजं दुःख-मात्मज्ञानात्प्रशाम्यति।
नाऽयतास्तत्र निर्वान्ति, कृत्वापि परमं तपः।।४१।।

शुभं शरीरं दिव्यांश्च, विषयानभिवाञ्छति।
उत्पन्नाऽऽत्ममतिर्देहे, तत्त्वज्ञानी ततश्च्युतिम्।।४२।।

परत्राहम्मतिः स्वस्मा, च्च्युतो बध्नात्यसंशयम्।
स्वस्मिन्नहम्मतिश्च्युत्वा, परस्मान्मुच्यते बुधः।।४३।।

दृश्यमानमिदं मूढ, स्त्रिलिङ्गमवबुध्यते।
इदमित्यवबुद्धस्तु, निष्पन्नं शब्दवर्जितम्।।४४।।

जानन्नप्यात्मनस्तत्त्वं, विविक्तं भावयन्नपि।
पूर्वविभ्रमसंस्काराद्, भ्रांतिं भूयोऽपि गच्छति।।४५।।

अचेतनमिदं दृश्य, मदृश्यं चेतनं ततः।
क्व रुष्यामि क्व तुष्यामि, मध्यस्थोऽहं भवाम्यतः।।४६।।

त्यागादाने बहिर्मूढः, करोत्यध्यात्ममात्मवित्।
नान्तर्बहिरूपादानं, न त्यागो निष्ठितात्मनः।।४७।।

युञ्जीत मनसाऽऽत्मानं, वाक्कायाभ्यां वियोजयेत्।
मनसा व्यवहारं तु, त्यजेद्वाक्काययोजितम्।।४८।।

जगद्देहात्मदृष्टीनां, विश्वासो रम्यमेव वा।
आवात्मन्येवात्मदृष्टीनां, क्व विश्वासः क्व वा रतिः।।४९।।

आत्मज्ञानात्परं कार्यं न बुद्धौ धारयेच्चिरम्।
कुर्यादर्थवशात्किंचि-द्वाक्क्षयाभ्यामतत्परः।।५०।।

यत्पश्यामीन्द्रियैस्तन्मे, नास्ति यन्नियतेन्द्रियः।
अन्तः पश्यामि सानन्दं, तदस्तु ज्योतिरुत्तमम्।।५१।।

सुखमारब्धयोगस्य, बहिर्दुःखमथाऽऽत्मनि।
बहिरेवाऽसुखं सौख्य-मध्यात्मं भावितात्मनः।।५२।।

तद् ब्रूयात्तत्परान्पृच्छे-त्तदिच्छेत्तत्परो भवेत्।
येनाऽविद्यामयं रूपं, त्यक्त्वा विद्यामयं व्रजेत्।।५३।।

शरीरे वाचि चात्मानं, सन्धत्ते वाक्शरीरयोः।
भ्रान्तोऽभ्रान्तः पुनस्तत्त्वं, पृथगेषां विबुध्यते।।५४।।

न तदस्तीन्द्रियार्थेषु, यत्क्षेमङ्करमात्मनः।
तथापि रमते बाल, स्तत्रैवाज्ञानभावनात्।।५५।।

चिरं सुषुप्तास्तमसि, मूढात्मानः कुयोनिषु।
अनात्मीयात्मभूतेषु, ममाहमिति जाग्रति।।५६।।

पश्येन्निरंतरं देह-मात्मनोऽनात्मचेतसा।
अपरात्मधियाऽन्येषा-मात्मतत्त्वे व्यवस्थितः।।५७।।

अज्ञापितं न जानन्ति, यथा मां ज्ञापितं तथा।
मूढात्मानस्ततस्तेषां, वृथा मे ज्ञापनश्रमः।।५८।।

यद् बोधयितुमिच्छामि, तन्नाहं यदहं पुनः।
ग्राह्यं तदपि नान्यस्य, तत्किमन्यस्य बोधये।।५९।।

बहिस्तुष्यति मूढात्मा, पिहितज्योतिरन्तरे।
तुष्यत्यन्तः प्रबुद्धात्मा, बहिर्व्यावृत्तकौतुकः।।६०।।

न जानन्ति शरीराणि, सुखदुःखान्यबुद्धयः।
निग्रहानुग्रहधियं, तथाप्यत्रैव कुर्वते।।६१।।

स्वबुद्ध्या यावद् गृह्णीयात्, कायवाक्चेतसां त्रयम्।
संसारस्तावदेतेषां, भेदाभ्यासे तु निर्वृतिः।।६२।।

घने वस्त्रे यथाऽऽत्मानं, न घनं मन्यते तथा।
घने स्वदेहेप्यात्मानं, न घनं मन्यते बुधः।।६३।।

जीर्णे वस्त्रे यथाऽऽत्मानं, न जीर्णं मन्यते तथा।
जीर्णे स्वदेहेऽप्यात्मानं, न जीर्णं मन्यते बुधः।।६४।।

नष्टे वस्त्रे यथाऽऽत्मानं, न नष्टं मन्यते तथा।
नष्टे स्वदेहेऽयात्मानं, न नष्टं मन्यते बुधः।।६५।।

रक्ते वस्त्रे यथाऽऽत्मानं, न रक्तं मन्यते तथा
रक्ते स्वदेहेऽऽप्यात्मानं, न रक्तं मन्यते बुधः।।६६।।

यस्य सस्पन्दमाभाति, निःस्पन्देन समं जगत्।
अप्रज्ञमक्रियाभोगं, स समं याति नेतरः।।६७।।

शरीर-कंचुके-नात्मा, संवृत-ज्ञान-निग्रहः।
नात्मानं बुध्यते तस्माद्, भ्रमत्यतिचिरं भवे।।६८।।

प्रविशद्गलतां व्यूहे, देहेऽणूनां समाकृतौ।
स्थितिभ्रान्त्या प्रपद्यन्ते, तमात्मानमबुद्धयः।।६९।।

गौरः स्थूलः कृशो, वाऽहमित्यङ्गेनाविशेषयन्।
आत्मानं धारयेन्नित्यं, केवलंज्ञप्तिविग्रहम्।।७०।।

मुक्तिरेकान्तिकी तस्य, चित्ते यस्याचला धृतिः।
तस्य नैकान्तिकी मुक्ति, र्यस्य नास्त्यचला धृतिः।।७१।।

जनेभ्यो वाक्, ततः स्पन्दो, मनश्चित्तविभ्रमाः।
भवन्ति तस्मात्संसर्गं, जनैर्योगी ततस्त्यजेत्। ।७२।।

ग्रामोऽरण्यमिति द्वेधा, निवासोऽनात्मदर्शिनाम्।
दृष्टात्मनां निवासस्तु, विविक्तात्मैव निश्चलः। ।७३।।

देहान्तरगते र्बीजं, देहेऽस्मिन्नात्मभावना।
बीजं विदेहनिष्पत्ते-रात्मन्येवात्मभावना। ।७४।।

नयत्यात्मानमात्मैव जन्म निर्वाणमेव वा।
गुरुरात्माऽऽत्मनस्तस्मान्, नान्योऽस्ति परमार्थतः। ।७५।।

दृढात्म-बुद्धि-र्देहादा-वुत्पश्यन्ना-शमात्मनः।
मित्रादिभिर्वियोगं च, बिभेति मरणाद् भृशम्। ।७६।।

आत्मन्येवात्मधीरन्यां, शरीरगतिमात्मनः।
मन्यते निर्भयं त्यक्त्वा, वस्त्रं वस्त्रांतरग्रहम्। ।७७।।

व्यवहारे सुषुप्तो यः, स जागर्त्यात्मगोचरे।
जागर्ति व्यवहारेऽस्मिन्, सुषुप्तश्चात्मगोचरे। ।७८।।

आत्मानमन्तरे दृष्ट्वा, दृष्ट्वा देहादिकं बहिः।
तयोरन्तरविज्ञानाद, भ्यासादच्युतो भवेत्। ।७९।।

पूर्वं दृष्टात्मतत्त्वस्या, विभात्युन्मत्तवज्जगत्।
स्वभ्यस्तात्मधियः पश्चात्, काष्ठपाषाणरूपवत्। ।८०।।

शृण्वन्नप्यन्यतः कामं, वदन्नपि कलेवरात्।
नात्मानं भवयेद्भिन्नं, यावत्तावन्न मोक्षभाक्। ।८१।।

तथैव भावये देहाद्व्यावृत्यात्मानमात्मनि।
यथा न पुनरात्मानं, देहे स्वप्नेऽपि योजयेत्। ।८२।।

अपुण्यपव्रतैः पुण्यं, व्रतैर्मोक्षस्तयोर्व्ययः।
अव्रतानीव मोक्षार्थी, व्रतान्यपि ततस्त्यजेत्। ।८३।।

अव्रतानि परित्यज्य, व्रतेषु परिनिष्ठतः।
त्यजेत्तान्यपि संप्राप्य, परमं पदमात्मनः। ।८४।।

यदन्त-र्जल्प-संपृक्त-मुत्प्रेक्षा-जाल-मात्मनः ।।
मूलं दुःखस्य तन्नाशे, शिष्टमिष्टं परं पदम् ।।८५।।

अव्रती व्रतामादाय व्रती ज्ञानपरायणः ।
परात्मज्ञानसम्पन्नः, स्वयमेव परो भवेत् ।।८६।।

लिङ्गं देहाश्रितं दृष्टं, देह एवात्मनो भवः ।
न मुच्यन्ते भवात्तस्मादेते, लिङ्गकृताऽऽग्रहाः ।।८७।।

जातिर्देहाश्रिता दृष्टा, देह एवात्मनो भवः ।
न मुच्यन्ते भवात्तस्मा, देते जातिकृताग्रहाः ।।८८।।

जातिलिंगविकल्पेन, येषां च समयाग्रहः ।
तेऽपि न प्राप्नुवन्त्येव, परमं पदमात्मनः ।।८९।।

यत्त्यागाय निवर्तन्ते, भोगेभ्यो यदवाप्तये ।
प्रीतिं तत्रैव कुर्वन्ति, द्वेषमन्यत्र मोहिनः ।।९०।।

अन्तरज्ञः संधत्ते, दृष्टिं पंगुर्यथाऽन्धके ।
संयोगाद् दृष्टिमङ्गोऽपि, संधत्ते तद्वदात्मनः ।।९१।।

दृष्टभेदो यथा दृष्टि, पङ्गोरन्धे न योजयेत् ।
तथा न योजयेद्देहे, दृष्टात्मा दृष्टिमात्मनः ।।९२।।

सुप्तोन्मत्तद्यवस्थैव, विभ्रमोऽनात्मदर्शिनाम् ।
विभ्रमःक्षीणदोषस्य, सर्वावस्थाऽऽत्मदर्शिनः ।।९४।।

विदिताशेषशास्त्रोऽपि, न जाग्रदपि मुच्यते ।
देहात्मदृष्टिर्ज्ञातात्मा, सुप्तोन्मत्तोऽपि मुच्यते ।।९४।।

यत्रैवाहितधीः पुंसः, श्रद्धा तत्रैव जायते ।
यत्रैव जायते श्रद्धा, चित्तं तत्रैव लीयते ।।९५।।

यत्रैवाहितधीः पुंसः, श्रद्धा तस्मान्निवर्तते ।
यस्मान्निवर्तते श्रद्धा, कुतश्चित्तस्य तल्लयः ।।९६।।

भिन्नात्मानमुपास्यात्मा, परो भवति तादृशः।
वर्तिर्दीपं यथापास्य, भिन्ना भवति तादृशी।।६७।।

उपास्यात्मानमेवात्मा, जायते परमोऽथवा।
मथित्वाऽऽत्मानमात्मैव, जायतेऽग्निर्यथा तरुः।।६८।।

इतीदं भावयेन्नित्य-मवाचांगोचरं पदम्।
स्वत एव तदाप्नोति, यतो नावर्तते पुनः।।६९।।

अयत्नसाध्यं निर्वाणं, चित्तत्त्वं भूतजं यदि।
अन्यथा योगतस्तस्मान्न, दुःखं योगिनां क्वचित्।।१००।।

स्वप्ने दृष्टे विनष्टेऽपि, न नाशोऽस्ति यथात्मनः।
तथा जागरदृष्टेऽपि, विपर्यासाविशेषतः।।१०१।।

अदुःखभावितं ज्ञानं, क्षीणते दुःखसन्निधौ।
तस्माद्यथाबलं दुःखैरात्मानं भावयेन्मुनिः।।१०२।।

प्रयत्नादात्मनो वायुरिच्छाद्वेषप्रवर्तितात्।
वायोः शरीरयंत्राणि, वर्त्तन्ते स्वेषु कर्मसु।।१०३।।

तान्यात्मनि समारोप्य, साक्षाण्यास्तेऽसुखं जडः।
त्यक्त्वाऽरोपं पुनर्विद्वान्, प्राप्नोति परमं पदम्।।१०४।।

मुक्त्वा परत्र परबुद्धिमहंधियं च,
संसार-दुःखजननीं जननाद्विमुक्तः।
ज्योतिर्मयं सुखमुपैति परात्मनिष्ठ
स्तन्मार्गमेतदधिगम्य समाधितंत्रम्।।१०५।।

शान्तिसागरशतकम्

चतुर्विंशतितीर्थेशान् नत्वा सकलसद्गुरुन्।
श्रीशान्तिशतकं वक्षे प्राणिनां भावशुद्धये।।

प्रेमूर्तिं दयासिन्धुं मिथ्यारोगविवर्जितम्।
शान्तमूतिमहं वन्दे गुरुं श्री शान्तिसागरम्।।१।।

ज्ञानरश्मिं तपःपूतं ध्यानरश्मिं विनायकम्।
चारित्रभूषणं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।२।।

चर्याशुद्धं महाबुद्धं जितवाक्दाय मानसम्।
आरोग्यज्ञानिनं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।३।।

संगशून्यं महाप्राज्ञं भोगाकांक्षाविवर्जितम्।
आत्मावलोकिनं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।४।।

सौम्यमूर्तिं सुधासिन्धु साधुश्रेष्ठपदाश्रितम्।
शान्तिधाममहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।५।।

भव्यभावं महापोतं करुणागुणशलिनम्।
शान्तिस्वभाविनं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।६।।

चारित्रचक्रवर्त्याक्ष्यं साधुवर्यं तपोनिधिम्।
संघाधिपमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।७।।

सूरिश्रेष्ठं महाविज्ञमार्षमार्गप्रभावकम्।
श्रमणेन्दुमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।८।।

सद्दर्शनविदां श्रेष्ठं विमलं कीर्तिमालिनम्।
क्षीणध्वान्तमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।९।।

युगधर्मप्रवक्तारं विश्वशान्तिप्रवर्धकम्।
विश्ववन्द्यमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।१०।।

युगधर्मप्रवक्तारं विश्वशान्तिप्रवर्धकम् ।
वियतिनायकमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम् । ।११ । ।

धर्मरत्नं महारत्नं जैनागमप्रभावकम् ।
गुणागारमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम् । ।१२ । ।

ज्ञानज्योतिस्तपः पूतं ज्ञानामृतप्रदायकम् ।
महानिधिमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम् । ।१३ । ।

साधुसंघमहाध्यक्षं दिगम्बरजयध्वजम् ।
सप्ततत्त्वविदं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम् । ।१४ । ।

निस्संगगिनं निजानन्दं दिगम्बरपदान्वितम् ।
सर्वाराध्यमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम् । ।१५ । ।

महाव्रतान्तिवतं नित्यं पंचाचारसुपालकम् ।
समतादिक्रियानिष्ठं वन्दे श्रीशान्तिसागरम् । ।१६ । ।

ईयाभाषैषणादीनां समितिनां सुपालकम् ।
श्रीशान्तिसागरं वन्दे सप्तशेषगुणाश्रितम् । ।१७ । ।

पंचसप्ततपः युक्तं दशधर्मविभूषणम् ।
निर्विकारव्रतोपेतं वन्दे श्रीशान्तिसागरम् । ।१८ । ।

महाचार्यं महाज्ञानं कुशलं सुस्वभाविनम् ।
दिगम्बरमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम् । ।१९ । ।

संघरत्नं महारत्नं शान्तं शीलगुणान्वितम् ।
ब्रह्मचित्तमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम् । ।२० । ।

बहुश्रुतं गुणागारं जगतीतलभूषणम् ।
सौम्यश्रंगधरं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम् । ।२१ । ।

शैशवात् प्राप्तवैराग्यं करूणार्णवशालिनम् ।
शौचक्षमामयं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम् । ।२२ । ।

शान्ताघकल्मषं सौम्यं जिनमार्गसुसंज्ञकम्।
तीर्थंकरद्युतिं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिंसागरम्।।२३।।

योगनिष्ठं महायोगं त्रैविद्यातापहारिणम्।
अकिञ्चनमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।२४।।

तपोनिधिं महाधीरं सम्यग्बुद्धं सुयोगिनम्।
ब्रह्मचर्यव्रते निष्ठं वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।२५।।

प्रज्ञामयं जनैर्वन्द्यं मोक्षलक्ष्मीविभूषिणम्।
युक्त्यागमप्रबुद्धं च वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।२६।।

भव्यभावं सुधासिन्धुं भव्यलोकैरुपासितम्।
जितकाममहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।२७।।

मनीषिणं मनःपूतं विमलं कीर्तिशालिनम्।
विद्याधरमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।२८।।

सर्ववन्द्यं सदास्तुत्यं ज्ञानपीयूषवर्षिणम्।
सन्तोषत्यागचित्तं च वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।२९।।

सुधीरं सत्यरूपं च मनोहरस्वरूपिणम्।
कीर्तिमूर्तिमहं वन्दे गुरु श्रीशान्तिसागरम्।।३०।।

सूरिसन्तं तपोवृद्धमृजुताशीलधारिणम्।
दिगम्बरमणिं रम्यं वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।३१।।

नैकभाषाकलाविज्ञं तत्त्वविज्ञानभूषणम्।
धर्मसंसाधने वीरं वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।३२।।

दीनवन्धु दयाशीलं प्रतिभावित्तशालिनम्।
साधुवन्द्यमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।३३।।

आगमे प्राप्तनैपुण्यं निष्ठिलं मुनिसुव्रते।
यतीनां वृषभं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।३४।।

शास्त्रेषु प्राप्तकौशल्यं व्यवहारे विचक्षणम्।
आर्यवर्यमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।३५।।

संगहीनं निजानन्दं सर्वगार्हस्थ्यनिःस्पृहम्।
मांगल्यरूपिणं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।३६।।

निजात्मज्ञानपूर्णेन्दुं भव्यजीवानुरागिणम्।
मुनिश्रेष्ठं तपोलग्नं वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।३७।।

शक्तिपात्रं सुधीपात्रं शान्तिमंत्रसुशालिनम्।
सुबुद्धिधनसंयुक्तं वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।३८।।

तीर्थयात्रासुसंलग्नं तीर्थेषुश्रेष्ठशालिनम्।
साधुतीर्थमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।३९।।

व्यक्तवासोऽशनं प्राप्तनैर्ग्रन्थ्यं मुनिनायकम्।
निर्दिशन्तं शुभं मार्गं वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।४०।।

तपःपुञ्जं महासूर्यं गुरुगौरववर्धकम्।
शान्तिदूतमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।४१।।

अनेकान्तं महाज्ञानं स्याद्वादमन्त्रभूषणम्।
आर्षनेत्रमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।४२।।

त्रिसन्ध्यं साधनामग्नं विधैताचारचारिणम्।
समतानायकं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।४३।।

स्वाध्यायेषु सदालीनं दत्तशास्त्रोपदेशनम्।
अभीक्ष्णज्ञानिनं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।४४।।

तपस्याज्ञानवीर्याणामाचार्यं सौख्यदायिनम्।
जैनाचार्यविभुं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।४५।।

विद्याज्ञानोत्तमं नित्यं चारित्राचार्यनायकम्।
श्रीशान्तिसागरं वन्दे दर्शनाचारदेशिकम्।।४६।।

शान्तंतपस्विनं सौम्यं जीवानां तापहारिणम्।
वीरव्रते सदालग्नं वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।४७।।

ध्यानशीलं दयाशीलं कृतस्वात्मनिमज्जनम्।
श्रीशान्तिसागरं वन्दे भयसप्तकवर्जितम्।।४८।।

कषायाशावशातीतं नीरागीकृतचेतसम्।
सर्वलोके सुरम्यं च वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।४९।।

निरस्ताशेषकालुष्यं लोकद्वयप्रपुण्यकम्।
मुनिराजवरं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।५०।।

निरातंकं तपोदक्षं मुनिपुंगवशालिनम्।
ध्वस्तध्वान्तयतिं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।५१।।

पूतात्मानं महात्मानं तीर्थकेतनरुपिणम्।
तीर्थक्षेत्रेकृतावासं वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।५२।।

श्रेयोमार्गं महामन्त्रं सततोद्यमभाविनम्।
लोकपूज्यमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।५३।।

कीर्तिमन्तं जनःसेव्यं विबुधैर्वन्द्यमूर्तिकम्।
जगत्प्रसिद्धयोगीन्द्रं वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।५४।।

संघसेव्यं मनस्तोषं प्रमोदास्पदनायकम्।
लोकोत्तमशुभश्रीकं वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।५५।।

सर्वमान्यं सदावन्द्यं तीथकृल्लघुरूपकम्।
संसारभूषणं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।५६।।

उपसर्गस्य जेतारं मुनिवृन्दसुशान्तिदम्।
महाव्रतान्वितं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।५७।।

जगत्पूज्यं महागुण्यं विशुद्धकर्मकारिणम्।
मनुजामरसौभाग्यं वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।५८।।

सदाशिवं महासौख्यं महादेवसुशालिनम्।
श्रीशान्तिसागरं वन्दे भव्यभावोपसेविनम्।।५६।।

धैर्यसिन्धुं महासत्वं धीरवीरसुपात्रकम्।
सद्बुद्धिमन्त्रसंयुक्तं वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।६०।।

निरालस्यं चिदानन्दं त्रिरत्नसमलंकृतम्।
क्षमया भूषितं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।६१।।

लोकाराध्यं महारत्नं दलिताघं मुनीश्वरम्।
मन्त्रतन्त्रविदं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।६२।।

धर्मचक्रं महाबुद्धं स्थिरचित्तस्वभावकम्।
धर्मप्रभाकरं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।६३।।

सद्भिःपूज्यं महावीरं तीर्थोद्धारकमुत्तमम्।
अखण्डमण्डलाकारं वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।६४।।

मुनिसंघमहाध्यक्षं श्रमणानां प्रशंसकम्।
श्रीशान्तिसागरं वन्दे क्षमापीयूषदायकम्।।६५।।

विद्यानन्द दयानन्द निजात्मज्ञानदायिनम्।
तपसानन्दयन्तं च वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।६६।।

सौम्यसाधुं महातीर्थं चारित्रोज्ज्वलशालिनम्।
धर्मयात्रासुसंलग्नं वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।६७।।

तपोवृद्धं वयोवृद्धं वीरव्रतसुधारिणम्।
यतीनां भूषणं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।६८।।

ज्ञानमूर्तिं क्रियामूर्तिं मन्त्रमूर्तिं सुबुद्धिदम्।
वर्धमानमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।६९।।

सूरिसन्तं महासन्तं सौम्यसन्तं विनायकम्।
विशुद्धाचार्यथं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।७०।।

आर्यनिषेव्यानिःसंगं यथाजातस्वरूपिणम्।
ज्योतिरत्नमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।७१।।

तपोज्ञानद्युतिं शुभ्रं ज्ञानानन्दस्वभावकम्।
संयमैर्भूषितं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।७२।।

चिन्तामणिं महाभव्यं ध्वस्तमिथ्यात्वमूर्तिकम्।
स्वर्गप्रदमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।७३।।

सुदर्शनं सदापूज्यं निष्प्रपञ्च सुमेधसम्।
मोक्षप्रदमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।७४।।

युगद्युतिं सुमांगल्यं युगगौरवमूर्तिकम्।
वात्सल्यवारिधिं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।७५।।

कल्पवृक्षं महोदारं भव्योद्धारकशालिनम्।
अनुभूतिसमृद्धं तं वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।७६।।

पूज्यपादं कुलागारं शिवमार्गसुसाधकम्।
आगमवारिधिं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।७७।।

समदृष्टिं सुविज्ञानं दिव्यरूपं तपस्विनम्।
जाज्वल्यमानं तेजोभिर्वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।७८।।

धर्ममूर्तिं महाधीरं ध्यानमन्त्रविशारदम्।
तत्त्वानामीक्षकं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।७९।।

समं शत्रौ च मित्रे च ज्ञानवैभवशालिनम्।
धर्मवर्षापटुं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।८०।।

जैनागम सदारक्तं चित्तनैर्मल्यशालिनम्।
उन्नायकमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।८१।।

धर्माधारं दयागारमध्यात्मं मन्त्रसाधकम्।
अनासक्तमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।८२।।

स्वरवन्तं कलागारं शोभास्पदविनायकम्।
साहित्यचक्षुषं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।८३।।

ज्ञानतीर्थं सुधातीर्थं स्वात्मतीर्थं सुसाधकम्।
सुरम्यकण्ठं वन्देऽहं गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।८४।।

विश्वदं विश्वलोकानां विश्वमांगल्यशालिनम्
विश्वधर्मप्रणेतारं वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।८५।।

शान्तिप्रदं सदाशान्तं शान्तनाम्नासुशोभितम्।
सर्वपापहरं पूतं वन्दे श्रीशान्तिसागरम्।।८६।।

निराकुलं मनः स्वस्थं स्वात्मसन्तोषशालिनम्।
निःसंगं च सदा वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।८७।।

तीर्थभक्तं सदातीर्थमुत्तंगं कीर्तिशालिनम्।
शोभमानमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।८८।।

बलवन्तं सुधीमन्तं त्रयोदशचरित्रकम्।
बहुश्रुतमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।८९।।

सुलक्ष्माणं महाबोधिं मोक्षलक्ष्मीपदानुगम्।
ज्ञानाचारमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।९०।।

परीषहादिजेतारं सिद्धालयपथानुगम्।
निष्प्रकम्पमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।९१।।

तीर्थभक्तं सदापूज्यं सद्धर्मतीर्थशालिनम्।
तेजस्विनमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।९२।।

नैकभाषाकलातीर्थं सद्धर्मकेतुशालिनम्।
विशालहृदयं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।९३।।

साधुवैद्यं शुभागारं संसारार्णवपोतकम्।
चारित्ररक्षकं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम्।।९४।।

श्रुतिमन्तं महाप्राज्ञं दीक्षाशिक्षाप्रदायकम् ।
ऋषीणां नायकं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम् । ।६५ । ।

प्रतिभाभासितं देवं सतामर्चितमूर्तिकम् ।
ज्ञानदिवाकरं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम् । ।६६ । ।

मुनिनाथं यतीश्रेष्ठं मुक्तिमार्गस्य साधकम् ।
कल्याणसागरं वन्दे गुरुं श्री शान्तिसागरम् । ।६७ । ।

शान्तिमार्गं सदाशान्तं श्रेयोमार्गस्य नायकम् ।
देवपूज्यं च निर्ग्रन्थं वन्दे श्रीशान्तिसागरम् । ।६८ । ।

शान्तिदूतं व्रतोपेतं सर्वकल्याणमौषधिम् ।
विधूतकल्मषं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम् । ।६९ । ।

कर्मनिष्ठं कलाकेन्द्र कर्तव्याश्रितमूर्तिकम् ।
पूज्यपादमहं वन्दे गुरुं श्रीशान्तिसागरम् । ।१०० । ।

स्वस्ति श्रीअर्हद्बलिभ्यः

नीतिसारसमुच्चयः

मंगलं विधेयप्रतिज्ञा च

प्रणम्य त्रिजगन्नाथा-निन्द्रनन्दितसम्पदः।
अनगारान् प्रवक्ष्यामि, नीतिसारसमुच्चयम्।।१।।

भरते पञ्चमे काले, नानासंघसमाकुलम्।
वीरस्य शासनं जातं, विचित्राःकालशक्तयः।।२।।

स्वर्गंगते विक्रमार्के, भद्रवाहौ च योगिनि।
प्रजाःस्वच्छन्दाचारिण्यो, वभूवुः पापमोहिताः।।३।।

यतीनां ब्रह्मनिष्ठानां, परमार्थविदा मपि।
स्वपराध्यवसायत्व-माविरासीदतिक्रमम्।।४।।

तदासर्वोपकाराय, जातिसंकरभीरुभिः।
महर्धिकैः परञ्चक्रे ग्रामाद्यभिधया कुलम्।।५।।

तदैव यातिराजोऽपि, सर्वनैमित्तिकाग्रणी।
अर्हद्बलि गुरुश्चक्रे, संघसंघट्टनं परम्।।६।।

सिंहसंघो नन्दिसंघः, सेनसंघो महाप्रभः।
देवसंघ इतिस्पष्टं, स्थानस्थिति विशेषतः।।७।।

गणगच्छादयस्तेभ्यः, जातास्वपरसौख्यदा।
न तत्र भेदःकोप्यस्ति, प्रव्रज्यादिषु कर्मसु।।८।।

कियत्यपि ततोऽतीते, कालेश्वेताम्बरोऽभवत्।
द्राविडो यापनीयश्च, काष्टासंघश्च मानतः।।९।।

गोपुच्छिका श्वेतवासा, द्राविडो यापनीयकः।
गोपिच्छश्चेति पंचैते, जैनाभासाःप्रकीर्तिताः।।१०।।

स्वस्वमत्या ऽनुसारेण, सिद्धान्तं व्यभिचारिणा।
विरचय्य जिनेन्द्रस्य, मार्गं निर्भेदयन्ति ये।।११।।

चतुःसंघे नरोयस्तु, कुरुते भेदभावनाम्।
सःसम्यग्दर्शनातीतः, संसारे संचरत्यरम्।।१२।।

नात्र प्रतिक्रमेभेदो, न प्रायश्चित कर्मणि।
नाचारवाचनायुक्त, वाचनैस्तु विशेषतः।।१३।।

चतुःसंघसंहिताया?, जैनबिम्बप्रतिष्ठितम्।
नमेन्नापरसंघस्य, यतो न्यासविपर्ययः।।१४।।

पंचाचाररतो नित्यं, मूलाचारवि दग्रणीः।
चतुर्वर्ण्यस्य संघस्य, यःस आचार्य इष्यते।।१५।।

अनेक नयसंकीर्ण, शास्त्रार्थ व्याकृतिक्षमः।
पञ्चाचाररतोज्ञेय, उपाध्यायः समाहितः।।१६।।

सर्वद्वन्द्वविनिर्मुक्तः, व्याख्यानादिषु कर्मसु।
विरक्तो मौनवान् ध्यानी, साधुरित्यभिधीयते।।१७।।

सर्वशास्त्रकलाभिज्ञो, नानागच्छाभिवर्द्धकः।
महामनाःप्रभाभावी, भट्टारक इतीष्यते।।१८।।

तत्त्वार्थसूत्रं व्याख्याता, स्वामीति परिपठ्यते।
अर्थक्रियाकलापस्य, कर्त्ता वा मुनिसत्तमः।।१६।।

नूतनस्याग्रशिष्यस्य, क्षमाध्ययनशालिनः।
मुखशुद्ध्यादिकश्चैव, यावच्च गुरुणोच्यते।।२०।।

गृहस्थस्यापि शुद्धस्य, जिनवेदोपजीविनः।
गृहस्थाचार्यताज्ञेया, सचपूज्योऽखिलैः जनैः।।२१।।

तदुक्तौर्धर्मशास्त्रैःस्यात्, लोकानामिष्ट संग्रहः।
प्रतिष्ठादिषुकार्येषु, नूनंतस्याधिकारिता।।२२।।

साकंविसंघैर्नयते, भुक्तौपंक्तिर्नतानतिः।
परस्परं चतुः संघैः, पंक्तिभेदो न विद्यते।।२३।।

श्रावकं शिष्यकञ्चापि, नगृह्णीयात्समाहितः।
विसंघशिष्य भक्तानां, गृहीतिर्नैवविद्यते।।२४।।

परीक्ष्यदीक्षा दातव्या, मिथ्यादृष्टेरथान्यथा।
दत्तादर्शन हास्याय, स्वस्यधाताय च क्रमात्।।२५।।

श्रमणः श्रावकादीनां, निवासे निशिनशयेत्।
चित्तेकृतापि योषापच्चित्तविभ्रमकारिणी।।२६।।

नार्यिकाभिः समंमार्गे, गन्तव्यं यतिसत्तमैः।
तत्संगमात् पुराभूवन्, यतयो दुःखभाजनम्।।२७।।

एकयायोषिता सार्द्धं, स्वयमेकाकिना सता।
नगोष्ठी क्रियते नैव, भुज्यते नाऽऽस्यतेऽपिवा।।२८।।

यत्रयत्रेन्द्रिय क्षोभो, जायते व्रतिनः परम्।
तं तं देशं परित्यज्य, चारित्रंरक्षयेन्मुनिः।।२९।।

आवश्यक मतिक्रम्य, न कुर्यादपरां क्रियाम्।
गीतवाद्यादिकं नैव, शृणुयाद्रागचेतसा।।३०।।

येन येनहि शास्त्रेण, यया वा विद्यया मुनेः।
सम्यक्त्वसंयमादीनां, हानिस्तत्सेवनां त्यजेत्।।३१।।

आर्यिकाणां गृहस्थानां, शिष्याणामल्पमेधसाम्।
न वाचनीयं पुरतः, सिद्धान्ताचार पुस्तकम्।।३२।।

नाचारवाचनायोग्याः, तथास्युःश्रमणाः पराः।
वन्दनांप्रतिनैव स्याद्वन्दना च कदाचन।।३३।।

महत्तराऽप्यार्यिकावै, वन्दनेभक्तिभाविता।
अयदीक्षित मप्याशु, यतिनं शान्तमानसम्।।३४।।

कर्मक्षयसमाध्यादिः श्रमणानां नतात्मनाम्।
धर्मबृद्धिर्गृहस्थस्य ब्रतिनः शुद्धचेतसः।।३५।।

मिथ्यादृष्टेः सुवर्णस्य, धर्मवृद्धिरुदाहृता।
किरातान् म्लेच्छकान् धर्म, लाभेन परितोषयेत्।।३६।।

सम्यग्दर्शन शुद्धस्य, मातङ्गस्य वदेन्मुनिः।
पापक्षय इतिस्पष्टं, नतस्यास्त्यपरे विधिः।।३७।।

गायकस्य तलारस्य, नीचकर्मोपजीविनः।
मालिकस्य विलिङ्गस्य, वेश्याया स्तैलिकस्य च।।३८।।

दीनस्यसूतिकायाश्च, छिंपकस्य विशेषतः।
मद्यविक्रियिणोमद्य, पानसंसर्गिणश्च न।।३६।।

क्रियतेभोजनं गेहे, यतिनाभोक्तुमिच्छुना।
एवमादिकमप्यन्य च्चिन्तनीयं स्वचेतसा।।४०।।

मध्याह्ने दुःखितान्दीनान्, भोजनादिभि रादरात्।
अनुगृह्नन्यतिःसंघः, पूजनीयोभवेत्सदा।।४१।।

बरं स्वहस्तेन कृतः, पाको नान्यत्र दुर्दशाम्।
मन्दिरे भोजनं यस्मात्, सर्वसावद्यसङ्गमूः।।४२।।

पिच्छेन मृदुनाऽऽलिख्य, वपुर्घर्माद्विशेन्मुनिः।
छायाँतथैव घर्मश्च, भूमिभेदेऽपिचान्वहम्।।४३।।

गृहरोधे पशूनाञ्च, वन्धनेन्न प्रशोषणे।
सावद्यकर्मण्यन्यस्मिन्, वर्तमाने च मन्दिरे।।४४।।

नविशेद्भोजनं कर्तुं, प्रविश्य च तदङ्गणे।
मुहुर्नवीक्षयेद्दातृन् सप्तोच्छासंसमंततः।।४५।।

व्याध्यार्तं योगिनंवीक्ष्य, नोपेक्षत कदाचन।
स्वकीयं परकीयञ्च, विदर्शनमथापि च।।४६।।

ज्ञानचारित्र हीनोऽपि, जैनः पात्रायतेतराम्।
ज्ञानचारित्र युक्तोऽपि, नमिथ्यादृक्कदाचन।।४७।।

तस्मैदानं प्रदातव्य, यः सन्मार्गे प्रवर्तते।
पाखण्डिभ्यो ददद्दानम्, दातामिथ्यात्ववर्धकः।।४८।।

जीर्णंजिनगृहंबिम्बं, पुस्तकञ्च सुदर्शनम्।
उद्धार्यस्थापनंपूर्व, पुण्यतो लभ्यमुच्यते।।४६।।

शयानं व्यग्र मनसं, मलाक्तं निन्द्यकर्मकम्।
नवन्देत यतिं साधुर्धर्मध्यानपरं नमेत्।।५०।।

निर्ग्रन्थानां नमोऽस्तु स्यादार्यिकाणाञ्चवन्दना।
श्रावकस्योत्तमस्योच्चैरिच्छाकारोऽभिधीयते।।५१।।

भोजने गमनेऽन्यत्र, कार्येवायत्र कुत्रचित्।
पूर्वाचार्यमतंनूनं, प्रमाणं जिनशासने।।५२।।

पूर्वाचार्यमतिक्रम्य, यः कुर्यात् किञ्चिदप्यसौ।
मिथ्यादृष्टिरिति ज्ञेयो, नवन्द्यश्चमहात्मभिः।।५३।।

एकाकिना नगन्तव्यं, यतिना सद्वितीयकः।
विहरन् धर्ममाप्नोति, नैकाकी तु कदाचनः।।५४।।

आत्मना पंचमः श्रेयान्, चतुर्भिस्त्रिभिरेवच।
समंगच्छन्नयतिर्गच्छेद्, गमनीयम् नचापरः।।५५।।

मकारत्रितयातीतम्, मणिमन्त्रादि साधनम्।
कुर्यात्तेन समंसिद्ध, मसिद्ध वदुदाहृतम्।।५६।।

राजोपासक साधूनां, मरणे ग्रहणादिके।
पर्वण्यपि नवाच्यः स्यात्, सिद्धान्तो मुनिपुंगवैः।।५७।।

नैर्ग्रन्थ्यंरक्षयेद्धीमान्, शीलवस्त्रसमावृत्तः।
न वस्त्रं ग्रह्यतेकापि, प्राणत्यागेऽपि योगिना।।५८।।

भूपतिः कोदृपालो वा, मुनिं किंकर्तुमीश्वरः।
यस्य चित्तं सदा शुद्धं, बुद्धात्मव्यवसायकम्।।५६।।

अद्यं वाशतकेऽतीते, वर्षाणाञ्चापि गच्छतु।
वपुरेतन्नपन्थानं, त्यजन्ति सुधियो जनाः।।६०।।

वसतौ यत्र पञ्चाक्षो, मृतरुधिरमेवच।
पतितं तत्र नो कल्प्यं, प्रतिक्रमण मञ्जसा।।६१।।

सिद्धान्त वाचने नैव, पट्टे तिष्ठे द्दिगम्बरः।
चतुरंगुलमानस्तु, शस्यते वन्दनास्वपि।।६२।।

भूशुद्ध्यादि समायुक्ते, क्षेत्रे सूत्रादिवाचनाम्।
कुर्वन्यति परां काष्ठां, मरणे लभते तराम्।।६३।।

सूत्रपाठं प्रदोषादि, बर्ज्यंकुर्यात्समाहितः।
अन्यथा न समाप्नोति, फलं चारु पठन्नपि।।६४।।

सिद्धान्ताचारपुस्तानि, नवाच्यानि विना विधिम्।
प्रायश्चितञ्च दातव्यं, यथा शास्त्रं परीक्षितम्।।६५।।

गणाधीशान्नमेद्धीमान्, गुरुभक्त्याविशेषतः।
वन्दनांप्रति दद्याच्च, वन्दनांदीक्षितेष्वपि।।६६।।

श्रीभद्रबाहुः श्रीचन्द्रो, जिनचन्द्रो महामतिः।
गृद्धपिच्छगुरुः श्रीमान्, लोहाचार्यो जितेन्द्रियः।।६७।।

एलाचार्यः पूज्यपादः सिंहनन्दी महाकविः।
जिनसेनो वीरसेनो, गुणनन्दी महातपाः।।६८।।

समन्तभद्रः श्रीकुम्भः, शिवकोटिः शिवङ्करः।
शिवायनो विष्णु सेनः, गुणभद्रो गुणाधिकः।।६९।।

अकलङ्को महाप्राज्ञः, सोमदेवो विदाम्बरः।
प्रभाचन्द्रो नेमिचन्द्रः इत्यादि मुनि सत्तमः।।७०।।

यच्छास्त्रं रचितं नूनं, तदेवादेयमन्यकैः।
विसंधैरचितं नैव, प्रमाणंसाध्वपि स्फुटम्।।७१।।

पूर्वाचार्य बचः श्रीमत्, सर्वज्ञवचनोपमम्।
तज्जानन्ननगारोऽत्र, पूज्यः स्यादखिलैर्जनैः।।७२।।

विसंघैः सममध्यात्म, प्रायश्चित्तविधिक्रियाः।
सिद्धान्ताचार भावश्च, नाऽऽलोच्य यतिना सदा।।७३।।

द्रव्यलिङ्गसमास्थाय, भावलिङ्गी भवेद्यतिः।
विना तेन न पूज्यः स्यान्नानाव्रतधरोऽपिसन्।।७४।।

अचेलत्वं शिरः कूर्च, लोचोऽधः केशधारणम्।
निराभरणतोच्छिऽन्न, देहतापिच्छधारणम्।।७५।।

द्रव्यलिङ्गमदोज्ञेयं, भावलिङ्गस्यकारणम्।
तदध्यात्मकृतं स्पष्टं, न नेत्रविषयंयतः।।७६।।

मुद्रासर्वत्रमान्यः, स्यान्निर्मुद्रो नैवमन्यते।
राजमुद्राधरोत्यन्त, हीनवच्छास्त्रनिर्णय।।७७।।

स्थावरं देहभेदेन, व्रतभेदेन लिङ्गिनम्।
उभयोर्भिन्न लिङ्गत्वा, न्नार्चयेन्नाभिवम्दयेत्।।७८।।

येन येन हि कृत्येन, धर्मवृद्धिः प्रजायते।
तत्तत्कुर्वन्मुनिर्मान्यो, भवेदत्र न संशयः।।७९।।

आगते स्वागतं कुर्याद्, गच्छन्तं न निवारयेत्।
तिष्ठन्तं कारयेद्भिक्षा, मेषधर्मः सनातनः।।८०।।

पिच्छपुस्तक पट्टादीन, याचयित्वा परस्परम्।
ग्रहणं न विना याञ्चा, मेषधर्मः सनातनः।।८१।।

गुरुन् विलोक्य सहसा, समुत्थानं तथा नतिः।
अनुकूल प्रवृत्तिश्च, सर्वधर्मशिरोमणिः।।८२।।

गुरुणादीयमानानि, वस्तूनि बहुभावतः।
पाणिद्वयेन संगृह्य, पुनरप्यभिवन्दयेत्।।८३।।

दीक्षादाताऽध्यापयिता, कृताचार्यादि वाचनः।
दोषच्छेदी कृतान्तार्थो, गुरुरित्यभिधीयते।।८४।।

यो यो गुणाधिकोमूल, गुणगच्छाद्यलंकृतः।
सर्वोप्युच्यते जैनैः गुरुरित्युज्झितस्मये।।८५।।

क्वचित्कालानुसारेण, सूरिर्द्रव्य मुपाहरेत्।
संघपुस्तक बृद्ध्यर्थं, मयाचित्तमथाल्पकम्।।८६।।

पार्श्वस्थ वृतितांनैव, लंबेताऽऽलंबनोज्झितः।
न दैन्यं दर्शयेल्लोके, प्राणत्यागेपि चात्मना।।८७।।

क्षुत्कार्ष्यं मलिनाङ्गत्वं, यतेर्भूषण मञ्जसा।
न तेन लज्जते योगी, पवित्रतरमानसः।।८८।।

मनःशुद्धं भवेद्यस्य, सः शुद्ध इति भाष्यते।
विनातेन कृतस्नानोऽप्यंगीनैवविशुद्ध्यति।।८९।।

कार्याकार्यविचारज्ञः सर्वभाषा विशारदः।
सर्वशास्त्रार्थ वित्साधुः, धर्मस्यप्रतिपादकः।।९०।।

सगुणो निर्गुणोवापि, श्रावकोमान्यतेसदा।
नावज्ञाक्रियतेतस्य, तन्मूलाधर्म वर्तना।।९१।।

विसंघभक्ता भक्त्याचेद्दानं यच्छति योगिने।
भाण्डभाजनशुद्धि श्चेन्ननिषेधोऽस्तिकश्चनः।।९२।।

भाण्डभाजनशुद्धोऽपि, पाखण्डी योविनिन्दिकः।
यतेस्तत्र न भोक्तव्यं, तदन्नं पापमुच्यते।।९३।।

न योषितः स्पृशेद्योगी, काष्टचित्रकृताऽपि च।
किं पुनः स्पर्शनं तासां, यासां स्मरण मापदे।।९४।।

पञ्चचेलविनिर्मुक्ता, ग्रन्थमुक्ता मता सताम्।
न ते सुवर्ण रूप्यादिं, स्पृशन्तिगुरुसंयमाः।।९५।।

मुखशुद्धिं न कुर्वन्ति, नोपविश्य च भोजनम्।
संघेन सह कुर्वन्ति, नोपेक्षन्ते च किञ्चन।।६६।।

चित्रस्थामपि संस्पृश्य, योषितं नैव भुज्यते।
तस्मिन्नहनि भुञ्जञ्चेत्, षष्टंस्यात्पापनाशनम्।।६७।।

पाखण्डा यत्र संजाता, जिह्वोपस्थादिदण्डिताः।
ते सर्वे पापिनस्तस्माद, ब्रह्मचर्यंधरेद्यतिः।।६८।।

संघापकारिणंमूढं संघवाह्यं प्रकल्पयेत्।
अहिदष्टांगुलिवासः सर्वनाशाय जायते।।६६।।

सम्यग्दर्शन शुद्धानां, तपसाऽल्पेन जायते।
कर्मक्षयस्ततोनूनं, तदेव प्रतिपालयेत्।।१००।।

सम्यक्त्वमूलं सर्वं स्याद् ज्ञानचारित्रमेव वा।
विनातेन परे नैव, कुर्यात्तं मोक्षसाधनम्।।१०१।।

प्रतिक्रमादिवेलायां, यदि प्राप्येत तत्वतः।
चतुर्दश्यष्टमी वावै, तदासैव प्रशस्यते।।१०२।।

यद्यद्बहुतरं तत्तत्सर्वत्र बलवद्यथा।
तथा तद्बत्तिथिर्मुख्या, बहूनामपि संगमे।।१०३।।

अधिकातिथिरादिष्टा, धर्मकार्येषु सत्तमा।
आदिमध्यान्तभेदेन, शक्तितश्चापि हीयते।।१०४।।

जिनजन्मादिकाः सर्वाः, क्रिया मासतिथिप्रमाः।
नक्षत्रयोग करणं तु, न प्रधानं यतश्चलम्।।१०५।।

घटी चतुष्टयं रात्रेः कुर्यात्पूर्वाह्न वन्दनाम्।
मध्याह्नवन्दना कालो नाडीद्वय मुदाहृतम्।।१०६।।

अपराह्नेतु नाडीनां चतुष्टयः समाहितः।
नक्षत्र दर्शनान्मुञ्चेत् सामायिक परिग्रहम्।।१०७।।

याक्रिया क्रियतेयत्र, तिथौ सा तत्र सम्मता।
अनागते ह्यतीतेच, तस्मिन्नाडी द्वयं मतम्।।१०८।।

सिद्धान्ते वाच्यमाने स्यात्, यदि मेघस्य गर्जनम्।
विद्युतो दर्शनञ्चापि तदाऽनध्ययनं मतम्।।१०९।।

भानोरुदयतो नाडी, षटकं स्वाध्यायगोचरः।
ततो मुनिः प्रवर्तेत, योग्यकृत्येषु नित्यशः।।११०।।

मनागुद्देशितो मार्गो, नित्यनैमित्तिकात्मसु।
क्रियासु विस्तरो ज्ञेयः, पूर्वाचार्यमतात्ततः।।१११।।

तीर्थेशां सर्वभावानां, मतं केनानुबुद्ध्यते।
तन्मन्वाना नरोयान्ति, शक्रनन्दितसम्पदः।।११२।।

माद्यत्प्रत्यर्थिवादिद्विरदपटुघटा, टोपकोपापनोदा।
वाणीयस्याऽभिरामा मृगपतिपदवींगाहतेदेवमान्या।।

सःश्रीमान्इन्द्रनन्दीजगति विजयतां, भूरिभावानुभावी।
दैवज्ञः कुन्दकुन्द प्रभुपदविनयः, स्वागमाऽचार चञ्चुः।।११३।।

नीति सुधा बिन्दुः

मंगलाचरणम्

दृष्ट्वा जनान् लोक विकर्मबद्धान्, व्यस्तानतो ज्ञान विवेकमन्दान्।
नीतिं सुधा बिन्दु-ममुं ब्रवीमि, लोकाः क्षणेनानन्दं लभन्ताम्।।१।।

णमोकार मंत्र की विशेषता

कलयतीह नमस्कृतिपञ्चकं, प्रतिदिनं य उपासक आहितः।
स्पृशति पापममुं न कदाचन्, प्रथममङ्गलभाक् च भवेत्सदा।।२।।

पंच परमेष्ठी परिचय

नमत धर्मधनं प्रियमर्हतं, नमत सिद्धगणं परमङ्गलम्।
नमत सर्वाचार्यचयं सदा, नमत सर्वगुरुनथ सज्जनान्।।३।।

चार मंगल

नमत मंङ्गलपद्धतिमार्हतीं, नमत सिद्धगणं शुभमंगलम्।
नमत साधुसमागममंगलं, नमत केवलबोधसुमंगलम्।।४।।

चार उत्तम

जयति चाऽर्हतपादसरोरूहं, जयति सिद्धगणोत्तमसज्जनः।
जयति साधुसभा शिवकल्पना, जयति धर्मसुबोधपरो जनः।।५।।

चार शरण

शरणमस्मिगतः प्रियमर्हतं, सुखदसिद्धगणः शरणं मम।
भवतु साधुजनः शरणं च मे, भवतु केवलिभावपदं मम।।६।।

सच्चा देव

अष्टादशोक्तैर्दोषैर्विहीनः, मोक्षोपदेष्टा हित वीतरागः।
सर्वज्ञ सम्भ्रान्त विशुद्ध देही, देवो जिनेन्द्रः परिभूस्त्रिरत्नः।।७।।

सच्चा देव

विगतघातिचतुष्टय सज्ज्वरो, बहु विशीर्ण पुराणग कल्मषः।
हितविधानकरः सततं च यो, विगतरागमलः स तु देवभाक्।।८।।

सच्चा शास्त्र

पूर्वापर व्याघाताद् विमुक्ता, युक्त्या कुतर्कैर्नहि खण्डनीया।
तीर्थंकराप्तप्रतिपादिता वाक्, शास्त्रं हि सम्यक् परिभाषणीयम्।।६।।

सच्चा गुरु

परिग्रहारम्भ विहीनकालः, पंचेन्द्रियाप्तै र्विषयैर्विरक्तः।
ध्यानी तपः स्वाध्ययन प्रसक्तः, पूज्यो गुरु सः भुवने प्रशस्त।।१०।।

सच्चा धर्म

जीवे दयालुः परिमोक्ष हेतुः, आचार मार्गो हिंसा प्रहीणः।
सम्यक् स धर्मो जिन देव सूक्तः, सेव्यस्तु नित्यं परिमोक्ष कामैः।।११।।

साधूपदेश

सूर्योविधुर्मेघधरानभस्थाः, भूम्यां नदी पर्वत सिन्धु वृक्षाः।
याञ्चां विना ते वितरन्ति लाभान्, साधुर्यथा सर्व हितोपदेशान्।।१२।।

सज्जन कौन?

नहि कदापि विवादपरो भवेन, न च वदेत्कटुवाक्यपदावलीम्।
करुणया कलितं च मनो यदा, भवति साधुरसौ मनुजस्तदा।।१३।।

शोभायमान कौन?

निशि विधुर्द्युतिभिः किल शोभते, दिनमणिर्दिवसे खलु शोभते।
कुलगतः पुरुषो ननु शोभते, विनय वृत्तिधनो बहुसंयमी।।१४।।

मन, वचन एवं काय शुद्धि का फल

कायमनोवाक् तु यदा हि शुद्धम्, कस्यापि दुःखं न भवेत् कदाचित्।
कायं मनोवाक् च यदाह्यशुद्धम्, एकैकमप्येति दुःखाय नित्यम्।।१५।।

त्रियोग शुद्धि

जिनेन्द्र भक्त्या शुद्ध्येन्नु चित्तम्, सत्येनवाणी विनयेन देहः।
यात्रा सुतीर्थे पात्राय दानं, तीर्थेन पादौ दानेन पाणिः।।१६।।

मधुरता का नाम मनुष्य

विगत कल्मष मानसमस्य चे, दथ च कोमल वाङ्मधुराक्षरा।
वपुषि चञ्चलता यदि नास्ति वा, स तु भवेदिह कोऽपिव गुणाकरः।।१७।।

पुरुषार्थ मोह से मुक्त कराता

समाश्रयन्ते नहि भाग्यवादं, क्षिपन्ति कालं न च मोहमुक्ताः।
मुखेन यद् संब्रुवते तदेव, सत्यं विधातुं विहितोद्यमाश्च।।१८।।

वीर कौन?

कदाऽपि नैवोद्विजते विपत्तौ, सुपर्वतान् खण्डयितुं समर्थः।
सुखेन सप्ताब्धि-विलंघने प्रभुः, स एव लोके परमार्थ वीरः।।१६।।

याचना

संप्रत्यहं हे भगवन्! प्रयाचे, नेच्छामि मानं जगदादरं च।
राज्यासनं नैव कदापि याचे, नेच्छामि सिद्धिं खलु साधनायाः।।२०।।

प्रेममयी भावना

स्वर्णं धनं चापि ममानभीष्टं, न चाधिपत्यं धनवैभवेषु।
याचे प्रभो! केवल जीवमैत्री-मज्जीवनं प्रेममयं सदास्तु।।२१।।

सदाचार

सीमा न लंघ्या खलु संयमस्य, अन्धो न भूत्त्वा गमनं कुरुध्वम्।
सौख्यौषधीभूतसुसंयमस्य, कार्यं सदैवाचरणं हि लोके।।२२।।

भगवत्प्रेरणा

समीप एवास्मि सदा तवाहम, न दृष्टवान् त्त्वं किमहं करोमि।
कस्तूरिका नाभिगता मृगस्य, मूढ़ो गवेष्णुः किमहं करोमि।।२३।।

धैर्य धारण करो

त्वया तु दोषा मयि संप्रदत्ता, न दत्तमेतन्न च तत् प्रदत्तम्।
मनुष्यकायोऽनुपमः प्रदत्तः, तथाप्यधीरोऽसि करोम्यहं किम्।।२४।।

प्रकृति और सात्विकता

फलानि दुग्धं विविधान्नपानम्, मया तथाऽदायि सुभोजनार्थं।
विवेक हां! मद्यसुरां निषेव्य, रूजा परीतः किमहं करोमि।।२५।।

बुद्धि से सिद्धि

किमस्ति लोके खलु साध्यसाधुवा, परीक्षितुं तुभ्यमदायि बुद्धिः।
विहाय धर्मं विषयाभिभूतः, विवेकशून्यः किमहं करोमि।।२६।।

बुद्धि हीनता से संसार भ्रमण

जगत् सुरम्यं सरसैः पदार्थैः, अकारिपूर्ण ननु ते हितार्थं।
त्वया कुबुध्या नरकातिनिघ्नं, कृतं स्वयं चेत् किमहं करोमि।।२७।।

मानवोपदेश

पराजितस्त्वं जगतां कुचक्रैः, जयाय शक्तिः समुपार्जनीया।
दुर्गे प्रणष्टे, सैन्यं प्रलीनम्, यतस्व संरक्षयितुं स्वमन्तः।।२८।।

मोक्ष पथ पर पाथेय

रुक्षस्तनुर्नामित कुब्जपृष्ठ, प्रयाणसज्जां त्वरितं कुरुष्व।
मृत्योश्च भेरी सुनिनादितास्ति, यात्रा सुचिन्तां त्वरितं करुध्वम्।।२९।।

मोहमहामद पीयो अनादि

निजत्त्वभावं मनुजे परस्मिन्, जानासि नैवात्मविशुद्धरूपम्।
इयं त्रुटिस्ते महती यदद्य, निजस्वरूपाधिगमो न जातः।।३०।।

आत्मज्ञान, परमात्मज्ञान

निजात्मरूपाधिगमं विना हि, परात्मरूपाधिगतिर्नलभ्या।
सम्प्राप्य जीवः परमात्मरूपम्, कदापि नागच्छति जीवलोके।।३१।।

जीवन क्या है?

सप्राणतैवास्ति न जीवनं हि, श्वासादि संघातमयं न चैतत्।
प्राच्या दिशोय सिन्दूररूपं, तद्जीवनं सूर्यमिदं प्रसूते।।३२।।

काल की विचित्रता

अहानि चत्वारि गतैव चन्द्रिका, नैशं तमस्तत् पुनरेव सिद्धम्।
शरणं न मित्रं न सहायकः स्यात्, मृत्यौ जनो याति तु रिक्तहस्तः।।३३।।

वाक् शुद्धि

प्राप्ते वसन्ते मधुरः पिकाखः, कालोचितं तत्वचनं सुरम्यं।
अकालप्रोक्तं वचनं न भाति, सुधासुवर्षापि मुधा ह्यकाले।।३४।।

काल बड़ा बलवान

कालो महानबलीदृष्टः, सर्वं नतयते ह्यसौ।
पाण्डवा अपि याचन्ते, भिक्षां गत्वा गृहे गृहे।।३५।।

समयानुरूप कार्य

वृक्षः समूलं शुष्को यदा स्यात्, संभाव्यते तत्र हरीतिमा किम्?
शुष्का कृषिश्चेन्नीरं विनैव, वर्षा वराकी न करोति किंचित्।।३६।।

परिणाम से परमेश्वर की प्राप्ति

भावो भावं इति ब्रूते, प्रायः साधारणो जनः।
यो भाव ह्यभिजानीते, भवगद्रूपं स आप्नुयात्।।३७।।

मोक्ष के हेतु

श्रद्धां बिना वृथा ज्ञानं, चारित्रं च तथैव तु।
श्रद्धा ज्ञानं चरित्रं च, त्रयस्ते मोक्ष हेतवः।।३८।।

भोगवादि समाज की क्रूरता

अद्यावधिप्रवृत्तैर्नरमेधयागै, र्विहिंसिताः कोटिशतं मनुष्याः।
नवीनयुद्धस्य च भूमिकायाः, सम्पादनं राजकुलान्यकुर्वन्।।३९।।

पाप से पतन

नित्यं हि रक्तस्य च होलिकाभूत, गृहाणि दग्धानि पुराणि चैव।
नित्यं समुच्चीय शवानि नृणाम्, काकादिहिंस्त्राः सुनिमन्त्रिता अधैः।।४०।।

निर्माण नहीं विध्वंस

अस्त्राणि नव्यानि च कारितानि, ध्वंसः सदामंत्रित एव भूयः।
विमर्दिता मानवसभ्यता हा!, विनाशिता संस्कृतयो नृशंसैः।।४१।।

लोभ से दासता

बुभुक्षिता निर्वसना दरिद्रा, दासीकृता दर्शितसौख्यलोभाः।
निगृह्य भोज्यं वसनं बलेन, सम्पाठितास्ते त्यागस्य पाठम्।।४२।।

सुनो करुण क्रन्दन

नारी तु जाता नरवर्गसम्पत्, क्रीतं च मर्त्यैर्युवति स्वरूपम्।
तत्क्रन्दनं तैर्दमितं-उपेक्ष्य, नष्टं तथा हा खलु शीलरत्नम्।।४३।।

पैसे परमात्म नहीं

न्यायस्य घातो विहितः तथा च, मर्त्यादपि श्वाधिकमानितोऽभूत।
मर्त्य च नित्यं पशुवत् विधाय, प्रणोदितः स्वेष्टपथि प्रणिघ्नैः।।४४।।

वचन से व्यक्ति का परिचय

द्विष्टः प्रियो वा खलु भाषणेन, मौने गते स्यात् समता परेषु।
निरर्थकं वादविवादवृत्तं, कार्यं कदाचित् विदुषा न चैव।।४५।।

परोपकार ही धर्म

सन्तर्पितः स्वल्पजलेन वृक्षः, सदा जनेभ्यः सुफलं ददाति।
तथैव निर्ग्रन्थवराः जनानां, स्वल्पोपकारं नहि विसमरन्ति।।४६।।

प्रिय वचन, परमौषधि

कटुक्वणं भाति न दुर्दरस्य, श्रोतुं न कश्चित् कर्णौ ददाति।
ततो जनैः सुप्रियमेव वाच्यं, सदा समेषां हितसाधनं स्यात्।।४७।।

निर्ग्रन्थ साधू का चरित्र

लोकत्रये प्राकृतिका पदार्था, परोपकारे निरता सदैव।
तथैव निर्ग्रन्थ मुनिः मुदैव, परोपकारं विदधाति नित्यम्।।४८।।

परोपकारमय जीवन ही साधु

वृक्षो यथा पुष्प फलानि दत्ते, प्रकाशते चापि रविर्नभस्थः।
नद्यो हितायैव वहन्ति नीरं, परोपकाराय रतश्च साधुः।।४६।।

साधु और परोपकार

वृक्षाः न खादन्ति फलं स्वकीयं, पिबन्ति नद्यो न जलं कदापि।
लब्ध्वापि कष्टं हि तथैव साधु, परोपकारे निरतः सदैव।।५०।।

पवित्र चरित्रता ही साधु

जयतु साधुचरित्रपवित्रता, भुवि लसन्तु गुणा विदुषां सदा।
भवतु सद्गुणशिष्यपरम्परा, विनयशील विराजितविक्रमा।।५१।।

सूक्ति रत्न

आत्माऽनुभूतेर्नवनीतरूपा, सूक्तिः कवीनां क्षीराब्धिमन्थः।
संसिद्धरत्नेषु नवावतारः, कौमार्गवृत्तेः सन्मार्ग दर्शः।।५२।।

सूक्ति ही संजीवनी

चिन्ता प्रदाहे मधुनो विलोपो, नैराश्यदौर्बल्य रसायनं च।
सूक्तिस्तुनीतिः मनसो विकासे, स्वल्पापि संजीवनमौषधं स्यात्।।५३।।

सज्जन संगति

बलं भवति दुग्धेन, शास्त्राभ्यासेन धीः खलु।
यशः सतां च संगेन, तपः इन्द्रियनिग्रहात्।।५४।।

बुद्धिमान कौन?

लक्ष्मीः परोपकाराय, विद्या चात्मविवेकदा।
शक्तिस्तु धर्मरक्षायै, यस्य धीमान् स उच्यते।।५५।।

स्वभाव से विद्वान्

पुण्यका पुण्यमर्जन्ति, पातकं तु खलाः किल।
बुधाः सत्संगमर्जन्ति, स्वभावस्तत्र कारणम्।।५६।।

सुख का मूल स्वास्थ्य

सूर्योदये समुत्थाय, भ्रमणं यो कुरुते नरः।
आयुर्वित्तं च स्वास्थ्यं च, लभते नात्र संशयः।।५७।।

प्रातः भ्रमण सुखकर

प्रातः प्रभ्रमणं पथ्यं, वाते मन्द सुगन्धिते।
येन प्राप्यते बुद्धि तु, तुष्टिस्पुष्टिश्च मानसी।।५८।।

दीर्घजीवी कौन?

प्रातः भ्रमणशीलाः ये, पूतैर्वात निषेवणैः।
भवन्ति देवतुल्यास्ते, निरोगा दीर्घजीविनः।।५९।।

सज्जन का समय भजन में

कीर्तनेन उषाकाले, पुण्यमर्जन्ति साधवः।
शयने दीर्घसूत्री च, कालं यापयते वृथा।।६०।।

अभागा कौन?

आगमनादिह साधोः, यस्य न मोदो भवेच्चित्ते।
नितरां भाग्यविहीनः पशुरपि, तस्माद् भवेदिह श्रेष्ठः।।६१।।

उपदेश से कर्मोपशमन

व्याधिकरे संसारे, दुःखैस्तप्ता समन्ततो लोकाः।
साधुवचोवरवृष्ट्या, दुःखाग्नेः शमनमादिष्टम्।।६२।।

वन्दनीय कौन?

शुद्धे मनसि जनानां, वचनं शुद्धं ततः क्रिया शुद्धा।
यस्य त्रिकं हि विशुद्धं, साधुरसौ सर्वदा वन्द्य।।६३।।

मोह क्षय मोक्ष

मोहाभिभूत जीवो, नैकविधं दुःखमनुभवति जगत्याम्।
दुःखनिराकर्णार्थं, निर्मोहत्त्वं प्रयतनीयम्।।६४।।

कर्मक्षय धर्म से ही

सद्धर्मयुक्तजीवः, संसारमहार्णवे सुखं याति।
तस्माज्जीवसमूहैः, सदैव सेव्यो नु सुद्धर्मः।।६५।

मोह से परे मोक्ष

मोहो बंधनिमित्तं, मोहाभावाद्विमुच्यते जीवः।
तस्माल्लोकैः सततं, मोहध्वंसे रुचिः कार्या।।६६।

दुर्लभ है नर पर्याय

नानागतिपरतन्त्रों, जीवो मानवगतिं समश्नुते।
रागस्पृष्टो जीवः, मार्ग द्वेषस्य सन्ततं तनुते।।६७।।

मोह क्षयात् मोक्षः

चाञ्चल्याध्वनि पतितः, जीवं बध्नाति कर्मणां पूगः।
मोक्षेच्छुकैस्तु जीवै, वैराग्यं केवलं सेव्यम्।।६८।।

पुण्य की इच्छा

पुण्यलाभेप्सवोऽनेके, पुण्यकर्म न कुर्वते।
पपान्यनीहमानास्तु, पापकर्म विकुर्वते।।६९।।

भक्ति से मुक्ति

श्रद्धालुवाले रूढा सुकालं, निष्ठा मनोऽभ्यास जलेन सिक्ता।
भक्तिर्लता शीलसुमा प्रफुल्ला, पुण्यं फलं लोकहिताय सूते।।७०।।

पूजा से ही पूज्य

धर्माः पशूनामपि देहजास्ते, निद्राविबोधावाहारभागौ।
मैत्रीप्रवैरे लिप्सा परिग्रहौ, भक्तिर्विशिष्टा मनुजान् पृणाति।।७१।।

भक्ति से मुक्ति

भक्ति र्गुरौ वा देवे जिनेन्द्रे, लोकार्पितेवान्य पुनीत देवे।
सिद्धेः फलं नितमियं प्रदुग्धे, सेव्येव धेनुर्गोपालकेन।।७२।।

दुर्जन

साधूपहासोऽनुपकार कृत्यं, मिथ्या विवादो विश्वासघातः।
मौर्ख्येऽपिदर्पः स्त्रैणं कुमैत्री, पापैः खलेदुर्व्यसनाभिवृद्धिः।।७३।।

दुर्जन स्वभाव

साधूपदेशंश्रुणुते न किञ्चित्, सत्संगतिं यो मनुते प्रभीतिं।
कृत्त्वा शठाः स्वात्ममनोऽनुकूलं, नश्यन्ति, दुष्यन्ति पराजयन्ते।।७४।।

संसार में पतित कौन?

नहि नमन्ति सुदेवपादाम्बुजं, न च पठन्ति सुशास्त्रपदावलीम्।
न कलयन्ति च साधुसमागमं, जगति ते खलु दुर्भगदुर्जनः।।७५।।

समता का वरदान

येनापि केनापि नयेन धीरै-र्धार्येत स्वान्तःकरणेषु साम्यम्।
नो निर्विकाराः समतां विना स्युः, साम्यं हि सम्यक् संसाधनीयम्।।७६।।

परदोष-परिहार

दोषा गुणा वा त्रुटिताप्रमादः, सर्वेषु दृश्याः पुरुषेषु बहुलम्।
कृत्येषु तेषां दोषाभिधानं, स्वात्मप्रसादाय परेण हेयम्।।७७।।

परदोष-परिहार ही सज्जनता

दोषान् विहायैव गुणानुसन्धिः, सर्वत्रकृत्येषु सदा प्रयोज्या।
सद्भावदृष्ट्या परकार्यवृन्दे, लोकाः स्वयं सज्जनतां लभन्ते।।७८।।

पड़ोसियों से सद्व्यवहार

दृष्टिं सुतृष्णां प्रतिवेशि स्वत्वे, स्वप्नेऽपि नो पातय नाभिक्रुध्यः।
भार्याश्चभृत्या नहि तस्य भेद्याः, भार्या न वा तच्चरितेषु दोषाः।।७९।।

अपमान ही अपना करो

न्यायीव धीरो प्रतिवेशिवीरः, आलोच्य सम्मार्ज्यतीव दोषान्।
पूर्णऽप्यनेकान्त गुणश्च सत्ये, साक्षी सचेताः सतु नावमान्यः।।८०।।

कौशल और अहंकार का भेद

प्रागल्भ्यमथवाऽहंकारभावः, नैकत्र योज्यौ सदसद्विवेकैः।
दाक्षिण्यभावे विनयः कलार्याः, ईर्ष्या त्वहंकार कृतावज्ञा।।८१।।

क्षमा शस्त्रप्रयोग

शस्त्रं क्षमा वज्रमयं ह्यमोघं, वीरैः प्रयोज्यं प्रणते शरण्ये।
सम्मर्षणैः शाम्यति क्रोध बन्हिः, सत्येन मिथ्या, ददनेन लोभः।।८२।।

कर्मफल योग

प्रारब्धसंचेयविवर्तमानं, त्रैविध्यमिहकर्मगतेःप्रसिद्धम्।
बीजे यथोप्ते कटुमाधुरं वा, भोज्यं फलं भाग्यनतं तु जीवैः।।८३।।

साधूपदेश महिमा

बीज प्ररोहो मरुभूतले नो, श्रद्धाविहीने तु तथोपदेशः।
दानं हि सत्पात्रगतं पुनाति, साधूपदेशोऽपि तथा सुधर्मम्।।८४।।

साधु संगति

सत्संगतिः साधुजनस्य पुण्या, गन्धेन तुल्या पणिगान्धिकस्य।
शान्तिः सुवासः सकलैः सुलभ्यो, दानं विनाप्येष तयोः प्रसादः।।८५।।

भाग्यानुक्रम

मौनं समास्थाय विलोकनीयं, चक्रारपङ्क्तेः दिनवर्त्तनां यत्।
प्राप्ते दिने सिद्धि फलं न दूरम्, भाग्यं प्रशस्तं हि पुरा रहीमैः।।८६।।

त्याज्य पदार्थ

चाटु प्रसाद्यो नृपतिर्न सेव्यः, स्वामी च मूढ़ः कृपणोऽपकारी।
संकीर्ण धर्मः कपट-प्रवृद्धः, सेव्यो न वा संकुटिलः कुपन्थाः।।८७।।

तीन ऋण

त्रिभ्यो ऋणी जायत एव देही, पित्रो गुरो श्चाप्युपकार हेतो।
विद्या प्रचारै रथवंश वृद्ध्या, मुक्तों ऋणेभ्यो जगतः प्रयाति।।८८।।

भाग्य और श्रम

आयुश्च वित्तं स्वकुल प्रतिष्ठा, कीर्तिः पदमारोग्यं च देहे।
दैवांकितं यच्च ललाट पट्टे, सिद्धं परं तद्धि तपः श्रमाभ्याम्।।८६।।

नामक्षर साम्य, गुणार्थ साम्य का अनुबन्धी नहीं

शतं गुणा मादकताधिका स्यात्, यत् काञ्जने, काञ्जन वृक्षमाघात्।
एकं ह्युपास्यैव मदाय सिद्धम्, भुक्त्वैव चान्यत् कुरुते मदानि।।६०।।

गुण ही पूज्य

नाम्ना सतुल्यावपि काञ्चनौ यौ, भिन्नप्रभावौ परिणामत स्तौ।
लोके गुणास्तेन समञ्वनीया, हेया पदार्थाः परिणाम दुःखा।।६१।।

साधु की वाणी ही अमृत है

वाणी सुधा साधुजनस्य सिद्धा, स्वर्गे मुधा तां परिमार्गयन्ति।
संसेव्य पापा भवमुत्तरन्ति, संजीवनं सद्वचनामृतं हि।।६२।।

दुर्गुणो की गुण दृष्टि

शोभा प्रदीपस्य घनान्धकारे, पुण्यं प्रशस्तं यायादपुण्यैः।
कज्जस्य पंकेन, सुधाविषेण, सद् दुर्गुणश्चापि गुणाय कल्प्यः।।६३।।

बुद्धिमत्ता की पहचान

बुद्धे र्न गर्वः कार्यः सुधीभिः, बुद्धेर्हि चिह्नं त्वनभिज्ञतैव।
वध्वाः सुरूपे ह्यवगुण्ठनं कृत, नम्रत्वमेवं गुणभूषणं स्यात्।।६४।।

सज्जन-दुर्जन का गुण-भेद

मिथ्या प्रशंसा न श्रृणोति विज्ञः, शौर्ये विकत्था नहि सज्जनस्य।
गर्वोन्मदो दुर्जन एष मूढ़ः, स्वार्थी विकत्थः पर दुःखतुष्टः।।६५।।

सच्चा जीवन और मोक्षमार्ग

अश्रूणि संमार्ज्य विपद् गतानां, क्लेशान् सुखेभ्यः प्रतियच्छ नित्यम्।
तज्जीवनं दुःख सुखे स्मितं यत्, सेवैव लोकस्य विमोक्ष पन्थाः।।६६।।

समर्पण

जाते क्वचिद् धर्मणि संशये तु, स्वात्मैव मित्रं तनुते समाधिम् ।
ह्यन्ये सहाया भिन्नात्म चित्ताः, प्रायोऽपमंत्रं परिभावयेयुः । ।६७ । ।

पुरुषार्थ ही परमार्थ

क्रेयं सुवर्णैर्नरजीवनं नो, कालोऽप्यतीतोऽपरिवर्त्तनीयः ।
तस्मात् क्षणं योजय पुण्यवृत्तौ, उद्योगिनां सिद्धिफलं न दूरे । ।६८ । ।

श्रावकाः मोक्षाधिकाराः

श्रद्धा विनीताः खलु श्रावकास्ते, भक्त्या पुनीताः सदायाश्चरन्ति ।
शास्त्रीय कृत्यं परिपालयन्तः, संसेव्य साधून् मोक्षाधिकाराः । ।६६ । ।

कवी का भाव

संफुल्ल पुष्पाञ्जलि-नीतिसारः, लोक-प्रसादाय समर्पितोऽयम् ।
कामः कुमारः नन्दी विनीतो, प्रीणाति नित्यात्ममयान् गुरुँश्च । ।१०० । ।

श्री भद्रबाहु विरचितम्

उवसग्गहरं

श्री भद्रबाहु स्वामिप्रसादात् एषः योगः फलतु-

उवसग्गहरं पासं पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं।
विसहर-विसणिण्णासं मंगल-कल्लाण-आवासं।।१।।

विसहर-फलिंगमंतं कंठे धारेई जो सया मणुओ।
तस्स गहरोगमारी दुट्ठजरा जंति उवसामं।।२।।

चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ।
णरतिरिएसुवि जीवा पावंति ण दुक्खदोगच्चं।।३।।

तुह सम्मते लद्धे चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं जीवा अयरामरं ठाणं।।४।।

इअ संथुओ महायस! भत्तिब्भर निब्भरेण हिअएण।
ता देव दिज्ज बोहिं भवे भवे पास जिणचंद।।५।।

ॐ अमरतरु कामधेणु चिन्तामणि कामकुंभमाइया।
सिरिपासनाह सेवाग्गहाण सव्वे वि दासत्तं।।६।।

'उवसर्ग हरं स्तोत्रं कृतं श्रीभद्रबाहुना।
ज्ञानादित्येन संघाय शान्तये मंगलाय च।।'

अर्थ : मैं घातिया कर्मों से विमुक्त उवसर्ग विजयी भगवान् श्री पार्श्वनाथ की वन्दना करता हूँ। भगवान् विषधर के विष को निर्विष करने वाले हैं तथा मंगल एवं कल्याण के निवास हैं। विषहरण शक्ति से स्फुलिंग के समान दीप्तिमान् इस स्तोत्र को जो मनुष्य नित्य कण्ठ में धारण करता है (कण्ठस्थ रखता है, कण्ठ द्वारा उच्चारण करता है) उसके ग्रहपीड़ा, रोग, महामारी तथा वार्धक्य से उत्पन्न दुष्ट व्याधियाँ शान्त हो जाती है। हे भगवन्! मंत्रोपचार तो दूर की बात है, उसे रहने दें तो भी आपको एक श्रद्धाभक्ति से किया गया प्रणाम भी बहुफलदायी होता है। नर और तिर्यक् गति में उत्पन्न जीव आपकी भक्ति से दुःख तथा दुर्गति नहीं पाते। चिन्तामणि और कल्प पादप-समान आपके सम्यक्त्व को प्राप्त कर जीव निर्विघ्न अजर-अमर स्थान प्राप्त कर लेते हैं। हे महान् यशस्विन! भक्ति की अतिशयता से भरित हृदय से मैं आपकी स्तुति करता हूँ। हे पार्श्वजिनचन्द्र! मुझे बोधिलाभ हो, ऐसी प्रार्थना है।

मृत्यु-महोत्सव

सल्लेखना किसे कहते हैं और वह कब की जाती है।

उपसर्गे दुर्भिक्ष, जरसि रुजायां च निःप्रतीकारे।
धर्माय तनुविमोचनमाहुः सल्लेखनामार्याः।।१।।

तप के फल स्वरूप समाधि के लिये प्रयत्न

अंतःक्रियाऽधिकरणं, तपः फलं सकलदर्शिनःस्तुवते।
तस्माद्यावद्विभवं, समाधि मरणे प्रयतितव्यम्।।२।।

समाधि मरण के समय का कर्तव्य

स्नेहं बैरं संगं, परिग्रहं चापहाय शुद्धमनाः।
स्वजनं परिजनमपि च, क्षत्वा क्षमयेत् प्रियैर्वचनैः।।३।।

मृत्यु-महोत्सव की तैयारी

आलोच्य सर्वमेनः कृतकारित मनुमतं च निर्व्याजं।
आरोपयेन्महाव्रतमामरणस्थायि निःशेषम्।।४।।

शोकं भयमवसादं, क्लेदं कालुष्यमरतिमपि हित्वा।
सत्त्वोत्साहमुदीर्य च, मनः प्रसाध्यं श्रुतैरमृतैः।।५।।

समाधि मरण की विधि

आहारं परिहाप्य च क्रमशः स्निग्धं विवर्द्धयेत् पानं।
स्निग्धं च हापयित्वा, खरपानं पायेत् क्रमशः।।६।।

खरपानहापनामपि, कृत्वा कृत्वोपवासमपि शक्त्या।
पञ्चनमस्कारमनास्तनुं त्यजेत् सर्वयत्नेन।।७।।

मोक्ष नगर के लिये कलेवा

मृत्युमार्गे प्रवृत्तस्य, वीतरागो ददातु मे।
समाधिबोधपाथेयं, यावन्मुक्तिपुरी पुरः।।८।।

मरने में भय क्यों किया जाय

कृमिजालशताकीर्णे, जर्जरे दहपजरे।
भज्यमाने न भेतव्य, यतस्त्वं ज्ञानविग्रहः।।६।।

नये नगर को गमन

ज्ञानिन् भयं भवेत्कस्मात्प्राप्ते मृत्युमहोत्सवे।
स्वरूपस्थः पुरं याति देहो देहान्तरस्थितिः।।१०।।

मरण से स्वर्ग के सुख

सृदत्तं प्राप्यते यस्मात्, दृश्यते पूर्वसत्तमैः।
भुज्यते स्वर्भवं सौख्यं, मृत्युभीतिःकुतःसताम्।।११।।

मृत्यु भूपतिका स्वागत

आगर्भादुःखसंतप्तः प्रक्षिप्तो देहपजरे।
नात्मा विमुच्यतेऽन्येन, मृत्युश्भूमिपतिं विना।।१२।।

मृत्यु-मित्र

सर्बदुःखप्रदं पिंडं, दूरीकृत्यात्मदर्शिभिः।
मृत्युमित्रप्रमादेन, प्राप्यते सुखसम्पदः।।१३।।

मृत्यु कल्प वृक्ष

मृत्युकल्पदुमे प्राप्ते येनात्मार्थो न साधितः।
निमग्नो जन्मजंबाले, स पश्चात् किं करिष्यति।।१४।।

बिना प्रयत्न सुन्दर शरीर व उत्तम इन्द्रियों की प्राप्ति

जीर्णं देहादिकं सर्व, नूतनं जायते यतः।
स मृत्युः किं न मोदाय, सतां सातोत्थितिर्यथा।।१५।।

सुख दुःख आत्मा को होता है न कि शरीर को

सुखं दुःखं सदा वेत्ति देहस्थश्च स्वयं व्रजेत्।
मृत्युभीतिस्तदा कस्य जायते परमार्थतः।।१६।।

मृत्यु, ज्ञानो को प्रमोद और अज्ञानी को शोक का कारण है।

संसारासक्तचित्तानां मृत्युर्भीत्यै भवेन्नृणाम्।
मोदायते पुनःसाऽपि ज्ञानवैराग्यवासिनाम्।।१७।।

देहाधिपति को बेरोक यात्रा

पुराधीशो यदा याति सुकृतस्य बुभुत्सया।
तदासौ वार्यते केन प्रपञ्चैः पाञ्चभौतिकैः।।१८।।

मृत्यु समय को पीड़ा ज्ञानी को वैराग्य का कारण है

मृत्यकाले सतां दुःखं यद्भवेद व्याधिसंभवम्।
देहमोहविनाशाय, मन्ये शिवसुखाय च।।१६।।

मृत्यु को ज्ञानीसुख और अज्ञानी दुःख का कारण मानते हैं

ज्ञानिनोऽमृत संगाय मृत्युस्तापकरोऽपि सन्।
आमकुम्भस्य लोकेऽस्मिन् भवेत्पाकविधिर्यथा।।२०।।

कठिन तप व समाधि मरण के फल की समानता

यत्फलं प्राप्यते सद्भिर्व्रतायासबिडंबनात्।
तत्फलं सुखसाध्यं स्यान्मृत्युकाले समाधिना।।२१।।

शांतिपूर्वक मृत्यु का फल

अनार्त्तः मान्मर्त्यो शांति, न तिर्यग् नापि नारकः।
धर्मध्यानी पुरो मर्त्योऽनशनी त्वमरेश्वरः।।२२।।

समाधि मरण से ही व्रत, तप व शास्त्रज्ञान सफल होते हैं

तप्तस्य तपसश्चापि पालितस्य व्रतस्य च।
पठितस्य श्रुतस्यापि फलं मृत्युः समाधिना।।२३।।

नवीन से प्रेम और पुराने से अरुचि

अतिपरिचितेष्वज्ञा नवे भवेत्प्रीतिरिति हि जनवादः।
चिरतरशरीरनाशे नवतरलाभे च किं भीरुः।।२४।।

स्वगदित्य पवित्रनिर्मलकुले संस्मर्यमाणा जनैः,
दत्वा भक्तिविधायिनां बहुविधं वाच्छानुरूपं धनम् ।
भुक्त्वा भोगमहर्निशं परकृतं स्थित्वा क्षणं मण्डले,
पात्रावेशविसर्जनामिव मृतिं सन्तो लभंते स्वतः । ।२५ । ।

।। इति मृत्युमहोत्सव समाप्तम् ।।

गुरु के चरण जहाँ पड़ते थे, तीर्थ वहाँ बन जाते थे।
था चमत्कार को नमस्कार, सब दौड़े-२ आते थे।।
वह जगह तीर्थ बन जाती थी, जिस ओर आप आ जाते थे।
मानव पशु-पक्षी सभी जीव, आशीष तुम्हारा पाते थे।

प्रभाचन्द्रीय-तत्त्वार्थसूत्रका

मूल-सूत्रपाठ

सद्दृष्टिज्ञानवृत्तात्मा मोक्षमार्गः सनातनः।
आविरासीद्यतो वन्दे तमहं वीरमच्युतम्।।1।।

सम्यग्दर्शनावगमवृत्तानि मोक्षहेतुः।।१।। जीवादिसप्त-तत्वम्।।२।।तदर्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्।।३।। तदुत्पत्तिर्द्विधा।।४।। नामादिना तन्न्यासः।।५।। प्रमाणे द्वे।।६।। नयाःसप्त।।७।। तैरधि- गमस्त्वानाम्।।८।। सदादिभिश्च।।९।। मत्यादीनि ज्ञानानि।।१०।। क्षयोपशम-(क्षय-) हेतवः।।११।। षड्विधोऽवधिः।।१२।। द्विविधो मनःपर्ययः।।१३।। अखण्डं केवलम्।।१४।। समयं समयमेकत्र चत्वारि।।१५।।

इति श्रीवृहत्प्रभाचन्द्र-विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे प्रथमोऽध्यायः।।१।।

जीवस्य पञ्च भावा।।१।। उपयोगस्तल्लक्षणम्।।२।। स द्विविधः।।३।। द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः।।४।। शेषाः स्थावराः।।५।। द्रव्य-भावभेदादिन्द्रियं द्विप्रकारम्।।६।। विग्रहाद्या गतयः।।७।। सचित्तादयो योनयः।।८।। औदारिकादीनि शरीराणि।।९।। एकस्मिन्नात्मन्याचतुर्भ्यं।।१०।। आहारकं प्रमत्त (संयत) स्यैव।।११।। तीर्थेशदेव-नारक-भोगभुवोऽखण्डायुषः।।१२।।

इति श्रीवृहत्प्रभाचन्द्र-विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे द्वितीयोऽध्यायः।।२।।

रत्नप्रभाद्याः सप्त भूमयः।।१।। तासु नारकाः सपञ्चदुःखाः।।२।।जम्बूद्वीप-लवणोदादयोऽसंख्येयद्वीपोदधयः।।३।। तन्मध्ये लक्षयोजनप्रभः सचूलिको मेरुः।।४।। हिमवत्प्रमुखाः षट् कुलनगाः।।५।। तेषु पद्मादयो ह्रदाः।।६।। तन्मध्ये श्रयादयो देव्यः।।७।। तेभ्यो गंगादयश्चतुर्दश महानद्यः।।८।। भरतादीनि वर्षाणि।।९।। त्रिविधा भोगभूमयः।।१०।। भरतैरावतेषु षट्

कालाः ।।११।। विदेहेषु सन्ततश्चतुर्थः ।।१२।। आर्या म्लेच्छाश्च नरः ।।१३।। त्रिषष्ठि-शलाकापुरुषाः ।।१४।। एकादशरुद्राः ।।१५।। नवनारदाः ।।१६।। चतुर्विंशति-कामदेवाः ।।१७।। मनुष्यतिरश्चामुत्कृष्ट-जघन्यायुषी त्रिपल्योपापन्तर्मुहूर्ते ।।१८।।

इति श्रीवृहत्प्रभाचन्द्र-विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे तृतीयोऽध्यायः ।।३।।

दशाऽष्टपञ्चभेद-भवन-व्यन्तर-ज्योतिष्काः ।।१।। वैमानिका द्विविधाः कल्पजकल्पातीतभेदात् ।।२।। सौधर्मादयः षोडश कल्पाः ।।३।। ब्रह्मालयाः लौकान्तिका ।।४।। ग्रैवेयकाद्या अकल्पाः ।।५।। सामान्यतो देवनारकाणामुत्कृष्टेतरस्थितिस्त्रय स्त्रिंशत्सागराऽयुताब्दाः ।।६।।

इति श्रीवृहत्प्रभाचन्द्र-विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे चतुर्थोऽध्यायः ।।४।।

पञ्चास्तिकायाः ।।१।। नित्याऽवस्थिताः ।।२।। रूपिणः पुद्गलाः ।।३।। धमदिरक्रियत्वम् ।।४।। जीवादेर्लोकाकाशेऽवगाहः ।।५।। सत्वं द्रव्यलक्षणम् ।।६।। उत्पादादियुक्तं सत् ।।७।। सह-क्रम-भाविगुण-पर्ययवद्द्रव्यम् ।।८।। कालश्च ।।९।। अनन्तसमयश्च ।।१०।। गुणाना-मगुणत्वम् ।।११।।

इति श्रीवृहत्प्रभाचन्द्र-विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे पंचमोऽध्यायः ।।५।।

त्रिकरणैः कर्म योगः ।।१।। प्रशस्ताप्रशस्तौ ।।२।। पुण्यपापयोः (हेतू) ।।३।। गुरुनिन्हवादयो ज्ञान-दर्शनाऽऽवरणयोः ।।४।। दुःखव्र-त्यनुकम्पाद्या असाता-सातयोः ।।५।। केवल्यादिविवादो (द्यवर्णवादो) दर्शनमोहस्य ।।६।। कषाय-जनित-तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य ।।७।। बह्वारम्भपरिग्रहाद्या नारकाद्याऽऽयुष्कहेतवः ।।८।। योगवक्रताद्या अशुभनान्मः ।।९।। तद्वैपरीत्यं शुभस्य ।।१०।। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशभावनास्तीर्थकरत्वस्य ।।११।। आत्मविकत्थनाद्या

नीचैर्गोत्रस्य । ।१२ । । तद्व्यत्ययो महतः । ।१३ । । दानादिविघ्नकरण-मन्तरायस्य । ।१४ । ।

इति श्रीवृहत्प्रभाचन्द्र-विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे षष्ठोऽध्यायः । ।६ । ।

हिंसादि-पञ्चविरतिर्व्रतम् । ।१ । । महाऽणुभेदेन तद्द्विविधम् । ।२ । । तद्दार्ढ्याय भावनाः पञ्चविंशतिः । ।३ । । मैत्र्यादयश्चतस्त्रः । ।४ । । श्रमणानामष्टाविंशतिर्मूलगुणाः । ।५ । । श्रावकाणामष्टौ । ।६ । । शीलसप्तकं च । ।७ । । शंकाद्योः सम्यग्दृष्टेरतीचाराः । ।८ । । बंधादयो व्रतानाम् । ।९ । । मित्रस्मृत्याद्याः संन्यासस्य । ।१० । । स्व-पर-हिताय स्वस्यातिसर्जनं दानम् । ।११ । ।

इति श्रीवृहत्प्रभाचन्द्र-विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे सप्तमोऽध्यायः । ।७ । ।

मिथ्यादर्शनादयो बंधहेतवः । ।१ । । चतुर्धा बन्धाः । ।२ । । मूलप्रकृ-तयोऽष्टौ । ।३ । । उत्तरा अष्टचत्वारिंशच्छतम् । ।४ । । ज्ञानावरणादि-त्रयस्यान्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोट्यः पराध्या (परा?) स्थितिः । ।५ । । मोहनीयस्य सप्ततिः । ।६ । । त्रयस्त्रिंशदेवायुषः । ।७ । । नामगोत्रयोर्विंशतिः । ।८ । ।

इति श्रीवृहत्प्रभाचन्द्र-विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे अष्टमोऽध्यायः । ।८ । ।

गुप्त्यादिना संवरः । ।१ । । तपसा निर्जराऽपि । ।२ । । उत्तमसंहनन-स्यान्तर्मुहूर्तावस्थायि ध्यानम् । ।३ । । तच्चतुर्विधम् । ।४ । । आद्ये संसार-कारणे । ।५ । । परे मोक्षस्य । ।६ । । पुलाकाद्याः पंच निर्ग्रन्थाः । ।७ । ।

इति श्रीवृहत्प्रभाचन्द्र-विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे नवमोऽध्यायः । ।९ । ।

मोक्षये घातित्रयापनोदात्केवलम् । ।१ । । अशेषकर्मक्षये मोक्ष । ।२ । । तत ऊर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात् । ।३ । । ततो न गमनं धर्मास्तिका-याभावात् । ।४ । । क्षेत्रादिसिद्धभेदाः साध्याः । ।५ । ।

इति श्रीवृहत्प्रभाचन्द्र-विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे दशमोऽध्यायः । ।१० । ।

।। इति जिनकल्पि-सूत्रं समाप्तम् । ।

उपा. मुनि कामकुमारनन्दीविरचितं

शान्तिस्तवकम्

शान्तिं तनोति यः सागरनामधेयः,
यत्रोत्पतन्ति गुणराजितरंगभंगाः।
चन्द्राननंसमवलोक्यसुधाप्रसादं,
रत्नत्रयेण रत्नाकरतां दधाति।।१।।

कषायदोषपरिमुक्त विशुद्ध दृष्टिः,
मायाविवर्जितमनाः हृतलोभवृत्तिः।
क्रोधोज्वरोऽस्तु जीर्णः तपसां प्रतापैः,
स्वस्थो मुनिः प्रणतिभिः परिभावनीयः।।२।।

यस्मिन् लुटन्ति सद्भाव प्रमोर्मिमाला,
सारस्वते श्रुतिमती पुलिने प्रशस्ते।
कैवल्यज्ञानमनुसारि मनः प्रवृत्तं,
तस्मै नमोऽस्तु विबुधायत-भूषणाय।।३।।

सम्यक् चरित्रमनृपालयितुं तपस्वी,
आचारपंचकनिधेः परिसेवनेन।
आचार्य पुण्यपदमातनुते कृतार्थः,
सोऽयं प्रसीदतुतरांमुनिचक्रवर्ती।।४।।

दिव्यो दिगम्बर मुनिश्चरिताधिवृत्तिः,
स्वाध्याय पावन तनुः समता सुमूर्तिः।
लोकत्रिताप दुरितोपशमैर्हितैषी,
तस्मै नमोऽस्तु नरपुंगवपूजिताय।।५।।

संकट निवारक पार्श्वनाथ स्तोत्रम्

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय हीं प्रगे।
धरणेन्द्रा पद्मावति सहिताय सदा श्रिये।।१।।

अट्ठे मट्ठे तथा छुद्रे विघटे क्षुद्रमेवहि।
क्षुद्रास्त्मभय स्तम्भय स्वाहान्तैरेभिरक्षरम्।।२।।

पद्माष्टकदलोपेतं मायांक-जिन लांक्षितम्।
पत्र-मध्यान्तरालेषु पत्रोपरि यथाक्रमम्।।३।।

अष्टौ अष्टौ तथा चाष्टौ विन्यस्ताक्षर-मंडले।
तथाष्टशत जापेन ज्वरभेकान्तरादिकम्।।४।।

रिपु चोर महीपाल शाकिनी भूत सम्भवाः।
मरण्यं देहजां भीतिं हन्ति बद्धं भुजादिषु।।५।।

पुष्पमालां जपित्वा च मंत्रेणाष्ट-शताधिकम्।
प्रक्षिप्ता पोत कंठेषु भूत स्वम्भपदं भयम्।।६।।

गुग्गुलस्य गुटीनां च शतमष्टोत्तराहुतम्।
दुष्टमुच्चाटयेत सद्यः शान्तिं च कुरुते गृहे।।७।।

श्री पार्श्व जिन सिंहस्य, नील वर्णस्य संस्तवान्।
लभन्ते श्रेयसं सिद्धिं प्रकुर्वन् बांक्षितैः सह।।८।।

श्री-अश्वसेन-कुल-पंकज-भास्करस्य
पद्मावति-धरणि-राजनि सेवितस्य।
वामांगजस्य पदमे स्तवाल्लभन्ते
भव्याश्रियं शुभगतमपि, बांधितानि।।९।।

।। इति चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्रम्।।

महाकवि रइधूकृत्

दशधर्म व्याख्या

उत्तम क्षमा धर्म

उत्तम खम तिल्लो यह सारी, उत्तम खम जम्मो दहितारी।
उत्तम खम रयणत्तय-धारी, उत्तम खम दुग्गई दुह हारी।।१।।

उत्तम खम गुण गण सहयारी, उत्तम खम मुणिविंद पियारी।
उत्तम खम बुहयण चिंतामणि, उत्तम खम संपज्जइं थिर मणि।।२।।

उत्तम खम महणिज्ज सयल जणि, उत्तम खम मिच्छत्त तो मणि।
जहिं असमत्थहं दोसु खमिज्जइ, जहिं असमत्थहं ण उ रूसिज्जइ।।३।।

जहिं आकोसण वयण सहिज्जइ, जहिं पर दोस णजणि भासिज्जइ।
जहिं चेयणगुण चित्त धरिज्जइ, तहिं उत्तम खम जिणें कहिज्जइ।।४।।

इय उत्तम खम जुय णर सुर खग णुय केवलणाणु लहेवि थिरू।
हुय सिद्धणिरंजणु भव दुह भंजणु अगणिय रिसि पुंगव जिचिरू।।५।।

उत्तम मार्दव धर्म

मद्दउ भव मद्दणु माण णिकंदणु, दय धम्महु भूल जि विमुलु।
सव्वहं हिययारउ गुण गुणसारउ, तिसहुं वउ संजम सहलु।।१।।

मद्दउ माण कषाय विहंहणु मद्दउ पंचिदिय मण दंहणु।
मद्दउ धम्मे-करुणा वल्ली पसरइ चित्र महिंहिं णावल्ली।।२।।

मद्दउ जिणवर-भत्ति पयासइ मद्दउ कुमइ पसरू णिण्णासइ।
मद्दवेण बहु विणय पवट्टइ मद्दवेण जण वइरू उइटई।।३।।

मद्दवेण परिणाम विशुद्धि, मद्दवेण तिहुलोय हं सिद्धि।
मद्दवेण दो विहु तउ सोहइ, मद्दवेण णरू तिजगु विमोहइ।।४।।

मद्दव जिण सासण जाणिज्जइ, अप्पा पर सरूव भाविज्जइ।
मद्दउ दोस असेस णिवरइ, मद्दउ जम्म उअहिं उत्तारइ।।५।।

सम्मंद्दसण अंगु मद्दउ परिणामु जि मुणहु।
इय परियाणिविचित्र मद्दउ धम्मु अमल धणहु।।६।।

उत्तम आर्जव धर्म

धम्महु वंरं लक्खणु अज्जउ थिर मणु दुरिय विहंडणु सुह जणणु।
तं इत्थ जि किज्जइ तं पालिज्जइ तं णि सुणिज्जई खय जणणु।।१।।

जारिसु णिजय चित्ति चिंतिज्जइ, तारिसु अण्णहं पुणं भासिज्जइ।
किज्जइ पुणु तारिसु सुह संचणु, तं अज्जउ गुण मुणहु अवंचणु।।२।।

माया सल्लु मणहु णिस्सारहु, अज्जउ धम्मु जि संपज्जह।
चउ तउ मायावियहु णिरत्थउ, अज्जउ सिव पुर पंथहु सत्थउ।।३।।

जत्थ कुडिल परिमाणु चइज्जइ, तहिं अज्जह धम्मु जि संपज्जह।
दंसण णाण सरूव अखंडउ, परम अतिंद्रिय सुक्ख करंडउ।।४।।

अप्पिं अप्पउ भवहु तरडउ, एरिसु चेयण भाव पयंडउ।
सो पुणु अज्जउ धम्मे नब्भइ, अज्जवेण बइरिय मणु खुब्भई।।५।।

अज्जउ परमप्पउ गय संकप्पउ चिम्मितु जि सासउ अभउ।
तं णिरू झाइज्जइ संसउ हिज्जइ पाविज्जइ जिहिं अचल पउ।।६।।

उत्तम शौच धर्म

सउच जि धम्मंगउ तं जि अमगंउ भिण्णगंउ अवओगमउ।
जरमरण विणासणु तिजगपयासणु झाइज्जइ अह विसि जि धुउ।।१।।

धम्म सउच्चु होइ मण सुद्धिए, धम्म सउच्चु वयण धण गिद्धिएं।
धम्म सउच्चु कसाय अहावें, धम्म सउच्चु ण लिप्पइ पावें।।२।।

धम्म सउच्चु लोहु वज्जंतउ, धम्म सउच्चु सुतब पहि जंतउ।
धम्म सउच्चुवंभ वय धारणि, धम्म सउच्चु मयइ्ठ णिवारणि।।३।।

धम्म सउच्चु जिणायम मणणे, धम्म सउच्चु सगुण अणुमणणे।
धम्म सउच्चु सल्ल कय चाए, धम्म सउच्चु जि णिम्मलभाए।।४।।

उत्तम सत्य धर्म

दय धम्महु कारणु दोस णिवारणु इह भवि पर भवि सुक्खयरू।
सच्चु जि वयणुल्लउ भविण अतुल्लउ बोलिज्जइ वीसासधरू।।१।।

सच्चु जि सव्वहं धम्महं पहाणु, सच्चु जि महियलिगरूउ विहाणु।
सच्चु जि संसार समुह सेऊ, सच्चु जि सव्वहं भण सुक्ख हेउ।।२।।

सच्चेण जि सोइह मणुव जम्मु, सच्चेण पवत्तउ पुण्ण कम्म।
सच्चेण सयल गुण गण महंति, सच्चेण तियस सेवा वहंति।।३।।

सच्चेण अणुव्वय महवयाइं सच्चेण विणासइ आवयाइं।
हियमिय भासिज्जइ णिच्च भास, ण वि भासिज्जइ पर दुउपयास।।४।।

पर बाहा भासहु म भवु, सच्चु जि तं छंडहु विगय गव्वु।
सच्चु जि परमापउ अत्थि इक्कु, सो भावहु भवतम दलण अक्कु।।५।।

रूंधिज्जइ मुणिणा वयण गुत्ति, जं खणि फिट्टइ संसार अत्ति।।6।।

सच्चु जि धम्म फलेण केवलणाणु लहेइ जणु।
तं पालहु भो भव्व भणहु म अलियउ इह वयणु।।७।।

उत्तम संयम धर्म

संजमु जणि दुल्लहुं तं पाविल्लहु जो छंडइ पुणु मूढ़मइ।
सो भमउ भवावलि जर मरणावलि किं पावेसई पुणु सुगई।।१।।

संजमु पंचिदिय दंडणेण, संजमु जि कसाय विहंडणेण।
संजमु दुद्धर तव धारणेण, संजमु रस चाय वियारणेण।।२।।

संजमु उपवास विजंमणेण, संजमु मण पसरह थंभणेण।
संजमु गुरु काय किलेसणेण, संजमु परिगह गह चायणेण।।३।।

संजमु तस थायर रक्खणेण, संजमु सतत्थ परिक्खणेण।
संजमु तणु जोय णियंतणेण, संजमु बहु गमणु चयंतएण।।४।।

संजमु अणुकंप कुणंतएण, संजमु परमत्थ बियारणेण।
संजमु पोसइ दंसणहं पंथु, संजमु णिच्छय णिरू मोक्ख पंथु।।५।।

संजमु विणु णर भव सयलु सुण्णु, संजमु विणु दुग्गइ जि उववण्णु।
संजमु विणु धडिय म इत्थ जाउ, संजमु विणु विहलिय अत्थि आउ।।६।।

इह भवि परभवि संजमु सरणु हुज्जउ जिणवाहे भणिउ।
दुग्गइ सर सोसण खर किरणोवम जेण भवालि विसम हणिउ।।७।।

उत्तम तप धर्म

तं तउ जहिं परिगहु छंडिज्जइ, तं तउ जहिं मयणु जि खंडिज्जइ।
तं तउ जहिं णग्गत्तणु दीसइ तं तउ जहिं गिर कंदरि णिवसइ।।१।।

तं तउ जहिं उवसग्ग सहिज्जई तं तउ जहिं रायाइं जिणिज्जइ।
तं तउ जहिं भिवखइ मुणिज्जई, सावय गेह कालिणिवं सिज्जइ।।२।।

तं तउ जत्थ समिदि परिपालणु तं तउ गुत्तित्तयहं णिहालणु।
तं तउ जहिं अप्पापरू बुज्झिउ, तं तउ जहिं भव माणु जि उज्झिउ।।३।।

तं तउ जहिं ससरूव मुणिज्जउ, तं तउ जहिं कम्महं गणु खिज्जइ।
तं तउ जहिं सुर मत्ति मयासइ, पवयणत्थ भवियणहं पभासइ।।४।।

जेण तवें केवलु उप्पज्जइ सासय सुक्खु णिच्च संपज्जइ।।5।।

वारह विहु तउ विरू गुग्गइ परिहरु, तं पूजिज्जइ थिर गणिणा।
मच्छरू मउ छंडिवि करणइं दंडिवि, तं वि धरिज्जइ गउ रविणा।।६।।

उत्तम त्याग धर्म

चाउ वि धम्मंगउ तं जि अमंगउ णियसत्रिए भत्रिय जणहु।
पत्तहं सुपवितहं तव गुण जुतहं परगइ संबलु तं मुणहु।।१।।

चाए अवगुण गुण जि उहट्टइ, चाए णिम्मल कित्ति पवहइ।
चाए वयरिथ पणमइ पाए, चाए भोग भूमि सुह चाए।।२।।

चाए विहिज्जइ णिच्च जि विणए, सुह वयणइं भासेप्पिणु पणए।
अभयदाणु दिज्जइ पहिलारउ, जिमि णासइ परभव दुध्यारउ।।३।।

सत्थदाणु बीजउ पुण किज्जइ, णिम्मल णाणु जेण पाविज्जइ।
ओसहु दिज्जइ रोय विणासणु, कह विण पेच्छइ बाहि पयासणु।।४।।

आहारे धणरिद्धि पवट्टइ, चउविहु चाउ जि एहु पवट्टउ।
अहवा दुट्ठ वियप्पहं जाए, चाउ जि एहु मुणहु समवाए।।५।।

दुहियह दिज्जइ दाणु किज्जइ माणु जि गुणियणहं।
दय भावियइ अभंग दंसणु चिंतिज्जइ मणहुं।।६।।

उत्तम आकिञ्चन्य धर्म

आकिञ्चणु भावहु अप्पउ झावहु, देहहु भिण्णउ णाणमउ।
णिरूवम गय वण्णउ, सुह संपण्णउ परम अतिंदिय विगयभउ।।१।।

आकिंचणु वउ संगह णिवित्ति, वउ सुहझाण सत्ति।
आकिंचणु वउ वियलिय भमत्ति, आकिंचणु रयणत्तय पवित्ति।।२।।

आकिंचणु आउंचियइ चित्त, पसरंतउ इंदिय वणि विचित्तु।
आकिंचणु दहेहु णेह चत्तु आकिंचणु जं भव सुह विस्तु।।३।।

तिणमित्तु परिग्गहु जत्थ णत्थि, आकिञ्चणु सो णियमेण अत्थि,
अप्पापर जत्थ वियार सत्ति, पयडिज्जइ जहिं परमेट्ठिट भत्ति।
छंडिज्जइ जहिं संकल्प दुट्ठ, भोयणु वंछिज्जइ जहिं अणिट्ठ,
आकिंचणु धम्मु जि एम होइ, तं झाइज्जइ णिरू इत्थ लोइ।।४।।

एहु जि पहावें लद्ध सहावें तित्थेसर सिव णयरि गया।
गय काम वियारा पुण रिसि सारा वंदणिज्ज ते तेण सया।।५।।

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म

बंभव्वउ दुद्धरू धारिज्जइ वरू फेडिज्जइ विसयास णिरू।
तिय सुक्खइ रत्तउ मण करि मत्तउ तं जि भव्व रक्खेहु थिरू।।१।।

चित्तभूमि मयणु जि उप्पज्जइ, तेण जि पीडिउ करइ अकज्ज्इ।
तिवहं सरीरंइ णिंदइं सेवइ, णिय परणारि ण मूढउ येयइ।।२।।

णिवज्इ णिरइ महादुइ भुंजइ, जो हीणु जि बंभव्वउ भंजइ।
इय जाणेप्पिणु मण वय काएं, बंभचेरू पालहु अणुराएं।।३।।

तेणु सहु जि लब्भइ भवपारउ बंभय विणु वउतउ जि असारउ।
बंभव्वउ विणु कायकिलेसो, विहल सयल भासियइ जिणेसो।।४।।

बाहिर फरसिंदिय सुह रक्खउ, परम बंभु अभितरि पेक्खउ।
एणं उबाएं लब्भइ सिव हरू, इम रइधू बहु भणइ विणययरू।।५।।

जिणणाह महिज्जइ मुणि पणमिज्जइ दहलक्खणु पालियइणिरू।
भो खेमसहिं सुय भव्व विणयजुय होलुव मण इह करहु थिरू।।६।।

।। इति रइधूकृत दशधर्म व्याख्या समाप्तम्।।

मौन के बारे में घण्टों बोल रहे हैं।
आचरण को ज्ञान से तोल रहे हैं।।
समय सार के रहस्यों से अपरिचित,
अध्यात्म प्रशिक्षण के शिविर खोल रहे हैं।।

मुनिराज कुन्थुसागरकृत्

निजात्मशुद्धिभावना

स्वराज्यकर्त्रे शिवसौख्यभर्त्रे, स्वातंत्र्यदात्रे परतन्त्रहर्त्रे।
वीराय भव्याम्बुजभास्कराय, सत्सौख्यसिध्यै हि नमस्करोमि।।१।।

मिथ्यात्वमार्गस्य विनाशनार्थं, यथार्थमार्गस्य प्रवृत्तिहेतोः।
स्वानन्दसिध्यै स्वपरार्थशान्त्यै, समाधिसिध्यै परिणामशुध्यै।।२।।

आबालवृद्धस्य सुखार्थमेव, निजात्मशुद्धेर्वरभावनेयम्।
श्री कुंथुनाम्ना मुनिनाल्पबुद्ध्या, स्वर्मोक्षदात्री खलु कथ्यते हि।।३।।

यः कर्मशत्रून् हि विजित्य दुष्टान्, सुज्ञातवान् सर्वपदार्थधर्मम्।
मोक्षस्य मार्गं निरपेक्षबुद्ध्या, मोक्षार्थिभव्याय किलोक्तवांश्च।।४।।

स एव वीरो हि हरिर्हरश्च, ब्रह्मा च विष्णुश्च जिनश्च बुद्धः।
स्वर्मोक्षदातुर्भवरोगहर्तुर्गच्छन्तु, भव्याः शरणं हि तस्य।।५।।

शंकाभयादेः कलहादिकस्य, चतुर्गतेर्मार्गनिरोधकं हि।
स्वर्मोक्षमार्गप्रतिपादकं च, यथार्थतत्त्वस्य निरूपकं यत्।।६।।

तदेव शास्त्रं पठितुं सुयोग्यं, श्रोतुं सदा पाठयितुं परांश्च।
विरोधहीनं परमार्थभुतं, स्वराज्यदं स्वात्मसुबोधकं यत्।।७।।

वाञ्छा न चित्ते विषयेषु यस्य, निजात्मधर्मे च सदैव तृप्तः।
अतीवदक्षः स्वपरोपकार्ये, तत्त्वप्रचारेऽपि यथार्थमार्गे।।८।।

इच्छानिरोधं सुखशान्तिमूलं, कुर्वंस्तपो यः स्वपदे स्थितोऽस्ति।
स एव साधुः सकलस्य दुःखं, हरत्यचिन्त्यं हृदि चिन्तनीयः।।९।।

समागमस्तस्य भवेद्धि साधोः, ध्यानं जपो वा मननं सुसेवा।
आचारमार्गे खलु तादृशस्य, भवेत्प्रवृत्तिः सततं जनस्य।।१०।।

जीवान्न वै कानपि पीडयामि, वदाम्यसत्यं च कदापि नाहम्।
गृह्णामि भार्यां न धनं परस्य, पिबामि सन्तोषसुधां सुमिष्टाम्।।११।।

बुद्ध्यादिवृद्धान् वरधार्मिकान् हि, तुष्यामि दृष्ट्वा जननीव पुत्रम्।
प्राणेष्वहं सत्सु गतेषु नैव, क्षुभ्यामि कुप्यामि कदापि लोके।।१२।।

भवेद्धि चैवं मम शुद्धबुद्धिः, शास्त्रानुकूलः परिणामवेगः।
निजात्मध्याने च भवामि लीनः, स्वराज्यहेतोरिति चिन्तयामि।।१३।।

त्यक्त्वा प्रमादं स्वपरार्थशान्त्यै, यत्नं यथाशक्ति करोमि नित्यम्।
मैत्र्यादिबुद्ध्या सह सर्वजीवै, वर्ते च कोपादिविनाशहेतोः।।१४।।

दीनान् दरिद्रान् पतितांश्च जीवान्, दृष्ट्वा ममात्मा हि भवेद्दयार्द्रः।
उद्धारहेतोश्च करोमि यत्नं, सुखाय तेषां हितचिन्तनं वा।।१५।।

कुमार्गरूढान् विपरीतजीवान्, दृष्ट्वा ममात्मा न कदापि कुप्येत्।
सन्तोषतोयं पिबताद्धि नित्यं, नेतुं सुमार्गे च यतेत तान् वा।।१६।।

सन्तोषमन्त्रं जपतो गुणाढ्यान्, पूज्यांश्च दृष्ट्वा बहुहर्षयुक्तः।
भवेद्धि तृप्तो मम चान्तरात्मा, तेषां सुसेवां विनयं च कृत्वा।।१७।।

भवेद गुणग्राह्यमतिर्ममात्मा, ह्यन्धश्च मंदो हि परस्य दोषे।
स्वप्नेपि भूयादकृतज्ञभावो, द्वेषो न लोभो हृदि मे कुबुद्धिः।।१८।।

ये केऽपि निन्दन्ति च मां स्तुवन्ति, न तेषु द्वेषो न भवेद्धि हर्षः।
ज्ञानामृतं मे पिबतान्निजात्मा, लाभो न हानिः स्तुतिनिन्दयोर्मे।।१९।।

वर्द्धेत लक्ष्मी भुवि मे क्षयेद्वा, कुटुम्बवर्गोऽपि भवेत्तथैव।
तथापि चित्ते सुखशान्तिराज्यं, सदैव भूयात्परमार्थबुद्धि।।२०।।

चिन्ता न मृत्योर्न च जीवनस्य, साम्राज्यलक्ष्म्याश्चपलकृत्याः।
भवद्धि मृत्युः समयानुसारो, न चिन्तया मे भुवि चान्यथैव।।२१।।

ये केपि मह्यं हरियक्षमर्त्या, दुःखं हि दद्युर्यदि वा तथापि।
स्वराज्यसौख्यात्स्वपदात्स्वभावात्, चलामि नाऽहं निजधर्ममार्गात्।।२२।।

अक्षादिसौख्ये च विनाशभृते, तुष्येन्न कुप्येन्मम किन्तु चात्मा।
निजात्मसौख्यं न भवेद्धि यावद्वर्तेत, नित्यं समशान्तभावैः।।२३।।

वापीनदीभ्यो गिरिकंदरेभ्यो, व्याघ्रादिसिंहैरहिभीमजन्तोः।
कदापि चात्मा विभियान्न मे हि, सर्वत्र गच्छेन्निजराज्यहेतोः।।२४।।

निजात्मधर्मे स्वपदे स्वसौख्ये, स्वात्मा भवेन्मे ह्यचलश्च तृप्तः।
निष्कम्पशांतश्चतुरश्च तुष्टः, तत्रैव पुष्टश्च सुखी च गुप्तः।।२५।।

प्रियाऽप्रियं वस्तु विलोक्य तुष्येत, कुप्येन्ममात्मा न कदापि नूनम्।
स्वकर्मणां तीव्रशुभाशुभानां, क्षयोदयाभ्यां प्रतिभासते मे।।२६।।

सर्वेऽपि जीवा इह जीवलोके, सदा भवेयुः सुखिनः सधर्माः।
स्वात्मानुभूतेः स्वरसं पिबन्तु, मुञ्चन्तु शीघ्रं कुटिलं विचारम्।।२७।।

विरोधवैरं च मिथ्याभिमानं, स्वार्थादिबुद्धिं च विहाय शीघ्रम्।
श्रीमांश्च धीमांश्चतुरोऽपि शास्त्री, भवेत्सदा जैनमतावलम्बी।।२८।।

कुत्राऽऽगतोहं गमनीयमस्ति, कुतः सदा किं करणीयमस्ति।
एवं स्वशानत्यै च विचारणीयं, संसारवृत्तान्तविदा नरेण।।२९।।

कालं च लब्ध्वा हि निगोदवासादत्रागतोस्म्यात्मतनोश्च धर्मम्।
ज्ञात्वेति मुक्त्वा तनुराज्यलक्ष्मी, मोक्षं हि गन्तुं विषयं न भोक्तुम्।।३०।।

मिथ्याभिमानं मलिनं विचारमाशापिशाचं, च विहाय शीघ्रम्।
धर्मप्रचारं स्वगतेर्विचारं, भव्याश्च कुर्युः स्वपरोपकारम्।।३१।।

स्वात्मानुभूत्या निजराज्यधर्मं, पूतात्मवासे सुखशांतिपूरे।
क्रीडन्तु तिष्ठन्तु सदैव भव्या, मिष्टातिमिष्टं स्वरसं पिबन्तु।।३२।।

ईतिर्विभीतिर्विषकंठकादिर्दुःखप्रदो, नश्यतु तीव्रमोहः।
भवेद्धि वृष्टिः समयानुकूला, नन्दन्तु जीवन्तु सुखेन जीवाः।।३३।।

शीघ्रातिशीघ्रं च कुभेदबुद्धिं, प्रजेत्यसौ मे तनयोऽस्ति मुक्त्वा।
राजा प्रजां रक्षतु धर्मबुद्ध्या, निजात्मवद्वा जननीव पुत्रम्।।३४।।

प्रजा हि शीर्षे नृपतेस्तथाज्ञां, दध्याद्धि मन्येत च देवतुल्यम्।
स्वप्नेऽपि तस्याऽविनयं न कुर्यात्सुधर्ममूर्तेः, खलु दीनबन्धोः।।३५।।

अकालमृत्युर्नच कोऽपि रोगो, भवेन्न केषामपि दुष्टबुद्धिः।
दुष्टग्रहाणां न भवेत्प्रकोपो, जीवन्तु जीवाः स्वसुखेन नित्यम्।।३६।।

धर्मोऽस्त्यहिंसैव यथार्थबन्धुर्माता, पिता पालनपोषणत्वात्।
वैद्यो वरो रोगविनाशकत्वाद्, वंद्यो गुरुर्वा शिवदर्शकत्वात्।।३७।।

स्वर्मोक्षदाता भवदुःखहर्ता, षट्खण्डराज्यं धनरत्नपूर्णम्।
दातुं समर्थोऽप्ययमेव धर्मः, स एव तिष्ठेत्सकलेऽपि जीवे।।३८।।

ब्रूयाद्वचः स्नेहकरं मिथस्तन्न, भ्रान्तिदं क्लेशकरं वढेद्धि।
शास्त्रानुकूलं च हितं हि सत्यं, पथ्यं सदा द्वेषविनाशकं च।।३९।।

तत्वस्य रूपस्य सदा विचारं, कुर्यात्सुशान्तेः स्वसुखस्य चर्याम्।
मोक्षो हि यावन्न भवेत्प्रयत्नादेवं, सदा चिन्तयतां हि भव्यः।।४०।।

क्रोधी न मानी कुटिलो न लोभी, त्यागी न भोगी कृपणो न दानी।
विद्वान्न मूर्खो न धनी दरिद्रो, चिन्मात्रमूर्तिः स्वरसेऽस्मि तृप्तः।।४१।।

न ब्राह्मणः क्षत्रिय एव नाऽहं, वैश्यो न शूद्रोऽप्यकुलः कुलीनः।
प्रजा न राजा न नरो न नारी, चिन्मात्रमूर्तिः स्वरसेऽस्मि तृप्तः।।४२।।

देवो न देवी न गुरुर्न शिष्यो, राज्ञी न दासी चतुरो न मूर्खः।
द्वेषी न रागी न च हीनदीनश्चिन्मात्रमूर्तिः, स्वरसेऽस्मि तृप्त।।४३।।

रोगी निरोगी न च धीरवीरो, बालो न वृद्धो न कुटुम्बवर्गी।
छेदी न भेदी न सुखी न दुःखी, चिन्मात्रमूर्तिः स्वरसेऽस्मि तृप्तः।।४४।।

बन्धो न मोक्षो न विधिर्निषेधः, कर्ता ह्यकर्ताप्यथवा न भोक्ता।
स्वामी न भृत्यश्च कदापि नाऽहं, चिन्मात्रमूर्तिः स्वरसेऽस्मि तृप्तः।।४५।।

कृष्णो न शुक्लो न च वर्णवर्णी, धर्मोऽप्यधर्मो न नभो न कालः।
जीवोऽप्यजीवो न च पुद्गलोऽपि, चिन्मात्रमूर्तिः स्वरसेऽस्मि तृप्तः।।४६।।

शुद्धोऽप्यशुद्धो न च योगयोगी, बुद्धोऽप्यबुद्धो न भवो न भावी।
सिद्धोऽप्यसिद्धो न करी न कारी, चिन्मात्रमूर्तिः स्वरसेऽस्मि तृप्तः।।४७।।

स्थूलो न सूक्ष्मो परमो न चाऽल्पो, व्याधिर्न चार्धिर्न सखा न शत्रुः।
पिता न माता भगिमी न भार्या, चिन्मात्रमूर्तिः स्वरसेऽस्मि तृप्तः।।४८।।

शक्तोऽप्यशक्तो न कृती न कार्यं, व्यक्तो न गुप्तो न गतिः स्थितिश्च।
भीरुर्न कारुर्न मतिर्न मौनी, चिन्मात्रमूर्तिः स्वरसेऽस्मि तृप्त।।४९।।

रसो न राशिः पुरुषो न षंढो, मूर्तिर्ह्यमूर्तिर्न दमी क्षमी न।
गृही न साधुर्न दिनं न रात्रिश्चिन्मात्रमूर्तिः, स्वरसेऽस्मि तृप्तः।।५०।।

मूढो न गूढो न कविः कपिर्न, मोहो न मुग्धो न बलिः कलिर्न।
ईतिर्न भीतिर्न कृतिर्धृतिश्च, चिन्मात्रमूर्तिः स्वरसेऽस्मि तृप्तः।।५१।।

शस्त्री न शास्त्री न शशी न सूर्यः, प्रीतिर्न कीर्तिर्न पुरी न पौरः।
मग्नो न नग्नो न चलोऽचलोपि, चिन्मात्रमूर्तिः स्वरसेऽस्मि तृप्तः।।५२।।

ब्रह्मा न विष्णुर्न महेश्वरोपि, न वर्द्धमानो न हि बुद्धदेवः।
न वाऽस्मि संकल्पविकल्परूपश्चिन्मात्रमूर्तिः, स्वरसेऽस्मि तृप्तः।।५३।।

भक्तिर्न भक्तो ह्यरती रतिर्न, भूमिर्न भूतिर्न कुलं न गोत्रम्।
श्रुतिर्न वृत्तिः प्रकृतिः प्रजा न, चिन्मात्रमूर्तिः स्वरसेऽस्मि तृप्तः।।५४।।

ध्याता न ध्येयं न चिता चिन्ता, नादिर्न मध्य खलु नैव चान्तः।
सदा ममात्मा परमार्थदृष्ट्या, सुचिन्तयेदेवमतिप्रयत्नात्।।५५।।

स्वात्मानुभूत्या सुखशान्तिदात्र्या, विना भवाब्धौ विषमे च दुःखे।
व्यत्यायि कालोऽमित एव जीवैः, श्री कुन्थुनाम्ना मुनिना तथा हि।।५६।।

हे वीर हे देव कृपानिधे हे, कृपाप्रसादात्तव सर्वजीवाः।
स्वात्मानुभूतिं हि जवेन लब्ध्वा, गच्छन्तु मोक्षं च ममापि चात्मा।।५७।।

छन्दो ह्यलंकारकलादिकं न, साहित्यशास्त्रं सुनयप्रमाणम्।
नीत्यादिकं व्याकरणं यन काव्यं, नाऽहं विजानामि विशेषशास्त्रम्।।५८।।

वै केवलं स्वात्मरसार्थमेव, स्वशान्तये स्वात्मनि बोधनार्थम्।
स्वातन्त्र्यदात्री परतन्त्रहर्त्री, व्याध्यादिहर्त्री सुखशान्तिदात्री।।५९।।

निजात्मशुद्धेर्वरभावनेयं, स्वरमोक्षदात्री भवरोगहर्त्री।
श्री कुन्थुनाम्ना मुनिना प्रणीता, मोक्षर्थिभिश्चेतसि चिन्तनीया।।६०।।

इन्द्रादिवन्द्यस्य च शान्तिसिंधोर्दीक्षागुरोर्धीरदयानिधेश्च।
अज्ञानहर्तुर्वरशिक्षकस्य, सुधर्मसिंधोः कृपया दयाब्धेः।।६१।।

मोक्षं गते महावीरे स्वमोक्षसुखदायके।
चतुर्विंशतिसंख्याते सद्विषष्ट्यधिके शते।।६२।।

फाल्गुने शुक्लपक्षे च तृतीयायां शुभे दिने।
तारंगासिद्धमेदिन्यां स्थित्वा स्वानन्दहेतवे।।६३।।

इष्टार्थदायिनी चेयं श्रीस्वात्मशुद्धिभावना।
रचिता स्वात्मनिष्ठेन कुन्थुसागरयोगिना।।६४।।

।। इति निजात्माशुद्धि भावना समाप्तम्।।

स्वाध्याय का सार

''सर्वेभ्यो यद्व्रतं मूलं 'स्वाध्यायः' परमं तपः।
यतः सर्वव्रतानां हि स्वाध्यायो मूलमादितः।।

स्वाध्यायाज्जायते ज्ञानं ज्ञानात्तत्वार्थ संग्रहः।
तत्त्वार्थसंग्रहादेव श्रद्धानं तत्त्वगोचरम्।।

तन्मध्यैकगतं पूतं तदाराधनलक्षणम्।
चारित्रं जायते तस्मिंस्त्रयीमूलमयं मतम्।।''

-सिद्धान्तसार, ११/२०–२०

''प्रशस्ताध्यवसायस्य स्वाध्यायो वृद्धिकारणम्।
तेनेह प्राणिनां निन्द्यं संचितं कर्म नश्यति।।

संवेगो जायते यस्मान् मोहध्वान्त विनाशकः।
मोहादपगतानां हि क्व संसारः क्व तत्फलम्।।

स्वाध्यायेन समं किंचिन्न कर्मक्षपण क्षमम्।
यस्य संयोगमात्रेण नरो मुच्येत कर्मणा।।

बह्वीभिर्मव कोटीभिर्व्रतात् यत्कर्म नश्यति।
प्राणिनस्तत्क्षणादेव स्वाध्यायत् कथितं बुधैः।।''

-सिद्धान्तसार, २२/२३–२६

परस्परोपग्रहो जीवानाम्